

का प्रचार कबसे और किसप्रकार से हुआ इतिहासों से वि  
 ७७० में अवन्तिकापुरी अर्थात् पुञ्जैननगर में राजा भो  
 षाठ्यविद्यामें अतिनिपुणथे उन्होंने ने पुथनामक बन्दीजन  
 अलङ्कारादि पदाये उमने उनको भाषा दोहों में अनुवाद  
 भाषा काव्यकी नींव पड़ी तब से दिनप्रति भाषा की उद्  
 तुलसीदास, केशवदास, विहारीदास आदि कवियों ने  
 निर्माण किये उनके शब्दों का ज्ञानदान केवल कोष  
 प्रकारकी विद्या है और उनके विषय भिन्न २ हैं यथा  
 चार, शब्दविचार, वाक्यरचना, छन्दरचना, उन  
 शुद्धशुद्ध का ज्ञान होता है परन्तु वाक्य और छन्द  
 ज्ञान न्यायशास्त्र से होता है और साहित्य सयान  
 लालित्य और विचित्रता के काममें आती है  
 निकलना है अभिधान में एक २ शब्द के नाम  
 है पर स्थानान्तर से भिन्न २ अर्थ दिसलाता  
 कोषसंग्रहक पर रहता है क्योंकि वह शब्दों को अ  
 भिन्न करना है वह शब्दों को इसद्वय से क्रमबद्ध करता  
 के अर्थको जो लोग देखना चाहें तुरन्त निकल आयें व  
 धानु, धात्वर्थ, मत्वयादि की रचना का विषय ठीक न

शब्द	संकेत	शब्द
बहुवचन	गु० उपस०	गुणवाचक उपसर्ग
गुणवाचक	समुच्च०	समुच्चयिक अध्यय
सर्वनाम	वि० पो०	विस्मयादिबोधक
सम्बन्धी सर्वनाम	बोल०	बोलचाल वा मुहायरा
नित्य सम्बन्धवान् वा कृतसम्बन्धी	अव्य०	अव्यय
क्रियायकर्मक	क०	कर्तृवाचक
क्रियासकर्मक	र्म०	वर्मवाचक
क्रियाविशेषण	भा०	भाववाचक
उपसर्ग	रा०	करणवाचक
	धि०	अधिकरणवाचक

### उक्त संकेतों का स्फुट विचार ॥

पु० जिस नाम से पुरुषत्व का बोध हो उसे पुल्लिङ्ग कहते हैं जैसे पुरुष लड़का, गोड़ा ।

स्त्री० जिस नाम से स्त्रीत्व का बोध हो उसे स्त्रीलिङ्ग कहते हैं जैसे स्त्री, लड़की, गोड़ी ।

भाषा में नपुंसक शब्द पुल्लिङ्ग ही माने गये हैं जैसे सागर, जल, रात्र, कुंठ इत्यादि पर ये संस्कृत में नपुंसक लिङ्ग हैं ॥

वचन—संख्याको कहते हैं वे दो हैं एक वचन और बहुवचन जिस रूप में एकका बोध हो उसे एकवचन जैसे लड़का, गोड़ा इत्यादि ॥

उक्त संकेतों के अनुसार नामपदों को पदार्थसमस्तविभक्त्यर्थेण पुंस्त्वस्त्रीत्वेनपुंस्त्व

का क० कर्म वाच्य का कर्म० करण वाच्यका म०, अधिकरण वाच्य  
भाववाच्य का भा० लिखा गया है ॥

मत्पय

अन, अ, ति, अ,

( संस्कृत में अनट, अल, क्ति, घञ्, ) इन मत्पयों के योगसे शब्द निष्पन्न होता है ( कहीं २ संज्ञा शब्द भी होता है ) मकट हो कि अल मत्पय के ट, ल, काम में नहीं आते इस कारण अनट, अ स्थान में अन, अ को लिखते हैं अन, अ, ( अनट, अल ) के प्रायः सब धातु के उत्तर भाववाच्य में अन, अ, मत्पय होता है अन, अ, के योग से धातु का पूर्ण पूर्ववर्ती इ, उ, अट्, के स्थान में ए, ओ, अर्, हो जाता है एवं धातु के स्थित इ, ई, के स्थान में अट् उ ऊ के स्थान में अट्, अट् अट् के स्थान अर् साञ्चि + अन = सञ्चयन इत्यादि ॥ विच्छिप + अ = विच्छेप । वि + अन = चय

ति ( क्ति )

प्रायः सब धातु के अन्त्य में भाववाच्य में ति मत्पय होता है ति कभी न धातु में युक्त हो जाता है यथा शक् + ति = शक्ति । कभी २ ति मत्पय के परे धातु के अन्तिम, एवं न, का लोप हो जाता है यथा गम् + ति = गति । आहन् + ति = आहति और कभी २ ति के परे धातु के अन्त स्थित म को न हो जाता है और मध्यम स्वर दीर्घ हो जाता भ्रम् + ति = भ्रान्ति इत्यादि ॥

अ ( घञ् )

धातु के उत्तर भाववाच्य में अ मत्पय होता है अ मत्पय के योग से धातु के उपांत अ को आ हो जाता है और इ के स्थान में ए और उ को अर् हो जाता है यथा स्वाद् अ = स्वाद् एवं अ मत्पय के योग के अन्त ई ई के स्थान में आट् उ ऊ के स्थान में आट् अट् अट् के आट् हो जाता है यथा अवि इ + अन्ययों के योग से विशेषण कश्च लि-

अक, ठ, इन, इण्ण, अन, उक, र, अ, आन, स्पमान, किप्, त, तव्य, अनीय, य, स, इ, य ( संस्कृत क्रम से अक, ठण, णिन्, इण्ण, अन, उर; रं, (ः ए, यण, श, उ, ) आन, स्पमान ॥  
 किप्, त, तव्य, अनीय, य, वयप्, वयण्ण, सत्, भि, यस् उक्त मत्पयों का प्रयोग अर्थात् इस्तामाल,

( अक=एक )

धातु के उत्तर कर्तृवाच्यमें अक मत्पय होता है अर्थात् धातुके साथ अक मत्पय के योग से कर्तृबोधक शब्द निपद्य होता है अक मत्पय के योग से धातुके इकारादि अन्तस्वर के स्थानमें आय् इत्यादि होजाता है एवं उपान्त का अदीर्घ आ हो जाता है और इकारादिके स्थानमें एकारादि होजाता है, एवं आकारान्त अकारान्त धातु के पीछे अक मत्पय के पूर्वमें य का आगम होजाता है यथा नी + अक=नायक, पठ् + अक=पाठक, भिद् + अक=भेदक, कृ० + अक=कारक, दा + अक=दायक ॥

( ठ=ठण् )

धातु के उत्तर ठ मत्पय होने से कर्तृवाच्य होता है ठ मत्पय के योगसे धातु के अन्त्य और चर्वांतिप इकारादिके स्थानमें एकारादि होता है यथा नी + ठ=नेता, नी + ठ=नेता, स्तु + ठ=स्तोता, कृ + ठ=कर्ता, ह + ठ=हर्ता, आ, ह + ठ=आहर्ता, बिद् + ठ=देत्ता, भिद् + ठ=भेत्ता ॥

( इन्=णिन् )

धातु के परे कर्तृवाच्य में इन् मत्पय होता है इन् मत्पय के योग में धातुके इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आय् प्रभृति होजाता है एवं उपान्त के अ को आ हो जाता है और इकारादि के स्थानमें एकारादि होजाता है एवं अकारान्त धातु के उत्तर इन् मत्पयके परे यकार का आगम होता है यथा शी + इन्=शायी, वद + इन्=वादी, भिद् + इन्=भेदी, स्था + इन्=स्थायी, दा + इन्=दायी, पा + इन्=पायी, या + इन्=यायी ॥

( इण्ण )

चर, सर, वृष्ट, निर, आ, कृ, और कई एक धातु के उत्तर में कर्तृवाच्य में इण्ण मत्पय होता है इण्ण मत्पय के योगसे धातु के अन्त और चर्वांतिप इकारादि एकारादि होजाता है यथा चर् + इण्ण=चरिण्ण, वृष्ट + इण्ण=वृष्टिण्ण, अलं, कृ + इण्ण=अलंकारिण्ण इत्यादि ॥



## योग्यार्थ और कर्मवाच्य

( तव्य )

यह प्रत्यय प्रायः बहुत धातुओं के साथ योग किया जाता है प्रायः योग्यार्थ और कर्मवाच्य में तव्य होता है तव्य के योग में धातु के अन्त्य किंवा उपान्त स्थित इकारादिके स्थान में एकारादि हो जाता है। एवं जिस धातु का ( औ ) अनुबन्ध नहीं है ऐसे धातु के उत्तर एवं वृ, दिव, धि, दी, शी, पू, रु, लु, स्तु, चि, क्षण, धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकारका आगम हो जाता है तद्भिन्न एक स्वर आ, इ ई, उ ऊ, और ऋकारान्त धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकारका आगम नहीं होता है यथा चि + तव्य = चेतव्य, बुध + तव्य = बोद्धव्य, दा + तव्य = दातव्य ॥

## कर्मवाच्य और योग्यार्थ

( अनीय )

यह प्रत्यय प्रायः सकल धातु के उत्तर कर्मवाच्य और योग्यार्थ में होता है अनीय प्रत्यय के योग में धातु के अन्त्य इ ई, उ ऊ, ऋ के स्थान में अय्, अय् अर् हो जाता है एवं उपान्त के इकारादिके स्थान में एकारादि हो जाता है यथा चि + अनीय = चयनीय, भिद् + अनीय = भेदनीय, भृज्, यज्ञ्, जप्, आ, नम् धातु के उत्तर एवं जिन सब धातुओं के साथ ( य = द्यप् ) किंवा ( य = क्यप् ) प्रत्यय का योग नहीं किया जाता है तिसके परवान् प्रायः कर्मवाच्य में और योग्यार्थ में य प्रत्यय होता है य प्रत्यय के योग में तव्य प्रत्ययान्त धातु के अनुसार स्वरका परिवर्तन होता है अर्थात् बदल जाता है एवं धातु का अन्त्य आ एकारसे परिवर्तित होता है यथा चि + य = चेय, भिद् + य = भेद्य, दा + य = देय, धा + य = धेय, हा + य = ह्येय, वि - हा + य = वित्थेय ।

( य = क्यप् )

वृ, दृ, भृ, स्तु, इ, शम् एवं ऋकारान्त धातु के उत्तर एवं और कई एक धातु के उत्तर प्रायः कर्मवाच्य नित्य ( य, क्यप् ) प्रत्यय होता है कृ, वृप्, मृत्, गुद्, दुद्, शोप्, संभृति वा अपि अभिपूर्वक यह धातु के उत्तर विकल्पा से ( य, क्यप् ) होता है य प्रत्यय के योग में धातु के स्वरका परिवर्तन नहीं होता अर्थात् नहीं बदलता यथा भृज् + य = भृज्य, गुह् + य = गुह्य परन्तु वृ, आ, दृ, भृ, स्तु, कृ धातु के उत्तर ( य, क्यप् ) प्रत्यय के पूर्व तका आगम हो जाता है यथा भृ + य = भृय, आ, दृ + य = मादृय ।

इकारान्त वा उकारान्त एवं इत्यन्त अथवा अङ्कारान्त धातु के उत्तर कर्म-  
वाच्य में (य, ध्यण्) होजाता है य मत्पय के योग में धातु के इकारादि  
अन्त्यस्वर आय् आदि के रूप में बदलजाता है एवं उपान्त्यका इकारादि  
स्वर एकारादि में परिवर्तित होजाता है एवं जन्, वध धातुको छोड़ अन्य  
धातुका उपान्त्य अ को आ होजाता है यथा भ्रु + य = भ्राच्य, दुह + य = दौघ,  
क्रम् + य = क्राम्य ।

( इ, जि )

धातुके परे मेरुगार्थ में और स्वार्थ में इ मत्पय होता है इस मत्पय के होने  
में शब्द निष्पन्न नहीं होता है धातु के उत्तर इ मत्पय क्रियाभाय तिसके परे  
और कोई एक मत्पय करते हैं इ मत्पय के परे धातु के अन्त्य इकारादि के  
स्थान में आय् इत्यादि एवं उपान्त्य के इकारादि के स्थान में एकारादि हो-  
जाता है परन्तु कभी २ इ मत्पय का लोप होजाता है वा कभी इ मत्पयका परि-  
वर्तन अय् से होजाता है यथा कृ + इ + त = कारित, कृ + इ + त् = कारयित्ता,  
सुर् + इ + त = चोरित ।

( स, सन् )

धातुके परे इच्छार्थ में स मत्पय होता है इस स मत्पय के करने में और एक  
मत्पयका योग होता है स मत्पय के परे एक स्वर के सहित धातुके आद्य अक्षर  
की द्विकृति अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विकृति के क को ख होजाता है  
और ग को ज और भ को व एवं ष को द होता है यथा कृ + स = आ = चि  
कीर्षा, वा + स = आ = पिपासा, गुप् + स = आ = जुगुप्सा ।

स मत्पय के परे लभ्, दा, आप् के स्थान में क्रमशः लिप्, दिप्, इप्  
होजाता है यथा लप् + स = आ = लिप्सा, दा + स = आ = दिप्सा, बि-  
प् + स = आ = बीप्सा ।

( य, यद् )

धातु के उत्तर पुनः पुनः अर्थात् बारंबार अर्थ में य मत्पय होता है य  
मत्पय के परे एक मत्पय और होता है य मत्पयके परे एकस्वर सहित धातुके  
आद्यवर्गकी द्विकृति अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विकृति के क को ख होजाता  
है ग को ज और ष को द एवं भ को व होजाता है यथा दीप् + य = आ =  
द्विदीप्सा इति य मत्पय का द्विगो २ स्थान में लोप होजाता है किन्तु

मार पीट और चोना से घोआई ठगनासे ठगाई सिलनासे सिखायट लिखना से लिखायट ॥

४ करणवाचक वह है जिसके द्वारा कर्ता व्यापार को सिद्ध करता है उसके बनाने का नियम यह है कि धातु के ना के आ को ई कर देने से कहीं रना का लोप करके ना से पूर्व अक्षर में आ लगाने से कोई र धातुही करणवाचक का काम देती है यथा कतरना से कतरनी खोदना से खोदनी घेरना से घेरा फेरना से फेरा बेलना यह धातु ही करण का काम देती है ॥

५ क्रियाद्योतक संज्ञा वह है जो संज्ञा का विशेषण होके निरन्तर क्रिया को जगावे, उसके बनाने की रीति है कि धातु के न चिड को ता करने से और स्त्रीलिङ्गमें ती करने से बनती है अथवा उसके आगे हुआ लगानेसे बनती है यथा देखता देखताहुआ इत्यादि ।

इति कृदन्तमकरणम् ।

१ अन्वय अन्वय=नहीं व्यय=माश, ज्ञय सर्व ।

अन्वय उसे कहते हैं जिस में लिङ्ग वचन कारक के कारण विचार नहीं होता है सदा एक सा रहता है अन्वय चार प्रकार के हैं क्रियाविशेषण उभयान्वयी, शब्दयोगी, विस्मयादिषोषक देशभाषा में क्रियाविशेषण बारंबार आते हैं वे पांच सर्व नामों से बने हैं उनका एक कोष्ठ आगे दिया गया है यह वह कौन जौन तौन इन पांच सर्व नामों से स्थलवाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाणवाचक, क्रियाविशेषण—अन्वय बनते हैं ॥

यह	वह	कौन	जौन	तौन	
१ अथ	०	कथ	जथ	तथ	कालवाचक
०	०	कद्	जद्	तद्	
२ यहाँ	वहाँ	कहाँ	जहाँ	तहाँ	स्थलवाचक
३ इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४ यों	वों	वयों	ज्यों	ज्यों	गुणवाचक वा
५ ऐसा	वैसा	कैसा	तैसा	जैसा	
६ इसा	उसा	किसा	जिसा	तिसा	परिमाणवाचक
७ इतना	उतना	किना	जितना	तितना	

समुच्चय शोषक या उभयान्वयी अन्वय जो दो शब्दों या दो वाक्यों के बीच में आते हैं और प्रत्येक पद को भिन्न २ क्रिया सहित अन्वय का

सदृशोक्तिपुलिङ्गुसर्वासुच विभक्तिपु । बनेपुंचसर्वेषु यन्मन्वेतितदन्वयम् ॥

संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हें संयोजक और विभाजक अव्यय कहते हैं जैसे राम और कृष्ण आये ।

संयोजक अव्यय

विभाजक अव्यय

और तथा

वा

और यदि

अथवा

एवं जो

वषा

अथ भी

परंतु

कि पुनः

किन्तु

तो पुनः

पर

फिर

चाहे

जो

शब्द योगी अव्यय जब नाम या सर्वनाम के संग न आवे तो क्रिया विशेषण होने हैं जैसे नाम या सर्वनाम के साथ उदाहरण जिस लिये उस बिना किमलिये इत्यादि गोपीसहित कृष्ण आये गोपालसमेत कृष्ण आये क्रिया विशेषण जैसे बाहर गया पीछे गया ।

शब्द योगी अव्यय ।

आगे पीछे भीतर ऊपर बाहर बराबर बदल बदले समीप बीच पास तले ऊपर बिना साथ सहित समेत समस्त लिये प्रभृति ॥

विस्मयादिबोधक या केवल प्रयोगी अव्यय निर्म अव्ययों से करने वाले का दुःख दर्प धिक्कार धन्यता इत्यादि के भाव या दशा का बोध होता है वे विस्मयादि बोधक हैं ।

दुःख और धिक्कार बोधक वा भे, हाय, हाय, अरे, रे, हा, धिक् दूर दूर चुर, झी, आदि, दर्प और धन्यता बोधक अथ अथ, शाशान्, बाहबाह, धन्य धन्य, सम्पुत्री वारण बोधक—अथ, ओ, अरे, अवे ॥

'नीचे के अव्यय संस्कृत और भाषा में उपसर्ग कहते हैं उप=ऊपर + सृज =सर्ग, सृज=चनाना ) उपसर्ग प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्वयुक्त होके क्रिया के भिन्न-अर्थ का प्रकाश करते हैं वे एक के लो चार तक क्रिया के पूर्व में आते हैं यथा विहार, व्यवहार, सुव्यवहार, 'समाभिव्यवहार' उपसर्ग योजक हैं वाचक नहीं संयुक्त होकर दूसरे का अर्थ प्रकाश करते हैं अभ्ययुक्त रहने से निरपेक्ष रहने हैं उपसर्ग से धातु का अर्थ बदल जाता है यथा हार आहार महार संहार इत्यादि ॥

(१) उपसर्गलघुत्वयोर्बलादन्यत्रनीयते । महाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥

## अब मैं अपना संक्षेप वृत्तकाउल्लेख करता हूँ ।

मेरे पितामह पण्डित रामप्रसाद जी जोकि पौराणिक और अपने समय में वैद्य शिरोमणि थे कान्यकुब्ज मुहल्ला पकरंदनगर शुहानडोला के निवासी थे और मेरे पिता भी पण्डितलालमणिजी पुराण, ज्योतिष, वैद्यक के ज्ञाता थे उन्होंने सरकारी नौकरी भी १४ वर्ष पर्यन्त की और समयानुसार मुझे सातवर्ष की अवस्था से १६ वर्ष पर्यन्त संस्कृत अध्ययन कराकर फारसी और गणितविद्या पढ़ने को उपदेश किया उन्हीं के आशीर्वाद से मैंने कुछ सीख पाया जिस का फल आप सज्जनों की सेवा में अर्पण किया जाता है ॥

इस अभिधान के बनाने में निम्न कोषों और समाचार पत्रों की सहायता ली गयी है ॥

कैलन साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेजी कोष ।

फार्थ साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेजी कोष ।

बेट साहेब का हिन्दी अंगरेजी कोष ।

पण्डित तारानाथ वाचस्पतिका शब्दस्तोम महानिधि ।

वाचन शिवरामआमेकृत संस्कृत अंगरेजी कोष ।

श्याम राधालाल साहेब का शब्द कोष ।

प्रतिष्ठित बंगवासी समाचार पत्र कलकत्ता और राजा रामलालसिंह काले-कांकरका हिन्दोस्तान नामक समाचार पत्रादि इस कोष के मुद्रित कराने में मेरे चित्त में कई कारणों से नाना प्रकार के संकल्य बिरला उत्पन्न होते थे पर श्री कृष्ण पबंशोद्भव लखीमपूरनिवासी पण्डितवेचेलालात्मज मनीषिमाननीय पण्डित बन्नी नारायणमिश्र हेदमास्टर नार्मलस्कूल लखनऊ की निर्भर सहायता और मेरणा से कटिबद्ध होकर इस को मुद्रित कराया ॥

परन्तु होकि सिवाय मेरे वक्त कोष गोबर्द्धन उपनाम मान त्रिपाठि कान्य-कुब्ज निवासि की दूकान अपीनाबाद शहर लखनऊ में भी ग्राहक जनोंको मूल्य प्रेषित करने पर प्राप्त हो सकेगा ।

## सन्धिप्रकरण ॥

- १ अक्षरों के मेलको सन्धि कहते हैं ॥
- २ उनमें आगम और आदेशादि होते हैं ॥
- ३ पदके बीचमें ऊपर से जो अक्षर आता है वह आगम कहा जाता है ॥
- ४ जो किसी वर्णके स्थान में दूसरा वर्ण बनाया जाता है उसे आदेश कहते हैं ॥

## स्वरसन्धिः ॥

- ५ अ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ से कोई असंख्य स्वरपरे होता है तब उक्त वर्णों के स्थान में क्रमसे य व र ल् आदेश किये जाते हैं उदाहरण यथा—यदि अवि=दक्षवि । देवी आगता=देव्यागता । यहाँ इ ई को ए और मधु अत्र=रुच्यत्र । वधू आगमन=वध्यागमन । यहाँ उ ऊ को व और पितृ अर्थ=पित्रर्थ यहाँ ऋ को र और लृ इन्=लित् यहाँ लृ को ल् आदेश होना है ॥
- ६ अ य ए ओ औ के पीछे कोई स्वर आता है तब चारों वर्णों को क्रम से अय आय अव् आव् आदेश होना है । यथा—ने अति=नयति । गो आते=शयाने विनै अह=विनायक । भो अन्न=भवन । पौ अक=पावक इत्यादि ॥
- ७ परान्तु जब पदके अन्त में ए ओ से परे अकार ह्रस्व आनेपर अकारका लोप होना है ॥ यथा—ते अत्र=तेऽत्र । पठो अत्र=पठोऽत्र इत्यादि ॥
- ८ जिस सङ्ज्ञा अर्थात् नामके अन्त में विभक्ति हो उस ( विभक्ति सहित ) को पद कहते हैं ॥
- ९ अ इ उ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ दीर्घ और अ इ उ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ दीर्घ और अ इ उ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ दीर्घ और अ इ उ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ दीर्घ कहते हैं एक मात्रिकको ह्रस्व द्वित्रात्रिकको दीर्घ और विमात्रिक को छुन कहते हैं । मात्राका अर्थ परिमाण है ॥
- १० पर गवादिकों के मध्य में अ का आगम होना है यथा—गो इन्द्रः=गो अ इन्द्रः यहाँ अकारका आगम हुआ=गवइन्द्रः यहाँ ओ का अव् आदेश होकर स्वरहीन वर्ण पर अक्षर में मिलगये और नियम ११ के अनुसार गवेन्द्रः सिद्ध हुआ । गो अग्रम्=गवाग्रम् । गोऽग्रम् नियम ७ के अनुसार हुआ ।

[illegible][illegible][illegible]

१. विद्याद्वयं यः प्रपश्यति तस्य भवति ब्रह्मविद्  
 २. यस्यां हि चतस्रः जगत्प्रपञ्चः स्रज्जलं च  
 ३. यथा हि जगत्प्रपञ्चः स्रज्जलं च तद्वत्  
 ४. तस्मात्तद्वत्तु यः प्रपश्यति तस्य भवति ब्रह्मविद्  
 ५. यस्यां हि चतस्रः जगत्प्रपञ्चः स्रज्जलं च  
 ६. यथा हि जगत्प्रपञ्चः स्रज्जलं च तद्वत्  
 ७. तस्मात्तद्वत्तु यः प्रपश्यति तस्य भवति ब्रह्मविद्  
 ८. यस्यां हि चतस्रः जगत्प्रपञ्चः स्रज्जलं च  
 ९. यथा हि जगत्प्रपञ्चः स्रज्जलं च तद्वत्  
 १०. तस्मात्तद्वत्तु यः प्रपश्यति तस्य भवति ब्रह्मविद्

१. अथ श्रुत्वा मे प्रोक्तं किंचिदपि न जानाति ।  
न श्रुत्वा ह तत्र न हि जानाति ।  
न ह तत्र न जानाति ।  
न ह तत्र न जानाति ।

1. 1945년 8월 15일  
 2. 1945년 8월 15일  
 3. 1945년 8월 15일  
 4. 1945년 8월 15일  
 5. 1945년 8월 15일  
 6. 1945년 8월 15일  
 7. 1945년 8월 15일  
 8. 1945년 8월 15일  
 9. 1945년 8월 15일  
 10. 1945년 8월 15일

1. 6월 11일 18:00 ~ 19:00  
 2. 6월 12일 18:00 ~ 19:00  
 3. 6월 13일 18:00 ~ 19:00  
 4. 6월 14일 18:00 ~ 19:00  
 5. 6월 15일 18:00 ~ 19:00  
 6. 6월 16일 18:00 ~ 19:00  
 7. 6월 17일 18:00 ~ 19:00  
 8. 6월 18일 18:00 ~ 19:00  
 9. 6월 19일 18:00 ~ 19:00  
 10. 6월 20일 18:00 ~ 19:00  
 11. 6월 21일 18:00 ~ 19:00  
 12. 6월 22일 18:00 ~ 19:00  
 13. 6월 23일 18:00 ~ 19:00  
 14. 6월 24일 18:00 ~ 19:00  
 15. 6월 25일 18:00 ~ 19:00  
 16. 6월 26일 18:00 ~ 19:00  
 17. 6월 27일 18:00 ~ 19:00  
 18. 6월 28일 18:00 ~ 19:00  
 19. 6월 29일 18:00 ~ 19:00  
 20. 6월 30일 18:00 ~ 19:00

अथ विमर्शमन्थ ।

[illegible]

- यथा-उच्चतः तदा=उच्चतस्ततः । नयाः तीरम्=नदास्तीरम् । र  
 यदि=रामस्यंरदति । यद्दत्तःसन्नोति=यद्दत्तसन्नोति ॥  
 १७ यदि विसर्ग से ट ठ ड परे हो तो विसर्ग को ए आदेश होनाता है । य  
 धनुःपट्टारः=धनुपट्टारः । भग्नः ठङ्गाः=भग्नपट्टारः । कःपट्टः=कपट्टः  
 क= यदि विसर्ग से परे च, छ, श, हो तो (ः) को श आदेश होता  
 यथा-पूर्णःचन्द्रः=पूर्णचन्द्रः । रवेःद्विः=रवेरद्विः । नरःशङ्खे  
 नरःशङ्खे ॥  
 १८ यदि पदके मध्य में न् वा म् हो तो उनको अनुस्वार होनाता है जब  
 कि वर्गोंका मध्य द्वितीय तृतीय चतुर्थ और श प स ह परेहो तो ।  
 यथा यशान्मी=यशांसी । किम करोपि=किकरोपि ॥  
 १९ यदि पदके अन्त्य में ण होवे उससे परे व्यञ्जनहो तो म् को अनुस्वार  
 होनाता है । यथा-हरिम् बन्दे हरिबन्दे।चन्द्रम् परपति=चन्द्रंरपरपति ॥  
 २० यदि अकारके नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे ह्रस्वअकार होवे तो  
 पूर्व अकार सहित विसर्ग को ओ आदेश होनाता है उसओ में पूर्व वर्ण  
 को मिला देते हैं ओसे परे अकार का लोपकरके ऽ ऐसा रूप छित्त  
 देते हैं यथा—वेदः अधीतः=वेदोऽधीतः । नरः अयम्=नरोऽयम् ॥  
 २१ यदि ञः के परे वर्गका तृतीय चतुर्थ वा ह, य, व, र, ल, न, म, हो  
 तो ञः को ओ बनजाता है । यथा-चौरः हरति=चौरोहरति ॥  
 नरःपाति=नरोपाति पण्डितःभरति=पण्डितोभरति=इत्यादि ॥  
 २२ यदि अ वा को छोड़ किसी स्वर मे परे विसर्ग हो और उसकेपर कोई  
 स्वर वा ह, य, व, र, ल, न, म, वा किसी वर्गका तृतीय चतुर्थ वर्ण  
 हो तो विसर्ग को र हल बनजाता है, यथा—द्विःअयम्=द्विरयम् ।  
 शमुः इति=शमुःइति । हरेःवचनम्=हरेर्वचनम् इत्यादि ॥  
 २३ यदि सः और एषः के परे अकार को छोड़ कोई स्वर वा व्यञ्जन वर्ण  
 होतो सः और एषः की विसर्ग वा छोप होनाता है और लोप होनेर  
 मन्विनहीं होती है । यथा—सःआगतः=स आगतः । सःइच्छति=सइच्छ-  
 ति । सःकरोति=सकरोति । सःइयति=सइयति । एषः आयाति=एष  
 आयाति । एषःहेने=एषहेने इत्यादि ॥  
 २४ यदि हलांक वा अकार वादः चौथाई पूर्ण करना हो तो मन्वि हो  
 जावेगी ॥



२६ : वर्गके प्रथम तृतीय अक्षरों से किसी वर्गका पञ्चम अक्षर परेहो तो इनको भी अपने वर्गका पञ्चमवर्ण प्रायः बनजाता है । यथा-त्वक्मांसम्=त्व-  
 आंसम् । दूसरारूप नियम ३० से त्वग्मांसम् । तन्मित्रम्=तन्मित्रम् ॥  
 ३० च ट त क प को ज ड द ग व आदेश होजाते हैं यदि स्वर वा इ य  
 व र वा वर्गका तृतीय चतुर्थवर्णपरेहो तो । यथा-वाक् ईश्वरः=वागी-  
 श्वरः । धिक् लोभिनम्=धिग्लोभिनम् । वाक् दानम्=वाग्दानम् ।  
 जगत् ईशः=जगदीशः । महत् धनुः=महद्भनुः । अच् अन्तः=अजन्तः ।  
 पद् अत्र=पद्म । वक् पु ऐन्द्री=वक्कुब्जरी इत्यादि ॥

३१ किसी वर्गके दूसरे तीसरे चौथे अक्षरों को वन २ का प्रथम अक्षर  
 भी होजाता है यदि वर्गके प्रथम द्वितीयवर्ण वा श प स परेहो तो ।  
 यथा-उद् यानम्=उत्थानम् । त्वग् तत्र=त्वक्तत्र इत्यादि ॥

३२ यदि किसी वर्गके प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थवर्ण से परे ड हो तो ड  
 को उसी का चतुर्थ अक्षर होजायेगा पीछे नियम ३० के अनुसार  
 कार्य होगा । यथा-वाक् हासः=वाग्हासः । त्वच् हीनः=त्वज्भीनः । पद्  
 हसन्ति=पद्दहसन्ति । तद् हविः=तद्दहविः । वक् पु हासः=वक्कुम्भासः ॥

३३ ह्रस्व स्वर से परे छ होवे तो उसके पूर्व च वा आगम होता है अर्थात्  
 च अधिक होजाता है ॥ परन्तु दीर्घस्वर से परे च होता और नहीं  
 भी होता । यथा-परिच्छदः=परिच्छदः । वृत्तच्छाया=वृत्तच्छाया ल-  
 स्मीच्छाया । लक्ष्मीच्छाया ।

३४ अनुस्वार से परे किसी वर्गका कोई अक्षरहो तो अनुस्वार को उसी  
 वर्गका पञ्चमवर्ण बनजाता है । यथा-अंक=अङ्क । पंच=पञ्च । कंत=  
 कण्ठ । अंत=अन्त । अंध=अन्ध । अय=अम्ब । संवत्=सम्बत् । इत्या-  
 दि भाषाके ज्ञाता अनुस्वारको अनुस्वारही लिखते हैं और संस्कृत  
 अनुस्वारके बदले वर्गका पञ्चमवर्ण काममें लातेहैं परन्तु लेख दोनों  
 रीतिसे प्रचलित हैं ॥

३५ ह्रस्व स्वरसे परे ङ ग् म् हों और इनके परे स्वर हो तो इनको द्विव  
 होजाता है । यथा-मृत्यङ् आत्मा=मृत्यङ्ङात्मा । सुगम् इह=सु-  
 गम्गिह । धावन् अश्वः=धावन्श्वः । इति व्यञ्जनसन्धिः ॥

अथ विसर्गसन्धिः ॥

३६ जब किसी वर्गसे त, थ, स, परे हों तो ( : ) को स आदेश होता है ।

- यथा-उन्नतः तरुः=उन्नतस्तनुः । नद्याः तीरम्=नदास्तीरम् । रामः  
 बंदति=रामस्यंबदति । यद्दत्तः सनोति=यद्दत्तस्सनोति ॥
- १७ यदि विसर्ग से ट ठ ड परे हो तो विसर्गको ए आदेश होनाता है । यथा-  
 धनुः टट्टारः=धनुष्टट्टारः । भग्नः टट्टारः=भग्नट्टट्टारः । कः पट्टः=कप्पट्टः ॥
- १८ यदि विसर्ग से परे च, छ, श, हो तो ( : ) को श आदेश होता है ।  
 यथा-पूर्णः चन्द्रः=पूर्णश्चन्द्रः । रवेः द्यविः=रवेरद्यविः नरः शङ्खते=
- नरः शङ्खते ॥
- १९ यदि पदके मध्य में न् वा म् हो तो उनको अनुस्वार होनाता है जब  
 कि वर्गोंका प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ और श प स ह परेहो तो ।  
 यथा यशान्मी=यशांती । किम् करोपि=किंकरोपि ॥
- २० यदि पदके अन्तमें म होवे उससे परे व्यञ्जनहो तो म् को अनुस्वार  
 होनाता है । यथा-हरिम् वन्दे हरिवन्दे। चन्द्रम् परयाति=चन्द्रं परयाति ॥
- २१ यदि अक्षरके नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे ह्रस्वअक्षर होवे तो  
 पूर्व अक्षर सहित विसर्गको ओ आदेश होनाता है उस ओ में पूर्व वर्ण  
 को मिला देते हैं ओ से परे अक्षर का लोपकरके ऽ ऐसा रूप मिल  
 देते हैं यथा—वेदः अधीतः=वेदोऽधीतः नरः अयम्=नरोऽयम् ॥
- २२ यदि अः के परे वर्गका तृतीय चतुर्थ वा ह, य, वं, र, ल, न, म, हो  
 तो अः को ओ बनजाता है यथा—चौरः हरति=चौरोहरति ॥  
 नरः पाति=नरोपाति पण्डितः भवति=पण्डितो भवति=इत्यादि ॥
- २३ यदि अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उसके परे कोई  
 स्वर वा ह, य, व, र, ल, न, म, वा किसी वर्गका तृतीय चतुर्थ वर्ण  
 हो तो विसर्गको ए इल बनजाता है, यथा—कविः भयम्=कविरयम् ।  
 शत्रुः इतः=शत्रुर्इतः । हरेः वचनम्=हरेर्वचनम् इत्यादि ॥
- २४ यदि सः और एपः के परे अक्षर को छोड़ कोई स्वर वा व्यञ्जन वर्ण  
 होतो सः और एपः की विसर्गवा लोप होनाता है और लोप होनेपर  
 सन्धिनहीं होती है । यथा—सः आगतः=स आगतः । सः इच्छति=स इच्छ-  
 ति । सः करोति=स करोति । सः शयति=स शयति । एपः आयाति=एप  
 आ याति । एपः शेवे=एपशेवे इत्यादि ॥
- यदि रलोकं वा अवाचा पादः चौथाई पूर्ण करना हो तो सन्धि हो  
 जावेगी ॥



यथा-उन्नतः तरुः=उन्नतस्तारुः । नद्याः तीरम्=नद्यास्तीरम् । राम-  
वदति=रामस्यंवदति । यद्दत्तः सनोति=यद्दत्तस्तनोति ॥

३७ यदि विसर्ग से ट ठ ड परे हो तो विसर्गको प्र आदेश होजाता है । यथा-  
धनुः=द्वारः=धनुष्टकारः । भग्नः=ठकारः=भग्नष्टकारः । कः=पटः=कप्पटः ॥  
३८ यदि विसर्ग से परे च, छ, श, हो तो (ः) को श आदेश होता है ।  
यथा-पूर्णः=चन्द्रः=पूर्णश्चन्द्रः । रवेः=द्विः=रवेद्विः । नरः=शङ्खः=नरःशङ्खः ॥

३९ यदि पदके मध्य में न् वा म् हो तो उनको अनुस्वार होजाता है जब  
कि वर्गोंका प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ और श प स ह परेहों तो ।  
यथा यशान्सी=यशांसी । किम् करोषि=किंकरोषि ॥

४० यदि पदके अन्त्य में म् होवे उससे परे व्यञ्जनहो तो म् को अनुस्वार  
होजाता है । यथा-हरिम् वन्दे हरिंवन्दे। चन्द्रम् परयति=चन्द्रं परयति ॥

४१ यदि अकारके नीचे विसर्ग हो और विसर्गके परे ह्रस्वअकार होवे तो  
पूर्व अकार सहित विसर्गको ओ आदेश होजाता है उस ओ में पूर्व वर्ण  
को मिला देते हैं ओ से परे अकार का लोपकरके ऽ ऐसा रूप मिल  
देते हैं यथा—वेदः अधीतः=वेदोऽधीतः । नरः श्वयम्=नरोऽश्वम् ॥

४२ यदि अं के परे वर्गका तृतीय चतुर्थ वा ह, य, व, र, ल, न, म, हो  
तो अं को ओ बनजाता है । यथा—चौरः हरति=चौरोहरति ॥  
नरः पाति=नरोपाति पण्डितः भवति=पण्डितो भवति=इत्यादि ॥

४३ यदि अ आ को छोड़ किसी स्वर से परे विसर्ग हो और उसके परे कोई  
स्वर वा ह, य, व, र, ल, न, म, वा किसी वर्गका तृतीय चतुर्थ वर्ण  
हो तो विसर्ग को र हल बनजाता है, यथा—कविः श्वयम्=कविरयम् ।  
शत्रुः इतः=शत्रुर्इतः । हरेः वचनम्=हरेर्वचनम् इत्यादि ॥

४४ यदि सः और एपः के परे अकार को छोड़ कोई स्वर वा व्यञ्जन वर्ण  
हो तो सः और एपः की विसर्गवा लोप होजाता है और लोप होनेपर  
सन्धिनहीं होती है । यथा—साः आगतः=स आगतः । सः इच्छति=सहृच्छ-  
ति । सः करोति=सहकरोति । सः हसति=सहसति । एपः आयाति=एप-  
आयाति । एपः शते=एपशते इत्यादि ॥

यदि श्लोक वा श्रुचावा पाद चौपाई पूर्ण करना हो तो सन्धि हो  
जावेगी ॥



## ( पत्वविधान )

४२. अ आभिन्न स्वर और क, र, ल, के परे मत्वय का जो मकार आता है उसके स्थान में मूर्धन्य प्रकार होनाश है । यथा-मुनिम्=मुनिषु । साधुम्=साधुषु । भ्रातृम्=भ्रातृषु । सर्वेताम्=सर्वेषाम् इत्यादि अनुस्वार विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्धन्य प हो जाता है यथा-धनूंसि=धनूषि । रवींसि=रवीषि । धनुःसु=धनुषु । आशींसु=आशीषु इत्यादि ॥

४३. संहितैकपदेनित्याः, नित्यापात्पसर्गयोः । नित्यासमासे वाक्येषु, सावि वत्तामरेक्षणे ॥

## ( अर्थ )

सन्धि एक पद में और पातु वपसर्गसमास में सदैव होती है और जब पद मिलकर वाक्य बनता है तब वत्ता के अधीन है ॥

## ( इति सन्धिव्याख्यानम् )

विभक्तिहीन शब्दों को नाम कहने हैं वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहाश है ॥

पदों के मेल को समास कहते हैं ।

समास ६ प्रकार का है ।

१. अव्ययी भाव २. तत्पुरुष ३. द्वन्द्व ४. बहुव्रीहि ५. कर्मधारय ६. द्विगु ॥

१. अव्ययीभाव उसे कहते हैं जिसमें समीप, आदर, उल्लङ्घना अभाव अर्थ पाये जावें और कई एक पदों के मेल से समास होता है उन पदों में मध्यम पद अव्यय होता है । यथा-निर्दोष । यथाशक्ति । उपकूल । निर्विष । आसमुद्र । प्रतिगृह । समल ॥

२. तत्पुरुष उसे कहते हैं जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि दे सप्तमी पर्यन्त कोई विभक्ति युक्त हो और परे के पद में प्रथमाविभक्ति हो । यथा-यर गया । लोभनित । मनछोभी । सर्गमय । राजपुत्र । गुरुपौत्रम इन शब्दों में द्वितीयादि दे सप्तमी तर की विभक्तियुक्त हैं ॥

३. द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिस में परस्पर पद विशेष्य विशेषण नहीं पर मध्यमाविभक्ति युक्त अनेक पदों इस समास के मध्य में संस्कृत में

यथा-सःएपदाशरपीरायः=सैपदाशरपीरायः । सःएपराजा युधिष्ठिरः=  
मैपराजा युधिष्ठिरः । सःएकर्मोमहस्यागी=मैपकर्मोमहस्यागी । सःएप  
भीमो महावनः=सैपभीमो महावनः । यहाँ विसर्ग का लोप होनेपर  
भी मन्थि होगई ॥

१४ अ सेपरे विसर्ग का लोप होजाताहै जबकि अ की छोड़ कोई अन्यस्वर  
परे हो । यथा-देवःआगच्छति=देवआगच्छति । तथा आ से आगे वि-  
मने का भी लोप होजाता है यदि कोई स्वर वा वर्गका तृतीय चतुर्थ  
पञ्चम वा षष्ठ्य वर ल परे हो । यथा-मनुष्याःनिवसन्ति=मनुष्यानि-  
वसन्ति । वानाःवान्ति=वानावान्ति इत्यादि ॥

१५ यदि अ इ उ के नीचे विसर्ग हो और विसर्ग के परे र हो तो विसर्ग  
को हन र आदेश होकर लोप होजाता है और पूरे स्वर दीर्घ हो  
जाता है यथा-पुनरपने=पुनरपने=पुनरपने । शुक्तिःकृष्यात्मनामा-  
नि=शुक्तिरूप=शुक्तीकृष्यात्मनामानि इत्यादि ॥

१६ यदि स्वर वा वर्गका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वर्ग वा षष्ठ्य वर ल भोग्यद  
के परे होवें तो भोः के नीचे विसर्ग का लोप होजाता है लोप होनेपर  
मन्थि नहीं होती है ॥

यथा-भोःगदावर=योगदावर । भोःअश्वरीय=भो अश्वरीय इत्यादि ॥

४९ कभी स्वर के परे भोः शब्द की विसर्ग को यू भी बन जाता है  
यथा-भोः ईशान भोयीशान । भोः उपायने=भोयुपायने ।

इति विसर्गमन्थिः ॥

( एत्वविधान )

५० अ अर व इनके परे न को ल आदेश होता है । यथा-नृ नाम=नृ  
नाम । माननाय=म नृनाम । मर्तेन=मर्तेण । वृषने=वृषणे । इत्यादि  
यदि स्वर वर्ग वा वर्ग पञ्चम वा षष्ठ्य वर ल और अनुस्वार मध्य में  
स्वरान् अर्थात् रोक्तेवसे हो तो भी न को ल बनजावेगा यथा-  
मर्तेन=मर्तेण । दपेन=दपेण । मृगेन=मृगेण । पूर्वोक्त वर्गों को छोड़  
और वर्गों के व्यवधान होनेमें न को ल कभी न होगा । यथा-अर्चना ।  
हरेन । अर्चन इत्यादि में न को ल नहीं हुआ ।

५१ पढ़के अन्त में नृ हो तो ल कभी न होगा । यथा-इगीनृ । मुहन् ।  
नृगन् । इत्यादि ॥

## ( पत्वविधान )

म आभिन्न स्वर और क, र, ल, के परे मत्वय का जो सकार आता है उसके स्थान में मूर्धन्य प्रकार होना है । यथा—मुनिमु=मुनिषु । साधुमु=साधुषु । भ्रातृमु=भ्रातृषु । सर्वेसःम्=सर्वेषाम् इत्यादि अनुस्वार विसर्ग मध्य में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्धन्य प हो जाता है । यथा—धनुंसि=धनुषि । रवींसि=रवीषि । धनुःसु=धनुषु । आशीःसु=अशीषु इत्यादि ॥

संहितैरुपदेनित्या, नित्यापातुपसर्गयोः । नित्यासमासे वाक्येण, सावि वक्ष्यामि ॥

## ( अर्थ )

सन्धि एक पद में और धातु उपसर्गसमास में सदैव होती है और जब पद मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ता के अधीन है ॥

## ( इति सन्धिव्याख्यानम् )

विभक्तिहीन शब्दों को नाम कहते हैं वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहा जाता है ॥

पदों के मेल को समास कहते हैं ।

समास ६ प्रकार का है ।

१. अव्ययी भाष २. तत्पुरुष ३. द्वन्द्व ४. बहुव्रीहि ५. कर्मधारय ६. द्विगु ॥
१. अव्ययीभाव उसे कहते हैं जिसमें समीप, आदर, उल्लङ्घना अभाव अर्थ पाये जायें और कई एक पदों के मेल से समास होता है उन पदों में मध्यम पद अव्यय होता है । यथा—निर्दोष । यथाशक्ति । उपकूल । निर्विष । आसमुद्र । प्रतिगृह । समल ॥
२. तत्पुरुष समे कहते हैं जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि दे सप्तमी पर्यन्त कोई विभक्ति युक्त हो और परे के पद में मध्यमाविभक्ति हो । यथा—पर मया । लोभजित । धनलोभी । सर्पमय । राजपुत्र । पुरुषोत्तम इन शब्दों में द्वितीयादि दे सप्तमी तक की विभक्तियुक्त हैं ॥
३. द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिस में परस्पर पद विशेष्य विशेषण नहीं पर मध्यमाविभक्ति युक्त अनेक पदों इस समास के मध्य में संस्कृत में च क्चर और भाषा में च के स्थान में और आता है १२ समास बनने



यथा-सःपदाग्रधीरामः=सैपदाग्रधीरामः । सःपराज्ञा युधिष्ठिरः=  
मैपराज्ञा युधिष्ठिरः । मःपृथग्योमहस्यागी=मैपृथग्योमहस्यागी । मःपृ  
थोमो महावलः=सैपथोमो महावलः । यहाँ विमर्ग का लोप होनेपर  
भी मन्थि होगई ॥

४२ अ मेरे विमर्ग का लोप होना है जबकि अ को छोड़ कोई अन्यस्वर  
परे हो । यथा-देवःमागञ्जनि=देवमागञ्जति । तथा आ से आगे वि-  
मर्ग का भी लोप होना है यदि कोई स्वर वा वगेका तृतीय चतुर्थ  
पञ्चम वा ङ य व र ल परे हो । यथा-मनुष्याःनिवसन्ति=मनुष्या नि-  
वसन्ति । व ताःवाग्नि=वातावाग्नि इत्यादि ॥

४३ यदि अ इ उ के नीचे विमर्ग हो और विमर्ग के परे र हो तो विसर्ग  
को हन र आदेश होकर लोप होना है और पूर्व स्वर दीर्घ हो  
जाता है यथा-पुनारमने=पुनरामने=पुनारमने । शुक्तिःकृष्णामनामा-  
नि=शुक्तिरूप=शुक्तीकृष्णामनामानि इत्यादि ॥

४४ यदि स्वर वा वगेका तृतीय चतुर्थ पञ्चम वगे वा य र ल व ङ भोःपद  
के परे होवे तो भोः के नीचे विमर्ग का लोप होना है लोप होनेपर  
मन्थि नहीं होती है ॥

यथा-भोःपदाग्र=भोगदाग्र । भोःअश्वरीय=भो अश्वरीय इत्यादि ॥

४५ कभी स्वर के परे भोः शब्द की विमर्ग को घृ भी बन जाता है  
यथा-भोः ईशान सोयीशान । भोः उपायने=भोयुपायने ।

इति विमर्गमन्थिः ॥

( एत्वविधान )

४६ अ अ र व इनके परे न को ल आदेश होता है । यथा-तु नाम=तु  
नाम । मातृनाम=मातृनाम । मर्षेन=मर्षेण । पुत्रेन=पुत्रेण । इत्यादि  
यदि स्वर वगे वा वगे पञ्चम वा य, व, ङ, और अनुस्वार मध्य में  
स्वरवान् अर्थात् होइवेवाजे हो तो भी न को ल बनतावेगा यथा-  
मर्षेन=मर्षेण । द्यौन=द्यौण । मृगेन=मृगेण । पुत्रोक्तवर्णों को छोड़  
और वलों के स्वरवान् होनेमें न को ल कभी न होगा । यथा-अर्थना ।  
ह्येन । अर्थेन इत्यादि में न को ल नहीं हुआ ।

४७ वरुके अन्त में न हो तो ल कभी न होगा । यथा-हरीन् । मुक्त् ।  
नरान् । इत्यादि ॥

## ( पत्वविधान )

२. अन्त्यस्य स्वर और क, र, ल, के परे मत्वप का जो सकार आता है वमके स्थान में मूर्धन्य पकार होना है। यथा—मुनिम्=मुनिषु। साधुम्=साधुषु। भ्रातृम्=भ्रातृषु। सर्वेसाम्=सर्वेषाम् इत्यादि अनुस्वार विसर्ग मत्व में रहने से भी दन्त्य स के स्थान में मूर्धन्य प हो जाता है यथा—यन्सि=यन्सिपि। इन्सि=इन्सिपि। यनुम्=यनुषु। आशीम्=आशीषु इत्यादि ॥

३. संहितैकपदेनित्या, नित्यापात्पसर्गेषाः। नित्यासमासे वाक्येतु, सावि वक्ष्यामिउते ॥

## ( अर्थ )

मन्त्रि एक पद में और पातु वसर्गसमास में सदैव होती है और जब पद मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ष के अधीन है ॥

## ( इति सन्धिव्याख्यानम् )

विभक्तिरीन शब्दों को नाम कहने हैं वही नाम विभक्ति युक्त होने से पद कहता है ॥

पदों के मेल को समास कहते हैं।

समास ६ प्रकार का है।

१. अव्ययीभाव २. तत्पुरुष ३. द्वन्द्व ४. बहुव्रीहि ५. कर्मधारय ६. द्विगु ॥
१. अव्ययीभाव उसे कहते हैं जिसमें सप्ती, आदर, उल्लङ्घना अभाव अर्थ पाये जावें और कई एक पदों के मेल से समास होता है उन पदों में मध्यम पद अव्यय होता है। यथा—निर्दोष। यथाशक्ति। उपकूल। निर्विष। आसमुद्र। मन्त्रिगृह। समल ॥
२. तत्पुरुष उसे कहते हैं जिसके पूर्वपद में द्वितीयादि दे सप्तमी पर्यन्त कोई विभक्ति युक्त हो और परे के पद में मध्यमाविभक्ति हो। यथा—य गता। लोभान्न। यनष्टोमी। सर्गमय। राजपुत्र। गुरुषोचम इ शब्दों में द्वितीयादि दे सप्तमी तक की विभक्तियुक्त है ॥
३. द्वन्द्वसमास उसे कहते हैं जिस में परस्पर पद विशेष्य विशेषण पर मध्यमाविभक्ति युक्त अनेक पदों इस समास के मत्व में संस्कृत च अक्षर और भाषा में च के स्थान में और आता है पर समास

मे उसका लोप होना है । यथा—राम लक्ष्मण । माता पिता इनके मध्य में और शब्दका लोप होगया ॥

४ बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं जिसमें कई पदों से समास बनाया जावे पर पदोंका अर्थ ठीक २ न पाया जावे उनसे दूसरी वस्तु या व्यक्ति का अर्थ समझा जावे बहुव्रीहि में संस्कृत में येन, यस्य-पद आते हैं भाषा में यद्का वाचक जिस शब्दका रूप अवश्य आता है यथा—दीर्घ-बाहू इस स्थान में बड़ी दो भुजा न समझी जावेंगी बल्कि बड़ी हैं दो भुजा जिस पुरुषकी वहपुरुष समझा जावेगा अर्थात् पुरुष दो भुजावाला । अन्तर्गन्धर्व । त्रिशूलपाणि । चक्रपाणि । जलज । वंशीधर । निषेध भना । ये समासान्त पद अपना अर्थत्याग विशेष अर्थ बताते हैं इसने दूसरेको विशेषण होते हैं ॥

५ कर्मधारय समास उसे कहने हैं जो विशेष्य और विशेषण के योगसे बने गुण्य संज्ञाको विशेष्य और उसके गुण धर्मको बतावे वह विशेषण है यथा—उष्णतरु । नीलकण्ठ । रत्नरत्न । मुन्दरपुष्प । पूर्व-वद विशेषण और परेका पद विशेष्य से मिलके कर्मधारय बना ॥

६ द्विगु समास उसे कहने हैं जिसमें पूर्वपद सत्त्वावाचक परेका पद स-वाहार अर्थात् अनेक वस्तुओंका बोधक हो यथा—त्रिभुवन पञ्चपात्र त्रिवेण । चतुर्गुण । पदशत ॥

इति समासः ॥

# श्रीधरभाषाकोष ।

अ० देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर, जिस शब्द के आदि में आता है, उसका अर्थ पलट जाता है, जैसे धर्म से अधर्म और शोक से अशोक और जब शब्द का प्रथम अक्षर स्वरहीन है तो अ के स्थान में अन् होता है और न् शब्द के आदि स्वर में मिला देने हैं जैसे अन् + अंत = अनंत, अन् + एक = अनेक इत्यादि ।

सं० अ (अव = बचाना) पु० रक्त, विष्णु, वज्रा, शिर, पिता, गुरु, वायु, कृता, समर्थ, अधिपति, मालिक ।

प्रा० अऊत { (सं० अपुत्र अ = नहीं उत { पुत्र = बेटा ) पु० जि-  
सके लड़का वाला न हो, निर्वाह,  
२ अनवशाहा, मूर्ख, जाहिल ।

सं० अंश (अंश = बांटना) पा० पु० भाग, बांट, बांटा, टुकड़ा, २ हिस्सा, दर्जा, अंश, भिन्न में उसे करने हैं कि एक पूरी चीज के बरा-

बर टुकड़े कर के उसमें से जितने लेवे उसे गुमारकुनिन्दा करने हैं ।

सं० अंशुक (अंश + अक) क० पु० बांटनेवाला, हिस्सेदार ।

सं० अंशांश (अंश + अंश) अंश का अंश, भाग का भाग, हिस्सा दर हिस्सा ।

सं० अंशी (अंश + ई) क० पु० बटाऊ, बांटनेवाला, षट्पैषा साझी, हिस्सेदार ।

सं० अंशु (अंश + उ) पु० सूर्य की, किरन, २ नेत्र, टूटाछा, मकाश ।

सं० अंशुक (अंश + क) पु० बख्श, रेशमी बख्श, टसर, रेशम ।

सं० अंशुजाल (अंशु = किरण, जाल = समूह) पु० किरन समूह, शूआयें ।

सं० अंशुधर (अंशु = किरन - धर = पानेवाला) क० पु० किरनधारी, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप, दिया, देवता, मन्त्रा, प्रतापी ।

सं० अंशुमान् क० पु० सूर्य, चन्द्रमा,

नाम सूर्यवंशी राजा का असमंजस  
का पुत्र सगर राजाका पोता ।

सं० अंगुमालिन् ( अंगु=किरन  
अंगुमाली ) माता=गति

क० पु० सूर्य, आकाश ।

प्रा० अंसनि ( सं० अंगु, अंस=बाँटना )

पु० किरन, २ भाग, ३ कंधे ।

प्रा० अंसल ( सं० अंगुष्ठ=बाँटनेवा-  
ला ) पु० साक्षी, हिस्सेदार ।

सं० अंहति ( अंह=माना + ति ) प्रा०  
श्री० रसग, दान, २ रोम ।

सं० अंहम् ( अंह + अम् ) पु० पाप,  
बुराई, रपाप, गुनाह, दुःख ।

सं० अंहिना० पु० चरण, पांव, हाड  
रेश ।

सं० अकन्ध ( अ=नहीं, कन्ध=वा-  
पर ) पु० भैया, भेड़ा, लंगर, हथौड़ा ।

प्रा० अकड़ ( अकड़ना ) मा० श्री०  
बैठ देहावन, बाँटावन, जेहो ।

प्रा० अकड़वाउ बोल० अकड़न,  
दैन्य, बाँटा, दैन्यविचित्रता ।

प्रा० अकड़मकड़ बोल० बैठ कर  
बतला, यंत्र, अभिमान, जेम्मी ।

प्रा० अकड़ना ( सं० अकड़ना अ=  
कड़ना, कड़व=मिष्टता ) कि० अ०

बैठना, देहावना, २ दुखना, दंड  
करना ३ कड़वा होना ।

प्रा० अकड़न ( अकड़ना ) पु० बाँटा,  
दैन्य, जेम्मी, अभिमान, जेम्मी-बाज

सं० अकण्टक ( अ=नहीं + कण्ट-  
क=कांटां गु० शत्रुहीन निरुपाधि,  
चैनसे, बेखतर, बेखरखशा ।

प्रा० अकय ( सं० अकथ्य, अ=नहीं  
कय=कहना ) गु० जो कहने में न  
आये, जिसका वर्णन न होसके ।

सं० अकथनीय ( अ + कथ + अ-  
नीय ) म्ये० जो कहने योग्य न हो,  
बयान से बाहर ।

प्रा० अकनि ( सं० आकर्ण्य, आ=  
चारोंओर से कर्ण=पैठना प्रा० ता०  
अव्य० गुनकर ।

सं० अकम्पन ( अ=नहीं ।  
कम्प=कांपना ) गु० दृढ़, कठोर,  
मतान्वित, पु० सत्तसविशेष ।

प्रा० अकन ( सं० अ + करण, क=  
करना ) अयोग्य, बिना इधियाए,  
बेमरय ।

प्रा० अकग ( सं० अनर्थ अन्=  
नहीं, अर्थ=मोल होना ) गु० मर्हता  
बहुत मोलका, बड़िया, कद्मूय,  
कीमती ।

सं० अकर्म ( अ=नहीं वा बुरा कर्म-  
=दाम ) पु० बुराकाम, पाप, अवयव,  
अपराध, बुराई, कुकर्म कारक ।

सं० अकर्मक ( अ=नहीं, कर्म=कर्म-  
कारक ) पु० ऐसी क्रिया जिसमें कर्म  
न हो जैसे प्राना, रुद्रा, आदि, केवल  
लगावको ।

सं० अकल (अ+कल) गु० अक्षहीन  
परमात्मा ।

प्रा० अकवार } स्त्री० गोद, गोदी,  
अकवार } शब्द, कांस २  
दाती ।

प्रा० अकवारभरना, बोल० गले  
लगाना, गोदमें लेना, मिलना ।

अ० अकस् (अकस्=उलटा) परदाई,  
बैर, विरोध, अदाबत ।

प्रा० अकसर-गु० अकेला २ तनहा  
बहुधा ।

सं० अकस्मात् (अ=नहीं, कस्मात्=  
किससे वा किसकारण, कि० वि०  
अचानक, अनचित्, अकारण, एका-  
एक, संयोग से, दैवात्, इच्छिकाकन् ।

प्रा० अकाज (सं० अकार्य अ=  
नहीं, कार्य=काम) म्र० पु० बिगाड़,  
हानि, घटी, घाटा, अनरय, नुकसान ।

सं० अकाण्ड (अ+काण्ड) गु०  
कुसमय, पेवक, अधानक, बेकस्त ।

सं० अकापट्य-भा० पु० निरदल-  
ता, ईमानदारी, बेपट्र ।

प्रा० अकाम (सं० अकर्म वा  
अकार्य) वृथा, निष्फल, बेफायदे,  
रहस्यारहित, ईकामहीन श्रेष्ठमुहूर्त्त,  
बे वरकत ।

सं० अकाल (अ=नहीं, वा बुरा,  
काल समय) पु० मंदांगी, काल,  
कुसमय, दुकाल, दुर्भिक्ष, काल २  
गु० दिनसमयका, बेकस्त, बेकस्त ।

सं० अकिञ्चन-गु० निर्धन, तिरि  
दस्त, मुकलिस ।

प्रा० अकीरति (अ+कीर्ति, कृत्  
=गाना) भा० स्त्री० अग्रश, बदनामी ।

प्रा० अकुरण्ड (सं० अ+कुपठ=  
गुठिला) गु० नाराहीन, तीक्ष्ण तेज,  
पैना ।

सं० अकुल गु० कुलदुष्ट, नीच, २ अशिव  
शिव, बेहसच नसच ।

प्रा० अकुलाना (सं० आकुल) कि०  
अ०, पवराना, दुखीहोना, व्या-  
कुलहोना, यकना, मुजतरिब होना,  
परेशानहोना ।

सं० अकुलीन (अ=नहीं, कुलीन=  
अन्वेषयानेका) गु० नीच, कुनात,  
कुलहीन, कमीना ।

प्रा० अकेला (सं० एक) गु० अकेला,  
केवल, निराला, तनहा ।

सं० अकूर (अ=नहीं, कूर=कठोर)  
गु० कोमलस्वभाव, नम्र, नर्मदिल,  
पु० श्रीकृष्णका चचा और मित्र ।

सं० अक्ष (अक्ष=फैलना) पु० परिघा  
२ घुरी वा कील, ३ पोंसा, ४  
जुमा, ५ गाड़ी, ६ रथ, ६ आँख, ७  
रुद्राक्ष, ८ बहेड़ा, ९ सर्प, १० गवड़  
११ रावणका पुत्र, १२ आत्मा ।

सं० अक्षत (अ=नहीं, क्षत=दूदाहुआ  
क्षत=नाराकरना, तोड़ना) गु०



सं० अकल (अ + कल) गु० अकलीन  
परमात्मा ।

प्रा० अंकवार } स्त्री० गोद, गोदी,  
अंकवार } शाल, काँस २  
दाती ।

प्रा० अंकवारभरना, बोल० गले  
लगाना, गोदमें लेना, मिलना ।

अ० अकस् (अवस = उलटा) परदाई,  
बैर, विरोध, अदावत ।

प्रा० अकसर-गु० अकेला २ तनहा  
बहुधा ।

सं० अकस्मात् (अ = नहीं, कस्मात् =  
किससे वा किसकारण, कि० वि०

अचानक, अनचित्, अकारण, एका-  
एक, संयोग से, दैवात्, इच्छाकन ।

प्रा० अकाज (सं० अकार्य्य अ=  
नहीं, कार्य्य = काम) र्म० पु० पिगाड़,  
हानि, घटी, घाटा, अनरय, नुकसान ।

सं० अकाण्ड (अ + काण्ड) गु०  
कुसमय, पंचक, अचानक, बेफ़सल ।

सं० अकापट्य-भा० पु० निरुद्ध-  
ता, ईमानदारी, बेपक ।

प्रा० अकाम (सं० अकर्म वा  
अकार्य्य) दृष्टा, निष्फल, बेकायदे,  
रुद्धोद्धारित, रोकामहीन श्रेष्ठमुहूर्त्त,  
बे फ़लकन ।

सं० अकाल (अ = नहीं, वा बुरा,  
काल समय) पु० मर्दगी, काल,  
कुसमय, दुकाल, दुर्भिक्ष, कष्ट २  
गु० यिनसमयका, बेक़तु, बेफ़सल ।

सं० अकिञ्चन-गु० निर्धन, तिही-  
दस्त, मुफ़लिस ।

प्रा० अकीरति (अ + कीर्ति, क्त्  
= गाना) भा० स्त्री० अपश, बदनामी ।

प्रा० अकुण्ड (सं० अ + कुण्ड =  
गुठिला) गु० नाशहीन, तीक्ष्ण तेज,  
पैना ।

सं० अकुल गु० कुलदुष्ट, नीच, २ अशिव  
शिव, बेहसब नसब ।

प्रा० अकुलाना (सं० आकुल) क्रि०  
अ०, पचराना, दुखी होना, व्या-  
कुल होना, थकना, मुझतरिब होना,  
परेशान होना ।

सं० अकुलीन (अ = नहीं, कुलीन =  
अच्छे घरानेका) गु० गीघ, कुजात,  
कुलहीन, कमीना ।

प्रा० अकेला (सं० एक) गु० अकेला,  
केवल, निराला, तनहा ।

सं० अक्रूर (अ = नहीं, क्रूर = कठोर)  
गु० कोमलस्वभाव, नम्र, नर्मदिल,  
पु० श्रीकृष्णका चचा और मित्र ।

सं० अक्ष (अक्ष = फैलना) पु० पहिया  
२ घुरी वा कील, ३ पाँसा, ४  
जुआ, ५ गाड़ी, रथ, ६ आँस, ७  
रुद्राक्ष, ८ बहेड़ा, ९ सर्प, १० गड़द  
११ रावणका पुत्र, १२ आत्मा ।

सं० अक्षत (अ = नहीं, क्षत = टूटा हुआ  
क्षण = नाश करना, तोड़ना) गु० पु०



विनद्धा-भावत जो पूनाके काममें  
आता है, विनाद्धाहुमा ।

सं०अन्नय (अ=नहीं, अय=नाश,  
नाशहोना (गु० अघर, चिरंजीव,  
स्थिर, लाजवान ।

सं०अधर (अ=नहीं, अर=नाश हो-  
ना ) गु० अकारादिवर्णों, आगर,  
रक, २. अथ गु० निमकानाशनहो,  
अविनाशी ।

सं०अशान्ता (अश=शान्ति की कला,  
शान्ति भाग ) गु० शूलों के उतरवा  
दक्षिण के दूर रहने लगे अंगपर  
रोग, अशान्तनर, नींद नष्ट ।

सं०अशिर (अश=हिनय ) श्री०  
सांग, चरन ।

सं०अशोभ (अ+शुभ=दरना )  
गु० निर्धर, बेगीक ।

सं०अशोहिणी (अश=अथ, ऊ  
हिलो=भीड़, ऊह=नहेहरना ) श्री०  
सेना जिस में १०८१५० पैदल,  
६६६१० घोड़े, २१=३० रथ,  
३३=३३ हाथी हैं ।

प्रा०असुद्ध-गु० गवाँ, अतपोना,  
अनरुद्ध, जेमजो ।

सं०असुद्ध (अ=नहीं, सुद्ध=शु-  
द्ध ) गु० पूरा, अग, अथ, अमूर्ण,  
अवाध ।

सं०असुनिद्रु (अ=नहीं, सुनिद्रु=

दूधाहुमा ) गु० पूरा, विनद्धा सारा,  
तमाम ।

प्रा०अस्ताड़ा } गु० मन्त्रों के कुरवी  
अस्तरा } करनेकी गण, मभा ।

सं०अस्तिल (अ=नहीं, स्तिल=  
नाश, स्तिल=रुण, अग=लेना )  
गु० पूरा, सारा, सब, सम्पूर्ण, कुल ।

प्रा०अश्वेष्ट (सं० अश्वेष्ट,  
अश्वेष्ट ) अश्वेष्ट=अघर, अश्व  
=पेड़ ) गु० पेमा पेड़ जिसका कभी  
नाशनहो-दराज लाजवाल ।

सं०अग (अ=नहीं, गग=चलना वा  
जाना ) गु० गडाड़, २. अश्व ।

सं०अगणित (अ=नहीं, गण=गिन-  
ना ) गु० अनगिनत, अघर, अमे-  
लवान, बेगुमार ।

सं०अगद (अ+गद=बोलना ) गु०  
गुमा, नीरोग, गु० ओपधि वा दवा ।

प्रा०अगम (सं० अगम=अ=नहीं  
गम=जानेयोग, गम=जाना ) गु०  
नहीं जाने योग्य, बिहट, अघर,  
अपद्धव, दुर्गम, २. गदग अयाह ।

प्रा०अगर (सं० अगुरु=अ=नहीं  
गुरु=मारी ) गु० एकपदारथी गुण-  
रित लाड़ी ।

प्रा०अगम्यान्ता (अगमेश पद  
जगत्वा नाम जो दिक् के परिवर्तन  
की ओर है ) गु० अनिर्देशी पदजा-

ति-जो अगरोहा से निकले हैं।

प्रा० अगला (अग्र=आगे)

गु० आगेका, पहिलेका, परला २ मुखिया, प्रधान।

प्रा० अगलीन गु० गिनती में पहला, अव्वल।

प्रा० अगवा (सं० अग्र=आगे वा अग्रगामी, अग्र=आगे, गम=जाना) गु० आगे चलने वाला, २ मार्ग चलानेवाला पु० दूत, अगवाजी।

सं० अगस्ति (अग्र=पहाड़ अग्र=फेकना) पु० एक ऋषि का नाम जो मित्रावरुणका पुत्र था जिसने विन्ध्यारण्य पहाड़को गिरा दिया था करते हैं कि यह ऋषि पड़े से अन्नायो और जब समुद्रारं बोध दिया था तो सारे समुद्र को पी गया, परसूत्र का नाम ३ एकतारे का नाम है।

सं० अगस्त्य (अग्र=पहाड़, विन्ध्यारण्य, परसूत्र=अन्धकारना) पु० अग्र-रिषि ऋषि।

प्रा० अगहन (सं० अग्रहायण, अग्र=पहले, राघन=राम, रा=छोड़ना अर्थात् पुर्णमासी रीति से राम का पहला परीना) पु० बेगसर, मृग-शिर बरसका आठवां परीना।

प्रा० अगहुड़-गु० अगला, अव्वल।

प्रा० अगाऊ (सं० अग्र=आगे) क्रि० वि० अगाड़ी, आगे, पहले, सामने।

प्रा० अगाऊजाना, योल १ सामने जाना, किसीके मिलनेको जाना।

प्रा० अगाड़ी (सं० अग्र=आगे) क्रि० वि० आगे, सामने और बढ़के, स्त्री० रस्ती जिससे घोड़े के अगले पैर बांधते हैं—२ अगला हिस्सा, अगवाड़ा, आगा।

प्रा० अगाड़ी पिछाड़ी लगाना, योल० रोकना, चन्दकारना (घोड़ेको) घोड़े के अगले छिदने पैर बांधना।

प्रा० अगाड़ीमारना, योल० मोद-रामारना, बैरी की अगली सेना को हराना।

सं० अगाध (अ=नहीं, गाध=घाट जगह, गाध=ढहराना) गु० अथाह, बहुतही गहरा, बेसोयां।

प्रा० अगिया पु० परपत्री या बीड़ा का नाम।

सं० अगुण (अ=नहीं, गुण=गुण, विद्या, वा, रत्न, तम, सत् ये तीन गुण) गु० निर्गुणी, बेगुनर, २ निर्गुण, प्रगल्भ।

सं० अगेन्द्र (अग्र=पहाड़ + इन्द्र=राजा, पु० सुमेरु, २ हिमालय।

सं० अगोचर अ=नहीं, गोचर=

इन्द्रियों के सामने, गो=इन्द्री, चर=चलना ( जो देखने में नहीं आवे, अदृश्य, अलख, गायब, ।

प्रा०अग्नौनी ( सं० अग्रगमन, अग्र=आगे, गमन=जाना ) स्त्री० मिलाप के लिये आगेजाना, पेशवाई करना ।

प्रा०अग्नौनीकरना-बोल० दुलहा के मिलने के लिये सामने जाना, बरात के सामने जाना, मिलनी करना ।

सं०अग्नि ( अग्नि=जाना, जो ऊपर जाती है ) स्त्री० आग, आगी, अनल २ दक्षिण पूर्वकोन का दिक्पाल ।

सं०अग्निकोण ( अग्नि=आग, कोन =खंड वा गोश ) स्त्री० पूर्वदक्षिण के बीच का कोन जिसका स्वामी आग है ।

सं०अग्निक्लीडा ( अग्नि + क्लीड=सेलना ) भा० स्त्री० आतशपात्री ।

सं०अग्निचूर्ण ( अग्नि + चूर्ण=पीसना ) र्भ० पु० चूर्ण ।

सं०अग्निवाण ( अग्नि + वाण=तीर ) पु० आगका तीर ।

सं०अग्निसंस्कार ( अग्नि + संस्कार=विधिता ) पु० पुर्देकी आगदेना, जलाना, दाग देना ।

सं०अग्निहोत्री ( अग्नि + होत्री=

होमकरनेवाला ) क० पु० अभिपूजक, होमकरनेवाला, सदा आग रखनेवाला आतशपरस्त ।

सं०अग्र ( अग्नि=जाना ) गु० आगे पहले, मुख्य, प्रधान, मुखिया, पहला ।

सं०अग्रगण्य ( अग्र=आगे, गण्य=गिनाजाय, गण=गिनना ) र्भ० सबसे पहला और बहुत अच्छा गिनाजाय, प्रधान, मुखिया, मुख्य ।

सं०अग्रगामी ( अग्र=आगे, गामी=चलनेवाला, गमजाना ) क० पु० सबसे आगे चलनेवाला, अगुआ, सरदार, प्रधान, नायक, मुखिया, पेशवा ।

सं०अग्रज ( अग्र=आगे, जन, पैदा होना ) पु० बड़ाभाई ।

सं०अग्रदूत ( अग्र=आगे, दू=चलना दूत=चलनेवाला ) क० पु० नकीब, जो आगे सवारीके तारीफ करता चलता है ।

सं०अग्रसर ( अग्र=आगे, सर=जाना ) गु० आगे चलनेवाला, अग्रगामी पु० सरदार ।

सं०अग्रिम=गु० अगौदी, पेशगी ।

सं०अव ( अव=पापकरना ) पु० पाप, अपराध, अधर्म, गुनाह, २ दोष, नुक, दुःख ।

सं०अवसानि ( अव=पाप, सानि=

चत्वारि स्थान, स्वन=खोदना ) गु०  
 पाकी स्थान, पापी, गुनहवार ।  
 सं० अघटित ( अ+घटित, यट=  
 होना, वा चोटा करना ) गु० अयोग्य  
 अनहोनी, नाशुदनी, गैरमुमकिन ।  
 सं० अघमर्षण ( अघ=थाप, मर्षण  
 मृष=छुटाना ) भा० पु० पापनाशक  
 मंत्र मोक्ष=व्योपासनमें पढ़ा जाता है ।  
 प्रा० अघाई ( अघाना ) भा० स्त्री०  
 पेटभराव, वृत्ति, आसुदगी ।  
 प्रा० अघाना कि० अ० पेटभराना,  
 खरना, अफरना, मारपीटना, ठप्प  
 होना, आसुदारोना ।  
 सं० अघामुर ( अघ=पाप, अमुर=  
 राक्षस ) पु० एक राक्षसका नाम  
 जिसको कमने भीष्टण के पारने  
 के लिये भेजाया ।  
 सं० अघोर ( अ=नहीं, घोर=दरावना  
 अर्थात् गाँव, वा जिससे अधिक कोई  
 दरावना नहीं ) पु० शिव, गु०  
 दरावना, भयानक ।  
 प्रा० अघोरी ( सं०, अघोर ) गु० अ  
 घोररंघी, जो सब चीज बलिदत्त  
 और दुर्दोषी स्थाव है ।  
 सं० अंक ( अङ्क=विह करना, गिनना )  
 पु० आँक, विह, संख्या, संकेत,  
 नम्र २ मोट ।  
 प्रा० अंकना ( सं० अङ्कविह करना )

कि० सं० धापना, मोहर देना,  
 लिखना, २ मोलकरना, नाँवना ।  
 सं० अंक विद्या ( अङ्क=संख्या, वि-  
 द्या ) स्त्री० गणितविद्या, रिसाव ।  
 प्रा० अंकाना ( सं०, अङ्कविह करना )  
 कि० सं० मोल ठहराना, नाँवाना,  
 परवाना ।  
 सं० अंकित ( अङ्क=विह करना )  
 र्थे० विह किया हुआ, आँका हुआ,  
 मोल ठहराया हुआ, नाँवा हुआ,  
 लिखा हुआ ।  
 सं० अंकुर ( अङ्क=विह करना, वा  
 नाना ) पु० अंकुश, आँकुर, कोपल  
 गाड़ी, पुनगी ।  
 सं० अंकुश ( अङ्क=विह करना ) पु०  
 लोहेका बाँटा जिससे शायीकी चला-  
 ते हैं, आँकुर, आँकड़ी ।  
 प्रा० अँकोर पु० घूम, रिसव ।  
 प्रा० अँसिया ( अन्ति ) स्त्री० अ० अ०  
 आँसे ।  
 सं० अङ्क ( अङ्क=विह करना ) पु०  
 गरीर, देश, गरीर का एक भाग,  
 अरब, अलो २ देश विशेष, वा  
 भागलपुर ।  
 सं० अंगजनित ( अङ्ग=गरीर +  
 जनित=उत्पन्न=जन्म=जाहोना )  
 व० पु० देशमें पैदा ।  
 प्रा० अङ्कड़ा ( सं० अङ्क ) भा० स्त्री०  
 देश पगड़ना, जगह ।

सं० अङ्गण } ( अङ्गि=जाना ) पु०  
 अङ्गन } आंगन, अंगनाई, चौक  
 चौगान, आंगन, महल ।

सं० अङ्गद ( अङ्ग=शरीर, दै=गुच्छर,  
 ना, वा, दा=देना ) पु० बहूदा भुज-  
 वन्द, शानूवन्द २ चालि वानरका  
 वेदा ।

सं० अङ्गना ( अङ्ग=शरीर, अङ्गांत्  
 सुन्दर शरीरवाली ) स्त्री० सुन्दर स्त्री  
 सुन्दरी, कामिनी, स्त्री, लुगाई ।

प्रा० अङ्गना पु० } ( सं० अङ्गन )  
 अङ्गनाई, स्त्री } आंगन, चौक ।

सं० अङ्गन्याम ( अङ्ग=शरीर, न्याम=  
 धरना ) प्रा० पु० संवपदकर अङ्ग  
 रणं करता ।

सं० अङ्गपत्र-पु० महायक, मेददगार ।

प्रा० अङ्गम्या म अंगान्ता अङ्ग-  
 शरीर, अङ्ग-वचना पु० चपकन,  
 पलने का एक करवा ।

प्रा० अङ्गरी स्त्री० कचन, बगुनार ।

प्रा० अङ्गुली } ( सं० अङ्गुली, अङ्ग-  
 अङ्गुली } विह्वलता, मिनना )  
 अङ्गुली } स्त्री० हाथका का पंक्ति  
 अङ्गुली } का अङ्ग. हाथ पैर  
 की अङ्गुली ।

प्रा० अङ्गुली काटना, चेल० अ-  
 कटने से होना, अङ्गुली काटना ।

सं० अङ्गव ( अङ्ग+अव=रत्नारत्न )  
 पु० मेवा ।

प्रा० अङ्गवनिहारा पु० संभेताला,  
 बरदारत करनेवाला ।

प्रा० अङ्गा ( सं० अङ्ग=शरीर ) पु०  
 अंगरखा, कुरता, कुरती ।

सं० अङ्गांगीभाव-भा० पु० शरीर-  
 रक सम्बन्ध, बाहमी मदद ।

सं० अङ्गार ( अङ्ग चित्र करना ) पु०  
 अंगारा, जलनाहुमा, कोपना ।

प्रा० अङ्गाग ( सं० अंगार ) पु० जल-  
 ना हुमा कोपना, अंगार ।

प्रा० अङ्गागपग्लोटना चेल०  
 डाह में जलना, दूगवाना, कलपना ।

प्रा० अङ्गिया ( सं० अङ्गिका, अङ्ग=  
 शरीर ) स्त्री० चोली, कानुनी, कंचुकी ।

सं० अङ्गिम आगम, अङ्गि-  
 मना । पु० एकश्रुति का नाम  
 जो प्रका के मुह में पैदा हुमा ।

सं० अङ्गी ( अङ्ग + ई ) स्त्री० अङ्गी  
 काना ।

सं० अङ्गीकार ( अङ्ग=सोकार, कु-  
 रना ) ना० पु० मानना, स्वीकार,  
 अंगेजना, हर्न, भर्तृ ।

प्रा० अङ्गीकोम्कना, चेल० मान-  
 ना, स्वीकार करना, अंगेजना,  
 भर्तृ करना ।

प्रा० अक्षीठी } (सं० अक्ष=रस्ते अक्षीठी } का वर्तन, आगकी बरोसी, कांगड़ी	सं० अचर (अ=नहीं, चर=चलना) गु० नहीं चढ़नेवाला, अचल, अदल ।
सं० अंगुल (अङ्गु=चिह्न करना) पु० आठ औं का नाप, एक गिरहका धीसरा हिस्सा ।	सं० अचल (अ=नहीं, चल=चलना) गु० नहीं चलनेवाला, ठहरा हुआ अ- दल, पु० पहाड़, पर्वत ।
सं० अंगुलित्राण (अंगुलि + प्राण =चा) हाथका मोजा, दस्ताना ।	सं० अचला (अचला) स्त्री० पृथ्वी, पराती, भूमि, जमीन ।
प्रा० अंगूठा (सं० अंगुष्ठ, अंगु=हाथ, स्था=उठरना) पु० मोटी अंगुली ।	प्रा० अचानक } (सं० अकस्मात्) अचानकचक } कि० वि० एका एकी संयोग से, अनुचित, बिन कारण, दैवयोग से, दफ्तबतन ।
प्रा० अंगूठी (सं० अंगुलीय) स्त्री० मुंदरी, बज्रा, अंगुरी में पहनने का गहना ।	प्रा० अचाना } (सं० आचमन, आ, अचवाना } चमु=साना) कि० सं० साने के पीछे मुंह साफ करना, आचमन करना ।
प्रा० अक्षोद्य (सं० अक्ष=शरीर, उद्य=बांधना, बा, अक्ष पौढ़ना) पु० गपड़ा, शरीर पौढ़ने का कपड़ा ।	प्रा० अचार (सं० आचार, आ, चर= चलना) भा० पु० चलन, चाल, चलन, रीतिपांति, व्यवहार, धर्मव्यवहार, तरीका ।
अंघ्रि (अधि=माना) पु० पांच र २ वृत्त की जड़ ।	सं० अचिन्त (अ=नहीं, चित्ति= सोचना) गु० अचेत, बेसुध, निर्बुद्धि ।
अच पु० स्वर (अच=गुमकरना) उपाकर करना ।	सं० अचिर (अ=नहीं + चिर=देर) तुरन्त, जल्द ।
अचगरी स्त्री० अनुचित काम, पापीगी, अत्याचार ।	प्रा० अचीता (सं० अ=नहीं, चित सोचना) गु० बिनबाहा, त (सं० अ= नहीं, चित, वेड बूझ, वा तसवीर) बिन तसवीर वा चित्र
अचल (अ=नहीं + चल=चलना) गु० स्थिर, दायम ।	
अभा (सं० आरवर्ष) पु० आठवर्ष, अविस्मय,	

प्रा० अचेत ( सं० अचेतम्, अ=नहीं,  
चित्त सोचना ) गु० वेमुष, निर्बुद्धि,  
मुन, मूर्खित, बेहोश ।

प्रा० अचेत होना, बोल० वेमुष हो-  
ना, मुन होमाना, मूर्खी खाना,  
मूर्खित होना ।

प्रा० अचैन ( सं० अ=नहीं, चैन=  
सुख ) गु० बेरुछ, ब्याकुल, दुखी,  
बे आशाम ।

मं० अन्युन ( अ=नहीं, युन=गिरना )  
गु० ठररा हुआ, अरुन, अघल,  
निरप, अमर, स्थिर, पु० विष्णु का  
नाम ।

प्रा० अच्यना, } ( सं० अच=होना )  
अचना, } क्रि० अ० भीना  
रहना, होना, रहना ।

जैसे "तुमहि अच्यन मसर छहपारी"

"मुमन निम ( बैशे क अचिकारी "

गुन सी हन रापायण ।

"अच्यनानि मपुनिकिन छई"

करी कहां की रीनि चनार ।

मेमसागर,

प्रा० अचर ( सं० अचर ) गु० आगर,  
बर्ण, हर्क, अचर, अचर आदि  
बर्ण, २ नाशरहित ।

प्रा० अच्छा ( सं० अच्छ, अ=नहीं,  
छो=छानना ) गु० पछा, उत्तम,  
सुन्दर, स्वच्छ, माक, पनोहर, चंगा ।

प्रा० अच्छाकरना-बोल० चंगा क-  
रना, भला चंगा करना, बीमारी से  
चंगा करना ।

प्रा० अच्छालगना-बोल० मोहना,  
फवना, सुलना, पसन्द आना, भाना,

प्रा० अच्छाहोना-बोल० चंगा होना  
भना चंगा होना, बीमारी से आ-  
राम पाना ।

प्रा० अच्छेसे अच्छा-बोल० सबसे  
अच्छा, उत्तम, बहुत ही अच्छा, श्रेष्ठ ।

प्रा० अच्छताना पछताना, बोल०  
क्रि० अ० पछताना, पस्ताना करना,  
पश्चात्ताप करना, अफसोस करना ।

प्रा० अच्छता ( सं० अ=नहीं हिं०  
छूना ) गु० नहीं हुआ हुआ जो चीज  
मूर्खानहो, पवित्र, देवता अथवा  
आपिमुनिके लिपे शुद्ध भोग आदि ।

प्रा० अज } ( सं० अज, इदम् यज )  
आज } क्रि० वि० आज्ञादिन,  
वर्षमान दिन ।

सं० अज ( अ=नहीं, ज=जैदा हुआ,  
जन्=जैदा होना, वा अ=विष्णु, जन्=  
जैदा हुआ ) पु० अज, विष्णु, अज्ञा-  
यित, जीव, २ देगरय राजा के  
याग का नाम ।

मं० अज ( अज=जनना ) पु० बहारा  
मेमसागि ।

सं० अजा (अज्ञ=चलना) स्त्री०-  
करी, २. माया ।

सं० अजगर (अज्ञ=चकरा, गर=  
निगलनेवाला, गृ निगलना) पु०  
पहासाँप, अजदहा ।

सं० अजगत् (अजगु=शिव, अर्थात्  
शिवका, अनोऽगन्मागोपेस्य असी  
अजगुः शिवः तस्यपनुः अजगत्  
आजगत् वा, ) पु० शिवका धनुष ।

सं० अजय (अ=नहीं, जि=जीतना)  
गु० जिसकी जीत नहीं हुई हो, २  
जो जीतानहीं जाय, अजीत, स्त्री० हार ।

सं० अजर (अ=नहीं, जरा=बुढ़ापा  
जृ=बूढ़ा होना) गु० जो बूढ़ा न हो  
सदा जवान बनारहे ।

प्रा० अजहू } (अज्ञ=आज, हू=  
भी, तह, ) प्रि० बि०  
अजहू } अथभी, आज भी,  
अजो } अथन, आजतक ।

प्रा० अजान } (सं० अज्ञान) गु०  
अनजान } मूर्ख, अनसमझ,  
अनजान } अशुभ ।

सं० अजामिल- एकपापी ब्राह्मण  
का नाम जो कर्मोंमें रहता था नि-  
सहोपुत्र का नाम नारायण था मरने  
समय नाम लेनेसे नरगया ।

सं० अजित (अ=नहीं, जि=जीतना)

ना) गु० जो जीतानहीं जाय, अपेल,  
पछी, सबको जीतनेवाला ।

सं० अजिन (अज्ञ=जाना, वा च-  
मकना) पु० मृगछाला, हरिण की  
छाल जिसपर मक्याचारी और  
संन्यासी लोग बैठा करते हैं ।

सं० अजिर (अज्ञ=जाना) पु०  
आंगन, चौक, आंगना, आंगनाई ।

प्रा० अजीत (सं० अजित) गु० सब  
को जीतनेवाला, यत्नी, जो जीता  
नहा जाय ।

सं० अजीर्ण (अ=नहीं, जीर्ण=पु-  
राना व पुराना होना, पचना) गु०  
अपच, नहींपचना, हसपे न होना ।

प्रा० अयोध्या (सं० अयोध्या, अ-  
नहीं, पुं०=लड़ना अर्थात् जहाँ कोई  
लड़नेको नहीं आसक्त) स्त्री० अथप,  
मूर्खशिष्टों की राजधानी ।

सं० अज्ञ (अ=नहीं, ज्ञ=जानना)  
गु० अज्ञान, अनज्ञान, अनसमझ,  
अशुभ, मूर्ख, बेवकूफ ।

सं० अज्ञात (अ=नहीं, ज्ञात=जाना  
हुआ, ज्ञा=जानना) गु० अन-  
जाना, नहीं जाना हुआ, २ अज्ञ-  
यक्त, मूर्ख ।

सं० अज्ञान (अ=नहीं, ज्ञा=जानना)  
गु० अज्ञान, अनज्ञान, अनसमझ,  
अशुभ, मूर्ख, बेवकूफ ।



अवृक्ष पु० मूर्खता, बेवकूफी ।

सं० अज्ञानता (अज्ञान) भा० स्त्री०

मूर्खता, अज्ञानपन, बेवकूफी, ना-  
कदमी ।

सं० अज्ञानी (अज्ञान) गु० मूर्ख

अज्ञान, अवृक्ष, अनसमझ, बेवकूफ,  
नादान ।

सं० अञ्जल (अञ्ज=जाना वा मांगना)

पु० अंचल, आंचल, करदेका  
किनारा ।

सं० अञ्जन (अञ्ज=मांगना,

गुरुमानगाना) पु० गुरुवा, काजल ।

सं० अञ्जना (अञ्ज=मांगना)

श्री० अनुमान्दी मा ।

सं० अञ्जलि (अञ्ज=पिछाना) श्री०

दोनों हाथों का मिलाना, हाथ  
का सम्पुट, दोनों हाथों को इस  
तरहसे पिछाना कि बीच में मगर  
छातीपरहे निममें पानीआदि लिये  
जाय, २ एक तरहका नाच, इतनी  
बीज कि दोनों हाथों में अटमके ।

सं० अञ्जसा (अञ्ज=जाना, मा=मां

घारण) २ शीघ्र सारा ।

फा० अञ्जमन-श्री० संघा, पंदली ।

फा० अञ्जमन-अद=नहीं + अञ्ज=

बचना) छुटी कारीन ।

प्रा० अटक (अटकना) स्त्री० रोक,

रुकाव, आड़, २ सिंधु नदीका नाम ।

प्रा० अटकना-कि० स० रोकना

बंदकरना, कि० अ० रुकना, बंद  
होना, ठहरना, रहना ।

प्रा० अटकल (अटकलना) स्त्री०

अनुमान, अंदाजा, कूत ।

प्रा० अटकलपत्र, बोल० वे अं-

दाज, वे हिसाब, उटक नाटक, वे  
ठौर ठिकाने, योंही ।

प्रा० अटकलना, कि० स० अं-

दाजा करना, अनुमान करना, सो-  
चना, विचारना, कूतना ।

प्रा० अटका, पु० श्रीमगन्नाथ के

प्रसादके लिये भातबनानेका मिट्टी,  
का घरतन ।

प्रा० अटकाना कि० स० रोकना,

ठहराना, छेड़ना, बंदकरना ।

प्रा० अटकाव (अटकाना) भा०

पु० रोक, रुकाव, प्रतिवन्ध ।

प्रा० अटमेला (सं० अटमेला

अटमेला } अट=बहुत, सेल=  
सेल) गु० अंचल

मिजाह, मिजाही, शीघ्र ।

फा० अटमेला (सं० अट मे-

अटमेला } ला) श्री० अंच

कना, मिजाह-  
वन, मिजाह, अंचलाई, ) जोड़ी ।

सं० अटन ( अट=फिरना ) भा०  
पु० फिरना, चलना, भ्रमण, यात्रा,  
गुमना, सफ़र, सँयाही, २ अटारी ।

प्रा० अटना ( सं० अट=फिरना,  
जाना ) क्रि० अ० समाना, भर  
जाना, २ फिरना ।

प्रा० अटपट, पु० } गु० टेढ़ा  
अटपटी, स्त्री० } टेढ़ी, बाँका,  
अटपटांगी, स्त्री० } बाँकी, टरी  
टेढ़ी, बेठिकाने, बेढंगी, कठिन,  
बेगुण, पेचीदा ।

सं० अटल ( अट=नहीं, टल=घुव-  
राना ) गु० अचल, जो टलेनहीं,  
ठहराहुआ, दृढ़, पोषदार ।

सं० अटवि } ( अट=जाना, फिर-  
अटवी } ना ) स्त्री० बन, जंगल

प्रा० अटा } ( सं० अट, अट=ऊँ  
अटारी } चा होना, बड़जाना  
या निरादर करना ) स्त्री० अटारी,  
ऊपरकी कोठरी ।

प्रा० अटाला—देर, असबाब, सा-  
मान, सटला, सामग्री ।

प्रा० अट्ट ( सं० अट=नहीं, हिं=  
टटना ) गु० बहुतही बहुत जो टूटे  
नहीं, समूचा, पूरा, कुल ।

प्रा० अटरन ( भा० स्त्री० चरती,  
आंठी ) २ घोड़ेकी एक चाल ।

सं० अट्टहास ( अट्ट=बहुत, हास  
=हँसी ) भा० पु० बहुत हँसना,  
सिलखिलाकर हँसना, कहकहा  
मारना ।

सं० अट्टालिका ( अट्ट=ऊँचाहोना  
बढ़ना वा निरादर करना ) स्त्री०  
अटारी, अटा, ऊपरकी कोठरी,  
बालाछाना ।

प्रा० अठतालीस } ( सं० अष्टचत्वारिंशत्, अष्ट=  
अड़तालीस } आठ, चत्वारिंशत्=वालीस ) गु० चालीस और  
आठ ।

प्रा० अठतीस } ( सं० अष्ट=आठ  
अड़तीस } त्रिंशत्=तीस ) गु०  
तीस और आठ ।

प्रा० अठवारा-सं० अष्टवार, ( अष्ट=  
आठ, वार=दिन ) पु० आठवाँदिन  
२ इफ़ता, सप्ताह ।

प्रा० अठसठ } ( सं० अष्टषष्टिः अष्ट  
अड़सठ } =आठ, षष्टि=साठ )  
गु० साठ और आठ ।

प्रा० अठहत्तर ( सं० अष्टसप्ततिः  
अष्ट=आठ सप्तति=सत्तर ) गु०  
सत्तर और आठ ।

प्रा० अठाईस } ( सं० अष्टविंशतिः  
अठाईस } अष्ट=आठ, विं-  
शति=बीस ) गु० बीस और आठ

प्रा० अग्रनवे ( सं० अष्टनवति, अष्ट  
=माड, नवति=नन्ने ) गु० नन्ने  
और माड ।

प्रा० अग्रदह ( सं० अष्टदशः, अष्ट=  
माड, दह=दश ) गु० दश और  
माड ।

प्रा० अग्रवन ( सं० अष्टभावन,  
अष्ट=माड, वन=गननाम ) गु०  
वनाम और माड ।

प्रा० अग्रमी } ( सं० अष्टाश्विनिः,  
अष्टमी } अष्ट=माड, अश्विनि  
=माडो ) गु० अष्टमी और माड ।

प्रा० अष्टोत्तमो ( सं० अष्टोत्तमः,  
अष्ट=माड, उत्तम=भाग्य, शत=माँ )  
गु० एक सौ माड ।

प्रा० अष्ट-पा० श्री० अष्टगङ्गा, त्रिगोत्र,  
हड, तिट ।

प्रा० अष्टग-श्री० देवी, दिमावर  
की बत्ती का उतरा, २ हड तिट ।

प्रा० अष्टना } द्वि० अ० अष्टना,  
अष्टकम्ना } अष्टना ।

प्रा० अष्टकोश-गु० बाँझा, निम्बा,  
रुखरवाँ, जैकाने का ताम्बारा ।

प्रा० अष्टवङ्ग-गु० बावलावन ।

प्रा० अष्टना-गु० एक औरत का  
माँ, अम्मा, बामा, ।

प्रा० अष्टने ( सं० अ० अष्टने-गु०

हिलना, झूलना, डोलना ) गु० जो  
नहीं हिलसके, अचल, अटल रह  
बैरकत ।

प्रा० अडोसपडोस-गु० योज० प-  
डोस, परामर्शना, प्रतिवास ।

प्रा० अडु-सेनाकी जगह, ठहरनेकी  
जगह, छावनी, छतुरी ।

प्रा० अडाई ( सं० अर्द्धद्वयः अर्द्ध=  
आधा, द्वि=दो ) गु० दो और आधा ।

सं० अणि } ( अणु=शब्द करना )  
अणी } श्री० धार, नोक, बाँझ,  
नीलीधार, तेजधार ।

सं० अणिमा ( अणु=छोटा ) श्री०  
माड सिद्धियों में की एक सिद्धि,  
त्रिमये बहुतही छोटा रूप बनाके  
मयतमह नामके, छोटावनताने की  
शक्ति, बहुतही सूक्ष्मता, बहुत बा-  
गिरी ।

सं० अणु ( अणु=शब्द करना, श्री-  
ना ) गु० इन, कनिष्ठा, परमाणु,  
गु० बहुतही छोटा, परीन, सूक्ष्म,  
बारीक, मुँदे, तारी ।

सं० अणुमात्र-गु० छोटासा, जगमा ।

प्रा० अण्डा ( सं० अण्ड=अंडा ) गु०  
गोली, भेलनेकी गोली ।

सं० अण्ड ( अण्ड=आना, अण्डः त्रिमये  
मे बरा निरुद्ध है ) गु० अंडा ।

सं० अण्डकट्याह ( सं० अण्ड +  
कट्याह ) पु० अण्डकट्याह ।

सं० अण्डज ( अण्ड=अण्डा, ज=जैदा  
हुआ, जनपदा होना ) पु० अण्डजे से  
पैदा होनेवाले जानवर जैसे पक्षेह,  
सांप मडली, और गोह, गिरगिट,  
विससरा आदि ।

प्रा० अण्डा ( सं० अण्ड ) पु० पक्षेह  
आदि के पैदा होने की जगह ।

सं० अतः क्रि० वि० इससे इस  
लिये, लिहाजा ।

सं० अतएव—क्रि० वि० इसीलिये,  
पस ।

सं० अतसी ( अन्=जाना ) स्त्री०  
तीसी, सन, अलसी ।

सं० अतत्त्वज्ञ ( अ=नहीं + तत्त्व मूल  
ल + ज्ञा=जानना ) क० पु० मूल  
का न जाननेवाला, गलतरूप,  
बेसमझ ।

सं० अतत्त्वज्ञता—भा० स्त्री० नास-  
मझी, गलतरूपी ।

सं० अतन ( अ=नहीं + तन=श-  
=अतनु ) स्त्री० गु० शरीररहित,  
पु० तापदेह ।

सं० अतन्द्रित—गु० आतस्परित-  
सुप्त ।

सं० अतल ( अ=नहीं + तल=पार )

गु० अयाह पु० नीचे के सात लोकों  
में से परिला लोक ।

प्रा० अताई, पु० गर्वया, वजंत्री, व-  
जानेवाला ।

सं० अति ( अन्=जाना ) गु० उप०  
बहुत, अधिक, बहुतही बहुत, बड़ा,  
बीताहुआ, रोजुका, उल्लापना, पार ।

सं० अतिकाय ( अति=बड़ी, काय=दे-  
ह ) पु० बड़ा शरीर, २ रावणका पुत्र  
जिसे लक्ष्मण ने मारा था अथवा  
गु० बड़ी देहवाला, दानवरूपी, भया-  
नक ।

सं० अतिक्रम ( अति=पार + क्रम=  
चलना ) भा० पु० पारजाना, चञ्च-  
पन, अपराध, जुर्म ।

सं० अतिक्रान्त ( अति + क्रान्त,  
क्रम=चलना ) क० पु० पारगयाहु-  
आ, बहुत बड़गया, सबकुछ पाया  
हुआ ।

सं० अतिथि ( अन्=जाना अर्थात्  
जो एक जगह नहीं ठहरता फिरता  
रहता है ) पु० पाहुना, परिमान २  
अभ्यागत, योगी, संन्यासी ।

सं० अतिथिभक्त ( अतिथि + भक्त  
भक्त=सेवा करना ) क० पु० अतिथि-  
पूजक, परिमानपरस्त, मेतवान ।

सं० अतिथिभक्ति—भा० स्त्री० अति-  
थि सेवा, मेतवानी ।

मं० अतिरिक्त (अति + रिक्त) गु०  
पूराहुमा, मित्राय, अज्ञावर ।

मं० अनिरेक (अति + रेक, रिच = गुंदा  
होना) मा० पु० अविहता, कमरत ।

मं० अनिगय (अति = बहुत, गी =  
मौला) गु० बहुतही बहुत, अत्यन्त  
अधिक, विहाय ।

मं० अनिमार (अति = बहुत, मू = मा-  
ना) पु० पैर चलना, मोप्रहणीरोग,  
पेड़िया रोग, पैर की बीमारी ।

मं० अर्नान (अति = पीना दूमा, इ =  
चर) पु० पीनादूमा हो  
गुहा, गे, गुहा दूमा ।

ना० अर्नान (मं० अर्नानि) पु०  
अर्नाथ } कोणी, मन्थामी ।

मं० अर्तुन (अ = नर्ही, नृत्त = ना-  
अर्तुनित } लना) गु० अतिहा

मा० अर्तुन, अत नही अर्थात्  
अर्तुन नही अर्थात् अत्यन्त, अ-  
त्यन्त उच्च, अत्यन्त बराबरी न  
होये ।

मं० अत्यन्त (अति = अत्यन्त, अत्यन्त =  
वर) गु० बहुतही बहुत, अत्यन्त,  
अधिक ।

मं० अत्यन्त (अति = अत्यन्त + अत्यन्त =  
अत्यन्त, इ = अत्यन्त) मा० पु० अत्यन्त  
अत्यन्त, अत्यन्त, अत्यन्त ।

मं० अत्यन्त (अति = अत्यन्त +

आचार = चलन) मा० पु० अत्यन्त,  
अत्यन्त, अत्यन्त ।

मं० अत्युक्ति (अति = बहुत, उक्ति = क-  
हना, वत् योक्तना) मा० श्री०  
बहुत बड़ावा देकर कहना, पूरी  
साराह करना, एक अंतकार का  
नाम, मुवाजिगा ।

मं० अत्र (इदम् = यह) कि० वि० यहाँ  
इस जगह, इस ठीर ।

मं० अत्रि (अत्र = गाना वा बषाना)  
पु० मान अत्रियों में का एकत्रयि  
प्रथा का देश ।

म० अथ समुच्च अथ, फिर, उ-  
पान । इनके पीछे, शुरू, आरंभ, इस  
तरह से ।

मं० अथवा (अथ = फिर, वा, या)  
समुच्च वा, या, फिर, अथवा-  
न ।

मा० अथाह (मं० अ = नही, अथाह =  
ना) मा० श्री० जगह नहीं लोग  
बाननीन और होंगी दूदा करने के  
तिरे इहंटे हीनेई, पैरह, अ मवा  
अथाह ।

मा० अथाह (मं० अ = नही अथाह =  
अथाह, वा अथाह) गु० अथाह से  
बीर, बहुतही अथाह, पैराह ।

मा० अद (मं० अद) गु० अथाह  
अथ

अदन (अद=दाने) पा=पु०  
जन, राना ।

अदनीय (अद+अनीय) प्र०  
पु० भोजन योग्य, सुदनी ।

अदव. कापरा, कापार ।  
अदम्र पु० बहुत, पूर्ण ।

अदमूजा (सं० अदं=परतः,  
अदं=माया, दृ=

अदमरा } मराना) पु० शीतः  
अधमूजा } बहुत ही मुला, स-

अधमरा } हुनी मासकी  
मासका दूध, नीम दूध ।

प्रा० अदल बदल शीत० एराफेरी,  
वनरा ।

प्रा० अदला बदला करना, शीत०  
बदलना, पनाटना, एक चीज के  
पने में दूसरी चीज लेना ।

प्रा० अदहन (अं० अद=हृदय या=अवि  
ह, दहन=प्रज्वलन) पु० दानवाहन  
कपरा और शीत परादेहेनिदे व-

हनीय मर्षे व नी ।  
सं० अदार (अ=अरी, दाता=प्री)  
पु० वस्त्रावधार, हुवा ।

सं० अदिनि (अ=अरी, दा=देना  
शे दूध नरी देवे वा, दो=छाटना)  
प्री० देवदासी की या और दण्ड  
की देहि और बरतन दुनि की थी ।

सं० अदिन (अ=अरी, दा=दूध, दिन्म  
मन्त्र) पु० दूधदिन, दूरी दण्ड,  
कोरे दिन, कोरे रा, हुदिन ।

सं० अदूरदर्शी, क=पु० कलापट्टि ।  
कोवाह नतर ।

सं० अदृश्य (अ+अरी, दृग्=देख  
अदृष्ट } ना) पु० अलग, जो देख  
ने में न आवे, अगोचर, गुप्त, अदेख ।

सं० अदेय (अ=अरी, देय=देनेयोग्य,  
दा=देना) पु० नही देनेयोग्य ।

सं० अद्या अद्य० साध्या, सन्ध्या ।  
प्रा० अद्री (सं० अदं=माया) श्री०

आर्षदपरी २ परमचारकीवनसेव ।  
सं० अदभुत (अद=अधमा, भू=होना

वा, भा=वपटना) पु० अनोखा-  
अदृष्ट, अज्ञेय ।

सं० अद्यापि (अद्य+अपि) कि०  
वि० आज तक, परतक ।

सं० अद्यावधि (अद्य+अधि) कि०  
वि० अर्थात्तक, इस समय तक ।

प्रा० अद्रक (सं० अद्रिष्ठ, अद्रि=नी-  
ला) पु० आटा, आद, वही मोट ।

सं० अदि (अदु=माना) पु० दाद,  
दरद, २ हृदय, देह, मान ।

सं० अदिनीय (अ=अरी, दिनी=द  
दूमा) पु० बेरत, निरेपन, दण्ड  
ही, २ अद्वय, अद्वन्द, अमनी ।

सं० अदिन (अ=अरी, दिन्म=दूमा)  
पु० शिमडे ममान दूमा नही  
देहीदिन, वे विप्लव ।

प्रा० अयहमानी (सं० अदं=अ  
न, अदं=माया, दान=अद्विष्ट)  
अद्विष्ट, अद्विष्ट, अद्विष्ट ।



सं० अधिप (अधि=ऊपर, पा=  
अधिपति) पालना, क० पु० रा-

जा, मालिक, स्वामी, मभु॥

सं० अधिमास (अधि=अधिक, मा-  
स=महीना) पु० मलमास, लौदका  
महीना ॥

सं० अधिराज (अधि=ऊपर, वा,  
ममान, राजन्=राजा) पु० महाराज,  
राजाधिराज ।

सं० अधिरुद्ध (अधि=ऊपर, रुद्ध  
रुद्ध=गमना) क० पु० आरुद्ध, सवार ।

सं० अधिवास (अधि+वास=वस  
=रहना) भा० पु० रहनेकी जगह,  
सकूनत ।

सं० अधिवेशन (अधि=ऊपर, वे-  
शन=विश=संसन्ना, जाना) वैजक,  
दरबार, इजलास ।

सं० अधिष्ठाता (अधि=ऊपर, स्था=  
ठहरना) क० पु० स्वामी, मालिक,  
रक्षक, पालनेवाला, अध्यक्ष, मुखर,  
अगुना ।

सं० अधिष्ठान (अधि+स्थान=भा०  
पु० स्थिति, क्रियाम, मुक्ताम ।

सं० अधीत (अधि+इत=जाना)  
भा० पु० पढ़ाहुआ, पढ़ित ।

सं० अधीति (अधि+इति=इ=  
जाना) भा० स्त्री० पढ़ना, अध्ययन,  
पढ़ाईगी ।

सं० अधीन (अधि=पर अधिप्रा=वश  
इन=स्वामी) गु० वसमें, आज्ञाका-  
री, दबेल, ताबेदार ।

सं० अधीनता (अधीन) स्त्री० ताबे-  
दारी, चाकरी, दबाव हुक्म मानना ।

सं० अधीर (अ=नहीं, धीर=धीरज  
वाला) गु० चंचल, उतावला, घब-  
रायाहुआ, असंतोषी, चपल, अस्थि-  
र, हड़बड़िया, चटपटा, जल्दबाज,  
पस्तीहमत ।

सं० अधीरता (अधीर) भा० स्त्री०  
घबराहट, चंचलाहट, उतावली, वे-  
सपरी, हड़बड़ी, चटपटी ।

सं० अधीश (अधि=ऊपर वेधि-  
अधीश्वर) धिकेईश वा ईश्वर=  
स्वामी) पु० राजाधिराज, राजाओं  
का राजा, महाराज, शाहनशाही ।

सं० अधुना=कि० वि० अब, इसवक्त ।

प्रा० अधूरा (अधूरा) गु० अधवना,  
अनवना, पुरानरी, नांमुकम्पिली ।

प्रा० अधूराजाना=बोल० कच्चाजा  
ना, कच्चे का गिरना ।

प्रा० अधेड़ (अर्द्ध=आधा) गु० अधे-  
वडा, जिसकी आधीउमर बीत गई हो  
यह शब्द स्त्री के लिये बहुत बार  
बोला जाता है ।

प्रा० अधेन (सं० अध्ययन) भा०  
पु० पढ़ना, पढ़ाईगी ।

प्रा० अधेला (सं० अर्द्ध=आधा) पु०  
आधा पैसा, पैसेका आधा ।



प्रा० अधेली (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री०

आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना ।

सं० अधोमुख गु० नीचे मुख किये हुये,

शिर झुकाये हुये, उदास, सरनगुं ।

प्रा० अधोड़ी (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री०

आधी साल, मोटा और गाढ़ा

चमड़ा जिसके जूते के तले, डोल

डोलनी और घोड़े के माज आदि

बनते हैं ।

सं० अध्यक्ष (अधि=ऊपर, अक्ष=कै

लाना) पु० स्वामी, मालिक, प्रधान,

मुखिया, मुख्य, अधिकारी ।

सं० अध्ययन (अधि+इ=पढ़ना)

पु० पढ़ना, पवित्र पोथियों का पाठ कर

ना, ब्राह्मणों के पटकर्मों का एककर्म ।

सं० अध्यवसाय (अधि+अव+सं

=गाग होना) पु० उद्यम, वसाय,

रोजगार ।

सं० अव्यापक (अधि+इ=पढ़ना)

पु० पाठक, गुरु उपाध्याय, आचार्य,

शिष्ट, वेद शास्त्र पढ़ानेवाला ।

सं० अव्यापन (अधि+इ=जाना)

भा० पु० पढ़ाना, सबक देना ।

सं० अव्याय (अधि+इ=पढ़ना) पु०

पाठ, पर्व, मार्ग, महरण, बाव, परि-

च्छेद ।

सं० अव्यास (अधि+आस=बैठना)

भा० पु० भाव, अपाल, मन्त्रव्य, वा-

जो अभेद मनीति है, उसीका नाम-

अव्यास है ।

सं० अव्यासीन (अधि+आसी-

न-आस=बैठना) क० पु० बैठा हुआ ।

सं० अध्वर (अध्वन्=मार्ग, रा=देना

अर्थात् जो सच्चा रस्ता बतलाता है)

पु० यज्ञ, होम, बलिदान ।

सं० अध्या (अध्वन्=मार्ग) स्त्री० राह ।

सं० अन्=निपेधवाचक अव्यय, सं-

स्कृत में जिस शब्द का पहला अ-

क्षर स्वर हो उस के पहले अ नहीं

आता बल्कि ऐसी जगह पर अ को

अन् होना है जैसे अनन्त, पर

हिन्दी में व्यंजन के पहले भी अन्

आता है जैसे अनदेखा ।

अं० अनुकव्नांश्चिड-बड़ नौकर

जिन्हें सरकार नौकरी देनेकी जि-

म्मेदार नहीं ।

प्रा० अनस (अनखाना) भा० स्त्री०

रिस, क्रोध, क्रोध गुस्सा, रडाह, ईर्ष्या ।

सं० अनस (अ+नस) नमहीन,

जिम के नम न हो ।

प्रा० अनसानी-कि० अ० क्रोध करना,

विमियाना, क्रोध करना, गुस्सा हो-

ना बिड़ना, गुनसानी, खका होना ।

प्रा० अनगढ़; (अन्=

नहीं-गाढ़-

ना=बना-

ना) पु०

अनबना, अदकल, अनसीमा, नहीं

पका हुआ ।

प्रा० अनगदीवात-शैल० वे विका-  
ने यात, वे मेल यात, वे सिर पांच  
की यात, वेदंगीयात ।

प्रा० अनगणित } (सं० अगणि  
अनगणित } त, अ = नहीं,  
अनगणित } गण = गिनना)  
अनगणित } गु० अपार, वे-  
शुभार, असंख्यात, बहुत, बेहिसाब ।

प्रा० अनगिना (सं० अगणित )  
गु० नहीं गिना हुआ, वे गिना,  
२ अनगणित, अपार, बेगुमार, बे-  
हिसाब ।

प्रा० अनगिना महीना-शैल०  
सी को गर्भ का आठवां महीना,  
जब लुगाई पेट से होती है उस  
सप्थ का आठवां महीना ॥

सं० अनघ (अ=नहीं, अघ=नाप )  
गु० निष्पापी, निर्दोष, सीधा सा-  
दा, शुद्ध, बेगुनाह ।

प्रा० अनह (अ=नहीं, अह=देह )  
पु० कामदेव, एकबार महादेव ने  
अपनी तीसरी आंख की आग से  
कामदेव को जला दिया था उसी  
दिन से इसका नाम अनह हुआ,  
यमराज और अह का पुत्र ।

प्रा० अनचाहत (अ=नहीं, चाहना)  
गु० नहीं चाहा हुआ, अनिच्छित ।

प्रा० अनचित (सं० अ=नहीं, चिन्  
सोचना ) गु० अचानक, एकाएक,  
अधीता ।

प्रा० अनजाना (सं० अज्ञान) गु०  
नहीं जाना हुआ, २ निर्बुद्धि ।

प्रा० अनजाने (सं० अज्ञान) क्रि०  
वि० चिनजाने, वे जाने वुझे, नहीं  
जानके, अज्ञान ।

प्रा० अनजीवत (सं० अजीवित )  
क० पु० मृतक, मुर्दा ।

सं० अनडुह (अनः=बकड़ा + वह=  
लेजाना ) पु० बैल ।

सं० अनह्वान् (सं० अनडुह ) पु०  
बैल ।

प्रा० अनत (सं० अन्यत्र) क्रि० वि०  
और जगह ।

सं० अनन्त (अनू=नहीं, अन्त=पार )  
गु० अपार, जिस का अन्त नहीं-  
असीम, बेहद, पु० शेषजी, शेष-  
नाग जिनके एक फनपर हिंदू लोग  
पृथ्वीको ठहरी बताते हैं, २ चौदह  
गांठका एक धागा जिसको भादों  
मुदी १५ अर्थात् अनन्त चौदसके  
दिन पूजा करके हिंदू लोग अपने  
दहिने हाथ पर बांधते हैं, ३ विष्णु,  
धरणी, नक्षत्र, जीव, प्रस, लाह-  
न्तिहा ।

सं० अनन्य (अ=नहीं, अन्य=दूसरा)  
गु० एकही, जिसको दूसरेका भरो-  
सा नहीं ।

सं० अनपत्य (अनू=नहीं + अपत्य=  
पुत्र ) पु० अश्विन, लावत्त ।

प्रा० अधेली (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री०  
आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना ।

सं० अधोमुख गु० नीचे मुख किये हुये,  
शिर झुकाये हुये, उदास, सरनगु ।

प्रा० अधोर्द्धी (सं० अर्द्ध=आधा)  
स्त्री० आधी साल, मोटा और गाढ़ा  
घमड़ा जिसके जूने के तले, डोल  
डोलची और घोड़े के साज आदि  
घनते हैं ।

सं० अध्यक्ष (अधि=ऊपर, अक्ष=कै  
लाना) पु० स्वामी, मालिक, प्रधान,  
मुखिया, मुख्य, अधिकारी ।

सं० अध्ययन (अधि+इ=पढ़ना)  
पु० पढ़ना, पवित्र पोथियों का पाठकर  
ना, ब्राह्मणों के पठकर्मों का एककर्म ।

सं० अध्यवसाय (अधि+अव+सं  
=गाग होना) पु० उपयुक्त, उपाय,  
रोजगार ।

सं० अध्यापक (अधि+इ=पढ़ना)  
पु० पाठक, गुरु उपाध्याय, आचार्य,  
शिक्षक, वेद शास्त्र पढ़ानेवाला ।

सं० अध्यापन (अधि+इ=पढ़ना)  
भा० पु० पढ़ाना, सबक देना ।

सं० अध्याय (अधि+इ=पढ़ना) पु०  
पाठ, पढ़, संग, वक्तव्य, वाक्य, परि-  
च्छेद ।

सं० अध्यास (अधि+आस=बैठना)  
भा० पु० भाव, लयान्त, संस्मरण, वा-  
स्तविक २ सत्य असत्य वस्तु की

जो अभेद मतीति है, उसीका नाम  
अध्यास है ।

सं० अध्यासीन (अधि+आसी-  
न-आस=बैठना) क० पु० बैठा हुआ ।  
सं० अध्वर (अध्वन्=मार्ग, रा=देना  
अर्थात् जो सच्चा रस्ता बतलाता है)  
पु० यज्ञ, होम, बलिदान ।

सं० अध्या (अध्वन्=मार्ग) स्त्री० राह ।

सं० अन्=निपेक्षवाचक अव्यय, सं-  
स्कृत में जिस शब्द का पहला अ-  
क्षर स्वर हो उस के पहले अ नहीं  
आता बल्कि ऐसी जगह पर अ को  
अन् हो जाता है जैसे अनन्त, पर  
हिन्दी में व्यंजन के पहले भी अन  
आता है जैसे अनदेखा ।

अं० अन्कश्रुनांश्रुड=बह नौकर  
जिन्हें सरकार नौकरी देनेकी जि-  
म्मेदार नहीं ।

प्रा० अनस (अनखाना) भा० स्त्री०  
रिस, क्रोध, क्रोध, गुस्सा, रोना, रूपा ।

सं० अनस (अ+नस) नगहीन,  
जिस के नख न हो ।

प्रा० अनखाना-कि० अ० कोपकरना,  
खिसियाना, क्रोध करना, गुस्सा हो-  
ना बिड़ना, खूनसाना, गला होना ।

प्रा० अनगढ़, अनगढ़ा, पु०  
अनगढ़ी, स्त्री० } (अन्=  
नहीं=गढ़-  
ना=बना-  
ना) गु०  
अनबना, अहङ्ग, अनमीमा, नहीं  
गढ़ा हुआ ।

प्रा० अनगदीवात-बोल० वे ठिका-  
ने घात, वे मेल घात, वे सिर पांव  
की घात, बेदंगीघात ।

प्रा० अनगणित } (सं० अगणि  
अनगणित } त, अ = नहीं,  
अनगणती } गण = गिनना)  
गु० अपार, बे-  
गुमार, असंख्यात, बहुत, बेहिसाब ।

प्रा० अनगिना (सं० अगणित)  
गु० नहीं गिना हुआ, वे गिना,  
२ अनगणित, अपार, बेगुमार, बे-  
हिसाब ।

प्रा० अनगिना महीना-बोल०  
खी को गर्भ का आठवां महीना,  
जब लुगाई पेट से होती है उस  
समय का आठवां महीना ॥

सं० अनघ (अ=नहीं, अघ=पाप)  
गु० निष्पापी, निर्दोष, सीधा सा-  
दा, शुद्ध, बेगुनाह ।

प्रा० अनङ्ग (अ=नहीं, अङ्ग=देह)  
गु० कामदेव, एकबार महादेव ने  
अपनी तीसरी आंख की आग से  
कामदेव को जला दिया था उसी  
दिन से इसका नाम अनङ्ग हुआ,  
यमराज और अद्धा का पुत्र ।

प्रा० अनचाहत (अ=नहीं, चाहना)  
गु० नहीं चाहा हुआ, अनिच्छित ।

प्रा० अनचित (सं० अ=नहीं, चिन्  
सोचना) गु० अधानक, एकाएक,  
अधीता ।

प्रा० अनजाना (सं० अज्ञान) गु०  
नहीं जाना हुआ, २ निर्वृद्धि ।

प्रा० अनजाने (सं० अज्ञान) क्रि०  
वि० बिनजाने, वे जाने दूँके, नहीं  
जानके, अज्ञान ।

प्रा० अनजीवत (सं० अजीवित)  
क० पु० मृतक, मुर्दा ।

सं० अनडुह (अन=अकड़ा + वर=  
लेजाना) पु० बैल ।

सं० अनड्वान् (सं० अनडुह) पु०  
बैल ।

प्रा० अनत (सं० अन्यत्र) क्रि० वि०  
और जगह ।

सं० अनन्त (अन्=नहीं, अन्त=पार)  
गु० अपार, जिस का अन्त नहीं,  
असीम, बेहद, पु० शेषजी, शेष-  
नाग गिनके एक फनपर हिंदुलोग  
पृथ्वीको ठहरी बताते हैं, २ चौदह  
गांठका एक धागा जिसको भादों  
सुदी १४ अर्थात् अनन्त चौदसके  
दिन पूजा करके हिंदुलोग अपने  
दहिने हाथ पर बांधते हैं, ३ विष्णु,  
धरणी, नक्षत्र, जीव, व्रक्ष, लाइ-  
न्तिहा ।

सं० अनन्य (अ=नहीं, अन्य=दूसरा)  
गु० एकही, जिसको दूसरेका भरो-  
सा नहीं ।

सं० अनपत्य (अन्=नहीं + अपत्य=  
पुत्र) पु० अहीन, लावल्द ।

सं० अनिर्वचनीय (अ + निः + अनिर्वाच्या) वचनीय-क-  
हने योग्य ) जो कहने योग्य न हो,  
अकथ्य ।

सं० अनिशम् - क्रि० वि० प्रतिदिन,  
रोजपरा ।

सं० अनिल (अन् = प्रीना ) पु०  
पवन, हवा, वायु, वायु, पयार, वतास  
संख्या ४९ ॥

सं० अनिष्ट (अन् + इष्ट, इष्ट = चाह  
ना ) अपिष, अनिच्छित, साराव, वे  
पारा ।

प्रा० अनी (अं = अणी स्त्री० नोक-  
नीपी पार. ० सं० अनीक ) स्त्री -  
फीज, सेना, दल, बटुक ।

सं० अनीक (अन् = प्रीना अर्थात्  
अभिमेरचा शोभी है ) स्त्री० सेना,  
फीज, बटुक ।

सं० अनीति (अ = नहीं + नीति =  
अच्छाचरन) स्त्री० अन्धाय, कुचाल,  
बुरा चरन ।

सं० अनीप (अनी = धेना, पा = रचा  
करना) क० पु० = सेनापति, सरदार ।

सं० अनीह (अ = नहीं + ईह = मुष,  
इच्छा, चेत) पु० तिमकी कुछ  
बाह नहीं, चेतारित २ निर्गुण,  
बेक ३ आनमी, दीन्ता, बोदा,  
अपेक्षा के एक भाषा का नाम ।

सं० अनीहा (अन् + ईह) मा०  
स्त्री० उदासीनता, बेतराही ।

सं० अनु-उप० पीछे, साथ, अनुसार,  
बराबर, पास, अनुकरण, नकल,  
हरएक, कम, थोड़ा ।

सं० अनुकथन (अनु पीछे + कथ् =  
कहना) भा० पु० कहे के पीछे क-  
हना, बारंवार कहना, ताईद करना ।

सं० अनुकम्पा (अनु + कम्पा कां-  
गता) भा० स्त्री० दया, कृपा, मेहर-  
बानी ।

सं० अनुकरण (अनु = नकल, कृ =  
करना) पु० नकल करना, अनुकूप ।

सं० अनुकूल (अनु साथ, कूल  
पेरना) पु० सहाय करनेवाला  
पददगार, कृपालु, दयालु, मिहर-  
वान, अनुमार, मुवाफिक ।

सं० अनुक्रम (अनु = पीछे क्रम =  
चलना) पु० क्रमानुसार-नीवचार,  
क्रमशः भा० पु० प्रबंध, सूचीपत्र,  
फेहरिस्त ।

सं० अनुग- (अनु = पीछे + गम =  
जाना) क० पु० अनुचर, सेवक,  
तावेदार ।

सं० अनुगति (अनु = पीछे, गति =  
चाल) भा० स्त्री० अनुपति, मरम्प-  
ति, पत्नी, यात्रा ।

सं० अनुगामी (अनु = पीछे, गामी  
= चलनेवाला, गम = चलना) क०  
पु० पीछे चलनेवाला, पु० गापी  
२ नौकर, पैरोदार ।

सं० अनुग्रह (अनु=पीछे, ग्रह=ले-  
ना ) भा० पु० कृपा, मिहरबानी,  
मंसमता, दया ।

सं० अनुगृहीत (अनु=पीछे + गृ-  
हीत, गृह=लेना) र्म० पु० दयाकिया  
गया, निवाजागया, इहसानमन्द ।

सं० अनुचर (अनु=पीछे, चर=चल-  
नेवाला, चर=चलना) पु० नौक-  
र, दास, सेवक, चाकर, पीछेच-  
लने वाला, २ सापी ।

सं० अनुचरी (अनुचर) स्त्री० दासी,  
लौकी, बांदी ।

सं० अनुचित (अ=नहीं, उचित=  
ठीक) गु० अयोग्य, ठीक नहीं,  
नामुनासिब ।

सं० अनुज (अनु=पीछे, ज=पैदाहो,  
जन=पैदाहोना) पु० छोटाभाई ।

सं० अनुजा (अनुज) स्त्री० छोटी  
बहन ।

सं० अनुजीवी (अनु=पीछे, जीविन=  
जीनेवाला, जीव=जीना) क० पु०  
नौकर, दास, सेवक, चाकर, परा-  
धीन ।

सं० अनुज्ञा (अनु=पीछे, ज्ञा=जान-  
ना) भा० स्त्री० आज्ञा, अनुमति,  
हुक्म, चिहाना, ताकीद ।

सं० अनुत्तम (अनु=पीछे + उत्त=उत्त-  
म) क० पु० दुःखसे भरा हुआ,  
रंजीदा ।

अनुताप (अनु + तप=तपना) भा० पु०  
परचाचाप, अफ़सोस ।

सं० अनुदिन (अनु=हरएक  
दिन) क्रि० वि० हरएक दिन,  
दिन दिन, सदा, प्रतिदिन, रोज-  
मर्रा ।

सं० अनुनय (अनु + नी=लेजाना)  
भा० पु० चिनप, शिक्ता, अदब,  
नसीहत ।

सं० अनुनासिक (अनु=पीछे, नासि-  
का=नाक) गु० सानुनासिक, जो  
अन्तर मूँह और नाकसे बोलेंगएँ,  
जैसे (र, अ, ए, न, म) और अनुस्वार ।

सं० अनुपकारी (अनु + उप + का-  
री, कृ=करना) क० पु० उपकार  
रहित, बेफ़ैल ।

सं० अनुपम (अ=नहीं, उपमा=  
बराबरी) गु० अनूप, उत्तम, अर्पूर्व,  
जिसकी बराबरी न होसके बेमि-  
साल, बेनजीर ।

सं० अनुपयुक्त- र्म० पु० अयोग्य  
नामुनासिब ।

सं० अनुपल (अनु=कमपोड़ा, पल=  
निमेष) पु० पल का, साठवाँ  
हिस्सा, सेकण्ड ।

सं० अनुपात (अनु=पीछे, बराबर  
पतु=गिरना) पु० तैराशिक, बराबर  
सम्बन्ध ।

सं० अनिर्वचनीय (अ + निः + अनिर्वाच्या) वचनीय-क-  
हने योग्य ) गो कहने योग्य न हो,  
अकथ्य ।

सं० अनिशम्-क्रि० वि० प्रतिदिन,  
रोजपरा ।

सं० अनिल (अन=जीना) पु०  
पवन, हवा, वायु, ताव, पवार, वनास  
मंरुपा ४२ ॥

सं० अनिष्ट (अन + इष्ट, इष्ट=चाह  
ना) अविष, अनिच्छित, सराव, बे  
पारा ।

प्रा० अनी (अं=अणी स्त्री० नोक-  
नीपी धार. ० अं० अनीक) स्त्री०  
फौज, सेना, दल, कटक ।

सं० अनीक (अन=जीना अर्थात्  
जिसमेरुचा होनी है) स्त्री० सेना,  
फौज, कटक ।

सं० अनीति (अ=नहीं + नीति=  
अच्छाचरन) स्त्री० अन्धाय, कुवाज,  
दुरा चरन ।

सं० अनीप (अनी=मेना, पा=रचा  
करना) इ० पु०=मेनापति, सरदार ।

सं० अनीद (अ=नहीं + ईद=मुप,  
इच्छा, चेश) गु० जिसको कुछ  
चाह नहीं, चेशाहित २ निर्गुण,  
बेका ३ आजमी, दीना, बोदा,  
अने० वा० के पद राजा का नाव ।

सं० अनीहा (अन + ईह) भा०  
ई० इनामीनका, बेगवाही ।

सं० अनु-उप० पीछे, साथ, अनुसार,  
बराबर, पास, अनुकरण, नकल,  
हरएक, कम, थोड़ा ।

सं० अनुकथन (अनु पीछे + कथ्=  
कहना) भा० पु० करे के पीछे क-  
हना, बारंवार कहना, ताईदकरना ।

सं० अनुकम्पा (अनु + कम्पा कां-  
पना) भा० स्त्री० दया, कृपा, देह-  
वानी ।

सं० अनुकरण (अनु=नकल, क=  
करना) पु० नकल करना, अनुकृप ।

सं० अनुकूल (अनु साथ, कूल  
घेरना) गु० सहाय करनेवाला  
मददगार, कृपालु, दयालु, मिह-  
वान, अनुसार, मुवाकिक ।

सं० अनुक्रम (अनु=पीछे क्रम=  
चलना) गु० कथानुसार, तर्नीकवार,  
क्रमशः भा० पु० प्रबंध, सूचीपत्र,  
फेहरिस्त ।

सं० अनुग- (अनु=पीछे + गम=  
जाना) क० पु० अनुवर, सेवक,  
तावेदार ।

सं० अनुगति (अनु=पीछे, गति=  
चाल) भा० स्त्री० अनुगति, सम्प-  
ति, पत्नी, यात्रा ।

सं० अनुगामी (अनु=पीछे, गमी  
=चलनेवाला, गम=चलना) इ०  
पु० पीछे चलनेवाला, पु० मार्गी  
२ नौदर, पैरोदर ।

सं० अनुग्रह ( अनु=पीछे, ग्रह=ले-  
ना ) भा० पु० कृपा, मिहरवानी,  
मंसमना, दया ।

सं० अनुगृहीत ( अनु=पीछे + गृ-  
हीत, ग्रह=लेना ) ध्य० पु० दवाकिया  
गया, निवासागया, इहसानमन्द ।

सं० अनुचर ( अनु=पीछे, चर=चल-  
नेवाला, चर=चलना ) पु० नौकर,  
र, दास, सेवक, चाकर, पीछेच-  
लने वाला, २ साथी ।

सं० अनुचरी ( अनुचर ) स्त्री० दासी,  
लौकी, बांदी ।

सं० अनुचित ( अनु=नहीं, उचित=  
ठीक ) गु० अयोग्य, ठीक नहीं,  
नामुनासिर ।

सं० अनुज ( अनु=पीछे, ज=पैदाहो,  
जन्=पैदाहोना ) पु० छोटाभाई ।

सं० अनुजा ( अनुज ) स्त्री० छोटी  
बहन ।

सं० अनुजीवी ( अनु=पीछे, जीविन्=  
जीनेवाला, जीव=जीना ) क० पु०  
नौकर, दास, सेवक, चाकर, परा-  
धीन ।

सं० अनुज्ञा ( अनु=पीछे, ज्ञा=मान-  
ना ) भा० स्त्री० आज्ञा, अनुमति,  
हुक्म, पिछना, मारोद ।

सं० अनुत्तम ( अनु=पीछे + उत्तम=उत्त-  
म ) क० पु० दुःसमं, मरादुम्मा,  
रंभीदा ।

अनुताप ( अनु + तप=तपना ) भा० पु०  
परचात्ताप, अफसोस ।

सं० अनुदिन ( अनु=हरएक  
दिन ) क्रि० वि० हरएक दिन,  
दिन दिन, सदा, प्रतिदिन, रोज-  
मर्रा ।

सं० अनुनय ( अनु + नी=लेमाना )  
भा० पु० चिनय, शिक्ता, अदब,  
नेसीहत ।

सं० अनुनासिक ( अनु=पीछे, नासि-  
का=नाक ) गु० सानुनासिक, जो  
अक्षर मुर और नाकसे बोलैगाथै,  
जैसे (र, ज, ल, प) और अनुस्वार ।

सं० अनुपकारी ( अनु + उप + का-  
री, कृ=करना ) क० पु० उपकार  
रहित, बेफैल ।

सं० अनुपम ( अनु=नहीं, उपमा=  
परावरी ) गु० अनूप, उत्तम, अपूर्व,  
जिमही परावरी न होसके बेमि-  
ताल, बेनसीर ।

सं० अनुपयुक्त - ध्य० पु० अयोग्य  
नामुनासिर ।

सं० अनुपल ( अनु=अपयोग, पन=  
निषेध ) पु० पल बा, सादर  
रिस्ता, तोहफा ।

सं० अनुपात ( अनु=पीछे, पात=  
पड़=गिरना ) पु० बैरागिक, परावर  
सम्बन्ध ।



सं० अनुपान ( अनु + पा = पीना )

ए० औपधिकासहकारी, सहयोगी,  
कारिया, बदर्का ।

सं० अनुबन्ध ( अनु + बन्ध = बांधना )  
बांधना, मिलाना, मेल, मिलाप,  
धानुका गण सूचक पूर्वपर अन्तर ।

सं० अनुभव ( अनु = पीछे, भू = होना )  
भा० पु० ज्ञान, यथाधिज्ञान, विचार,  
अनुमान, सोचना, समझना, बूझना,  
तजस्वा ।

सं० अनुमत ( अनु + मत्, मने = सोच  
ना ) स्म० पु० सलाह दिया गया ।

सं० अनुमति - भा० स्त्री० सलाह, स-  
मति ।

सं० अनुमान ( अनु = पीछे, मा = माप  
ना ) भा० पु० अन्दाजा, अटकल,  
विचार, कयास, तरापीना ।

सं० अनुमानी - क० पु० विचारने  
वाला, अन्दाज करनेवाला ।

सं० अनुमित ( अनु + मित, मा =  
मापना ) स्म० पु० अटकल गया,  
कयास दिया गया ।

सं० अनुमेय ( अनु + मेय - मा = माप-  
ना ) स्म० पु० अन्दाज के लायक ।

सं० अनुमोदन ( अनु + मुद = रपित  
होना ) परमा, समर्पण, नाश्द करना ।

सं० अनुमोदित ( अनु + मुद ) क०  
पु० आछादित, आनन्दित, खुश ।

सं० अनुयायी ( अनु = पीछे, यायी =  
आनेवाला, या = जाना ) क० पु० पीछे

जानेवाला, दास, नौकर, अनुचर  
परोकार ।

सं० अनुयोग ( अनु + युज = मिल-  
ना ) भा० पु० तिरस्कार, निरादर,  
बेकदरी !

सं० अनुयोजन - भा० पु० पूछ पाछ,  
अपील ।

सं० अनुयोक्ता } ( अनु + युज = मि-  
अनुयोजक } लना, मिलाना )  
पूछ पाछ करनेवाला, अपीलांत, अ-  
र्थात् अपील दायर करनेवाला ।

सं० अनुयोज्य - स्म० पु० निन्दायोग्य  
काचित, हिकारत, रिस्पांडेंट अ-  
र्थात् वह जिसपर अपील की जाय ।

सं० अनुरक्त ( अनु = साथ + रक्त =  
रंगना ) क० पु० प्रेमी, अनुमूल,  
शायक, आशिक ।

सं० अनुराग ( अनु = साथ, रक्त =  
रंगना ) भा० पु० प्यार, स्नेह, प्री-  
ति, छेद, मोह, मुग्धत्व ।

सं० अनुरागी - क० पु० प्रेमी, स्नेही,  
मुग्धवती ।

सं० अनुराधा ( अनु = पीछे, राधा =  
विशाला नक्षत्र, राध = पूरा करना )  
स्त्री० सचरहवां नक्षत्र ।

सं० अनुरुद्ध } ( अनु + रुध = रोक-  
अनुरोधित } ना ) स्म० पु० रोका  
गया, कैद किया गया ।

सं० अनुरूप ( अनु = बराबर, रूप =

दौल ) गु० बराबर, तुल्य, समान,  
 एकमा, सदृश, अनुसार, अनुहार ।  
 सं० अनुशासक (अनु + शास् = सि-  
 : खाना ) क० पु० शास्त्रिण ।  
 सं० अनुरोध (अनु + रुध् ) भा०  
 अनुरोधन } पु० अपेक्षा, निम्न  
 २ रोकना, ३ आज्ञापालन, आग्रह,  
 सम्मति, वामील लिहास ।  
 सं० अनुरोधक } क० पु० रोकनेवाला  
 अनुरोधी } आज्ञापालक, कर्मा-  
 धरदार ।  
 सं० अनुलेप (अनु + लिप् = लगा-  
 अनुलेपन } ना,) भा० पु० उचटन  
 लगाना, नेत्रलगाना, मुंग्यादिकलेप ।  
 सं० अनुलोम (अनु = पीछे + लोम =  
 बाल) गु० बालसहित, यथाक्रम,  
 विलोम ।  
 सं० अनुवाद (अनु + वद् = कहना )  
 भा० पु० बारबार कहना, उल्या,  
 तर्जुणा ।  
 सं० अनुवृत्ति (अनु + वृत्ति = चरना)  
 मार्ग, सेना, जरिया, वामील ।  
 सं० अनुवेदना (अनु + विद् = वि-  
 चारना ) भा० स्त्री० सरानुमति,  
 हसदों ।  
 सं० अनुवर्जन (अनु + वृज् = वर्जना)  
 अनुवर्तन } = माना, वर्जना )  
 पीछेचलना, अनुगमन, पैसीकरना ।

सं० अनुशासन (अनु = पास, शास् =  
 सिखाना ) भा० पु० आज्ञा, हुक्म,  
 शिक्षा, सीस ।  
 सं० अनुशीलन (अनु + शील = अ-  
 भ्यास करना) भा० पु० आलोचन,  
 अभ्यास करना, सेवन ।  
 सं० अनुशीलन (अनु + शील = अ-  
 करना ) भा० पु० परवाचापकरना,  
 अक्रोश करना ।  
 सं० अनुष्ठान (अनु + स्था = ठहर-  
 ना ) भा० पु० आरम्भ, आयाज  
 समल ।  
 सं० अनुसन्धान (अनु = पीछे, सम् =  
 अच्छी तरह से, धा = रखना ) पु०  
 खोज, पता, खोजना, तलाश, अ-  
 न्वेषण, साजिश, तहकीकात, पूछ-  
 पाछ, कसद, मबन्ध, इन्तिजाम ।  
 प्रा० अनुसरना } सं० (अनु +  
 अनुहरना } सरण, अनु =  
 पीछे, मृ = जाना ) क्रि० अ० पीछे  
 चलना, २ साथ चलना ।  
 सं० अनुसार (अनु = पीछे, मृ = जाना )  
 भा० पु० बराबर, मुताबिक, समान ।  
 सं० अनुस्यूत = ओतपोत, परस्पर,  
 धारम, खलपलत ।  
 सं० अनुस्वार (अनु = पीछे, वरावर,  
 स्तु = रुन्द करना ) पु० स्वरके सि-  
 रपर की बिंदी ।  
 प्रा० अनुष्टुप पु० अनोखा, नया, अपूर्व ।  
 प्रा० अनुप (सं० अनुपम) गु०  
 अनुप } जिसकी बराबरी नहीं,

वचन, धेनु, सबसेमच्छा, बेमिस्तल,  
२ दलदल ।

सं० अनृत ( अनृ=नहीं, कृत=सांघ,  
अनृ=तानी ) गु० भूटा, स्त्री० भूठ ।

सं० अनेक ( अनृ=नहीं, एक ) गु०  
बहुत देर, अधिक, कई एक, एक नहीं ।

प्रा० अनेसे-क्रि० वि० कुरछिसे देहे ।

प्रा० अनोसा गु० अनूठा, अद्भुत ।

सं० अन्न ( अन्=जाना ) गु० सीमा,  
आगिर, सिरा, गूँठ, सींच, समाप्ति,  
पूरा होना, २ नाश होना, मौत, गु०  
विद्वता, रोग, विद्वान ।

सं० अन्नःकण ( अन्नर=भीतर  
कण=अन्नी ) गु० मन, विष, हृदय, नी।

सं० अन्नःपुत्र-पु० गियों के रहने  
का घर, जनानगाना, हरेम ।

सं० अन्नकाल ( अन्न=विद्वता, काल=समय ) गु० मनेकासमय, मौत  
का समय, मौत हो गयी ।

प्रा० अन्नड़ी ( सं० अन्नृ, अति=  
बाँवना ) स्त्री० आन, अन्नरी ।

सं० अन्नर ( अन्न=सीमा, रा=देना )  
पु० भीतर, बीच, बीचही जगह, दू-  
री, २ मन, ३ भेद, करक, गु० और  
क्रि० वि० भीतर, बीच में ।

सं० अन्नरक्या ( अन्नर=बीच की  
क्या=बात ) स्त्री० बात में बात ।

सं० अन्नरंगमित्र पु० दिनों दोस्ती

सं० अन्नरंगमन्त्रा ( अन्नर+ग+  
मन्त्र=मन्त्रा है अन्नरमन्त्रा, होटी मन्त्रा )

प्रा० अन्नर ( सं० अन्नर ) पु० म-

जन लपका गीत आदि का चरण  
पद, गु० बीचका पाँस ।

प्रा० अन्नरिया ( सं० अन्नर ) पु०  
तिनारी, जोतपकदिनरी चनेआकर

तीसरेदिन फिरआये, अन्नरा, तप ।

सं० अन्तरिक गु० भीतरी, अन्तरणी ।

सं० अन्तरिक्ष ( अन्तर=स्वर्ग और  
अन्तरीक्ष ) पृथ्वी के बीच,  
ईस=देगना, वा अन्तरभीतर, अन्तर,  
तारा अर्थात् जिसमें तारे हैं ) पु०  
आकाश, शून्य, अंतर ।

सं० अन्तरित ( अन्तर+इत=गया  
हुमा ) मध्यका, बीचका, दमियानी

सं० अन्तरितकृतक ( अन्तरित+  
कृतक, कृत=जोतना ) क० पु० शिक-  
मी हारनहार, वह किमान जो मौक-  
सी कारनकार से लेकर जमीन  
जोतना है ।

प्रा० अन्नगी ( सं० अन्न, अति=बाँव-  
ना ) स्त्री० आति, अन्नड़ी ।

प्रा० अन्नगियां जलना थोल० बहुत  
मूल लगना, भूखीपटना ।

प्रा० अन्नगीकावलजलना थोल०  
मूल में नेत्र भरके जाना ।

प्रा० अन्नगियोंमें आगलगना थोल०  
ल० बहुत मूला होना, बहुत मूल  
लगना, बहुत मूलों मरना ।

सं० अन्नगी ( अन्ना=भीतर, आति=  
वानी ) पु० घासी का घर दुहड़ा  
जो समुद्र में दूर तक बना गया हो,  
जैसे कन्नाडुमारी ।

- प्रा० अन्तर्जामी } ( अन्तर=मन  
सं० अन्तर्यामी } यम्=ठहरना,  
फैलना ) गु० मन की बात जानने  
वाला, पटपटनिवासी, पु० परमे-  
स्वर, ईश्वर, परमात्मा ।
- प्रा० अन्तर्धानहोना } ( सं० अ-  
न्तर्धानहोना } न्तर्धान, अ-  
न्तर, भीतर=वा=रखना, पकड़ना )  
क्रि० अ० अलख होना, दिखाना,  
नहीं दिखाना, बिलाना, गुप्तहोना,  
ग्रायब होना ।
- सं० अन्तर्पट ( अन्तर=बीचमें, पट=  
कपड़ा ) पु० परदा, ओट, आड़, क-  
नात, दही ।
- सं० अन्तर्दृष्टि-पा० स्त्री० दिलीहाल ।
- सं० अन्तर्हित ( अन्तर=भीतर, वा=  
रखना ) गु० अन्तर्धान, छिपा, अ-  
लख, अदृश्य ।
- सं० अन्तिक-पु० सप्ताप, मित्र, बूढ़ा-  
जेठी बहिन ।
- सं० अन्तिम-गु० पिछला, आखिरी ।
- सं० अन्त्रावलि ( अन्त्र=आंत, अति  
बांधना, अवलि=पांव ) स्त्री० बहुत  
सी अन्त्रद्वियां, अंतर्द्वियों की पांति ।  
जैसे, धरिगाल फारहिं उरविदारहिं  
गलअन्त्रावलि मेलहीं रामायणलं० ।
- सं० अन्य ( अन्य=अंधा होना ) गु०  
अंधा, सदास, विन आंतका, पु०  
अंधेरा ।
- सं० अन्यकार ( अन्य=अंधा, कार=  
करनेवाला, कृ=करना ) पु० अंधेरा,  
अंधियारा ।

- सं० अन्यकूप ( अन्य=अंधा, कूप=कु-  
आँ ) पु० अन्धाकुआँ, ऐसा कुआँ  
जिस में यास पात जमनाता है और  
पानी नहीं होता ।
- प्रा० अन्यड़ ( सं० अन्धे ) पु० अंधी,  
तूफान ।
- सं० अन्यपरम्पराग्रस्त-सं० पु०  
पुरानी रीतों में कैसाहुआ कदीम  
रस्मों में मुचतला ।
- प्रा० अन्यला } ( सं० अन्य ) गु०  
अन्या } विन आंत का,  
सूरास, आंत फूटा, नेत्रहीन ।
- प्रा० अन्याधुन्यबोल० अंधेरा, बेहि-  
साब, बेठिकाना, बहुतही बहुत अन्यों  
की तरह, आंत मेंदे ।
- प्रा० अन्याधुन्यलुटाना-बोल० उ-  
ड़ाना, बेहिसाब खर्च करना, बेठि-  
काने, खर्च करना, बेकायदख खर्च  
करना, आंत मेंदे खर्च करना ।
- सं० अन्यसुत ( अन्य=अंधा, सुत=  
बेटा ) पु० अन्धेका बेटा अन्धे राना  
घृतराष्ट्र का बेटा दुषोधन ।
- प्रा० अन्धियारा ( सं० अन्यकार )  
पु० अंधेरा, अन्यकार ।
- प्रा० अंधेर ( सं० अन्यकार ) पु० अंधे-  
रा, अन्याय, बतेड़ा, टपटप, अन्याय  
न्य, चलाव, अनीत, बलवा, देगा ।
- प्रा० अंधेरकरना-बोल० अन्याय  
करना, अनीतकरना, उपद्रव करना,  
अन्याधुन्य करना ।
- प्रा० अंधेरा ( सं० अन्यकार ) पु० अ-  
ंधियारा, अन्यकार ।

प्रा० अंधेरीकोठरी-बोल० ऐसी  
कोठरी जिसमें अंधेरा हो, २. पेट  
गर्भस्थान, कोख, घरन ।

सं० अन्न (अद्=खाना, या, अन्=  
जीना) पु० नाज, अनाज, गाना ।

सं० अन्नकूट (अश्न=खाना, कूट=  
ढेर) पु० दीवाली के दूसरे दिन  
का पर्व, जिस में हिन्दू लोग बहुत  
सा खाना और तरकारियां बनाकर  
अपने देवताओं को भोग चढ़ाते हैं ।

सं० अन्नजल { बोल० दानापानी  
अन्नपानी } संयोग, पु० गाना  
पीना ।

सं० अन्नदाता (अश्न=अनाज, दाता=  
देनेवाला, दा=देना) बोल० पाछ-  
नेवाला, बघानेवाला, मालिक,  
दयावन्त, उपकारी, दाता ।

सं० अन्नपूर्णा (अश्न=गाना, पूर्णा=  
भरनेवाली) स्त्री० दुर्गाका नाम,  
योगमाया, देवी ।

सं० अन्नप्राशन (अश्न=अनाज वा  
खाना, प्राशन=पिलाया, प=पुष्प-  
अ, अश=खाना) पु० जब बालक  
छः महीनेका होता है तब पहली बार  
अनाज अथवा खीरआदिपिलाना ।

सं० अन्य (अन्=मीना) पु० और,  
दूसरा, गैर ।

सं० अन्यतर-पु० कोई एक ।

सं० अन्यथा (अन्व और, या=

प्रकार अर्थमें प्रत्यय) कि० वि० और  
प्रकार से, और तरहे से, नहीं तो  
गु० उलटा ।

सं० अन्याय (अ=नहीं, न्याय=र-  
न्साफ, धर्म) वैदन्साफी, अर्थमें,  
बपद्व, जुल्म ।

सं० अन्यायी (अन्याय) गु० अ-  
न्यायकरनेवाला, अधर्मी, दुष्टात्मा,  
जालिम ।

सं० अन्योन्य (अन्यः + अन्य) गु०  
आपस में, एक दूसरे को, परस्पर-  
बाह्य ।

सं० अन्योन्याश्रित-गु० एक दूसरे  
के साथ संबंध रखनेवाला, लाजिप  
मलजूम ।

सं० अन्यय (अनु=पीछे, इण=जा-  
ना) पु० वंश, कुल, २. पदच्छेद,  
श्लोक के पदों का संबंध मिळाना,  
तरकीबनखी ।

सं० अन्वित-म्भे० पु० मुक्त, शक्ति-  
ल, पूरा ।

सं० अन्येपण (अनु=पीछे, इण=  
जाना) पु० सोजना, पतानगाना,  
हेरना, ईदना, मलाशकरना ।

प्रा० अन्धवाना (अन्धाना) कि०  
सं० नरखाना, अंगथोना, स्नान  
कराना ।

प्रा० अन्धान (सं० स्नान वा अन्ध-  
गारन) पु० स्नान, अन्धाना ।

प्रा०अन्हाना ( सं० अचगाहन, वा स्नान ) क्रि० अ० अन्हाना, स्नान करना, शरीर साफ करना ।  
 सं०अप, वा० से, उलटा, हानि, नहीं, घुरा, भेद, विपाव, घुरीतरह से, अलग, भिन्न ।  
 सं०अपकर्ष ( अप + कृप् = खींचना ) भा० पु० खींचना, न्यूनता, निरादर ।  
 सं०अपकार ( अप = उलटा, वा घुरा वा हानि, कृ = करना ) भा० पु० विगाड़, घुराकरना, हानि ।  
 सं०अपकारी — क० पु० हानि करने वाला, नुकसान करनेवाला ।  
 सं०अपकीर्ति ( अप = घुरा, कीर्ति = प्रशंसा ) भा० स्त्री० घुराई, बदनामी, अपप्रशंसा, कुप्रशंसा ।  
 सं०अपक्व — गु० कच्चा, खाम ।  
 सं०अपगति — भा० स्त्री० दुर्दशा, घुरीहालत ।  
 सं०अपगा ( अप = नीचे, गम् = जाना ) स्त्री० नदी, दरिया ।  
 सं०अपचय ( अप + चि = चुनना ) भा० पु० गिरना, हानि, नुकसान ।  
 प्रा०अपडर — भा० पु० मिथ्याहर, अपना से डर ।  
 प्रा०अपत — गु० पापी, अप्रतिष्ठित, बेइज्जत ।  
 प्रा०अपति ( सं० आपत्ति ) प्रा० स्त्री०

अपमान, मुसीबत, बेइज्जती, अपति रहित, उपपत्ति ।  
 सं०अपत्य ( अ = नहीं, पत्य = गिरना ) निसकेद्वारा पितरं न गिरनेवाले, पुत्र, संतान, औलाद ।  
 प्रा०अपना — सं० सर्वना० निजका, आपका ।  
 प्रा०अपनीगाना, बोल० अपनी तारीफ करना, अपनेतई सराहना ।  
 प्रा०अपनाना — क्रि० सं० अपना करना ।  
 प्रा०अपनायत — स्त्री० नाता, संबन्ध, भाईचारा, पराना ।  
 सं०अपनीत ( अप + नीत = नी = छे जाना ) स्म० पु० हठापगया, दूर किया गया ।  
 सं०अपभ्रंश ( अप = से, भ्रंश गिरना ) भा० पु० गैवारी बोल चाल, व्याकरण की रीति से अशुद्ध शब्द-व्यकरणविरुद्धशब्द, विगड़ानुभा शब्द ।  
 सं०अपमान ( अप = उलटा, मान = आदर ) पु० अनोदर, निरादर, तिरस्कार, हलकापन, बेइज्जती ।  
 सं०अपयश ( अप = उलटा, यश = नामवरी ) पु० घुराई, बदनामी, अपकीर्ति, घुरानाम ।  
 सं०अपर ( अ = नहीं, पर = भरना वा अ = नहीं, पर = दूसरा ) गु० और

द्वयगा. एक श्रृंग. द्वयगा कोहे ।

सं०अपगमन अ + पर + गिन्  
मा = नापन, पापना । वेगगमाग, वेद-  
द, यत्नगितन ।

सं०अपगम्पार अ = नहीं, पर = द  
मरा, गार = अन्त । गु० अपगार, अन्त-  
न, वेद, तिमका पापनरी ।

सं०अपगध अ = दुर्गन्ध, गध =  
गन्ध = गन्धकर्मना । पु० गन्ध, देव,  
अरि, अ-बाध, जूय, गुनाह ।

सं०अपगभी अपगार । क० पु०  
गर्भा, दोषी, अपभी, गुनाहगार,  
मुन्निष ।

सं०अपगह्न अ + प = पिच्छन्त, अह्न  
दिन पु० नीमगावहर, मे पहर ।

सं०अपगचिन्त - गु० चित्तोन प-  
हचिन्त, अन्तज्ञान, अन्तनची ।

सं०अपगच्छार - भा० पु० अपवि-  
चन, धेनापन ।

सं०अपवर्ग अ + प = मिश्र, अलग-  
वर्ग = पद, दर्जा, अपर्ण, सब दर्जों  
से अलग और बढ़कर है ) पु०  
दुर्गन्ध, दोष, गरमद, परमगति, मुट-  
कारा, निस्तारा, बद्धार, नत्राह ।

सं०अपवाद अ + वृत्, वद = वद-  
नः । पु० गाली, निन्दा, दोष, बुराई,  
बदनामी ।

सं०अपवाहन अ + वृत् = लेना-  
ना, वृत्तानः, लोगों को बरहा

ले जाना । एक रात से दूसरे रात  
से ले जाकर बसाना ।

सं०अपवित्र अ = नहीं, पवित्र =  
जड़ गु० अजड़, पवित्र, अपावन,  
मार्ग ।

सं०अपजकुल अ + वृत्, शकुल  
अ + वृत् = वृक्षमूल, वृक्षक-  
मूल । अ + वृत् = अ + वृत्तन्त, लेवाना  
।

सं०अपजह्नु अ + वृत्, जह्नु ।  
पु० अ + वृत् = अ + वृत्तन्त, लेवाना  
। अ + वृत् = अ + वृत्तन्त, लेवाना  
। अ + वृत् = अ + वृत्तन्त, लेवाना  
।

सं०अपहगण अ + गण, ह = ले-  
जाना । भा० पु० हारक, ।

सं०अपहरित अ + प = हृन्त न  
यागया हरति यागया ।

सं०अपहारी - क० पु० हारनेवाला ।

सं०अपहृत - अ + पु० हृन्त न हरीत ।

सं०अपादान ( अ + प = ले, आदान =  
लेना ) भा० पु० लुदाकरना, विभाग  
२ व्याकरण में पाँचवाँ कारक ।

सं०अपान ( अ + नीचे + अन् =  
नीना ) पु० शरीर के पाँच पक्ष,  
नों में से एक जो गुदा से निकल-  
ती है, अथोवायु, गोत्र, २ कहरा  
वर्ण गु० अना, २ पानाहित ।

सं०अपाय ( अ + वृत्तिरहसे, इण =  
जाना ) पु० विगाह, नारा, हानि  
२ लुदा होना ।

सं० अपार (अ=नहीं, पार=अन्त) गुं०  
 अन्त, अपारम्भार, अनमित्त, बेहद ।  
 सं० अपावन (अ=नहीं, पावन=  
 पवित्र) गुं० अशुद्ध, अपवित्र, मैला ।  
 प्रा० अपाहन-गुं० लूना, छेगड़ा,  
 मुस्त ।  
 ० अपि-उप० भी, विसपर भी, इ-  
 सके सिवाय, इसपर भी, बरिह,  
 इहांतर, तोभी, तब भी, जोभी, य  
 एषि, निरवय, केवल, और भी,  
 पास, मिला हुआ ।  
 धं० अपील=अनुयोजन, मुराफा, दु-  
 बारा नालिग, बड़े शक्ति से फर-  
 याद ।  
 अं० अपीलॉट अनुयोजक, अपील-  
 बनेवाला ।  
 प्रा० अपृत (सं० अपुष, अ=नहीं, पुष  
 =दश) गुं० दिन बढ़नेवाला, नि-  
 रेश, २ कुप ।  
 सं० अपृत (अ=नहीं, पू=परिवर्त  
 ना) धं० पुं० अपरिवर्त, नापाक ।  
 सं० अपूर्ण (अ=नहीं, पूर्ण=पूरा)  
 गुं० पूरा नहीं, अपूरा, नाकाम ।  
 सं० अपूर्व (अ=नहीं, पूर्व=पहले,  
 अर्थात् जो पहले न देखा गया) गुं०  
 श्रिमद्धो पहले कभी नहीं देखा रो,  
 लहलह, अद्भुत, अनोखा, नया, अजीब ।  
 सं० अरुष्ट (अ=नहीं, अरुष्ट=इहना)  
 धं० पुं० बे इंद्रे ।  
 सं० अपेक्षा (अपेक्ष=देखना) स्त्री०

आशा, मरोसा, इच्छा, इवाराश,  
 जरूरत २ सम्बन्ध, निरुत्तर ।  
 सं० अपेय (अ+पेय, पो=पीना)  
 धं० पुं० नहीं पीने योग्य ।  
 प्रा० अपेल (अ=नहीं, नेलना=ग्राह  
 ना) गुं० अवज, अटल, अविट ।  
 सं० अप्रकाशित-धं० पुं० अंधकार  
 रीन, अंधेरा, तारीक ।  
 सं० अप्रचारित धं० पुं० धनन  
 बाहर, गैर मुताबक ।  
 सं० अप्रतिष्ठा (अ=नहीं, प्रतिष्ठा=  
 बढ़ाई) प्रा० स्त्री० अपयंग, अपमान,  
 बुराई, बदनामी ।  
 सं० अप्रतिहत धं० पुं० बेरोज, नाश  
 रहित, मारवान ।  
 सं० अप्रधान (अ=नहीं, प्रधान=  
 मुख्य) गुं० जो मुख्य नहीं, अमुख्य,  
 २ आधीन ।  
 सं० अप्रमाणिकोन्नति (अ+प्र-  
 माणिक+उन्नति) प्रा० स्त्री० श-  
 ती, तरकी ।  
 सं० अप्रमाणीय-गुं० अविश्वासनी-  
 य, बे इतिहास ।  
 सं० अप्रमेय (अ=नहीं, प्रमेय=  
 मापने योग्य, द=बहुत, दा=मापना)  
 धं० पुं० असार, अन्तर्ग ।  
 सं० अमलज (अ=नहीं, मलज=कुल,  
 रवि) गुं० दुर्ग, दलान, दहाम,  
 नाराज ।  
 सं० अमिय (अ=नहीं, मिय=मि-



सं० अमिलापी } क० पु० चाहने  
अमिलापुक } वाला, लोभी,

देवादिशमन्द, आर्द्रमन्द ।

सं० अभिवादन ( अभि + वद =  
कहना ) स्तुति, नमस्कार, वंदना ।

सं० अभिषिक्त ( अभि = सामने, पित्त  
सिच = सींचना ) स्म० पु० तिलक  
क्रियागर्भा ।

सं० अभिषेक ( अभि = ऊपर, सिच =  
सींचना ) भा० पु० राजातिष्ठके देने

के समय का स्नान, २ मंत्र देते समय

शिरपर पानी डालना, शान्ति स्नान ।

सं० अभिसन्धान भा० पु० मि-  
लाप, २ कपट ।

सं० अभिसन्धि भा० स्त्री० खूबमेळ,  
घोसा ।

सं० अभिसम्पात पु० संप्राप्त, युद्ध,  
नाश ।

भा० अभी ( अब + ही ) क्रि० वि०  
इसी, यही, इसीदिप, इसीसमय,

गुरन्त ।

सं० अभीरु ( अ = नहीं, भीरु = दरने-  
वाला ) गु० निर्भय, निर्दोष, पु०

महादेव, भैरव, शतावरि ।

सं० अभीष्ट ( अभि = बहुत, इष्ट = चाह  
हुआ, इष्ट = चाहना ) स्म० पु० चाह  
हुआ, बहुत चाहा हुआ, मनमाना,  
प्यारा, चरीता, पसन्द ।

पहले नहीं हुआ, अद्भुत, अजीब ।

अभ्यन्तर-गु० भीतरी, अंदरूनी ।

सं० अभेद ( अ = नहीं, भेद = क्षीणभाव )

गु० निसका भेद नहीं जाना जाय,  
२ जाना हुआ, ३ जो नहीं दूटसके,

निसमें कुछ नहीं घुससके, पु० मेळ ।

सं० अभ्यर्थना ( अभि = सामने, अर्थ  
= मांगना ) भा० स्त्री० निवेदन, दर

खास्त ।

अभ्यस्त स्म० पु० कादी, खूबर ।

सं० अभ्यागत ( अभि = सामने, गास,  
आगत = आया हुआ, आ, गम = आ-

ना ) पु० पाहुना, अतिथि, मेहमान

गु० आया हुआ ।

सं० अभ्यास ( अभि = बारबार, अभ  
कटना, और अभि उपसर्ग के साथ

आनेसे इसका अर्थ दोहराना होता  
है ) पु० साधन, चिंतन, बारबार

करना, रत्न, मरक ।

अभ्यासक } क० पु० अभ्यासक  
अभ्यासी } रनेवाला ।

अभ्युदय ( अभि + उदय, उद् + इ =  
जाना ) भा० पु० उद्दिष्टवर्त्य, उदयन ।

सं० अभ्र ( अभ्र = माना ) पु० बादल,  
मेघ, २ आकाश, अन्न ।

सं० अमङ्गल ( अ = नहीं, मङ्गल =  
कुशल, कल्याण ) गु० अशुभ,  
बुरा, पु० अकल्याण, अशुभ ।

भा० अमचूर ( सं० आम्रचूर्ण, आ-

-अ=आम, चर्य=चर ) पु० सुग्रासे  
आम के टुकड़े वा फाँके ।

सं० अमत्त-गु० मत्तरहित, धर्महीन,  
लामजहब ।

सं० अमर (अ=नहीं, म=मरेना) गु०  
जो कभी नहीं मरे, अविनाशी, सदा  
जीवित रहनेवाला— पु० देवता, २  
अमरकोष का बनानेवाला ।

सं० अमरपति (अमर=देवता, पति=  
स्वामी) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा ।

अमरपुर— (अमर=देवता,  
सं० अमरलोक) पु०, लोक=जगह )

पु० स्वर्ग-बोहरन ।

प्रा० अमराई (सं० आम्रराजि, आ-  
म्र=आम-राजि=कता) स्त्री० आं-  
बों का बाग ।

सं० अमरावती (अमर=देवता, वत-  
=वाली) अर्थात् जिसमें देवता  
रहते हैं, स्त्री० स्वर्ग, इन्द्र की राज-  
धानी, देवलोक ।

प्रा० अमरुत (सं० अमृत) पु० एक  
फल का नाम, अमरुद ॥

सं० अमोरा (अमर=देवता, ईश=  
राजा) पु० देवताओं का राजा, इन्द्र ।

प्रा० अमर्याद (अ=नहीं, मर्यादा  
सं० अमर्यादा) =मान, इज्जत)

स्त्री० अनादर, अनिन्दित, अवज्ञा,  
हठधर्म, इलज्जत ।

सं० अमर्ष (अ=नहीं, मर्ष=वृथा)

भा० पु० क्रोध, असह, गुस्सा ।  
सं० अमात्य-पु० भूमिकाभंगी, वजीर

आराजी ।

सं० अमल (अ=नहीं, मल=मैल)  
गु० निर्मल, शुद्ध, साफ, पवित्र,  
स्वच्छ ।

प्रा० अमलतास-पु० एक औषध  
का नाम ।

सं० अमान (अ=नहीं, मान=गर्व)  
गु० मानरहित, निरहंकार, बेगुस्तर ।

प्रा० अमाना (सं० मान, मा=माप-  
ना) क्रि० अ० समाना, मरजाना ।

सं० अमाय-गु० कपटरहित, बेमक ।

सं० अमाया-पा० स्त्री० सच्चाई,  
दिशानन्दारी ।

प्रा० अमावस (अमा=साथे  
सं० अमावस्या) चम=रहना, अ-

सं० अमावास्या) याँ निसादिन  
सूर्य और चांद एक राशिमें रहते हैं,

अमा सह वसतोऽस्याश्चन्द्राका अमा-  
वस्या, अमावास्या) स्त्री० अंधेरे

पड़की पंद्रहवीं तिथि, मावस ।

सं० अमित (अ=नहीं, मित=मापा  
हुआ, मा=मापना) गु० अममाप्य,  
अपार, बेहद, बेतुच्छने, जो नाप-  
ने में नहीं आवे ।

प्रा० अमिय (अं० अमृत) पु० अ-  
अमी) कृत, मुखा, पीयूष,

आव हयान ।

रों ओर से, ढौक=जाना) पु०  
अरहर, तर, एक प्रकार का जान  
जिस की दाल होती है।

सं० अराति (अ=नहीं, रा=देना,  
जो सुख नहीं देता) पु० बैरी, रात्रि,  
दुरमन।

प्रा० अराधना (सं० आराधन) क्रि०  
सं० पूजना, सेवा करना, भेंट  
जपना।

सं० अरि- (अ=जाना) पु० बैरी, शत्रु,  
दुरमन, थराति।

सं० अरिष्ट (रिष्=हिंसा करना) गु०  
अशुभ, पु० विघ्न, कौआ, वृष-  
भासुरदैत्य, नीववृक्ष।

प्रा० अरहू (सं० अरु) स्त्री० तिवरी,  
भकुटी।

प्रा० अरु-समुच्चय, और, फिर।

सं० अरुचि- भा० स्त्री० नफरत,  
वृणा, अनिच्छा।

सं० अरुण (अ=जाना) पु० सूर्य २  
सूर्य का सारथी, ३ सूर्य का रण,  
४ सिंदूर, कुंकुम, गु० लाल।

अरुणचूड़ } पु० मुर्ती, कुण्ड।  
अरुणशिखा }

प्रा० अरुणई (सं० अरुणता, अरु-  
ण=लाल) स्त्री० ललाई, विहान  
की ललाई, सुर्ती।

सं० अरुणोदय (अरुण=सूर्य, उद-  
य=निकलना) पु० मोर, तड़का,  
विरान।

सं० अरुणोपलः (अरुण=लाल,  
उपल=पत्थर) पु० लाल चुन्नी, पेश-  
राग, २ लालपत्थर।

सं० अरुन्तुद (अरु=ममस्पर्श, तुद=  
काटना) केशकारक, मर्मवेदक।

सं० अरुन्धती- स्त्री० वशिष्ठमुनि  
की स्त्री।

सं० अरूप (अ=नहीं, रूप=दौल)  
गु० निराकार, २ कुरूप, भोंडा,  
कुदौल।

सं० अरोग (अ=नहीं, रोग=बीमारी)  
गु० मलानंगा, निरोग, अच्छा।

सं० अर्क (अर्च=पूजना, वा, अर्क=  
गर्भ होना) पु० सूर्य, २ अकवन,  
आक, मदार।

सं० अर्गल-पु० विलाई, जंजीर, बे-  
लहन।

सं० अर्घ (अर्घ=पूजना, वा अर्घ=मोल  
होना) पु० आठ बीज मिलकर  
ईश्वरको अथवा सूर्य चांद आदि  
देवता के लिये अर्पण करना, पूजे  
में सूर्य चांद आदि देवताओं के  
पांनों देना, २ मोल, क्रीमन।

प्रा० अर्घी (सं० अर्घ) पु० अर्घ दे  
का वरतन जो नाव के आचार  
नता है।

सं० अर्चक (अर्च=पूजना) पु०  
जनेवाला, पुजारी, सेपक।

प्रा० अर्चना (सं० अर्चन) क्रि०  
सं० पूजना, पूजाकरना, स्त्री० पूजा।

सं० अर्चा ( अर्थ=पूजना ) भा० स्त्री०  
पूजा, सेवा, आराधना ।

सं० अर्चित ( अर्थ=पूजना ) र्म० पु०  
पूजाकिया हुआ, सेवाकिया हुआ ।

सं० अर्जन ( अर्थ=इकट्ठा करना )  
भा० पु० इकट्ठा, कमाई, संग्रह,  
संचय ।

सं० अर्जुन ( अर्थ=इकट्ठा करना,  
वा जीतना ) पु० पाण्डु का तीस-  
रा बेटा, युधिष्ठिर का भाई जो  
इन्द्र के अश्व से पैदा हुआ, २ एक  
पेड़ का नाम, रवेत, दिशा ।

सं० अर्णव ( अर्थ=थानी, अर्थ=जा-  
ना ) पु० समुद्र, सागर ।

सं० अर्थ ( अर्थ=मांगना, वा अर्थ=  
जाना ) पु० अभिप्राय, मतलब, ता-  
त्पर्य, कारण, प्रयोजन, विचार,  
इरादा, मनोरथ, निपे, वास्ते नि-  
मित्त, २ धन, मुनाफा ।

सं० अर्थकारी ( अर्थ+कृ=करना )  
क० पु० कार्यसाधक, उपयोगी,  
मुफ्तीद ।

सं० अर्थशास्त्र-पु० राजनीति, दि-  
कमतमपत्ती, पालिसी ।

सं० अर्थात् ( अर्थ ) समुच्च० अव्य०  
अर्थ से, जानो, यानि ।

सं० अर्थी ( अर्थ ) गु० धनी, धन-  
वान् २ मांगनेवाला, याचक,  
३ वादकरनेवाला, मतलबी, फरपा-  
दी, ४ मुद्दे की खाट, रयी ।

प्रा० अर्दावा-पु० मोटाआटा, दलिया ।

सं० अर्दित ( अर्थ=पीड़ितहोना ) र्म०  
पु० दुःखित, कष्टित, मुसीबतसदा ।

सं० अर्द्ध ( अर्थ=वदाना ) गु० आधा ।

सं० अर्द्धचन्द्र ( अर्थ=आधा, चन्द्र  
=चांद ) पु० आधाचांद, चंद्रबिंदु ।

सं० अर्द्धनिमेष-पु० आधापल, आ-  
धाक्षण ।

सं० अर्द्धवन्य-गु० नीमवहरी ।

सं० अर्द्धरात्र ( अर्थ=आधी, रात्रि=  
रात ) स्त्री० आधीरात ।

सं० अर्द्धाङ्ग ( अर्थ=आधा, अंग=  
शरीर ) पु० आधा शरीर, २ पञ्चा-  
यात, शीतांग, एक बीमारी जिसमें  
आधा अंग रहजाता है ।

सं० अर्द्धाङ्गी ( अर्द्धांग ) स्त्री० लुगा-  
ई, स्त्री, नारी, पत्नी, गु० पञ्चायाती ।

सं० अर्पण ( अर्थ=जाना ) पु० देवता  
की भेंटदेना, भेंट, दान, समर्पण, नजारा ।

प्रा० अर्पणकरना { ( सं० अर्पण )  
अर्पना } क्रि० स० भेंट

चढ़ाना, ईश्वरको या देवताको भेंट  
देना, सिपुर्देकरना, चारभेदेना ।

प्रा० अर्व ( सं० अर्वुद, अर्व=जाना )  
पु० सौकरोड़, और कहीं कहीं अ-  
र्वुदका अर्थ दशकरोड़भी लिखा है ।

प्रा० अर्व स्वर्ग-कोल० अपार, बे  
शुमार, अनगणित, असंख्य ।

मं० अर्भक (कं=जाना) पु० लड़का  
 अर्भक } धानक, पुत्र, मित्र, पु०  
 होता ।

प्रा० अर्शश पु० बड़ाभारी शब्द, म-  
 कान आदि के गिरपड़नेका शब्द,  
 बगला बाग व गोलेका शब्द ।

मं० अर्वाचीन-पु० नया, जरीद ।

मं० अर्हन् (अर्ह=पूतना) पु० चौ-  
 पदरी, भैर, भैरिणी के एक मुनि-  
 का नाम ।

मं० अलक (अल्=भारना) श्री०  
 दुर्वाकेशान-कुल्क, लट्ठी, लट,  
 देवीकान्त, अमरिषे कान ।

मं० अलका-श्री० कुंभारी, दगवरी  
 की हथिया ।

मं० अलकावलि (अलक=दूधरवाले  
 कान, आवलि=नांव) श्री० बेगी,  
 दूधरवालेकान्त, कुल्क, दूधरे कान्त,  
 अमरिषेकान्त ।

प्रा० अलक्षि । मं० अलक्षी ) पु०  
 ध्वनीज, त्रिशी, कंगाल, मुकलिस ।

मं० अलक्ष्य (अ=नहीं, लक्ष्य=देखना)  
 मं० पु० अलक्ष्य, अलोच्य, जो देख-  
 ने में नहीं आवे ।

प्रा० अलक्ष्य (मं० अलक्ष्य) पु०  
 अलक्ष्य, अलोच्य, जो देखने में  
 नहीं आवे ।

प्रा० अलक्षित (मं० अ=नहीं, लक्षित  
 =देखावका) मं० पु० नदिदेखा,

नहीं जानागया, बेपत्ता, अक्षुब्ध ।

प्रा० अलग (सं० अलग, अ=  
 अलगा) नहीं, लान, लगा हु-

आ, लग=मिलना) पु० जुदा, अर-  
 गा, न्यारा, भिन्न, अलगहदा ।

प्रा० अलगाना (सं० अलग) क्रि०  
 सं० जुदाकरना, अलगकरना, न्या-  
 राकरना, भिन्न करने ।

मं० अलङ्कार (अलप=शोभा, कार=  
 करना, कु=करना) पु० गहना,  
 भूषण, शोभा, आभरण, साहित्य  
 शास्त्र का एकभाग कविताका गुण  
 दीप बनानेवाला ग्रन्थ, शब्दभूषण  
 सतम्भ ।

मं० अलंकृत (अलप=शोभा, कु=  
 करना) मं० शोभायमान, शोभित  
 भूषित, सवाराहुआ, गुंवाराहुआ,  
 वनायाहुआ, सुसज्जित ।

प्रा० अलङ्कृ श्री० ओर, तर्क, ओर-  
 पार-इमअलङ्कृ=इमओर, इमपार ।

प्रा० अलङ्कृता (सं० अलङ्कृत, अ=नहीं,  
 रक्त=जाना अर्थात् जिसमें अलङ्कृत  
 ओर कोई कान नहीं वहां र कोल  
 होगया) पु० ज्ञानके ईगदे मुख  
 गहरी ईगी हुई कई जिसमें भिन्न  
 राज पैर रचानी हैं, बहारी ।

प्रा० अलङ्कृता-पु० अलङ्कृत, बहारा,  
 अलङ्कृता, अलङ्कृत विवर्धिता ।

मं० अलङ्कृ (अल्+अन) अलङ्कृत,

भूषण, शोभ, निषेध, निवारण,  
अवधारण, पुरा, मर, बाकी, बेका-  
यदा, वस, प्रकृत ।

सं० अलभ्य (अ=नहीं, लभ=मिल-  
ना) सं० पु० जो मिल न सके  
ईर्ष्या, प्रमाद, नापाव ।

प्रा० अलान (सं० आलान) स्त्री०  
राणी के सांवने की रस्सी, जंजीर आदि ।

प्रा० अलाप (सं० आलाप) बा०  
पु० राग, शान, वर, २. बानचीन,  
बोल चाल ।

प्रा० अलापना } (सं० आलाप)  
आलापना } कि० अ० सुरदि-  
लाना, रागदिदना, गाना, बानचेदना ।

प्रा० अलापी (अ=बहुत, लप्=क-  
रना) बानेवाला, बरनेवाला,  
गुनबानेवाला ।

प्रा० अलाव-पु० पूर्वी ।

सं० अलि (अल=समर्थ होना, अ-  
ली) पावेंक मानेवे जो  
मनेवे जो समर्थ होशरी) पु० भौर,  
भौरा, २. शिष्ट, ३. बोल, ४. बान,  
५. वर, ६. दिस ।

सं० अलिनि-श्री० अवधि, भोगी ।

सं० अलीक (अल=गोहना) पु०  
भूत, पिशा, प्रमाद, प्रकृत, श्री०  
भूत ।

सं० अलीन (अ=अलि, ली=मि-  
लना वा मिलना) अरोग, १-  
शय, माजराव ।

प्रा० अलीहा (सं० अलीक) पु०  
भूत, पिशा, दगोश ।

प्रा० अलैक पलवा (सं० अलीक  
मलाप) बेहदा, प्रकृत, आदिपान  
प्रकृत, बेटीर टीक करना ।

प्रा० अलैया बलैया (सं० अलि=  
बाग, बलि=बनिदेना) श्री० नि-  
दावर ।

प्रा० अलोना (सं० अलवण, अ-  
नहीं लवण=निषर्क) पु० बिने  
लोन का, बे सबाद, फीका ।

सं० अलोभ (अ=नहीं, लोभ=लुभ  
=चाहना) पु० निर्लोभ, भेदुष्ट,  
बेवदध ।

प्रा० अलोला-पु० नासमक, बे अ-  
कल, स्थिर, बेहरबन ।

सं० अलौकिक (अ=नहीं, लौकिक=  
संगार का) पु० असीमा, अद्भुत,  
जो इसलोक का नहीं परलोक का ।

सं० अल्प (अल=समर्थ होना, हा-  
गोहना) पु० थोड़ा, रुझ, दीछ-  
कर्मान ।

सं० अल्पवृद्धि (अल=थोड़ी, वृ-  
द्धि=वर्धक) पु० वरधक, बंद,  
हृद, दुर्ग ।

प्रा० अलहद-पु० अलहद, अलहद  
का, २. बान ।

सं० अल-श्री० अल, १. वर, २. वर,  
३. वर, ४. वर, ५. वर, ६. वर,  
७. वर, ८. वर, ९. वर, १०. वर ।

सं० अवकाश (अव=वीचमें, काश=चपकना) पु० औसर, सुवीता, सावकाश, फुरसत, वीचका समय ।

प्रा० अवगाहना (सं० अवगाहन, अव+गाह=गमना) क्रि० सं० मयना, गाहपाना, २ न्हाना ।

सं० अवगुण (अव=बुरा, गुण) पु० दोष, तोट, औगुण ।

सं० अवग्रह (अव=नीचे, ग्रह=पकड़ना) भा० पु० रुकावट, रोक, २ समाप्तके पदों का विभाग ३ हाथियों का घुंटा ४ औंठ ।

सं० अवज्ञा (अव=बुरी, ज्ञा=ज्ञानना) स्त्री० अनादर, अपमान, २ धिन, नकरन ।

सं० अवतंस (अव=निरचय, तंसि=शोभना) पु० गहना, भूषण, २ कान का गहना, भुमका, कण्ठफूल ।

प्रा० अवतरना (सं० अवतरण, अव=नीचे, तृ=तारहीना) क्रि० अ० अवतार लेना, उतरना विष्णु का अवतार लेना ।

सं० अवतार (अव=नीचे, तृ=तारहीना, भा० पु० जन्म, पकट, उ, लक्ष, विष्णुका जन्म लेना, विष्णु के चौबीस अवतार हैं उन में से दस अवतार बहुत प्रसिद्ध हैं जैसे १ बन्धु, २ वृद्ध, ३ बराह, ४ कृष्ण, ५ राम, ६ परमुराम,

७ रामचन्द्र, ८ श्रीकृष्ण, ९ बुध, १० कलकी ।

सं० अवदान (अव=नीचे, दा=काटना) भा० पु० दण्ड, कल्ल; मारडालना, पराक्रम, उल्लेखन ।

प्रा० अवदीच (सं० उदीचि=उत्तर दिशा, उन्=ऊपर, अश्च=जाना) पु० गुजराती ब्राह्मणों की एकजात ।

सं० अवद्य (अ=नहीं, वद्य=कहने योग्य, वद्=कहना) पु० पाप, दोष, अपराध, गु० नीच, पापी, निंदाकर-नेकेयोग्य, नहीं कहने योग्य ।

प्रा० अवध (सं० अवधि, अव=रू धा=रखना) स्त्री० बचन, सीमा सीव २ समय, मुदत ३ (सं० अवयोध्या) पु० अवधदेश, ४ (सं० अवध्य, अ=नहीं, वध्य=मारने योग्य वध=मारना) गु० नहीं मारने योग्य ।

सं० अवधान (अव+धा=रखना) भा० पु० कृपा, दया, तवज्जुह ।

प्रा० अवधारी-पु० निरचय किया गया सोचा गया ।

सं० अवधीय-धा० अवध्य=विचारकर सोचकर ।

सं० अवधीस्ति-म्ये० पु० अनादर, अपमानित, प्रकलवकी गई, तायागी गई ।

सं० अवनति (अव=नीचे, नति=नष्ट=घुटना) भा० स्त्री० घटती, तन, झुलती, उतार ।

सं० अवनि ( अव=वचाना ) स्त्री०  
अवनी } परती, पृथ्वी, जमीन,  
भूमि ।

सं० अवनिकुमारी ( अवनि=पर  
ती, कुमारी=बेटी ) स्त्री० सीता, ज्ञा-  
नकी, जनकराजा यज्ञके लिये धर-  
ती जोतने पे वससमय धरती में से  
पद्म पड़ा निकला उस में से सीता  
जी निकलीं ( इसका पूरावर्णन राम  
चरित्रमें देखो ) ।

सं० अवनिप ( अवनि=पृथ्वी, प=  
रचाकरना ) क० पु० राजा, बादशाह ।

सं० अवनिपरमणि—स्त्री० रानी,  
मलिका ।

सं० अवनीत ( अव=नहीं, नी=ले,  
जाना ) कर्म० पु० वेदंगा, वदचक्रन,  
वदसलीका, कुमारी ।

सं० अवनीश ( अवनि=धरती,  
अवनीश्वर } ईश वा ईश्वर=रा-  
जा ) पु० राजा, महाराजा, राना-  
धिराजा ।

सं० अवन्ति ( अव=वचाना ) स्त्री०  
मालवादेश ।

सं० अवन्तिका ( अव=वचाना )  
स्त्री० मालवादेशकी राजधानी उ-  
ज्जैन, सात पवित्र पुरियोंमें की एक  
पुरीथीअयोध्या, मथुरा, माया गया,  
काशी, कांची, अवन्तिका, पुरी ।

सं० अवयव ( अव=हुदाहुदा, वु=वि-  
लना ) पु० अंग, शरीरका कोईभाग ।

सं० अवराधक ( अव=निरवयवी,  
राष्ट्र=पूराकरना ) क० पु० सेवक, सन्त  
आराधनाकरनेवाला, आविद ।

प्रा० अवराधना ( सं० अवराधन )  
भा० स्त्री० सेवा, चिदमत्र ।

प्रा० अवरेख—स्त्री० लेख, लकीर,  
गिनती, गुमार ।

सं० अवरोध ( अव, रुध=रोकना ) पु०  
रोक, रोकताव, अटकाव, रनिवास ।

प्रा० अवर्त ( सं० आवर्त ) पु० पानी  
का चकर, भंवर, गिराव ।

सं० अवलम्ब ( अव, लप्ति=ठहर-  
अवलम्बन ) ना ) ए० पु०

सहारा, आसरा, आधार, आड़ ।

प्रा० अवली ( सं० आवलि ) स्त्री०  
पात, पंक्ति, लकीर ।

सं० अवलेह ( अव+लिह=चाटना )  
पु० चाटना, चटनी ।

सं० अवलोकन ( अव, लोक=दे-  
खना ) भा० पु० दृष्टि, दीठ, नजर,  
देखना, दर्शन, मुलाहिजाकरना ।

प्रा० अवलोकना ( सं० अवलोकन )  
क्रि० स० देखना ।

सं० अवश ( अव=नहीं, वश=चाहना )  
वैशय, वैश्विन्यार, वैकाच ।

सं० अवशिष्ट ( अव+शिष्ट=बाकी  
रहना ) क० पु० बाकी अधिक, शेष ।

सं० अवशेष—भा० पु० बाकी ।



सं० अवश्य ( अव=निश्चयही, रपे=जाना ) क्रि० वि० निश्चयही चाहिये, जरूर ।

सं० अवश्यक (अवश्य) गुं० जरूरी ।

सं० अवश्यकता (अवश्य) स्त्री० जरूरत, मयोजन, निश्चय ।

सं० अवसर ( अव=निश्चय, सृ=जाना ) पु० औसर, अवकाश, समय, मौका, विराम, ठहराव ।

सं० अवसन्न ( अव+सन्न, सइ=बैठना ) क० पु० थकाहुआ, गिरा हुआ, समाप्त, उदास, शोचनीय, हारा हुआ ।

सं० अवमान ( अव, मो=नाशकर ना ) पु० अन्न, ममात्रि, पीत, २ इद ।

प्रा० अवसेरी—स्त्री० देर, मर्यादा, इतिहासी ।

सं० अवस्था ( अव, स्था=ठहरना ) स्त्री० दशा, उमर, आयुर्दा, हालत ।

सं० अवस्थित—क० पु० ठहराहुआ, मुकीप ।

सं० अवहित ( अव+हित, धा=रखना ) मनोयोगी, मावधान, मुत-वज्जेर, २ प्रख्यात, पशुदूर ।

प्रा० अवहि ( आना ) स्त्री० आने की खरा, आना, २ मैतलोरा वा औनछेरा भाटर मदेन ।

सं० अविकारी ( अ=नहीं, विकार=दोष ) क० पु० विकाररहित, बेदोष ।

सं० अविगत ( अ+वि+गत—गम=जाना ) क० पु० व्यापक, सब जगह मौजूद ।

सं० अविचल ( अ=नहीं, विचल=चलना ) गु० अवल, अटल; जो चलेनहीं, दृढ़, मजबूत ।

सं० अविद्या ( अ=नहीं, विद्या=ज्ञान ) स्त्री० अज्ञान, मूर्खपन, २ माया ।

सं० अविनय ( अ+वि+नी=ले जाना ) भा० पु० दिवारी, शोली येमदगी ।

सं० अविनाशी ( अ=नहीं, विनाशी=नाशहोनेवाला, तश=नाशहोना ) गु० जिसका कभी नाश न हो सदा रहनेवाला परमेश्वर ।

सं० अविश्ल ( अ=नहीं, विश्ल=परीन, किल्=ढकना, क्षिपाना ) गु० गहरा, गाढ़ा, मोटा, निबिड़, क्लिप्त, सदा, इवेशा ।

सं० अविरोध ( अ+वि+रोध, रुध=रोकना ) भा० पु० मेक, इति-क्राक, सम्पत्ति ।

सं० अविवेक ( अ=नहीं, विवेक=विचार ) पु० अज्ञान, अविचार, मूर्खपन, बेतपीशी ।

सं० अविवेकता—भा० स्त्री० अज्ञान-पन, बेतपीशी, जिहालन ।

सं० अविवेकी ( अविवेक ) क० पु० अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारनेवाला, बेतपीश ।

सं० अव्यक्त (अ=नहीं, व्यक्त=मकर)  
 मर्म० पु० मल्ल, अहदय, द्विपाहुआ,  
 पु० विष्णु, परमेश्वर ।

सं० अव्यय (अ=नहीं, व्यय=नाश  
 वा खर्च) पु० व्याकरणमें ऐसा श  
 द जो किसी तरहसे बदलना नहीं  
 होता है, जैसे, और, अ  
 धिवा, फिर, पुनि, आदि, २ विष्णु,  
 परमेश्वर, गु० अविनाशी वि  
 कृष्ण, ब्रह्म ।

सं० अव्यवस्थित (अ=नहीं, व्य-  
 वस्थित=अचल) गु० चंचल, उताव-  
 ला, अचेन, बेहोश, २ अनुचित, विचर  
 विचर ।

सं० अव्याहत (अ=नहीं, व्याहत=  
 निराश, बि, आ, रन्=मारना) मर्म०  
 पु० जो नहीं रोक जाय, आशावान् ।

सं० अशकुन (अ=नहीं, वा घुरा, श  
 कुन=सगुन) पु० घुरे सगुन, अपसगुन

सं० अशक्त (अ=नहीं, शक्त=समर्थ)  
 क० पु० निबल, कमजोर, दुबला,  
 असमर्थ ।

सं० अशक्य (अ=नहीं, शक=सकना)  
 असम्भव, असुमकिन, जो नहीं  
 होसका ।

सं० अशंक-गु० निर्भय, बेधौका ।

सं० अशन (अश=खाना) भा० पु०  
 खाना, भोजन ।

सं० अशनि (अश=ताड़ना, मारना)  
 पु० बज्र, बिजली, इन्द्रका शस्त्र ।

सं० अशिक्षित (अ=नहीं, शिक्षित=  
 सीखाहुआ, शिक्ष=सीखना, सिखा  
 ना) गु० अनसीखा, मूर्ख ।

सं० अशित (अश=खाना) मर्म० पु०  
 खायाहुआ, भुक्त, खुर्दा ।

सं० अशिव (अ=नहीं, शिव=शुभ)  
 गु० अशुभ, अमंगल, घुरा ।

सं० अशुद्ध (अ=नहीं, शुद्ध=पवित्र  
 गु० अपवित्र, ठीक नहीं, गलत ।

सं० अशुद्धता-भा० स्त्री० भूल, गल-  
 ती, गलत फहमी, नापाकी ।

सं० अशुभ (अ=नहीं, शुभ=अच्छा)  
 गु० घुरा, अमंगल, पु० घुराई, आ-  
 पदा, दुःख ।

सं० अशुभचिन्तकता भा० स्त्री०  
 घुराशोचना, बदअंदेशी ।

सं० अशोक (अ=नहीं, शोक=शोच)  
 पु० सुख, चैन, आराम, २ एकवृत्त  
 का नाम, गु० मसख, चैनसे, खश,  
 बे फिकर ।

सं० अशम } पु० पत्थर ।  
 अश्मन् }

सं० अश्व (अश=फैलना वा खाना)  
 पु० घोड़ा, नुरंग ।

सं० अश्वतर-पु० खबर, वह जानवर  
 जो घोड़ी और गधे से पैदा हो ।

सं० अश्वपति (अश्व=घोड़ा पति=  
 मालिक) पु० घोड़ेका मालिक, २  
 सवार, पुटवहा ।

सं० अश्वमेध ( अश्व=घोड़ा, मेध=  
यज्ञ ) पु० घोड़े का यज्ञ, एक प्रकार  
का यज्ञ जिसमें घोड़ा होमा जाता है ।

सं० अश्ववार ( अश्व=घोड़ा, वृ=  
पमंद करना या ढकना ) पु० सवार,  
पुड़वा ।

सं० अश्वशाला ( अश्व=घोड़ा,  
शाला=मगह ) श्री० पुड़साल, घोड़ों  
का तरेना ।

सं० अश्वशिक्षक-क० पु० चाबुक  
गहार ।

सं० अश्वसेधक-क० पु० साईस ।

सं० अश्विनी ( अश्व=घोड़ा, अश्विन्  
जितना आकार घोड़े के शिरमा है )  
श्री० एहनचक्र का नाम, पहना  
नचक्र ।

सं० अश्विनीकुमार ( अश्विनी=  
घोड़ी, कुमार=बेटा, अश्विन् सूर्य की  
श्री एहनचक्र घोड़ी का रूप बन  
गई थी तब घोड़े का रूप सूर्य बना  
या उस समय के पैदा हुए दो लड़  
कों का नाम अश्विनीकुमार है )  
पु० देवताओं के बेटे ।

सं० अश्वत्थ ( अश्वत्थ, एहनचक्र का  
नाम जो इस वहीने की पूर्णपामों  
को होता है और इस वहीने में पूरा  
बंद इस वनचक्र के पास रहता है )  
पु० वन का लोमड़ा वहीना ।

सं० अष्टधातु ( अष्ट=आठ, धातु=

धात ) श्री० आठधातुकी धातु  
जैसे १ सोना, २ रूपा, ३ तांबा,  
४ पीतल, ५ रांगा, ६ कांसा, ७  
सीसा, ८ लोहा ।

प्रा० अष्टधाती ( सं० अष्टधातु ) पु०  
आठ धातुका बना हुआ ।

सं० अष्टमी ( अष्टम=आठवां, अष्ट=  
आठ ) श्री० पक्षकी आठवीं तिथि

सं० अष्टसिद्धि ( अष्ट=आठ; सिद्धि  
मन का मनोरथ ) श्री० आठ प्रकार  
की सिद्धि १ अग्निमा बहुत छोटा  
बन जानेकी शक्ति, २ मरिमा बहुत  
बड़ा बन जानेकी शक्ति, ३ लयिमा  
इतना बन जाने की शक्ति, ४ प्राप्ति  
चाहे जितनी दूर पर जो चीज हो  
उमको छे छेनेकी शक्ति, ५ माका-  
इय चाहे मंसे मनोरथको पूरा करना  
ईशित्व ऐश्वर्यपरमना, वशित्वमचके  
बगकरनेकी शक्ति, ८ कामावमायिता  
सांसारिक सारी इच्छा को पूरा क-  
रना अर्थात् किसी बातकी इच्छा  
नहीं रहना ॥ अग्निमा लयिमा  
प्राप्तिः माकाइयमरिमा तथा ।  
ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामा  
वमायिता ॥ १ ॥

सं० अष्टांगप्रणाम ( अष्टांग=आठ-  
अंग, प्रणाम=नमस्कार ) पु० आठ  
अंगों में देवबत करना अर्थात् १  
हाथों २ पैरों ३ गर्भ ४ शिर ५  
आंखों ६ शिर ७ बदन ८ मन में  
ब्रणाम करना ।



सं० अश्वमेध ( अरव=घोड़ा, पेय=पेय ) पु० घोड़े का यज्ञ, एक प्रकार का यज्ञ जिसमें घोड़ा होमा जाता है ।

सं० अश्ववार ( अरव=घोड़ा, वृ=पमंद करना वा ढकना ) पु० सवार, पुद्गल ।

सं० अश्वशाला ( अरव=घोड़ा, शाला=जगह ) श्री० पुद्गल, घोड़ों का लगेना ।

सं० अश्वशिक्षक-क० पु० पापुक सवार ।

सं० अश्वसेधक-क० पु० सारिस ।

सं० अश्विनी ( अरव=घोड़ा, अर्थात् जिनका आकार घोड़े के शिरमा है ) श्री० एक नक्षत्र का नाम, पहला नक्षत्र ।

सं० अश्विनीकुमार ( अश्विनी=घोड़ी, कुमार=बेटा, अर्थात् सूर्य की छोटी पत्नी घोड़ी का रूप बन गई थी तब घोड़े का रूप सूर्य बना था उस समय के पैदा हुए दो लड़कों का नाम अश्विनीकुमार है ) पु० देवताओं के बेटे ।

सं० अनाद ( अनादा, एक नक्षत्र का नाम जो इस घरेलु की पूर्णमासी को होता है और इस घरेलु में पूरा चंद्र इस नक्षत्र के पास रहता है ) पु० काम का तीसरा घरेलु ।

सं० अष्टधातु ( अष्ट=आठ, धातु=

धातु ) श्री० आठधातु की धातु जैसे १ सोना, २ रूपा, ३ तांबा, ४ पीतल, ५ रांगा, ६ कांसा, ७ सीसा, ८ लोहा ।

प्रा० अष्टधाती ( सं० अष्टधातु ) गु० आठ-धातु का बना हुआ ।

सं० अष्टमी ( अष्टम=आठवां, अष्ट=आठ ) श्री० पक्ष की आठवीं तिथि

सं० अष्टसिद्धि ( अष्ट=आठ, सिद्धि मन का मनोरथ ) श्री० आठ प्रकार की सिद्धि १ अग्निमा बहुत छोटा बन जाने की शक्ति, २ महिमा बहुत बड़ा बन जाने की शक्ति, ३ लघिमा हलका बन जाने की शक्ति, ४ माप्ति चाहे जितनी दूर पर जो चीज हो उसको छे छेने की शक्ति, ५ प्राक्का-र्य चाहे जैसे मनोरथ को पूरा करना ६ ईशित्व चेश्वर्यरत्नना, वशित्वमचके वश करने की शक्ति, ७ कामावसायिता सांसारिक मारी इच्छा को पूरा करना अर्थात् किसी बात की इच्छा नहीं रखना ॥ अग्निमा लघिमा माप्तिः प्राक्काश्यं महिमा तथा । ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता ॥ १ ॥

सं० अष्टांगप्रणाम ( अष्टाङ्ग=आठ-अंग, प्रणाम=नमस्कार ) पु० आठ अंगों से देवदत्त करना अर्थात् १ हाथों २ पैरों ३ प्रांज ४ शिरदा ५ मांसों ६ शिर ७ वक्ष ८ घट से प्रणाम करना ।

सं० असंख्य (अ=नहीं, संख्या=गिनती) गु० अनगिनत, अगणित, बेगुमार, बेहिसाब ।

सं० असंग्रह (अ=नहीं, सं=सब, ग्रह=लेना) गु० पु० संवंपरीति, नहीं इच्छा ।

प्रा० अस-गु० ऐसा, ऐसी, कि० बि० इस तरह से, इस प्रकार से ।

सं० असत्य (अ=नहीं, सत्य=सांच) गु० झूठा, मिथ्या, पु० झूठ, दुरोण ।

सं० असत्यसंध गु० कपटपरायण, दगाबाल ।

सं० अमफल (अ=नहीं, म+फल=सहित, फल) गु० पु० फलरहित, अमिद, फल न देनेवाला, बेकाम, बेमुराद, बेमकसद ।

सं० असम्य (अ=नहीं, सम्य=सभा के योग्य) गु० गंवार, अनाड़ी, मोसभा के योग्य न हो, बेतइतीब ।

सं० असमंजस (अ=नहीं, सम-जस=ठीक, सप्=आये, अंजसा=सचाई से, अंज=शुद्ध करना) पु० संदेह, द्विविधा, अनिश्चय, शक, श्रुवश, परोपेश, राजासगरके पुत्रका नाम ।

सं० असमर्थ (अ=नहीं, समर्थ=बलवान्) गु० दुबला, निबला ।

सं० असमर्थता भा० स्त्री० लाचारी, बेताकती, निर्वज्रता ।

सं० असमर्थ (अ=नहीं, सप्प=काल) गु० कुसमर्थ, बिचिनु, बेवक्त

सं० असमरार (असप्प=विषय, शर=वीर) पु० कामदेव ।

सं० असम्भव (अ=नहीं, सम्भव=होने योग्य) गु० अनहोना, नहीं होनेवाला, नहीं होसकेनेवाला, गैरमुमकिन ।

सं० असत्यवादी (अ=नहीं, सत्य=सांच, वद=कहना) क० पु० झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, दुरोगाण ।

सं० असह्य (अ=नहीं, सद्य=सहने योग्य, सह=सहना) गु० जो सहा नहीं जाय, कठोर, कड़वा, कटुवा, बेबरदार ।

प्रा० असवार (सं० अश्ववार) गु० सवार ।

सं० असाधु (अ=नहीं, साधु=सीधा) गु० अपर्मी, पापी, दुष्ट, बुरा ।

सं० असाध्य (अ=नहीं, साध्य=सिद्ध होनेयोग्य) गु० कठिन, असम्भव, जिसका इलाज नहीं होमके, लादवा ।

सं० असार (अ=नहीं, सार=गूदा, तत्त्व) गु० झूठा, पोला, सूखा, दुष्टा, बेकायदर, निष्फल, जिसमें कुछ सार न हो ।

सं० असावधान (अ=नहीं, सावधान=चौकस, होशियार) गु० अ-

चेत, वेमुष, वेसुरत, वेखर, शाफिला।  
 सं० असावधानी-भा० स्त्री० वे-  
 चौकसारी, वेखरी, गफ़लत।  
 सं० असि (अस्=फेंकना, वा चम-  
 कना) स्त्री० तलवार, सांडा, खड्ग,  
 गुप्तेर।

सं० असित (अ=नहीं, सित=शैल)।  
 पु० काना, कृष्णपत्त।

सं० अमिद्ध (अ=नहीं, सिद्ध=रूपा)  
 पु० अपूरा, अनवना, २ विनयका,  
 भूट, हटा।

सं० असिद्धता-भा० स्त्री० नाका-  
 मधुरी, प्रुडाई।

प्रा० असीम } (सं० आशिम) स्त्री०  
 आर्माम } आगी, बाँद, दुष्ठा।

सं० अमु (अस्=फेंकना) भा० पु०  
 बाण, रसास, कड़, मान।

सं० अमुर (सं० अम=फेंकना, जो  
 देवताओं को फेंकने दें) पु० दिनि  
 के बेड़े, रात्रम, दैत्य, दानव।

सं० अमुग्मेन. गयानीय।

सं० अमूयक (अस्+य+अक,  
 अस्=निगदरकरना) क० पु० नि-  
 म्दक, बुगुनखोर, बुगई बनाने  
 वाला।

सं० अमूया-भा० स्त्री० गुणवें दोष  
 खाना, वेखरीकरना, निन्दा  
 करना।

अं० अमोनियेगने=पेड़, मया,  
 मयूर, वरुनिन।

सं० अस्खलित (अ=नहीं,  
 गिरना) र्म० पु० अच्युत, अकील।

सं० अस्त (अस्=फेंकना) पु० क  
 कां दिना वा ह्वना, गुस्सेवा।

प्रा० अस्तहोना-क्रि० अ० सोन  
 सूर्य का ह्वना, सूर्य बिना।

सं० अस्तव्यस्त (अस्=फेंकना)  
 पु० तिवर-बिचर, जुदाहुदा, क  
 लटा पुलटा, तीननेरह, इषा उल,  
 जहां तहां, बिग्नभिग्न, नहोराना।

सं० अस्तावल (अस्त=मूर्खता,  
 अवल=पहाड़) पु० पथिप की  
 ओर एक पहाड़ जहां हिन्दूने  
 मानते हैं कि सूर्य ह्वना है।

सं० अस्ति स्त्री० विद्यमान, मौजूद।

प्रा० अस्तुत } सं० (स्तुति) स्त्री०  
 अस्तुनि } राह, तारीक, मर्गमा,  
 मनन।

सं० अम्र (अस्=फेंकना) पु० पेमा  
 हथियार निमको फेंकके मारे पैमा  
 बाण नौकला गोला आदि, २ तन-  
 वार आदि सब हथियारों की भी  
 कभी कभी अम्र कहते हैं।

सं० अस्थि (अम=फेंकना) पु०  
 हाड, हड्डी।

प्रा० अस्मी (सं० अशीति) पु०  
 चारवीं सी।

सं० अहमिनि-स्त्री० अहंकार, अहि-  
 मान, गकर, मुदी।

म० अम्भः पुं० अहंकार (अहम्भै, कार=करने  
बाला, रु=करना) पु० यमद, अ  
भियान, अकड़मकड़, गर, मद, ऐठ,  
मरोड़, शेखी ।

सं० अहङ्कारी (अहंकार) पु० य  
मंदी, अकड़बाज, अकड़न, शेखी-  
बाज, अभियानी ।

सं० अहन-पु० दिन, रोज, अहर ।

सं० अहर्निश-श्री० रात्रिदिन, श-  
यरात्रि ।

सं० अहल्या (अहन्य, अ=नहीं,  
हन=हल चोखना) श्री० गौतम  
आपिकी स्त्री ।

प्रा० अहार (सं० आहार) पु० आना,  
भोजन ।

प्रा० अहाहाहा } अहर, अहम्भै  
मं० अहह } देश=होइना )

हि० शी० अचंसा, दुय, और मु-  
खी आदिकी मतलबेनाला शब्द,  
आहा, आह, हाह ।

प्रा० अहहि (सं० अहि=हँ, अम=  
होना) हि० अ० है, बिदपान है,  
होहह है ।

मं० अहिमा (अ=नहीं, हिमा=आह-  
ना) श्री० दया, दितो को बरी  
करना, बिभीको बरी मनाय ।

मं० अहि (अ=हरोओर मे, हन=  
करना) पु० साँ, मर्, बाप ।

सं० अहिगानि (अहि=बाँह, गनि=

चलना, जाना) श्री० साँझीच  
देदीपाल, कमरफकारी ।

प्रा० अहिचार (सं० अहिचार  
पु० साँ का बिप ।

सं० अहित (अ=नहीं, हित=लप्यो  
भला) पु० बेरी, शत्रु, २ बेर, चिरोप

सं० अहितकारी (अ=नहीं, हितो  
भलाई, कारी=ह=करना) क० पु०

अभियकरनेनाला, बुराईकरनेनाला ।

सं० अहिनी-श्री० साँपिन, मरिछी ।

सं० अहिपति (अहि=साँप, पति=मा  
लिक) पु० साँपोकराजा, शेपनी,  
२ बायुकी ।

सं० अहिफेन-पु० अक्षय ।

सं० अहिलव=अभि+अव (अभि=  
सापने+अव=हुवाना अयावु बाह)  
२ सपोना, साँपुका बधा ।

प्रा० अहिवात (सं० अहि=पति,  
अहि=हँ, पति=मर्, साँबिद) पु०  
मुहागे, पतिके भीनेहा बिद ।

सं० अहीन (अहि=साँप, इन=मा  
लिक) पु० साँपोकराजा, शेपनी,  
शेपनाग ।

मं० अहीरा (अहि=साँप, ईरा=मा-  
लिक) पु० साँपोका राजा, शेपनी ।

प्रा० अहीर (सं० आहीर का=प्रा-  
गोमोमे, बिद=हँ, ग=देना, का,  
आ, ईर=देना) पु० आला ।

प्रा० अहीरणी (अहीर) श्री०  
अहीरी } मानन ।





प्रा० आंखद्वडवाना-बोल० आंखों  
में भांग मूकाना ।

प्रा० आंखदिसाना } बोल० धप-  
आंखदिसलाना } काना, धु-  
कना ।

प्रा० आंखपथराना-बोल० चका-  
चोटा होना, पीथियाना ।

प्रा० आंखफड़कना-बोल० आंख  
फड़कना, आंख के पथरी का रिल-  
ना (जब कि पुरुष की दाहिनी और  
सौ की बाई आंख फड़कनी है तो  
हिन्दू लोग उसको अच्छा सम-  
झते हैं और सोचते हैं कि कुछ  
अपवाद होनेवाला है पर जब पुरुष  
की बाई और सौ की दाहिनी आंख  
फड़कनी है तब सोचते हैं कि कुछ  
पुरा होनेवाला है ) ।

प्रा० आंखफटना-बोल० धोखा देना ।

प्रा० आंखफटी-पीढ़गई-बोल०  
पह पुरावरा वससमय बोला जाता  
है कि जब दो आदमी किसी एक  
भीज के छिपे भगइते हैं और वस  
भीज के साथ मानेपर वनका भगइ  
बन्द होजाय ।

प्रा० आंखफेरना } बोल० धिक्का-  
आंखमोड़ना } धिक्काई तो-  
ड़ना, धिक्कासे बर करना ।

प्रा० आंखबंदकरलेना } बोल०  
आंख मूंदना } दूसरे से

पूछ मोड़ना, दूसरे की खबर में से-  
ना मरना ।

प्रा० आंखबचाना-बोल० आंख  
राना, आंख परापर न कर सकना  
धमना ।

प्रा० आंखभरके देखना-बोल०  
किसी अनोखी चीज को खूबदेखना  
कि संतोष होजाये ।

प्रा० आंखभरलाना-बोल० आंखों  
में भांग भरलाना, आंखदेखवाना,  
रोनी मूरत बनाना ।

प्रा० आंखमारना-बोल० आंखम-  
टकाना, सैनकरना, शशा-करना,  
आनाकानी करना ।

प्रा० आंखमिचजाना-बोल० मर-  
ना, मरजाना ।

प्रा० आंखमिचोवल } (आंख  
मिचोव-  
ना, मूंद-  
ना) बोल०

प्रा० आंखमुंदोरा } एक खेल का नाम ।

प्रा० आंखमिलाना-बोल० मिच-  
ताई करना, दोस्ती करना ।

प्रा० आंखराखना-बोल० प्यार क-  
रना, प्यार की बातें करना, आशा  
करना, देखना, नकल, किसी  
की की बुरी छवि में देखना ।

प्रा० आंखलगाना-बोल० किसी  
के प्यार में कैसना, प्यार करना,  
दोस्ती करना ।

प्रा० आंखलड़ना-बोल० अपनेप्यारे  
से अचानक मिलजाना, अपनेप्यारे

अहे ( वि०-बो०-संघोधनकास-  
अहो ) चक, शोच, दुख, दया, अचं  
भा, घडा, संसं ह आदि अर्थोंमें बोले  
जाते हैं ।

अहेर ( सं० आखेट ) स्त्री० शि-  
कार, मृगया, आखेट ।

अहेरिया ( सं० आखेटकी )  
अहेरी पु० शिकारी, बहे  
लिया, आखेटकी ।

अहो ( सं० अहः-वि०-बो०-आ-  
रच्य, तमः-बो०-वृ०-दुःख )

अहोरात्रि ( अहन्=दिन, रात्रि  
=रात ) क्रि० वि० रातदिन,  
दिनरात ।

आ

सं० आ, वि०-बो०-हाय, आह, दुख अथ  
वा दयाकी जतलानेवाला शब्द ।

सं० आ, उपस० से, ( जैसे आकाशपर  
मू=वालकपन से ) २-तक, तलक,

लग, तोड़ी ( जैसे आगोपाल=वा-  
ल तक, अथवा आपरणमू=परनेतक )

३-चारों ओर से, ४-कुछ, कुछेक,  
सा, ( जैसे आपात=कुछेक पीला, अ-  
थवा पीलासा ) ५-पहले, ६-बाक्यके

चलते अर्थ में ।

सं० आ-पु० शिव, महादेव, २-अम्मा ।

प्रा० आंक ( सं० अङ्क ) पु० अङ्क, सं-  
ख्या, रकम, २-चिह्न, निशान, ३-क-  
पड़ेके धानपरका चिह्न जिससे वस्तु  
का मोल जाना जाता है, निरवय ।

प्रा० आंकना ( सं० अङ्क=चिह्न कर-  
ना ) क्रि० स० जांचना, परखना, २  
मोल करना, मोल ठहराना, ३-चि-  
ह्न करना ।

प्रा० आंकुश ( सं० अंकुश ) पु० अं-  
कुश, आँकेड़ी, लोहेका कांटा जिससे  
हाथी को चलाते हैं ।

प्रा० आंकुश मारना-बोलना बस  
करना ।

प्रा० आंख ( सं० अक्षि ) स्त्री० नेत्र,  
नेयन, चक्षुः, चक्षु ।

प्रा० आंख आना-बोल० आंख में  
जलन होनी, आंख लाल होजाना ।

प्रा० आंख खट्कना-बोल० आंख  
दुखना, आंखमें दर्द होना ।

प्रा० आंख चढ़ाना-बोझ० क्रोधकू-  
रना, गुस्सा करना, २-मस्त होना, मत-

वाला होना, नशेमें होना ।

प्रा० आंख चीर चीरके देखना-  
बोल० खूब ध्यान लगाके देखना,  
२-अथवा क्रोधसे देखना ।

प्रा० आंख चुराना-बोल० ध्यान न  
ही देना, २-शर्मसे आंख फेरलैना  
३-किसी से आंख बचाना ।

प्रा० आंख छिपाना-बोल० किसीबुरे  
कामके करने से छिपाना ।

प्रा० आंख छेदीकरना-बोल०  
मित्रों के मिलने से प्रसन्न होना,  
प्रसन्न होना ।

प्रा० आंखडवडवाना-बोल० आंखो

मे आंख मरलाना } बोल० प्रप-

प्रा० आंखदिस्ताना } काना, पुर-

आंखदिस्तलाना } कना ।

प्रा० आंखपथराना-बोल० चक्का

चोड़ा होना, चोथिपाना

प्रा० आंखफड़कना-बोल० आंख

फटकना, आंखके पपों का रिक्त

ना (जब कि पुरुष की दाहिनी और

सो की बाई आंख फड़कती है तो

हिन्दू लोग उसको अच्छा-सगुन

मानते हैं और सोचते हैं कि कुछ

अच्छा होनेवाला है पर जब पुरुष

की बाई और सो की दाहिनी आंख

फड़कती है तब सोचते हैं कि कुछ

पुरा होनेवाला है )

प्रा० आंखफटना-बोल० धोखा होना

प्रा० आंखफटी पीड़गई-बोल०

यह मुराबरा उस समय बोला जाता

है कि मर दो आदमी किसी एक

बीज के छिपे भगदनेहों और उस

बीज के लोथप्रानेपर उनका भगदई

बन्द हो जाय ।

आंखफेरना } बोल० मिथोसे

आंखनोड़ना } मिथोसे तो

ना, मिथोसे पर करना ।

आंखबंदकरलेना } बोल०

आंख मूंदना } हमारे से

धुंध मोड़ना, दूसरे की खबर में खे-

२ मरना । नाना फलाना

प्रा० आंखवचाना-बोल० आंख

राना, आंख परावर न कर सकना,

सर्पाना ।

प्रा० आंखभरके देखना-बोल०

किसी अनोखी चीज को खूब देखना

कि संतोष होना है ।

प्रा० आंखभरलाना-बोल० आंखों

मे आंख भरलाना, आंखदबंदवाना,

रोनी मृत बनाना ।

प्रा० आंखमारना-बोल० आंख

टकाना, सैनकरना, शराबा करना,

मानाकानी करना ।

प्रा० आंखमिचजाना-बोल० मर-

ना, मरमाना ।

प्रा० आंखमिचविल } (आंख

प्रा० आंखमिचवली } मिथोच-

प्रा० आंखमुंदौरा } ना, मुंद-

एक खिलका नाम ।

प्रा० आंखभिलाना-बोल० मित्र-

नोई करने, दोस्ती करने ।

प्रा० आंखराखना-बोल० प्यार-क-

रना, प्यार की पानेकरना, आशा

करना, देखना, नकाना, किमी-

सो की बुरी दृष्टि में देखना ।

प्रा० आंखलगाना-बोल० किसी

के प्यार में जैमना, प्यार कराना,

दोस्ती करना ।

प्रा० आंखलड़ना-बोल० अपने प्यारे

से बचाने कि बचाना, बचने प्यारे

के देखने से उसके प्रेम के बराबर होना ।

प्रा० आंखलड़ाना-बोल० आंख

मारना, सैन करना, इशारा करना,

२ छिपी बात को इशारों से

जतलाना ।

प्रा० आंखलालकरना-बोल०

क्रोध करना, खिसियाना, गुस्सा

करना ।

प्रा० आंखसेकना-बोल० किसी के

रूपको अथवा सुन्दरताको देखना ।

प्रा० आंखसे गिरना-बोल० ० हट

छका होना, तुच्छ हो जाना, बेक-

दर होना ।

प्रा० आंखें नीली पीलीकरना-

बो० बहुत गुस्से से मुँह का रंग

बदलना ।

प्रा० आंखोंपर बैठना-बोल० प्यारा

होना, ऊँचा बैठना, प्रतिष्ठित होना,

आंखों में जगह पाना ।

प्रा० आंखों में आना-बोल०

नशे में होना, मदिरा के नशे में

मस्त होना ।

प्रा० आंखों में घर करना-बोल०

प्यारा होना, प्रतिष्ठित होना ।

प्रा० आंखोंमें चरबीछाना-बोल०

घनपदसे घण्ट करके अपने पुराने

पिशा को नया पीछा करना, जात-

प्रा० आंखोंमें फिरना } बोल०

आंखों में बसना } सदा

ना, मन में सदा किसी का ध्यान

वैधा रहना ।

प्रा० आंखोंमें रातकाटना } बोल०

आंखोंमें रातलेजाना } सब

रात

जागते बिताना ।

प्रा० आंग (सं० अङ्ग) पु० शरीर,

देह, अंग, शरीर का एक भाग ।

प्रा० आंगन } (सं० अङ्गन) पु० चौ

आंगना } क, अंगनाई, सहेन ।

प्रा० आंच-स्त्री० गरमी, आग का

लूका भस्मका ।

प्रा० आंचर } (सं० आंचल) पु० अंच

आंचल } आकड़वा किनारा

२ लुगाईकी खानी ।

प्रा० आजना (सं० अञ्जन) क्रि०

स० अंजन टाकना, मुरमा लगाना,

कामल लगाना ।

प्रा० आंठ (सं० आनद, आ=चारो

ओर से, नह=वांघना) स्त्री० गाँठ, २

बैर, विरोध, दाह ।

प्रा० आंत (सं० अन्त) स्त्री० अंतड़ी ।

प्रा० आंधी (सं० अन्धकार) स्त्री०

भूकड़, तूफान, तेज हवा ।

होना ) स्त्री० पेट में एक तरह का

रोग २. आमाशय, शूल ।

प्रा० आंसू (सं० अश्रु, अश्रु=फैलना)

१ पु० आंसू का पानी ।

प्रा० आंसू भरलाना-बोल० आंसू

बहवाना, रोनी, सूरत बनाना ।

प्रा० आक (सं० अर्क) पु० एक पेड़

का नाम, अरुचन, मदार ।

सं० आकर (आ=चारों ओर से,

कू=विघटन अर्थात् जहाँ यातु चित्ती

हो रही है ) स्त्री० खाने, खानि ।

सं० आकर्णित- स्मृ० पु० सुना

गया, धुत ।

सं० आकर्ण्य अग्न्य० सुनकर ।

सं० आकर्ष (आ + कृप्=खींचना)

भा० पु० खींचना, खींचना, चोरेना ।

सं० आकर्षक (आ=से, कृप्=खींच-

ना ) पु० चुम्बक पत्थर, खींचनेवाली

शक्ति, क० पु० खींचनेवाला ।

सं० आकर्षण (आ=से, कृप्=खींच-

ना ) ना० पु० खींचाव, खींचनेकी

शक्ति ।

सं० आकर्षित (आ=से, कृप्=खींच-

ना ) स्मि० पु० खींचा

गया ।

सं० आकांक्षा (आ=चारों ओर

से, कांचा=चाहना ) स्त्री० चाँद, चाँ-

दना, इच्छा, चाँद, अभिलाष,

इत्यादि ।

सं० आकांक्षक (आ=से, कांचा +

अक्ष, कांचा=चाहनेवाला ) क० पु०

इच्छक, चाँदक, अभिलाषक ।

सं० आकांक्षी (आ=से, कांचा, + इ)

क० पु० तथा ।

सं० आकार (आ, कृ=करना, ण०

पु० कर, दौल, स्वरूप, सूरत, मूरत,

विद्व, निशान, इत्यादि ।

सं० आकाश (आ=चारों ओर से

काश=नमकना ) पु० आस्मान,

गगन, दृग्य ।

सं० आकाशवृत्ति (आकाश=आ-

स्मान, वृत्ति=जीविका ) स्त्री० जो

आजीविका निपट नहीं है, अस्थिर

जीविका, बेकामपरोजी ।

सं० आकाशवाणी (आकाश=आ-

स्मान, वाणी=शब्द ) स्त्री० आ-

काश में जो कुछ बात सुनी जाती

है, वाणी जो आकाश से होती है ।

सं० आकीर्ण (आ=चारों ओर से,

कू=विघटन वा फैलना ) स्मृ० पु०

परिपूर्ण, व्याप्त, भरा हुआ ।

सं० आकुचन (आ=चारों ओर से,

कुच=समेटना ) भा० पु० संकोचन,

कुच=सिपटना, सिकुटना ।

सं० आकुल (आ=चारों ओर से,

कुल=दुखी होना ) गु० घबराया

हुआ, व्याकुल, दुखी, परेशान ।

के देखने से उसके प्रेमके बरहोना ।

प्रा० आंखलड़ाना-बोल० आंख  
मारना, सैन करना, इशाराकरना,  
२ बिपी बात को इशारों से  
जतलाना ।

प्रा० आंखलालकरना-बोल०  
क्रोध करना, खिसियाना, गुस्ता  
करना ।

प्रा० आंखसेकना-बोल० किसी के  
रूपको अथवा सुन्दरताको देखना ।

प्रा० आंखसे गिरना-बोल० हृदय  
छटका होना, मुच्छ होना, बेक-  
दर होना ।

प्रा० आंखें नीली पीलीकरना-  
बोल० बहुत गुस्से से मुँह का रंग  
बदलना ।

प्रा० आंखोंपर बैठना-बोल० प्यारा  
होना, ऊँचा बैठना, प्रतिष्ठित होना,  
आंखों में जगह पाना ।

प्रा० आंखों में आना-बोल०  
नशे में होना, मदिरा के नशे में  
मस्त होना ।

प्रा० आंखों में धर करना-बोल०  
प्यारा होना, प्रतिष्ठित होना ।

प्रा० आंखोंमें चरबीछाना-बोल०  
धनकेपदसे पपेट करके अपने पुराने  
विप्री को नहीं पहचानना, जान-  
बूझ के भ्रम होना ।

प्रा० आंखोंमें फिरना } बोल  
आंखों में बसना } सदा  
ना, मन में सदा किसी का ध्या  
वैरा रहना ।

प्रा० आंखोंमें रातकाटना } बोल  
आंखोंमें रातलेजाना } सवे  
जागते बिताना ।

प्रा० आंग (सं० अङ्ग) पुं० शरीर  
देह, अंग, शरीर का एक भाग ।

प्रा० आंगन } (सं० अङ्गन) पुं० चौ  
आंगना } क, अंगनाई, सहेन ।

प्रा० आंच-स्त्री० गरमी, आग का  
लूका भस्का ।

प्रा० आंचर } (सं० अंचल) पुं० अंच  
आंचल } छाकपड़े का किनारा  
२ लुगाईकी छानी ।

प्रा० आजना (सं० अङ्गन) किं०  
सं० अङ्गन डाकना, मुरमा लगाना,  
कामल लगाना ।

प्रा० आंट (सं० आनट, आ=चारों  
ओर से, नट=बांधना) स्त्री० गांठ, २  
बैर, विरोध, राह ।

प्रा० आंत (सं० अन्त्र) स्त्री० अंतरी ।

प्रा० आंधी (सं० अन्धकार) स्त्री०  
फूफड़, ठूफान, भेज हवा ।

प्रा० आंव (सं० आम, अम्=बीमार

रोनी ) स्त्री० पेट में एक तरह का

रोग । २. आमाशय, शूल । ३. ००

प्रा० आंसू (सं० अश्रु, अश्रु=कैलना)

१. पु० आंसू का पानी । २. ००

प्रा० आंसू भरलाना-बोल०-आंसू

। दबवाना, रोनी, सुन्न बनाना ।

प्रा० आक (सं० अर्क) पु० एक पेड़

का नाम, अकहन, मदार ।

सं० आकर (आ=चारों ओर से,

कृ=विगठना अर्थात् जहाँ धातु चितरी

। रहती है ) स्त्री० खान, खानि ।

सं० आकर्णित- र्म्य० पु० मुनी

१. गंगा, धुन । २. ००

सं० आकर्ण्य अर्घ्य० मुनकर ।

सं० आकर्ष (आ+कृष=खींचना)

भा० पु० खींचना, खींचना, बंधोरना ।

सं० आकर्षक (आ=से, कृष=खींच-

ना ) पु० पुष्करपत्तन, खींचनेवाली

धीम, क० पु० खींचनेवाला ।

सं० आकर्षण (आ=से, कृष=खींच-

ना ) ना० पु० शिपाव, खींचनेकी

शक्ति ।

सं० आकर्षित (आ=से, कृष+इत

कृष=खींचना ) र्म्य० पु० खींचा

गया ।

सं० आकांक्षा (आ=चारों ओर

से, कान्ता=चाहना ) स्त्री० चाँद, चाँ-

दना, इच्छा, चाँदा, अभिलाष,

इत्यादि ।

सं० आकांक्षक (आ=से, कान्ता=

चाँद, कान्ता=चाहनेवाला ) क० पु०

इच्छक, चाँदक, अभिलाषक ।

सं० आकांक्षी (आ=से, कान्ता=

क० पु० तथा ।

सं० आकार (आ, कृ=करना, य०

पु० रुग, दौल, स्वरूप, मूर्त, मूर्त,

२. चिह्न, तिष्ठान, ३. आकाश ।

सं० आकाश (आ=चारों ओर से

काश=नमकना ) पु० आस्मान,

गगन, शून्य ।

सं० आकाशवृत्ति (आकाश=आ-

स्मान, वृत्ति=भीषिका ) स्त्री० जो

आभीषिका नियत नहीं है, अस्थिर

भीषिका, पैरुपापरोक्षी ।

सं० आकाशवाणी (आकाश=आ-

स्मान, वाणी=शब्द ) स्त्री० आ-

काश में जो कुछ बात सुनी जाती

है, वाणी जो आकाश से होती है ।

सं० आकीर्ण (आ=चारों ओर से,

कृ=विगठना वा फैलना ) र्म्य० पु०

परिपूर्ण, व्याप्त, मरा हुआ ।

सं० आकुञ्चन (आ=चारों ओर से,

कुञ्च=समेतना ) भा० पु० संकोचन,

कुञ्च=सिपटना, सिझना ।

सं० आकुल (आ=चारों ओर से,

कुल=दुखी होना ) पु०

दुःख, आकुल, दुःखी,



सं० आकुलित ( आ=से, कुन् +  
इत् ) र्म० दुःखित, हेसित, रंजीदा ।

सं० आकृति ( आ, कृ=करना )  
स्त्री० रूप, स्वरूप, मूरत, मूरत, डौल ।

सं० आकृष्ट ( आ=चारों ओर से  
कृष्ट + त, कृष्ट=खींचना ) र्म० पु०  
खींचा हुआ, आकर्षित ।

सं० आकृष्टि ( आ=से, कृष्ट + ति )  
भा० पु० आकर्षण, खींचना, प-  
सीदना ।

सं० आक्रमक ( आ=सब ओर से,  
क्रम + अक, क्रम=माना ) क० पु०  
घेरनेवाला, हमला करनेवाला ।

सं० आक्रमण ( आ=से, क्रम +  
अण, क्रम=माना वा हमला करना )  
भा० पु० घेरापन, घेरना, हमला  
करना, मुहामरा करना ।

सं० आक्रम्य ( आ=से क्रम + य )  
भा० अक्षय्य=घेरकर, हमला करके ।

सं० आक्रान्त ( आ=से, क्रम + त )  
र्म० पु० घेरा हुआ, घेरा गया, हम-  
ला किया गया, क० २ आन्त,  
एकाद्वया ।

सं० आक्रीड ( आ=चारों ओर से,  
क्रीड=खेलेना ) पु० राजा का उप-  
वन, बादशाहीशान ।

सं० आक्रोश ( आ=असों ओर से,  
क्रुश रोना ) भा० पु० क्रोध, रोना,  
गुस्सा, गिरिबावझारी ।

सं० आक्षेप ( आ, क्षिप्=फेंकना  
पु० बुरी बात, निन्दा, दुर्वचन, फेंक-  
ना ३ एक अर्थालंकारको नाम ।

प्रा० आखर ( सं० अक्षर ) पु० अक्ष-  
वर्ण, हर्फ ।

सं० आखु-मूषक, मूश, मूसा, चूहा ।

सं० आखुभुक् ( आखु + भिज्ना  
भुज् भक्षण करना ) क० पु० बिना  
मारजार, गुर्वा ।

सं० आखेट ( आ=से, खिद्=डराना  
सताना ) स्त्री० शिकार, अहेर, मृगया ।

सं० आख्य } ( आ=सब प्रकार से  
आख्या } रूपा=रहना, प्रसिद्ध  
होना ) पु० नाम, संज्ञा, इस्प ।

सं० आख्यात ( आ=से, रुपा + त )  
र्म० उक्त, मजकूर, कहा हुआ ।

सं० आख्यायिका स्त्री० कहानी  
कथा, रचयन, किताना ।

सं० आख्यायिनी ( आ=मे, रुपा=प्रसिद्ध  
होना ) पु० बात, कथा, वृत्तान्त,  
वर्णन, इतिहास ।

प्रा० आग ( सं० अग्नि, स्त्री० आगी,  
अग्नि, अतल ।

प्रा० आगउठाना-बोल० बनेहा  
मचाना, कोपित करना, गुस्सा  
उठाना, बिबलाना ।

प्रा० बहुत बर्ष

अथवा

प्रा० आगदेना-बोल० घुसीमलाना ।

प्रा० आगपड़ना-बोल० गुरुसे होना,

सिसिपाना, कोपकरना, झड़कना ।

प्रा० आगवरसना-बोल० परसना-

बरा उससमय बोला जाता है जब

बहुत गर्मी पड़ती है, थोड़ा लड़ाई

में होय के गोले चलते हैं ।

प्रा० आगबुझाना }  
आगमें पानी डालना }

बोल० ठंडा करना, भगड़ा, बंद क-

रना, बनेड़ा मिथना ।

प्रा० आगभसना } बोल० निरु-

आगफांकना } स्वीकार-

ना, ह्यावरुबाद करना, २ दोगमार-

ना, गेसीकरना, अपनी बड़ाई कर-

ना, पपंद करना ।

प्रा० आगमें लोटना-बोल० सोच

से दुखी होना ।

प्रा० आगलगना-बोल० जलना,

क्रोधित होना, सिसिपाना, गुरुसे

होना, २ बहुत भूख लगना ।

प्रा० आगलगाके पानीलेदोड़ना

बोल० मिस्रभगड़ेको भाप छेड़ा हो

उसके मिथाने का बहाना करना, २

झल करना, झलना, उगना ।

प्रा० आगलगाना-बोल० जलाना,

झड़कना, गुरुसे पेंकरना, क्रोधितकरना,

झड़कना ।

मलाना, बसेड़ा मथाना, छुने छुने

देगा बनेड़ा उगना ।

प्रा० आगहोना-बोल० गुरुसे होना ।

क्रोधित होना, सिसिपाना ।

सं० आगत ( आ=चारों, और=से,

गं+त, गप्=जाना ) क=पु० आया

हुआ, पहुंचा, उपस्थित, आपात ।

सं० आगन्ता { क=पु० आनेवाला,

आगन्तुक } अमनवी ।

सं० आगम ( आ, गम्=जाना, और

आ उपसर्ग के साथ आने से अर्थ

हुआ आना ) पु० शास्त्र, तंत्रशास्त्र

मिसमें मन्त्रों का वर्णन है, और उ-

सरी महादेव ने बनाया है संस्कृत में

आगमका पहलक्षण लिखा है "आ-

गमे शिवबन्धेभ्यो, गन्ध गिरिजा

ध्रुवौ । मन्त्रनामुदेवस्य तस्मादागम

उच्यते" अर्थ महादेवने कहा और

पार्वतीने सुना और विष्णुने माना

इसलिये इसको आगम कहते हैं और

यहां आ का अर्थ आया ( महादेव

से ) ग का अर्थ गया ( पार्वती के

पास ) और म का अर्थ माना ( वि-

ष्णु ने ) है २ आना, ३ मविष्यत,

आने वाला, आपदनी ।

प्रा० आगमबांधना-बोल० अगली

बात को डीककरना, वा अगली

बातका विचार करना, २ आगे से

जवाना, आगमकरना ।



पु० गुरु, पढ़ानेवाला; शिक्क, उपदेश करनेवाला, वेदशास्त्रादौ-  
वाला ।  
सं० आच्छादक ( आ + छद + क ) क० पु० ढांकनेवाला, ढिः-  
पानेवाला, मूदनेवाला ।  
सं० आच्छादन ( आ = से, छद = ढकना ) भा० पु० ढकनेका कपड़ा, चदर, ढकना ।  
सं० आच्छादित ( म्पे० पु० मूँदा हुआ, ढका हुआ, आच्छादित )  
प्रा० आच्छे ( सं० अच्चे अच्चे ) पु० आच्छे अच्चे  
प्रा० आज ( सं० अज ) आजका दिन, वर्तमान दिन ।  
प्रा० आजकल-बोल० इनदिनों में कुछ दिनों से ।  
प्रा० आजकल करना ( बोल० आजकल बताना ) बोलना, हाँ कहना ।  
प्रा० आज ( सं० आर्यक ) पु० दादा, पितामह ।  
सं० आजीव ( आ + जीव = जीना ) रोजगार, जीविदा, पेशा ।  
सं० आजीविका ( आ = से, जीव = जीना ) स्त्री० जीविदा, निर्धन, जीनेका, उपाय, रोजी, रिकक ।  
सं० आज्ञा ( आ = से, ज्ञा = जानना ) स्त्री० हुक्म, आदेश, आयु ।

सं० आज्ञाकारी ( आज्ञा = हुक्म, कारी = पूरा करनेवाला, कृ = करना ) पु० आज्ञा माननेवाला, हुक्ममाननेवाला, सेवक, आधीन, तारदार ।  
सं० आज्ञानुवर्ती ( आज्ञा = हुक्म, अनु = पीछे, वृत् = मानना ) क० पु० आज्ञाकारी, कर्मावरदार, वशीभूत, आधीन ।  
सं० आज्ञापक ( आ = सब प्रकारसे, ज्ञापक = हुक्म करनेवाला ) आदेश करनेवाला, हुक्मकरनेवाला, हाकिम ।  
सं० आज्ञापन ( आ = से, ज्ञापन = ज्ञानना ) भा० पु० विज्ञापन, चित्ताना, इच्छा देना, हुक्म देना ।  
सं० आज्ञप्त ( आ + ज्ञप्त ) म्पे० पु० आज्ञापाया हुआ, महकम ।  
सं० आज्ञापत्र ( आज्ञा = हुक्म, पत्र = बागज ) पु० हुक्म नामा लिखी हुई आज्ञा कर्मान ।  
सं० आज्य ( अज्य + य, अज्य = लेप, करना ) पु० मूत, पी, पीव, सपिप, रोशनजर्द ।  
सं० आटोप ( आ = चारों ओर से, टुप = ढकना, मारना ) पु० घमण्ड, अभिमान, दर्प, अहंकार ।  
प्रा० आठ ( सं० अष्ट ) पु० अष्ट, एक गिन्ती का नाम ।  
प्रा० आठ आठ आँसू रोना-बोल० बहुत रोना, पट्ट रोना ।  
प्रा० आठपहर-बोल० रात दिन

हर घड़ी, हर आने, सदा, नित उठ।  
प्रा० आड़-श्री० ओठ, परदा, रोक।

सं० आडम्बर (आ=चारों ओर से,  
दम्ब+भरन, दम्ब=फेंकना) पु०  
हथ, पमंड, गरुर, पासंड, छत्र, मेघ,  
नङ्गा, नुरही का शब्द, शिष्टला, उ-  
योग, घनावट, घनाव, आभोजन,  
आरम्भ, मेघका गरजना, संरम्भ,  
मिथान, भेष।

प्रा० आड़ा-गु० तिखा, देश, बांहा।

प्रा० आड़ी-गु० रसक, मुराकिन,  
स्वर विशेष।

प्रा० आड़े आना-शील० बनावना,  
रीचमें पटना।

सं० आड़क-गणितविरोध, अढ़ैया,  
शेष का चौथा भाग।

सं० आड़की-श्री० अरदा

प्रा० आड़न-श्री० अडा, पाछ का  
बनान।

प्रा० आड़निया-गु० बैगरी, पहाजन,  
दलाल।

सं० आनडू (आ=मे, नडि=दुख से  
भीना) पु० दर, पय, लौक, २ दुल,  
३ पीरा, रोग, मन्त्राण।

सं० आननायी अभिनतगाना, बिने  
देना, दम्बान करना दूसरे का घन  
श्री० हनि चन्दाबसे लेलेना हन है  
हने हनेकाने का आननायी काही।

जानन (आ=चारों ओर से, न

=तपाना) पु० पु० पूब, चान, नून  
की गर्मी।

सं० आतपत्र (आतप=पूष, तै=रवा,  
ना) पु० छतरी, काक, बक।

सं० आतर (आ=से, ते=माना वा, ते-  
रना) पु० पु० अन्तर, बीच, बक,  
उतराई।

सं० आतिथेय-पु० अतिथि के नि-  
मित्त भोजनादि देनेवाला, अतिथि,  
सेवक, महिमानिवाज, सेवक।

सं० आतिथ्य-भा० पु० अतिथि सेवा,  
सन्मान, महिमानदायी, महिमानिवाज।

सं० आतुर (आ, तुर=जल्दी क-  
रना) पु० पयराया हुआ, स्वाकुल,  
वेनैन, दुखी, २ रोभी, कि० वि०  
शीघ्र, झटपट जल्दी।

सं० आत्मघात (आत्म=अपनेका,  
घात=नाश, मारना) पु० आत्महत्या,  
अपने ही मारना, लुप्तपुष्टी।

सं० आत्मज (आत्म=अपनीजा-  
रामे जन=पैदा होना) पु० पुत्र,  
बेटा, मन्त्राण।

सं० आत्महत्या (आत्म=अपनी  
को हन=मारना) श्री० आत्मघात,  
अपने ही मारना।

सं० आत्महन-श्री० पु० आत्मघात,  
मुदहृष्ट, आत्मघात, कपुत्राण।

सं० आत्मा (आ, अन्=अन्तः) श्री०  
जीव, वायु, आन, वन।

प्र० आदिजन्य (आ + दि + जन् + क्) पु०  
दि + जन् + क् = पु० आदिजन्य, पु०  
मे दीदेवक, आदि + मे सन्निधि  
सह, अन्ति मे आदिजन्य ।

सं० आदि (आ + दि + क्) पु०  
पु० आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

मं० आदिशीय (आदि + शी + य) पु०  
मं० पु० अन्ति, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

प्र० आदि (आदि + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदान (आ + दा + नन् + दा =  
देन) भा० पु० आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

मं० आदानप्रदान (आ + दा + नन् + दा =  
देन) भा० पु० आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदि (आ + दि + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदिकवि (आदि + कवि + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदित्य (आदि + त्रि + यन् + दा =  
देन) भा० पु० आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदित्यवार (आदि + त्रि + यन् + दा =  
देन) भा० पु० आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदिपुरुष (आदि + पुरु + ष) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदिश (आ + दि + श + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदिश (आ + दि + श + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदिशी (आ + दि + शी + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आद्योपान्त (आ + द्यो + पान् + त्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आदित (आ + दि + त्रि + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

प्र० आधा (आ + धा + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आधान (आ + धा + नन् + दा =  
देन) भा० पु० आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आधार (आ + धा + रन् + दा =  
देन) भा० पु० आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

प्र० आधासीसी (आ + धा + सी + सी + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।

सं० आधि (आ + धि + क्) पु०  
आदि, अन्ति, अन्ति, अन्ति ।



सं० आपत्ति (आ, पद्=जाना)  
 आपद् } स्त्री० विपत्ति, बि,  
 आपदा } पत्, अभाग, पला  
 पुरे दिन, दुख ।

सं० आपन्न (आ, पद्=जाना)  
 क० पु० अभागा, विपत्ति में फंसा  
 हुआ, दुर्गति, २ पाषाणुआ, ३ श-  
 रण में आषाहुआ, शरणगन ।

प्रा० आपस (आप) सर्वना० एक  
 दूसरे को, परस्पर, भाई पन्दा ।

सं० आप्त (आप्=पैलना, लाभ)  
 म्ये० पु० विरहासित, लज्ज, सन्य  
 यपार्थ, भवतिव ।

सं० आपाक (आ=चारों ओर से,  
 पाक=पच=रकाना) वि० पु० आवा,  
 पतावा, मिट्टी के बरतनों के पकाने  
 की जगह ।

सं० आपान (आ+पान, पा=पीना)  
 वि० मपपानस्थान, शराब की  
 दुकान पु० मपप मदबालोंवा हुंदा ।

अं० आफिस्त-वि० पु० कार्यशाला,  
 कचहरी ।

प्रा० आफू (सं० अ=नहीं, फेन=  
 भाग, स्फादी=फूटना) पु० अ-  
 धीय, चमल ।

सं० आफूक=अफीम ।

सं० आभरण (आ=चारों ओर से  
 भू=धारण करना वा पहनना) पु०  
 गरना, भूषण, अलङ्कार, जेवर,

आभरण १२ बारह हैं, १ नूपुर  
 २ किकिणी ३ चूरी ४ पुंदरी  
 ५ कइन ६ बाहुबंद ७ हार ८ कं-  
 वधी ९ वेसर-१० विरिमा-११  
 टीका १२ शीरफल ।

सं० आभा (आ=चारों ओर से, भा=  
 चमकना रोशनी) स्त्री० च-  
 मक, रोमा भट्टक ।

सं० आभाप (आ=चारों ओर से  
 पाप्=छहना) पु० भूमिका, मुख  
 बन्ध लमहीद, पेशवन्दी ।

सं० आभापण (आमाप्+अन)  
 भा० पु० कपन, कहना बोलना ।

सं० आभूषण (आ=चारों ओर से  
 भूष=शोभना) पु० गरना, आभरण,  
 अलङ्कार ।

सं० आभास (आ=त, भास=चमकना)  
 भा० पु० प्रकाश, रोशनी होना, अ-  
 भिमाय, समानता ।

सं० आभिज्ञ (आभि+ज्ञ=जानना)  
 क० पु० ज्ञाना, अनुधा, आगार,  
 वाकिफ ।

सं० आभीर-अभीर, गोप, बाल ।

प्रा० आम (सं० आघ्र) पु० प-  
 फलरा नाय ।

सं० आम (अम=पीपारोना)  
 पु० एक प्रकार का रोग, पेटका रोग  
 ग अमप, अमीर्ण कचा ।



मं० आधिपत्य-भा० पु० प्रधानता,  
अधिहार, स्वाधिन, वश, अतिवार  
प्रा० आधीन (मं० अधीन) पु० आश्रित,  
वश, वश, नवेदार ।  
मं० आधेय (आ + धे + प्रत्यय) पु०  
इहः समे शौच, सो वस्तुपरीक्षा ।  
प्रा० आन-मं० आन, मर्षा, लाज  
मं० आन (मं० आन-मं० आन) पु०  
आन, आन ।  
प्रा० आन (मं० आन) धी० आन,  
आन, आन ।  
मं० आनक (आ + नी + क, नी =  
लाना) पु० नगारा  
अनक, दुर्दृष्टि ।  
मं० आनन (आ = ने, मन = लाना)  
पु० आन, मन ।  
मं० आनन्द (आ = वशी भोग मे,  
वन्द = वन्द्य होना) पु० आन, मन,  
वेद, सुखी ।  
मं० आनन्ददायी (आनन्द + दा-  
यी, दा = देना, दा = पु० आनन्ददाता  
सुखी देवेकना ।  
मं० आनन्ददुर्लभ (आनन्द = सुख,  
दुर्लभ = अविश्वेकद्वयः अल्पः दुर्लभः  
सुख, सुखी के साथ ।  
मं० आनन्दित (आ + नन्द + इत्)  
इत् = पु० आनन्दित होना, आनन्दित ।

मं० आनन्दी (आ + नन्द + इत्)  
कः पु० आनन्दयुक्त, मत्त ।  
प्रा० आनना (मं० आनयन, आ,  
नी = लाना) कि० स० लाना ।  
अं० आनयेत् (आनयितुं, अनुदार) ।  
प्रा० आना (मं० आगमन) कि०  
आना (अ + गन् + ना, आग-  
ना, पु० रूपे का सोलहवां भाग ।  
प्रा० आनिही (आनना छाना)  
कि० स० लांकां छेभांकां ।  
मं० आनीत-मं० पु० लाया हुआ ।  
मं० आनेता (आ + नी + त, नी =  
लाना) क० पु० लाने वाला ।  
मं० आन्दोलन (आन्दोल + अन,  
दोल = फेंकना) पा० पु० चलन, निग-  
बाना हिलाना, हरकतदेना, ध्यान,  
झूलना, हलना, अनुभूति ।  
प्रा० आप-मर्षना० अपने आप, स्व,  
अपना, मुद, वदे आदमीको तुम  
ही जगह आप बोलते हैं ।  
मं० आप (आप = फैलना) पु० पानी ।  
प्रा० आपकाजी (आप = अपना,  
का = वश) पु० स्वामी, आप  
मयनवा ।  
मं० आपक-मं० पु० मोटापडा हुआ ।  
मं० आपणु (आ + ण + लुगिण)  
लुगिण = दृष्ट, दृष्ट, दृष्ट ।  
मं० आरगिक (आ, ग + इत्)  
इत् = पु० आरगिक होना, आरगिक ।

सं० आपत्ति (आ, पृष्ठ=जाना)  
 आपद स्त्री० विपत्ति, वि,  
 आपदा पत, अभाग, बला  
 घुरे दिन, दुख ।  
 सं० आपन्न (आ, पृष्ठ=जाना)  
 क० पु० अभाग, विपत्त में फंसा  
 हुआ, दुखी, २ पाया हुआ, ३ शू-  
 रण में आया हुआ, शरणागत ।  
 प्रा० आपस (आप) सर्वना० एक  
 दूसरे की, परस्पर, भाई-पुत्र ।  
 सं० आप्त (आप=कैलना, लाभ)  
 क० पु० विश्वासित, लब्ध, सत्य  
 यथार्थ, अमररहित ।  
 सं० आपाक (आ=चारों ओर से,  
 पाक=पच=पकाना) धि० पु० आवा,  
 पताया, मिट्टी के घरतनों के पकाने  
 की जगह ।  
 सं० आपान आ+पान, पा=पीना)  
 धि० मद्यपानस्थान, शराब की  
 दूकान पु० मद्य मद्यबालों का दृष्ट ।  
 अ० आफिस-धि० पु० कार्यालया,   
 दफ्तरी ।  
 प्रा० आफू (सं० अ=नहीं, फेन=  
 भाग, स्फापी=पूतना) पु० अ-  
 धीम, अमल ।  
 सं० आफूक=अधीम ।  
 सं० आभरण (आ=चारों ओर से  
 आभूषण करना वा पहनना) पु०  
 पहना, भूषण, अलङ्कार, केसर,

आभरण १२ चारह हैं, १२ नूपुर  
 २ किंकिणी, ३ चूरी, ४ मुंदरी  
 ५ कड़न ६ बाहुबंध ७ हार ८ कं-  
 त्री ९ वेसर १० चिरिमा ११  
 टीका १२ शीशफल ।

सं० आभा (आ=चारों ओर से, भा=  
 चमकना रोशनी) प्रा० स्त्री० च-  
 मक, रोभा भड़कना ।

सं० आभाष (आ=चारों ओर से  
 भाष=कहना) पु० भूमिका, मुख  
 बन्ध तमहीद, पेगवन्दी ।

सं० आभाषण (आभाष+अन)  
 भा० पु० कपन, कहना बोलना ।

सं० आभूषण (आ=चारों ओर से  
 भूष=शोभना) पु० पहना, आभरण,  
 अलङ्कार ।

सं० आभास (आ=स, भास=चमकना)  
 भा० पु० प्रकाश, रोशन होना, अ-  
 भिमाय, समानता ।

सं० आभिज्ञ (आभि+ज्ञ=जानना)  
 क० पु० ज्ञाता, अनुज्ञा, आगाह,  
 वाकिक ।

सं० आभीर-अभीर, गोप, ग्वाल ।

प्रा० आम (सं० आघ्र) पु० एक  
 पल का नाप ।

सं० आम (अम=पीमार होना)  
 पु० एक प्रकार का रोग, पेटका रोग  
 अथवा, अमीत्य कष्ट ।



सं० आरण्य ( अरण्य=जंगल ) गु०  
जंगली, बनरा, बनैला ।

प्रा० आरंज ( सं० आर्य ) गु० बड़ा,  
श्रेष्ठ, पूज्य, महाराज पु० समुद्र ।

प्रा० आरत ( सं० आर्च, आ, अरु=  
जाना ) गु० दुखी, घबराया हुआ,  
पीड़ित, व्याकुल ।

प्रा० आरति ( सं० आर्चि, आ,  
अरु=माना ) स्त्री० दुख, पीड़ा,  
रोग, बध ।

प्रा० आरतीस्त्री० } ( सं० आरात्रि  
आरता पु० } क, अ=नहीं,  
रात्रि=रात,  
अर्थात् जो दिन में भी दिखाई  
जाती है ) पूजा में देवता के सामने  
दीपक दिखाना, दीपदर्शन, २ व्यास  
की एक रीति विशेष ।

सं० आरव्य-र्म्यं पु० उपक्रांत,  
आरम्भित, शुरू किया गया ।

सं० आरम्भ ( आ, रभि=शुरू कर-  
ना ) पु० शुरू, आरम्भ, उपक्रम ।

सं० आरा-त्री, कदच, करांत, छेदनी,  
सूना ।

सं० आरात-अव्य० दूर, सपीप ।

सं० आराति ( आ=चारों ओर से,  
रा=देना दुखी ) पु० बेटी, राज,  
दुश्मन ।

सं० आराधक ( आ, राध=सिद्ध  
करना, पूरा करना ) क० पु० आराधना

करनेवाला, पूजनेवाला, सेवक  
भक्त, आदि ।

सं० आराधन भा० पु० ( आ,  
आराधना स्त्री० ) राध=  
पूरा करना ) पूजा, सेवा, इवादत  
भक्ति ।

सं० आराम ( आ=चारों ओर से,  
रम्=खुशी करना ) पु० चाय, चासी-  
चा, फुलबाड़ी, उपवन ।

सं० आरुह ( आ, रुह=चढ़ना ) गु०  
चढ़ा हुआ, सवार ।

सं० आरोग्य ( अरोग=निरोग )  
पु० निरोगता, आराम, सुदुखस्ती,  
कुशल ।

सं० आरोप ( मा० रुह=उगना,  
आरोपन } चढ़ना ) भा० पु०  
जपाना, स्थापन करना, कायम  
करना ।

सं० आरोपित ( आ, रुह=उगना  
चढ़ना ) र्म्यं पु० सौपा हुआ,  
रखा हुआ, २ रोपा हुआ, बोया  
हुआ, ३ बदला हुआ ।

सं० आर्द्र ( अर्द्र=जाना ) गु० गीला,  
भीगा, ओढ़ा, तर, सीला ।

सं० आर्य्य ( अरु=जाना ) गु० बड़ा,  
श्रेष्ठ, कुत्तीन, अच्छे घराने का, पूज्य,  
पूजनीय, महाराज, पु० हिंदू ।

सं० आर्यावर्त ( आर्य=हिंदू वा  
उत्तमकुल के मनुष्य, आवर्त=दका

१. हुआ, दृत्=होना ) पु० हिंदुस्थान की वह पवित्र धरती जो पूर्व समुद्रसे पश्चिम समुद्रतक फैली हुई है और उत्तर और दक्षिण की ओर हिमालय और विंध्याचल से घिरी हुई है मनु ने इसी को आर्यावर्त लिखा है जैसे "आ स मुद्रात्तुवैपूर्वा, दासमुद्रात्तुपश्चिमात् । हिमवदिन्ध्रयोर्मध्ये आर्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥ १ ॥ "आर्यावर्त्तं पुण्यभूमि, मध्यं विन्ध्यहिमालयोः ।

सं० आलम्ब (आ=से, लवि=ढह आलम्बन ) रना ) पु० आसरा सहारा, अवलंब ।

सं० आलय आ=चारों ओरसे, ली=लेना, मिलना ) पु० घर, स्थान, जगह ।

सं० आलत्राल (आ=चारों ओरसे, ला=लेना ) पु० थाला, घेरा, पेड़की जड़के आस पास का घेरा ।

सं० आलस्य (अलस, आ=नहीं

प्रा० आलस ) लम्=शोभना, खेला-ना ) पु० सुस्ती, आरक्त, दील ।

प्रा० आलसी-गुं=सुस्त, काहिल ।

प्रा० आला (सं० आलय) पु० दीप रखने के लिये भीत में या खंभे में छोटा सा खोद, दीया का ठाक, ठाक, वासा ।

सं० आलान (आ=से, ला या ली=

लेना ) पु० हाथी के बांधने का खंभ या रस्ता, बेड़ी, जंजीर आदि ।

अ० आलान=इरित्तार, विज्ञापन ।

सं० आलाप (आ, लप्=बोलना ) मा० पु० बातचीत, बोलचाल, कहना बोलना, २ स्वरका मिलान ।

सं० आलापनीय (आलाप्+अनीय ) र्म्य० पु० भाषणयोग्य, कहने लायक ।

सं० आलिंगन आ=चारों ओरसे, लिगि=झातीसे लगाना, मिलना ) पु० प्यारसे मिलना, गले लगाना, प्यार से स्त्री पुरुष का आपसमें मिलना ।

प्रा० आली ( सं० आलि, अल्=शोभना ) स्त्री० सली, सहेली, सारचारिणी ।

सं० आलीढ (आं, लिह=स्वाद लेना ) र्म्य० पु० चारा, भुक्त, स्वाद लिपा ।

सं० आलेख्य (आ, लिख=लिखना ) र्म्य० पु० लिखा ।

सं० आलोक (आ, लोक=देखना ) पु० दर्शन, दृष्टि, देखना, २ चमक, ज्योति, बड़ाई, पश, बखानना, विरद, झरोखा, रोशनदान ।

सं० आलोकन-पा० पु० दर्शन, देखना ।

सं० आलोचना (आ, लोच=देखना ) मा० पु० विचारना, शुद्ध करना, चर्चा करना, नज़रसानी करना ।

सं० आलोच्य, पादु, अन्य, विचारकरा

सं० आलोइन (आ, लुट्=मथना

का घोटना ) भा० पु० मथना,

तलाश करना, अन्वेषण ।

सं० आलोल-गु० चंचल, अति

चंचल ।

प्रा० आल्हा-पु० एक हिंदू शूरीर

और कवि का नाम जिसके नाम से

एक मकार की कविता का नाम

भी आल्हा है ।

सं० आवरण (आ=से, ण=ढकना )

पु० ढाल, ढकना, ढकनेकी कोई

भीत, पर्दा, आच्छादन ।

प्रा० आवभक्ति ( हि० आना, सं०

भक्ति=सेवा )

आवभगत

आवभगति

मान, सत्कार ।

सं० आवर्जन (आ, णट्=फेंकना )

फनाकरना, रोकना ।

सं० आवर्त्त (आ=चारों ओर, णट्=

होना, घूमना ) पु० भँवर, चक्र,

केर, घुमाव ।

सं० आवलि (आ=चारों ओर से

बन=पैना, ढकना ) स्त्री० पांठ,

पंक्ति, धेणी, बरती ।

सं० आवश्यक ( अक्षरय ) पु०

निश्चय, जरूरी, दुरुष्य ।

सं० आवश्यकता-भा० स्त्री० जरूरत

प्रा० आवर्दा ( सं० आ०पुर्दा,

आव } पु०=जाना ) स्त्री०

दवा, बरबाद ।

प्रा० आवागमन } ( हि० आना

आवागमन } सं० गमन=

जाना ) पु०

आना जाना, आगमन ।

सं० आवाहन (आ, वह=लेजाना,

पासलाना) भा० पु० बुलाना, पुना

अथवा होमके समय देवता को

मंत्रों से बुलाना ।

सं० आविर्भाव-भा० पु० प्रकट

होना, जाहिर होना ।

सं० आविर्भूत (आविर्=प्रकट, भू=

होना ) गु० प्रकट, जाहिर, प्रत्यक्ष ।

सं० आविष्कार (आ० पु० प्रकट

आविष्कृत } होना, मर्म० निः

चला हुआ ।

सं० आविष्ट (आ, विष्ट=व्येशकर-

ना ) क० पु० बैठा, घुसा ।

सं० आवृत (आ, वृट्=होना, ढा

कना ) मर्म० पु० आच्छादित, वे

ष्टित, ढाकाहुआ, ढेराहुआ ।

सं० आवृत्ति (आ, वृट्=लीटना

घीटना ) भा० पु० अग्रास, चारु

कहना, उपरना ।

सं० आवेदन (आ, विट्=डूना वा

मथना) भा० पु० निवेदन, गुहारिग ।

सं० आवेद्यमंग्रह-पु० बाह्यगुण

जैसे, वह एक निगम के समीप

अपना स्थान बनाकर रहनेवाला

दास्यन कहते हैं ।

हुआ, दुःख=रोना) पु० हिंदुस्थान की वह पवित्र धरती जो पूर्व समुद्रसे पश्चिम समुद्रतक फैली हुई है और उत्तर और दक्खिन की ओर हिमालय और विंध्याचल से घिरी हुई है मनु ने इसी को आर्यावर्त लिखा है जैसे "आ स मुद्रात्पूर्वपूर्वा, दासमुद्रात्पश्चिपात् । हिमवद्भिन्ध्ययोर्मध्ये आर्यावर्त्त प्रचक्षते ॥ १ ॥ "आर्यावर्त्त पुण्यभूमि, मध्य विन्ध्यहिमालयोः ।

सं० आलम्ब्य (आ=से, लावि=ठहरेना) पु० आसरा सहारा, अवलंब ।

सं० आलय आ=चारों ओरसे, ली=लेना, मिलना) पु० घर, स्थान, जगह ।

सं० आलवाल (आ=चारों ओरसे, ला=लेना) पु० थाला, घेरा, पेड़की जड़के आस पास का घेरा ।

सं० आलस्य (अलस, आ=नहीं) पु० आलस्य लम्=शोभना, खेलना) पु० सुस्ती, आसक्त, दील ।

प्रा० आलसी-गु० मुस्त, कारिल ।

प्रा० आला (सं० आलय) पु० दीप रखने के लिये भीत में वा खंभे में छोटा सा खोद, दीपा का तार, तारू, तासा ।

सं० आलान (आ=से, ला वा ली=

लेना) पु० हाथी के बांधने का सूत्र अथवा रस्सा, वेही, जंजीर आदि ।

अ० आलान=इतिहास, विज्ञापन ।

सं० आलाप (आ, लप्=बोलना) मा० पु० बातचीत, बोलचाल, करना बोलना, २. स्वरका मिलान ।

सं० आलापनीय (आलाप्+अनीय) र्म्ये० पु० भाषणयोग्य, करने लायक ।

सं० आलिगन आ=चारों ओरसे, लिगि=झातीसे लगाना, मिलना) पु० प्यारसे मिलना, गले लगाना, प्यार से स्त्री पुरुष का आपसमें मिटना ।

प्रा० आली (सं० आलि, अल्=शोभना) स्त्री० सखी, सहेली, सारिणी ।

सं० आलीद (आ, लिह=स्वाद लेना) र्म्ये० पु० चारा, भुक्त, स्वाद लिया ।

सं० आलेख्य (आ, लिख=लिखना) र्म्ये० पु० लिखा ।

सं० आलोक (आ, लोक=देखना) पु० दर्शन, दृष्टि, देखना, २ चपक ज्योति, बढ़ाई, यश, बखानना, विरद, भरोसा, रोशनदान ।

सं० आलोकन-मा० पु० दर्श देसना ।

सं० आलोचना (आ, लोच=देखना) मा० पु० विचारना, गुदना, चर्चाकरना, नजरसानी कर

सं० आलोच्य, धातु, अच्य, विचारकर।

सं० आलोड़न (आ, लुड्=मथना वा पीटना) भा० पु० मथना, पीटना करना, अन्वेषण।

सं० आलोल-गु० चंचल, अति चंचल।

प्रा० आल्हा-पु० एक हिंदू शूरवीर और कवि का नाम जिसके नाम से एक प्रकार की कविता का नाम भी आल्हा है।

सं० आवरण (आ=से, ढ=ढकना) पु० ढाल, ढकना, ढकनेकी कोई चीज, पर्दा, आच्छादन।

प्रा० आवभक्ति (हि० आना, सं० भक्ति=सेवा) आवभगत (स्त्री० आदर मान; सत्कार।

सं० आवर्जन (आ, वृज्=फेंकना) मनाकरना, रोकना।

सं० आवर्त्त (आ=चारों ओर, वृत्=होना, घूमना) पु० भँवर, चक्र, फेर, घुमाव।

सं० आवलि (आ=चारों ओर से वल्=घेरना, ढकना) स्त्री० पांठ, पंक्ति, भेणी, अवली।

सं० आवश्यक (अवश्य) गु० निरचय, जरूरी, कर्ष्य।

सं० आवश्यकता-भा० स्त्री० जरूरत प्रा० आवर्दा (सं० आपुर्दाप, आव } इण्=प्राना) स्त्री० उमर, अवस्था।

प्रा० आवागमन (हि० आना, आवागमन } सं० गमन=जाना) पु०

आना जाना, आमदरप्रत।

सं० आवाहन (आ, वह्=लैजाना, पासलाना) भा० पु० बुलाना, पूजा अथवा होमके समय देवताओं में से बुलाना।

सं० आविर्भाव-भा० पु० प्रकट होना, जाहिर होना।

सं० आविर्भूत (आविर्=प्रकट, भू=होना) गु० प्रकट, जाहिर, प्रत्यक्ष।

सं० आविष्कार (भा० पु० प्रकट होना, र्म्यं निःकला हुआ।

सं० आविष्ट (आ, विष्=ववेशकरना) क० पु० बैठा, घुसा।

सं० आवृत्त (आ, वृत्=होना, ढाकना) र्म्यं पु० आच्छादित, वेष्टित, ढाकाहुआ, घेराहुआ।

सं० आवृत्ति (आ, वृत्=लौटना पीटना) भा० पु० अभ्यास, धार करने, उधरना।

सं० आवेदन (आ, विद्=ज्ञान वा संपन्न) भा० पु० निवेदन, गुजारिश।

सं० आवेद्यसंग्रह-पु० बाजिबुल अर्ज, यह पत्र जिसमें जमींदार अपना स्वत्व अर्थात् इरुक सरकारमें दाखिल करते हैं।



सं० आवेश (आ, विश=गुप्तना) पु०  
मवेश, गुप्तना, २. पमंद, ३. क्रोध,  
गु० पकड़ा हुआ, प्रस्त ।

सं० आवेशन-मवेश=, २. शिल्पशाला ।

सं० आशंसा (आ, शम्=सराहना,  
पर आ उपसर्ग के साथ आने से इस  
का अर्थ चाहना होता है) भा० स्त्री०  
इच्छा, चाह, चाहना, अभिलाष ।

सं० आशक्त (आ=से, सञ्=मि-  
आसक्त) लना ) क० पु०  
लगा हुआ, मोहित, डीन, आशक्ति ।

सं० आशङ्का (आ=से, शक्ति=संदेह  
करना) स्त्री० डर, भय, २. संदेह ।

सं० आशय (आ, शी=सोना) पु० म-  
तलब, अभिप्राय, तात्पर्य, २. स्थान,  
जगह, शरण ।

सं० आशा (आ=चारों ओर, अशु=  
फैलना) स्त्री० आस, भरोसा, आ-  
सरा, उम्मेद, २. दिशा, ओर, तरफ ।

सं० आशातीत (आशा + अतीत)  
गु० आशासे अधिक, उम्मेद से  
जियादा ।

सं० आशिस् (आ, शाम्=सिन्धाना  
पर आ उपसर्ग के साथ आने से  
इसका अर्थ चाहना होता है) स्त्री०  
आशीर्वाद, आसीस, घर, दुआ ।

सं० आशीर्वचन (आशिस्=अ-  
आशीर्वाद) सीस, वचन  
वा बात कहना ) पु० असीस,  
आशीस, दुआ ।

सं० आशु (अशु=फैलना) क्रि० वि०  
शीघ्र, जल्द, तुरन्त, झटपट ।

सं० आशुतोष (आशु=तुरन्त, तोष=  
प्रसन्न होनेवाला, तुप्=प्रसन्न  
होना) पु० महादेव, शिव ।

सं० आश्चर्य (आ, चर=चलना)  
पु० अचंभा, अचरज, विस्मय, गु०  
अनोखा, अद्भुत ।

सं० आश्रम (आ, श्रम्=तपकरना)  
धि० पु० ऋषियों के रहने की  
जगह, मठ, २. धर्म के अनुसार अ-  
वस्था के चार भेद १. ब्रह्मचर्य  
२. गृहस्थ ३. वानप्रस्थ ४. संन्यास,  
कलियुग में केवल गृहस्थ और  
संन्यास ये दोही आश्रम हैं, जैसे  
“गृहस्थी भिक्षुकरचैव, आश्रमा द्वौ  
कलयुगे ।”

सं० आश्रय (आ=चारों ओरसे, श्रि-  
=सेवा करना) भा० पु० आसरा,  
शरण, अवलम्ब, २. घर, जगह, ३  
पास, समीपता ।

सं० आश्रयभूत (आश्रय + भूत)  
गु० आसरागौर ।

सं० आश्रयस्थान (आश्रय + स्था-  
न, स्था=ठहरना) धि० पु० सहारा  
की जगह, उम्मेदगाह ।

सं० आश्रित (आ, श्रि=सेवाकरना)  
र्म्य० पु० शरणागत, आश्रित, तावे-  
दार ।

सं० आश्रितस्वत्वाधिकारी—कं०

पु० इरुदार, मातरत ।

सं० आश्लेष ( आ, श्लिप्=मिल-

ना ) पु० आलिङ्गन, जुड़ना, मिलना ।

सं० आरवासन ( आ, आसन,

आश्वास ) श्वस्=समभा-

ना ) भा० पु० प्रबोधकरना, मरोसा

देना, शिष्टाकरना ।

सं० आश्वास्य—भा० अव्य० सम्-

भाकर ।

सं० आश्विन ( अश्विनी एक नक्षत्र

का नाम, इस महीने में पूरा चाँद

इस नक्षत्रके पास रहता है और पुनो

के दिन अश्विनी नक्षत्र होता है )

पु० कुंभार, आसोज, बरसका

छटा महीना ।

प्रा० आपर ( सं० अक्षर ) पु० हफ्त, चिह्न ।

सं० आपाद ( आपादा एक नक्षत्र

का नाम इस महीने में पूरा चाँद इस

नक्षत्रके पास रहता है और पुनो

के दिन आपादा नक्षत्र होता है )

पु० बरस का तीसरा महीना

असाद ।

प्रा० आस ( सं० आशा ) स्त्री०

आसा } आसा, मरोसा, आ-

आसा } मर, २ दिना ।

सं० आसन ( आस=बैठना ) धि०

पु० राभ बा-ऊनकी बनी हुई

बीज, जिसपर हिंदू लोग सन्या

पूजा करने के समय बैठते हैं, २

बैठना, योगियों के बैठने का ढंग

जैसे पद्मासनादि योग का एक

अंग, ३ जाँघ के भीतर की ओर ।

प्रा० आसनतले आना—बोल० बस

होना आधीन होना, ताबे होना ।

प्रा० आसनसे आसन जोड़ना—

बोल० दूसरे आदमी के बहुत पास

बैठना ।

सं० आसन ( आ, सद्=बैठना )

गु० पास, नगीच, समीप, निकट ।

सं० आसव ( आ, सू=पैदा होना,

मदिरा बनाना, ) स्त्री० मदिरा, मद्य,

दारू, शराब, मद, माण ।

प्रा० आसावसन—भा० पु० नंगा,

वृष्णाहीन, बेतमघ ।

प्रा० आसिख ( सं० आशिष ) स्त्री०

असीस, आशीर्वाद, दुआ ।

प्रा० आसिन ( सं० आश्विन )

पु० बरसका छठमहीना, कुंभार,

आश्विन, आसोज ।

प्रा० आसीन ( आस=बैठना ) गु०

बैठा हुआ ।

सं० आस्तिक ( अम=होना ) क०

पु० जो लोग ईश्वर का और पर-

लोक का होना मानते हैं, ईश्वर

वादी, परमेश्वर में विश्वास रखने

वाला, विश्वासी ।

सं० आस्पद—धि० पु० पद, स्थान

सं० ईदरा } ( इदम्=यह, इमं=देस-  
ईदरा } ना ) पु० ऐसा, इस

भाविता, इस प्रकार का ।

सं० ईप्सा ( आत्मा=नाइना ) स्त्री०  
गाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा ।

सं० ईप्सित ( ईप्स + इत ) स्त्री० पु०  
चाहा हुआ, भावेच्छित, चाँछित ।

सं० ईप्सा } ( ईप्स=हाइकरना )  
प्रा० ईप्सा } स्त्री० हाइ, द्रोह, द्वेष,

हिम्मी-की-व-नी-देना इतलना, इमदा ।

सं० ईप्सा ( ईप्स + ई ) क० पु० द्रोही,  
द्रोहि, हाँस ।

सं० ईप्सा ( ईप्स=ऐसपें रचना ) पु० ई-

सा, ऐसपें, ऐसित, महादेव, ३  
सा, ऐसपें, प्रभु, यनी, मालिका ।

सं० ईप्सा ( ईप्स=महादेव ) पु० शिव,  
महादेव, २ पूर्व उल्लेख के बीचका

कोन, जिसका दिग्गजानमहादेव है ।

सं० ईप्सा स्त्री० } ( ईप्स=ऐसपें  
ईप्सा पु० } रचना/रचना,  
वर्णन, यात्रा सिद्धि की एक सिद्धि ।

सं० ईप्सा ( ईप्स=ऐसपें रचना )  
पु० ऐसपें, ऐसित, प्रभु, २

महादेव, ३ मालिका, यनी ।

सं० ईप्सा ( ईप्स ) स्त्री० वप्सा ।

सं० ईप्सा कृत स्त्री० पु० ईप्सा  
चित, ईप्साविधि ।

सं० ईप्सागोत्र ( ईप्सा + गोत्र ) स्त्री०  
पु० ईप्सागोत्र, ईप्सा का कृत  
कृत, वेद, कृतमः ।

प्रा० ईस ( सं० ईस ) पु० परमेस्वर,  
२ महादेव, ३ राजा, स्वामी ।

सं० ईप्सा-क्रि० वि० योडा, किविन् ।

सं० ईप्सा ( ईप्स=पतन करना ) स्त्री०  
यतन, प्रयास, उपाय, २ इच्छा ।

—३०—

उ

सं० उ ( उ=शब्दकरना ) पु० माहा-

देव, दालना, नियोग, कोपचवन,  
२ वि० यो० संशोधक का सूचक

है, २ तर्क अर्थ में बोला जाता है ।

प्रा० उकटना ( सं० उक्=ऊपर, कट=

तोड़ना ) क्रि० स० गद्दी हुई भीत

को सोटना, २ उग्राटना, ३ भेद

लेना, ४ क्षीयमान हो सोना देना ।

प्रा० उकमना ( उक्=ऊपर, कम=

गाना ) क्रि० अ० ऊँचा होना, उक-

ना बनना ।

सं० उक्ता ( वच=बोलना ) स्त्री० पु०

कहा हुआ बोलना हुआ, कथित ।

सं० उक्ता ( वच=बोलना ) भा०

स्त्री० कहना, बोलना, बोलने की

शक्ति, भाषण, बोलचाल, वचन,

कलाप, दर्जील ।

प्रा० उकनाना ( सं० उक्=ऊपर, कट=

दुगमे पीना, गोच करना ) क्रि०

अ० उकनाना, उकाम होना, उकना ।

प्रा० उमडाना ( सं० उक्=ऊपर,

उग्राटना )

उग्राटना }

उग्राटना }

क्रि० सं० जड़से तोड़-टालना, उखाड़ना, नाशकरना ।

प्रा० उखल, पु० } (सं० उखल, उखली, खी० } वा उलूखल, उलू=ऊपर, ख=गन्ध, ला=लेना ) उखली, ओखली, जिसमें धावल आदि कूटे हैं ।

प्रा० उगना (सं० उव्=ऊपर, गप्=जाना) क्रि० प्र० पैदा होना, बढ़ना, निकलना ।

प्रा० उगतेही जलजाना-शोल० यह मुहावरा उसमगद बोला जाता है कि जब किसी की आश शुरुआती में दृष्ट भाय ।

प्रा० उगलना (सं० उव्=ऊपर, ग्ल=निगलना) क्रि० सं० मुँहमें कोई चीज छेके पीछे निकाल देना, बमन करना, उल्टी करना, क्रय करना ।

प्रा० उगाहना (सं० उव्, ग्रह=लेना ) क्रि० सं० इकट्ठा करना, बटोरना, जमा करना, तहसील करना ।

सं० उग्र ( उव्=इकट्ठा होना, वा बन्ध=कटोर होना ) गु० कटोर, टराबनी, भणकर, क्रीपित, कड़ा, पु० महादेव का नाम ।

सं० उग्रता-भा० स्त्री० कटोरता, सखी, सखी ।

सं० उग्रस्वभाव ( उग्र=स्वभाव, ) कटोर चित्त, तेज मिताज ।

सं० उग्रसेन ( उग्र=टराबनी, सेना=श्रीज ) पु० मथुराको राजा, आहुक

रामा का वेश देवका का भाई और पवनरक्षा का प्रति, जिसके द्रुमलिक नाम राजस से कंस पैदा हुआ ।

प्रा० उघड़ना } क्रि० प्र० खुलजा-उघरना } ना, प्रकट होना, उभंग होना ।

प्रा० उघाड़ना } क्रि० सं० खोल-उघारना } ना, प्रकट करना, उभंग करना ।

प्रा० उचकना-क्रि० प्र० कूद उठना, कूदना, उछलना ।

प्रा० उचका-पु० उग, उठाईगीरा, गांठकटा, जेबकतरा, चौर, धली, पाखण्डी ।

प्रा० उचटना ( सं० उव्, चट=तोड़ना ) क्रि० प्र० अलग अलग होना उखड़ना, बिखरना, पिछलना, उदास होना, मन नहीं लगना, नौद का टूटना ।

प्रा० उचरना } ( सं० उचरण, उचरना ) उव्=ऊपर, चर=चलना, पर उव् उपसर्ग के साथ आने से अर्थ बोलना होता है ) क्रि० सं० बोलना, करना, शब्दों का उच्चारण करना ।

प्रा० उचाटना ( सं० उचाटन, उचट=ऊपर, चट=तोड़ना ) क्रि० सं० जुदा करना, अलग करना ।

प्रा० उचाटहोना-शोल० उदास होना, मन नहीं लगना, उपायी लगना ।

सं० उचित ( उव्=इकट्ठा होना, वा

सं० ईदृशो } ( ईदृम्=पह, दृग्=देख-  
 ईदृक्षो } ना ) पु० ऐमा, इस  
 मानिका, इस प्रकार का ।  
 सं० ईप्सा ( आर्=चाहना ) स्त्री०  
 पाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा ।  
 सं० ईप्सित ( ईप्स् + इत् ) स्त्री० पु०  
 चाराहुआ, आपेक्षित, याञ्छित ।  
 सं० ईप्स्या } ( ईप्थे=दाहकरना )  
 प्रा० ईप्सा } स्त्री० दाह, शोथ, देप,  
 किमीबीचहीदेगहरनलना, इसदा ।  
 सं० ईर्ष्या ( ईर्ष्य + ई ) स्त्री० पु० श्रोत्री,  
 द्वेषी, हासिद ।  
 सं० ईर्ष्या ( ईर्ष्य=पेरवपेरवना ) पु० ई-  
 रव, रापेरव, शिक्, महादेव, ३  
 राजा, स्वामी, मय, यनी, मालिक ।  
 सं० ईर्ष्यान् ( ईर्ष्य=महादेव ) पु० शिक्,  
 महादेव, २ पुर्व उपाय के बीषका  
 कोने, त्रिमहा दिक्पालमहादेव ।  
 सं० ईर्ष्यान्, स्त्री० } ( ईर्ष्य=पेरवपे  
 ईर्ष्यान् पु० } रवना ) जड़णन,  
 बटाई, पाठ मिट्टी की एक मिट्टि ।  
 सं० ईर्ष्यान् ( ईर्ष्य=पेरवपे रवना )  
 पु० परपेरव, शिष्टिहनी, मय, २  
 महादेव, ३ मालिक, यनी ।  
 सं० ईर्ष्यान् ( ईर्ष्या ) स्त्री० वपुता ।  
 सं० ईर्ष्यान् ( ईर्ष्य=पेरवपे रवना )  
 पु० ईर्ष्यान्, ईर्ष्यान्, ईर्ष्यान् का कहा  
 हुआ, वेद, कनमःनाही ।

प्रा० ईस ( सं० ईश ) पु० परमेस्वर,  
 २ महादेव, ३ राजा, स्वामी ।  
 सं० ईपत् ( ईप् + वि० ) शि० वि० शि०  
 सं० ईहा ( ईह=पतन करना ) स्त्री०  
 पतन, भेष्टा, उपाय, २ इच्छा ।

—:—

उ

सं० उ ( उ=शब्दकरना ) पु० महा-  
 देव, दालना, नियोग, कोपवचन,  
 २ वि० शि० संशोधक का सूचक  
 है, २ तर्क अर्थ में बोला जाता है ।  
 प्रा० उकटना ( सं० उक्त्=ऊपर, कट=  
 तोड़ना ) शि० सं० गद्दी हुई भीत  
 को मोटना, २ उगाटना, ३ भेट  
 लेना, ४ द्वितीयान्तो मोलदेना ।  
 प्रा० उकमना ( उक्त्=ऊपर, कम=  
 जाना ) शि० अ० ऊँचाहोना, उक्-  
 ना चलना ।  
 सं० उक्त् ( उक्त्=बोलना ) स्त्री० पु०  
 कहा हुआ बोला हुआ, कथित ।  
 सं० उक्त् ( उक्त्=बोलना ) स्त्री०  
 स्त्री० कहना, बोलना, बोलने की  
 शक्ति, मापण, बोलचाल, बचन,  
 कलाप, दलील ।  
 प्रा० उकनाना ( सं० उक्त्=ऊपर, कट=  
 दुनमे जीना, मोच करना ) शि०  
 अ० पवना, उदासहोना, पटना ।  
 प्रा० उमडाना } ( सं० उक्त्=ऊपर,  
 उमडाना } कट=तोड़ना )

क्रि० स० अङ्गसे तोड़-हालना, उ  
जगाड़ना, नाशकरना ।

प्रा० उखल, पु० } (सं० उदखल,  
उखली, खी० } वा उलखल,  
उन्=ऊपर, ख=गुन्य, ला=लेना )  
उखली, ओखली, जिसमें चाँवल  
आदि कुटते हैं ।

प्रा० उगना (सं० उव्=ऊपर, गम्=  
जाना) क्रि० प्र० पैदा होना, बढ़ना,  
निकलना ।

प्रा० उगतेही जलजाना-बोल०  
यह मुदाबरा उसजगह बोला जाता है  
कि जब किसी की आश मुकुअही  
में दूट आय ।

प्रा० उगलना (सं० उव्=ऊपर, ग्=  
निगलना) क्रि० स० मुँहमें कोई चीज  
ढेके पीछे निकाल देना, बमन कर-  
ना, उलटी करना, क्रय करना ।

प्रा० उगाहना (सं० उव्, प्रह=लेना )  
क्रि० स० इकट्ठा करना, घेरना,  
जमा करना, तहसील करना ।

सं० उग्र (उव्=इकट्ठा होना, वा बह्=  
कठोर होना) पु० कठोर, डरावना,  
भयंकर, क्रोधित, कड़ा, पु० महादेव  
का नाम ।

सं० उग्रता-भा० स्त्री० कठोरता, तेजी,  
सखी ।

सं० उग्रस्वभाव (उग्र+स्वभाव)  
कठोर चित्त, तेज यत्ताज ।

सं० उग्रसेन (उग्र=डरावनी, सेना=  
फौज) पु० मयुराक्षी राजा, आहुक

राजा का बेटा देवक का भाई और  
पवनरेखा का पुत्रि, जिसके द्रुमलिक  
नाम राजस से कंस पैदा हुआ ।

प्रा० उघड़ना-क्रि० प्र० खुलजा-  
उघरना } नाश भक्त होना,  
२ नंगा होना ।

प्रा० उघाड़ना-क्रि० स० खोल-  
उधारना } नाश, मुकुट करना,  
२ नष्ट करना ।

प्रा० उचकना-क्रि० प्र० कुदउठना,  
कुदना, उछलना ।

प्रा० उचका-पु० उग, उठाईगीरा,  
गांठकटा, जेबकतरा, चौर, छेली,  
पांखण्डी ।

प्रा० उचटना (सं० उव्, चट=तोड़-  
ना) क्रि० प्र० अलग अलग होना  
उखड़ना, बिखरना, पिछलना,  
उदास होना, मन नहीं लगना, २  
नींद का टूटना ।

प्रा० उचरना } (सं० उचरण,  
उचरना } उन्=ऊपर, चर=  
चलना, पर उन् उपसर्ग के साथ  
आने से अर्थ बोलना होता है )  
क्रि० स० बोलना, कहना, शब्दों  
का उच्चारण करना ।

प्रा० उचाटना (सं० उचाटन, उव्=  
ऊपर, चट=तोड़ना) क्रि० स०  
जुदा २ करना, अलग २ करना ।

प्रा० उचाटहोना-बोल० जुदास हो-  
ना, जो नहीं लगना, उचाटी लगना ।

सं० उचित (उव्=इकट्ठा होना, वा

सं० ईदृशं ( ईदृशं=यह, दृशं=देख-  
ईदृशं ) ना ) गु० ऐमां, इस

मानिका, इस प्रकार का ।  
सं० ईप्सा ( आप्=नाइना ) शी०

गाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा ।

सं० ईप्सित ( ईप् + इत ) स्मै० पु०  
पाहाइया, आगेछित, वाञ्छित ।

सं० ईप्सा ( ईप्=हाइकरना )

प्रा० ईपां ( शी० हाइ, श्रोइ, देप,  
हिमी-हीरहीदेग-हरनतना, हमदा ।

सं० ईपी ( ईप् + ई ) क० पु० श्रोही,  
देई, इपिद ।

सं० ईप ( ईग=पेश्वपेशना ) पु० ई-  
रवा, पेश्वर, २ गित, महादेव, ३  
राजा, स्वापी, प्रभु, पनी, पालिक ।

सं० ईगान ( ईग=महादेव ) पु० गित,  
महादेव, २ पुर्व उतर के बीचका  
शोर, तिमहा दिवानमहादेवरी ।

सं० ईगिना, स्त्री० ( ईग=पेश्वपेश  
ईगिन्यपु० ) रमना) गदणन,  
हराई, आठ सिद्धि की एक सिद्धि ।

सं० ईगवा ( ईग=पेश्वपेश रमना )  
पु० पेश्वपेश, श्रोहिना, प्रभु, २  
महादेव, ३ पालिक, पनी ।

सं० ईगवना ( ईग ) शी० वपना ।

सं० ईगवन्तु स्मै० पु० ईगवर  
विन, ईगविनि ।

सं० ईगवनेक ( ईगव + नेक ) स्मै०  
पु० ईगवनेक, ईगव का कहा  
हुआ, वेद, कनामः ३ ।

प्रा० ईस ( सं० ईश ) पु० परेश्वर,  
२ महादेव, ३ राजा, स्वापी ।

सं० ईपत् ( ईप् + पत् ) शी० वि० गोइ, किभि ।

सं० ईहां ( ईह=गनन करना ) शी०  
यनन, वेष्टा, उपाय, २ इच्छा ।

—:०:—

उ

सं० उ ( उ=शब्दकरना ) पु० पा-  
देव, दानना, निषेध, शोचन,  
२ वि० बो० संशोधक का मुखा  
है, ३ तर्क अर्थ में बोला जाता है ।

प्रा० उकटना ( सं० उत=ऊपर, उ-  
तोड़ना ) कि० स० गद्दी हुई  
को खोदना, २ उमाड़ना, ३  
लेना, ४ द्वितीयातको गोलदेना ।

प्रा० उकमना ( उत=ऊपर,  
जाना ) कि० स० उवाहना,  
ना चलना ।

सं० उक्र ( बन=बोलना ) स्मै०  
कहा हुआ बोलना हुआ, कवि

सं० उक्ति ( बन=बोलना )  
शी० कहना, बोलना, बो-  
गुक्ति, मापण, बोलचाल  
कलाप, दलील ।

प्रा० उकताना ( सं० उत=ऊपर,  
दुसरे माना, गोप ह-  
म=यवगन, उदाहरण )

प्रा० उमाड़ना ( सं०  
उमाड़ना )





वञ्च=बोलना ) क० पु० योग्य,  
 ठीक, चाहिये, मुनासिब ।  
 सं० उभ ( उन्=ऊपर, वि=इकट्ठा  
 करना ) पु० ऊंचा, छम्हा, उभन  
 मांझ, उदग्र, मृग, उच्छिन्न ।  
 प्रा० उभशिमाकीशिता--मौ०  
 आलादर्श की मधनीय ।  
 सं० उभम्यर पु० बड़ा शब्द, पुनन्द  
 आवाज ।  
 सं० उभार ( उन्=ऊपर, चल्=चल  
 ना ) पु० उभारण, कथन, वर्णन,  
 बल, विद्या ।  
 सं० उभाण उन्=ऊपर, चल्=  
 चलना, उन् उभण के साथ आने  
 से अर्थ, बोलना होता है ) मा०  
 पु० बोलना, लक्ष्यकृत ।  
 सं० उभस्ति ( उन् + उ + इत् ) स्म०  
 पु० कथित, कहा हुआ ।  
 सं० उच्छिन्न ( उन्=ऊपर, चिद्=  
 काटना ) स्म० पु० काटा हुआ,  
 चला हुआ, विप्लव ।  
 सं० उच्छिन्नता--मा० स्त्री० नाश,  
 लुप्तता, बर्बादी ।  
 सं० उच्छिष्ट ( उन्, शिप्=कड़ी  
 रहना, स्म० पु० शेष, शेष के पीछे  
 बचा हुआ शेष, मुक्तकशेष ।  
 सं० उच्छेद ( उन् + चिद्=काटना )  
 मा० पु० विच्छेद, लुप्तता, काटना,  
 कटना ।

सं० उच्छेदी ( उच्छेद् + ई ) क० पु०  
 नारक, काटनेवाला ।  
 प्रा० उच्छेग ( सं० उच्छेद्, उन्=ऊपर,  
 चल्=चलना ) स्त्री० गोदी, गोद ।  
 प्रा० उच्छरना } ( सं० उन्=ऊपर,  
 उच्छलना ) चल्=चलना )  
 क्रि० अ० कूटना, कूद उठना, ऊपर  
 उठना, कुदकना ।  
 प्रा० उच्छाह ( सं० उत्साह, उन्, सह=  
 सहना ) पु० आनंद, हर्ष, सुखी ।  
 प्रा० उजागर--पु० नामवर, नापी,  
 पनापी, प्रमिद्ध, विख्यात, प्रशस्ती ।  
 प्रा० उजाड़ना ( सं० उत्पादन, उन्  
 =ऊपर, पट=जाना, अधवा, उन्=ऊ-  
 पर, पट=इकट्ठा होना ) क्रि० स० नाश  
 करना, पीटकरना, बरबाद करना ।  
 प्रा० उजाला } ( सं० उज्ज्वल, उन्=  
 उजियारा ) ऊपर, उन्=चमक-  
 ना ) मा० पु० प्रकाश, तेज, चमक ।  
 प्रा० उज्जल } ( उन्, उन्=चमक-  
 सं० उज्ज्वल } कना ) क० पु० साफ,  
 स्वच्छ, निर्मल, चमकीला, प्रका-  
 शित, दीप्तिमान् ।  
 सं० उज्ज्वलन--मा० पु० उद्दीपन,  
 प्रकाश, कटना, चमकना ।  
 प्रा० उज्ज्वलन--क्रि० अ० नाचना,  
 भाँकना ।

प्रा० उभयलना ( सं० उभयलन,

उभयलना ) क्रि० स० एक वर-  
नन मे दूयो वरनन मे दानना ।

सं० उभयलित-स्य० मोहादुषा,  
दाना दुषा ।

सं० उट-पु० हृण्जनका, उर्ण, यना ।

सं० उटज वट + जन्=देहाशोना  
का बनाना ) पु० पर्णशाला, पत्तो  
का घर, मुनिघर ।

प्रा० उटना ( सं० उत्थान, उटू=उपर,  
स्या=उहरना ) क्रि० अ० रक्का  
शोना, २ उगना, ३ दूर शोना, मौकू  
शोना, क्वालिश शोना ४ सर्व  
शोना, वरताएन करना ।

प्रा० उटवैठ-बोलः बेचैनी, उटना  
बैठना, कसारमे ।

प्रा० उटईगीरा-पु० थोहा, ठग,  
वचका, हयमार ।

प्रा० उठाना ( सं० उत्थापन, उटू=  
उपर, स्या=उहरना ) क्रि० स०  
रक्का करना, ऊँचा करना, २ उ-  
गाना, ३ दूर करना, ४ सर्व करना,  
५ सहना, ६ उभारना, भड़काना ।

प्रा० उठादेना-बोल० दूर करना,  
उभारना, भड़काना ।

प्रा० उड़ना ( सं० उडू=उपर, उडू=  
उड़ना ) क्रि० अ० परेरु का आ-  
बाग में चलना ।

प्रा० उड़ाऊ ( उड़ाना ) पु० सुडाऊ,

बहुत गरब करने वाला, उ-  
बरने वाला ।

प्रा० उड़ाना ( सं० उडू=ऊपर,  
उड़ना ) क्रि० स० परेरु को

के निचे छोड़ना, २ नुमाना, मी-  
पेकना, नशाना, हवा छर्व कर

३ पुराना, ले लेना, ४ वि-  
बीज को हवा में छोड़ना ।

प्रा० उड़ाना पुड़ाना-बोहः उ-  
ठाना, पैदाना, मराना, हवा में उ-

सं० उड़ीन-भा० पु० उड़न-  
वात शोना ।

सं० उड़ीयमान ( उडू=ऊपर,  
उड़ना ) क० पु० उड़नेवाला

काशगापी, नमवार ।

सं० उडु ( उडू=पिनन करने-  
वाला ) पु० उड़ना

सं० उडुगण ( उडू=ऊपर,  
उड़ना ) पु० उड़नेवाला

सं० उडुप ( उडू=ऊपर,  
उड़ना ) पु० उड़नेवाला

प्रीना का बोलना, उडु-  
बांद, २ हौस

प्रा० उड़ाना ( सं० उडू=ऊपर,  
उड़ना ) क्रि० क० उड़ाना

प्रा० उड़ाना ( सं० उडू=ऊपर,  
उड़ना ) पु० उड़ाना

प्रा० उड़ाना ( सं० उडू=ऊपर,  
उड़ना ) पु० उड़ाना

प्रा० उड़ाना ( सं० उडू=ऊपर,  
उड़ना ) पु० उड़ाना

प्रा० उड़ाना ( सं० उडू=ऊपर,  
उड़ना ) पु० उड़ाना

प्रा० उतरनहोना ( सं० उचरीण, उइ=ऊपर, नू=पार होना ) क्रि० अ० उचरण होना, अण से छटना कर्त्त से रिहा होना ।

प्रा० उतरना ( सं० उचरण, उइ=ऊपर, नू=पार होना ) क्रि० अ० नीचे आना, २ उठरना, टिकना, डेरा करना, बाँसलेना, विश्राम करना, ३ किनारे पहुँचना, पार होना, नाँचना, ४ घटना, कम होना मंदा होना, ५ उदास होना, फीका पड़ना, (जैसे "उसका रंग उतर गया") ६ उचरण होना, कर्त्त से छटना, ७ नशा कम होना, ८ किसी पद अर्थात् धोरे से मौकूक होना ।

सं० उत्कट-गु० मग, अधिक, तीव्र, क्रोधी, गर्वी, भयानक, पु० क्रोध, गर्व, क्रोधर, उग्र, दुःमर् ।

सं० उत्कण्ठा ( उइ=ऊपर, कठ=मोचना, वा बादमे बाद करना ) भा० स्त्री० छानव, चाह, चाहना, इच्छा, अभिलाषा ।

सं० उत्कण्ठित-क० पु० उन्मुक्त, अभिलाषी, इच्छासिगमन्द ।

सं० उत्कर्ष ( उइ=ऊपर, कृ=सँवना ) भा० पु० बढ़ाई, सराह, प्रशंसा, उत्पत्ता, भेदना ।

सं० उत्कर्षना=भा० स्त्री० अष्टना, प्रजनना, उत्पत्ता ।

सं० उत्कृष्ट ( उइ=ऊपर, कृ=सँवना ) गु० उत्तम, सबसे अच्छा वा बढ़ा, श्रेष्ठ, प्रधान ।

सं० उत्खात ( उइ=ऊपर, खन=खोदना ) कर्म० पु० उन्मूलित, उखाड़े हुये ।

सं० उत्तम ( उइ=ऊपर, तम=बहुतही बहुत ) गु० श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, मुख्य, पहला, प्रधान, मुखिया ।

सं० उत्तमणी-पु० कण्ठादाता, श्रोत्र, कर्त्त देनेवाला ।

सं० उत्तमांग ( उत्तम=सबसे अच्छा वा मुख्य, अंग=शरीरका एकभाग ) पु० शिर, माथा, मस्तक ।

सं० उत्तर ( उइ=ऊपर, नू=पार होना ) पु० जवाब, उत्तर दिशा, प्रतिवाक्य, दिक्, मिम्त, गु० पिछला, पीछे ।

सं० उत्तराधिकारी ( उत्तर=पीछे, अधिकारी=वारिसअथवापालिक ) पु० वारिस, ज्ञानशील ।

सं० उत्तानपात्र-पु० तवा, तावा ।

सं० उत्तरायण ( उत्तर=उत्तर दिशा, अयन=चाल ) पु० आषाढरत्न जब कि सूर्य विषुवत् रेखा के उत्तर की ओर रहता है, माघ से असाढ़ तकके ऋतु ।

सं० उत्तरार्द्ध ( उत्तर=पिछला, अर्द्ध=आधा ) पु० पिछला आधा ।

सं० उत्तीर्ण (उद्=ऊपर, तृ=नार

जाना ) क० पु० उल्लंघन, पार-

गन, पारपहुँचा, कामयाब ।

प्रा० उत्तु-पु० पारत, वर, पुनन घड़ी ।

प्रा० उत्तुकरना-बोल० तह जवा-

ना, चुनना ।

सं० उत्तेजक-क० पु० प्रकटितवाला,

प्रेरणा करनेवाला ।

सं० उत्तेजना (उद्=ऊपर, तिज=ती

रुणकरना) प्रा० स्त्री० प्रेरणा करना,

प्रोत्साहन करना, तीव्रण करना धप-

काना, भड़काना, तेज करने ।

सं० उत्तेजित-पु० प्रेरित, प्रोत्साहि

त, भड़काया गया ।

सं० उत्तोलन (उद्=ऊपर, तुल=

तोलना) पु० तोलना, ऊपर को

उठाना ।

सं० उत्थान (उद्=ऊपर, स्था=

ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाव,

वर्धन ।

सं० उत्थान एकादशी (सं० उत्थान

=उठना, एकादशी ग्यारहवीं तिथि)

स्त्री० काविक सुदी ११ जिस दिन

विष्णु नींद से उठते हैं ।

सं० उत्थापन (उद्=ऊपर, स्था=उ-

ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाकर

रखना ।

सं० उत्पत्तन (उद्=ऊपर, पतु=गिर

ना) भा० पु० ऊपर से गिरना ।

सं० उत्पत्ति (उद्=ऊपर, पद्=जाना)

स्त्री० जन्मना, पैदा होना पैदाचारी,

उगना ।

सं० उत्पन्न (उद्=ऊपर, पद्=जाना)

पु० पैदा हुआ, जन्मा हुआ उल्लभ

पाया हुआ ।

सं० उत्पल (उद्=ऊपर, पल=जाना)

पु० कमल, करल, नीलाकमल ।

सं० उत्पाटन (उद्=ऊपर, पट=लेपटना वा

खींचना) भा० पु० उखाड़ना ।

सं० उत्पात (उद्=ऊपर, पतु=गिर

ना) पु० उपद्रव, बसेड़ा, बिगाड़,

हानि, अन्धेरा ।

सं० उत्पादक-क० पु० जनक, उत्पन्नक

सं० उत्पादन-भा० पु० जनना, पैदा

करना ।

सं० उत्प्रेक्षा (उद्=ऊपर, प्र=वहन,

इत=देखना भावना करना) भा०

स्त्री० बराबरी, उपमा, तुल्यता, एक

अलंकार का नाम, दील, देर ।

सं० उत्प्लुत (उद् + प्लु=कटमाना) क०

पु० तर ऊपर होना, नीट पीटमाना ।

सं० उत्सव (उद्=ऊपर, सू=पैदा

होना) पु० आनन्द का काम, जैसे

व्याह, नाच, राग, रंग, आदि, पर्व,

त्योहार, बड़ा दिन ।

सं० उत्सर्ग (उद् + सर्ग=बाँटना

वा पैदा करना) भा० पु० न्याय,

वर्णन, दान, रोकना, अर्पण करना ।

- मं० उत्साह ( उद्=ऊपर, सह=सं-  
हता ) पु० आनन्द, उद्वाह, कुशी,  
२ यत्न, उद्योग ।
- मं० उत्सुक ( उद्+सू=पैदाशोना )  
पु० चारनेवाला ।
- प्रा० उथलना-क्रि० स० उलटना,  
भीषाना, तनेऊपर करना ।
- प्रा० उथलपुथल-शे० उलटपुलट,  
उलट पुलट, ऊपर नीचे, तले  
ऊपर, गलत गलत, इधर का उधर  
उधर का इधर ।
- मं० उद ( उ=गन्ध करना ) उप०  
उत ) ऊपर, ऊंचा, ऊपर की  
ओर, ऊंचा दिया हुआ, मकट, बढ़ाई  
वन आदि अर्थों में भी आता है  
और जगह बच और पद अर्थान्  
तमें की अधिकारी में भी योना  
जाता है और अर्थःको उलटता है ।
- मं० उद ( उद्=मिगोना ) पु०  
उदक ) पानी, जल ।
- मं० उदग्र ( उद्=ऊपर, अग्र=सिरा  
या नोक ) पु० ऊंचा, तीखा, दरा-  
बना ।
- मं० उदधि ( उद्=पानी, धा=रचना )  
पु० समुद्र, सागर, जलनिधि ।
- मं० उदय ( उद्=ऊपर, इ=माना )  
पु० पद पराङ्ग का नोचें जरा से  
हिरे बलने है हि मूर्ध निकलता  
है, २ उगना, निकलना, ३ जिन,
- मकाश, ४ बहना,  
उमति, भागमानी ।
- सं० उदयास्तावधि ( उ-  
त्त+अवधि ) स्त्री० नि-  
द्वने की सीमा ।
- प्रा० उदयहोना-क्रि०  
निकलना, २ वृद्धि होना,  
होना, भाग जागना, ऊगना
- सं० उदर ( उद्=ऊपर, उ-  
द, द=काटना ) पु० पेट
- सं० उदरम्भरि-पु० पेट
- सं० उदर्वि-पु० अग्नि,  
चिनगारी ।
- मं० उदात्त ( उद्=ऊपर, आ-  
देना ) पु० ऊंचा स्वर, उ-  
से बोलना, २ दान, ३  
का अलंकार ।
- मं० उदार ( उद्=ऊपर, आ-  
देना ) पु० दाना, दान, द-  
देनेवाला, बढ़ा, मीठा, मादारी
- सं० उदागता ( उद-  
दानागी, ममावन
- मं० उदाम उद्=ऊपर  
बैठना ) पु० बैठा, उ-  
बैठना, गु० मलिन, दम-  
करता हुआ, दुःख, २  
२ वे परवाह ।
- सं० उदामी ( उद्-  
प्रकांत में उठने दान

की बराबर देखने वाला, २  
छिन, खी० शोच, पलितता,  
बेता, फिक, दुःख, संताप ।

उदासीन ( उद्=ऊपर, आ=  
लेना ) पु० संन्यासी, बेरागी,  
योगी, अतिथि, बनवासी, तासी,  
जिसने संसार छोड़ दिया और  
जिसके मिर और पैरी बराबर हों,  
त्यागी वानप्रस्थ ।

० उदाहरण ( उद्=ऊपर, आ=  
से, ह=लेना ) पु० दृष्टान्त, मिसाल ।

० उदित ( उद्=ऊपर, इ=जाना )  
र्म० पु० कहाहुआ, निकलाहुआ,  
प्रकाशित, प्रकट, प्रका हुआ ।

सं० उदीची=उत्तरदिशा ।

सं० उदीरण ( उद्=ऊपर, र=प्रेरण क० )  
भा० पु० कपन, करना ।

सं० उदीरित-र्म० पु० कथित,  
कहा गया ।

० उद्धार ( उद्=ऊपर, ग=निगल-  
ना ) पु० बचन, दकार, मुक्त, दुःख,  
विस्मय ।

उधारना ( सं० उद्घाटन, उद्=  
पर, घट=खोलना ) क्रि० सं०  
खोलना, उधारना ।

उद्दाल ( उद्=ऊपर, दल्=दो  
रुड़े करना ) पु० एक श्रविका नाम  
की छः महीनेमें एकबार खाताया ।

उद्दिष्ट-र्म० पु० लक्षित, दि-  
खाया गया ।

सं० उद्देश ( उद्=ऊपर, दिश=  
देना ) पु० चाह, २ अनुसंधान,  
सोज, पता, प्रयोजन, मतलब,  
जिसके विषयमें कुछ कहा जाय ।

सं० उद्धरण ( उद्=ऊपर, ह=लेना )  
भा० पु० उद्धार करना मुक्ति देना ।

सं० उद्धार ( उद्=ऊपर, ह=लेना )  
पु० बचाव, छुटकारा, मुक्ति, नि-  
स्तारा ।

सं० उद्धृत-र्म० पु० उंचाकियागया,  
उठाया गया ।

सं० उद्भव ( उद्=प्रकट, भू=होना  
पु० पैदा होना, जन्म, उत्पत्ति ।

सं० उद्यत ( उद्=ऊपर, यम्=रोक-  
ना ) पु० तैयार, लगाहुआ, प्रवृत्त,  
पु० अभ्यास ।

सं० उद्यम ( उद्=ऊपर, यम्=रोक-  
ना, पर उद् उपसर्ग के साथ आने  
से यत्न करना होता है ) भा० पु०  
यत्न, उपाय, परिश्रम, मिहनत,  
कोशिश, उद्योग, वेश ।

सं० उद्यान ( उद्=ऊपर, या=जाना )  
भा० पु० बाग, बगीचा, उपवन, २  
मत्तलब, प्रयोजन ।

सं० उद्यानपाल ( उद्यान=फूलबा-  
ड़ी, पाल=पालना ) क० पु० माली,  
बागवान ।

सं० उद्योग ( उद्=ऊपर, युत्=मि-  
लना ) पु० उपाय, उद्यम, यत्न,  
परिश्रम, वेश ।



पैरी की बराबर देखने वाला, २  
मस्तिन, स्त्री० शोष, मलिनता,  
दिना, क्रिक, दुःख, संताप ।

सं० उदासीन ( उद्=ऊपर, भाग=  
बैठना ) पु० संन्यासी, बैरागी,  
योगी, अतिथि, वनवासी, वामी,  
निमने संसार छोड़ दिया और  
निसके भिन्न और पैरी बराबर हो,  
त्यागी बानप्रस्थ ।

सं० उदाहरण ( उद्=ऊपर, भा=  
से, ह=लेना ) पु० दृष्टान्त, मिसाल ।

सं० उदित ( उद्=ऊपर, ह=जाना )  
र्म्यं पु० बराहृद्भा, निरुत्ताद्भा,  
प्रकाशित, प्रकट, प्रकाश ।

सं० उदीची=उत्तरदिशा ।

सं० उदीरण ( उद्, ईर=प्रेरणा क० )  
भा० पु० कथन, कहना ।

सं० उदीरित-र्म्यं पु० कथित,  
कहा गया ।

सं० उद्गार ( उद्=ऊपर, गू=निगत-  
ना ) पु० वमन, डकार, मुस, दुःख,  
विस्मय ।

प्रा० उधारना ( सं० उद्धारना, उद्=  
ऊपर, धर=खोलना ) कि० सं०  
खोलना, उधारना ।

सं० उद्दाल ( उद्=ऊपर, दल्=दो  
दुद्धे करना ) पु० एक श्रष्टिका नाम  
जो दूध मीनेमें पकवार खाताया ।

सं० उद्दिष्ट-र्म्यं पु० लक्षित, दि-  
खाया गया ।

सं० उद्देश ( उद्=ऊपर, दिग्=  
देना ) पु० चाह, २ अनुसंधान,  
गोत्र, पता, प्रयोजन, मतलब,  
निसके विषयमें कुछ कहा जाय ।

सं० उद्धारण ( उद्=ऊपर, ह=लेना )  
भा० पु० उद्धार करना मुक्ति देना ।

सं० उद्धार ( उद्=ऊपर, ह=लेना )  
पु० बचाव, छुटकारा, मुक्ति, नि-  
स्तारा ।

सं० उद्भूत-र्म्यं पु० ऊंचाकियागया,  
उठाया गया ।

सं० उद्भव ( उद्=प्रकट, भू=होना  
पु० पैदा होना, जन्म, उत्पत्ति ।

सं० उद्यत ( उद्=ऊपर, यम्=रोक-  
ना ) पु० तैयार, लगाहुआ, प्रवृत्त,  
पु० अध्याप ।

सं० उद्यम ( उद्=ऊपर, यम्=रोक-  
ना, पर उद् उपसर्ग के साथ आने  
से यत्न करना होता है ) भा० पु०  
यत्न, उपाय, परिश्रम, मिहनत,  
कोशिश, उद्योग, प्रयास ।

सं० उद्यान ( उद्=ऊपर, या=जाना )  
भा० पु० बाग, बगीचा, उपवन, २  
मञ्जव, प्रयोजन ।

सं० उद्यानपाल ( उद्यान=कुम्बवा-  
दी, पाल=पालना ) क० पु० माली,  
बागवान ।

सं० उद्योग ( उद्=ऊपर, युत्=मि-  
लना ) पु० उपाय, उद्यम, यत्न,  
परिश्रम, प्रयास ।





सं० उपगम ( उप=समीप, गम्=जा-  
ना ) पु० यात्रा, माप्ति, स्वीकार,  
पासजाना, उदय ।

सं० उपगुरु=छोटा पादक, छोटा  
मास्टर, मानीटर ।

सं० उपचार ( उप=पास, चर=चल-  
ना ) पु० सेवा, मात्र का जपना,  
२. वैद्य का काम, इलाज, चिकित्सा,  
उपाय, यत्र, ३. घूस, रिश्वत ।

प्रा० उपज ( सं० उप=पास, जन=  
पैदा होना ) स्त्री० बिन सोचने के  
जो कुछ बात उसी दम कही जाय  
वा, कुछ गाया जाय, गान, रान,  
धन्तरा ।

प्रा० उपजना ( सं० उप=पास, जन=  
पैदा होना वा उत्पन्न होना ) क्रि०  
सं० उगना, बढ़ना, पैदा होना, भं-  
कुर निकलना ।

प्रा० उपजाऊ ( उपजना ) मु० उर्वर ।

सं० उपजाप ( उप=पास, जप=जप-  
ना ) भा० पु० मक, फरेव, कपट ।

सं० उपजीवी ( उप + जीव=जीना )  
क० पु० आश्रयी, आसरागीर,  
अवलम्बी ।

प्रा० उपड़ना ( सं० उत्पादन, उद्=  
ऊपर, पड़=जाना ) क्रि० अं०  
उत्पड़ना ।

सं० उपदेश ( उप + दंश=काटना )  
पु० गर्मीका रोग, सांपका काटना ।

सं० उपदा ( उप, दा=देना ) स्त्री० धेड़ ।

सं० उपदेश ( उप=पास, दिश=देना  
भा० पु० शिक्षा, सीख, सिखावन,  
नसीहत, मम्पति, सलाह, २. मंत्रदेना ।

सं० उपदेशक ( उपदेश ) क० पु०  
उपदेश देनेवाला  
शिक्षक, गुरु,  
उपदेश आचार्य ।

सं० उपद्रव ( उप=पास, द्रु=जाना )  
पु० बहैदा, उत्पात, उपाध, विगाह,  
अन्धाय, अन्धेर ।

सं० उपद्वीप ( उप=छोटा, द्वीप=धर-  
ती का टुकड़ा ) पु० टापू, छोटा द्वीप ।

सं० उपधान ( उप=पास, धा=ऊपर,  
धा=रखना ) पु० तकिया ।

सं० उपनयन-पु० यज्ञोपवीत ( उप-  
नीत, जनेऊ ) ।

सं० उपनिषद् ( उप=पास, न=अच्छी  
तरहसे, सद्=जाना ) पु० वेद का  
उच्च भाग, वेद का अंग, वेदान्त  
शास्त्र ।

सं० उपनेत्र ( उप=पास, नेत्र=आँख )  
पु० चरमा, आँखों का सहायक काँच ।

सं० उपन्यास ( उप=ऊपर, न्यास=  
रखना ) भा० पु० त्याग, हाथ, कथन  
करना, रचना, स्थापन ।

सं० उपपत्ति ( उप=पास, पत्ति=जाना )  
स्त्री० मुक्ति, योग्यता, २. सबूत,  
शोबन, समाधान, प्रमाण ।

सं० उपपातक ( उप=छोटा, पातक=  
पाप ) पु० छोटा पाप, पाप भैष



पञ्चतरी आदि से फैली है। इसमें रोगों की पहचान और औषधी आदि का वर्णन है। दूसरी गन्धर्व विद्या को भरत ने निकाली और फैलाई। और तीसरी धनुष विद्या को विरषामित्र ने राजपूतों को शस्त्रों के काममें लाने के लिये निकाली। और चौथी स्थापत्य विद्या को दृष्ट कर्षा के काममें लाने के लिये विश्वकर्मा ने निकाली।

सं० उपवेष्टन ( उप=ऊपर, विग=लपेटना ) भा० पु० उपेष्टना, बसना, जाया।

सं० उपशम ( उप+शम्=रोकना, बा दवाना ) भा० पु० शान्ति, समता, समाई, शिष्टिपनिग्रह।

सं० उपसर्ग ( उप=पास, मृज=पैदा होना ) पु० अन्वय जो क्रिया के साथ लगाये जाते हैं, जैसे प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, आदि, २ उपद्रव, पोदा, मेत, प्रह, उत्पात, अयंगल, उत्पत्ति।

सं० उपस्थान ( उप=पास, स्था=ठहरना ) भा० पु० उपस्थित, मौजूदगी, सेवा, नजदीकी, हाजिरी, स्तुति, पूजा।

सं० उपस्थित ( उप=पास, स्था=ठहरना ) गु० तैयार, हाजिरी, सामने, पास ठहरा हुआ, पास आया हुआ।

सं० उपस्थितिपत्र पु० नकशा हाजिरी सं० उपहार ( उप=पास, ह=देना ) पु० भेंट, पूजा।

सं० उपहास ( उप=दोष कहना, हास=हँसी, हस=हँसना ) भा० पु० उद्धा, हँसी, निन्दा के साथ हँसी करना, बोली बोली बोलना, परिहास, उद्धा।

सं० उपहासक ( उप+हास+अक ) क० पु० हँसनेवाला, मसखरा।

सं० उपहास्य ( उप+हास+य ) र्म्य० पु० हँसनेयोग्य, निन्दायोग्य, निन्दनीय।

सं० उपाख्यान ( उग, आ, ख्या=मकट करना ) पु० पुरानी कहानी इतिहास, वान, कहानी, कथा।

प्रा० उपाङ्गना ( सं० उत्प्राङ्ग उद=ऊपर, पट=जाना ) कि० सं० उत्प्राङ्गना।

प्रा० उपाध ( सं० उप, आ, पा=रसना ) स्त्री० बसेड़ा, पिगाड़, उपद्रव, अन्वय।

सं० उपाधान ( उप+आधान ) धि० सक्रिया, चालीन।

सं० उपाधि ( उप=पास, आ=से, पा=रसना ) स्त्री० पर्यकी चिन्ता, विशेषण, नाम, पदवी, खतल, कपट।

सं० उपाधिकारक ( उपाधि+कारक, कृ=करना ) क० पु० भगवान्, मुकमिद, कमादी।

सं० उपाध्याय ( उप=पास, आ=से, अधि+इ=पढ़ना ) पु० अध्यापक, पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक, मुद्दरिप, गुरु ।  
 सं० उपानह ( उप, आ, नह=चाँचना ) पु० जूय, पगरबी, पनही, पापीश ।  
 प्रा० उपाना ( सं० उपपन्न ) क्रि० सं० पैदा करना, इकट्ठा करना, कमाना ।  
 सं० उपाय ( उप=गम, अय=जाना ) पु० उपाय, उपाय, इण=जाना ) पु० यज्ञ, नदबीर, उपाय, उपयोग, विहनन, साधन, २. इलाज ।  
 सं० उपायी-१० साधक, पत्री, नदबीरी  
 सं० उपायन पु० भेट, नमस्कार, उपहार, पाम जाना ।  
 सं० उपाज्जन ( उप=गम, अज्ज=इकट्ठा करना ) पा० पु० इकट्ठा करना, संग्रह, संवय, कपाई ।  
 सं० उपाज्जित-स्म० संवित, जोड़ा हुआ ।  
 सं० उपाज्जनीय ( उपाज्जन+अनीय स्म० पु० संग्रह योग्य, जोड़ने लायक ।  
 सं० उपालम्भ ( उप+आ, लभ्=होकर बचन ८० ) पा० पु० विहाय, गिता, उरहना, बाना, बाने ।  
 सं० उपालम्भन-पा० पु० उपाय, मनान, किहड़ी ।  
 सं० उपासक ( उप=गम, आस=

बैठना ) क० पु० उपासना करनेवाला, पूजनेवाला, सेवक, दास, भक्त ।  
 सं० उपासना ( उप=पास, आस=बैठना ) स्तो० सेवा, पूजा, टंडल, भक्ति, देवता की पूजा, आराधना ।  
 प्रा० उपास ( सं० उपास ) पु० यज्ञ, लंघन, अनाहार, उपास, भूगारहना ।  
 सं० उपासनीय ( उप+आस+अनीय ) स्म० सेवायोग्य, आराध्य, सेव्य सिद्धमन्त्र के लायक ।  
 सं० उपास्य उप गम, आस=बैठना । स्म० उपासना करने योग्य, पूजन योग्य, आराधना करने योग्य ।  
 सं० उपेक्षा ( उप=पास+ईत्=देखना, उपके लगने से छोड़ना अर्थ होगा ) पा० स्त्री त्याग, हील, गहनन ।  
 सं० उपेक्षित ( उप+ईत्ति ) स्म० पु० छोड़ा गया, रहन ।  
 सं० उपेत उप+इ+त, इ=जाना ) ८० ग्राहित, युक्त ।  
 सं० उपेन्द्र ( उप=बोटा, इन्द्र=देवताओं का राजा ) पु० बावन, इन्द्र का बोटा भाई, किन्तु अब बावन अकवार निधन हुए हैं बोटे भाई हुए हैं ।  
 सं० उपेक्षा ( सं०

कण=माना ) क्रि० अ० बहुत  
आप उगने से रूप अथवा और  
किसी चीज का रांही अथवा बट-  
लोही से बाहर निकल आना ।

सं० उवकना-क्रि० अ० बपन होना,  
कै होना, उबड़ी होना, ररकरना ।

प्रा० उवटन } ( सं० उवटनः उव-  
उवटना } टन=होना ) पु०

शरीर का पैल उतारने के लिये  
आधा सरसो बसन आदि की बनी  
हुई चीज ।

प्रा० उवलना ( सं० उव=ऊपर, वल=  
जाना ) क्रि० अ० उवलना, खो-  
लना, झोटना, पीलना, मलव-  
लाना, घसीलना ।

प्रा० उवसना-क्रि० अ० सड़ना,  
गलना, पचना, बिगड़ना ।

प्रा० उवारना ( सं० उवारण ) क्रि०  
सं० बचाना, छुड़ाना, रखना ।

सं० उभय } पु० दो, दोनों, आप-  
मा० उभौ } सव ।

प्रा० उभरना ( सं० उव=ऊपर, उ=  
भ-ना ) क्रि० अ० उभड़ना, बड़-  
ना, बहुत भरना, निकलना, निह-  
लमाना, उठना, उठाना ।

उभारना-क्रि० सं० फुलाना,  
रकमाना, ररदाकरना, भड़काना ।

उभंग-स्त्री० बहुत खुशी, आ-

नंद, पानना, २ चाह, इच्छा, भा-  
छाप, ३ धुन, तरंग, लहर ।

प्रा० उमंडना } क्रि० अ० बलकना  
उमडना } बहुत धाने से फूट  
निकलना, झनकना, बहना, जल  
पल होना ।

प्रा० उमंड उमंड कर रोना—  
बोल= फूट फूट के रोना ।

सं० उमा ( उ=शिव, मा=मानना, वा

“ओ शिवस्य मा=लक्ष्मीः, शिव

की लक्ष्मी, वा उ=दे, मा=मत

“दे वत्स मा कुरु” जैसे कुमार-

संभवहाव्य में लिखा है “उमेति

माघातपयो निपिडा पश्चादुमाख्यां

मुमुग्शी जगाम” अर्थात् जब पार्वती

तप करने को जाती थी तब उनकी

माने कहा कि हे बेटी तप मनकर )

स्त्री० पार्वती, दुर्गा, शिवा, शिवराणी,  
गिरिजा, भवानी, रुद्राणी ।

सं० उमापति ( उमा=पार्वती, पति  
=पति ) पु० महादेव, शिव ।

सं० उमासुत ( उमा=पार्वती, सुत  
=पुत्र ) पु० कार्तिकेय, देवताओं  
का सेनापति ।

सं० उमेश उमा=पार्वती, ईश=पति)  
पु० महादेव, शिव ।

प्रा० उर ( सं० उरस, अ=जाना )

सं० उपाध्याय ( उप+आध, आ-ने,  
अधि+इ-पठना ) पु० आधा-  
रक, पढ़ानेवाला, धारक, शिक्षक,  
दुरिधि, पु० ।

सं० उपानद ( उप, आ, नद-वाँजना )  
पु० २१, नदानी, नदी, नाली ।

प्रा० उपाना ( सं० उपान ) क्रि० प्र०  
देना करना, इच्छा करना, कमाना ।

सं० उपाय ( उप+आय, आय-माना  
वा, उप, आ, १०० माना ) पु० पत्र,  
मन्त्री, उपप, उपयोग, विद्वत्, साध-  
न, २ इनाम ।

सं० उपार्थी-इ० साधक, पत्री, नदपोषी

सं० उपायन पु० मेर, नगर, गढ़, आ-  
वास माना ।

सं० उपाज्जन ( उप+आस, आस-  
इच्छाकरना ) भा० पु० इच्छाकरना,  
संग्रह, संवध, कपाई ।

सं० उपाज्जित-अर्थ० संपित, मो-  
बा हुआ ।

सं० उपाज्जनीय ( उपाज्जन+अ-  
नीय ; अर्थ० पु० संग्रह योग्य, मोड़ने  
लायक ।

सं० उपालम्भ ( उप+आ, लभ्=  
कठोर बचन क० ) भा० पु० शिवा-  
यत, गिला, उरहना, बानी, बातें ।

सं० उपालम्भन-भा० पु० छानन,  
मत्तापन, झिड़की ।

सं० उपासक ( उप+आस, आम्=

पूजना ) क० पु० उपासना करनेवाला,  
पूजनेवाला, मेवक, दाग, भक्त ।

सं० उपासना ( उप+आस, आम्=  
पूजना ) मो० मेरा, पूजा, उदत्त,  
भक्ति, नेत्र की पूजा, आराधना ।

प्रा० उपास ( सं० उपास ) पु०  
पत्र, लेपन, आनाहार, उपास,  
धृष्टारहना ।

सं० उपासनीय ( उप+आस+  
नीय ) अर्थ० सेवायोग्य, आराध्य,  
मेधा, शिक्षक के लायक ।

सं० उपास्य उप पास, आम्-पू-  
जना अर्थ० उपासना करने योग्य,  
पूजन योग्य, आराधना करने योग्य ।

सं० उपेक्षा ( उप+आस+ईश=  
देनना, उपके लगने से छोड़ना  
अर्थ होगया ) भा० श्री रवान,  
हीन, सरल ।

सं० उपेक्षित ( उप+ईक्षित ) अर्थ०  
पु० छोड़ा गया, रपक ।

सं० उपेत उप+इ+त, इ=माना )  
क० गामित, युक्त ।

सं० उपेन्द्र ( उप=छोटा, इन्द्र=देवता-  
ओं का राजा ) पु० वामन, इन्द्र  
का छोटा भाई, विष्णु जब वामन  
अवतार लिया तब इन्द्रके छोटे भाई  
हुये थे ।

प्रा० उफनना ( सं० उह=ऊपर,

फण=जाना ) क्रि० अ० बहुत  
आंच जगने से दूध अथवा और  
किसी चीज का हाँडी अथवा बट-  
लोही से बाहर निकल आना ।

सं० उवकना-क्रि० अ० घमन होना,  
कै होना, उबड़ी होना, रदकरना ।

प्रा० उवटन } ( सं० उवटनः उव-  
उवटना } टन=होना ) पु०

शरीर को मैल उतारने के लिये  
आटा सरसो घेसन आदि की बनी  
हुई चीज ।

प्रा० उवलना ( सं० उव=ऊपर, पत=  
जाना ) क्रि० अ० उवलना, खो-  
लना, ओटना, घीलना, मल-  
नाना, उमीरना ।

प्रा० उवसना-क्रि० अ० सड़ना,  
गनना, पचना, बिगड़ना ।

प्रा० उवारना ( सं० उटारण ) क्रि०  
सं० बचाना, छुड़ाना, रखना ।

सं० उभय } पु० दो, दोनों, आप-  
प्रा० उभौ } स में ।

प्रा० उभरना ( सं० उव=ऊपर, भृ=  
भ-ना ) क्रि० अ० उभड़ना, बड़-  
ना, बहुत भरना, निचलना, निह-  
लमाना, उटना, उठमाना ।

प्रा० उभारना-क्रि० सं० छलाना,  
उठमाना, गढ़ाऊना, भड़काना ।

प्रा० उमंग-स्त्री० बहुत खुशी, आ-

नंद, मगनता, उ चाह, इच्छा, अभि-  
लाष, उ पुन, तरंग, लहर ।

प्रा० उमंडना } क्रि० अ० झलकना,  
उमडना } बहुत भरने से फूट  
निकलना, झलकना, बहना, जल  
धल होना ।

प्रा० उमंड उमंड कर रोना-  
बोल० फूट फूट के रोना ।

सं० उमा ( उ=शिव, मा=मानना, वा  
“ओ शिवस्य मा=लक्ष्मीः, शिव  
की लक्ष्मी, वा उ=दे, मा=मत  
“हे बत्स मा कुरु, जैते कुमार-  
संभवज्ञान्य मे लिखा है “उमेति  
मां प्रातपमो निपिदा एदवाद्दुपाख्यां  
मुमुग्धा जगाप, अर्पितुं जव पार्वती  
तव करने को जाती थी तब उनकी  
माने रहा कि हे बेटी तव मतकर )  
स्त्री० पार्वती, दुर्गा, शिवा, शिवशर्मा,  
गिरिजा, भवानी, रुद्राणी ।

सं० उमापति ( उमा=पार्वती, पति  
=पति ) पु० मरादेश, शिव ।

सं० उमासुत ( उमा=पार्वती, सुत  
=पुत्र ) पु० दानिकेश, देवताओं  
का सेनापति ।

सं० उमेश उमा=पार्वती, शि=शक्ति)  
पु० मरादेश, शिव ।

प्रा० उर ( सं० उरस, अ=जाना )  
पु० दात्री, हिरदा, हृदय, वक्षस्पर्श ।



सं० उरग (उरस=झाती, गम=चल-  
ना जो झाती से चले ) पु० सांप,  
नाग, सर्प, भुजंग ।

सं० उरगाद ( उरग=सांप, अद्=  
गाना ) पु० गरुड़, विष्णुकावाहन ।

सं० उरगारि ( उरग=सांप, अरि=  
वैरी ) पु० गरुड़, विष्णुकावाहन ।

सं० उरु ( ऊर्गु=ढकना ) स्त्री० जांच,  
अंघा, रान, गु० चौड़ा, विशाल,  
बड़ा, बहुत, अधिक ।

प्रा० उरिण ( सं० अनृण, अन  
=नहीं, ऋण=कर्ज ) गु० बिन कर्ज,  
ऋण से छूटना, उतरना उद्धार ।

सं० उर्वरा ( उरु=बड़ा, चौड़ा, अद्=  
जाना ) स्त्री० उपजाऊ धरती ।

सं० उर्वशी उरु=बहुत, अशु=बश  
करना, जो अपने रूप से बहुतों  
को बश कर लेती है, स्त्री० एक  
अप्सरा का नाम, स्वर्गकी बेरथा ।

सं० उर्वी ( उरु=बड़ा, चौड़ा ) स्त्री०  
धरती, पृथ्वी, जमीन ।

सं० उर्विजा ( उर्वी=धरती, जन्  
=पैदा होना ) स्त्री० सीता; जान  
की, कहते हैं कि जब राजा जनक  
यज्ञ के लिये धरती जोतते थे तब  
जमीनमें से सीता जी निकली थीं ।

प्रा० उलभना-क्रि० अ० फैसना  
लिपटना, २ भगदना ।

प्रा० उलटना-क्रि० स० फे  
पलटना, दोहराना, मोड़ना,  
ऊपर करना, नीचे ऊपर क  
औंधाना ।

प्रा० उलट पुलट-बो० उल  
पल, ऊपर नीचे, तले ऊपर,  
पट, गढ़बढ़, इधर का उधर, ३  
का इधर ।

प्रा० उलथा-पु० तर्जुमा, अनुबा  
प्रा० उलहना (मं० उपालम्भ, उप  
लम्भ=पाना ) पु० शिकायत, पुर  
निद्रा, दोष ।

प्रा० उलहनादेना-बो० शिक्षा  
करना, पुकारना ।

प्रा० उलीचना-क्रि० स० उकेलन  
जल सोंचना, पानी लेना ।

सं० उलूक ( वल्=घेरना ) पु० उल  
धुधुआ ।

सं० उल्का ( उप=जलाना ) स्त्री  
लूका आग वा तोरा जो आकाश  
गिरता है ।

सं० उल्लङ्घन ( उद्=ऊपर, लयि  
पार होना ) पु० उलटा करना, री  
तोड़ना, २ लांघना ।

सं० उल्लास ( उद्=ऊपर, लम्भ=लेक  
ना, खुशी करना ) पु० हर्ष, आ  
नन्द, हुलास, खुशी, प्रसन्नता, २ अ  
ध्याय, परिच्छेद ।

सं० उल्लङ्घन ( उद्=ऊपर, लम्भ=अ  
न, अग्र=जाना ) भा० पु० पार होना,

- प्रा० उल्क (सं० उल्क) पु० पुष्पभा,  
पेचा, उल्क, एक जानवर का नाम,  
२ गवार, मूर्त, उल्क।
- सं० उल्लेख (उल्, छिद्=निसाना)  
भा० पु० वर्गिन, बरमान, २ एक  
फलंकार का नाम।
- सं० उलाना (उल् + उल्, उल्=रह-  
ना) पु० गुकाचार्य, दैत्यगुरु।
- सं० उपा (उप=चमकना) पु० मोर,  
तड़का, पोट, मभाव, स्त्री० बाणागुरु  
की बेटी और अनिरुद्ध की स्त्री।
- सं० उष्ट्र (उष्ट्र=पारना) पु० ऊँट।
- सं० उष्ण (उष्=जलाना) पु० गरम।
- उष्णीष=पगड़ी, सिरबन्द।
- उष्णता (उष्ण=गरम) स्त्री०  
गरमी।
- उष्मा (उष्=जलाना, वा गरम  
गोना) स्त्री० गरमी, धूर, नाप।
- उसरना (सं० अपसरण, भाप  
गिरे, सू=जाना) कि० अ०  
ना, पोटदेना, इटना।
- सारा-पु० ओमारा, दिहुरी,  
दा।
- सं० उरु (सं० उरु, उरु=ऊँचा,  
मांस) पु० सांस, ऊँचासांस।
- सा (सं० उन्नीषिक, उन्=  
मिर) पु० मिरासना।
- सं० ऊ (अर्=बचाना) पु० महादेव,  
महा, मरनवाक्य.) बन्धन, मोक्ष  
मधान, २ चाँद, बि० बो० दे।
- प्रा० ऊँघना-कि० अ० निद्रानुहोना,  
भपकी केना, भांस लगाना।
- प्रा० ऊँच (सं० उच) पु० लेंचा,  
ऊँचा ऊपर।
- प्रा० ऊँचा बोलबोलना-बोल=  
घपंद से बोलना, अभिमान से  
बोलना।
- प्रा० ऊँचासुनना-बोल=रूपसुनना।
- प्रा० ऊँचाकानी-बो० बहरापन।
- प्रा० ऊँचेबोलका बोलनीचा—  
बोल=जो कोई किसी को घपंदका  
बोल बोलता है वह अन्न में भाप  
रहता और नीचा होता है।
- प्रा० ऊँट (सं० उष्ट्र, उष्ट्र=पारना)  
पु० एक जानवर का नाम।
- प्रा० ऊँटकटारा—पु० एक तरह के  
कैटाले पेड़ का नाम जिसको ऊँट  
चारे हैं, भरमाँद, ऊँटकटाई।
- प्रा० ऊस्त्र (सं० इष्टु) स्त्री० ईस्त्र,  
केवारी, गधा।
- प्रा० ऊद् (सं० उद्, उद्=वि-  
उदविलाव) गोना) पु० एक जानी  
के जानवर का नाम।
- प्रा० ऊदा (सं० ऊदना, ऊद, ई=  
ऊद करना) पु० मूत्र, धुंरला।



सं० श्रुजु (श्रुज्=जाना, इकट्ठा कर-  
ना) (वा, अर्ज=इकट्ठा करना) गु०

सीधा, सरल, सूधा, सोभा ।

सं० श्रुण (श्रु=जाना) पु० वधार,  
कर्ज देना, २ बीजगणित में घटाव  
का विद्व, मनकी ।

सं० श्रुणपत्र=तमस्सुक ।

सं० श्रुणमुक्तपत्र=कारिगखती ।

प्रा० श्रुणिया (श्रुण=कर्ज) गु०

सं० श्रुणी कर्जदार, देनदार,  
निसर्गेशिरकर्जहो,

प्रा० श्रुनियां २५६सानपद, घन-  
वाद्दकरनेवाला, शु-  
कारगुजार ।

सं० श्रुत (श्रुत=जाना, दान=देना,) पु०  
सत्य, मोक्ष, जल, पुजन, इतर, दीप्त,

और शीलोल्ल, कटेलेतमेवालीबीनना ।

सं० श्रुतु (श्रु=जाना) स्त्री० मौसिम,  
वसंतआदि षः श्रुतु ? वसन्त (चित

और बैशाख) २ ग्रीष्म (वषष्ठ और

आषाढ़) ३ वर्षा (सावन और

भादों) ४ शरद (कुंवार और का-

तिक) ५ हिम (अगहन और पूस)

६ शिशिर (माघ और फागुन) एक

श्रुतु दो महीने रहती है २ स्त्रीधर्म,  
जशके कपड़ोंसे होनेका समय ।

श्रुते- अव्य० क्रि० वि० विना,  
इके, रहित, बिदूत ।

श्रुतमती (श्रुतु=स्त्रीधर्म, मती=

नी) स्त्री० कपड़ोंसे, रजस्वला,  
ने ।

सं० श्रुतुराज (श्रुतु=मौसिम, राजन्

रामा) पु० वसंतश्रुतु, मौसिमवधार

सं० श्रुतुस्नान (श्रुतु=स्त्रीधर्म, स्नान=

म्हाना) पु० स्त्रियोंका कपड़ोंमें होने

के पीछे चौथे दिनोंका न्हाना वा

स्नान ।

सं० श्रुतिज्ञ (श्रुतु=समय, यज्ञ=यज्ञ

करना) क० पु० यज्ञ करनेवाला,  
पुरोहित, यामक ।

सं० श्रुद्धि (श्रुध=वदना) स्त्री० संपदा,  
संपत्ति, धन, दौलत, युद्धती, २ एक

औपधीका नाम, ३ शार्वती, गिरिजा,  
यद्राणी ।

सं० श्रुपि (श्रुप=जाना) पु० मुनि,  
तपस्वी, यती, श्रुपि सात प्रकार के

हैं ? श्रुतपि जिसने पवित्र कथामुनी

हो, २ काण्डपि जो वेदका कोई

मुख्यकांड सिललाता है, ३ परमपि

जिसमें मुनि भेलआदि हैं, ४ मह-

पि जिस में व्यास आदि हैं, ५

राजपि जैसे विरवामित्र ६ ब्रह्मपि

जिसमें वसिष्ठ हैं, ७ देवपि जिस में

नारद आदि हैं ।

सं० श्रुपीश (श्रुपिमुनि, ईश=स्वामी,

राजा, पु० श्रुपियोंमें मुख्य वा प्रधान)

सं० श्रुप्यमुक्त (श्रुप्य=हरिण, श्रुप्य=

जाना, मुक्त=गुंठा) पु० एक पदाङ्क

नाम जो किट्टियापुरीके पास है ।

प्रा० ऊधो (सं० उद्धव) पु० श्रीकृष्ण  
का मित्र और चचा ।

प्रा० ऊन (सं० ऊर्ण, ऊर्णु=ढकना)  
श्री० भेड़ी चकरी के पीठ पर के  
वाल, पशम ।

सं० ऊन } (ऊन=कम होना) गु०  
प्रा० ऊना } कम, कमती, मोड़ा,  
गून, रीन ।

प्रा० ऊपर (सं० उपरि) क्रि० वि०  
ऊंचा, ऊर्ध्व, २ अधिक ।

प्रा० ऊपरसे=सोच० ऊपरके ऊपर ।

प्रा० ऊपरी (ऊपर) गु० विदेशी,  
पारदेशी, २ ऊपर का ।

प्रा० ऊघट (सं० अवघाट, अव=  
बुरा, वाट=रास्ता) पु० औघट,  
बिकट रास्ता, बुरा रास्ता ।

सं० ऊर्ध्व-पु० ऊंचा, जांच ।

सं० ऊर्ध्व (उर्ध्व=ऊपर, हा=छोड़ना)  
गु० ऊपर, ऊंचा, लंबा ।

प्रा० ऊर्ध्वपुंड्र (सं० ऊर्ध्वपुण्ड्र, ऊर्ध्व  
=लंबा-पुण्ड्र=निलक, पुण्ड्रि=पतना)  
पु० लंबा निनक जो बैष्णव लोग  
करते हैं, बैष्णवीनिलक ।

सं० ऊर्ध्वबाहु (ऊर्ध्व=ऊंचा, बाहु  
=धुजा) गु० ऊंचा हाथरसनेवा-  
ला, तपसी, तपस्वी जो अपना  
हाथ ऊंचा रखता है ।

प्रा० ऊर्ध्वसांस (सं० ऊर्ध्वसांस,

ऊर्ध्व=ऊपर, रसांस=सांस) पु० उ-  
सांस, ऊपर का दम, सांस, दम ।

सं० ऊर्मि (अध्व=नाना) श्री० ल-  
हर, तरंग ।

सं० ऊपर (ऊर्ध्व=बीमार होना) गु०  
रारी धरती, बनजर धरती, ऐसी  
धरती जिसमें बोने से कुछ नहीं  
उपजता ।

सं० ऊपा (ऊर्ध्व=चमकना) श्री० बा-  
गासुर की बेटी और अनिरुद्ध की  
श्री० पु० भोर, तड़का, पोह, प्रभात ।

सं० ऊपाकाल (ऊपा=भोर, काल=  
समय) पु० प्रातःकाल, विहान,  
भोर, प्रभात ।

सं० ऊहा (ऊह=तर्क करना) श्री०  
तर्क, चितर्क, दलील ।

अध्व

सं० अध्व-श्री० अदिति, देवताओं की  
मा पु० सूर्य, गणेश, विष्णु ।

सं० अध्वक् (अध्व=सराहना) पु० क-  
वेद, पहला वेद ।

सं० अध्वक्ष (अध्व=जाना) पु० रीक्ष  
मान्, २ नक्षत्र । [ ला वेद ।

सं० अध्ववेद (कक+वेद) पु० पह-  
ला वेद ।

सं० अध्वचा (अध्व=सराहना) श्री०  
वेद का मंत्र, वेद का कांट, कागिहका ।

प्रा० अध्वेश (सं० अध्वेश, अध्व=  
रीक्ष, ईश=राजा) पु० नामकन  
रीशों का राजा ।



श्रुति, मा, २०

सं० श्रु-स्त्री० देवताओं की मा, २  
दानों की मा, पु० शिव, भैरव,  
राक्षस, वि० वो० भय और निंदा  
को जतलानेवाला, अव्यय ।

—०—

ए

सं० ए (इण=जाना) पु० विष्णु,  
वि० वो० है, संयोधन का सूचक ।  
सं० एक (इण=जाना) गु० गिन्ती  
का पहला अंक, २ मुख्य, प्रथम,  
पहला, प्रधान, केवल सिर्फ ।

प्रा० एकआध-बोल० कुछ, थोड़ा,  
एक या आधा ।

प्रा० एककी दशसुनाना-बोल०  
यह बोल चाल वहां बोला जाता  
है जब कि कोई आदमी किसी को  
एक घुरी बात कहे अथवा एक  
गालीदे तो उसके बदले में बहुत  
सी घुरी बातें कहे और बहुतेरी गा-  
लियाँ दे ।

सं० एकचित्त-(एक, चित्त=मन)  
गु० एक मन, जिसका ध्यान किसी  
एकही चीज पर हो ।

सं० एकत्र (एक+त्र, जगह अर्थमें  
प्रत्यय) क्रि० वि० इकट्ठा, एक-  
ठौरा, एक जगह । [हुआ ।

सं० एकत्रित-र्म० पु० इकट्ठा किया  
सं० एकदा (एक+दा) समय अर्थ

में प्रत्यय) क्रि० वि० एक बार,  
एक समय ।

सं० एकधा (एक+धा, प्रकार अर्थ  
में प्रत्यय) क्रि० वि० एकभांति,  
एकप्रकार ।

प्रा० एकनएक-बोल० एकयादूसरा

प्रा० एकरसी-बोल० बहुत थोड़ा ।

सं० एकरस-पु० जो एकसा रहे,  
जन्ममरणरहित ।

सं० एकरूप (एकरूप=ढोल) पु०  
बराबर, एकसा, सरीखा, सदृश ।

प्रा० एकला (सं० एकल, एक,  
एकला) ला=लेना) गु० अ-  
केला, केवल, निराला, सिर्फ,  
तनहा । [एकही (बेटा) ।

प्रा० एकलौता (सं० एकल) गु०

सं० एकसर (एक, सृ=जाना) क्रि०  
वि० एक साथ ।

प्रा० एकसे दिन न रहना-बोल०  
सदा कोई धनवान् रहता है न गरीब,  
दशा का फेरफार होना ।

प्रा० एका (सं० एवय=एकपन)  
पु० मेल, मिलाप किसी काम के  
करने के लिये आपस में एक स-  
लाह करना, साजिश ।

अं० एकाउण्ट=जिंता, हिसाब ।

प्रा० एकाएकी (सं० एक) क्रि०  
वि० अचानक, एकबारमें, दफा अतन ।

सं० एकाक्ष (एक, अक्षि=आँख)

पु० बाना, एक कांस बाना, एक  
 चरन, कोर, २ कागा, कौभा ।  
 सं० एकाग्र ( एक, अग्र=मागे ) गु०  
 एकचित्त, एकमन, एकदित्त, किसी  
 काम में लगा हुआ ।  
 सं० एकादशी ( एक + दश=दश )  
 शी० ग्यारहवीं तिथि, हिंदी महीने  
 के पक्ष में ग्यारहवां दिन ।  
 सं० एकाधिरति ( एक, अधिरति,  
 रात्राधिरात्र ) पु० चक्रवर्तीरात्रा ।  
 सं० एकान्त ( एक, अन्त=इर )  
 गु० एक कोर, एक तरफ, अलग,  
 निराला, छिनारे, हुदा, आरही  
 आन, भिक्ष, निर्जन ।  
 अं० एर्षाकलचरलकान्तेस=करी  
 विपदसमया, मेनोके बारेमें कपेरी ।  
 अं० एर्झिनियर=पंचड, इमारत बना  
 नेवाला ।  
 अं० एन्यूकेनानल=शिला, नमकीन ।  
 प्रा० एड-शी० एही, २ एहीकी मार,  
 दोहे के बजाने के लिये एही की  
 टोहर ।  
 प्रा० एडमारना=कोल० टोहर का-  
 रना, एही की टोहर मारके घोंट  
 की चलाना ।  
 प्रा० एड़ी-शी० पैरका पिदना भाग ।  
 अं० एड्स=अधिर दन्तव, मित्रम-  
 नःका, पना, मित्रान, निराना,  
 रवान करना, अहंकारना ।

सं० एतत्-सर्वना० यह ।  
 सं० एतदर्थ=इसकासे ।  
 प्रा० एतवार ( सं० आदित्यवार )  
 पु० इवार, रविवार, आदित्यवार ।  
 सं० एतादृश-गु० इसीतरहसे, ऐसाही ।  
 सं० एतावत्-गु० इतना, इतनी ।  
 सं० एरण्ड ( ईर=माना ) पु० अ-  
 रंड, रंड, एक पेड़ का नाम ।  
 सं० एला ( इन=माना, भेजना )  
 स्त्री० इलायची, एलाची ।  
 सं० एवम् ( इग=माना ) समुच्च-  
 इमवहार, इमभांति, इमगहर ।

ऐ

सं० ऐ-गु० शिवाबुलाना, संशोधन ।  
 अं० ऐकृ=विदप, कायदा ।  
 सं० ऐक्यना-भा० पु० मेन, इमि-  
 फक, एकमत । [ उद् ।  
 अं० ऐरलोवर्नाक्यूलर=धंगोली-  
 प्रा० ऐवना-हि० म० मैवना, दानना ।  
 प्रा० ऐउ ( ऐटना ) स्त्री० बल, बर,  
 दगड़, अहड़, २ गोट ।  
 प्रा० ऐटना=हि० स० कनका, दानना,  
 मैवना, अहड़ना, हि० अ० अ-  
 कनका, मोहगाना, बहकाना, २ इम-  
 गाना, पुनना, बेट के बजना, अ-  
 कड़के बजना ।  
 सं० ऐगवण } ( इगवत् समुच्च-  
 ऐगवन } इग=माना, इर=



सं० ऋ० ऋ० देवताओं की मा, २  
दानवों की मा, पु० शिव, भैरव,  
राक्षस, वि० वो० भय और निंदा  
की जतलानेवाला, अन्यथ ।

—०—

ए

सं० ए ( इण=जाना ) पु० विष्णु,  
वि० वो० हे, संयोजन का सूचक ।

सं० एक ( इण=जाना ) गु० गिन्ती  
का पहला अंक, २ मुख्य, प्रथम,  
पहला, प्रधान, केवल सिर्फ ।

प्रा० एकआध-बोल० कुछ, थोड़ा,  
एक या आधा ।

प्रा० एककी दशसुनाना-बोल०  
यह बोल चाल वहां बोला जाता  
है जब कि कोई आदमी किसी को  
एक घुरी बात करे अथवा एक  
गाछीदे तो उसके बदले में बहुत  
सी घुरी बातें कहें और बहुतेरी गा-  
लियाँ दें ।

सं० एकचित्त-( एक, चित्त=मन )  
गु० एक मन, जिसका ध्यान किसी  
एकही चीज पर हो ।

सं० एकत्र ( एक+त्र, जगह अर्थमें  
प्रत्यय ) क्रि० वि० इकट्ठा, एक-  
ठोरा, एक जगह । [ हुआ ।

सं० एकत्रित-भ्रं० पु० इकट्ठा किया

सं० एकदा ( एक+दा ) समय अर्थ

में प्रत्यय ) क्रि० वि० एक बार,  
एक समय ।

सं० एकधा ( एक+धा, प्रकार अर्थ  
में प्रत्यय ) क्रि० वि० एकभांति,  
एकप्रकार ।

प्रा० एकनएक-बोल० एकयादूसरा

प्रा० एकरत्ती-बोल० बहुत थोड़ा ।

सं० एकरस-पु० जो एकसा रहे,  
जन्ममरणरहित ।

सं० एकरूप ( एक, रूप=ढाल ) पु०  
बराबर, एकसा, समान, सदा ।

प्रा० एकला ( सं० एकल, एक,  
एकेला ) ला=लेना ) गु० अ-  
केला, केवल, निराला, सिर्फ,  
तनहा । [ एकही ( बेड़ा ) ।

प्रा० एकलौता ( सं० एकल ) गु०

सं० एकसर ( एक, सृ=जाना ) क्रि०  
वि० एक साथ ।

प्रा० एकमे दिन न रहना-बोल०  
सदा कोई धनवान् रहता है न गरीब,  
दशा का फेरफार होना ।

प्रा० एका ( सं० एक्य=एकपन )  
पु० मेल, मिलाप किसी काम के  
करने के लिये आपस में एक स-  
लाह करना, साजिश ।

अं० एकाउराट=लेना, हिसाब ।

प्रा० एकाएकी ( सं० एक ) क्रि०  
वि० अचानक, एकबारमें, दफा अतना

सं० एकाक्ष ( एक, अक्षि=आंख )

पु० काना, एक आंसू, बाला, एक चरम, कोर, २-कागा, कौआ ।

सं० एकाग्र ( एक, अग्र=आगे ) पु० एकचिच, एकमन, एकदिल, किसी काम में लगा हुआ ।

सं० एकादशी ( एक+दशन्=दश ) स्त्री० ग्यारहवीं तिथि, हिंदी महीने के पक्ष में ग्यारहवां दिन ।

सं० एकाधिपति ( एक, अधिगति, राजाधिराज ) पु० चक्रवर्तीराजा ।

सं० एकान्त ( एक, अन्त=इद ) पु० एक ओर, एक तरफ, अलग, निराला, किनारे, जुदा, आपसी आप, भिन्न, निर्जन ।

अं० एण्ट्रीकलचरलकान्फ़ेस=रूपी विषयकसभा, सेतोंके चारोंमें कमेटी ।

अं० एण्डिनियर=यंत्रज्ञ, इमारत बना-नेवाला ।

अं० एज्यूकेशनल=शिक्षा, नअलीमा

प्रा० एड-स्त्री० एड़ी, २. एड़ीकी मार, घोड़े के चढाने के लिये एड़ी की ठोकर ।

प्रा० एडमारना=बोल० ठोकर मारना, एड़ी की ठोकर मारके घोड़े को चलाना ।

प्रा० एड़ी-स्त्री० पैरका पिङ्गला भाग ।

अं० एट्स=अभिवादनपत्र, सिपास-नामा, पता, सिरनामा, लिफाफा, बयान करना, भर्जकरना ।

सं० एतत्=सर्वना० यह ।

सं० एतदर्थ=इसवास्ते ।

प्रा० एतवार ( सं० आदित्यवार ) पु० इतवार, रविवार, आदित्यवार ।

सं० एतादृश-गु० इसीतरहसे, ऐसाही

सं० एतावत्-गु० इतना, इतनी ।

सं० एरण्ड ( ईर=जाना ) पु० अरंड, रेंड, एक पेड़ का नाम ।

सं० एला ( इल्=जाना, भोजना )

स्त्री० इलायची, एलाची ।

सं० एवम् ( इण्=जाना ) समुच्च० इसप्रकार, इसभांति, इसतरह ।

ऐ

सं० ऐ-पु० शिवाबुलाना, संवोधन ।

अं० ऐकट=नियम, क्रायदा ।

सं० ऐक्यता-भा० पु० मेल, इत्ति-फाक, एकमन । [ उर्दू ।

अं० ऐंगलोवर्नाक्यूलर=अंगरेजी-

प्रा० ऐचना-कि० स० खेचना, तानना ।

प्रा० ऐठ ( पेंडना ) स्त्री० बल, लट्, परोड़, अकड़, २. गांठ ।

प्रा० ऐठना-कि० स० कतना, तानना, खेचना, अकड़ना, कि० अ० अकड़ना, परोड़माना, बलमाना, २. तानना, फूलना, पेंड के चलना, अकड़के चलना ।

सं० ऐरावण ( इरावन् समुद्र, ऐरावत ) इरा=पानी, ईर=



प्रा० ओट्टहोना-बोल० छिपना ।  
 प्रा० ओड़न-बोल० डाल, फरी ।  
 प्रा० ओड़ा-पु० टोकरा, सांचा ।  
 प्रा० ओड़ना ( सं० ऊर्ण=ढकना )  
 क्रि० म० पहनना, पहरना, पु० चढ़ा,  
 पड़, लोईआदि ओड़नेकी चीज ।  
 प्रा० ओड़नी ( सं० ऊर्ण=ढकना )  
 स्त्री० मिथों के ओड़ने का कपड़ा,  
 साड़ी ।  
 सं० ओदन ( उद्दु=भिगोना ) पु०  
 भात, रोपे हुए चावल । [ गीता ।  
 प्रा० ओदा ( सं० आर्द्र ) पु० भीगा,  
 प्रा० ओप-बोल० चपक, झलक,  
 दमक, चमकमाइट, सुन्दरता, घोट,  
 चिकनाइट ।  
 प्रा० ओपदेना-बोल साफ करना,  
 चिकना करना, थोपना, घोटना ।  
 ओम् ( अउ=वचना, या अ वि-  
 पु, उ शिव, म मन्त्रा ) पु० तीनों  
 वनाओंका मंत्र अंकार का बीज  
 मणव ।  
 ओर-बोल० तरफ, भलग, पार,  
 रता, उड़क, सीमा ।  
 ओल=बदला, एवज, बदले  
 सी आदमी को देना ।  
 ओलकम्पनी-पु० सभ्र,  
 रोह ।  
 ओला ( सं० ओल=भीगा, अ,  
 भगोना ) पु० पानी के बने  
 जैसे टुकड़े जो कभी कभी

बरसते हैं, चीनीकी बनी हुई मि-  
 ठाई जिसको गर्मियों में ठंडाई के  
 लिये पानी में घोळ कर पीते हैं ।  
 प्रा० ओलाहोजाना-बोल० खूब  
 ठंडा होना ।  
 प्रा० ओसिमुड़ायातों ओलपड़े-  
 बोल० यह मुड़ावरा उस समय बोला  
 जाता है जब कोई आदमी किसी  
 काम को शुरू करे और शुरू  
 करनेही विगड़ भाये ।  
 सं० ओपधि ( ओप=गर्भ, उप  
 ओपधि ) =गर्भ करना, था=  
 रचना ) स्त्री० ओपद, दवा दारु,  
 रोग दूर करने की चीज ।  
 सं० ओपधालय ( धि=पु० दवाखा-  
 ओपधालय ) ना, हॉस्पिटल ।  
 सं० ओष्ठ ( उपे=गर्भ करना ) पु०  
 होठ, थोठ, ओठ, लव ।  
 प्रा० ओस-पु० गीत जो राने की  
 छोटी कूटार पढ़ती है, शबनेम ।  
 प्रा० ओसरा ( सं० अवसर ) पु०  
 चारी, पारी ।  
 प्रा० ओसीसा-पु० तक्तिषा ।  
 प्रा० ओहो-वि० बो० आश्चर्य, आश्चर्य  
 ओ  
 सं० ओ-पु० अनन्त, वि० बो० ओह,  
 आश्चर्य ।  
 प्रा० ओगी-बुध, मंगल, मीन ।

माना अर्थात् जो समुद्र में पैदा हुआ ) पु० इन्द्र का हाथी ।

सं० गंगावती ( गंगा=पानी ) श्री० एक नदी का नाम, रावी नदी का नाम एक नदी जो ब्रह्मा देशमें है ।

सं० गंगुय बुद्धिबद्ध मंदिरा जो कम नगा करती है अंगूर आदि में बनती है ।

सं० गंगुवर्य ( गंगा ) पु० प्रताप, बहादुर, मर्यादा, गणपति, विभव, हर्षवत् आदि व प्रताप ।

प्रा० गेमा ( गे + मा, म-ईश्वर ) पु० ईश्वर का, इसके बराबर ।

प्रा० गेमानमा } वान. ६४ पौ  
गेमाविमा } हा. न मना न  
दुःख, न बहकाव, न श्रद्धा ।

प्रा० गेहे ( जनभाषा ) द्वि० अ० आवेगे ।

—००—

ओ

सं० ओ० पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव, वि० हे० आह, आशा, संशोधन का मूचक, संशय ।

सं० ओ० पु० प्रताप, अहंकार जो ज + उ + ह, संवना है, अ-विष्णु का वाचक, उ-मोक्ष का वाचक, म-ब्रह्मा का वाचक है ।

प्रा० ओट ( सं० ओट ) पु० हट, ओट } अह, मर ।

प्रा० ओड़ा } पु० गहरा, गंभीर,  
ओड़ा } अर्थात् ।

प्रा० ओंथा } पु० उलटा, तले ऊपर ।  
ओंथा }

प्रा० ओसली—( सं० उन्मूल ) श्री० जगनी ।

सं० ओच ( उच=इच्छा करना ) पु० समूह, इच्छा, २ अन्न का वेग ।

प्रा० ओछा=पु० हलका, नीच ।

सं० ओज } पु० वन, दीप्ति, तेज,  
ओजग } प्रकाश, २ विषय, प्रथम, नवीन, पांचवाँ, मानव आदि ।

सं० ओढ़ा ( ओप नीनों देवताओं का घेव, अच=वचना, कार, ऊ=करना ) पु० शीतपत्र, प्रसा, विष्णु, शिव इन तीनों देवताओं का नाम ।

प्रा० ओमल—श्री० ओट, आह, प. रदा, रदी, शिवाच, पदार्थ ।

प्रा० ओमलकरना—श्री० शिवाच, ओट करना, पदार्थ करना, आह करना ।

प्रा० ओमलहोना—श्री० शिवाच ।

प्रा० ओट सं० हट-वेचना ) श्री० बचाव, शीत, आह, पदार्थ, ओमल, रदी, शिवाच, २ पद ।

प्रा० ओटकरना—श्री० शिवाच, ओमल करना, आह करना, पदार्थ करना ।

प्रा० ओटहोना—बोल० छिपना ।

प्रा० ओड़न—स्त्री० ढाल, फरी ।

प्रा० ओड़ा—पु० दोकरा, खांचा ।

प्रा० ओढ़ना ( सं० ऊर्ण=ढकना )

क्रि० म० पहनना, पहरना, पु० चढ़र,

गन्ध, लोईआदि ओढ़नेकी चीज ।

प्रा० ओढ़नी ( सं० ऊर्ण=ढकना )

स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा,

साड़ी ।

सं० ओदन ( उद्=भिगोना ) पु०

भात, रींघे हुए चावल । [ गीला ।

प्रा० ओदा ( सं० आर्द्र ) पु० भीगा,

प्रा० ओप—स्त्री० चमक, झलक,

दमक, चमचमाहट, सुन्दरता, घोट,

चिकनाहट ।

प्रा० ओपदेना—बोल साफ करना,

चिकना करना, ओपना, घोटना ।

सं० ओम् ( अ०=चचना; या अ वि-

ष्णु, इ शिव, म ब्रह्मा ) पु० तीनों

देवताओंका मंत्र अंकार का बीज

मंत्र, मण्डव ।

प्रा० ओर—स्त्री० तरफ, अलग, पार,

रस्ता, इ इद, सीमा ।

प्रा० ओल=बदला, एवज, बदले

में किसी आदमी को देना ।

अं० ओरीयंटलकम्पनी—पूर्वसमुद्र,

पूर्वी गिरोह ।

प्रा० ओला ( सं० ओल=भीगा, अ,

उद्=भिगोना ) पु० पानी के बने

हुए पत्थर जैसे ठुकरे जो कभी कभी

परसते हैं, २ चीनीकी बूनी हुई मि-

ठाई जिसको गर्मियों में ठंडाई के

लिये पानी में घोळ कर पीते हैं ।

प्रा० ओलाहोजाना—बोल० खूब

ठंडा होजाना ।

प्रा० जोसिरमुड़ायातोंओलेपडे-

बो० यह मुहावरा उस समय बोला

जाता है जब कोई आदमी किसी

काम को शुरू करे और शुरू

करनेही बिगड़ जाय ।

सं० ओपधि ( ओप=गर्भी, उप

ओपधि ) = गर्भ करना, धा=

रखना ) स्त्री० ओपेद, देवां दारु,

रोग दूर करने की चीज ।

सं० ओपधालय ( धि=पु० देवांसा-

ओपधालय ) न, हास्पिटल ।

सं० ओष्ठ ( उप=गर्भ करना ) पु०

होठ, थोठ, थोठ, लव ।

प्रा० ओस—पु० शीत जो रात को

झोटी २ फुहार पड़ती है, शबनम ।

प्रा० ओसरा ( सं० अवसर ) पु०

बारी, पारी ।

प्रा० ओसीसा—पु० तकिया ।

प्रा० ओहो—वि० बो० वाहवाह, आहो ।

ओ

सं० ओ-पु० अनन्त, वि० बो० ओह,

आह ।

प्रा० ओगी—उप, गुंगावन, मान ।

- प्रा० औगुण (सं० अवगुण) पु० दोष,  
कलंक, खोट, चूक, बुराई ।
- प्रा० औघट (सं० अवघट, अव=बुरा  
वा कठिन, घट=रस्ता, घट=नाना) गु०  
ऊबट, खराब रस्ता, अगम्य रस्ता ।
- प्रा० औतार (सं० अवतार) पु० जन्म,  
मरुट, अवतार, (अवतारशब्दकोदेखो)
- प्रा० औदात्त (सं० अवदात्त) गु०  
धौला, सफेद, रवेत, शुद्ध ।
- प्रा० ओनेपौने—बोछ० कमबीबदनी ।
- प्रा० औवट (सं० अववाट, अव=बुरा  
वा कठिन, वाट=रस्ता) गु० ऊबट,  
औघट, बुरा रस्ता, दुर्गम ।
- प्रा० और—मसुब० फिर, पुनि. भी  
गु० अधिक, २ दूसरा ।
- प्रा० औरएक—बोल० दूसरा कोई,  
और कोई, और भी ।
- प्रा० औगही—बोल० बिलकुल दूसरा,  
अनूठा, जुदा बिलकुल फरक ।
- सं० औरम (उरम=हृदय) पु० स्पाही  
हुई स्त्री से पैदा हुआ लड़का ।
- सं० और्ध्वदैहिकक्रिया=श्री० दश-  
गात्र, मणिही, नेरही ।
- सं० और्व—गु० बड़बानज, दावानज ।
- प्रा० ओसर (सं० अवसर) पु० समय,  
मौका, अवकाश, फुरत ।
- प्रा० ओसान—पु० चेतना, चेत, होमि-  
छा, मूक, माहम, हिम्मत, होशियारी ।
- प्रा० औसर—श्री० चिन्ता, सटक ।
- कंठी
- सं० क—पु० ब्रह्मा, २ पवन, ३ वा, ४ मूर्ति,  
५ आत्मा, ६ यम, ७ आग, ८ विष्णु,  
९ शिर, १० पानी, ११ सुप्त, १२  
शुभ, सुन्दर, १३ र्दम, १४ मयू, १५  
कामदेव, १६ दत्त १७ गरुड ।
- सं० कङ्क (कङ्क=नाना) पु० कौआ,  
२ केकड़ा, ३ कपट, ४ ब्राह्मण, ५ युक्ति-  
ष्टिर, ६ देशविशेष, ७ स्तेच्छनादि, ८  
बूतीमार, बगुला ।
- प्रा० कंकर (सं० कर्कर, क=हार्ति  
पट्टवाना) पु० छोटो छोटो पर्यार  
डुकड़े, कांकर, रोड़ा ।
- प्रा० कंक्रेला (कङ्कर) गु० पपरेल  
पपरीला, किरकिरा, कंक्रीना,  
बलुवा ।
- प्रा० कहन्न (सं० कङ्कण) पु० शि-  
षों के पहने में पहनने का गहना,  
बाला. कड़ा ।
- प्रा० कहन्नी—श्री० एकमकारका अ-  
नाम, २ चुड़ी, कङ्कन, कङ्कना, कङ्कनी ।
- प्रा० कह्नार (कङ्क्याधार) क० कहार ।
- प्रा० कह्नाल—गु० दहिरी, दीन, दुस्ती,  
गरीब । [ और पमंदी ।
- प्रा० कह्नालवांका—बोल० गरीब
- प्रा० कह्नालता—मा० श्री० दहिरी,  
गरीबी दीनता ।
- प्रा० कंथी (सं० कंठनी, कंठि=

जाना) श्री० बालभाइनेही चीत,  
कंथा, केश, मार्जनी । [ बारना । ]

प्रा० कंवीकरना-बोल० बालसं-

प्रा० कंजर-पु० एकमात्र के मनुष्य

मिनका धिया होरी बेचने का है

और बे सांग को भी पकड़ते हैं

और खाते हैं । [ कृष्ण । ]

प्रा० कंजूस-पु० भूष, मवलीचूष,

प्रा० कंठली ( सं० कंठमाला )

कंठली पु० माला, कंठी,

कंठा मोने चांदी आदि

की माला जो गले

में पहनते हैं, रणपटा ( दोरी माला )

प्रा० कंठी ( सं० कंठीय, कंठ ) श्री०

प्रा० कंवल ( सं० कंवल ) पु० कमल, पद्म

सं० कंस ( कम्=चाइना, वा कस=

दुस देना ) पु० मथुरा के रामा

उग्रसेन का बेटा, और श्रीकृष्ण

का मामा और बैरी जिसको श्री

कृष्ण ने मारा, रकासा, र पानपान,

गुरापाच, र मंजीरा, भक्ति ।

सं० कंसकार ( कंस=कासा, क=

करना ) क० पु० कामे की बस्तु

बनानेवाला ।

प्रा० कंकड़ी-एक प्रकार का फल ।

प्रा० कंकनी ( सं० कंकणी ) श्री०

पहुंची, कंगनी, शिपों के हाथ में

पहनने का गरना । [ रंग । ]

प्रा० कंकरेजा-पु० कंगनीरंग, कंगनी

प्रा० कंकहरा-पु० क स ग आदि

वर्णमाला । [ का फोड़ा । ]

प्रा० कसौरी ( सं० कस ) श्री० कांख

सं० कक्षा ( कप्=मारना, कश=जाना )

श्री० कटिबंध, रज्योतिषचक्र, दक्षिण ।

सं० कट्टण ( क=सुन्दर, कण=शब्द

करना, व कम्=चाइना ) पु० कट्टन,

बोला, बड़ा । [ बाल, रोम । ]

सं० कच ( कच्=बांधना ) पु० केश,

प्रा० कचनार ( सं० काञ्चनार, वा

कांचनाल, कांचन=चमक, श्च=जाना,

वा कांचन सोने सी चमक, अन्=

पाना ) श्री० एक वृत्त का नाम ।

प्रा० कचूमर-पु० एक तरह का भचार ।

प्रा० कचूमरकरडालना-बोल०

टुकड़े टुकड़े कर डालना, गडबड

कर डालना ।

प्रा० कचा सन्नय=छाप तरह सील ।

सं० कच्छप कच्छकिनारा, वा=पीना

पु० बहुमा, कपट, कर्म ।

प्रा० कछ ( सं० कच्छप ) पु० कछु-

कछुआ, कछा ।

प्रा० कछनी-श्री० नाथिया ।

प्रा० कदलम्पट ( सं० कद=काष्ठ,

लम्प=भुंटा ) पु० व्यापिधारी, लुबा,

बदस्त, रंटीरास ।

प्रा० कदवाहा-पु० राजपूतों की

एकमात्र जो अपने को रामचन्द्रे



के बेटे कुश के वंश में बतलाते हैं ।  
जैपुर के राजा इस वंशके हैं ।

प्रा० कल्लु (सं० विधि) पु० दुध, थोड़ा ।

प्रा० कल्लोटी (सं० कच्छोदिका, कच्छ,  
= काछा, बट=पेरना) स्त्री० लंगोटी,  
कोपीन । [जल, भंजन ।

प्रा० कजरा (सं० कज्जल) पु० का-

सं० कज्जल (कट=बुरा वा थोड़ा, ज-  
ल=पानी) पु० काजल, गुग्गुलु, भंजन ।

प्रा० कंचन (सं० काञ्चन, कचि=  
चमकना) पु० सोना, सुवर्ण, राजाति  
विशेष ।

प्रा० कजु (सं० कज्जु, कचि=वां-  
कजुकी) धना) स्त्री० चोली, बांगु-  
ली, भंगिया, कुरती ।

सं० कज्ज (क=पानी, और शिर, जन्-  
= पैदा होना) पु० कैंबल, कमल,  
२ ब्रह्मा, ३ बाल, केश ।

प्रा० कज्जा-गु० जिमकी आँखें भूरी हैं ।

सं० कट=भाँप काटकी । [कौम ।

सं० कटक (कट=पेरना) पु० सेना,

प्रा० कटना (सं० कट=काटना)

क्रि० अ० कटमाना, २ पीटना,  
घनामाना ।

प्रा० कटनी (कटना) स्त्री० कटारि,  
अनाज कटने का समय ।

प्रा० कटरा-पु० चौक, शहर का बाँध ।

प्रा० कटहल (सं० कट्टकफल)

पु० कटहर, एक प्रकार का फल ।

प्रा० कटा (कटना) पु० मारना,  
कतल । [रना, मारना ।

प्रा० कटाकरना-बोल०, कतलक-

सं० कटाक्ष (कट=माना, अक्षि=  
आँख वा, कट=गाल, अक्ष=कै-  
लना) पु० देखी आँख से देखना  
निरखी चितवन ।

प्रा० कटार (सं० कटार, कट=माना)  
पु० खंजर, कटारी ।

सं० कटि (कटि=पेरना) स्त्री० कमर ।

सं० कटिवन्ध (कटि=कमर, बन्ध  
=बांधना) भा० पु० कमरबन्ध,  
२ पृथ्वी के ठंढे रम आदि भाग ।

सं० कटिवद्ध-सं० पु० कमरबन्ध  
हुये तैयार, मुस्तैद ।

सं० कटुं (कट=पेरना, माना) गु०  
तीस, बहुवा, तीसा, तीता २ द-  
रावना, मचंड । [पंहा ।

प्रा० कट्टर-गु० काटनेवाला, २

सं० कटोल (कट=टाँपना) पु०  
खंडाल, बट, घुरा ।

सं० कट=अग्निवेद ।

प्रा० कटंदर (सं० काष्ठोदर, काष्ठ=  
काठ, उदर=पेट) पु० एक रोग का  
नाम ।

सं० कटिन (कट=दुःख से जीना)  
गु० करोर, कड़ा, निदुर, पुरिकन,  
माल ।

कठि

सं० कठिनता ( कठिन ) भा० श्री०  
कठोरता, निदुरता, मुश्किलता, क-  
ठिनता ।

सं० कठोर ( बड़=दुख से जीना )  
गु० कड़ा, कठिन, निदुर, सख्त ।

प्रा० कठोती ( सं० काष्ठ ) श्री० क-  
ठोरा, बड़का, काठ का परतन ।

प्रा० कड़क ( बड़कना ) श्री० थ-  
ड़ाका, घटाका, गर्म, बड़बड़ाहट,  
कड़ाका ।

प्रा० कड़सा-पु० लड़ाई में पुराने  
समय के गूर पौरों की बड़ाई कर  
के लड़नेवालों को मारम देना,  
लड़ाई का गीठ जियमें लड़नेवालों  
की हिम्मत बढ़ाने के लिये उनका  
पर गायाजाना है ।

प्रा० कड़सेत-पु० भाट, लड़ाई में  
बड़बाढ़नेवाला, एक जानि के  
भाट अथवा चारण जो लड़ाई में  
बढ़ा गाकर लड़नेवालों की  
हिम्मत बढ़ाते हैं ।

प्रा० कड़ा } सं० बडोर ) गु०  
कड़ा } बडोर, बड़, मज्ज, श्री०  
पसी, धरण ।

प्रा० कड़ा ( सं० कटक, कट=पेरना )  
पु० एक तरह का डाय का गहरना,  
२ दरवाजे का अथवा कड़ाह कड़ा-  
होके पकड़नेकी चीज, हस्या, बेंड ।

प्रा० कड़ाका-पु० किसी चीज के  
टूटने का घड़ाकावा शब्द, २ उपास,  
उपनाम, फाका । [ किनारा ।

प्रा० कड़ाड़ा-पु० नदी का ऊंचा ।  
प्रा० कड़ाह ( सं० कटाह ) पु० एक  
तरह का लोहे का परतन ।

प्रा० कड़वा ( सं० कटु ) गु० तीखा,  
करवा । नेत्र ।

प्रा० कड़ोड़ } ( सं० जोड़ि गु० सी  
कड़ार } लास-करोड़ प-  
करोड़ } ति, जिसके पास  
करोड़ रुपये हों,  
करोड़ } बड़ा सेठ ।

प्रा० कड़ी-श्री० भोजनविशेष ।

सं० कण-बण=जाना ) पु० अनाज  
का दाना, कना, कनिका, परमा  
गु, लव ।

सं० कण्टक ( कण्ट=जाना ) पु० कां-  
२ बीरो, मधु, ३ नीच, ४ कण

सं० कण्टकमय=कौरेमेवरा,  
का कण ।

सं० कण्ट ( कण्ट=रुद करना )  
गला, गरदन, घांटी २ अ-  
स्त्र, गु० मुखस्थ, कंठस्थ,  
भी याद ।

सं० कण्टस्थ ( कण्ट=गला,  
ठहरना ) गु० मुखस्थ, मुख  
बानी याद ।

प्रा० कण्ठा-पु० सोने के  
घों की माला ।

के बड़े कुश के वंश में बतलाते हैं ।  
जैपुर के राजा इस वंश के हैं ।

प्रा० कल्लु (सं० विविध) पु० कुल्ल, थोड़ा ।

प्रा० कल्लोटी (सं० कल्लोटीका, कल्ल  
= काढा, बट=घेरना) स्त्री० लंगोटी,  
कोपीन । [जल, भंजन ।

प्रा० कजरा (सं० कजरा) पु० का-  
सं० कजल (कज=बुरा वा थोड़ा, ज-  
ल=पानी) पु० राजन, गुग्गुलु, भंजन ।

प्रा० कंजन (सं० काजन, कचि=  
धमकना) पु० सोना, सुवर्ण, रज्जाति  
रेशम ।

प्रा० कजु (सं० कजु, कचि=वां-  
कजुकी (पना) स्त्री० चोली, बांधु-  
नी, भंगिया, कुस्ती ।

सं० कज्ज (क=पानी, और गिर, ज-  
=पैदा होना) पु० कैवल, कपल,  
२ प्रसा, ३ बाल, बेश ।

प्रा० कज्जा-गु० जमकी आंखें मूरी हैं ।

सं० कट=कौंर काटती । [कौंर ।

सं० कटक (कट=घेरना) पु० मेना,

प्रा० कटना (सं० कट=काटना)  
हि० अ० कटजाना, २ बीजना,  
बनाना ।

प्रा० कटनी (कटना) स्त्री० कटाई,  
अनाज कटने का समय ।

प्रा० कटग-पु० चौद. गारावा पीप ।

प्रा० कटहल (सं० कटहल)

पु० बंदर, एक प्रकार का फल ।

प्रा० कटा (कटना) पु० मारना,  
कवल । [रना, मारना ।

प्रा० कटाकरना-बोल० कटकर-

सं० कटाक्ष (कट=ताना, अक्षि=  
आंस वा, कट=गाल, अक्ष=कै-  
लना) पु० देखी आंस से देखना  
निरखी चितवन ।

प्रा० कटार (सं० कटार, कट=ताना)  
पु० संतर, कटारी ।

सं० कटि (कटि=घेरना) स्त्री० कपर ।

सं० कटिवन्ध (कटि=कपर, बन्ध  
=बांधना) प्रा० पु० कपरबैचे,  
२ पृथ्वी के ठंडे रम आदि भाग ।

सं० कटिवद्ध-सं० पु० कपरबैचे  
हुये नैशार, मुस्तैद ।

सं० कटु० (कट=घेरना, ताना) गु०  
नीम, कटुवा, तीसा, तीता २ ह-  
रावना, पधंड । [पंका ।

प्रा० कट्टर-गु० काटनेवाला, २

सं० कटोल (कट=दाँवना) पु०  
बंदाज, बट, बुरा ।

सं० कट=अग्नि ।

प्रा० कटंदर (सं० काशेदर, काटु=  
काट उतर=नेट) पु० पड़ोस का  
नाम ।

सं० कटिन (कट=दूध से पीना)  
गु० कटोरा, कड़ा, निदुर, मुश्किल,  
माल ।

सं० कठिनता (कठिन) भा० स्त्री०  
कठोरता, निडुरता, मुश्किलता, क-  
ठिनाई ।

सं० कठोर (कठ=दृढ़ से, जीना) पु०  
कड़ा, कठिन, निडुर, सख्त ।

प्रा० कठौती (सं० कठ) स्त्री० क-  
ठौवा, कठड़ा, कठ का भरतन ।

प्रा० कड़क (कड़कना) स्त्री० ध-  
ड़ाका, चटाका, गर्ज, कड़कड़ाहट,  
कड़ाका ।

प्रा० कड़खा-पु० लड़ाई में पुराने  
समय के शूरवीरों की बड़ाई कर  
के लड़नेवालों को साहस देना,  
लड़ाई का गीत जिसमें लड़नेवालों  
की हिम्मत बढ़ाने के लिये उनका  
यश गायाजाना है ।

प्रा० कड़खेत-पु० भाट, लड़ाई में  
बढ़-बाढ़नेवाला, एक जगह के  
भाट अथवा चारण जो लड़ाई में  
बढ़कर गाकर लड़नेवालों की  
हिम्मत बढ़ाते हैं ।

प्रा० कड़ा (सं० कठोर) गु०  
कड़ा } कठोर, दृढ़, मजबूत, स्त्री०  
धवी, शरण ।

प्रा० कड़ा (सं० कट, कट=पेरना) पु०  
एक तरह का हाथ का गहना,  
२ दरवाजे का अथवा कड़ाह कड़ा-  
होंके पकड़नेकी चीज, हत्या, बेट ।

प्रा० कड़ाका-पु० किसी चीज के  
टूटने का घड़ाकावा शब्द, उड़पास,  
उपवास, फाका । [किनारा ।

प्रा० कड़ाड़ा-पु० नदी का ऊंचा ।

प्रा० कड़ाह (सं० कटाह) पु० एक  
तरह का लोहे का भरतन ।

प्रा० कड़वा (सं० कटु) गु० तीव्र,  
करवा } तेज ।

प्रा० कड़ोड़ } (सं० कटि) गु० सौ  
कड़ोर } लार-करोड़ प-  
करोड़ } ति, जिसके पास  
करोड़ } रुपये हों,  
करोड़ } बड़ा सेठ ।

प्रा० कड़ी-स्त्री० भोजनविशेष ।

सं० कण (कण=जाना) पु० अनाज  
वा दाना, कना, कनिका, परमा-  
णु, लव ।

सं० कण्टक (कण्ट=जाना) पु० कांटा  
२ बौरे, शत्रु, ३ नीच, ४ कुरंग ।

सं० कण्टकमय=कौटुम्बिक, बाटे  
वा रूप ।

सं० कण्ट (कण्ट=कट करना) पु०  
गला, गरदन, पांटी २ आवाज,  
स्वर, गु० मुखस्थ, घंटास्थ, जप-  
नी याद ।

सं० कण्ठस्थ (कण्ठ=गला, स्था=  
ठहरना) गु० मुखस्थ, मुखवाग्र, ज-  
बानी याद ।

प्रा० कण्ठा-पु० मोने के बड़े गुरि-  
यों की माना ।



सं० कट्ट (कट्ट=मारना, वा कम्=  
चाहना) स्त्री० वरपणमुनिकी स्त्री०  
और नागों की माता ।

प्रा० कदराई (सं० कावरता) प्रा०  
स्त्री० कायरपन ।

प्रा० कदराना (सं० कावर-) कि०  
अ० कायर होना, दरपोक होना,  
दरना, हिम्मत हारना ।

सं० कदर्य-गु० कायर, दरपोक,  
जुसादिल, निन्दित, बदनाम, धूर्त ।

सं० कनक (कन्=चाहना वा चम  
काना) पु० सोना, कंचन, सुवर्ण,  
स्वर्ण, २ घन्टा ।

सं० कनककशिपु (कनक=सोना,  
कशिपु=रुपड़ा, पु० हिरण्यकश्यप,  
एक दैत्यका नाम, महादेवका पिता ।

सं० कनकलोचन (कनक=सोना,  
लोचन=आँख-) पु० हिरण्यच,  
एक दैत्यकानाम ।

सं० कनकाचल (कनक=सोना,  
अचल=पराङ्मुख) पु० सुमेरु पराङ्मुख,  
सुमेरु गिरि ।

प्रा० कनखल्ला-पु० कनखलाई, एक  
जानवर का नाम ।

प्रा० कनपटी (सं० कर्णपट्टिका,  
कर्ण=कान, पट्टिका=पट्टी) स्त्री०  
पटपट्टी, कान के पास की जगह ।

प्रा० कनफटा-पु० एक प्रकार के  
योगी भिनके कान पड़े होते हैं ।

प्रा० कनागत (सं० कन्यागत,

कन्या राशिमें आगत धोना, भिंस  
में सूर्य कन्या राशि के आते हैं २  
(कणा + आगत=कनागत) पु०  
आदपत्त, पितृपत्त, आशिवनका  
पहला पत्र ।

सं० कनिष्ठ (कन्=चाहना) गु०  
छोटा, लहुरा, अनुज, पु० छोटा  
भाई, युवन शब्द को बहुत अर्थ,  
कनिष्ठ होना है ।

सं० कनिष्ठा (कनिष्ठ) स्त्री० छोटी  
कनिष्ठिका अंगुली, दिगुली ।

प्रा० कने=रास, समीप, साथ ।

प्रा० कनेटी (कान ऐठना) स्त्री०  
कान ऐठना, कान सँचना ।

प्रा० कनेर (सं० करबीर) पु० कनै-  
ल, एक प्रकार का फूल ।

प्रा० कनौजिया (सं० कान्पकुन्ज)  
पु० कनौज देश का रहनेवाला,  
२ प्राक्षणाओं की एक जाति जो कनौज  
से निवले हैं ।

अं० कन्नेक्टर=कारखानादार, टे-  
काधिकारी ।

अं० कन्ट्रीन्यु=मुसल्लल, भेणीबद,  
जारी, संबलित ।

प्रा० कन्त (सं० कान्त, कम्=चाह-  
ना) पु० पति, स्वामी, भर्ता, प्यारा,  
भियतम, शौहर ।

सं० कन्था (कम्=चाहना) स्त्री०  
गुदड़ी, कपड़ी, कपरी ।

मं० कन्द ( इदि=ममोता, वा कं=  
पानी, दी=देना ) पु० कन्द, कड  
२० गंडीली, कड, जैमेष्यावनीलर-  
मुन आदि ।

मं० कन्दग ( कं=गाना, इ=छड़ना,  
गो हलमे पठ्यते ) म्य० मोह,  
गुह्य, गुहा ।

मं० कन्दर्प ( कन्द=प्राकृत होना,  
वा कं=कुग, दुर्प=पुनः अर्थात्  
विमर्श होनेसे कुग कन्द रंभाह )  
पु० कान्देव, काम, कन्द ।

मं० कन्दु-पु० बड़ा हो, गु० छोड़ा ।

मं० कन्दुक ( कन्द=गाना ) पु० कंदि

मं० कन्ध ( कं=गिर, वा कं=  
कन्ध ) म्य० काय, मला,  
कंवा, क्रीक, कन्द, ० कं

मं० कन्धि ( कं=गन, वि=गना )  
पु० मनुष्य, मेघ, स्त्री=कंधी, मला ।

मं० कन्याका ( कन=बाना, की=  
कीर्ति लक्ष्मी, दशरथ वड हो  
लक्ष्मी ।

मं० कन्या ( कन=बाना ) स्त्री=लक्ष्मी,  
२ देवी, ३ कुमारी, ४ काय  
रामिमे ही देवी रामि, ५ जीर्ण  
वय, ६ विकृता कन्यादात ( क-  
न्या=देवी, दात=देना ) लक्ष्मी ही  
व्याह देय ।

प्रा० कन्धेया ( मं० कन्ध ) पु० की  
कन्धया नाम ।

मं० कपट ( कं=गिर, पर=छड़ना )

पु० कन, कोवा, मोयरी, कोय  
उगरी, दया ।

मं० कपटी ( कपट ) पु० कन  
केवा देने बाला, छोटी, दया  
दयाकाय, दयाली ।

प्रा० कपटी ( मं० कपट, क=विनेमं  
देना ) पु० कन, नया, दया

प्रा० कपटी होना-कोन=कन  
नया होना, कोन=कोन, इतिहास

मं० कपट ( कं=गन, पर=छड़ना )  
पु० कपट, माटेव ही मं  
विमर्श होनेसे कन दिवा ।

मं० कपटिन् { कं=गं=गन,  
कपटी } पु० कपटिन् ।

मं० कपटिका-म्य० कपटिका  
है ।

मं० कपट ( कं=गन, पर=छड़ना )  
वा कपट विह्वलता कपट दिवा  
कन कपटिमे ही मंतिनदी कपटि  
पु० कपट, कपटी, कपटिका

मं० कपाल ( कं=गिर, पर=छड़ना )  
पु० कपटी, कपट, २ कपटिन्  
नया, ४ कपट, कपट, कपटिन्  
कपट दिवा कपट=कपट को  
दना, कपटिन्=कपटिन् को  
मुह को कपटिन्  
कन

कपट कपट  
कपटिन्  
कपटिन्

सं० कपाली (क० पु० महादेव ।

प्रा० कपास ( सं० कर्पास, कृ० क-  
रना ) पु० रई, रई का पेड़ ।

सं० कपि (क० कपाना) पु० चन्दर,  
पानर ।

सं० कपिकुञ्जर ( कपि=चन्दर, कुंजर  
(=हाथी ) पु० चन्दरों का राजा,  
चन्दरों का प्रधान ।

प्रा० कपिन्दा ( सं० कपीन्द्र. कपि=  
चन्दर, इन्द्र=राजा ) पु० बानरों का  
राजा, सुग्रीव, हनुमान्, अंगद ।

सं० कपिपति ( कपि=चन्दर, पति=  
राजा ) पु० बानरों का राजा, सुग्रीव ।

सं० कपिध्वज (कपि=चन्दर, ध्वजा=  
ध्वंश, अर्थात् जिसके झंडे में चन्दर  
का निशान है ) पु० अर्जुन ।

सं० कपिपोत ( सं० कपि + पुत्र )  
पु० बानर का बच्चा ।

सं० कपिल ( इन्द्र=साराहना ) पु० एक  
मुनि का नाम जिसने सांख्यशास्त्र  
बनाया ।

सं० कपिला ( क०=मराहना ) स्त्री०  
पीली गाय, कपिलगाय ।

सं० कर्पाश ( कपि=चन्दर, रई या  
कपीश्वर ) इन्द्र, राजा ) पु० सुग्रीव  
हनुमान्, बानरों का राजा ।

प्रा० कपुत्र ( सं० कुपुत्र, क०=बुरा  
पुत्र=बेटा ) पु० बुरा  
लड़का, कुबुद्धिलड़का ।

प्रा० कपूर ( सं० कर्पूर, कृ० क-  
रना वा कर्पूर सुगन्धित है )

पु० एक सुगन्धित चीज, का

सं० कपूर तिलक=नाम, हाथी

जो ब्रह्मावर्त अर्थात् पिष्ट में

सं० कपोत ( क०=हवा, पोत=जहाज )

जिमके छिये हवा महान्तके तुल्य

वा क०=रंगरंग का होना, पु० क०  
तर, परेवा ।

सं० कपोल ( क०=कांगना, वा क०=

पानी, पुन०=बदना ) पु० गाल,  
करसारा ।

सं० कफ ( क०=पानी, फन्=बदना,  
जो पानी से बदता है ) पु० सखार  
धूँ, बलगाय ।

प्रा० कव ( सं० कदा ) कि० वि०  
कद किममपय ।

प्रा० कवतक } कि० वि० किमस-  
कवतलक } मयनक, कदांतक,  
कवलों } किमनी देरतक ।

प्रा० कवकव-बोल० किमकिमसपय ।

प्रा० कवडी-स्त्री० लड़कों के एक  
खेल का नाम जिसमें सब लड़के  
छापने दो झुण्ड बनाते हैं और  
जमीन पर खेतने हैं ।

सं० कवन्ध ( क०=गिर, वन्ध=बाटना,  
वा मारना ) पु० विन गिरका धड़,  
एक राक्षस का नाम ।



प्रा० कवरा (सं० कर्बुर, कवू=रंगना  
बा० कर्वू=मोना ) गु० चितकवरा,  
रंग रंग का, रंग वरंग । [ काम ।

प्रा० कवारू-पु० गुन, हुनर, धयां,  
सं० कमठ (क=जल, अठ=जाना,  
वा कम्=चाहना ) पु० कलुवा क-  
च्छप, कर्म ।

प्रा० कमठा-पु० एक प्रकार का धनुष ।

प्रा० कमण्डल (सं० कण्डलु, का  
=गानी, मण्ड=शोभा, ला=लेना )  
पु० देही और संन्यासी लोगों के  
पानी रखने का काठ का अथवा  
मिट्टी का बरतन खप्पर २ कासा,  
प्याला ।

सं० कमनीय (कम्=चाहना) र्म०  
पु० सुन्दर, सुयरा, सुयद, सुहावना,  
मनोहर, मनभावन, दिलचम्प,  
दिलगीर ।

प्रा० कमरख (सं० कर्मरद्द, कर्म=  
काम (भोजनआदि) रद्द=प्यार)  
पु० एक प्रकार का फल ।

सं० कमल (कं=गानी को, अठ=  
शोभा देना, वा कम्=चाहना, शो-  
भना ) पु० कपल, पद्म, जलज ।

सं० कमला (कमल, अर्थात् जिमके  
हाथ में बसने है ) स्त्री० लक्ष्मी,  
विष्णुपत्नी, विष्णु की औरत ।

सं० कमलापति (कमला=लक्ष्मी,

पति=भर्त्ता) पु० विष्णु, भगवान्,  
नारायण ।

सं० कमलिनी (कमल) स्त्री० कु-  
मोदनी, २ कमलों का समूह ।

प्रा० कमाई (कमाना) पा० स्त्री० भाति,  
लाभ, उपार्जन, २ काम ।

प्रा० कमाऊ (कमाना) गु० कमाने  
वाला, मिहन्ती, उद्यमी, परिश्रमी ।

अं० कमाण्डनचीफ=प्रधान, सेना-  
ध्यक्ष कौनका आलाहाकिम ।

प्रा० कमाना (काम, सं० कर्म,  
कृ=करना) कि० सं० कमाई करना,  
पाना, नाति करना, पैदा करना,  
उपार्जन करना, २ काम करना, ३  
सारु करना (चमड़ा या पाखाना)  
४ (कम) कम करना, घटाना ।

अं० कमीशन=नियुक्तगण, किसी  
मुख्य बात के हेतु चुने मनुष्य अ-  
न्य देश में भेजे जाते हैं २ मुस्लि-  
यारनामा ३ मेहनताना ।

अं० कमनांटयडसिविलसर्विस  
=बह पास या सनद जिममें सर-  
कार नौकरी देनेकी जिम्मेदार है ।

प्रा० कमेरा (काम) पु० कामकरने  
वाला, मजदूर, २ सहायक, मदद-  
गार ।

प्रा० कमोदनी (सं० कुमुदिनी, कु=  
युनी, मुद=हर्षित करना) स्त्री०

कपलिनी जो रात को सिलती है और दिन को बंद हो जाती है ।

प्रा० कमोरी-स्त्री० मटकी, गगरी ।

सं० कम्प } (कम्प=कौपना) भा०  
कम्पन } पु० परयराइट, कम्प  
कम्पी, कर्ता ।

प्रा० कम्पना (सं० कम्पन, कम्प=कौपना) कि० अ० परयरोना, कौपना ।

सं० कम्पित (कम्प=कौपना) र्म्य० कौपिता हुआ, परयराता हुआ, कम्पायमान ।

सं० कम्बल (कम्प=जाना वा कम्प=चाहना) पु० कामरी, लोई, ऊनी कपड़ा, दोशला ॥

सं० कम्बु (कम्प=चाहना) पु० शंख, हस्ती, शम्बूक, घोषा, सूती चूड़ी गु० विषवर्ण अर्थात् चित्रकपड़ा ।

सं० कम्बुग्रीवा (कम्बु=शंख, ग्रीवा=गरदन) गु० जिसकी गरदन शंख जैसी हो ।

सं० कर (क=करना) पु० हाथ, २ हाथी की सूँड, १ (क=वितेरना, फैलाना) किरन, ४ महमून, माछगुजारी, ५ जड़, हस्तनक्षत्र ।

० कर्करा (सं० कर्कर, क=करना) पु० खोटा सिफा, २ एक पत्थरका नाम गु० कठोर, कड़ा ।

करगहना (सं० कर=प्रहण, १४

कर=हाथ, प्रह=छेना, पकड़ना) मि० स० व्याह करना, व्याह में दुलहि का हाथ पकड़ना ।

सं० करटक-पु० नाम शृगाल, सियार, कलेजा ।

सं० करधर्पण (कर=हाथ, धर्पण=मलना, धृष=पिसना, गलना) भा० पु० हाथमलना, हाथमीजना ।

सं० करज (कर+जन्=पैदा होना) पु० नव, नावून ।

सं० करण (क=करना) पु० साधन, काम सिद्ध करने का उपाय, हाथ-यार, औजार, २ व्याकरणमें तीसरा कारक, १ इन्द्रिय, ४ काम, ५ काया, शरीर, ६ कारण, ७ वृत्र, ८ कारण, कायस्थ, ९ ज्योतिष में एकतरह के समयके विभागों को कारण कहते हैं वे ११ हैं, उनमें से ७ चलते हैं और ४ स्थिर हैं और दो कारण मिल के एक चन्द्र दिनके घरावर होते हैं ।

प्रा० काणी (सं० करणीय, करने योग्य, क=करना) स्त्री० काम, धंधा, २ हाथी ।

सं० करणी (क=करना) स्त्री० गणित विद्या में ऐसी राशि को कहते हैं जिसका ठीक मूल नहीं मिले ।

सं० करण्ड (क+अण्डन्) पु० काक पंजी, कौवा, २ दिग्वा, दिविघा,

प्रा० कवरा (सं० कर्वुर, कर्व=रंगना  
(षा० कर्व=जाना) गु० चितकवरा,  
रंग का, रंग वरंग । [ काम ।  
प्रा० कवारू-पु० गुन, हुनर, धंधा,  
सं० कमठ (क=जल, अल्=जाना,  
वा कम्=चाहना) पु० कछुवा क-  
च्छप, कूर्म ।

प्रा० कमठा-पु० एक प्रकार का धनुष ।

प्रा० कमण्डल (सं० कमण्डलु, का  
=गानी, मण्ड=शोभा, ला=छेना)

पु० दंडी और संन्यासी लोगों के  
पानी रखने का काठ का अथवा  
मिट्टी का बरतन खण्ड २ कासा,  
प्याला ।

सं० कमनीय (कम्=चाहना) र्म्यं०  
पु० सुन्दर, सुधरा, सुघड़, सुहावना,  
मनोरम, मनभावन, दिलचस्प,  
दिनगीर ।

प्रा० कमरख (सं० कर्मरद्द, कर्म=  
काम (भोजन आदि) रद्द=प्यार)  
पु० एक प्रकार का फल ।

सं० कमल (कं=गानी को, अल्=  
शोभा देना, वा कम्=चाहना, शो-  
भना) पु० कमल, पद्म, जलज ।

सं० कमला (कमल, अर्थात् जिसके  
हाथ में कमल है) स्त्री० लक्ष्मी,  
विष्णुपत्नी, विष्णु की औरत ।

सं० कमलापति (कमला=लक्ष्मी,

पति=भर्ता) पु० विष्णु, भगवान्,  
नारायण ।

सं० कमलिनी (कमल) स्त्री० कु-  
मोदनी, २ कमलों का समूह ।

प्रा० कमाई (कमाना) भा० स्त्री० भाति,  
लाभ, उपार्जन, २ काम ।

प्रा० कमाऊ (कमाना) गु० कमाने  
वाला, मिहन्ती, उद्यमी, परिश्रमी ।

अं० कमाण्डूनचीफ=प्रधान, सेना-  
ध्यक्ष कौमका आलाहाकिम ।

प्रा० कमाना (काम, सं० कर्म,  
कृ=करना) कि० सं० कमाई करना,  
पाना, नगति करना, पैदा करना,  
उपार्जन करना, २ काम करना, ३  
साक करना (चमड़ा या पास्ताना)  
४ (कम) कम करना, घटाना ।

अं० कमीशन=नियुक्तपण, किसी  
मुख्य बात के हेतु चुने मनुष्य अ-  
न्य देश में भेजे जाते हैं २ मुस्लि-  
म धरनामा ३ मेहनताना ।

अं० कमनांट्यडसिविलसर्विस  
=बह पास या सनट जिममें सर-  
कार नौकरी देने की जिम्मेदार है ।

प्रा० कमेरा (काम, पु० काम करने  
वाला, मजदूर, २ सहायक, मदद,  
गार ।

प्रा० कमोदनी (सं० कुमुदिनी, कु=  
चुनी, मुद=रहित करना) स्त्री०

कमलिनी जो रात को तिलवी है ।  
 और दिन को बंद हो जाती है ।  
 प्रा० कमोरी-श्री० मन्त्री, गगरी ।  
 सं० कम्प (कम्प=कंपना) भा०  
 कम्पन पु० परंपराइत, कम्प  
 करी, छर्ता ।  
 प्रा० कम्पना (सं० कम्पन, कम्प=  
 कंपना) क्रि० अ० परंपरांना,  
 कंपना ।  
 सं० कम्पित (कम्प=कंपना) अर्थ०  
 कंपित हुआ, परंपराता हुआ,  
 कम्पायमान ।  
 सं० कम्बल (कम्प=जाना वा कम्प=  
 चाहना) पु० कापरी, लोई, ऊनी  
 कपड़ा, दोराला ॥  
 सं० कम्बु (कम्प=चाहना) पु० शंख,  
 हस्ती, शम्भू, घोषा, सूत्री घड़ी पु०  
 विषयार्थ अर्थात् चित्तवृद्धा ।  
 सं० कम्बुघीवा (कम्बु=शंख, घीवा=  
 गारदन) पु० जिसकी गारदन शंख  
 देसी हो ।  
 सं० कर (क=करना) पु० हाथ, २ हाथी  
 की मूँह, १ (क=विरोधना, छेना) भा०  
 विरोध, ४ बहमूल, बाह्यगुलारी,  
 ४ बह, हस्तनक्षत्र ।  
 कर्करा (सं० कर्करा, क=करना)  
 = सरोवर भित्ति, २ एक सरोवर  
 पु० करोत, हटा ।  
 करगहना (सं० कर=हाथ,  
 १४

कर=हाथ, ग्रह=छेना, पकड़ना) क्रि०  
 सं० व्याह करना, व्याह में हुलसिन  
 का हाथ पकड़ना ।  
 सं० करटक-पु० नाम शृगाल, सि-  
 यार, कजेला ।  
 सं० करधर्पण (कर=हाथ, धर्पण=  
 मलना, धृषु=पिसना, गलना) भा०  
 पु० हाथमलना, हाथपिसना ।  
 सं० करज (कर+जन्=पैदा होना)  
 पु० नग, नामून ।  
 सं० करण (क=करना) पु० साधन,  
 साध सिद्ध करने का उपाय, रथि-  
 यार, औजार, २ व्याकरणमें तीस-  
 रा कारक, १ इन्द्रिय, ४ काय, ४ काया,  
 शरीर, ६ कारण, ७ धर्म, ८ कारण,  
 कायधर्म, ६ ज्योतिष में एकतरह के  
 समयके विभागों को कारण कहते हैं  
 वे ११ हैं, उनमें से ७ चलते और ४  
 स्थिर हैं और दो कारण विल के  
 एक चन्द्र दिनके बराबर होते हैं ।  
 प्रा० करणी (सं० करणीय, करने  
 योग्य, क=करना) श्री० काय, धर्म,  
 २ साध ।  
 सं० करणी (क=करना) श्री० गणित  
 विद्या में ऐसी राशि को कहते हैं  
 जिसका टीका हल नहीं मिले ।  
 सं० करण्ड (क+जन्=पैदा) पु० काह  
 रई, कौता, २ दिना, त्रिविधा,



कमलिनी जो रात को रिलती है।  
और दिन को बंद हो जाती है।

प्रा० कमोरी-स्त्री० मटकी, गगरी।

सं० कम्प (कम्प=कौपना) भा०

कम्पन पु० परपराइट, कम्प  
कम्पी, कर्ता।

प्रा० कम्पना (सं० कम्पन, कम्प=  
कौपना) कि० अ० परपराणा,  
कौपना।

सं० कम्पित (कम्प=कौपना) र्म्य०  
काँपा हुआ, परपराता हुआ,  
कम्पापमान।

सं० कम्बल (कम्प=नाना वा कम्=  
चाहना) पु० कामरी, लोई, ऊनी  
कपड़ा, दोशाला ॥

सं० कम्बु (कम्प=चाहना) पु० शंख,  
हस्ती, शम्बुक, घोषा, सूती चूड़ी गु०  
विचरण अर्थात् चिह्नकपड़ा।

सं० कम्बुग्रीवा (कम्बु=शंख, ग्रीवा=  
गर्दन) गु० जिसकी गर्दन शंख  
देसी हो।

सं० कर (क=करना) पु० हाथ, २ हाथी  
की सूँड़, २ (क=विलेखना, कैलाना)  
किरन, ४ महमूल, मातृगुजारी,  
५ नद, हस्तनक्षत्र।

प्रा० कर्करा (सं० कर्करा, क=करना)  
पु० लोटा सिक्का, २ एक पत्थरका  
नाम गु० कठोर, कड़ा।

प्रा० करगहना (सं० कर=प्रकरण,  
१४

कर=हाथ, ग्रह=छेना, पकड़ना) कि०  
सं० व्याह करना, व्याह में दुलहिन  
का हाथ पकड़ना।

सं० करटक-पु० नाम शृगाल, सि-  
यार, कलेशा।

सं० करधर्पण (कर=हाथ, धर्पण=  
मलना, धृप्=पिसना, गलना) भा०  
पु० हाथमलना, हाथपीजना।

सं० करज (कर+जन्=पैदा होना)  
पु० नम, नाखून।

सं० करण (क=करना) पु० साधन,  
बाप सिद्ध करने का उपाय, दधि-  
यार, औजार, २ व्याकरणमें तीस-  
रा कारक, ३ इंद्रिय, ४ काम, ५ कृपा,  
शरीर, ६ कारण, ७ छत्र, ८ कारण,  
कायस्थ, ९ ज्योतिष में एकतरह के  
समयके विभागों को करण कहते हैं  
वे ११ हैं, उनमें से ७ चल हैं और ४  
स्थिर हैं और दो कारण मिल के  
एक चन्द्र दिनके बराबर होते हैं।

प्रा० करणी (सं० करणीय, करने  
योग्य, क=करना) स्त्री० काम, पंचा,  
२ धात्री।

सं० करणी (क=करना) स्त्री० गणित  
विद्या में ऐसी राशि को कहते हैं  
जिसका ठीक मूल नहीं मिले।

सं० करण्ड (क+ण्ड=कट) पु० कार-  
पट्टी, कौवा, २ दिन्वा, दिविया,



- पीड़ा भयवा दुःखके कारण आह  
मारना, कहरना ।  
सं० करिण (कर=सुंद, अर्थात् सुंद  
बाला) पु० हाथी, गज, मत्तग ।  
सं० करीर (कू=फैलाना, वा मारना)  
पु० बांसका अंकुर, २ करील, एक  
महारका फेंटीला वृक्ष जो मरुस्थल  
में वगैरह और उसको जड़ें लाते हैं ।  
सं० करुणा (कृ=करना, वा कू=  
फेंकना) स्त्री० दया, कृपा, अनुग्रह,  
२ नाम वृक्षका जिनपरसमें एकरस ।  
सं० करुणानिधान (करुणा=दया,  
निधान=सजाना) पु० करुणा के  
सजाना, कृपालु, दयालु ।  
सं० करुणामय (करुणा=दया, मय  
=रूप) पु० दयाके रूप, दयामय,  
दया करनेवाला, दयालु, कृपालु ।  
सं० करुणायुतन (करुणा + आय-  
तन) पु० दया के स्थान ।  
सं० करुणाद्रि (करुणा=दया, आद्रि=  
गीला) पु० करुणानिधान, कर-  
णामय, दयालु ।  
प्रा० करुवा (सं० करक, कृ=करना)  
पु० कर्पटलु, करवा, कठारी, मिट्टी  
का कोरा बरतन—करवाचौय=एक  
पर भयवा त्योहार जो काठिक के  
महीने में होता है ।  
सं० करेणु पु० हाथी, हस्ती ।  
प्रा० करेला (सं० कटिष्ठ, कट=घेर-  
ना) पु० एक तरकारी का नाम जो  
कुछ कड़वी होती है ।  
प्रा० करोनी-स्त्री० दूधकी सुर्चन ।  
प्रा० करौदा (सं० कर्मदक, कर  
=राय, कूद=मलना) पु० एक फल  
का नाम ।  
सं० कर्क (कृ=करना, वा कू=फैलाना)  
पु० कैंकड़ा, २ चौथीराशि ।  
सं० कर्कट (कृ=करना) पु० कैंकड़ा,  
गिंगडा, २ चौथीराशि, सर्प ।  
सं० कर्कश (कर्क=कठिनता, वा कू=  
फेंकना, कश=मारना) पु० कठोर,  
कठिन, कड़ा, निर्दय, लड़ाका ।  
सं० कर्कशा-स्त्री० लड़ाका, भगड़ा  
करनेवाली, कलही । [ का पेड़ ।  
सं० कर्कन्धु स्त्री० बदरीवृक्ष, बेर  
सं० कर्ण (कृ=करना, अर्थात् शब्द  
का ज्ञान करना) पु० कान, २ (कर्ण=  
मेदना, वा कू=फैलाना) पतवार,  
३ त्रिभुज खेतमें भुज और कोटि को  
छोड़े तीसरी भुजाका नाम, ४ चौड़े-  
ने खेत में उस लकीर का नाम जो  
सामने के कोनों से खींची जाती है,  
आध काट, ५ कुंजीका पेड़ जो सूर्यके  
अंश से पैदा हुआ ।  
सं० कर्णधार (कर्ण=पतवार, धृ=रस-  
ना) पु० मांझी, घड़नदार, जहाज  
चलानेवाला, नाविक, कैप्टन, मज्जाह ।  
सं० कर्णफूल (कर्ण=ज्ञान, फूल



अर्थात् कानकाफल ) पु० कान में पहनने का गहना, कर्णभूषण ।

सं० कर्णवेध } ( कर्ण=कान, विध=वेदना ) पु० कानें चिन्मना, कानछिदाना ।

सं० कर्णमण्डक ( मण्ड=शोभा देना ) क० पु० कर्णफल, चिरिया, २ मधुरमण्ड ।

सं० कर्णाट-पु० कर्णाटकदेश ।

सं० कर्णिका ( कर्ण + इक, कर्ण वेदना ) श्री० हाथी की सूँड़ की नोक, हाथ की बीच की अंगुली, मन्थमा, कलम, लेखनी, कुटिनी, कर्णभूषण, कर्णफूल ।

सं० कर्त्तन ( कृत्=काटना ) पु० कतरन, काटना, छांटना ।

सं० कर्त्तरिका } ( कृत्=काटना ) श्री० कर्त्तरी } कतरनी, कैची ।

सं० कर्त्तव्य ( कृ=करना ) म्ये० पु० करने योग्य, जो बुद्धकरना चाहिये, अवरय उचित, योग्य, शान्तिव ।

सं० कर्त्ता ( कृ=करना ) पु० करने वाला, बनानेवाला, २ सृष्टि पैदा करनेवाला, ईश्वर, ३ व्याकरण में पहला कारक, ४ अन्य बनाने वाला, ५ पति, मालिक, स्वामी, अधिकारी ।

प्रा० कर्त्तार ( कृ=करना ) पु० करने वाला, २ पैदा करनेवाला, ईश्वर, मित्रमण्ड, मृदिकर्त्त ।

सं० कर्द } ( कर्द=कुरा, शब्दकरना )

कर्दम } पु० कीचड़, कादो, बहला ।

प्रा० कर्धनी ( सं० कटि=धारणीव,

कटि=कमर, धारणीव=पहनने योग्य, धृ=धारणकरना वा करिन्वन्व,

कटि=कमर, बन्धन=बांधना ) श्री०

कंधनी, कमर में पहननेका गहना ।

सं० कर्पूर ( कृप=सकथ होना ) पु०

कपूर, बाहुभूषण ।

सं० कर्ष ( कर्ष=माना ) पु० स्वर्ण,

हरिताल, राक्षस ।

सं० कर्म ( कृ=करना ) पु० काम,

धंधा, २ धर्मसंबंधी काम, जैसे यज्ञ,

होम, दान आदि, ३ पहिले जन्म में दिया हुआ, ४ कर्मकारक, दूसरे

कारक ( व्याकरण में ) ५ भाग,

किस्मत ।

सं० कर्मकाण्ड ( कर्म=काम, कर्त्त

=समूह ) पु० कर्मों का समूह, २

जय होम यज्ञ आदि, ३ वेद का

एक भाग ॥

सं० कर्मकार ( कर्म=काम, कर्त्त

=करने वाला, कृ=करना ) पु०

काम करने वाला, ३ लुहार ।

सं० कर्मनागा ( कर्म=काम, नाग,

वा पुण्य, नाश=नष्ट करने ) श्री०

एक नदी जो बनारस कीव निकर

के बीच में है ॥

सं० कर्मनिपुणार्द्रि-भा० स्त्री० कर्द्वि-

कुरलना, काम की चतुराई, कारीगरी।

पं० कर्मपथ-स्त्री० कर्ममार्ग; वेद  
की शक्ति, उनी...

की रीति, तरीकय शरई ।

• कर्मभोग (कर्म=पहले जन्म  
में किये गये)

मं किये हुये काम का फल, भोग=

भोगना) पु० भले बुरे का फल, भा-  
रव्य के फल

सं० कर्मेन्द्रिय ( कर्म=काम, इन्द्रिय=

द्विष=द्विषी) स्त्री० काम करने की  
द्विषी जैसे काम करने की

इंद्री जैसे हाथ पांव आदि (इंद्रिय शब्द की देखो)।

कर्प (कृप-सहित) ।

सं. कर्प ( कृप=सौचन ) पुं. वै

विरोध, रोष, ईर्ष्या, जैसे "वातदि  
घात कर्ष घटि जाई"।

२. सोलह मासे का धौल ।

कर्मक (कृष्ण=लौह, इल)

वना ) पु०: किसान, गोवा, गोवने  
बाला ।

सं० कर्पण (कप=कर्ण)

कपण (कप=स्त्रीचिह्न, इल जो-  
मना) पुं स्त्रि, तानः ३ स्त्री-

० कल ३ ॥

प्रा० कल } (सं० कल्प, कल्प=गिन-  
काल }

काल } ना) पु० ध्यानका पहला  
वा पिबला दिन

मा० कलकीवात-बोल० हरी मोटे

दिनों की बात, जो कुछ थोड़े दिन

पहले हुआ हो ।

प्रा० कल-स्त्री० चैन, आराम, सुख,  
साधक ।

प्रा० कलमकल-बोल० बेचैनी, बे-

प्रा० कल ( सं० कला. )

करना) स्त्री० जन्त्र, यन्त्र. २

की कल, चाप, ३ दाँव, पैव।

प्रा० कलका आदमी-बोल० बहुत  
दुबला आदमी ३

दुबला आदमी, २ पुतला ।  
प्रा० कलकाघोडा-बोल० एम्बर

बद्धा सिसाया हुआ और अपनी

० कल (कल-)

१० कल (कल्=शब्द करना) पु०  
मीठा शब्द, २ (कद=प्रमाण)

वीर्य, बीज, गु० पीठा, सुन्दर ।

सं० कलकण्ठ ( कल=मीठा, सुन्दर, कंठ=गाना ) वा

मुन्दर, कंठ=गला ) स्त्री० कोयल,  
कोकिला, गु० सुन्दर वा मीठी

कण्डवाली । सुन्दर वा मीठी

१० कलकल (कल=शब्द करना)  
 पु० कोलाहल

पु० कोटाइल, कलकत्ता, ऐस  
राष्ट्र, कषकष, भक्तभक्त, कषकष ।

कलङ्कः (क=मुखा, बा=आत्मा,

० दाघ, दोष, दिग् (दिग्=विगाहना, बा वल्=माना)

दाय, दोष, विद्व, लक्षणत,  
इदन ।

कलजिभां (सं० कालेनिह,

न=काली, मिहा=मीध) गु०

पुरा चीतनेवाला, दुर्जन, पुरा चाइ-  
नेवाला ।

सं० कलत्र ( कल=वीर्य, त्रा=वचा-  
ना वा गड़=सींचना, यहां ग को  
क और ड को ल हो जाता है )  
स्त्री० पत्नी, भार्या, लुगाई, स्त्री ।

सं० कलधौत ( कल=मैल, धौत=  
धोया ) पु० मलरहित २ सोना ।

सं० कलन ( कल=गिनना ) भा०  
पु० गिनना, चिह्न ।

प्रा० कलप-पु० बालों के रंगने का  
रंग, खिताब, माँद, छेई ।

प्रा० कल्पना ( सं० कल्पन, कृप्=  
दुबला होना ) क्रि० अ० कुदना,  
पढताना, बिलखाना, दुःखी होना,  
दुःख पाना ।

प्रा० कल्पाना ( कल्पना ) क्रि०  
सं० कुदाना, सताना, दुःख देना ।

सं० कलभ ( कल=शब्द करना )  
पु० हाथी का बंश, कलभ ।

अ० कलम=लेखनी ।

प्रा० कलमकल-स्त्री० पवरानि, दुःखा

प्रा० कलमलाना-क्रि० अ० चुन-  
बुलाना, छटपटाना, कुलबुलाना,  
बिलना ।

प्रा० कलवार-पु० कलाल, कलार,  
मुंढी, मदिरा खींचनेवाला और  
बेचनेवाला ।

सं० कलश ( कल=शब्द, श=जाना )

पु० पड़ा, गगरा, पानी रखने का  
बरतन, २ मन्दिरों के ऊपर का  
शिवर ।

प्रा० कलशिरा ( सं० काल=काळा;  
कलसिरा ) शीर्ष=शिर ) पु०  
काले शिरवाला, काले शिर का,  
पु० मनुष्य, आदमी ।

सं० कलस ( क=पानी, लस्=शो-  
भना ) पु० पड़ा, कलश, २ मन्दिर  
का शिवर ।

सं० कलहंस ( कल=सुन्दर, हंस )  
पु० राजहंस ।

सं० कलह ( कल=मीठा, शब्द, हन्  
=मारना ) पु० लड़ाई, झगड़ा,  
विरोध, पु० कलहकार=झगड़ालू,  
लड़ाई करनेवाला २ कलहकारिणी  
=झगड़ालू स्त्री ० लड़ाई करनेवाली ।

सं० कला ( कल=गिनना, जाना )  
स्त्री० बहुत छोटा, भाग, भंश का  
साठवां हिस्सा, २ चन्द्रमण्डल का  
सोलहवां भाग, ३ समय का हिस्सा,  
साठ सेकंड, ४ दल, कण्ड, बहाना,  
फरेवा, ५ गुच्छ, हुनर, ताना बाना  
ना आदि ५४ कला ।

कला चौंसठई ॥

१-गीत=गाना अर्थात् स्वरों रानों  
और रागिनियों को जानना और उन  
को अभ्यास करना ।

- २-चाद्य=धाना बनाना ।  
 ३-नृत्य=नाचना ।  
 ४-नाट्य=नकल करना, नाटक खे-  
 लना ।  
 ५-आलेख्य=लिखना और चित्र-  
 पारी यानी मुसव्वरी करना ।  
 ६-विशेषक छेद्य=अनेक प्रकार के  
 गीर और तिलक लगाने के सांघे  
 बनाना ।  
 ७-तण्डुलकुसुमवलिविकार  
 क्रिया=बिना दूधे चारुल और  
 फूलों के चीर देवमन्दिरों में पूरना ।  
 ८-पुष्पास्तरण=फूलों की सेन  
 बनाना ।  
 ९-द्रशनवसनांगराग=दांतों के  
 वंजन पिस्सी आदि और वस्त्र और  
 अंगराग बनाना और लगाना ।  
 १०-मणिभूमिकाकर्म=गर्भी के  
 दिनों में रहने के लिये घरविशेष  
 बनाना ।  
 ११-शयनरचन=पलंग विधाना ।  
 १२-उदकवाद्य=पानीमें धाना ध-  
 जाना या चलनरंगन ।  
 १३-उदकघात=पानीके रेतल, धी-  
 ला देना या पानी हाथों से दबाकर  
 ऊपर उठाना ।  
 १४-चित्रयोग=चित्रपुस्तक करना,  
 भवान की चुरहों और चुरहा  
 की प्रवान करना ।

- १५-माल्यग्रन्थनविकल्प=देव  
 पूजा के लिये अनेक प्रकार के माला  
 और वस्त्र बनाना ।  
 १६-शेखरापीडयोजन=शिरः में  
 अनेक प्रकार के फूलोंकी रचना ।  
 १७-नेपथ्यप्रयोग=देशकालानु-  
 सार वस्त्र परिनिर्वा ।  
 १८-कर्णपत्रभंग=शरीरदांत और  
 शंखादि के कर्णफूल बनाना ।  
 १९-गन्धियुक्ति=अनेक प्रकार के  
 सुगन्धित पदार्थ बनाना और ल-  
 गाना ।  
 २०-भूषणयोजना=गरनेपहनना ।  
 २१-ऐन्द्रजाल=राजीगरोंकी तरह  
 शोबिंदे अर्थात् लीला दिखाना ।  
 २२-कौतुमारयोग=कुरूपको सु-  
 न्दर करना ।  
 २३-हस्तलाघव=हाथको फुरती  
 और हलकपने से काममें लाना ।  
 २४-चित्रशाका पूष भक्ष्य  
 विकार क्रिया=अनेक प्रकार  
 की तरकारियां और भोजन के  
 व्यवजन बनाना ।  
 २५-पानकरसरगासवयोजन=  
 अनेक प्रकार के पीने के शर्बत या  
 चर्क और शराब बनाना ।  
 २६-सूचीकर्म=सीना और बुनना ।  
 २७-सूत्रमर्माङ्गल=सूत्र के तांगे

- द्विपत्ताका सावित्र को दूध और दूध को सावित्र दिगाना । [ कहना ]
- २८-प्रवेष्टिका=गैनीमीनना और
- २९-प्रविनाला=वैराग्यी पाशलो-  
क के अन्तर अन्तर्गते दूध रसोक्त  
कहना । [ का कहना । ]
- ३०-द्वान्तकयोग=स्तिमि सुग्री
- ३१-दुष्कृतानन=पैशाचिक अ-  
वस्था और भाव के भाव पुरुषक  
कहना ।
- ३२-द्विपत्ताका सावित्रादिका दर्शन=  
दो दो बार बार देखना और दिग्ग  
कहना ।
- ३३-कालममम्यापुर्ण=दीर्घ,  
अवस्था में प्रवेश की पूर्णता
- ३४-द्विपत्ताका सावित्रादिका विकल्प=  
कहना की मन्त्र प्रवृत्ति ।
- ३५-नक्षत्रादिकर्म=द्विपत्ता  
कर्म का निश्चय का भाव  
कहना ।
- ३६-द्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ३७-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ३८-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ३९-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४०-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४१-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४२-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४३-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४४-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४५-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४६-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४७-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४८-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ४९-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।
- ५०-द्विपत्ताद्विपत्ता=द्विपत्ता का कहना ।

- पोंके रंग और वन की हानि जा-  
नना और परिचायना ।
- ४१-द्विपत्ताद्विपत्तायोग=द्विपत्ता का  
तत्वीयार जमाना और जानन  
पौष्ण करना ।
- ४२-मेघ कुमुद लावक युद्ध  
विधि=मेघ पुर्ण लावक के युद्ध की  
रीति ।
- ४३-शुक साक्षिका प्रदापन  
=शुभा और मैना को पढ़ाना ।
- ४४-उत्पादन=उत्पादन बनाना और  
लगाना और शरीर का दापना ।
- ४५-केश मार्जन कौशल=बालों  
का धोना और नेत्र डवाना ।
- ४६-अश्वमुद्रिकाकर्म=पैशाच  
विद्या दूसा कहना ।
- ४७-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का  
योग प्रवृत्ति, द्विपत्ता प्रवृत्ति की  
प्रवृत्ति और द्विपत्ता प्रवृत्ति की प्रवृत्ति  
का कहना ।
- ४८-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ४९-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
विधि प्रवृत्ति की प्रवृत्ति जानना
- ५०-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ५१-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ५२-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ५३-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ५४-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ५५-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ५६-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ५७-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ५८-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ५९-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना
- ६०-द्विपत्ताद्विपत्ता योग=द्विपत्ता का योग  
की प्रवृत्ति जानना

५२-धारणमात्रिका=स्पर्णशक्ति  
का बदलाना जिस से मुनतेरी याद  
होनावे ।

५३-समवाच्यसमपाठ्य=बिना  
पढ़े हुये को दूसरे का पढ़ना मुन  
कर उसके समानही पढ़ते या बांच-  
ते जाना ।

५४-मानसीकाव्य क्रिया=उसी  
क्षण काव्य बनाना दूसरे के मन  
की बात जानना । [ ना ।

५५-अभिधान-कोप=कोपबना-

५६-द्वन्द्वोज्ञान=दोहरार के द्व-  
न्द्वों का परिचानना ।

५७-क्रियाविकल्प=काव्यों के अ-  
लङ्कार जानना ।

५८-छलितक योग=बैचन करने  
या मोहने के हेतु वैष बदलना अ-  
र्थात् देवारी ।

५९-वस्त्र गोपन=फटे कपड़ों का  
ऐसा पहिनना कि मालूम न पड़े  
या इच्छित प्रकार से पहिनना ।

६०-द्वृतविशेष=नुमा खेचना ।

६१-आकर्ष्यकीड़ा=राँसाखेलना

६२-वालकीड़न कर्म=वालकी  
के लिये तिलीने बनाना ।

६३-वैनयिकी वैजयिकी विद्या  
=विनय और विजय के उपाय ।

६४-वैतालिकी व्यायामिकी

विद्या=भूत मेत और दाँवपैच आदि ।

प्रा० कलार्डि-स्त्री० पहुँचा ।

सं० कलाधर (कला + धृ=धरना)

क० पु० चन्द्रमा, महताव ।

सं० कलाप (कला=भाग, आप=

पाना) पु० समूह, २ संस्कृत भाषा

का व्याकरण, ३ मोरकी पूँछ ।

सं० कलापक (कलाप + अक) क०

मोर, मयूर, ताऊस ।

सं० कलापी (कला + मोरकी पूँछ)

पु० मोर, मयूर । [ का तार ।

प्रा० कलावतून-पु० सोना चाँदी

प्रा० कलार } पु० कलवार, मदिरा

कलाल } खेचनेवाला और

खेचनेवाला । [ स्त्री० ।

प्रा० कलारिन-स्त्री० कलार की

प्रा० कलावंत-पु० गानेवाला,

गवैया, दाढ़ी ।

सं० कलि (कल्=गिनना) पु० चौपा

युग, कलियुग, कलयुग, (युगशब्द

को देखो) २ लड़ाई, भगड़ा ।

सं० कलिका } (कल्=गाना, वा

कली } गिनती) स्त्री० कौपल

विन सिला हुआ फूल ।

सं० कलिङ्ग (कलि=भगड़ा, गम्=

जाना) पु० कटक से पंदराभतक

का देश । सं० कलियुग (कलि, युग=समय)०



- विचार, बनावट, मानना, युगत,  
 बालसाजी, नकल ।  
 सं० कल्पांत (कल्प=प्रसादा दिन  
 रात, अन्त=पूरा होना) पु० मलय,  
 दुग्गन्ध. कल्प का अन्त ।  
 सं० कल्पित (कल्प=विचारना) कर्म०  
 बनाया हुआ, माना हुआ, कृत्रिम,  
 २. हटा, असत्य ।  
 सं० कल्मष (कर्म=अच्छा काम,  
 २. पुण्य, मो=नाश करना यहाँ रूको  
 ल, और स को प रोगपा) पु० पाप,  
 नरक, मल ।  
 सं० कल्याण (कल्प=निरोग, अणु=  
 जीना, वा कल्प=समाप्त, अणु=शब्द  
 करना) पु० कुरल, मंगल, शुभ,  
 २. एक रागनी का नाम ।  
 सं० कल्ल-पु० धरित, धरा ।  
 प्रा० कल्लर-पु० ऊपर, तारी ।  
 प्रा० कल्ला-पु० जवाड़ा, मक्का ।  
 सं० कवच (क=दवा, वच=ढगना,  
 वाकु=शब्द करना) पु० भिन्नम,  
 बाल्य कर्म ।  
 सं० कवल (क=पानी, वल=रचना)  
 पु० प्रास, कवर, कवा, और लुकमा ।  
 सं० कवि (क=शब्दकरना) पु० कव्य  
 बनाने वाला, जैसे वाल्मीकि, का-  
 लीदास आदि, शास्त्र, पंडित,  
 बुद्धिमान, २. भाद, चारण ।  
 सं० कवित्त (सं० कवित्व, कवि)  
 पु० कविता, काव्य, शास्त्र ।  
 कविता (कवि) स्त्री० कवित्वी
- बनाई हुई रचना, काव्य, पद्य, रत्नोक्त,  
 छन्द आदि, शास्त्री ।  
 प्रा० कविताई (कविता) स्त्री० पद्य  
 रचना, तमनीक ।  
 सं० कवीश्वर (कवि, ईश्वर=स्वा-  
 मी) पु० बड़ा कवि, बाल्मीकि ।  
 सं० कव्य कु=शब्दकरना) पु० पितरों  
 के लिये जो अन्न आदि पदार्थ ।  
 सं० कश्मल पु० मोह, अज्ञानता ।  
 सं० कश्य-पु० मदिरा, थोड़े कातंग ।  
 सं० कश्यप (कश्य=सोमलता, सोम-  
 बर्जी, पा=पीना) पु० एक मुनि का  
 नाम, मरीच श्रुति का पेदा और दे-  
 वता राक्षस और मनुष्यों का पुरुषा,  
 मनापति. कश्यप शब्द यथार्थ में-  
 पर्यक्त या आदि अन्त अक्षरों के वि-  
 पर्यय अर्थात् बदलने से कश्यपवना  
 इसका अर्थ हुआ सर्वज्ञ, २. अज्ञान  
 नाशक, विशेषज्ञानवान् ४ आत्मज्ञा-  
 नी, ५ परब्रह्म ६ शृष्टिकर्त्ता ।  
 सं० कष्ट (कष्ट=मारना, शानिपट्टवाना)  
 पु० दुःख, क्लेश, पीड़ा, त्रकलीक, संकटा  
 प्रा० कस-पु० कैसा, पु० परत,  
 ताव, २. जोर, बल, कैसा । [ टीस ।  
 प्रा० कसक-स्त्री० पीड़ा दुःख, टसक,  
 प्रा० कसना (सं० कष्ट=तैय्यना, वा  
 कष्ट=तांचना) क्रि० सं० तैय्यना,  
 तानना, जकड़ना, २. सोने की कसौ-  
 टी पर जिसके परतना, जांचना,  
 परतना, ३. चलना, धीमे चलना ।  
 प्रा० कसमसाना-क्रि० अ=हिलना,





प्रा० कांडासानिकलजाना-बोल०

दुख भयवां हानि से छुटाना ।

प्रा० कांडोपरघभीटना-बोल० व-

हुत सराहना, किसी की योग्यता

में अधिक बढ़ाई करना, ( जबकोई

किसी आदमी को बहुत सराहना

करता है तब वह आदमी नम्रतासे

सेमा कहता है )

प्रा० कांडोने-बोल० अपने लिये

आपसी दुख पैदा करना, अपनी

दुखई आप करना, किसी को दुख

देना । [ नगीच, निकट ।

प्रा० कांडा ( सं० कण्ठ ) पु० पास,

प्रा० कांडा ( सं० कन्द ) पु० प्याज ।

प्रा० कांडू ( सं० कान्दविक्र ) पु० भट-

भूना २ चीनी का हंदा ।

प्रा० कांधा ( सं० स्कन्ध ) पु० कंधा,

हाथ, कंध ।

प्रा० कांधादेना-बोल० सराहना

देना, २ मुँह को लेनाना ।

प्रा० कांपना ( सं० कंपन, कंप=

कांपना ) क्रि० अ० हिलना, धर-

पाना, हुनना, कंपना, घटपड़ाना ।

प्रा० कांस ( सं० काश, काश=चम-

कना ) पु० एक प्रकार की घास ।

प्रा० कांसा ( सं० कांस्य ) पु० एक

प्रकार की घास ।

प्रा० काक ( सं० काक=करना ) पु०

कौआ, काग, कापस ।

सं० काकतालन्याय=कौआ धमकर

ताड़ के छतपर जाकर फलको

खाता है तात्पर्य यह है कि धर्म से

सब पदार्थ प्राप्त होते हैं ।

सं० काकपक्ष ( काक=कौआ, पक्ष=

पंख, अर्थात् कौरे का पंख जैसे )

पु० पट्टा, जुल्फी ।

प्रा० काका } पु० चचा, चाप का

प्रा० कका } छोटा भाई, पिठूप ।

सं० काकिणी-स्त्री० बदाम, कधी

दो दमड़ी ।

प्रा० काकी-स्त्री० चची, चचाकीस्त्री,

किसकी ।

प्रा० काकातूआ-पु० मूँचे की जान

का पत्नी ।

प्रा० काकवधू-कवपी ।

प्रा० कागा } ( सं० काक ) पु० कौआ ।

कागा } पु० कौआ ।

प्रा० कागर-पु० किनारा, कोर, आँट,

= कंधी सीरी ।

सं० कांसा ( काञ्च=चाहना ) स्त्री०

चाह, इच्छा, चाहना, अभिलाष,

इबादिश ।

अ० कांमिस=पेल, पिनाप ।

सं० कात्र ( कच=चमकना )-पु०

-शीशा, आर्तिना, २ एक तरह की

आंखों की बीमारी । [ छहानी ।

प्रा० काचा-पु० कषा, २ झुरा,

प्रा० काझ ( सं० कण्ठ, कष्ट=वां-

धना ) स्त्री० धोनी का पत्रा जो पीछे से चकर बांधा जाता है, लांग, २ नाप के ऊपर का भाग ।

प्रा० काञ्चन-स्त्री० काञ्ची की स्त्री ।

प्रा० काञ्चनी-स्त्री० लंगोटी, कोपीन, जांघिया ।

प्रा० काछी पु० कुंजरा, माली ।

प्रा० काज } ( सं० कार्य्य ) पु०

प्रा० काजा } काम, धंधा, कारज ।

प्रा० काजल ( सं० कज्जल ) पु० सुरमा, अजन ।

सं० काञ्चन ( काचि=चमकना )

पु० मोना, सुवर्ण, स्वर्ण, तिला ।

प्रा० काट ( काटना ) पु० चीरा,

जगम, घाव, २ पैल, छांटन, तलछट,

३ कढ़ाह, नेजी, ४ धार ।

प्रा० काटकरना-बोल० घायलकर-

ना, जगपी करना, काटना ।

प्रा० काटकृट-बोल० छांट छूट, कतर-

न, छाटन, छीलन, टुकड़ा ।

प्रा० काटकृटकरना-बोल० कतरना,

काटना, तराशना, काट डालना,

२ काटलेना, छेलेना, मुमरा लेना ।

प्रा० काटखाना-बोल० दांतमारना,

दांत काटना, भंडोड़ना, बकड़ना,

चरना, टसना, ३ काटना ।

प्रा० काटना ( सं० काटना ) कि० क-

काटना कि० क-

ना, कतरना, चीरना, टुकड़ करना, २ काटखाना, मरना, मारनेना, ३ छीलना, ४ धारे में चीरना करना, ५ धार में चीरना चलायना, ६ बिताना समथराना, ७ कटाना ।

प्रा० काटडालना-बोल० काटना, माफ करना, उतार डालना, डालना ।

प्रा० काट ( सं० काष्ठ ) पु० लकड़ी

प्रा० काउकवाड़-बोल० लकड़ी की चीजें ।

प्रा० काटकाउल्लु-बोल० मूर्ख, बेवकूफ, चमड, चिन्मत्ता, भुध, मियां-मिट्टू समग्रग, गावडी ।

प्रा० काटकीभंवा-बोल० मूर्ख, बिल्ली, भुध स्त्री, बेवकूफ लुगई ।

प्रा० काउचवाना बोल० दुष्ट से निवाह करना, दुष्ट में जीना, रहितना से गुजगन करना ।

प्रा० काउमैपांवदेना -बोल० कैद होना, कैदी होना ।

प्रा० काउहोना-बोल० कड़ाहोना, मूसजाना, पथराना, पन्थरहोना ।

प्रा० काउपुतली ( सं० काष्ठपुतली )

काउपुतली } स्त्री० छकड़ी की बनी हुई मूरत ।

प्रा० काउकीड़ा ( सं० काष्ठकीट )

पु० रसमछ, उड़ीस, छाट कीड़ा,

२ पुन, एक कीड़ा जो लकड़ी को काटता है और खाता है।

प्रा० काठडा (सं० काठ) पु० ल-कठडा } कड़ी का बरतन।

० काठी (सं० काय, वा काष्ठ) स्त्री० जोन, २ शरीर, ३ दीलदील।

प्रा० काढ़ना—क्रि० अ० निकालना, सेचना, बाहर लेना; उधेदना, बाहर निकालना, कुरद्वेपर मूर्त से पूल बनाना, कसीदा निकालना।

प्रा० काढ़ा—पु० जोश दिया हुआ दवाई का पानी, काय, कसैलारस।

प्रा० काणा (सं० काण, कण=भाँख डकना) गु० एक थाँसवाला, पकात्त, २ (कछ) निसका गूदा सड़ गया हो, अथवा जिसमें कुछ गूदा न हो, ३ मूर्त, वेवकू, पु० काग, कोआ।

सं० काण्ड (कण=शब्द करना, वा जाना, वा कई विभाग करना) पु० सर्ग, संद, प्रकरण, अध्याय, भाग, त्वाक, विभाग, २ समूह, ३ इंडल, ४ समय, ५ बाण, ६ सेन, ७ घोड़ा, ८ तमा।

० कातना (सं० कर्चन, कृ=लोपना) क्रि० सं० सूत कातना; धागे पर कई से सूत बनाना।

कातर (का=घोड़ा, तृ=पार हो-परां कु=को का हो गया है)

गु० कायर, दरपोक, व्याकुल, प-वरापा हुआ।

प्रा० कातिक (सं० कात्तिक) पु० सातवां हिंदी महीना, कात्तिक।

प्रा० कादर (सं० कातर) गु० कायर, दरपोक।

प्रा० कादा (सं० कर्दम) पु० की-कादों } चढ़, चहला, पंक।

प्रा० कान (सं० कर्ण, कृ=करना, शब्द ज्ञान को) पु० सुनने की इंद्री, ध्वण, सुनने की राह।

प्रा० कान ऐठना } बोल० कान खी-कान अमेठना } चना, ताड़ना करना, सजा देना।

प्रा० कान भरना—बोळ० विरोध डालना, चुगली स्वकर्-भगद्द सड़ा करना, बलेड़ा डालना, तोड़ फोड़ करना।

प्रा० कान पर जून चलना—बोल० बहुत असावधान होना, बहुत दी-ला होना। [रस्तना]

प्रा० कान पर रखना—बोल० याद

प्रा० कान पर हाथ धरना—बोल० सुकरना, नहीं करना, न मानना, ऊँह करना, न करना।

प्रा० कान पकड़ना—बोल० अपने तई छोटा मान लेना; अपनी छोटीई शयवा निमाई को मान लेना।

प्रा० कानफूटना—बोल० बहराहोना।  
 प्रा० कानफोड़ना—बोल० शोरकर-  
 ना, गुल करना, गुहार करना, हल्ला  
 करना, हा हू करना।  
 प्रा० कानफूंकना—बोल० चुगकी  
 खाना, भेद कहना, भगड़ा उठाना,  
 २. संप्रदेना, सिध्दाना, शिजादेना।  
 प्रा० कानभुंकाना बोल० सुनने  
 को चाहना, सुना चाहना।  
 प्रा० कानदवाकर चले जाना—  
 बोल० भागमाना, पनाना, रमनाना।  
 प्रा० कानधरना—बोल० सुनना,  
 ध्यान देना। [ देकर सुनना।  
 प्रा० कानदेसुनना बोल० ध्यान  
 प्रा० कानदेना—बोल० सुनना, ध्यान  
 देना।  
 प्रा० कानकाटना—बोल० बढ़  
 निहनुना, बढ़चनुना, थकाना,  
 इराना, पीछेदेना।  
 प्रा० कानमड़ैहोना—बोल० चीक-  
 ना, दरना, मड़चना।  
 प्रा० कानमोल्देना—बोल० जताना,  
 चितना, मावशानकरना, सुनेकरना।  
 प्रा० कानलगना—बोल० भगोसे  
 जाना होना, विरहामी होना।  
 प्रा० कानमलना—बोल० नाइता  
 करना, मलदेना, हाटना, कान  
 देना, कान अमेरना।  
 प्रा० कानमें डैगडी देरना—

बोल० कानबंदकरना, बहरा बनना,  
 मुनी अनमुनी करना।  
 प्रा० कानमें बात मारना—बोल०  
 नहीं सुनने का बहाना करना, कान  
 में तेल डालना।  
 प्रा० कानमें तेलडालना—बोल०  
 नहीं सुनने का बहाना करना, का-  
 न में बात मारना।  
 प्रा० कानमेंतेलडालकेसोरहना—  
 बोल० असावधान होना, अचेत  
 होना, बे परवाह होना, ग्राफिक  
 होना।  
 प्रा० कानमेंकहना } बोल० काना  
 कानमें डालना } फूमी करना  
 करना, कानाकानी करना, कहदेना।  
 प्रा० काननहिलाना—बोल० गु-  
 रहना।  
 प्रा० कानहिलाना—बोल० राती  
 होना, पसन्न होना, हाँ हू करना।  
 प्रा० कानहोने—बोल० ममभना,  
 भूभना, वधुभना।  
 प्रा० कानावाती करना—बोल०  
 कान में बातकरना, काना फूमी  
 करना, काना कानी करना, मुम  
 फुम करना, २. सझाह करना।  
 प्रा० कानादुमी—बोल० काना वा-  
 ती, काना कानी, मुम दूमाह,  
 सुपर दुमर।  
 प्रा० कानाकानी करना—काना

धाती करना, कानाफूसी करना, रस-  
सफ़स करना ।

प्रा० कानोकानकहना—बोल०  
काना धानी करना कानाफूसी  
करना ।

प्रा० कान—बोल० लान, संकोच, मर्षा-  
दा, पान, परदा, अदब । [लजाना ।

प्रा० कानकरना—बोल० शरमाना,

प्रा० कानझोड़ना—बोल० पेशरम  
होना, निर्लज्ज होना, झीठ होना,  
गुस्साग्र होना ।

प्रा० काननकरना } बोल० दिठा-  
काननमानना } ईकाना, गु-  
हाराही करना, अदब नहीं मानना ।

सं० कानन (कन्=पमकना, शोधना,  
वा क=धानी, कन्=मीना, कर्मात्  
ओ धानी से कनता पूलता है) पु०  
जंगल, पन, विपिन, २ (क=प्रसा,  
कानन=झुंड़) प्रसा का झुंड़ ।

प्रा० कानी (सं० काणो) श्री० गु०  
एक काँचवाली शी ।

प्रा० कानीकौड़ी (सं० काणो=का-  
नी, कर्द=कौड़ी) श्री० बोल०  
पेभीकौड़ीजिमपेदेहरी, एटीकौड़ी ।

प्रा० कानी—श्री० बैर, ईद, राह ।

सं० कान्त (कन्=पमकना, वा कन्  
=चारना) पु० दहली, मछी, कति,  
बैर, गु० सुन्दर, कनेहर, प्यार,  
विच, पार: हुआ ।

सं० कान्ता (कन्=पमकना, वा कन्

=चारना) श्री० पजी, नुगार्ह, श्री,  
भाप्पा, पारवाली, प्यारी, मिया,  
मुन्दरी, २ कान्ति, मुन्दरता ।

सं० कान्ति (कप्=चारना) श्री०  
शीमा, मुन्दरगर्ह, चमक, दमक, खूब  
सुरती, दीप्ति, पकाश, २ पार, इच्छा ।

अं० कान्तेन्स=सभा, समान, म-  
जलित, जहमा ।

सं० कान्यकुब्ज=कन्वा=नङ्गी, कु-  
ब्जा=कुवड़ी) पु० कनौजदेश, २ ब्राह्म-  
खोही एकजाति, कनौजिया ।

प्रा० कान्ह } (सं० कृष्ण, पु० धीह-  
कान्ह } ण्डका नप । [नाम ।

प्रा० कान्हड़ा—पु० पहरागिणीका  
सं० कापुरुष (का=बुरा, पुरुष=पुरुष)  
पु० सोया मनुष्य, बुरा मनुष्य,  
२ दरपोक ।

श्र० काफ़ी=पर्याप्त, जलम् ।

सं० कान (कन्=चारना) पु० बार,  
दहमद, इच्छा, कामना, मनोरथ,  
पारीदूरी बोल, बारा हुआ दि,  
पन, २ कामदेव, प्यार, वा देवता,  
१ मुग, ४ मारवा ।

प्रा० काम (सं० कर्म) पु० काम,  
कार, धंरा ।

प्रा० कामजाना—बोल० काम से  
जाना, दादा जना २ दागजाना  
लड़ाई से दाग जना ।

प्रा० कानपूसीकरना—बोल० काम  
मिल बनना, काम सार करना, नि-

सका काम तरकारी और फलफला-  
कारी बिचने का है । )

प्रा० कुंजी ( सं० कुञ्जिका, कुञ्ज=टेढ़ा  
होना वा खींचना, कसना ) स्त्री०

चाशी, नाली ।

प्रा० कुंदी स्त्री० कपड़ों का पीटना ।

प्रा० कुंदीकरना शैल० कपड़ों का  
पीटना, पीटना ।

प्रा० कुंवर ( सं० कुमार ) पु० बेटा,  
लड़का, २ राजा का बेटा, राजकु-  
मार, राजपुत्र ।

प्रा० कुंवरी ( सं० कुमारी ) स्त्री०  
बेटी, लड़की, २ राजा की बेटी,  
राजकन्या, राजपुत्री ।

प्रा० कुंवारा ( सं० कुमार ) पु० अन-  
व्याहा लड़का, गु० अनव्याहा ।

प्रा० कुंवारी ( सं० कुमारी ) स्त्री०  
अनव्याही लड़की, गु० अनव्याही ।

सं० कुकर्म ( कु=बुरा, कर्म=काम )  
पु० बुरा काम, अन्याय, पाप, दुःकर्म ।

सं० कुकुट ( कु=गुद करना, वा कुक  
=लेना ) पु० मुर्गा, कुकड़ा ।

सं० कुकुर ( कुक=लेना वा कुक=  
गुद करना ) पु० कुत्ता, खान ।

सं० कुक्षि ( कुक्ष=निहालना ) स्त्री०  
पेट, कोख ।

सं० कुंकुम ( कुंक=टेढ़ा अथवा छिपा  
माना ) पु० केसर, मुगनिपत्रद्रव्य-

विशेष—२ रंगी ।

प्रा० कुंकुमा ( सं० कुंकुमे ) पु० गुलाब  
रखने का बरतन ।

सं० कुच ( कुच=धाँपना, वा पिलाना )  
पु० छाती, चूची, घन, स्तन, पिस्तौ ।

सं० कुचन्दन ( कु=कम अर्थात् विन  
मुगन्ध, चन्दन ) पु० लालचन्दन,  
रक्तचन्दन ।

सं० कुचकुडमल-पु० कुचकली, चू-  
ची की धुंडी ।

प्रा० कुचर-गु० निंदक, दोषदेहनेवाला

प्रा० कुचलना-क्रि० स० घूरकरना,  
पमलना ।

प्रा० कुचला-पु० मैनफल, एक औ-  
षध का नाम ।

प्रा० कुचाल ( कु=बुरी, चाल=रीति )  
स्त्री० कुरीति, बुरा चलन, कुदेव,  
बुरा चालचलन ।

प्रा० कुचाह-स्त्री० बुरी खबर, बद  
खबर, २ नचहना, स्नेह ।

प्रा० कुचेला-गु० मैला, मैले कपड़े  
परने हुए ।

प्रा० कुच्छे ( सं० कित्तिव=थोड़ा )  
गु० थोड़ा कम कुच्छ एक आध, जो  
कुच्छ, थोड़ा बहुत ।

प्रा० कुच्छोरगाना-बोल० सूटी  
बात बनाना, २ औरही बात कहना ।

प्रा० कुच्छेक-बोल० थोड़ा बहुत, कुछ  
कुछ, कुछ ।

प्रा० कुलसेकुलहोना { बोध० वि-  
कुलकाकुलहोना } तत्कुलसद-

समाना, सबकासब सदसमाना ।

प्रा० कुलकुल-बोल० योडासा,  
कुलेरु, योडाएक योडा बहुत, कुल ।

प्रा० कुलनकुल-बोल० योडापहुच,  
योडासा ।

प्रा० कुलनहीं-बोल० कोई और  
धील नहीं, कुल और नहीं, २ नि-  
कम्मा, कामका नहीं ।

प्रा० कुलहो-बोल० चारे सो हो,  
जो कुल हो ।

सं० कुज ( कु=रुखी, जन्=पैदा हो-  
ना ) क० पु० पूरवीपुच, मंगल,  
घोष, सेराम्मा ।

प्रा० कुजलीवन ( सं० कुजलवन,  
कजलीवन ) कुज=हाथी,

वन=मंगल ) पु० हाथियों का वन,  
मिस्र जंगल में हाथी बहुत हैं ।

सं० कुजाति ( कु=बुरी, जाति=जात )  
पु० नीचजातिका, कमीना, नीच,  
अधम ।

सं० कुचित ( कुच=देहा होना )  
भी० देहा, सिपय, हुमा, हुमराला ।

सं० कुज ( कु=परवी, जन्=पैदा हो-  
ना ) पु० चर-जगद जहां सपनपेद  
और बेनी आदि हैं, गुमान,  
२ हाथी की दुई ।

सं० कुज ( कुज=हाथी की दुई  
या कुज=सपन वृत्तों की ओर,  
परा=देना, धर्याइ जो कुजमें रहता  
है ) पु० हाथी, हस्ती, मंथेय ।

प्रा० कुटकी ( सं० कुटका, कुट=का-  
टना ) स्त्री० एक दरवाजे का नाम ।

प्रा० कुटकी-स्त्री० एक मन्दार का  
मन्दार, एक जानवर का नाम ।

सं० कुटज ( कुट=पराह, जन्=पैदा हो-  
ना ) पु० एकदरवाजे की पाका नाम ।

प्रा० कुटनी ( सं० कुटनी, कुट=काट-  
ना, निंदा करना ) स्त्री० दुर्ती, परा-  
ई स्त्री की पराये पुरुष से मिलाने  
वाली, दलाला ।

सं० कुटिल ( कुट=देहा होना ) क० पु०  
देहा, कपटी, छोटा, कड़ा, कूर,  
मगरा ।

सं० कुटी ( कुट=देहा होना ) स्त्री०  
कुटीर ( भोपड़ी, मन्त्री ) ।

प्रा० कुटुम ( सं० कुटुम्ब, कुटुम्ब=कुल  
का पालन करना ) पु० कुनवा, परि-  
वार, पराना, कुल, खानदान ।

सं० कुटुम्बी ( कुटुम्ब ) पु० परवाला,  
परवारी, पुरख, खानदान ।

प्रा० कुटेव ( सं० कु=बुरी, दि० देव=  
स्वभाव ) स्त्री० कुबाल, बुराचलन ।

सं० कुटार ( कुट=टूट, कुट=काटना  
और अ=ताना, धर्याइ जो वृत्तों



परिकाटने के लिये चलाया जाता है) पु० कुंहाड़ी, घमूला, टांगी ।

प्रा० कुंठाहर (सं० कुस्थान, कु=बुरी, स्थान=जगह) स्त्री० बुरी जगह ।

प्रा० कुड़कना-क्रि० अ० कुड़कुड़ाना, कुटकुटाना, कड़कड़ाना, २ क्रोधसे बोलना ।

सं० कुड़व-पु०, प्रस्थ का चौथा भाग चारपल, आधपाव ।

प्रा० कुड़ना (सं० कुष्ट=क्रोधकरना) क्रि० अ० कुलना, दुख करना, शोच करना २ गुस्सा करना, क्रोध करना, ३ जलना, दूसरे की बदती देखकर मनमें दुख करना ।

सं० कुण्डक (कुण्ड+अक) क० पु० मूर्ख, मन्द, जाहिल, रुठनेवाला ।

सं० कुण्डित (कुण्ड=भोया होना, या मुस्न होना) क० पु० भोया । २ थालसी ३ लज्जित, रफा हुआ ।

सं० कुण्ड (कुडि=जलाना, वा पचाना) पु० जल के रहनेकी जगह, होत, चरमा, २ होम की आग रगने का गड़हा, होम का कुण्ड ।

सं० कुण्डल (कुडि=पचाना वा जलाना) पु० कानमें पहननेका गड़ना, कण्ठपूषण, २ घेरा, मंडल ।

प्रा० कुंडलिया (सं० कुण्डलिका) पु० एक ऋतु का नाम २ १२ मात्रा का छन्द ।

सं० कुण्डली (कुण्डल केतु) स्त्री० घेरा, २ साँप, ३ जन्मपत्री, जातपत्र ।

प्रा० कुण्डी (सं० कुण्ड=वचन) स्त्री० दरवाजे की सिकली या जंजीर ।

प्रा० कुतरना (सं० कर्चन, कुट=काटना) क्रि० सं० दाँतोंसे काटना ।

सं० कुतर्क (कु=बुरी, वा खूबी, तर्क=दलील) स्त्री० बुरी तर्क, खूबी तर्क, हुजमत ।

सं० कुतूहल (कुत=कुत्ता, हल=लिसना, अर्थात् कुत्त सेल करना) पु० खेल, कौतुक ।

प्रा० कुत्ता (सं० कुक्कुर) पु० एक जानवरकानाम, रवान ।

सं० कुत्सा (कुत्स=निंदा करना) प्रा० स्त्री० निंदा, बुराई, अपमान, अपमान ।

सं० कुत्सित (कुत्स=निंदा करना) मर्म० निंदित, नीच, बुराई करने योग्य, नीचा, कपीना ।

प्रा० कुदाल (सं० कुदाल, कु=कुदाल) परती, उद=बल, कु=बढ़ा करना) स्त्री० मिट्टी सोदने का औजार, कुदाली, पेठ, बेलका ।

सं० कुदृष्टि (कु=बुरी, पापकी, दृष्टि=दीड) स्त्री० बुरी दीड, पापकी, पाप से देखना, बदनाम, बुरी निगाह ।

सं० कुधर ( कु=धरती, धृ=रसना )  
कुध्र पु० पहाड़, पर्वत, शैल ।

प्रा० कुधातु ( कु=धुरी, धृ=धातु, धव  
से नीच, धातु=धातु ) श्री० लोहा,  
लोह ।

सं० कुनवा ( सं० कुडम्ब ) पु० प-  
राना, कुडम्ब, कुल, धानदान ।

सं० कुनारी ( कु=धुरी, नारी=स्त्री )  
श्री० दृष्टनारी, रराच औरत ।

सं० कुनीति ( कु=धुरी, नीति=चाल )  
श्री० कुचाल, धुरी चाल, कुनीति ।

सं० कुन्त ( कु=धुरा, कन्त=आश्रित )  
पु० बरधी, माला ।

सं० कुन्ती ( कम्=चाहनां ) श्री०  
शरसेन की बड़ी बेटी, धीकृष्ण की

कृषी, पांडु की श्री और युधिष्ठिर  
अर्जुन और भीमसेन की मा ।

सं० कुन्द ( कु=धरती, दो=झटना,  
बा दे=शुद्ध करना, बा. द=पाती,

कुन्द=मिथोना अर्थात् जो पानी  
से सींचा जाता है ) पु० मोगरा, एक  
नरर का, सफेद फूल ।

प्रा० कुन्दन-पु० अच्छा सोना,  
साक सोना, चमक सोना ।

सं० कुपथ ( कु=धुरा, पथ=रस्ता )  
पु० कुपार्थ, धुरी राह, धुरारास्ता,  
कुपथ, २ धुरार्थ, धुरा चलन ।

सं० कुपात्र ( कु=धुरा, पात्र=दानदेने

योग्य ; द्राक्षण, वा बरतन ) पु०  
अयोग्य, नालायक ।

सं० कुपित ( कुप=कोपना ) पु० क्रो-  
धित, कोपित ।

सं० कुपुरुष ( कु=धुरा, पुरुष=मनुष्य )  
पु० बड़ भौदमी, निपिद मनुष्य ।

प्रा० कुपा ( सं० कुन्त, कु=धुरी तरह  
से, तन्त्र=कैलाना ) पु० धी अथवा तेले

रसने का चमड़े का बरतन । [हीना ।  
प्रा० कुपाहोना-शैल० बहुत मोटा

सं० कुफल ( कु=धराच, फल=नती-  
मा ) पु० सराच नतीना, धुराफल ।

प्रा० कुव ( सं० कुन्त, कु=धुरी तरह  
से, कुव=कुचक, पीठ का झुकाव ।

प्रा० कुञ्जा ( सं० कुन्त, कु=धुरी तरह  
से अथवा थोड़ा, उन्त=सींचा रोना,।

श्री० कुचड़ी कुचड़ा, टेरी पीठका, जि-  
सकी पीठ झुकी हुई हो, २ श्री० कंस

की एक दाधी का नाम जिसको  
धीकृष्ण ने सीपी की थी ।

सं० कुभार्या ( कु=धुरी, भार्या=प-  
त्नी ) श्री० धुरी लुगड़ी, कलहिनी,  
लड़ाका श्री, कुलटा ।

सं० कुमति ( कु=धुरी, पति=बुद्धि )  
श्री० धुरी मयका, धुपत, २ पु० धुरी,  
हुँदुई, हुँदुई ।

सं० कुमार ( कु=धुरा, मर=मरना, बाकु  
=धुरा अथवा थोड़ा, पार=झपड़ेव )

पु० कुंवर, कुमार, वाञ्छक, चिनयाहा,  
कुंतारा ।

सं० कुमार्ग ( कु=पुरा, मार्ग=रेस्ता )  
पु० कुप, पुरी राह, कुनाल ।

सं० कुमार्गगामी (कुमार्ग=पुरीमार्ग,  
गम+ई, गम=जाना) पु० पुरीरा  
इचननेवाला, पुरीराइचननेवाला ।

सं० कुमुद ( कु=परणी, मुद=मनम  
होना वा करना ) पु० कुमोदनी,  
कोई, पीना कमन जो रात को रि-  
लता है और दिन को सुंद जाता  
है-२ यह वानर का नाम ।

सं० कुमुदवन्तु-पु० पद, पाद ।

सं० कुमुदिनी ( कुमुद ) स्त्री० कम-  
निनी, २ कमलों का समुद्र, ३ यह  
जयर प्रहो कमल पैदा हो ।

सं० कुम्भ ( कु=तृणी, उम्भ=म-  
रना, वा द=गामी, उम्भ=मरना,  
वा कुन=दकना ) पु० पड़ा, चलग,  
चलमा, २ हाथों का गिर, ३ उगो-  
निय में पालवर्ती बगि—कुम्भ का  
वेला=वेला जो हिन्दुओं में बारहवें  
वर्ष होता है, कुम्भी=वेला जो छठे  
वर्ष होता है ।

सं० कुम्भकर्णी ( कुम्भ=हाथों का  
गिर वा पड़ा, कर्ण=कान, जिसके  
बाज हाथों के गिर के पालवर्ती  
पु० हाथ का कर्ण ।

सं० कुम्भकार ( कुम्भ=पड़ा हाथ=  
हाथों का ) पु० कुम्भार, कुम्भार ।

सं० कुम्भज- ( कुम्भ=पड़ा, जन्म=पैदा  
होना ) पु० अंगस्ति श्रुति का नाम ।

सं० कुम्भशाला-स्त्री० पड़ा रखने  
की जगह, धनीची ।

सं० कुम्भसंभव ( मू=होना ) पु०  
अंगस्ति श्रुति, वशिष्ठश्रुति, द्रोणा-  
चार्य, ये पित्रावरुण के पुत्र हैं ।

सं० कुम्भिका ( कुम्भ=पड़ा ) स्त्री०  
कुम्भी पदवृत्तकानामे ।

सं० कुम्भीपाक ( कुम्भी=तेल का  
कड़ाह, पाक=पचाना ) पु० पंहुनरक  
का नाम, जहाँ पापी गोमं तेल के  
कड़ाहों में टांके जाते हैं ।

सं० कुम्भीर ( कुम्भित=बाँधी, ईर  
=पीड़ा देना ) पु० मगरमच्छ, प-  
डियाल, घाह ।

मा० कुम्भार ( सं० कुम्भकार ) पु०  
मिट्टीके वाहन बनानेवाला, कुनाल ।

सं० कुयोग ( कु=पुरा, योग=वेष्ट )  
पु० कुमंगल, पुरी मंगल, युगमयोग ।

सं० कुट-पु० गन्द, आवाज, गन्द  
कपा, गना, तपीदार, हिमान ।

सं० कुटी-स्त्री० बीज, पेदी ।

सं० कुटी ( कु=तृणी, उ=कुटी  
होना ) पु० हति मग ।

मा० कुटी-पु० मरतोम, मरतोमि,  
मरति, मृत । [ तिम्मा, मरतोम ।

सं० कुटीर ( कु=तृणी, उ=कुटी  
होना ) पु० कुटीर, कुटीर ।

सं० कुरीति (कु=पुरी, रीति=चाल)

पु० कुचाल, कुदेव, पुरीचाल ।

सं० कुरु (क=करना) पु० दिछी के

एक पुराने राजा का नाम ।

सं० कुरुक्षेत्र (कुरु=एक राजा का

नाम, क्षेत्र=प्रगढ़, वा कुरु=पाप,

कु=पुरी तरह से, क=रोना, क्षेत्र,

जगह, अर्थात् पाप को दूर करने

वाली जगह) पु० दिछी के पास

एक जगह है जहाँ कौरवों और

पाण्डवों में लड़ाई हुई थी ।

सं० कुरुप (कु=पुरा, रूप=स्वरूप) पु०

मोड़ा, कुडौल, भदिसा, पुरी

मुरत का ।

प्रा० कुर्मी-पु० एकनातिक नाम जो

सेना का ध्वज करते हैं ।

प्रा० कुर्याल-सी० पत्थर के चैन और

बचाव से बँडने की दशा, कि जब

बह चोवसे अपने पत्नों की सवारी

है, (हसीसे) २ चैन, मुल, आराम

प्रचाव ।

प्रा० कुर्याल में गुलेला लगना-

बोल० निराश होना, अथवा चैन

के सपप, दुख में गिरना ।

प्रा० कुरी-सी० पचनी, नरपट्टी ।

प्रा० कुल (कुल=बँडा होना, वा

बाधना) पु० बंश, पराना, कुनवा,

जाति, बर्ण ।

सं० कुलघाती (कुल=बंश, घ्न=

नाश करना, इ का घ होजाता है)

क० पु० कुलनाशक ।

सं० कुलतारण (कुल=बंश, तारण=

पार करनेवाला) पु० कुल को बचाने

वाला लड़का, सप्त लड़का, गुण-

वानलड़का जिससे कुलशोभता है ।

सं० कुलद्रोही (कुल=बंश, द्रोही=

विरोधी) पु० कुलका नाश करने

वाला, बुरे काम करने से अपने कु-

लकी निन्दा करानेवाला ।

सं० कुलधर्म (कुल=बंश, धर्म=

मत) पु० अपने बंशकी धर्म, कुल-

ध्वजदार, कुलकी चाल ।

सं० कुलपालक (कुल=बंश, पाल=

पोखना) क० पु० कुटुम्बपोषक,

खानदान परवर ।

सं० कुलपूज्य (कुल=बंश, पूज्य=पूज-

ने योग्य) पु० सब घराने के पूजनी-

क, २ कुलदेवता, इ अपने घराने

के पुरोहित ।

प्रा० कुलबुलाना-कि० अ० खुन-

छाना, २ कलमलाना ।

सं० कुलवन्ती-कुल=पराना, वन्ती

=बाधनी) सी० अच्छे घराने की सी,

पतिव्रता, सधी, मुरीला ।

सं० कुलवान् (कुल=पराना, वान्

=वाला) पु० अच्छे घराने का,

कुलीन, भेष ।

सं० कुलक्षण ( कु=बुरा, लक्षण=चिह्न ) पु० बुरा चलन, कुस्वभाव कुचाल ।

प्रा० कुलात्र सी०=कुंद, फांद, उद्यान, लपेट, छलांग ।

प्रा० कुलांचमारना=बोलें छलांग मारना, फांदना ।

प्रा० कुम्हलाना=कि० अ० मुरझाना, मरना ।

फ्रा० कुलह } टोपी, जंघीटोपी ।  
कुलाह }

सं० कुलाचार ( कुल=घराना, आचार=चलन, या धर्म ) पु० कुलधर्म, कुलव्यवहार, खानदानी रस्म ।

सं० कुलाल ( कुल=रकड़ा करना ) पु० कुम्हार, मिट्टी के धरतन बना-ने वाला, कुम्भकार ।

प्रा० कुल्हिया सी० कुलरही मिट्टी का एक छोटा गोल धरतन ।

प्रा० कुल्हियामें गुड़ फोड़ना=बोन० किसी कापटो छुपे-२ करना, जो काम बहुतों से होता है उसको थोड़े आदमियों के साथ करने के लिये परिश्रम करना ।

प्रा० कुल्हाड़ी ( सं० कुलारी ) सी० बमक, कुन्हाड़ी ।

सं० कुलिया ( कु=बुरी तरहसे ) निरा=भेदा करना, बां कुलित=पराइ,

शी=नाशकरना, बां कुलि=हाथ, शी=सोना ) पु० बज्र, इन्द्रका शस्त्र ।

सं० कुलीन ( कुल ) पु० कुलवान्, अच्छे घराने का, श्रेष्ठ, शरीफ ।

सं० कुवलय ( कु=धरती, यल=कंकण ) पु० कमल, कोई सफेद या नीला कमल, नीलोफर ।

सं० कुवलिया ( कु=बुरा, यल=जोर ) पु० कंस के हाथी का नाम जिसमें १०००० हाथियों का बल था जिसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

सं० कुविहङ्ग ( कु=बुरा, विहङ्ग=आकाश, गम्=जाना ) पु० बाज, गुर्रा, शाहीन ।

सं० कुवेर ( कु=फैलाना अपने धन को, वा कु=पृथ्वी, वृ=ढकना, अपने धन से, वा कु=बुरा, वेर=शरीर ) पु० धन का देवता, यक्षों का राजा, उत्तर दिशाका दिक्पाल ।

सं० कुश ( कु=पृथ्वी, शी=सोना, वा कु=पाप, शी=नाशकरना, वा कुश=मिट्टना ) पु० एक प्रकारकी घास, दधे, दाम, कुशा, २ रावण इन्द्रका वेद्य ।

सं० कुशल ( कुश=विलक्षण, वा कु=पृथ्वी, यल=जाना ) पु० कन्याका मंगल, पैन चान, पु० चतुर ।

सं० कुशलधेम ( कुशल + धेम ) पु० कुशल मंगल, कैवचान ।

प्रा० कुशलांत ( सं० कुशल ) श्री०

कुसरात ( कुशलात्वेन, चैन  
चान, अपन अपान ।

सं० कुशाग्रबुद्धि ( कुश + अग्र +  
बुद्धि ) श्री० तेजःमह, पैनीबुद्धि

श्रीम बुद्धि ।

सं० कुशूला-पु० दिहरी, कुटिली ।

सं० कुट ( कुट=निदानना ) पु० कोद,

एक प्रकार का रोग जो अठारह

प्रकार का है, उन में से सात तरह

का तो बड़ा कठोर और दुःखदायी

होता है, और ११ तरह का हल्का

और थोड़ा दुःख देता है ।

सं० कुटनाशिनी ( कुट=छोड़, ना-

शिनी=नाश करनेवाली ) श्री० एक

बेनी का नाम, सोमराज बेनी ।

सं० कुटी ( कुट ) पु० कोदी ।

सं० कुप्पाण्ड ( कु=पोड़ी, उष्ण

कुप्पाण्ड ) = गरमी, अपह=बी-

ज, अर्थात् जिसके बीज में थोड़ी

गरमी है ) पु० कोहरे का फल ।

सं० कुसंग ( कु=बुरा, संग=साथ )

पु० बुरी संगति, बुरों का साथ,

बुरा सोहवन ।

कुसुम ( कुस=मिलना, वा कु=

नी, स्मि=मिलना ) पु० फूल,

लाल फूल जिसमें कोहरे लाल

पावे हैं ।

सं० कुसुमशर ( कुसुम=कुसुम, शर=

बाण ) पु० कामदेव ।

सं० कुसुमिति ( कुसुम ) पु० खिली

हुआ, फूला हुआ, महुलित ।

सं० कुसुम्भ ( कुस=मिलना, वा कु=

पृथी, कुम्भ=वपकवा ) पु० कुसुम,

लाल फूल जिसमें कोहरे लाल रंग

पावे हैं, स्वर्ण, सोना ।

प्रा० कुसुम्भा ( सं० कुसुम्भ ) पु०

कुसुम का रंग, २ दानी हुई धंग ।

सं० कुस्वम ( कु=बुरा, स्वम=सताना )

पु० बुरा सताना ।

सं० कुहक ( कुह=भर, कुह=मारच-

रथ ) क० पु० कुटिल, फरेबी, झुकी,

मायावी, इन्द्रजाली, बानगीर ।

प्रा० कुहड़ ( सं० कुम्पांड ) पु०

कुम्हड़ कोहरे का फल ।

प्रा० कुहराम-पु० विलाप, रोना,

फलाना । [ जाना ।

प्रा० कुहाव-मा० श्री० कुटना, रुद

प्रा० कुहासा ( सं० कुहेलिका, कु=

घाती, बह=पेरना ) पु० कुरर,

कोहर, धुंध ।

प्रा० कुहक ( कुह=भरवा करना )

सं० कुह ( श्री० कोपटकीरीली ।

प्रा० कुजा ( सं० रूप ) पु० कुरा,

कुजा इन्द्रा ।

प्रा० कूची ( सं० कूची, कु=गल

करना) स्त्री० भाड़ने की चीज;  
पोचारा देनेकी वदनी ।

प्रा० कूंडी-स्त्री० भांग आदि पीसने  
का बरतन, लोहे की टोपी ।

प्रा० कूंतना { क्रि० स० मोल ठहर-  
कूतना } ना, मोल जांचना,  
मोल अटकलना ।

प्रा० कूकना ( सं० कू=शब्दकरना )  
क्रि० अ० चिल्लाना, बोलना, कुह-  
कुह करना ।

प्रा० कूकर ( सं० कुकुर ) पु० कुत्ता ।

प्रा० कूजना ( सं० कूजन, कूज=शब्द  
करना ) क्रि० अ० शब्दकरना, बोलना ।

सं० कूट ( कूट=जलना, वा ढकना )  
पु० पहाड़ की चोटी, २ ढेर, ३  
छिछ, कापट, झूठ ।

प्रा० कूट-पु० गला हुआ कागज जो  
ढकती बनाने के काम में आता है,  
२ स्त्री० नकत, भड़ैती, बंदरबाजी ।

प्रा० कूटना ( सं० कुटन, कुट=काट-  
ना ) क्रि० स० ठुकड़े २ करना,  
चूरना, कुचलना, तोड़ना, २ पीटना,  
मारना, लठियाना ।

प्रा० कूड़ा-पु० भाड़न, बुरान,  
कुँकुटे, पासपात, अगड़ बगड़, पास  
फूस, कचरा ।

प्रा० कूडि-स्त्री० लोहे की टोपी ।

प्रा० कूट-गु० रस, मूद, मोद, गैवार ।

प्रा० कूदना { ( सं० कूदन, कूद=छे-  
कुदकना ) लना } क्रि० अ० उ-

छलना, फांदना, २ प्रसन्न होना,  
खुश होना ।

सं० कूप-कू=शब्द करना, जिसमें  
मेढ़क शब्द करते हैं, वा कु=घोड़ा,  
भाप=गानी ( जिसमें ) पु० कूवा,  
कूआं, इंदारा ।

प्रा० कूर ( सं० कूर ) गु० निडुर,  
निर्दयी, कठोर, २ मूर्ख, मोढ़, गैवार, कूड़ ।  
सं० कुर्म ( कु=बुरा वा घोड़ा, जर्मि बेग  
जिसका ) पु० कलुवा, कच्छप, कमठ ।

सं० कुल ( कुल=घेरना, ढकना वा  
रोकना ) पु० तीरे, तट, किनारा ।  
सं० कुलदुम, पु० तटस्थदत्त, नदी के  
किनारे के दत्त ।

प्रा० कुला, पु० पट, चूतड़, नितम्ब ।

अ० कूली { पु० मजदूर, बोझा देने-  
कूली } बाछा, पोदिया, पोदिया ।

सं० कूच्छ-भा० पु० कठिनता, सख्ती ।

सं० कृत ( कृ=करना ) कर्म किया हुआ,  
बनाया हुआ, रचित, पु० सतपुंग  
२ फल ।

सं० कृतकार्य ( कृत=किया, कार्य  
=काम ) कर्म पु० फलीभूत,  
कामयाव, कामपूरा हुआ ।

सं० कृतकार्यता-भा० स्त्री० काम-  
याची, काम की पूर्णता ।

सं० कृतकृत्य ( कृ=क्रिया, कृत्य=करने योग्य, कृ=करना ) र्म्यं पु०  
योग्य काम को जिसने किया हो,  
कृतार्थ, कृतकार्य, धन्य ।

सं० कृतम ( कृ=क्रिया हुआ,  
प्रो० कृतमी ) र्म्यं पु०  
जो उपकार को नहीं माने, गुण  
नहीं माननेवाला, नपकहराम, ना-  
शुक्रा, इहसान करामोश ।

सं० कृतमता—भा० स्त्री० इहसान  
करामोशी, उपकारधन ।

कृतज्ञ ( कृ=क्रिया हुआ, ज्ञा=जानना ) कं० पु० जो उपकार को माने, गुण माननेवाला, उपकार माननेवाला, नपकदलाल ।

कृतविद्य ( कृ=क्रिया हुआ, विद्=मानना ) र्म्यं पु० मशहूर,  
धन्यवादित, शास्त्र, अधीतविद्या ।

सं० कृतवीर्य्य-पु० पिता, वीरविशेष ।

सं० कृतान्त ( कृ=क्रिया, अन्त=अधो नागों करनेवाला ) पु० यम,  
काल, मौत ।

सं० कृतार्थ ( कृ=क्रिया, अर्थ=प्रयोजन ) र्म्यं पु० जिसने अपना प्रयोजन पूरा किया हो, जिसकी इच्छा पूरी होगी हो, कामयाब, संतुष्ट ।

सं० कृति ( कृ=करना ) स्त्री० कार्य,  
काम, हिता, आचरण, उपकार,  
कारण ।

सं० कृत्ति-स्त्री० चर्म, चमड़ा, भोजन  
पत्र, कृत्तिका नक्षत्र, चमड़े की रस्सी ।

सं० कृत्तिकर ( कृत्ति=काम, कृ=करना ) कं० पु० सेवर, कृत्तिकर,  
उपकारी ।

सं० कृत्तिका ( कृ=काटना ) स्त्री०  
दीसरे नक्षत्र का नाम ।

सं० कृतिन { कं० स्त्री० पण्डित,  
कृती } योग्य, लायक, पुण्य-  
वान्, निपुण, साधु, कृतार्थ ।

सं० कृत्य ( कृ=करना ) पु० काम  
करने योग्य काम, कर्त्तव्य कर्म,  
र्म्यं करने योग्य, कर्त्तव्य ।

सं० कृत्रिम ( कृ=करना ) र्म्यं पु०  
किया हुआ, बनाया हुआ, बना-  
बट का, काल्पित, जो असली न  
हो, मसनुरी ।

सं० कृत्रिमपुत्र ( कृत्रिम=किया हुआ  
पुत्र=बेटा ) पु० गोद लिया हुआ  
लड़का, धर्मशास्त्र में बारह प्रकार  
के पुत्र गिनाये हैं उनमें से एक  
प्रकार का बेटा ।

सं० कृत्स्न—गु० मध्यमवृत्त, आहत,  
दृष्टा हुआ, जलान्तर्गत, दृष्टा हुआ,  
पु० संपूर्ण, जल, गंधूष अर्थात् बुझा ।

सं० कृत्स्न—पु० सम्पूर्ण, सब, जल,  
कृत्ति, उदा, कृत्ता, समग्र ।

सं० कृपण ( कृ=दुःखनाशना ) पु०  
कंजस, सूय, दुष्ट, बर्त्तल ।



सं० कृपणता—भा० स्त्री० चुष्टा,  
कंजूसी, बखीली ।

सं० कृपा ( कृप्=कृपा करना ) स्त्री०  
दया, अनुग्रह, मिहरवानी ।

सं० कृपाण ( कृप्=समर्थ होना, वा  
कृपा=दया, नुद्=जाना ) स्त्री० तल-  
वार, खड्ग, खाँड़ा, शमशेर ।

सं० कृपानिधान ( कृपा=दया, नि-  
धान=जगह ) धि० पु० कृपा के  
घर, दयालु, कृपालु, कृपा करने  
वाला, जायमिहरवानी ।

सं० कृमि ( कृम्=जाना ) पु० की-  
कृमि } डा, पतंगा, मकोड़ा, पर-  
वाना ।

अ० कृमिनल—फौजदारी ।

सं० कृश ( कृश=पतजा होना ) पु०  
दुबला, पतजा, दुर्बल, चीण,  
लायार, नकीह ।

सं० कृशाक्षी ( कृश=गन्द, अक्षि=  
आँख ) गु० मन्ददृष्टि, कोताहनजर ।

सं० कृशानु ( कृश=पतजाकरना ) पु०  
आग, अग्नि, आगी, अनल ।

सं० कृपक ( कृप्=हलजोतना ) पु०  
कृपाण } हिमान, हल जोतने  
वाला ।

सं० कृपि ( कृप्=हलजोतना ) स्त्री०  
वेनी २ धरती ।

सं० कृपिकर्म-पु० सेती, चारनकारी ।

सं० कृपिकारक ( कृपि+कारक )  
पु० पु० कृपान, कारनकार ।

सं० कृष्ण ( कृष्=लैचना, वा काला  
रंग होना ) गु० काला, अंधेरा, पु०  
विष्णुका आठवाँ अवतार, बामुदेव,  
देवकीनन्दन । “कृपिर्मुवाचकः शब्दः  
गुणनिर्वाचकः । तयोरेवंपर  
ब्रह्म, कृष्ण इत्यभिधीयते” वायस,  
कौवा, कलिपुग, कोकिल ।

सं० कृष्णपक्ष ( कृष्ण=अंधेरा वा  
काला, पक्ष=पक्ष ) पु० अंधेरा  
पक्ष, वादि ।

सं० कृष्णमय ( कृष्ण=श्रीकृष्ण,  
मय=रुपा वा मिलाहुआ ) गु० कृष्ण  
के ध्यानमें लगाहुआ, श्रीकृष्णरूप ।

सं० कृत्त ( कृप्=कलना करना ) पु०  
निपमित, बाकायदा ।

सं० कृष्णसार-पु० कालामृग ।

प्रा० केंचुवा ( सं० किंचुनुक, किम्  
=कुच्छ, चुलुम्प=हिलाना, वा काट-  
ना ) पु० जमीन का कीड़ा, एक  
प्रकार का कीड़ा ।

प्रा० केकड़ा ( सं० कर्कट ) पु० गेंगा,  
एक जानवर का नाम ।

सं० केकयी ( केकय पदराजा का  
केकयी } नाम स्त्री० केकयराजा  
केकेयी } की बेटी, राजादशरथ  
की स्त्री, और भरत की मा ।

सं० केकी ( केका=मोर की बोली )  
पु० मोर, मयूर ।

प्रा० केतकी ( सं० केतक, किन्=

रतना) श्री० एक मूल का नाम ।

१० केता ( सं० कति ) क्रि० वि०  
दिवना, किचा ।

१ केनिक ( सं० कनि ) मु० धोड़े,  
दोवार, झल, दिवना, दिवनाही ।

सं० केतन—पि० पु० घृष्ट, २ घना,  
३ निर्भय, ४ झलम, ५ झोड़ा,  
६ बोड़ा, ७ काम, = विद ।

सं० केतु ( चाप=रूनना, वा वित्र=  
जानना ) पु० नरां प्रह, २ भंरा,  
घमा, घमाका, ३ दूदल तारा,  
धुपरेतु ।

सं० केन्द्र—पु० नरां से पृथी वा  
माप होता है और वे दो हैं । उत्तर  
केन्द्र, दक्षिण केन्द्र, २ दृष्ट का बीच,  
मईस । [ मापड ।

सं० केयूर—पु० धोड़, दहंय, वि-

सं० केरल—पु० मालवादेश, २ क्षेत्र,  
श्री० ३ नवीनविद्या, देशविद्या, देश  
का इत्य ।

मा० केला ( सं० बदली ) पु० एकपेड़  
वा जपरा जमके फल का नाम ।

सं० केलि ( वित्र=दिवना, वा वित्र=  
भेतना ) श्री० गेह, झोड़ा, विहार ।

मा० केवड़ा ( सं० केनक ) पु० एक  
केजोड़ा } पुन का नाम ।

मा० केवट ( सं० कैवर्ष ) पु० मीरट,  
मदरा, बजरा, नाव बलानेराता ।

सं० केवल ( केव=सेवाकरना ) मु०  
एकरी, निगला, भकेता, मुख्य, गाय ।

मा० केवाड़ ( सं० कपाड ) पु०  
किवाड़ } दिवाड़ी, दरवाजा ।

मा० केवान—० केवट, कमल ।

सं० केश—( हिन्=दुःशदेना वा रो-  
कना, वा का=शिर, ईश=मानिक,  
वा क=शिर, श्री=सोना ) पु० वाट,  
रोम, नोप, कच ।

सं० केशर ( के=शनी में, अथवा शिर  
पर, कू=रूयना, वा विक्रमना, वा  
कैलना ) पु० कुंठुप, नाकरान, एक  
मुगांथि वीस २ मिह की गानन  
पर के बाल ।

सं० केशरी ( केशर ) पु० मिह, म-  
गराज, गेह, हनुमान के बापका नाम ।

केशव ( के=शनी में, श्री=मोना,  
वा केश, बाल, बन्त=बाला ) पु०  
भीष्टपुत्र, विष्णु ।

सं० केशी ( केश ) पु० पुराणस  
का नाम जिसको बंमने भीष्टपुत्र  
के बाने केलिपे भेला या जमही  
भीष्टपुत्र ने मारा, मु० पयदे बालों  
बाना, जिसके पयदे और बहुत  
बान हो ।

सं० केसर ( के=शनी, कू=शाना )  
श्री० केशर, कुंठुप, नाकरान, वा  
करान ।

प्रा० केसरिया ( सं० केसर ) पु०  
केसर में रंगाहुआ, पीला ।

प्रा० केहरी ( सं० केशरी ) पु० सिंह,  
मृगराज, शेर, एक बंदर का नाम ।

प्रा० कैचली ( सं० कंचुल, कचि=  
बांधना, या चमकना ) स्त्री० सांप  
की खाल, सांप की खोल ।

सं० कैटभ ( कीट=कीड़ा, भा=च-  
मकना जो कीड़े के बराबर चमक-  
ता हो ) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० कैतव-पु० कपट, २ घूत, जुआं,  
३ वैद्वर्थ मणि, ४ धतूर का फूल ।

प्रा० कैथी ( सं० कायस्थ ) स्त्री०  
हिंदी अक्षर जो कायस्थ लोग लि-  
खते हैं, कायथी हिंदी अक्षर जो  
सूबे बिहार के पटना, गया आदि  
जिलों में लिखे जाते हैं ।

सं० कैरव ( के=गानी में, रु=शब्द  
करना ) पु० कुमुदिनी, कैवलनी,  
कमोदनी, सफेद कैवल । [ आम ।

प्रा० कैरी-स्त्री० चिन पकाहुआ छोटा

सं० कैलास ( कैल=तेल, ना आनं-  
द, आसु=रहना, या बैठना, अर्थात्  
जहां आनंद से रहने हैं ) पु० एक  
पराइ हिमालयकी श्रेणीमें है जो  
महादेव और कुंवर के रहने की  
जगह है ।

सं० कैवर्त ( के=गानीमें, वृत्=रह-  
कैवर्तक ) ना ) पु० कैवट, धीवर,

मद्धा, मद्धाह, नावचलानेवाला ।

सं० कैवल्य ( कैवल एकही ) पु०  
मुक्ति, मोक्ष, परमगति, निर्वाण

प्रा० कैसा ( किस + सा, सं० कीदृश )  
, क्रि० वि० किस प्रकार का, किस  
तरह का ।

प्रा० कैसाही-बोल० चाहे जैसाही,  
कितनाही, किसी ही तरह का ।

प्रा० को ( सं० कः, कौन ) सर्वना० कौन,  
२ कर्म कौर संप्रदानकारकका चिह्न ।

प्रा० कोई ( सं० कोपि, कः=कौन,  
कोऊ ) अपि=भी ) सर्वना०  
अनिश्चयवाचक । [ कोई चीज ]

प्रा० कोईसा-बोल० कोई आदमी,

प्रा० कोईनकोई-बोल० यह अथ-  
वा वह, कोई एक ।

प्रा० कोईदममें-बोल० तुरन्त, अभी,  
थोड़ी देरमें, बहुत जल्द ।

प्रा० कोण्डी ( पु० एक जाति जिसका  
कोण्डी ) धंधा सेती करनेका है ।

प्रा० कोपल ( सं० कोरक, कुर=शब्द  
करना ) स्त्री० अंकुर, मंजरी, कली ।

सं० कोक ( कुरु=लेना ) पु० चकवा,  
चक्रवाक, —कोकी=चकवी ।

प्रा० कोका-पु० दूधमाई, घायमाई,  
कटिया, कमल । [ कोपल ।

सं० कोकिल ( कुरु=लेना ) स्त्री०

- प्रा० कोसु (सं० कुत्ति) श्री० गर्भ, गेट ।  
 प्रा० कोसुबंध (सं० कुत्ति=बन्ध) श्री० बांध, पंथ्या, जिस श्रीके लड़का वाला न हो ।  
 प्रा० कोट (सं० कोट, कुट=काटना) पु० गट, किना, दुर्ग ।  
 सं० कोटर (कोट=देहावन, कुट=देहा) श्री० कोटर, कोटर रा=जेना) श्री० पेड़में गोखली जगह, सोड़कल, गोदरा ।  
 सं० कोटि (कुट=देहा होना, वा रि-स्ता करना) श्री० त्रिभुवनकी एक भुजा, २ धनुष का अगला भाग, गु० करोड़, सोलास ।  
 प्रा० कोटरी (सं० कोट, कुट=नि-कालना) श्री० छोटा घर, कमरा ।  
 प्रा० कोठ (सं० कोट) पु० घर, पटा हुआ घर, पहापर, ऊपरका मकान ।  
 प्रा० कोठी (सं० कोठ) श्री० छोटा, पहापर, २ भंडार, अम्बार, गोदाम, चील बस्तु रखने की जगह, गोला, अनाम रखनेकी जगह, ३ हुंड़ीवाल की दुकान, महामनी घर, ४ बड़ा मकान, बंगला, ५ कारखाना, ६ कोख, गर्भ-छोटीवाल=हुंड़ीवाल, बड़ासद, बड़ासौदागर, बड़ाश्री-पारी, साहकार, महामन ।  
 ० कोड़ना-कि० सं० सोड़ना, ल-
- लोचना, गोतला करना, गढ़ा करना, खुरचना ।  
 प्रा० कोड़ा-पु० चावुक ।  
 प्रा० कोड़ाकरना-बोल० कोड़ा मारना, चावुक लगाना, २ घर में करना, ३ कोड़ा मार के गोड़े को सेत करना ।  
 प्रा० कोड़ामारना=चावुक लगाना ।  
 प्रा० कोड़ी-श्री० बीसी, बीस २० ।  
 प्रा० कोड़ (सं० कुष्ट) पु० एक प्रकार का रोग, महारोग ।  
 प्रा० कोड़ में खाज निकलाना-बोल० एक दुख में दूसरे दुख का आना, दुख पर दुख गिरना ।  
 प्रा० कोड़ी (सं० कुष्टी) पु० जिसके कोड़ निकला हो, कुष्टी, महारोगी ।  
 सं० कोण (कुण=कुना) पु० कोना-दो लकीरों का भुजाव ।  
 प्रा० कोतल-पु० खाली घोड़ा ।  
 प्रा० कोथमीर-पु० कधी धनियां, धनियां की हरीपत्ती ।  
 प्रा० कोतली-श्री० बैली, बटुमां ।  
 प्रा० कोदो (सं० कोदक, कु=पर-कोदो) श्री० बी, दु=माना) श्री० एक तरह का धान ।  
 सं० कोदण्ड (को=बांस, कु=शब्द करना, दंड=दंडा) पु० धनुष, कमान ।  
 प्रा० कोना (सं० कोण) पु० झूट,

कोन, दो लकीरों का भुजाय ।

प्रा० कोनाकुथरा-बोल० कोई कोना  
क्रिधरहो, किसी जगह, कहीं ।

सं० कोप (कुप्=क्रोध करना) पु०  
क्रोध, गुस्सा, रोस, खिसियाहट ।

प्रा० कोपना (सं० कुप्=कोपकरना)  
क्रि० अ० क्रोध करना, गुस्सा होना ।

प्रा० कोपर-पु० कटोरा, कटोरी,  
पियाला ।

सं० कोपि (कः + अपि) सर्वना० कौन ।

सं० कोपित (कोप् + इत) क० पु०  
क्रुद्ध, कोपयुक्त ।

सं० कोपी (कोप) पु० क्रोधी, नामसी ।

प्रा० कोपीन (सं० कौपीन) स्त्री०  
लंगोटी ।

प्रा० कोवी } स्त्री० एक तरकारी का  
गोवी } नाम ।

सं० कोमल (कम्=बाहना, वा कु=  
शब्दकरना) पु० नर्म, नम्र मृदु, मुला-  
यम, मृदुल, मनोहर, पु० पानी, जल ।

सं० कोमलता (कोमल) भा० स्त्री०  
नरमई, मृदुलता, कोमलताई ।

प्रा० कोयण } (सं० कोन) पु०  
कोये } आँख का सवेद देना,  
आँख का कोना ।

प्रा० कोयल (सं० कोकिला) स्त्री०  
एक पक्षी का नाम, कोकिला, पिक,  
२ एक फूल का नाम ।

प्रा० कोर-स्त्री० किनारा, छोर, कगार ।

प्रा० कोरा-पु० नया, टटका, नहीं  
वरता हुआ, जो काम में नहीं आया  
हो (यह शब्द मिट्टी के बरतन, और  
कपड़ा और कागज के लिये बहुत  
बार बोला जाता है) ।

प्रा० कोररहना-बोल० निराश होना,  
योही रह जाना, कुछ नहीं मिलना ।

अं० कोर्ट आफ् डन्काइरी=पूछना-  
चक्रीसभा, तहकीकात का दरबार ।

प्रा० कोल-पु० खाड़ी, खाल, २  
सकड़ी गली, ३ अंगुली मनुष्यों  
की जानि, गर्वननिवासी, म्लेच्छ भेदा ।

सं० कोलाहल (कोल्=ढेर, इल्=  
वरना) पु० कलकल, कलाहल, बहुत  
मनुष्यों वा शब्द, रौला, कलमल,  
धूमधाम, गुनगुनाह ।

प्रा० कोल्हू-पु० तेल निकालने की  
कल, धानी ।

सं० कोविद (क=प्रज्ञ, अयक्ता वेद,  
विद=ज्ञानना) पु० पण्डित, बुद्धिमान ।

प्रा० कोशना } (सं० क्रोशन, कुश=  
कोसना } रोना ) क्रि० स०  
सरायना ।

सं० कोशल } (कोश वा कोप=भं-  
कोपला } डार ला=लेना ) पु०

स्त्री० अयोध्यापुरी, अवध ।

सं० कोप (कुप्=निकालना) पु०  
भंडार, सजाना २ दिक्कानरी, अने-

कार्य, अभिधान, ऐसी पुस्तक जि,  
समें शब्दों के अर्थ मिलें, ३ धंद-  
कोष, ४ मियान, निषाम, लाप,  
तटवार का घर ।

सं० कोपलाधीश ( कोपला वा  
कोशलाधीश ) कोशला=म-

योद्या, अधीश=राजा ) पु० श्री-  
रामचन्द्र, २ अयोध्याके राजा ।

सं० कोपाध्यक्ष (कोप=उत्ताना, अ-  
ध्यक्ष=पालिक) पु० खतांची, भंडारी ।

सं० कोष्ठ ( कुष्=निकालना ) पु०  
कोठा, खसा, कोठरी, जगह ।

प्रा० कोस (सं० कोश, कुन्=बुलाना)  
पु० आठ हजार हाथ का रम्भा, दो

मील, कोई कोई चार हजार हाथ का  
भी कोस मानते हैं ।

प्रा० कोह (सं० कोष) पु० कोष, दुस्सा ।

प्रा० कुहवर } पु० जगह का घर,  
कोहवर } कौतुकघर, देवताघर ।

प्रा० कोहाना (सं० कोष) क्रि० अ०  
रुटना, कोष करना, प्रोचकरना,  
सिंसिदाना ।

प्रा० कोही (सं० कोषी) पु० कोषी ।

प्रा० कोषना-क्रि० अ० चपटना,  
मटाया होना ।

प्रा० कोषा (कोषका) श्री० विमर्शनी ।

प्रा० कोला-पु० रुग्णता एक फल  
का नाम ।

प्रा० कौड़ा (सं० कपर्दी) पु० पट्टी  
कौड़ी, नारंगी ।

प्रा० कौड़ियाला-पु० एक मकार  
का सांर ।

प्रा० कौड़ी (सं० कर्दिका, क=  
पानी, वा मुस, परा=पूर्णता, दा=  
देना) श्री० छोटा शंख जो व्यवहार  
में लेन देन में चलवाते, २ पन,  
दौलत, ३ कर्पाई ।

प्रा० फूटीकौड़ी } योल० बुद्धनहीं,  
कानीकौड़ी } कौड़ी नहीं ।

सं० कौतुक (कुतुक) पु० कुतूहल,  
हैसी खुशी, आनंद, हँस, खेळ, मन  
बहलाना ।

सं० कौतुकी (कौतुक) पु० रंग  
तिलाही, हैसमुख, कौतुककरनेवाला ।

सं० कौतुकनाला-श्री० तपाशापर ।

प्रा० कौन (सं० कः) पदनवाचक  
सर्वनाम ।

प्रा० कौनसा-योल० कैसा, किस  
तर का ।

अं० कौंसिल=सभा, दरबार ।

सं० कौमार (कुमार=बालक) पु०  
बालकपन, लड़कपन, दुवावस्था,  
जवानी ।

सं० कौमुदी (कुमुद=चांद, जयरा  
कुमुद=कनोदनी जयरां मिममे क-  
मोदनी लिखती है, कु=कृष्ण, मुह  
=रमण करना ) श्री० चांदनी  
चांदी ३ एक व्याकरण का ग्रंथ ।

प्रा० कौर ( सं० कवल ) पु० ग्रास,  
कवा, लुकपा, नवाला ।

सं० कौस्य ( कु=एक राता का  
नाम ) पु० कुरुवंशी, धृतराष्ट्र और  
पांडु दोनोंके बेटेपौतों को कुरुवंशी  
ब्रह्मकेई पर विशेष करके धृतराष्ट्र  
के बेटोंको कौरव, और पांडुके बेटों  
को पांडव कहते हैं ।

सं० कौत्तिक ( कुन ) पु० कुनका,  
झाने कुन के धर्म में घनानेराता,  
० कृत्ता, ० वागमार्गी ।

प्रा० कौरा ( सं० काक ) पु० काग,  
काश, काशग ।

सं० कौगत्या ( कोगत ) श्री०  
बेदगत २०० राताकी बेडी, और  
राता दमरव की पत्नी और श्री  
रावचन्द्र की मा ।

सं० कौशिक ( कुशिक=विरसाभित्र  
का वाग, गरी ) पु० विरसाभित्र  
मुनि का नाम ३००, श्री १, १००,  
वेरडा ।

सं० कौशिकी ( कुशिक ) श्री० एक  
नदी का नाम जो विरसाभित्र की  
बहिन कौशिकी के नाम से समझी ।

सं० कौमुद ( कुमुद=विष्णु, वा  
मयन्द, कु=दुर्गा, मु=बाहुम=म-  
राहता, वा=स्वयं=जोहता) पु० विष्णु  
की माता जो=मयन्ददेवि कहली ।

प्रा० कृता ( सं० कृिम् ) पञ्चमालक  
कृष्ण ।

प्रा० क्यौ ( सं० कृिम् ) कृि० वि० किस  
लिये, कारेको ।

प्रा० क्यौकर-कृि० वि० किसमकार  
से, कैसे ।

प्रा० क्यौकि-कृि० वि० किसलियेकि ।

प्रा० क्यौनहीं—बोन० किसलिये  
नहीं, निरवयही ।

सं० क्रतु ( कृ=करना ) पु० पद्म, पाग ।

सं० क्रम ( कम्=जाना ) पु० रीति,  
पारपाटी, राह, सिन्सिला ।

सं० क्रमशः-कृि० वि० क्रमसे, सिल-  
मिलेवार, तरतीब से ।

सं० क्रमुकी-श्री० सुगरी, हली,  
पूनीकन ।

सं० क्रय ( क्री=मोल लेना ) पु०  
मोल लेना, गरीदना, पम्पु ।

सं० क्रयविक्रय ( क्रय+विक्रय,  
क्री=मोल लेना ) भा० पु० मोलदेन,  
बणिज, दूबीगार, गरीद कोहल,  
जिम्मा ।

सं० क्रयणीय ( क्री+अनीय ) अर्ध०  
गरीदने लायक ।

सं० क्रयिक ( क्री+इक ) क० पु०  
क्रयी { देता, गरीददार ।

सं० क्रय्य-भा० बम्पु, जिम्मा बाली  
बम्पु ओ दूकान में बगरी ।

सं० क्रय्य-पु० माँव, मोरन ।

सं० क्रय्याद्-क० पु० गालम, माँव-  
भण्ड ।

प्रा० क्रान्ति ( सं० क्रान्ति ) स्त्री०  
पमक, मकाश दीप्ति ।

सं० क्रान्ति ( कृष्=माना ) स्त्री० मा-  
ना, चटना, २ रागोछ में मूर्ख का  
रस्ता, रागोलके गोलें में देखी गोल  
रेखा ।

सं० क्रान्तिमण्डल ( क्रान्ति + मं-  
ण्डल ) पु० खगोलमें वस वृष्ट का  
नाम जो सूर्यका मार्ग चलता है ।

सं० क्रामक } क० क्रैना, खरीददार ।  
क्रायक }

सं० क्रियमाण-कर्म करने योग्य ।

सं० क्रिया ( कृ=करना ) स्त्री० काम,  
काम, व्यवहार, २ क्रिया कर्म,  
३ कर्मसेंही काम, ४ व्यवहारण में  
ऐसा शब्द जो पातु से बनारो और  
असमें कोई समय पाया जाय, ५  
सौन्द, शाय ।

सं० क्रियादक्ष-पु० काममें निपुण ।

सं० क्रीडा } ( क्रीड=खेलना ) भा०  
क्रीडन } स्त्री० खेल, हैसीमुखी,  
मन परलाना, बौतुक ।

सं० क्रीडक } क० पु० गिलाड़ी ।  
क्रीडित }

सं० क्रुद्ध ( क्रुध=क्रोध करना ) क०  
पु० क्रोध किये हुए, क्रोधिन् ।

सं० क्रूर ( क्रु=काटना ) पु० निहुर,  
निर्दयी, क्रोह, कड़ा ।

सं० क्रूरता भा० निहुराई, क्रोहपूर्णता ।

सं० क्रोडपत्र ( क्रुड=क्रोडना ) चर-  
काना, जम करना ) पु० संयोजित,  
जोषिया, धोड़े से लगाया गया ।

सं० क्रोध ( क्रुध=क्रोध करना ) पु०  
रोष, रिस, गुस्सा ।

सं० क्रोधवान् } ( क्रोप=क्रोप, वान्  
क्रोधवन्त } =वाला ) पु० क्रोधी  
क्रोप करनेवाला ।

सं० क्रोधावेश ( क्रोप=रोप, आवेश  
=पुसना, धा, विग्=पुसना ) पु०  
क्रोपयुक्त, क्रोधके बरा ।

सं० क्रोधी ( क्रोप ) पु० क्रोप करने  
वाला, गुस्सा करनेवाला, रिसरा ।

सं० क्रोधना-क० स्त्री० क्रोपनी,  
क्रोप करनेवाली ।

सं० क्रोश ( क्रुश=बुलाना ) पु० क्रोश,  
कोई २००० हाथ और कोई ४०००  
हाथ का क्रोश मानने हैं ।

सं० क्रोश ( क्रुश=बोलना, चिल्लाना )  
क० पु० शृगाल, सिपार, २ गथा ।

सं० क्रोश ( क्रुश=जाना ) पु०  
बगुला, २ एक दीपका नाम ।

सं० क्रान्त ( कृष्=पकना ) क०  
पु० पका, मांदा, धकित, पका हुआ ।

सं० क्रान्ति ( कृष्=पकना ) भा०  
स्त्री० थकावट, कलेश, परिश्रम ।

सं० क्लिन्न ( क्लिड=भीगना, रोना ) क०  
पु० आर्द्र, ओढ़ा, समल, तर, दुखी



सं० क्रिष्ट (क्रिष्ट=दुग्धपाना) क० पु०

कड़ा, सल्ल, कठिन ।

सं० क्रीव (क्रीव=नपुंसक होना)

पु० नपुंसक, नामर्द, रोजा, रिज-  
डा, गु० दरपोक, वायर ।

सं० क्रेद (क्रिदु=बमाना) गु० पु०

पू, पीव, मवाद ।

सं० क्रेग (क्रिग=दुग्धपाना) पु०

दुग्ध, कष्ट, पीडा ।

सं० क्रेगक-क० पु० क्रेगयुक्त, क्रेग-

दाता, दुग्धदाता ।

सं० क्रेगन भा० पीडा, दुग्ध ।

सं० क्रेगिन स्त्री० पु० दुग्धी, पी-

दित, कष्टित [करी, करी दा]

सं० क्वचिन् । क=करी (क्रि० वि०

सं० क्वचुन (क्वच=बोलना) भा०

दु० शब्द, आवाज ।

सं० क्वथ-पु० नियोजन, मोद, काका ।

सं० क्वथिन (क्वथ=बोलना) स्त्री०

पु० पचाया हुआ ।

सं० क्वथ (सं० क्वथ) स्त्री० क्वथ

गोन, राजगोन, दुग्ध की बीमारी ।

सं० क्वथ (क्वथ=नाश करना) स्त्री०

पल, दम, दम पल का समय चार

विनट का समय ।

सं० क्वथिक-क० पु० मोदी देरहा ।

सं० क्वथ (क्वथ=नाश करना) पु०

पाव, चोट, चीरा, जखम, घण ।

सं० क्वथ-पु० घण घाव, जखम, चोट,

स्त्री० नष्ट, घातिष्ठ, विदीर्ण, भान ।

सं० क्षत्ता-पु० शूद्र, दासीपुत्र ।

सं० क्षति (क्षण=नाश करना) स्त्री०

हानि, घटी, नुकसान, विगाड़, अपकार ।

सं० क्षत्र-पु० शरीर, निरम ।

सं० क्षत्रिय (क्षत्र=घाव, त्रै=व-

क्षत्री) चाना) पु० राजपूत,

दुमरावर्गी, राजन्य ।

सं० क्षत्रीकुलद्रोही-क० पु० क्षत्री

कुल का बेरी, परशुराम ।

सं० क्षयण (क्षय+अण, क्षय=क-

कना) क० पु० निर्जोत, बेशाम

बेहया, बेरण, गंदा, गिरगिट ।

सं० क्षमता (क्षम=सहन) स्त्री०

सहनशीलता, सहना, योग्यता,

सामर्थ्य ।

सं० क्षमना (सं० क्षम=सहन)

क्षमाकरना) क्रि० सं० माफ कर-

ना, सहना, क्षीरना ।

सं० क्षमा (क्षम=सहन) भा० स्त्री०

माफी, माफकरना, मंजूर, माफ,

शान्ति, रहम, क्षम, क्षमाएन ।

सं० क्षमिन (क्षम=सहन, क्षम-

क्षमी) स्त्री०, गच्छाएन ।

सं० क्षय (क्षि=नाश करना) भा०

पु० क्षय, घटी, ३

सं० क्षरण ( क्षर् + ण, क्षर् = व-  
हना, टपकना ) भा० पु०, च्युत  
होना, गिरना ।

सं० क्षान्त ( क्षम् = संहना ) गु०  
सहनेवाला, धीरनवान्, जयावान्,  
सन्तोषी ।

सं० क्षान्ति ( क्षम् = संहना ) स्त्री०  
क्षमा, धीरज, संतोष ।

सं० क्षाम-पु० क्षीण, दुर्बल, हरा ।

सं० क्षार ( क्षर् = गिरना, नाशहोना )  
स्त्री० सार, २ राग, भस्म ।

सं० क्षालन ( क्षल् = शुद्ध करना )  
पु० घोना, पोंछना, साफ करना,  
भेगालना ।

सं० क्षालक ( क्षल् + क् ) क०  
पु० घोनेवाला ।

सं० क्षालिन ( क्षल् + इन् ) स्म्य०  
पु० घोना हुआ, घीन ।

सं० क्षिति ( क्षि = राशना, बसना )  
स्त्री० परती, दृष्टी, जमीन, परछाँ ।

सं० क्षितिधर ( क्षिति = परती, धर =  
सहनेवाला, धृ = धनना ) पु०  
पहाड़, स्वर्ग ।

सं० क्षितिप } ( क्षिति = राशना, पा  
क्षितिपति } = बवान् ) पु० राधा ।

सं० क्षितिपाल ( क्षिति = दृष्टी, पा-  
ल् = बवाना ) पु० राधा, महाराज ।

सं० क्षिपक ( क्षिर् + क् ) क० पु०

योदा, बहादुर । [ तुरंत, शी-  
घ्र ]

सं० क्षिप्र ( क्षिप् = फेंकना ) गु० जल्द

सं० क्षीण ( क्षि = नाश करना ) गु०  
दुबला, निर्बल, दुर्बल, शरीर ।

सं० क्षीर ( पम् = लाना ) पु० दूध,  
पानी ।

सं० क्षुब्ध ( क्षुब्ध + क्, क्षुब्ध = पीसना )  
स्म्य० पु० पीसा हुआ, चूणोंद्व ।

सं० क्षुद्र ( क्षुब्ध = चूर, चूर = होना ) गु०  
दोहा, नीच, झटा, मूर्ख ।

सं० क्षुद्रा-स्त्री० बेरपा, नदी, मधु-  
माक्षिका, भयङ्करा ।

सं० क्षुधा ( क्षुब्ध = भूयाहोना ) भा०  
स्त्री० भूय, नाने की चाह ।

सं० क्षुधातुर-क० पु० भूय से  
आकुल, भूया ।

सं० क्षुधार्त ( क्षुधा = भूया, धार्त =  
गरावा हुआ ) गु० भूया, परत  
ही भूया ।

सं० क्षुधावन्न ( क्षुधा = भूय, वन्न =  
वाला ) गु० भूया ।

सं० क्षुधित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।

सं० क्षुभित ( क्षुब्ध = भूय, क् = पु० भूया ।



प्रा० खांडे की धार पर चलना-  
बोल० न्यायपरचलना, न्याय करना ।

प्रा० खांसी ( सं० काश, कश=शब्द  
करना ) स्त्री० खोसी, धांसी ।

प्रा० खाई ( सं० खात, खन=खोदना )  
स्त्री० खंदक, नाला, गढ़वा गढ़ के  
बाहर का नाला ।

प्रा० खाऊ ( खाना ) पु० पेद, पेठाई,  
बहुत खानेवाला ।

प्रा० खाग ( सं० खड्ग ) पु० गैंड़ेका  
सींग ।

प्रा० खाज ( सं० खर्ज, खर्ज=दुख  
देना ) स्त्री० खमछी ।

प्रा० खाजा ( सं० खाद्य=खानेयोग्य )  
पु० एक तरह की मिठाई ।

प्रा० खाट ( सं० खट्टा ) स्त्री० चार-  
पाई, खटिया ।

सं० खात ( खन=खोदना ) स्त्री०  
पु० खाई, खेय, परिया, दुर्गवेष्टन,  
खन्दक ।

प्रा० खाता-पु० लेखावरी, रोजके  
हिसाब की बही, खमरा, हिसाब ।

प्रा० खाती-पु० बर्तन, मिहनी ।

सं० खादक ( खाद+क ) क० पु०  
श्रृंगी, कर्जदार, खैया ।

सं० खादन ( खाद+खन ) भा० पु०  
भक्षण, भोजन, खुराक ।

सं० खाद्य ( खाद=खाना ) स्त्री० खाने  
योग्य, पु० खाना, खाने की चीज ।

प्रा० खान ( सं० खानि, वा खनि,  
खानी ) खन=खोदना ) स्त्री०  
खानि, आकर, पादन, देहर, ईंगर ।

प्रा० खाना ( सं० खादन, खाद=खा-  
ना ) क्रि० स० भोजन करना,  
२ खानाना, उढ़ाना, चोरीकरना,  
मारखाना, चांटखाना, निगलना,  
टमार जाना, हजम करखाना, घट  
करना, हाथ मारना, पु० खाने की  
चीज, भोजन, आहार ।

प्रा० खानाना-बोल० खालेना,  
ढकारना, चट करना, हजम करना,  
मारगाना, निगलना, उढ़ाना ।

प्रा० खानापीना-बोल० भोजन,  
खुराक, खाना ।

सं० खानिक ( खन=खोदना ) क०  
जो खानिमें पैदा हो, स्त्री० खानि ।

प्रा० खार ( सं० चार ) पु० लोना,  
एक सप्रेद खारीचीज जिससे बहुत  
बार घोषी कपड़े साफ करते हैं ।

प्रा० खारा ( सं० चार ) पु० लोना,  
गमकीन ।

प्रा० खारुआ ( पु० एकतरहका गोटा,  
खारुवा ) लाल कपड़ा ।

प्रा० खाल ( सं० खाल ) स्त्री० चमड़ा,  
२ धौकनी, ३ साड़ी, कोल ।

प्रा० खालखचना-बोल० मनुष्य  
की देह से चमड़ा उतारलेना, बहुत

दुग्धदेकराधारदानना, चमडानेना,  
जपडा उवेडना, सन्निधाना ।

प्रा० निचिना-कि० अ० ननना, पेंडना ।

प्रा० निजलाना ( सं० निहू=दुग  
निजाना देना ) कि० अ०

मगना, निडाना, खेडना, दुगरेना,  
रडना, खेडना, कोरेना, रडना ।

प्रा० निहूकी-पे० अ० गेना, रसीपी ।

प्रा० निज ( अ० निहू-दुगरेना वा दुग  
रना ) कि० अ० दुगा, दुगित, पडा  
दुगा, पडित, गगनादुगा ।

प्रा० निगनी ( सं० निगनी, सीर  
दुग ) कि० अ० पडकड नीर उमडे  
रडना, रडना ।

प्रा० निजमिलाना ( सं० निज-  
मिलना ) कि० अ० ननना, ननना ।

प्रा० निजना-कि० अ० ननना, ननना,  
ननना, ननना, ननना, ननना ।

प्रा० निजना-कि० अ० ननना, ननना,  
ननना, ननना, ननना, ननना ।

प्रा० निजना-कि० अ० ननना, ननना,  
ननना, ननना, ननना, ननना ।

प्रा० निजना-कि० अ० ननना, ननना,  
ननना, ननना, ननना, ननना ।

प्रा० निजना-कि० अ० ननना, ननना,  
ननना, ननना, ननना, ननना ।

प्रा० निजना-कि० अ० ननना, ननना,  
ननना, ननना, ननना, ननना ।

प्रा० निजना-कि० अ० ननना, ननना,  
ननना, ननना, ननना, ननना ।

होना, जोष करना, दुगित होना,  
दुगी होना ।

प्रा० सीर ( सं० सीर ) पु० दुग  
और गांवज से बनी हुई एक लाने  
की चीज जाउर, पायस ।

प्रा० सीरा सी० एक प्रकार की  
ककड़ी ।

प्रा० सील-सी० भूनादुगागांवज,  
लावा ।

प्रा० सीली-सी० पाव की पीड़ी ।

प्रा० सीमना-कि० अ० नागकाना,  
उभाड़ना, चिगाड़ना, चिगियाना ।

प्रा० सीम-ना० सी० सगाव हुई,  
उदाव निहानना ।

प्रा० सीमा ( फा० सीमा ) पु०  
मेरा, गतीना ।

प्रा० सुजलाना ( सं० सुजे-दुगरेना )  
कि० अ० ननना, ननना, ननना,  
ननना, ननना, ननना, ननना ।

प्रा० सुजलादुग ( सं० सुजे, सुजे  
सुजलादुग ) = दुग देना )

सी० सुजलाना, सुजली, सुजली,  
सुजली ।

प्रा० सुजली ( सं० सुजे, सुजे-दुग  
देना ) सी० गाव, पायस, पायस ।

प्रा० सुजना-कि० अ० ननना, ननना,  
ननना, ननना ।

प्रा० सुजनी-सी० ननना, ननना,  
ननना, ननना ।

प्रा० सुजाना ( सं० सुजे-ननना )

वा सुद=सूर २ करना ) क्रि० स०  
सुदाना ।

प्रा० सुनस-श्री० रोस, बैर, क्रोध,  
बोन, लाग, रिस ।

प्रा० सुनसाना-क्रि० अ० क्रोधित  
होना, निमिषाना, क्रोध करना,  
बोध करना, मिमाना ।

प्रा० सुवना ( क्रि० अ० सुचना,  
सुभना ) विधना, ठेना, बसूर  
करना, मन में निच जाना ।

सं० सुवर ( सुव=काटना ) पु० सुप,  
पौड़े गाय आदि के पैरना नरा ।

प्रा० सुरपा ( सं० सुर=काटना )  
पु० पास खोदने वा फौजार ।

प्रा० सुरमा ( पा० सुर्मह ) पु० एक  
नरह की मिट्टी ।

प्रा० सुलना-क्रि० अ० सुलनाना,  
महद होना, नहीं रहना, बिगाना,  
( जैसे बादल ) गाय हो जाना,  
खनक हो जाना ( जैसे आकाश )

हटना, छटनाना ( जैसे ध्यान )

प्रा० सुट-पु० बोना, बोन, २ कान  
वा घेन ।

प्रा० सुंदना ( सं० सुद=सूर करना )  
क्रि० स० रंगों में धरती को मोद-  
ना, टपकाना ।

सं० सेवर ( से=आकाश में पर=  
पतनेसाला, पर=बनना ) पु० घर,  
बाग, गारागड, पछी, मेर, २ बिना-

पर देवता, गु० आकाश में चल-  
नेसाला ।

सं० सेट ( सिट=सताना ) पु० ग्रह  
२ पछी २ अथपष्टमय २ सेवदशिकार ।

सं० सेटक ( गिट=दराना, सताना )  
क० पु० शिकार, फेर, २ टाक, २ भय,  
२ कुत्सित, २ घ्राप, २ कक, ७ तपम ।

प्रा० सेड़ा सं० सेट, सेद=राना ) पु०  
पुरवा, गोन ।

प्रा० सेड़ी-श्री० अचछा नोहा,  
फानाद, ईसान ।

प्रा० सेन ( सं० सेन ) पु० जगह जहां  
अनाज तरकारी आदि बोने हैं,  
२ पवित्रधरती, २ धरती, जमीन,  
२ लड़ाई का मैदान ।

प्रा० सेतद्योड़ना-बोल० छड़ाई से  
भागनाना ।

प्रा० सेनगहना-धोन० छड़ाई में  
रहना, फाराना ।

प्रा० सेनी ( सेव ) श्री० बिगना,  
बादलकारी, तिरावन, कमन ।

प्रा० सेनीवाड़ी-पोछ० सेनीवाधिप,  
बिगना, बारनकारी, तिरावन ।

सं० सेद ( गिट=दुगनाना ) पु० दुग्,  
शोच, मोह, पददावा, पट, मक-  
लीक, पीड़ा, प्यथा ।

सं० सेदिन ( गिट=दुगनाना ) अर्थ०  
दुगित, दुग्ने, पीदिन ।

प्रा० सेप ( सं० सेव, सिव=नेवना,

भेजना) स्त्री० सफर, समंदर की यात्रा,  
२ जहाज का घोड़ा ।  
प्रा० खेपहारना—घोल० नुकसान  
उठाना, हानि होना ।  
प्रा० खेल ( सं० खेला, खेल=हिलना  
चलना ) पु० क्रीड़ा, विहार ।  
प्रा० खेवट ( सं० कैवर्त्त ) पु० नाव  
खेवटिया } चलानेवाला, भाँकी,  
मल्लाह, डांडी, खेवक ।  
प्रा० खेवना ( सं० क्षेपण ) क्रि० स०  
ढाँढमारना, नावचलाना ।  
प्रा० खेवा ( सं० क्षेप्य ) पु० उतराई,  
नाव की उतराई का भाड़ा,  
२ नदी पार होना ।  
प्रा० खेस—पु० एक कपड़े का नाम ।  
प्रा० खेंचना—क्रि० स० तानना, क-  
सना, पेंचना, २ तसवीर में रंग भरना,  
तसवीर उतारना, तसवीर बनाना ।  
प्रा० खेंचाखेंची—घोल० खेंचातानी,  
लड़ाई, मारामारी ।  
प्रा० खैर ( सं० खादिर ) पु० एक  
वृक्ष का नाम, खादिर पेड़ का गुँदा ।  
प्रा० खोंता—पु० घोंसला, पगेरुका घर ।  
प्रा० खोंसना—क्रि० स० आँसना,  
घोंसना, भरना ।  
प्रा० खोंखला ( सं० कोटर ) पु०  
साली, छूड़ा, थोपा, पोला ।  
प्रा० खोखा—पु० बंद हुँडी जिसके  
रूपे दिये जा चुके हों ।

प्रा० खोज—पु० पता, निशान, डि-  
काना, चिह्न । [ अवगुण ।  
प्रा० खोट—स्त्री० चूक, भूल, दोष,  
प्रा० खोटा—पु० भूटा, नमकहराम,  
खराब ।  
प्रा० खोदना ( सं० खन=खोदना  
वा खुद=चूर चूर करना ) क्रि०  
स० खनना, गोड़ना, कुदेना ।  
प्रा० खोना ( सं० क्षय ) क्रि० स०  
गंवाना, उड़ाना, नाश करना, हारना ।  
प्रा० खोपरा ( सं० खपर ) पु० ना-  
रियल की गरी ।  
प्रा० खोपरी ( सं० खपर ) स्त्री०  
कगल की इड़ी, शिर की इड़ी,  
खोपड़ी ।  
प्रा० खोह—स्त्री० गुफा, गुहा, गड़हा ।  
प्रा० खोरि— ( सं० खोद=खेदी  
खोरी ) चाल ) भा० स्त्री०  
खुदाई, दोष, कमूर ।  
प्रा० खोल—स्त्री० खोलना, २ मियान ।  
प्रा० खोह—स्त्री० गुफा, कंदला ।  
प्रा० खोड़—स्त्री० तिलक, त्रिपुंड्र ।  
प्रा० खौलना—क्रि० अ० उकलना,  
उकलना, बहुत गर्म होना ।  
सं० ख्यात ( ख्या=प्रसिद्ध होना )  
म्यं० नामवर, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, वि-  
दित, मशहूर, उजागर ।  
सं० ख्याति ( ख्या=प्रसिद्ध होना )

भा० स्त्री० यम, नाम, कीर्ति, सराह, नानवरी ।

अ० स्त्री०=रिमरी ।

प्रा० स्याल (मेल) पु० तपारा, कौतुक, नकल, स्वांग, खेल ।

फा० स्वाहिश=आपना, चार ।

ग

सं० ग (गै=गाना, पु० गंधर्व, २ ग केनगी, ३ दात्री, ४ गीत ।

प्रा० गंग (भे=गङ्गा) स्त्री० गंगानदी ।

प्रा० गंज-स्त्री० चाँदनी, चादयोरा ।

प्रा० गंजा (गंज) गु० निमके शिर में गंज हो, चंदना ।

प्रा० गंजना-क्रि० स० नागहरना ।

प्रा० गंडजोरा (भं० ग्रन्थि जोड़, ग्रंथि=गाँठ जुड़=बांधना) पु० गाँठ बांधना ।

प्रा० गंडजोड़ाबांधना-बोल=जग में दुलहा दुलारिन ने बाँधना से गाँठ बांधना ।

प्रा० गंडकटा (सं० गन्धि=गाँठ, गंडकटा) पु० कट=काटना) पु० जेव बनना ।

प्रा० गंडा (सं० गण्डक) पु० घेरा, २ चार काँड़ी, चार, ३ गंडीना नागा जो बालकों के गलेमें बांधा जाता है, ताबीज ।

प्रा० गंडासा-पु० कामा, तवन ।

प्रा० गंडेरी (सं० ग्रन्थि) स्त्री० जख का टुकड़ा ।

प्रा० गंधी (सं० गान्धित) पु० अजर गुहावतन आदि बेचनेवाला ।

प्रा० गँव (पु० अवसर, दांव, सुर्गा) भीता, भयकाश, मौका ।

प्रा० गंवाना (सं० गम्=जाना) क्रि० स० सोना, उड़ाना, फैलना, खर्च करना ।

प्रा० गवार (सं० ग्राम्य) गु० गाँवमें रहनेवाला, २ अनारक, मूर्ख ।

प्रा० गंवी (ग्राम्य) गु० गाँव का गँवई) गँवेला, दिहाती, पु० गाँव, दिशात ।

सं० गगण (गम्=जाना) पु० आ-गगन) काश, आस्मान ।

प्रा० गगरी (सं० गर्गरी, गर्ग ऐसा गागरी) शब्द, रा=लेना) स्त्री० पटकी, कलसी, दोटाघड़ा, डिलिया ।

सं० गह्वा (गम्=जाना) स्त्री० एक नदी का नाम, भागीरथी, गह्वी, मुसरी ।

प्रा० गह्वाजमुनी (सं० गह्वा + य-मुन) स्त्री० कानका गहना, चाली, २ घोड़े अथवा बैलों की धौली और चाली भूज, ३ धौला और बाज्रा मिनाहुका रंग ।

सं० गह्वाजल (गह्वा=नदी का नाम जल=पानी) पु० गह्वाका पानी ।

सं० गह्वादार (गह्वा=नदी का नाम, दार=दरवाजा) पु० गह्वाका दरवाजा ।



द्वार वह जगह जहां गङ्गा निरल  
कर बहती है ।

सं० गङ्गाधर ( गङ्गा=नदी का नाम,  
धर=रखनेवाला, धृ=रखना ) पु०  
शिव, महादेव; जिन्होंने पहले गङ्गा  
को अपनी जटा में रखलियाथा ।

सं० गङ्गासागर ( गङ्गा, सागर=  
समुद्र ) पु० वह जगह जहां गङ्गा  
समुद्र से मिलती है ।

प्रा० गजपच-बेल० भीड़भाड़,  
धना, गहरा, कष्टमकर ।

सं० गज ( गज=मस्त होना, शब्द  
करना ) पु० हाथी ।

फ्रा० गज-पु० दो हाथका नाप, ३३  
इंच वा २६ इंच का नाप ।

सं० गजगामिनी ( गज=हाथी, ग-  
म=जाना ) स्त्री० जिस स्त्री की चा-  
ल हाथी कैसी हो ।

प्रा० गजगाह ( सं० गज=हाथी,  
गाह=गहरना ) पु० हाथी, घोड़ों  
का गहरना ।

सं० गजपति ( गज=हाथी, पति  
=मानिक ) पु० राजा, २ हाथी का  
मानिक अथवा हाथीपर चढ़नेवाला,  
३ बड़ा हाथी ।

सं० गजपाल ( गज=हाथी, पाल=  
पालनेवाला, पाल=पालना ) पु०  
महावन, हाथीवान ।

प्रा० गजमोती ( सं० गजमुक्ता ) पु०  
हाथी के शिर का मोती, गजमणि ।

सं० गजग्रथ ( गज=हाथी, ग्रथ=टोला,  
झुण्ड ) पु० हाथियों का टोला,  
हाथियों का झुण्ड ।

प्रा० गजरा ( सं० गजेर ) पु० गाजर  
का पत्ता, २ हाथमें पहनने का गहरना ।

सं० गजराज ( गज=हाथी, राजन्=  
राजा ) पु० बड़ा, हाथी, गजेन्द्र ।

सं० गजनन्दन ( गज=हाथी, नन्दन=  
मुँह ) पु० गणेशजी ।

सं० गजानन ( गज=हाथी, आनन  
=मुँह ) पु० गणेशजी ।

सं० गजारि ( गज=हाथी, अरि=  
वैरी ) सिंह, शेर ।

सं० गजेन्द्र ( गज=हाथी, इन्द्र=रा-  
जा ) पु० हाथियों का राजा, गज-  
राज, २ इन्द्र का हाथी ।

सं० गज्ज ( गज=मस्त होना, वा  
शब्द=हरना ) पु० डेर, राताना,  
भँडार, २ हाट, बाजार ।

सं० गज्जना-भा० स्त्री० याचना,  
भीड़ा, तहल्लिक, जाँकन्दनी ।

सं० गज्जित ( गज्ज+इत ) स्वे०  
लांछित, दूषित । [ गदयद् ।

प्रा० गटपट-क्रि० वि० उलटपुलट,

सं० गटक ( गट+अक, गट=निर्मा-  
णकरना, बनाना ) क० पु० बनाने  
वाला, मुसधिक ।

- सं० गठन ( गठ + जन ) भा० पु०  
निर्माण करना, तमनीक करना ।
- सं० गठित ( गठ + इत ) र्वि० नि-  
मित्त, बनी हुई ।
- प्रा० गट्टा ( सं० ग्रन्थि ) पु० गट्टड़ी,  
बस्ता, २ लड़गुन, राज आदि की  
गाँठ अथवा गढ़, ३ जरीव का बी-  
सवाँ हिस्सा, गट्टा ।
- प्रा० गट्टड़ी ( सं० ग्रन्थि ) स्त्री०  
गट्टरी } गाँठ, मोट, मोटगी ।
- प्रा० गट्टिया ( सं० ग्रन्थि ) स्त्री० ग-  
ट्टड़ी, गाँठ, एक प्रकार का बालरोग,  
कुन्नाव ।
- प्रा० गट्टीला ( गाँठ ) क० गाँठदार,  
गाँठवाला, २ हरमुट्टा, संदमुमंड ।
- प्रा० गड़गड़ाना-क्रि० प्र० गर्जना,  
गुड़गुड़ाना ।
- प्रा० गड़गुड़-पु० चियड़ा, फटा  
पुराना कपड़ा । [ ट पुत्तट ।
- प्रा० गड़वड़-क्रि० वि० गटगट, उल-  
प्रा० गड़रिया ( गाटर=भेड़ी ) पु०  
भेड़ी चकरी को चरानेवाला, रग-  
वाला, चरवाहा, मेघवाल ।
- प्रा० गड़हा ( सं० गर्भ ) पु० ग-  
गढ़ा } देला, मढ़ा ।
- प्रा० गड्डी-भौ० कागजके दशदस्ते ।
- प्रा० गढ़-पु० कोट, दुर्ग, गढ़ा ।
- प्रा० गढ़ना-क्रि० प्र० ठोकना, ब-  
नाना, सुधारना । [ गाढ़ा ।
- प्रा० गढ़वार ( सं० गाढ़ ) पु० मोटा,  
सं० गण ( गण=गिनना ) पु० समूह,  
थोक, झुंड, २ शिव के दूत, ३ सेना  
मिसमें २९ रथ ८१ घोड़े और  
१३५ पैदल हों ४ गण आठ हैं  
जिनका काम वर्णरूप धंद में पढ़ना  
है गण २ जगण ३ सगण ४ यगण  
५ रगण ६ तगण ७ मगण ८ न-  
गण इनके जानने के वास्ते, दोहा-  
आदिमन्त्र अवसानमें, भक्तसहोदर  
गुरुनाना परतहोहिं लघुरुपहिं सो,  
मन गुरु लघु सचजान ॥
- सं० गणक ( गण=गिनना ) क० पु०  
गिनेवाला, गणितज्ञ, उद्योतिषी,  
नृत्तपी ।
- सं० गणना-भा० गम्भिर, जगज्जन ।
- सं० गणना ( गण=गिनना ) स्त्री०  
गिनी, संख्या ।
- सं० गणनाथ ( गण=शिव के दूत,  
नाथ=स्वामी ) पु० गणेशभी ।
- सं० गणनायक ( गण, नायक=मा-  
लिक ) पु० गणेशभी ।
- सं० गणपति ( गण, गति=पालिक )  
पु० गणेशभी, गजानन ।
- प्रा० गणराऊ ( सं० गणरान ) पु०  
गणेशभी ।
- सं० गणाधिप ( गण + अधिप=मा-

- लिक) पु० गणेशजी, गणराज ।  
 सं० गणिका (गण=समूह, अर्थात् जिसके बहुत से पत्निहों) स्त्री०  
 वैश्या, पत्निरिया, कंचनी ।  
 सं० गणित (गण=गिनना) पु०  
 हिसाब, अङ्कविद्या ।  
 सं० गणितज्ञ (गणित=हिसाब, ज्ञ=जानना) पु० हिसाब जाननेवाला ।  
 सं० गणेश (गण=महादेव के दूत, ईश=स्वामी) पु० गजानन, गणपति, महादेव का बेटा ।  
 सं० गण्ड (गडि, मुँह का एक भाग होना) पु० गाल, दाँतों का गाल ।  
 सं० गण्डुकी (गडि=सींचना) स्त्री०  
 एक नदी का नाम ।  
 सं० गुण्य (गण=गिनना) अर्थात् गिनने योग्य ।  
 सं० गत (गम्=जाना) क० गया हुआ, २. पाया हुआ, प्राप्त, ३. जाना हुआ ।  
 प्रा० गत (गम्=जाना) अर्थात् चला  
 सं० गति (चलन, बदला, हाल, ३. रीति, गहर, स्थान, ४. ज्ञान, ५. उपाय ६. क्रिया ७. मोक्ष, मुक्ति ।  
 सं० गतागत (गत+आगत) प्रा०  
 पु० जाना आना, आगमन ।  
 सं० गताश्र (गत=गई अश्र=आश्रय) पु०  
 वह मनुष्य जिसकी आश्रय की गोश्री जाती रही, अर्थात् ।  
 सं० गतानुगतिक (गत=गया, अनु-  
 गति=पीछे चलनेवाला) क०

- एक के पीछे चलनेवाला, अनुवा-  
 यी, अनुगामी, उमर सतत होगई ।  
 सं० गतायुः (गत=गई, आयुम्=उमर) पु० वह मनुष्य जिसकी उमर पूरी होगई । [ कथायद् ।  
 सं० गतिपरिपाटी-स्त्री०, क्रीडा  
 सं० गद-पु० रोग, बीमारी, मर्ज ।  
 प्रा० गदका (सं० गदा) पु० पटा  
 प्रा० गदहा (सं० गर्दभ, गर्द=गधा) शब्द करना ) पु०  
 एक जानवर का नाम, रात ।  
 सं० गदहा (गद=रोग, हन्=नाश करना) क० पु० वैद्य, इकीम, डाक्टर ।  
 सं० गदा (गद्=शब्दकरना) स्त्री०  
 सोंडा, लाठी, चोच ।  
 सं० गदाधर (गदा=मोटा, धर=रसने वाला, धृ=गयना) पु० विष्णु का नाम ।  
 सं० गदित (गद्+इत, गद=हहना) क०  
 कहा हुआ ।  
 सं० गर्दा (गद्+इ) क० पु० विष्णु  
 २. रोगी, मरीज ।  
 प्रा० गर्दला-पु० मोटा निर्दोष, वि-  
 द्योता जिसमें गद् बहुतभी दूर हो ।  
 सं० गद्गद् (गद्=शब्द, और गद्=  
 खानना, वा गद्गद् प्राणों नही निरलना) पु० माण्डवी के पूराबोल नही निरलना, पु० आनन्दित, म-  
 सन, महुष, बागबाग, मृग ।

प्रा० गद्दी ?	स्त्री० विद्वानां, २	सं० गन्धसारः (गन्ध=सुगंध, सार=	
गादी }	आसन, ३ राजा का	तत्त्व) पु० चन्दन, धीसपत्नी	
सिंहासन, तख्त ।		सं० गन्धारः (गन्ध=सुगंध, ध्व=माना)	
सं० गद्य (गद्=बोलना) पु० छन्द		पु० एकरागका नाम, २ कंधारदेशी	
रहित वाक्य, बिना छंद का वाक्य,		प्रा० गन्धारी (सं० गान्धारी, गा-	
वाचिक, नसर ।		न्धार, कंधारदेश) स्त्री० कंधारदेश	
प्रा० गनना (सं० गणना, गण=		के राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की पत्नी	
गिनना) कि० सं० गिनना, शुमार		और दुर्योधन की मा ।	
करना, गिन्ती करना ।		प्रा० गप—स्त्री० इपर उपर की झूठ	
सं० गन्ता (गम्+ता, गम्=जाना)		सब बात, वक्तव्य, झूठ २ ।	
क० पु० गमनकर्ता, जानेवाला ।		प्रा० गपमारना—बोल० झूठी सच्ची	
सं० गन्तु—क० पु० पथिक, मुसाफिर ।		बातें करना । [ बात, गप ।	
सं० गन्ध (गन्ध=धूपना, स्त्री० वास,		प्रा० गपशप—बोल० झूठी सच्ची	
मसक, सुगन्ध, सौरभ ।		सं० गभीर ? (गम्=जाना) पु० गहरा,	
सं० गन्धक (गन्ध) पु० एकथीले		गम्भीर }	
रंग की धातु ।		अधार, अडगाह, २ धीर,	
सं० गन्धमादन (गन्ध=मसक, मादन		धीमा, सोची, भारी, गहरा, निगूढ़,	
=मसक करनेवाला, मद्दु=मस्तक-		अभीष्ट, इत्थीय ।	
रना) पु० एक पहाड़ का नाम,		सं० गमन (गम्=जाना) भा० पु०	
२ बंदरों के एक सादार का नाम,		चलना, जाना, चक्कन, यात्रा ।	
३ गन्धक ।		सं० गमनागमन (गमन+आगमन)	
सं० गन्धराज (गन्ध=मसक, राज=		भा० पु० आना जाना, आगमन २ ।	
शोभना) पु० चन्दन, २ सुगन्धितफूल ।		सं० गमी—क० पु० जानेवाला ।	
सं० गन्धर्व (गन्ध=सुगन्ध, अर्व=		प्रा० गमी—क० पु० गपकरनेवाला,	
जाना) पु० स्वर्ग का गवेषा ।		रंज करनेवाला ।	
सं० गन्धर्वह ? (गन्ध=सुगंध, वह=		सं० गम्य (गम्=जाना) कर्म० जाने	
गन्धवाह } लेजाना) पु० इवा,		योग्य, पाने योग्य, जानने योग्य ।	
पवन, वायु, २ वस्तुरिया हरित,		प्रा० गयन्द ? (गं=गजेंद्र) पु० बड़ा	
३ नाक, नासिका ।		गेंद }	
		हाथी, गज—	



सं० गर्व—भा० घमंड, गरूर । ०१ ।

सं० गर्वित ( गर्व=घमंड करना ) पु०  
घमंडी, अहंकारी, अभिमानो, म-  
गरूर । ०२ ।

सं० गर्हक ( गर्ह + अक, गर्ह=निन्दा  
करना ) क० पु० निन्दक, सुगुल ।

सं० गर्हण ( गर्ह + ण ) प्र० पु०  
निन्दा, मज्जम्पत । [पुनर्मम ।

सं० गर्हित ( गर्ह + इत् ) प्र० निन्दित,

सं० गल ( गल्=खाना, वा गु=नि-  
गलना ) पु० गला, गरदन ।

प्रा० गलदेना—बोल० फांसी देना ।

प्रा० गलवहियां ( सं० गलवाहु, गल  
=गला, वाहु=मुझ ) स्त्री० गल-  
वाह, गले में हाथ डालना ।

प्रा० गलवहियां डालना—बोल०  
किसी के गले में हाथ डालना ।

प्रा० गलना ( सं० गलन, गल्=  
गिरना ) क्रि० अ० पिघलना, नर्ध  
होना—२ सड़ना, बिगड़ना ।

प्रा० गला ( सं० गल ) पु० कण्ठ,  
गरदन, ग्रीवा, नरेंटी, २ स्वर, आ-  
वाज, गु० सड़ाहुआ, पिघलाहुआ ।

प्रा० गलाघोटना } बोल० आवाज  
गलापड़ना } घटना, भारी

शब्द होना, गला घनघनाना,  
गला रसखाना ।

प्रा० गलाफांसना—बोल० फांसी

देना, गल देना, गला दवाना, दम  
बंदकरना । ०३ ।

प्रा० गलादवाना—बोल० गला पों-  
टना, नरेंटी दवाना, फांसी देना ।

प्रा० गलाघोटना—बोल० नरेंटी द-  
वाना, गला दवाना, दम बंदकरना ।

प्रा० गलेपड़ना—बोल० खुशामद  
करना, जो मनुष्य प्रीति नहीं करना  
चाहता उससे प्रीति किया चाहता ।

प्रा० गलेपड़ीवजायेसिद्ध—बोल०  
जो काम आपड़े उसको करना ही  
चाहिये । ०४ ।

प्रा० गले का हार होना—बोल०  
किसी से बड़ी लगन के साथ प्यार  
करना, मन हर लेना, सदा मन  
में बसना । ०५ ।

प्रा० गलेलगाना—बोल० मिलना,  
छाती से लगाना । ०६ ।

प्रा० गलाना ( गलना ) क्रि० स०  
पिघलाना, २ सड़ाना । ०७ ।

सं० गलित ( गल्=गिरना ) क० गला  
हुआ, पड़ाहुआ, सड़ाहुआ, गिरा  
हुआ, जो गिर पड़ा हो । ०८ ।

प्रा० गली—स्त्री० दोड़ारस्त्रा, नेगरस्त्रा ।

प्रा० गलीगली—बोल० एकगली से  
दूसरी गली तक, हरगली ।

प्रा० गवन ( सं० गमन ) भा० पु०  
जाना, चलना, कूच, जाना ।

सं० गवय ( गो=गाय ) पु० गाय के

गिरिन्दा (मं० गिरीन्द्र) पु० बड़ा पहाड़, सुमेरु पहाड़, हिमालय पहाड़।  
गिरिराज (गिरि=पहाड़, राज=राजा) पु० पहाड़ों का राजा, गोवर्द्धन, हिमालय, सुमेरु, २ श्री-कृष्ण का नाम।

सं० गिरिवर (गिरि=पहाड़, वर=बड़ा) पु० बड़ा पहाड़।

सं० गिरिसुता (गिरि=पहाड़, सुता=बेटी) श्री० पार्वती, गौरी, गिरिजा, लमा।

सं० गिरीन्द्र (गिरि=पहाड़, इन्द्र=राजा) पु० हिमालय, सुमेरु, गिरीश।

सं० गिरीश (गिरि=पहाड़, ईश=स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ हिमालय।

प्रा० गिलई-भा० श्री० निगल जाइ।

सं० गिलन (गु=निगलना वा गाना) भा० पु० भक्षण, खाना।

अ० गिलन=छः बोटल का पैमाना।

सं० गिलित (गिल् + इत्) स्त्री० सादित, भक्षित, खाई हुई।

सं० गीतिका=नाम एक छन्द का।

प्रा० गिलहरी-स्त्री० एक जानवर का नाम, रुसी चीमुर।

प्रा० गिलोरी-श्री० पान की बीड़ी।

सं० गीन (गै=गाना) पु० गान, गजन

सं० गीता (गै=गाना) स्त्री० एक पु-ना नाम जिस में श्रीकृष्ण

और अर्जुन का संवाद है और उसको भगवद्गीता कहते हैं इसके सिवाय रामगीता, पांडवगीता, आदि और भी गीता हैं पर इन सब में भगवद्गीता बहुत प्रसिद्ध है।

प्रा० गीदड़-पु० शिवाल, गृगाल।

प्रा० गीध (सं० गृध्र) पु० गिद्ध, गृध्र।

प्रा० गीला-गु० ओढ़ा, भीगा, सीला।

सं० गु-स्त्री० विष्टा, गलीज।

प्रा० गुंजान-गु० गहरा, सयन, पना, पामपाम।

प्रा० गुजरात (सं० गुर्जर) स्त्री० एक देशा नाम, हिंदुस्तान का एक सूबा।

प्रा० गुजगनी-गु० गुजरात का।

सं० गुञ्जन-भा० गुंजना।

सं० गुञ्ज (गुञ्जि=गुजरना) ए० पुण्य-स्तव, गुनदस्ता, फूलों का गुच्छा।

प्रा० गुञ्ज (गुञ्जि=गुञ्ज करना) पु०

सं० गुञ्जा (गुञ्जि=गुञ्जना) पु० गुंजनी लाल, एक बेनी का नाम।

सं० गुटिका (गु=गुञ्ज करना) स्त्री० दवाई की गोली, २ चाहे नैसी गोली।

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

सं० गुड (गुह=चूर्ण करना) पु० पीठ

- प्रा० गुड़गुड़ी—स्त्री० छोटा हुआ ।
- प्रा० गुड़िया—स्त्री० लड़कियों का खिलौना । [ कनकौबा ।
- प्रा० गुड़ी—स्त्री० पतंग, तिलंगी,
- सं० गुण—(गुण=बुलाना वा गुणना) पु० स्वभाव, विशेषण, २ हुनर, चतुराई, मवीणता, विद्या, ३ रस्सी, टोरी, ४ सत्त्व रज तम ये तीन गुण ५ कृपा, मिहरवानी, भना, भलाई, ६ गुना हुआ, बार ।
- प्रा० गुणकरना—बोल० भला करना, भलाई करना ।
- प्रा० गुणकापलत्र देना—बोल० भलाई का बदला देना, भलाई के पलट्टे भलाई करना ।
- प्रा० गुणमानना—बोल० भला मानना, अहसान मानना ।
- सं० गुणक (गुण=गुनाकरना) क० पु० वह शंक निस्संशु गुणा किया जाना है, मजबूतफ्रीद ।
- प्रा० गुणगाहक—(सं० गुण+ग्राहक) क० पु० गुण जाननेवाला, गुण प्राप्ति, कदरदान ।
- सं० गुणग्राही (गुण=विद्या, हुनर, गुणग्राहक) ग्राही=लेने वाला, ग्रह=लेना) क० पु० गुण को जानने-वाला, गुणग्राहक ।
- सं० गुणज्ञ (गुण, ज्ञा=जानना) क० पु० गुण को जाननेवाला ।
- सं० गुणन (गुण=गुणना) भा० गुणना } पु० गुना करना, सम-भना, अभ्यासकरना ।
- सं० गुणवान् } (गुण=हुनर, वत्=वाला) गु० गुणी, गुणवन्त } चतुर, मवीण, पंडित ।
- सं० गुणित (गुण=गुणना) र्म० गुणा हुआ ।
- सं० गुणी (गुण) गु० गुणवान्, विद्यावान्, निपुण, मवीण, हुनरमन्द ।
- सं० गुण्य (गुण=गुणना) र्म० पु० जो शंक गुणाग्राय, मजबूत ।
- प्रा० गुन (सं० गुण) पु० (गुण शब्द को देखो)
- प्रा० गुनगुना—गु० घोड़ा गर्प ।
- सं० गुप्त (गुप्त=छिपाना वा धबाना) गोपित } र्म० छिपा हुआ दफा हुआ, लुका हुआ, २ धबा हुआ, रक्षित ।
- सं० गुप्ति—भा० स्त्री० रक्षण, पोशी-दगी ।
- प्रा० गुप्ती (सं० गुप्त) स्त्री० छिपी हुई तजवार, लाठी के भीतर छोटी तलवार ।
- सं० गोप्ता (गुप्त+ता) क० पु० रक्षक, मुहाफिज ।
- सं० गोप्य—र्म० गुप्त, छिपाने योग्य ।
- प्रा० गुफा (सं० गुहा) स्त्री० खोद, कंदरा, गुहा, पहाड़ के बीचकी जगह ।
- सं० गुरु (गु=निकातना) (अज्ञान को) वा गुरु उपदेश करना (धर्मका)



पु० संवेदेनेवाला, पंग उपदेशक, पंग  
मिमानेवाला। आचार्य, उपदेशक,  
२ वाग, शयवा सपना और कोई बड़ा  
पुरुष, ३ शिक्तक, पढ़ानेवाला,  
४ बृहस्पति, देवताओं का गुरु, ५ द्वि-  
मायिक जल, दीर्घतर, अनुस्वार  
और चिन्मयनालाभ्य मंगोमी,  
अपगो के पड़ने का स्वर गु० भारी,  
बड़ा, पु०, पतनीय ।

मं० गुम्फ (गुह-निरोना) भा०  
गु० गुपना, गुपन, वाङ्मयण ।

मं० गुम्फिन मं० गुम्फ, गुम्फिह ।

मं० गुम्फा गु० गुम्फा, गुम्फा ।

मं० गुम्फम गु० गुम्फा, गुम्फा ।

मं० गुम्फमोना गु० गु० गु०  
गुम्फा, गुम्फा का चला इना ।

मं० गुम्फन (गुह-वेदे तन-मन-गुह)  
गु० वेदे तन-गुम्फा न ग ।

मं० गुम्फन्य (गुह) भा० गु० गु० गु०  
गुम्फा, गुम्फा, गुम्फा, गुम्फा ।

मं० गुम्फार (गुह-बृहस्पति, वाग-  
दिने) गु० बृहस्पति, वाग, गुम्फा ।

मं० गुम्फारि (गुह-मारी, अर्ध-  
गुम्फा) गु० गुम्फा, गुम्फा ।

मं० गुम्फारि (गुम्फा, गुम्फा, गुम्फा)  
गु० गुम्फा, गुम्फा, गुम्फा ।

मं० गुम्फारि (गुम्फा, गुम्फा, गुम्फा)  
गु० गुम्फा, गुम्फा, गुम्फा ।

मं० गुम्फारि (गुम्फा, गुम्फा, गुम्फा)  
गु० गुम्फा, गुम्फा, गुम्फा ।

की मिठाई, एक तरह का फल ।

प्रा० गुलेल { सी० एक तरह का  
गुलेल } धनुष ।

मं० गुल्फ-पु० गैर की गांठ, टरना ।

सं० गुल्म (गुह-रक्षा करना, लोप-  
ना) पु० वायुमोला, ग्रीह, २ भाह,  
लता, ३ गुज-रथ-अरव ४ यदाति

सेना की संख्या ५ विगु ५ आवरण ।

मं० गुह (गुह-ढकना) पु० निपाद,  
गुम्फा, गुम्फा, गुम्फा और भीरामचन्द्र

वा मित्र, २ वाग्निदेव ।

प्रा० गुहना (सं० गुम्फन, गुम्फ-  
गुपना) क्रि० सं० गुम्फन, गुम्फना ।

मं० गुहा (गुह-ढकना) श्री० गुहा,  
गोह, बंदरा । [ २ सहाय ।

प्रा० गुहार-श्री० गुहार, शोर, हाह,  
मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)

मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)  
मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)

मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)  
मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)

मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)  
मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)

मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)  
मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)

मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)  
मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)

मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)  
मं० गुहा (गुह-ढकना, दिवाता)

प्रतिध्वनि होना, गुंज, रहना,  
है गर्जना, घुरना ।

प्रा० गुंम्मा-पु० एकतरकी मिठाई ।

प्रा० गुंथना-( सं० गुम्फन, गुम्फ=  
गुंथना ) कि० स० चिरोना, लडि-  
याना, गुहना ।

गूजर-( सं० गुर्जर= गुजरात ) पु०

एक जाति निगाका-पेगा दूध पेंवने

का है और जो गुजरात से फैली

है, ग्वाला, गोष, अहीर—गूजरी

=अहीरी, गोषी, गूजर की स्त्री ।

प्रा० गूजरी स्त्री० लुगाइयों के हाथ

में पहनने का एक गरना ।

सं० गूढ़-( गूढ=छिपाना ) गु० गूस्फ,

कठिन, २ छिपा, गुप्त ।

प्रा० गूदा-( सं० गोर्द ) पु० तार, पेना ।

प्रा० गूलर-पु० अंजीर, दूसर, एक

फल का नाम ।

सं० गूधु०-क० पु० लोभी, लालची ।

सं० गूध्र-( गूध्र=वारना ) पु० शीप,

गिद्ध ।

सं० गूध्रराज-( गूध्र=शीप, राज=

राजा ) पु० जगधु पक्षी भिगवा

बर्तन नामक पें है ।

सं० गूह-( गूह=घर ) पु०

घर, वाता, गेद, घरान, बागघरने

की जगह, रहने की जगह, देश,

२ स्त्री, पराकां ।

सं० गूहस्थ-( गूह=घर, स्था=उहरना )

पु० घरवाला, घरवारी, दूसरा आ-

श्रम २ क्रिमान ।

सं० गूहस्थाश्रम-( गूहस्थ+आ-

श्रम ) पु० गूहस्थ का धर्म अश्रम

काम, दूसरा आश्रम ( आश्रम शब्द

को देखो ) ।

सं० गूहागन-( गूह+आगन, आ+

गम+न ) क० पु० आगन्तुक, आ-

विधि, परमान, पाहुन, प्रायुण ।

सं० गूहिणी-( गूह=घर ) स्त्री० घर

वाली, लुगाई, भोरु, भाषी, गी,

पत्नी । [ गूहस्थ ।

सं० गूही-( गूह ) पु० घरवाला,

सं० गूहीन-( गूह=लेना ) स्त्री० पु०

लियाहुमा, पकड़ाहुमा, स्वीकार

रियाहुमा, प्रमाण कियाहुमा ।

प्रा० गेंडा-( सं० गण्ड ) पु० एक

जानवर का नाम जिससे पुहों पर

के चाम की टाल टपम बनती है ।

प्रा० गेंद-( सं० गेष्ट, गन्ड का गा=

जाना ) स्त्री० लड़की के खेलनेकी

बगइरी या बगइरी की गोल चोख,

बन्दुक ।

प्रा० गेंदनी खेलना-खेल= हँट

मे गेंद की काटके खेलना ।

प्रा० गेंदा-( सं० गेष्ट, गन्ड, गा गा

=जाना ) पु० घरघरनेवाला, गेंद ।

सं० गेय-(ग=गाना) र्म० गाने योग्य ।

प्रा० गेरु-(सं० गेरिक, गिरि=पहाड़) स्त्री० पहाड़ की छाल मिट्टी ।

प्रा० गेरुआ-(गेरु) गु० गेरु से अथवा गेरु जैसा रंगा हुआ ।

सं० गेह-(ग=गणेशजी, ईह=वाहना) अर्थात् घर की नेव डालने के दिन ही से घर में गणेशजी को स्थापन करने हैं ) पु० घर, महान ।

प्रा० गेहूँ-(सं० गोपूष, गुष=वहना) पु० गोहूँ, एक प्रकार का अनाज, गेहूँ ।

प्रा० गेहूँआ (गेहूँ) पु० गेहूँ का गेहूँवा (रंग, = एक प्रकार की घाम, गु० गेहूँवर्णा, साँवला, गेहूँ के रंग जैसा ।

प्रा० गेगली-स्त्री० बेंदी, हड़क, लुबरी, बेमतीहा ।

प्रा० गैया (सं० गी, गम्=माना) गइया स्त्री० गाय ।

प्रा० गेल-पु० रस्ता, मार्ग, पैदा, बाट ।

सं० गो-(गम्=माना) पु० स्त्री० गाय, गैर, धेनु, २ स्वर्ग, ३ दिग्ग, ४ वृक्ष, ५ धनी, ६ बागी, ७ कोठी, ८ इन्द्रिय, ९ स्वर्ग, दिग्ग १० वज्र ।

प्रा० गोहं-(सं० गुह) गु० दिवाहना, हुक, दि० म० दिवाहना ।

सं० गोकर्ण-पु० पुरुषविशेष, ब्रह्म ।

सं० गोकुल-(गो=गाय, कुल=समूह वा घर) पु० व्रज, मथुरा के पास एक गाँव जहाँ नन्दजी रहने के और जहाँ श्रीकृष्ण ने अपना बाल्यपन बिताया, श्रीकृष्ण का जन्म स्थान, २ गायोंका समूह, ३ गाँवों के रहने की जगह ।

प्रा० गोखुरु (सं० गोखुर, गो=गाय, खुरु=खुर) पु० एक पौधे का नाम, २ एक प्रकार का गहना ।

सं० गोचर (गो=इन्द्रिय, चर=चलना जिसमें इन्द्रियाँ जाती हैं ) पु० इन्द्रियों के विषय जैसे रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श, गु० जो इन्द्रियों से जाना जाय ।

प्रा० गोह (सं० गुहिका) स्त्री० चौपड़ वा शररंज की गोदी ।

प्रा० गोह-स्त्री० संजाक, कोर ।

प्रा० गोहा-पु० सोना वा चाँदी के बुने हुए तार, किनारी, तागवोड़ ।

प्रा० गोही (सं० गुहिका) स्त्री० गीत-ला का दाग, धेनुक का दाग ।

प्रा० गोड़-पु० पाँव, पैर, पिंढली, टाँग । [ गृहेता ।

प्रा० गोड़ना-दि० सा० मोदना,

प्रा० गोण-(सं० गोही, गुण=वहना)

ना ) स्त्री० घैला, बेरा, अनाज  
 ढालने का घैला । [ जात, कुल ।  
 प्रा० गोत-( सं० गोत्र ) पु० वंश,  
 सं० गोतम-पु० एक ऋषिका नाम,  
 जिसने न्यायशास्त्र बनाया ।  
 सं० गोतमनारी-स्त्री० गोतम की  
 स्त्री, अरुन्धा ।  
 प्रा० गोतिया } (गोत)पु० जातभार्द  
 गोती } सन्वन्धी, वृद्धधी ।  
 सं० गोत्र-( गो=वृद्धी, दै=वचाना )  
 पु० गोत, कुल, वंश, जातिरूपवाङ् ।  
 सं० गोत्रज (गोत्र=गोत, जन=पैदा  
 होना ) पु० गोतिया, गोत्री, एक  
 गोत का, संवन्धी ।  
 सं० गोतीत-(गो=इन्द्रिय, अतीत=  
 परे) पु० जो इन्द्रियोंसे नहीं देखा-  
 जाय, अगोचर ।  
 प्रा० गोद } ( सं० क्रोड् ) स्त्री० संक-  
 गोदी } वार ।  
 सं० गोदान-(गो=वेश, गौ, दान=  
 देना ) पु० मुण्डन, केशान्तरूप,  
 संस्कार भेद, अथवा गोदान विधे  
 रत्नद्वयमित्यर्थः गौपुष्पकरना ।  
 प्रा० गोदपसारना-बोल० मांगना,  
 जांचना ।  
 प्रा० गोदलेना-बोल० ले पालना,  
 बेटा करलेना, पोस पून करना ।  
 सं० गोदावरी (गो=स्वर्ग, दा=देना)

स्त्री० एक नदी का नाम, जो द-  
 क्षिण में है ।  
 सं० गोधन-(गो+घन)पु० गोसूयधन ।  
 सं० गोधूम-पु० गेहूँ ।  
 सं० गोधूलि-(गो=गाय, धूलि, रज,  
 अर्थात् जिस समय जंगल से शहर  
 में आने से गायों के पैरोंसे रज उड़ती  
 है ) स्त्री० संध्या, संध्याकांति, सूर्य  
 के अस्त होने का समय ।  
 प्रा० गोना } ( सं० गोपन ) क्र० स०  
 गोवना } छिपाना ।  
 सं० गोप-( गो=गाय, पा=पालना )  
 पु० ग्वाला, अहीर, घोसी ।  
 प्रा० गोप-पु० गले में पहनने का  
 एक गरता ।  
 सं० गोपन-(गुप्त=छिपाना, वचाना)  
 पु० छिपाव, लुकाव, दुराव, चचाव ।  
 सं० गोपनीय (गुप्त=छिपाना) र्म०  
 छिपाने योग्य, गुप्त ।  
 सं० गोपाल } ( गो=गाय, पाल्=  
 गोपालक } पालना ) पु० गोप,  
 ग्वाला, अहीर, गायोंको पालनेवाला ।  
 सं० गोपी-( गोप ) स्त्री० ग्वालिन,  
 अहीरी ।  
 सं० गोपीनाथ ( गोपी=ग्वालिन,  
 नाथ=स्वामी ) पु० श्रीकृष्ण, गो-  
 पियों का पति ।  
 सं० गोप्य-(गुप्त+य, गुप्त=छिपाना)  
 र्म० छिपानेयोग्य ।



प्रा० घट-पु० मन, जी, अन्तःकरण ।  
 सं० घटज ( घट=घड़ा, जन=पैदा होना ) पु० अगस्त्यश्वपि, कुंभेज ।  
 सं० घटयोनि ( घट=घड़ा, योनि=पैदा होनेकी जगह ) पु० अगस्त्यश्वपि जो घड़े में पैदा हुआ ।  
 प्रा० घटती ( घटना ) स्त्री० कपती, घटी, टोटा ।  
 प्रा० घटना-क्रि० अ० कम होना, कपती, न्यून होना, २ योगना, हादसा, बाधिका, संयोग ।  
 प्रा० घटाव ( घट=इकट्ठा होना ) घटाने स्त्री० घादलोंका समूह, घादलोंका उपदेना, घादल, २ समूह आदम्बर ।  
 सं० घटाशेष ( घटा=समूह, घाटोप=ढरना ) पु० पालकी अथवा रथके ढरनेका कपड़ा, बहुत घादल । [ थोड़ाकर देना ]  
 प्रा० घटाना-क्रि० स० कम करना, घाटाना, २ घटाने का चिह्न, च्छेद ।  
 प्रा० घटिया-शु० थोड़े मोल का, सस्ता । [ सान ।  
 प्रा० घटी-स्त्री० घाटा, हानि, नुक़-  
 सं० घटी ( घट=बनाना ) स्त्री० घटिका घटी, साठ पल, मुहूर्त, २ छोटा पड़ा ।

सं० घट्ट- ( घट=बनाना ) पु० घाट, रस्ता ।  
 प्रा० घड़घड़ाना-क्रि० अ० गर्जना, कड़कड़ाना ।  
 प्रा० घड़ना-क्रि० स० गड़ना, बनाना, गड़ना, बनाना, और कोई धातु को गड़ना ।  
 प्रा० घड़ा ( सं० घट ) पु० मिट्टी का बरतन, गगरा, कलश, कुम्भ ।  
 प्रा० घड़ियाल ( सं० घटिका, बाघटी ) स्त्री० घण्टा, २ मगरमच्छ, कुंभीर ।  
 प्रा० घड़ी ( सं० घटी ) स्त्री० साठ पल का समय, चौबीस मिनट, २ समय जानने की कल ।  
 प्रा० घड़ीमेंतोला घड़ीमेंमाशा-बोल० यह उस आदमी के लिये बोला जाता है जिसका स्वभाव या मन यही घड़ी में बदलता हो ।  
 सं० घण्टा- ( हट=मारना ) पु० घड़ी, घड़ियाल ।  
 सं० घण्टाली- ( घण्टा ) स्त्री० छोटी घण्टी जो पैनों के गले में डालने है, घण्टी ।  
 सं० घन ( हट=मारना ) पु० बादल, घटा, बादलों का समूह, २ हथौड़ा, निराई, ३ हिसाब में एकही अंक को उसी से तीन बार गुणने को घन करते हैं जैसे ३ का घन २७

४ रेखागणितमें ऐसी चीज जिसमें  
लंबाई, चौड़ाई और मोटाई ये तीनों  
पाई जायें, गु० मोटा, दृढ़, निविड़,  
गहरा, घना ।

मं० घनघोर ( घन=बादल, घोर=  
दरावना ) पु० गहरा बादल, घरा,  
घनगज, दरावना शब्द ।

मं० घननाद ( घन=बादल, नाद=  
शब्द ) पु० शब्द का घन, मेघनाद,  
शब्दनाद ।

मं० घनमूल ( घन+मूल पु० घन  
का मूल जिस मूलका घन किया  
गया, जैसे २७ का घनमूल ३ ।

मं० घनम-पु० मयन, मोह, आव-  
ड, श्रवण, जल, गिरगल ।

मं० घनग्रयाम ( घन=बादल, ग्रयाम  
=हाना ) पु० ध्वंश, नष्ट, काशी  
घरा, गु० बादल जैसा वाता ।

मं० घनमा-पु० वृष्टि, पारा, मल ।

मं० घना ( घन=घन पु० गहरा,  
घन=बहुल, दृढ़ ।

मं० घनेग ( घन=घन ) पु० बहुल,  
घनेग ( घनेग, घनेग, गुंथान,  
बहुल ) ।

मं० घरगना ( घन=घन पु० गहरा,  
घरगना ) ।

मं० घनगट्ट ( घनगना ) घन  
को=दृढ़, मोह, श्रवण, जल, गिरगल,  
घट्टा, घनेग, घट्टेगा, घनवत ।

मं० घवरि-पु० घुंघरी ।

मं० घमंड-पु० अहंकार, गर्व, अभि-  
मान, दर्प, गरूर ।

मं० घमंडी-पु० अभिमान, गर्वीला ।

मं० घमसान ( सं० घोरशब्दान )  
पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम, बकीलदारी ।

मं० घमोई-श्री० नरसल, नरसल,  
वेन, सरसल, नल ।

मं० घर ( सं० घर ) पु० मकान,  
रहने की जगह, गाम, गामा, डेरा,  
रेखाना, गान ।

मं० घरचालना-श्री० उठाड़ना,  
नाश करना, घरनाश करना ।

मं० घरचलाना-श्री० घरका  
चलाना, घरका काम चलाना ।

मं० घरजाना-श्री० घरका नाश  
होना, उठाड़ना, बिगड़ना ।

मं० घरहुवोना-श्री० छिपी का  
खिगाड़ना, छिपी के सामने का  
नाश करना ।

मं० घरहुवना-श्री० नाशहोना,  
घरका नाश होना, उठाड़ना ।

मं० घरघेटना ( घन=घन पु० गहरा,  
घरघेटना ) घन=घन पु० गहरा,  
घरघेटना ) घन=घन पु० गहरा,  
घरघेटना ) घन=घन पु० गहरा,

मं० घरघेटना-श्री० घन=घन पु० गहरा,  
घरघेटना ) घन=घन पु० गहरा,  
घरघेटना ) घन=घन पु० गहरा,

मं० घरघेटना-श्री० घन=घन पु० गहरा,  
घरघेटना ) घन=घन पु० गहरा,  
घरघेटना ) घन=घन पु० गहरा,

मं० घरगी ( मं० घरगी ) श्री०  
घरगी ( घरगी, घरगी, घरगी )  
घरगी ( घरगी, घरगी, घरगी )  
घरगी ( घरगी, घरगी, घरगी )

प्रा० घरनई ( सं० घटनौका, घट=  
 घड़ा, नौका=नाव) स्त्री० घड़ों से ब-  
 नाई हुई नाव, चौपड़ा, बेड़ा ।  
 प्रा० घरवार-पु० घराना, कुनवा ।  
 प्रा० घरवारी-गु० गृहस्थी, कुटुंबी ।  
 प्रा० घराना-पु० कुटुम्ब, घरके लोग ।  
 प्रा० घरी-स्त्री० घर, पड़, चुनत, बड़ी ।  
 प्रा० घरेला (पा) गु० घरवा, बालू ।  
 सं० घर्म (घृ=सींचना) पु० गर्मी,  
 घाम, धूप । [ नेवाला, घिसैपा ।  
 सं० घर्षक (घृष्+अक क० पु० घिस-  
 सं० घर्षित (घृष्+इत) र्वं० पु०  
 घिसा हुआ । [ सना, रगड़ना ।  
 सं० घर्षण (घृष्+रगड़ना) पु० घि-  
 प्रा० घसना ( सं० घर्षण) क्रि० सं०  
 घिसना ) रगड़ना, मलना ।  
 प्रा० घसियारा ( सं० घासहारक )  
 पु० घास काटनेवाला ।  
 प्रा० घसीटना ( सं० घृष्=रगड़ना )  
 क्रि० सं० सींचना, खींचलेजाना ।  
 प्रा० घांटी-स्त्री० टेंटुवा, नोटें ।  
 प्रा० घाघ-गु० बूढ़ा, जिसने बहुत  
 देता मुना हो ।  
 प्रा० घाघरा ( सं० घर्षर, घृ=सीं-  
 चना ) स्त्री० सरपू नदी का नाम,  
 २. पु० लहंगा ।  
 प्रा० घाट ( सं० घट ) पु० नदी या

तालाब आदि में नहाने की जगह ।  
 उतरने की जगह ।  
 प्रा० घाट पु० डोल, रूप, मूरत,  
 २. घटी, कमी, गु० कम ।  
 प्रा० घाटा पहाड़ का चक्राव, पहाड़ में  
 रस्ता, २. घटी, कमी, नुकसान ।  
 प्रा० घाटिया ( घाट ) पु० घाटपर  
 रहनेवाला, ब्राह्मण, गद्दापुत्र ।  
 प्रा० घाटी ( सं० घट ) स्त्री० पहाड़  
 में गली. पहाड़ में तह रस्ता, दर्रा ।  
 सं० घात ( हन्=मारना ) पु० मारना,  
 चोट. मार. हत्या, दांव, मौक़ा ।  
 प्रा० घात-स्त्री० दांव, विचार, इरादा,  
 दांव की जगह, पेच ।  
 प्रा० घातकरना-बोल० घातलगा-  
 ना, घातमें रहना, छिपके बैठना ।  
 प्रा० घातताकना-बोल० गौतकना,  
 अबसर देखना, दांव पाना ।  
 सं० घातक ( हन्=मारना ) क० पु०,  
 घातुक ) मारनेवाला, हत्यारा ।  
 सं० घाती ( हन्=मारना ) क० पु०  
 मारनेवाला—घातिनी=मार करने  
 वाली, मारनेवाली ।  
 प्रा० घानी-स्त्री० कोल्ट, मिलसेतेल  
 निकालने की कठ, २. उत्त से उत्त  
 निकालने की कठ । [ गर्मी ।  
 प्रा० घाम ( सं० घर्म ) स्त्री०, धूप,  
 प्रा० घामड़-गु० भोला, सीपा, उल्लू ।  
 प्रा० घायल ( घार=चोट, सं० ला=  
 लेना ) गु० घाव लगा, जखमी ।



प्रा० घालक क० पु० नाशकरनेवाला

प्रा० घालना क्रि० स० उजाड़ना,  
नाशकरना, २ डालना, घुसेड़ना ।

प्रा० घाला-म्है० नाशकिया ।

प्रा० घाव-पु० चोट, व्रण, जखम ।

सं० घास ( घस् + खाना ) पु० तुण,  
फूस, चारा, गोरु, गाय आदि का  
खाना ।

प्रा० घिघियाना-डरसे या खुशी  
से धोल नहीं निकलना, २ फुस-  
लाना, बदलाना, ३ लड़खड़ाना,  
गुनलाना, हकलाना, ४ छल्लोपत्तो  
करना, गिड़गिड़ाना, बहुतगारीबी  
से प्रार्थना करना, विनती करना ।

प्रा० घिघीबंधजाना-धोल० तुत-  
लाना, हलकाना, २ मारे लाजके  
या डरके मुँहसे धोल नहीं निकलना ।

प्रा० घिए } ( सं० घृणा ) स्त्री० न  
घिन } करत, गलानि, अवज्ञा,  
घिना ।

प्रा० घिया स्त्री० घियातुरई, एक  
तरकारी का नाम ।

प्रा० घिरना क्रि० अ० घिरजाना,  
बन्द होजाना, घेरे में आजाना,  
बादलों का उपड़ना ।

प्रा० घिरनी ( सं० घूर्ण = घूमना ) स्त्री०  
चरखी, छोटा पहिया, बेल विद्या  
में एक कछ का नाम, २ रस्ती

बटने की कल, ३ लोटन कूतर,  
एक तरफ का कूतर ।

प्रा० घिरनीखाना-धोल० लोटन  
खाना, गोलगोल खाना, गोलघूमना ।

प्रा० घी ( सं० घृत ) पु० घृत, घी ।

प्रा० घुंड़ी स्त्री० बटन, बूताम ।

प्रा० घुटना-पु० ठेवना, गोड़ा, जानू ।

प्रा० घुटनोंचलना-धोल० देवने से  
चलना, ( जैसे बालक ) तिसकना ।

प्रा० घुड़ ( घोड़ा ) पु० घोड़ा ।

प्रा० घुड़चड़ा-पु० घोड़े पर चढ़ने  
वाला, सवार ।

प्रा० घुड़दौड़-स्त्री० घोड़ों का  
दौड़ना, वह जगह जहाँ शर्त करके  
दो दो आदमी घोड़ा दौड़ाते हैं ।

प्रा० घुड़बहल-चार पहियों का रथ  
जिसमें घोड़े जुते हैं ।

प्रा० घुड़मुँहा-पु० जिसका मुँह  
घोड़े कैसा हो ।

प्रा० घुड़साल पु० तबेला, अस्तबल ।

सं० घुण ( घृण = घूमना ) पु० एक  
कीड़ा जो लकड़ी को और अनाज  
को खाकर थोथा कर डालता है ।

प्रा० घुणा ( सं० घृण ) पु० घृणका  
साया हुआ, थोथा, पोला ।

सं० घुणाक्षरन्याय ( घृण + अक्ष-  
र + न्याय ) पु० मुँहके खाने से

जो लकड़ी में कभी अक्षर का सा रूप बन जाता है तात्पर्य यह है कि कोई वस्तु अकस्मान् संयोग से प्राप्त होनाय तो इस स्थल पर कहा जाता है ।

प्रा० घुप-पु० अन्धेरा ।

प्रा० घुमंडना-क्रि० अ० पादलों का घिसना ।

प्रा० घुमाना ( घूमना ) क्रि० स० गोल गोल फिराना, फिराना, २ चक्कराना ।

प्रा० घुरकना } ( सं० घुर=ढरना )  
घुरकाना } क्रि० स० घमकाना, भिड़की देना, ढराना ।

प्रा० घुरकी ( घुरकना ) स्त्री० घपकी, भिड़की ।

प्रा० घुरनाना-क्रि० स० सर्राटा धारना, नाक पर रखना । [ जाना ।

प्रा० घुसना-क्रि० अ० पैटना, भीतर

प्रा० घुंघर } पु० लहरायेहुये बाल,  
घुंघर } मुड़ेहुये बाल, अंगूठिये बाल ।

प्रा० घुंघची } ( सं० घुञ्जना ) स्त्री०  
गुंघची } लाल चिरमो, रची ।

प्रा० घुंघट-पु० अंचले की आड़, घुरका, भोदनी के अंचले से मुँह ढांकना ।

प्रा० घुंघटकाढ़ना-बोल० भोदनी से मुँह ढांकना, लाजकरना ।

प्रा० घुंघटकरना-बोल० भोदनीसे मुँह ढांकना, घुरका ढालना, मुँह छिपाना, लाजकरना ।

प्रा० घुंघरू } ( सं० चर्वरा ) पु०  
घुंघरू } छोटी घंटी, भुद्रघंटिका, पांव में पहनने का एक प्रकार का गहरा ।

प्रा० घुंसा-स्त्री० बड़ामूसा, बड़ाचूरा ।

प्रा० घुंसा-पु० मुक्का, मुक्की, घप्पा, मुक्का ।

प्रा० घुंघू-पु० उल्लू एक जानवरका नाम ।

प्रा० घूमघुमाला-बोल० घेरदार ।

प्रा० घूमना ( सं० घूर्ण=घूमना ) क्रि० अ० फिरना, गोल गोल फिरना, चक्कर खाना ।

प्रा० शिरघूमना-बोल० सिरमें कुछ दर्द होना, सिर फिरना, सिरचक्राना ।

प्रा० घूरना-क्रि० स० ताकना, ताक लगाना, २ कोपकी आंखसे देखना, क्रोध से देखना ।

सं० घूर्णन ( घूर्ण=घूमना ) भा० पु० भ्रमण, घूमना ।

सं० घूर्णित-क० पु० भ्रमिन ।

प्रा० घूस-स्त्री० बड़ामूसा, २ शिखर, अक्षर, मुँहभरी, मुँहतोपी ।

सं० घृणा ( घृ=घ्रायना ) स्त्री० घिन, ग्लानि, नकार, अवज्ञा, २ धिक्कार, २ कदवा, दया ।



वर्ग, पुनानिधाना, रत्नेधाना ।  
 में० घोषण-भा० पु० यादकरना ।  
 रटना, मचार करना ।  
 सं० घोषणपत्र-पञ्चान, १ दिनहार ।  
 प्रा० घोमी ( सं० घोम ) पु० मुग-  
 छनान भाला ।  
 सं० घ्राण ( घ्रा=सूयना ) पु० मुग-  
 न्य, मन्थ, घृ, पात, सूयना, २ नाक,  
 नासिका ।  
 सं० घ्राणन्द्रिय ( घ्राण+इन्द्रिय )  
 पु० स्त्री० सूयने की इन्द्री, नाक,  
 नासिका । [ घाला ।  
 सं० घ्रायक-त० पु० गंधघ्राहक, सूयने  
 च  
 सं० च-पु० शिव, २ चांद, ३ चौर,  
 ४ कटुवा, ५ दुष्ट, ६ निर्वीज-समुष्ण  
 और, फिर, पुनि ।  
 प्रा० चंगा-धी० गुह्री, गर्भंग, २ बीज,  
 किंगरी, मुरचंग । [ भलाचंगा ।  
 प्रा० चंगा-पु० निरोगी, निरोग, सुखी,  
 प्रा० चंगाकरना-बोल० अचछा  
 करना, बीमारी से अचछा करना ।  
 प्रा० भलाचंगा-बोल० निरोग,  
 अचछा, सुखी ।  
 प्रा० चंगेर-पु० फूलरगनेका वरतन ।  
 प्रा० चंगेरा-पु० सांचा, बठरा,  
 टोकरा, चंगेरी=स्त्री० टोकरा, स-  
 चिपा, बटरी ।

प्रा० चंचनाना-कि० ध० टीसपा-  
 रना, मनसनाना, २ चनचन ऐसा  
 गून्ड करना ।  
 प्रा० चंडोल-पु० डोला, पालकी,  
 डोली, चौपाला, २ एक पत्तेरु का  
 नाव, ३ एक रिलौने का नाम ।  
 प्रा० चंदला-पु० गंजा । [ याना ।  
 प्रा० चंदवा-पु० चांदनी, छोटासामि-  
 प्रा० चंदा ( सं० चन्द्र ) पु० चांद ।  
 प्रा० चंदा-पु० बाढ़, रगाही लग-  
 ती, लगान, विहरी  
 प्रा० चंदेला ( सं० चंद्र ) पु० राजपूतों  
 की एक जात जो अपने तई चंद्रवंशी  
 यनलाते हैं ।  
 प्रा० चंवर ( सं० चमर ) पु० सुरहगाय  
 की रूद्र का घनाहुया चमर जो रा-  
 गालों के सिरपर मक्खी आदिको  
 दूर करनेके लिये हिलाया जाताहै ।  
 प्रा० चक्र ( सं० चक्र ) पु० नागीर,  
 हजार, जोसी बोई हुई परती ।  
 प्रा० चकई ( सं० चक्रवाकी ) स्त्री०  
 चक्की, २ ( सं० चक्र ) एक सि-  
 लांगे का नाम ।  
 प्रा० चकनाचूर-पु० डुकड़ा, दूर,  
 छोटेछोटे डुकड़े, फागल ।  
 प्रा० चकनाचूरहोना-बोल० दूक  
 दूरहोना, चूरचूरहोना, डुकड़े २ होना ।  
 प्रा० चकनाचूरकरना-बोल० चूर

चूर करना, टुकड़े २ करना, टुक २ करना । ( कपड़ा, २ मोजा ।

प्रा० चक्रमा-पु० एक भांतिका ऊनी

प्रा० चक्रवा-पु० धूमधाम, चक्रवा ।

प्रा० चक्रवामचाना—चोल० धूम धाम करना ।

प्रा० चक्रा-पु० दाल का बड़ा ।

प्रा० चक्रगना-क्रि० अ० अचंभे में होना । [ दासी ।

प्रा० चक्रानी(गाजर)सी० टहलोबी,

प्रा० चक्राला-(सं० चक्र) पु० पतुरिया का पत्र, घेरपालाव, २ एक भांतिका कपड़ा जो रेशम और रुई में बनाया जाता है, गु० चौड़ा ।

प्रा० चक्राला (सं० चक्र) पु० देश का एकभाग जिसमें बड़बड़े पगने होने हैं, पंडित, पदंग । [ शक्ति ।

प्रा० चक्रलेदार-पु० चक्रने का

प्रा० चक्रवा (सं० चक्रवाक) पु० चक्रवर्ती का नाम, २ (सं० चक्र) में ।

प्रा० चक्राचोथी) सी० विमिती, चक्राचोथी) विमिती ।

प्रा० चक्रासी-पु० भूमिगुहा ।

सं० चक्रित (चक्र=घुमना करना, या घूमना करना) पु० अचंचित, अचंचित में विमिती, २ व्याख्यान,

घवरायाहुआ, डरा हुआ ।

प्रा० चक्रोत्रा-पु० एक फलकानाम ।

सं० चकोर (चक्र=घुमना, प्रसन्न होना) पु० एक पक्षी का नाम जो चांद को देखकर घड़ी प्रसन्नता से आकाश में ऊंचा उड़ता है ।

प्रा० चक्रोदा) (सं० चक्रपर्वक, चक्रोड़) चक्र=गोल २ दाद, पर्वक=नाश करनेवाला) पु० एक पौधा जो दाद की दवाई में काम आता है ।

प्रा० चक्रा(सं० चक्र=गोल) पु० दही जमाहुआ, दूध, २ गाढ़ी का पड़िया, ३ घेरा, गु० गोल, गाढ़ा, २ जमा हुआ (जैसे दही) ।

प्रा० चक्री (सं० चक्र=गोल) सी० पाद, गांता, चारी, २ घुरिया, चरनी, घुटने की दहनी, ३ गात्र, विमती, ४ लड़कों के एक शिषीने का नाम ।

प्रा० चक्र-पु० दुग्धि, चारू ।

प्रा० चक्रर-(सं० चक्र) पु० मैरा, २ बगुना, चक्रर, ३ एक गोल गुम्ब जिससे विग्रह करके मिल लोग स्थित हैं, ४ गोलचाप, कावा, ५ शिवलिंग प्राग्, पद्मावत, ६ और, दण्ड, दिशा ।

प्रा० चक्रदेना-सं० चक्राना,

पुमाना, २ दमना, धनना, योगदेना।  
प्रा० चक्रखाना-बोल, २ फिरोना,  
पुमाना, २ घोले में जाना, दगा  
माना।

प्रा० चक्रमारना-बोल, २ गोलगोल  
पुमाना, फिरोना।

प्रा० घोड़ेको चक्रदेना-बोल, २ को-  
बादेना, घोड़ेको गोल २ फिरोना।

सं० चक्र (चक्र=रटना) पु० परिधा,  
२ कुम्हार का चक्र, ३ विष्णु का  
चक्र, ४ घोड़ा, हृष्ट, ५ कुम्हारपना,  
मेला को चक्रके आकार पर सजा-  
ना, ६ राय में एक चिह्न जो भाग-  
मानी का लक्षण है, ७ भौक, ८ सेना  
६ भुम्हना, देना, मुन्हा, राज, १०  
परवा पड़ी, बसीर।

सं० चक्रपाणि (चक्र=गुदमें चक्र,  
पाणि=हाथ) पु० विष्णु जिनका  
हाथ गुदमें चक्र।

सं० चक्रवर्ती (चक्र=चारी घुम्पी,  
वर्ती=रोनेवाला, हट्ट=रोना) पु०  
पु० मार्वेरीय, मरहट्टी का राजा,  
२ रंग लेने का काम को भी कहते हैं।

सं० चक्रवाक (चक्र=चक्र, वाक=बोले,  
वाक=हाथ, वाक=हड्डना) पु०  
चक्रवा, पद हार का पदक।

श० चक्रित (सं० चक्रित) पु० च-  
क्रित, विचित्र, चक्रित में।

सं० चक्र (चक्र=देगा) पु० चक्रा।

प्रा० चक्र (सं० चक्र) वृ० चक्र, २  
चक्रु नेत्र, नयन, नोचन।

फ्रा० चक्राचली-सं० चक्राच, २  
विशेष। [कादेनी।

प्रा० चक्राना-पु० चक्राना, चक्र-  
प्रा० चक्राना (सं० चक्र, चक्र=

चक्राना) क्रि० स० चक्रा-  
चक्राना, चक्राना,  
चक्राना) घोरा २ माना।

प्रा० चक्रा-गु० चक्रा, नोचन, मुग्गी।

प्रा० चक्रा (चक्रा) पु० चक्रा का,  
जैसे चक्रामार्ग=चक्रा चक्रा मार्ग,  
चक्रापरन=चक्रा चक्रा परन।

प्रा० चक्राना-क्रि० स० चक्राना,  
नोचन, चक्राना। [भ्रष्ट।

सं० चक्ररीक (चक्र=माना) पु० चक्रा।

सं० चक्रल (चक्र=चक्र, ल=लेना  
का, चक्रल जगता चक्र=चक्रल)  
पु० चक्रल, चक्रल, चक्रल,  
२ चक्रल।

प्रा० चक्रल (सं० चक्रल) पु०  
चक्रल, चक्रल, चक्रल, चक्रल,  
चक्रल। [चक्रल, चक्रल।

सं० चक्र (चक्र=माना) पु० चक्रल,

प्रा० चक्र (सं० चक्र) क्रि० चि०  
चक्र, चक्र, चक्र, चक्र, चक्र,  
चक्र, चक्र, २ चक्र का चक्र  
चक्र, चक्र।

प्रा० चण्डे तोड़ना } वेग० चण्ड-  
चण्डे तोड़ना } काना, तड़-  
काना, मोड़ना ।

प्रा० नट (नाट) श्री० पाट, स्वाद, सान ।

प्रा० चट्कना-सोल० स्याजाना,  
उदाइना । [ गायजाना ।

प्रा० चट्टोपाध्याय - वे न० पूरा होना,

प्र० नटक - श्री ० बहादुर, बहादुर,  
० कृष्ण, ० लक्ष्मी, नमो, मद्रा,  
शोभा, विरामपुत्र ।

मं० नटक (चरमोदना) पु० निहा,  
गैरिवा ।

प्र० चटुपना । जि० अ० नदहना ।  
चटुपना । ( जंमे कोपले अ-  
परा जन्नी दुई लहरी का ) फ-  
टना, टटना, बिगना । ( टुहीना ।

प्रा० चरकीना - गु० अपकीना, भ

शुभ नक्षत्र ( मं = भाग्यनि = लक्ष्मी,  
पु = प्रजापति = अक्षय, पुं = पुत्र ) ।

॥ चतुष्टयाणां (चतुष्टय) क्रिः  
अ० पारना, व्याहृतशेता, गङ्गा-  
वृद्धावा, उद्गच्छन्ता ।

प्रा० चरार्थी (चरार्थ) मी ० इनावर्नी,  
ज० ०, इहवर्नी, यवार्थ ।

श्री० नरनाथ ( मध्य-गंगा वा  
ब्रह्मगंगा, नदु वा अथ-जहदु,  
प्रायः-वसुध ) श्रीः -

गहने की जगह, गहना

अ० न्यायः-४०

प्रा० चद्रका-पु० पडाका, रुडाका

प्रा० चट्टाने } स्त्री० शिक्षा, पत्र  
चट्टान } पाषाण ।

प्रा० चट्टिया ( सं० छात्र ) पु० ।  
साधु, शिक्षक, छात्र, वैजा, शक्ति

सं० चतु-पु० गुन्दर, मनोहर, वि  
जीगना, गभेना, चिखना, वि  
रना, पेठ, गौद ।

सं० चटुल-७० मनोहर, सु  
प्रिय, कृपान, पूर्ण, प्रमत्त  
स्थित, पथिक, स्य ० उद्योगि, नि  
विपत्ती ।

प्रा० यथोरा । वाऽन्ता । मु० वे०  
प्रीभवन्ता, ग्राज ।

प्रा० चट्टा (मं० चट्टा, वा आश्रम, १)  
विश्वार्थी, पाठशाला वा लक्ष्मी  
संस्कृत का लक्ष्मी । [ पाठशाला ]

प्रा० नड० नडाना - क्र० म० नड०  
मं० नड० ( नड० नड० नड० )

प्र० चटर्जी (पदना) श्री० वा  
लाभ ।

प्रा० बदना - क्रि० अ० उपरजा  
२ आगे बदना, गावा मार  
-बहाई कान, ३ मवार होना

श्री. कल्याण - पु. पादनेश्वर,  
के. ए. वा. कल्याण ।

प्रा० १

धावा, चदाव, रक्षा, रमला, २ चदने  
का भाड़ा ।

१० चदाना-क्रि० स० सवार करना,  
२ भेंट करना, बलिदान कराना,  
३ तारचदाना, डोरीलगाना, ४ डोल  
कसना, ५ ऊँचा करना, खड़ा करना,  
६ कपड़े पर रंग चदाना ।

॥० चदान (चदना) भा० पु० ऊँचा-  
व, उँचाई, उठाव, पहाड़ में ऊपर  
रस्ता, २ चढ़ाई, धावा, ३ चढ़नी,  
४ समुद्र की बाढ़ । [वृ०]

सं० चणक (चणु=देना) पु० चना,  
सं० चण्ड (चदि=क्रोध करना) गु०  
दरावना, भयानक, क्रोधित, तेज,  
उग्र, हीरा, तीक्ष्ण, गर्म,  
पु० एक दैत्य का नाम ।

सं० चण्डाल (चदि=क्रोध करना)  
चाण्डाल } पु० नीच, कुजात,  
नीच जात का मनुष्य जिसका बाप  
शूद्र और मा ब्राह्मणी हो, वर्णसं-  
कर, स्वयंच, निर्दुर, निर्दयी, पापी,  
दुराचारी ।

सं० चण्डांशु (चण्ड + अंशु) क० पु०  
सूर्य, आफलाव ।

सं० चण्डिका (चदि=क्रोध करना,  
चण्डी) स्त्री० दुर्गा, देवी,  
काली, २ क्रोध करनेवाली स्त्री ।

सं० चण्डिल (चण्ड + इल) क० पु०  
शिव, रुद्र, क्रोधी, नापित, नार्ह ।

सं० चण्डु (चण्ड + उ) पु० मूषक;  
मर्कट, छोटा बन्दर ।

सं० चतुर (चत्=मांगना) गु० निपुण,  
प्रवीण, स्थाना, सियाना, बुद्धिमान,  
२ छली, कपटी, धूर्त, चालाक,  
नटखट ।

सं० चतुर- (चत्=मांगना) गु० चार-  
सं० चतुरस्त-गु० चौखुंटा, चौकोण ।

प्रा० चतुर-पु० बुद्धिमान, होशियार ।  
प्रा० चतुराई (स० चतुरता) भा०  
स्त्री० निपुणता, प्रवीणता, स्थान-  
पन, बुद्धिमानी, २ धूर्तता, कपट, नट-  
खटी, चालाकी ।

सं० चतुरंगिनी (चतुर=चार, अ-  
ङ्गिनी=अंगवाली) स्त्री०, सेना  
जिसमें हाथी, रथ, घोड़े और पै-  
दल चारों हो ।

सं० चतुरानन- (चतुर=चार, आनन  
=मुँह) पु० ब्रह्मा ।

सं० चतुर्थ- (चतुर=चार) गु० चौथा ।

सं० चतुर्दशी- (चतुर=चार, दश=  
दश) स्त्री० चौदस, चौदहवीं तिथि ।

सं० चतुर्भुज (चतुर=चार, भुज=  
भुजा) पु० विष्णु, चारभुजा, २  
चौखुंटा खेत, चौकोर, गु० चार  
हाथवाला ।

सं० चतुर्मुख (चतुर=चार, मुख वा  
चतुर्वक्त्र) चतुर्मुख, पु० ब्रह्मा ।





सं० चपाल पु० यज्ञके संभा का कड़ा, पुनकटक, होमकुण्ड, कुशा ।

प्रा० चसका-पु० प्यार, लालसा, चाट, स्वाद, चाल, देव ।

सं० चह (चर=दलना, प्रसारण) पु० अहंकार, पातण्ड, परिवर्तन, गु० अहंकारी, दम्भकृत, दली ।

प्रा० चहकना-क्रि० अ० चरचहाना, चिड़ियों का बोलना ।

प्रा० चहचहा-गु० गहरा रंगारुआ,

प्रा० चहचहाना-क्रि० अ० पसेक-धों का बोलना ।

प्रा० चहलपहल-स्त्री० आनन्द, हँसी मुशी, चुहल, रंग रस ।

प्रा० चहला { पु० कीचड़, काँदा,  
चिहला } पांशु, पंक, दलदल ।

प्रा० चहुं { (सं० चगुर) पु० चार,  
चहुं } चारों-चहुंओर=चारों तरफ, सब तरफ ।

प्रा० चहुंचक { (सं० चतुश्चक्र, चतु  
चहुंचक } र=चार, चक्र=देश) क्रि० वि० चारों ओर, सब ओर, चारों रुंद में, चहुंदिश ।

प्रा० चहुंदिस (सं० चतुर्दिश, चतु-  
र=चार, दिश=ओर) क्रि० वि० सब ओर, चारों-ओर, चहुं ओर, चहुं चक्र ।

प्रा० चाकी-स्त्री० पिनली ।

प्रा० चांद (सं० चन्द्र) पु० चन्द्रमा,

चन्द्र, सोम, चन्द्र, २ एक गहने का नाम ।

प्रा० चांदरात-स्त्री० महीने का अन्त पुनों की रात [ मारना ।

प्रा० चांदमारना-बोल० निशाना-

प्रा० चांद ने सेतकिया-बोल० चांद उगा ।

प्रा० चांदना (सं० चन्द्र) पु० प्रकाश, ज्योति, तेज ।

प्रा० चांदनापख-पु० उजाला पर, शुक्र पत्र, सुदी ।

प्रा० चांदनी (सं० चांद्री, चंद्र=चांद) स्त्री० चांदकी उजियाली चांद का प्रकाश, अँनोरी, चंद्रिका, २ एक फूल का नाम, ३ सफेद कपड़ा जो दरी पर बिछाया जाता है, ४ सफेद और चमकीली चीज ।

प्रा० चांदनीचौक-बोल० चौड़ा बाजार, बा गली, चौक ।

प्रा० चांदी (सं० चांद) स्त्री० अ-च्छा रूपा, २ टट्टी, टाँट, खोपड़ी ।

प्रा० चांपना-क्रि० सं० दाबना, दबाना, ठांसना, २ जोड़ना ।

प्रा० चा-स्त्री० एक पाँपे की पची जिसको पीनेसे शरीरमें कुत्ती रहती है ।

प्रा० चाक (सं० चक्र) पु० कुम्हार की चक्की अथवा परिया जिसपर बरतन बनाये जाते हैं, २ पाट, चक्की ।

प्रा० चाका (सं० चक) पु० पहिया ।

प्रा० चाकी (सं० चक्र) स्त्री० चकी  
जांता, बिजली ।

प्रा० चाचा-पु० चाचा, काका ।

प्रा० चाट (चाटना) स्त्री० चमका,  
खाद, रस, नालागा, रक्तपत्र,  
रुचि, २ स्वभाव ।

प्रा० चाटना-क्रि० म० स्वादलेना  
लपलपसाना, चबड़चबड़ राना ।

सं० चाटु-स्थायीवान, चापलोमी  
लहोपतो, खुशामदी । [खुशामदी

सं० चारुपटु-पु० भाण्ड, पशुखण्ड ।

सं० चाटु लक्ष्मी-क० पु० खुशामदी  
पाने, चिकनी चुपड़ी पाने ।

प्रा० चाड़-स्त्री० चाड़, २ चोट, ३  
हँकली, उठंगन ।

सं० चाणक्य-पु० चाणक्य मुनि के  
गोत्र का, विश्वगुप्त ।

सं० चाणूर-पु० कस बा मधान  
मय, बड़ा पहलवान । [नीच ।

सं० चाण्डाल-पु० खपच, होम,

सं० चातक (चतुर्=भागना, अर्थात्  
बादलों से पानी मांगना) पु०  
पक्षी ।

सं० चानुर (चनुर) पु० चनुर, पर्वी  
ग, बुद्धिमान, २ धूर्त, ३ चार ।

सं० चातुरी (चातुर) स्त्री० चतुराई,  
निपुणता, २ धूर्तता ।

सं० चातुर्वर्ष-व्याकरण, २. च

वैश्य ४ शुद्ध चातुर्वर्ष-मेषां मृष्ट  
मिति गीता ।

प्रा० चातुक (सं० चातक) पु० पक्षी ।

सं० चान्द्रायण (चंद्र=चांद, अयन  
=चाल, वा चांद्र=चंद्रलोक, अयं=

पाना (जिस व्रत से) पु० एक  
व्रत जिसमें अंगरे पक्ष में जब चांद

की कत्ता घटती है, हर एक दिन  
राने में एक ग्रास घटाते हैं और

चांदने पक्ष में ज्यों चंद्रमा की कत्ता  
वढती है त्यों हर एक दिन एक

एक ग्रास बढ़ाते हैं, रोजा कमरी ।

सं० चाप (चप=बांस अर्थात् बांस  
का बना हुआ, चप=जाना) पु०

धनुष, कमान ।

सं० चापखण्ड (चाप+खण्ड) २-  
नुष के टुकड़े ।

प्रा० चापी स्त्री० टवाई ।

प्रा० चावना (सं० चर्वण) क्रि० स०  
चवाना, दांत से कुचलना, चिड़-  
लना ।

प्रा० चावी-स्त्री० कुंभी, ताली ।

प्रा० चाम (सं० चर्ष) पु० चपड़ा,  
खाले ।

सं० चामुण्डा (चम्=साना, वा च  
म=सेना, ला=लेना अर्थात् ला

) स्त्री० दुर्गा, देवी, काली-  
, च सो की

सं० चार (चर=चलना) पुं० दूत,  
जासूस । [द्विगुना, ४।

प्रा० चार (सं० चतुर) पुं० दोहा

प्रा० चारआखि-बोल० पौनःपर,  
मिथना, भेद होजाना । [द्वेद्विकृते।

प्रा० चारदूक-बोल० दूक दूक, डुक-  
डुक

प्रा० चारण (चर=लेनाना, अर्थात्  
जो यश को फैलाता है) पुं० भाट,  
यश पयाननेवाला ।

प्रा० चारा (सं० चर=लाना) पुं० प-  
गुमों का लाना, यास ।

सं० चारु (चर=चलना) पुं० सुन्दर,  
मनोहर, सुहाना, मनभावन ।

प्रा० चाल (सं० चन्=चलना) भा०  
श्री० चलना, चलन, गति, गमन,  
दूरीनिरसप, रीति भाँति, ढंग, राह,  
रे बाह्यचलन ।

॥० चालपकड़ना-बोल० फैलना,  
चलना, प्रचलित होना ।

प्रा० चालचलना-बोल० निवाटना,  
स्ववहार करना । [रीति भाँति ।

प्रा० चालदाल-बोल० चालचलन,

प्रा० चालना (सं० चालन, चन्=  
चलना) क्रि० सं० मानना (मैस  
आश) धारना, पटवना, देखना ।

सं० चालनी (चन्=चलना) श्री०  
चलनी ।

प्रा० चालीस (सं० चालीशम्) पुं०  
दो बीसी, ४० ।

प्रा० चाव (सं० ईच्छा) पुं० व-  
चाय } दीचाह, जटकापटा, रुचि,  
अभिलाष, चोप, शौक, रेचारभंगुल,  
एक तरह का यास ।

प्रा० चावचोचला-बोल० स्वार,  
दुलार, अनुराग, मेम, स्नेह, किलोले ।

प्रा० चावल } पुं० एक प्रकार का  
चंवल } अनाज ।

प्रा० चापु (सं० चाप, चप=भक्षण  
करना) पुं० नीलरुण्ड, कटनाश ।

प्रा० चासा-पुं० कितान, जोतहा,  
इल चलनेवाला ।

प्रा० चाह (सं० ईच्छा) श्री० चारना,  
अभिलाष, इच्छा, स्वार, मेम, प्रीति,  
पसंद ।

प्रा० चाहना-क्रि० सं० इच्छाकर-  
ना, माँगना, याचना, स्वारकरना,  
मेमकरना, मानना, पसंदकरना,  
मनमें मानना, आकांक्षित होना, म-  
योजन पड़ना ।

प्रा० चिंवाड़ (सं० चित्ताशयिन्) पुं०  
मा शब्द चार=करना) श्री० हाथी  
का शब्द ।

प्रा० चिंवाड़मारना-बोल० चिंवा-  
रना निपाड़ना, हाथी का शब्द  
करना ।

प्रा० चिक-पुं० परदा, लश्मिका,  
रे बपर में दूँ ।

प्रा० चिकना (सं० चिकण) पुं०

घोटाहुआ, साफ, २ सुन्दर, ३ च-  
पड़ा हुआ, तिलहा, तेलसा, तेल  
मय, चिकण, ४ निर्लज्ज, वेशरम  
लंपट, चंचल ।

प्रा० चिकनाघड़ावनना-बोल०  
किसी की कुछ शिक्षा नहींमानना,  
निलज्ज होना ।

प्रा० चिकनाचांदा (सं० चिकण-  
चन्द्र) बोल० सुन्दर, मनोहर, सुहा-  
वना ।

प्रा० चिकनाई (सं० चिकणता) भा०  
स्त्री० औप, घोटा, संवार, सफाई,  
चिकनाइट, २ चर्वी, ३ चंचलता,  
धंचलाई ।

सं० चिकित्सक (कित्=इलाज क-  
रना, चंगाकरना) क० पु० वैद्य,  
हकीम, डाक्टर ।

सं० चिकित्सा (कित्=इलाजकरना  
चंगाकरना) भा० स्त्री० औपधकर-  
ना, इलाज, चैदाई, रोग प्रतीकार ।

सं० चिकित्सालय (चिकित्सा+  
आलय) धि० पु० शिक्षास्थान, हा-  
स्पिटल ।

सं० चिकित्साशास्त्र-पु० श्लेष=डा-  
क्टर, विवाधत ।

सं० चिकीर्षा (चि=करना) स्त्री० कर-  
नेकी इच्छा, आकांक्षा ।

सं० चिकीर्षु क० पु० आकांक्षी ।

सं० चिकुर- (चि=इकट्टा करना, ना

चि=ऐसा शब्द, कुर=शब्द-करना)  
पु० बाल, बेश, धूवर ।

प्रा० चिकुला=चचा, बालक ।

प्रा० चिट-स्त्री० टुकड़ा, लीर, पञ्जी ।

प्रा० चिट्टा-पु० गोरा, रवेत, सफेद,  
पु० रुपया, मुद्रा ।

प्रा० चिट्टी-स्त्री० पाती, पत्ती, पीच-  
का, रस, कागज ।

प्रा० चिट्टीपत्री } पु० लिखापत्री,  
चिट्टीपाती } चिट्टीका आना  
जाना स्वतः किताबत ।

प्रा० चिड़चिड़ा-पु० खुन्साहा, भ-  
नभना, कर्कश, रिसाहा, पु० एक-  
पेड़ का नाम ।

प्रा० चिड़ना-कि० अ० खुनसाना  
झुझाना, कुदना, लिसियान,  
भट क्रोध करना ।

प्रा० चिड़िया } (सं० चटक) स्त्री०  
चिड़ी } गौरिया, पलेरु,  
पञ्जी ।

प्रा० चिड़ीमार-पु० चिड़िया पकड़-  
ने और मारनेवाला, बहेलिया,  
व्याधा ।

प्रा० चित (सं० चित्) पु० मन,  
बुद्धि, हृदय, अन्तःकरण, हिया, हिय,  
जो, मुय, स्मरण, स्मृति, ज्ञाद ।

प्रा० चितचाय-बोल० मनवाक्य  
जो मन की अन्तर्गत है ।

प्रा० चितचेता-बोल० मनमाना, द-  
संद आना ।

१० चितचोर-बोल० मन हरनेवाला ।

१० चितदेना-बोल० ध्यानदेना,  
मन लगाना ।

० चितलगना-बोल० मनोरंजन  
मनभावन ।

चितलाना-बोल० सचेत हो-  
ना, ततर होना, मन लगाना,  
ध्यानदेना ।

प्रा० चित-(सं० चित्र=ज्ञानना) स्त्री०

-चितवन, दृष्टि, दीड, नजर, अक्-  
लोकन, २ समझ, सूझ, बोध, ज्ञा-  
न, विचार, गु० पट, सीधा, अन्ता-  
चित, चितंग ।

१० चितकरना-बोल० उलटाना,

चित गिराना (जैसे कुतवीमें) जी-  
तना, मात करना, हराना, परास्त  
करना ।

प्रा० चितकरा (सं० चित्र कर्तुं) पु०

गु० कवरा, रंगरंग का, चित्रा ।

प्रा० चितरना सं० चित्र क्रि० सं०

चितना, रंगदेना, रंगना, चित्रकरना

प्रा० चितला (सं० चित्रल, चित्र=

रंग, ला=लेना) गु० चित्रकवरा ।

प्रा० चितवन-स्त्री० दृष्टि, नजर,

अवलोकन, चित, भांख, नटात्त ।

प्रा० चितवना } क्रि० सं० देसना ।

चितना }

० चिता (चि=इष्ट करना) स्त्री०

जगह जिसपर मुर्दा जलाया जाता है  
चितासा, मसान, मरघट ।

प्रा० चिताना } (सं० चेतन, चित्  
चितावना- } याद, करना, सो-  
चना) क्रि० सं० मताना, जतलाना,  
जनाना, चौकसकरना, खबरदार  
करना, सूचनकरना, याददिलाना,  
बताना ।

प्रा० चितेरा (सं० चित्रकार) पु०  
लकड़ीपर अथवा दीवार पर बेल  
बूटे खेचनेवाला, चित्रखेचनेवाला ।

सं० चिति स्त्री० समूह, ढेर, राशि,  
जमझन ।

सं० चित्त (चित्र=ज्ञानना, वा याद  
करना) पु० मन, अन्तःकरण, बुद्धि,  
हृदय, जी, चित, ज्ञान ।

सं० चित्तनाप पु० मनका खेद,  
चित्तोत्ताप } दिलीरंज ।

प्रा० चितौनी-स्त्री० सूचना, विज्ञा-  
पन, मताना ।

सं० चितकार-पु० रेंकना, विलाप,  
चित्रादट, चीखमारना, शूहा,  
निउला, झूझदर ।

सं० चित्र (चित्र=ई-महारके रंगों  
से रंगना, वा चित्र=पन ब्रे=बचाना)  
पु० तसबोर, बेल बूटे, खिचि, रूप,  
सरन, खेच, लिपि, २ यम, गु०  
अक्षुभन, अनोखा, रंगरंगका रंगारंग,  
भाति भांति वा ।



० चीवर—पु० प्राचीनवस्त्र, भीर्ण वस्त्र, फटावस्त्र, विषदा, प्राचीन, पुराना ।  
 ० चील (सं० चिल, चिल्ल=दीला होना) स्त्री० एक पक्षेरु का नाव ।  
 ० चीलभपट्टामारना—बोल० चीनना, चीन लेना, भागट लेना ।  
 ० चीलर } स्त्री० लं, जूँ, डील ।  
 चीलहड }  
 ० चुआन (सं० चुय=जाना, घूमना) स्त्री० कोट के आस पास की गली साई जिस में पानी भरा रहता है, २ कुंड, जलाशय ।  
 ० चुगी—स्त्री० महमून का इतना अनाज भितना कि हाथ में संगीवे नो कि अनाज के व्योपारियों से सदा उगाहा जाता ।  
 ० चुकाना (चुकना) क्रि० स० निपटाना, पूराकरना, मोलठहराना ।  
 ० चुके—पु० खट्टा का हल, चूर, तिरका, गु० खट्टा, अमल, अमलचेत ।  
 ० चुगना—क्रि० स० चोच से खाना, चरना, खाना, २ चुनना, चीनना, चुगना ।  
 ० चुगलेना—बोल० छटिना, बराप लेना, चुनलेना, पसंद करना ।  
 ० चुचि—पु० स्तन, कुच, चूची ।  
 ० चुचक—पु० स्तनप्रभाग, कुचा-प्रभाग, चूची की पुण्डी ।

प्रा० चुटकुला—पु० चुटल, परिहास, हँसी, ठोली, हँसीकी बात, आनन्द, रस ।  
 प्रा० चुडैल—स्त्री० दावेत, भितनी, दाकिनी, २ फूहड़ स्त्री, मैली कुवैली स्त्री ।  
 प्रा० चुनत—(चुनना) स्त्री० चुनन, परत, उत्त, पड़ी, पुट, तह ।  
 प्रा० चुनरी—स्त्री० एक तरह का रंग हुआ कपड़ा जिस में कई तरह के रंग होते हैं । [सूया ।  
 प्रा० चुंधेला—गु० तिरमिरा, चक ।  
 प्रा० चुनना—क्रि० स० चुगना, इवडा करना, चीनना, छटिना, बराप लेना, पसंद करना, २ अपनी अपनी जगहपर रखना, सजाना, डीकटाक करना, ३ तह लगाना, कपड़ों की पड़ी बनाना ।  
 प्रा० चुनौती—सांगद, कसम ।  
 प्रा० चुनी—स्त्री० लाल ।  
 प्रा० चुप—गु० मौन, अनबोल, अवाक, बि० बो० चुप रहो, मत बोलो ।  
 प्रा० चुपचाप—बोल० चुप, अनबोल ।  
 प्रा० चुपड़ना—क्रि० स० चिकना करना, चिकनाना, घी अपना तेल लगाना, २ तेल मलना ।  
 प्रा० चुभकी—इवडी, गोता ।





यों के हाथ में परनेने की-काच  
आदि की बनी हुई चीज ।

सं० चूत } पु० आघ्रवृत्त, चरण,  
चूतक } भाव, बहान, टपना ।

प्रा० चुनना—क्रि० स० चुनना, बंधे-  
रना, इतिहास करना ।

प्रा० चुनाहुआ—उन्मुख ।

प्रा० चून (सं० चूर्ण) पु० आटा,  
२ चूना ।

प्रा० चूना—(सं० चयन, च्यु=जाना)  
क्रि० अ० टपकना, रसना, झरना,  
(सं० चूर्ण) पु० चून, एक चीज  
जिससे मछान बनाये जाते हैं ।

प्रा० चूनालगाना—बोल० यदनाम  
करना, लिप लगाना ।

प्रा० चूमना (सं० चुम्बन) क्रि०  
स० चूमा लेना । [ बोला ।

प्रा० चूमा—(सं० चुम्बन) पु० चुम्बा

प्रा० चूमाचाटी—बोल० दुलार,  
प्यार, रंग, रस, राबचाव ।

प्रा० चूर—(सं० चूर्ण) पु० चुकनी, भुर-  
भुरा, चूर्ण, रेतन, गु० चूर किया  
हुआ ।

प्रा० चूरचूर—बोल० टुक टुक, खण्ड  
खण्ड । [ टूटा रहना ।

प्रा० चूर रहना—बोल० मस्त रहना,

प्रा० चूर करना—बोल० टुकड़े-  
करना ।

प्रा० चूर होना—बोल० टुकड़े-  
होना, २ किसी के प्यार में फँसना,  
अत्यन्त प्यार वा स्नेह करना,  
३ थकना ।

प्रा० नशे में चूर होना—बोल०  
मस्तहोना, मत्वाला होना ।

प्रा० चूरण } (सं० चूर्ण) पु०  
चूरन } पायक औषध जिससे  
खाना पचता है ।

प्रा० चूरा—(सं० चूर्ण) पु० रेतन, चूरी

सं० चूर्ण—(चूर्ण=पीसना, चुकनी  
करना) पु० चुकनी, रेतन, चूर,  
चूरा, धूल, २ चूरन, एक पायक  
औषध ।

सं० चूर्णन—भा० पु० पीसना ।

सं० चूर्णक—(चूर्ण+अक) क० पु०  
पीसनेवाला ।

सं० चूर्णित—(चूर्ण+इत) क्मे० पु०  
पीसा हुआ ।

प्रा० चूर्नी—(सं० चूर्ण) क्रि० सं०  
टुकड़े २ करना ।

प्रा० चूर्मा—(सं० चूर्ण=चूरा) पु०  
एक प्रकार का मीठा खाना ।

प्रा० चूल—पु० लकड़ी का जोड़ वा  
शील जिसपर सिंहाड़ फिरता है ।

प्रा० चूल्हा—(सं० चूही) पु० आग  
रखने की जगह ।

सं० चूपक- (चूप + क, चुप = चुपना)

६० पु० चुपनेवाला ।

सं० चूपण - भा० पु० चुपना ।

सं० चूपिन - स्त्रे० चुपा हुआ ।

प्रा० चुमना - ( सं० चुप = चुपना )

क्रि० म० पी लेना, मोखना, चबोड़ना ।

प्रा० चुहा - पु० प्रमा, मापिक

प्रा० चेत ( सः चेतय चित् = मान-  
ना ) पु० मुख, पाद, स्मरण, वि-  
चार, बोध, ज्ञान, अनुभव, भाव  
प्राप्ति, चौकसी ।

सं० चेतन - ( चित् मोचना ) पु० जी-  
व, भाव्य, माण, २ ज्ञान, बुद्धि,  
चिन्ता, चिन्तना, समझ, गु०  
चेतन्य, जीवात्मा, मचेत, प्राणी ।

सं० चेतना - ( चित् = मोचना ) स्त्री०  
बुद्धि, ज्ञान, चेत ।

प्रा० चेतना - ( सं० चेतन ) क्रि० म०  
पाद रखना, स्मरण करना, गु-  
ह्यता, मन में रक्खना, सोचना, २  
चेत में मानना, हेश में आना ।

प्रा० चेता - ( सं० चित ) पु० चित्,  
चेत, मन, २ चेतेश्वर, ज्ञानरत्ना ।

प्रा० चेतना - क्रि० म० मानना, ल-  
खना, विचारना ।

प्रा० चेत्य - ( सं० चेत वा चेत, चित् =  
चेतना ) पु० चेतन, ज्ञान, भाव ।

प्रा० चेरी - स्त्री० दासी ।

प्रा० चेला - ( सं० चेद्व वा चेट, चित् =  
भेजना ) पु० शिष्य, विद्यार्थी,  
२ दास ।

प्रा० चेली - स्त्री० एक प्रकार का  
वेशमी कपड़ा ।

सं० चेषक - ( चेष + क ) पु०  
यत्रागी, उपासी, तद्वीरी ।

सं० चेषा ( चेट् परिश्रम वा यत्र  
करना ) पा० स्त्री० यत्न, उपर-  
परिश्रम, उद्योग, काम, शरीर का  
उपयोग ।

प्रा० चेत ( म० चैव ) पु० च-  
मरीन का नाम ।

सं० चेतन्य ( चेतन ) पा० पु० जीवा-  
त्मा, परमात्मा, प्रज्ञा, २ बुद्धि,  
ज्ञान, चित्त, चिन्तना, चेत, चे-  
तना, गु० मचेत, चेत में, चौकसी,  
सज्जन, चेतन, मचेत, मुचेत ।

सं० चैत्र - ( चित्रा एतन्नक्षत्रकाल, १  
पु० मी०, हिंदुओं के चरम का च-  
रम महीना जिसमें पूरा चांद चि-  
त्रा नक्षत्र के योग रहता है मी०  
जय महिम्नी की पूर्णमासी के दिन  
चित्रा नक्षत्र होता है ।

सं० चैत्रश्रव - पु० कुंवर का नाम ।

प्रा० चेत - पु० मुख, भाव, भाव-  
ना, रस ।

प्रा० चौगा—पु० नली, ननुवा, नल ।

प्रा० चौच—( सं० चञ्चु ) स्त्री० ठोंठ, पसेदवा की चञ्चु ।

प्रा० चौडा—( सं० चूडा ) पु० चौड़ा, बाल का चूडा ।

प्रा० चौप } स्त्री० इच्छा, चाह,  
चौप } रुचि, उद्वाह, लालसा,  
चोप } कुर्ती, २ स्त्रियों के दांतों में पहननेका सोनेका गहना ।

प्रा० चौआ } पु० मुगन्धित चीज,  
चोवा } अर्गमा ।

प्रा० चौखा—पु० साफ, सधा, खरा, अच्छा, नीखा, तीक्ष्ण ।

प्रा० चौचला—पु० सिलाइपन, मान, नखरा, पीठोबाने, प्यारीबाते, मोलीचाने, हावभाव ।

प्रा० चोट—पु० मार, पीठ, चपेट मुका, घुंसा, घन्ना, आघात, पड़ाइ ।

प्रा० चोटपरचोट—बोल० दुख पर दुख, एक विपत्ति पर दूसरी विपत्ति का आना ।

प्रा० चोटखाना—बोल० पिटना, मार खाना, २ नुकसान उठाना ।

प्रा० चौटी—( सं० चूडा, चुन=इच्छा होना ) स्त्री० शिखा, शिरके पिछले पाल, २ शिखर, पहाड़ का शृंग ।

प्रा० चौटीआस्मानपरघिमना—बोल० बहुत चढ़ी होना, बहुत अभिमान करना ।

प्रा० चौटीकट—बोल० दास, शिष्य ।

प्रा० चौटीकटवाना—बोल० दास होना, २ शिष्य होना ।

प्रा० चौटी किसी की हाथ में आना—बोल० किसी पर अधिकार रखना, किसी को बश में करना, दवाना, नवाना ।

प्रा० चौट्टा—( सं० चोर ) पु० चोर ।

सं० चोर—( उ०=चोरी करना ) पु० चौट्टा, चोरी करनेवाला, डंग, लुंटेरा, तस्कर ।

प्रा० चोरचकार—बोल० चोर ।

प्रा० चोरखाना } बोल० छिपा  
चोरघर } हुआ मकान, एगान घर, गुप्तघर ।

प्रा० चोररस्ता—बोल० छिपी राह गुप्तराह, पगडंडी, लीक ।

प्रा० चोरलगना—बोल० बिगाड़ होना, हानि होना, नुकसान उठाना ।

प्रा० चोरी—( सं० चौर्य, चोर, चुर्=चोरी करना ) स्त्री० चुराने का काम, डकैती, दगी ।

सं० चोली—( उ०=इच्छा होना ) स्त्री० अभिप्रा, चांजुली ।

प्रा० चौ—( सं० चणु=चोर ) पु० चार पु० हल का फाड़ ।

प्रा० चौअन्नी—( चौचकार, आना ) स्त्री० चारभानी, सूदी, चारभाना ।

प्रा० चौकना—क्रि० अ० भिभक्तना,  
मड़कना, दर उठना, ठठकना,  
चमकना, नींद उठना, नींद उचटना ।

प्रा० चौक उठना—बोल० भड़क उठना,  
भिभक्त उठना, चमक उठना ।

प्रा० चौक पड़ना—बोल० उश्न प  
ड़ना, चौकड़ी भरना, मड़कताना,  
चमक जाना । [ देगो ।

प्रा० चौतंग—पु० (चतुर्ग) गन्त को

प्रा० चौतीस } ( सं० चतुस्त्रिंशत् )  
चौतीस } पु० तीस और  
चार, ३४ ।

प्रा० चौधियाना—क्रि० अ० चव  
ना, व्याकुल होना, दमना, चमके  
में होना, निर्गमना ।

प्रा० चौमार } ( सं० चतुर्ग शिः  
चौमार } चतुः—चार, गारि—  
गोश्री ) पु० गह सेल का नाम जो  
पासों में सेना जानाई, चौपड़,  
२ कूछों की माना ।

प्रा० चौक—पु० बाजार, हाट, गुदड़ी,  
आटेरीरेदी, पेठ २ नगर का चौक  
हा, चौहट, २ आँख, अंगना ।

प्रा० चौकड़ा—पु० दो मोती का बाछा ।

प्रा० चौकड़ी—ग्री० कूद, झाँद, क-  
लांग, उश्न ।

प्रा० चौकड़ी मगना—बोल० कूदना,  
कूदना, उश्नना ।

प्रा० चौकड़ी मूलना—बोल० सो  
जाना, मोह में आना, भूलासा रा-  
जाना, होश ठीक न रहना,

प्रा० चौकड़ी मार बैठना—बोल०  
उकड़ बैठना, मिपट बैठना, मुझ  
बैठना, चार जानू बैठना ।

प्रा० चौकना—पु० सावधान, मुने,  
चौकस, कुर्मीला ।

प्रा० चौकम—पु० सावधान, मुने,  
चलाक, कुर्मीला ।

प्रा० चौका—पु० रमोई, यह जगह  
हा हिन्दू माना पकाने और सो  
ह २ नीकीनी चीज, चौकीनी जग  
२ भाग क चार दाँत ।

प्रा० चौकी—कुसी, पीड़ा, चौकी  
काठकी बनी गई चीज, २ रमा-  
ली, चौकीया, पदरा, २ पाना जग  
चौकादार और यहगदार रहने हैं  
इ एकगदना भिन्नको गले में पहनने

चौकीदार पु० चौकी देने वाला  
पदरा देने वाला, यहकमा

प्रा० चौकीदारी ग्री० चौकीदार  
का काम, २ चौकीदार की पदारी  
चौकीदारी, रिफम ।

प्रा० चौकीदेना—बोल० रमा देना,  
पदरा देना ।

प्रा० चौकीमाना—बोल० पदरा  
पहणनी चन्नुताना वा भेजना २  
मारना, पहणन पुराना ।

- प्रा० चौकोना } (सं० चतुष्कोण) तिथि चतुर्दशी । [ चार, १४ ]  
 चौकोर } गु० चौखंडा, चार  
 कोना ।  
 प्रा० चौखट } (सं० चतुष्काष्ठ) स्त्री०  
 चौकट } दरवाजे का टांचा ।  
 प्रा० चौखंडा (सं० चतुष्कोण) गु०  
 चौकोर, चौकोना ।  
 प्रा० चौगुणा } (सं० चतुर्गुण) गु०  
 चौगुना } चारगुना, चारबार  
 लिखा हुआ ।  
 प्रा० चौड़ा—गु० फैला हुआ, विशाल ।  
 प्रा० चौड़ाचकला—शेख० चिपटा,  
 फैलाऊ, बिस्तृत, फैला हुआ, चौड़ा ।  
 प्रा० चौतनी—चौगोशिया टोपी ।  
 प्रा० चौतारा—गु० चारतारा का बाजा ।  
 प्रा० चौताल—स्त्री० एकतागिणी  
 का नाच ।  
 प्रा० चौथ (सं० चतुर्थी) स्त्री० चौथी  
 तिथि, २ (सं० चतुर्थी) चौथा हि-  
 स्सा, कर अथवा खिराज जो मरहटे  
 लगाया करते थे । [ चौथा ।  
 प्रा० चौथा (सं० चतुर्थ) गु० चारहवां,  
 चौथेपन } (चौथा-चारहवां)  
 चौथापन } गु० बुझाया, मनुष्य  
 के उपर का चौथा  
 अथवा सब से पिछला हिस्सा ।  
 प्रा० चौदस (सं० चतुर्दशी, चतुर=  
 चार, दश=दस) स्त्री० चौदहवीं ।  
 प्रा० चौदह (सं० चतुर्दश) गु० दस और  
 प्रा० चौदानिया-पुं० } (चौ=चार  
 चौदानी—स्त्री० } दाना )  
 चार मोठी का बाला ।  
 प्रा० चौधरी—पुं० पञ्च, मथान, जमी-  
 दार की पदवी ।  
 प्रा० चौपट—गु० उजाड़ा, मरबाद,  
 नष्ट, बराबर किया हुआ, चपटा ।  
 प्रा० चौपटकरना—शेख० उजाड़ना,  
 नष्ट करना, बरबाद करना, दहादेना-  
 बिनाश करना, बराबर करना ।  
 प्रा० चौपड़ (सं० चतुष्पट्टी, वा  
 चतुष्पादिका, चतुर=चार, पुट=तर-  
 वा पद पैर) स्त्री० पाँसों का खेल, २ कप-  
 ड़ा जिसपर यह खेल सेना जाता है ।  
 प्रा० चौपाई (सं० चतुष्पदी) स्त्री०  
 चार पद का छन्द ।  
 प्रा० चौपाड़ (सं० चतुष्पादिका) पुं०  
 बैजपुर, २ (सं० चतुष्पाद) चौपाया ।  
 प्रा० चौपाया—(सं० चतुष्पाद) पुं०  
 चारपाया, पगु, जानवर ।  
 प्रा० चौपाला—(सं० चतुष्पाद) पुं०  
 पालकी, ढोली ।  
 प्रा० चौवारा—(सं० चतुष्पादिका)  
 पुं० ऊपर का कोठा, बसारा ।  
 प्रा० चौवीस—(सं० चतुर्विंशति) गु०  
 बीस और चार ।



प्रा० छका-(सं० पद०)पु०=छः)  
पु० छः का समूह, २ एक-तरहका  
प्रकार।

प्रा० छकापजाकरना-बोल  
ठगना, छलना, धोखा देना, छुआ  
देना।

प्रा० छफेछटजाना-बोल, पचोना,  
रफा पचा रह जाना।

सं० छग (सं०=काटना) पु० एक-  
छगल, रा, छाग, भेडा, खींभे  
री, पकरी।

प्रा० छटाक-(सं० पद०, पद=छः  
द्वि एक प्रकार का सोल) खीं  
सेर का मोलइस भाग, कनका।

सं० छटा-(सं०=काटना) खीं प-  
क मड़क, गोमा, दमक, चपचपा-  
हट, जगला। [नालहट]

सं० छटाफल-पु० नाशित वृक्ष,  
सं० छटाभा-खीं चिल्ली।

प्रा० छट्टी (सं०=पट्टी) खीं पचकी  
छट्ट छट्टी गिथ।

प्रा० छट्टी (सं० पट्टी) खीं छट-  
छट्टी खीं, लड़का के पैरों में  
के पीछे छडे दिनकी गति।

प्रा० छट्टा-पु० पैर का गहना, मोती  
की लड़ी, गु० छेलेना।

प्रा० छट्टी-खीं बेन, हाथ में रखने  
की लड़की, २ पूरों का गुच्छा।

प्रा० छल-(सं० छल) खीं पन,  
दम, छल, छिन।

प्रा० छत (सं०=छत, छत=छतना)  
छात खीं छपर के छपर के का  
पटाका गच, पु० फोड़ा गच।

प्रा० छत्ता-(सं० छत, पद=छतना)  
पु० मधुमक्षिणों का दाता।

प्रा० छत्तीस-(सं० पद०=छत्तीस, पद  
=छत्तीस, विगन्=जीसे) गु० तीस और छत्तीस

सं० छत्र-(छद=छतना) पु० राजाओं  
के गिरपर रखने का छतना, छतरी।  
सं० छत्रक-(छप) क० पु० भूषण,  
कुरुरमुखा, परमों का फूल।

सं० छत्रधारी-(छप=छतना, धारी  
=रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु०  
राजा, महाराज, छत्रपति।

सं० छत्रपति-(छत्र=छतना, पति=  
मानिक) पु० राजा, महाराज, छत्र  
धारी।

सं० छत्रमह-(छप=छतना, मह=द-  
टना) पु० पति का मरना, विहाय,  
विप्रायन, राजा का मरण।

प्रा० छत्री-(सं० छत्र) खीं छोटा  
झाडा, २ छंदवा, ३ बंदने की जगह।

प्रा० छत्री-(सं० छत्री) पु० राजपूत।

सं० छत्र-पु० छत्र, छत्र, छत्री,  
छोटा।

सं० छट्ट-(छद=छतना) पु० छत्र,  
छायादायक, छायादाक, मदानहट्ट।

सं० छट्टन-पा० पु० छत्र, छायादायक,  
छान, छत्र, विधान, गिताक।



प्रा० चौथे—(सं० चतुर्वेदी) पु० ब्राह्मण  
जो चारों वेद जानता हो, अथ एक  
जाति के ब्राह्मणों को चौथे कहते हैं  
चारों वेद पढ़े हों वा न पढ़े हों ।

प्रा० चौमासा—(सं० चतुर्मास, चतु-  
र=चार, मास=महीना) पु० वरसान,  
वर्षा ऋतु, सप्ताह से चतुवार तक के  
चार महीने ।

प्रा० चौमुखा—(सं० चतुर्मुखा) पु०  
चौमुखों दीया ।

प्रा० चौमुखी—(सं० चतुर्मुखी) स्त्री०  
देवी, चारमुखवाली दुर्गा, २ द्वाका  
का देता ।

प्रा० चौगम—(चौ=चार, रम=रस-  
वर) गु० चारों ओर से यरावर,  
गमान, गव ओर से वगवर ।

प्रा० चौगनवे—(सं० चतुर्गवनि,  
चतुर=चार, गवनि=गव) गु० नवों  
ओर चार ।

प्रा० चौगमी—(सं० चतुर्गमीनि,  
चतुर=चार, गमीनि=गमी) गु०  
गमी और चार ।

प्रा० चौवन } (सं० चतुर्विंशमान)  
चवन } गु० चारों ओर चार ।

प्रा० चौवाटे—(सं० चतुर्वर्ग, चतुर=  
चार, वागु=इका, अर्थात् चारों दि-  
शा में इका का बनना) स्त्री० आंखी,  
कनार, कदक ।

प्रा० चौमट—(सं० चतुर्वट्ट) गु०  
मट और चार ।

प्रा० चौहटा } (सं० चतुर्विंश)  
चौहटा } =चार,  
चौराहा, चौक, चौराहा

प्रा० चौहत्तर—(सं०  
गु० सत्तर और चार ।

प्रा० चौहान—(सं० चतुर्विंश)  
राजपूतों की एक जाति ।

सं० च्युन—(च्युन=गिरना)  
गिरा, टपकपड़ा, गिरा,

सं० च्युति—(च्युत+इ) भा०  
पतन, हानि, सिमता ।

छ

सं० छ—(छो=काटना) गु०  
वान्ता, २ निर्मला, ३ धंवल,  
क, नाशक ।

प्रा० छ—(सं० चतुर्) गु० दुगुना तीन ।

प्रा० छडे—(सं० छप) स्त्री० एक छे  
का नाम ।

प्रा० छडे—(सं० छदि, छदु=दहना)  
स्त्री० नाव का छपर ।

प्रा० छकड़ा—(सं० गृह) गु० गार्ह-  
पत्य, अगवा ।

प्रा० छकना—क्रि० अ० अगवाना, नृत्त  
होना, संतुष्ट होना, २ द्वाकून  
होना, अर्धमे में होना, अगम होना ।

प्रा० छकाना—क्रि० अ० अगवाना,  
नृत्त करना, २ डीक करना, मीक  
करना ।

प्रा० छका- ( सं० पदक, पद=द्विः )  
पु० छः का समूह, २ एक-वचन का  
पुनरा ।

प्रा० छकापजाकरना- ( सं० )  
छानना, छनना, धोरादेना, छुआ  
मेलना ।

प्रा० छकेछटजाना- ( सं० )  
छका पका रहना ।

सं० छग- ( छो=काटना ) पु० बक-  
छगल- रा, छग, भेदा, शी० मे  
ही, बचरी ।

प्रा० छटाक- ( सं० पदक, पद=द्विः )  
द्वि एक प्रकार का मोल । शी०  
सेर का मोल हरा भाग, कनरा ।

सं० छटा- ( छो=काटना ) शी० च-  
मक भट्ट, शोभा, टमक, चमचमा-  
हट, जमाला । [ नालट्ट ]

सं० छटाफल- पु० नाग्यल हरा,

सं० छत्रभा- शी० बिजली ।

प्रा० छट्टी- ( सं० पट्टी ) शी० पगड़ी  
छट्ट- छट्टी शिथिल ।

प्रा० छट्टी- ( सं० पट्टी ) शी० छट-  
छट्टी- शी० लटकाके पैदा होने  
के पीछे छेदे दिनी शीने ।

प्रा० छट्टा- पु० पैरों पहना, मोती  
की नदी, गु० चलेला ।

प्रा० छट्टी- शी० बेग, हाथ में रखने  
की लट्टी, २ पट्टी का गुच्छा ।

प्रा० छटा- ( सं० छग ) शी० पल,  
दम, पल, दिन ।

प्रा० छत- ( सं० छत्र, छत्र=दहना )  
छात- शी० छपर के छपर का  
पटार, गज, पु० फोड़ना ।

प्रा० छत्ता- ( सं० छत्र, छत्र=दहना )  
पु० छपुपविलयी का छाता ।

प्रा० छत्तीस- ( सं० पद=द्विः, पद  
=द्विः, निगद=तीस ) गु० तीस और दहा ।

सं० छत्र- ( छत्र=दहना ) पु० रागाओं  
के गिरपर रखने का छाता, छतरी ।

सं० छत्रक- ( छत्रक= पु० भुँकोर,  
कुरुरमुत्ता, परमो का पुन ।

सं० छत्रधारी- ( छत्र=छाता, धारी  
=राखनेवाला, धृ=रखना ) क० पु०  
राजा, महाराज, छत्रपति ।

सं० छत्रपति- ( छत्र=छाता, पति=  
मालिक ) पु० राजा, महाराज, छत्र  
धारी ।

सं० छत्रभट्ट- ( छत्र=छाता, भट्ट=द-  
हना ) पु० पति का मरना, देहात,  
विधवापन, मंगना का मरण ।

प्रा० छत्री- ( सं० छत्र ) शी० छोटा  
छाता, २ भंडवा, ३ बैठने की जगह ।

प्रा० छत्री- ( सं० छत्री ) पु० राजपूत ।

सं० छत्र- पु० छा, छत्र, कोटरी,  
मोहर ।

सं० छट- ( पद=दहना ) पु० धंग,  
आच्छादन, बत्ताईक, नयनहनु ।

सं० छदन- ( सं० पद, आच्छाद-  
छान, छन, धिमान, धिनाक ।

प्रा० छदाम-सी० पैसैका चौगाभाग,  
दो दमड़ी, ६ दाम ।

सं० छद्मन-पु० कपट, छपार, गप्पा, अप-  
दंश वा दुष्मन, उत्तर, दखीना ।

प्रा० छनाक-पु० गर्भ चीज पर पानी  
के गिरने का शब्द ।

मं० छन्द-(अदि=ठकना, और सा-  
हना ) पु० रजोक, वाद्य, पद्य,  
वाक्यामो का मिनाय, २ वेद, ३  
वेदका अंश जैसे गायत्री आदि, ४  
रस, अभिनाय ।

मं० छन्दपानन-( छन्द + पानन,  
पान गिरना ) पु० कपट, कुटिल-  
ता, धूर्त, बहाना ।

मं० छन्दोग-पु० कवि, गामवेद का  
गानकर्ता, वेदपात्री ।

मं० छन्न-मं० पु० पक्षान्न, गुप्त, छिपा  
हुआ, कटा ।

प्रा० छन्ना-पु० पानी छानने का कपड़ा,  
कोई चीज छानने का कपड़ा ।

प्रा० छपना-क्रि० अ० छापा होना,  
नष्ट होना ।

प्रा० छपाई-श्री० छापने की कला,  
छापने का काम ।

प्रा० छप्पन-( मं० पट पड़ना, पट,  
पट=छः पड़ना, पट=पचास ) पु०  
पचास और छः ।

प्रा० छप्पन-( मं० पटपटी, पट=छः  
पट=पचास ) छः पड़ना, छन्द ।

प्रा० छप्पर-पु० कमर की आवरी ।

प्रा० छप्परस्त-पु० पलंग, साद

प्रा० छर्वीला-पु० सुन्दर, सुरावना

प्रा० छर्वीस-(पदविंशति, पद=१०  
विंशति=बीस) पु० बीस और छः

प्रा० छयासठ } ( सं० पद+पाणि  
छियासठ } पद=१० पणि  
साठ ) पु० सा

और छः ।

प्रा० छरे-पु० छेद, चुने मुसक ।

मं० छर्दे=( छर्दे=वपन करना, कप  
करना ) पु० वपन, कप ।

मं० छर्देन-(छर्दे + अन) भा० पु०  
छांट, वपन, कप, असंयुक्त ।

मं० छर्दि-श्री० छांट, कप ।

प्रा० छर्ग-पु० छोटी २ गोली ।

मं० छल-(छो=छाटना) पु० कपट,  
धोला, फोव, बहाना, मिथ, माल,  
टपारी । [ छलछिद्र ।

प्रा० छलवल-बोल० कपट, धोला,

प्रा० छलकना-(मं० उभजन, उभ=  
उपर, चल=चलना) क्रि० अ०  
उभरना, दलना, बहलना, उठ  
निहलना, बोरना ।

मं० छलछिद्र-(छल + छिद्र) पु०  
दुष्टजन, कपट, धोला ।

मं० छलनिनय-श्री० कपटमे बहारी,  
छोव के साथ नमसीक ।

प्रा० दलांग-सी० फलांग, फांद,  
रुदफांद ।

प्रा० दलांगें मारना-बोल० रुद-  
ना, रुदबना, भुपटना, कुलाच  
मारना ।

प्रा० दलिया } ( सं० दले ) पु०  
दली } रुदती, दगावाज,  
धोसा देनेवाला ।

प्रा० दल्ला-पु० मुंदरी, मंगुदी ।  
सं० दवि ( द्यो=काटना, धंधेको )  
सी० शोभा, सुन्दरता, चपक,  
मकाश ।

प्रा० द्यां- ( सं० द्याया ) सी० द्याया,  
आद, प्रतिविम्ब, परछाई ।

प्रा० द्यांटना-कि० सं० धिपनकरना,  
उलटी करना, कै करना, २ अनाज  
से धूमा अलग करना, फटकरना, ३  
काटना, फतरना, काट कूट करना,  
४ सँवारना, साफ करना, ५ चु-  
नलेना, पसंद करना ।

प्रा० द्यांटकरना-बोल० बपन क-  
रना, कै करना ।

प्रा० द्यांटलेना-बोल० चुन लेना,  
बराब लेना, पसंद करना ।

प्रा० द्याड़ना-कि० सं० उगेलना,  
निकालना, २ छोड़ना ।

प्रा० द्यांव } ( सं० द्याया ) सी०  
द्यांह } द्याया, द्यां, प्रतिविम्ब,  
परछाई ।

प्रा० द्याक-पु० मल्लेवा, जल्लखाना ।

सं० द्याग } ( द्यो=काटना ) पु० व-  
द्यागल } करा, खस्सी ।

प्रा० द्याव } सी० मद्धा, मेरी ।  
द्यावी }

प्रा० द्याज-पु० मूष, दगुरा ।

प्रा० द्याजना- ( सं० ददना, दद=  
ददना ) कि० सं० दाना, २ फूट  
बना, सोहना, दजना, सुलना,  
योग्य होना ।

प्रा० द्याड़ना-कि० सं० छोड़ना,  
त्यागना, तजना ।

प्रा० द्याता- ( सं० द्यात्र ) पु० द्यतरी,  
२ प्रथमविशेषों का द्याता ।

प्रा० द्याती-सी० शिरदा, डर,  
बुझस्पल, २ चूँची, कुच ।

प्रा० द्यातीभर-बोल० द्याती जित-  
ना ऊँचा, द्याती तक ।

प्रा० द्याती भर आना-बोल०  
रोना, आंसू ढालना, मोह आना ।

प्रा० द्याती पर पत्थर रखना-  
बोल० संतोष करना, सवर करना,  
धीरज धरना, सहलेना ।

प्रा० द्याती पर मूंग दलना-  
बोल० किसीके सामने ऐसा काम  
करना कि जिस से वह दुखपावे,  
किसीको रुझाना, सिझाना, घुसाना ।

प्रा० द्याती फटना-बोल० दुख अ-  
थवा क्रिकसे पबराना, शपथाना ।



सं० छाया—(छो=छाटना, अर्थात् जाले को रोकना) स्त्री=छाँद, छाँव, छाँ, परदाई, प्रतिविम्ब, २ अंधेरा, ३ धन, धन, ४ शनैश्चर की माता, मुख्य भी स्त्री ।

सं० छायापथ—पु० छायाग, पोला, चवराग, सासपान ।

सं० छायामृत—(छाया + अमृत) पु० चन्द्रमा ।

प्रा० छात्र—(सं० छात्र) स्त्री=रात्र, भस्म, छिछि, ग्राह ।

प्रा० छाल—(सं० छाल, बा छत्री, छद=इरना) स्त्री० छिड़का, उकला, पोरा ।

प्रा० छाला—पु० पुनगी, पुंसी, फोला, पुला । [सुग्री ।

प्रा० छालिया—स्त्री० एक प्रकार की

प्रा० छावनी—(छना) स्त्री० पल्लव करने की जगह, विभाजियों के होने के योग, होने का काम ।

प्रा० छिगुली—स्त्री० छोटी अंगुली, कम अंगुली । [अंगुली ।

प्रा० छिछला—पु० छल्ला, पैल्ला,

प्रा० छिछोड़ा—पु० छल्ला, मोड़ा, बिछिया ।

प्रा० छिटकना—क्रि० अ० चितरना, फैलना, छिटकना, चितरना ।

प्रा० छिटकनाचादनीका—केन=चादनी का फैलना ।

प्रा० छिटकोना—क्रि० स० चितरेना, फैलाना, छितराना, चितराना ।

प्रा० छिड़कना—क्रि० स० छोटाना, नरकरना, सींचना ।

प्रा० छिड़काव—(छिड़कना) पु० सींचना का छिड़कना, सिंचाई, सींचना ।

प्रा० छितरना—क्रि० अ० चितरना, फैलना, गसरना, छिटकना, चितरना ।

प्रा० छिति—(सं० छिति) स्त्री० धरती, जमीन, पृथ्वी, भूमि, यरणी ।

प्रा० छिदना—(सं० छेदन, छिद=छाटना) क्रि० अ० चिपना, पार होना, घसना, चुभना ।

सं० छिद—(छिद=छेदना, बा छिद=छेदना) पु० छेद, गदा, रंध्र, विवर

विल, २ दोष, दुषण ।

सं० छिदित—(छिद + इत) अ० पु० चिपना, छेद किया गया ।

प्रा० छिन—(सं० छल) स्त्री० पल, लल, निपेप ।

प्रा० छिनभरमें—केल०, एक पल में पल भर में । [चारिणी ।

प्रा० छिनाल—स्त्री० चरवा, चरभि-

प्रा० छिनाला—(छिनाल) पु० छिनालान, चरभिकर ।

सं० छिन—(छिद=छाटना) अ० पु० छिदना, छोटाना, घाव किया हुआ, छुंछे किया हुआ ।

सं० छिनगिन—(छिद + गिन) अ०

अनग अलग, निगर वितर, कटा हुआ, टूटा हुआ ।

प्रा० छिपकली ( छिपकिली, एक छिपकी ) जानवरका नाम ।

प्रा० छिपना ( कि० अ० लुप्त, अलपना ) लग होना, दबना, अदृश्य होना ।

प्रा० छिमा—( सं० क्षमा ) सी० क्षमा, माफी ।

प्रा० छियालीस—( सं० पद्मनाभिरश्नु, पद्म-क्षयाशिरश्नु-नालीस ) गु० बाईस और छः ।

प्रा० छियामी—( सं० पद्मीनाः पद्म-द्वः अमीनि=अमी ) गु० अमी और छः ।

प्रा० छिलका—( सं० छली, छद्=चकना ) गु० बाल, चकना, मखा, गोमना ।

प्रा० छिह्मर—( सं० पद्मपतिः पद्म=द्वः सपति=सप्त ) गु० सप्त और छः ।

प्रा० छी—वि० बी० सुरक्ष और गिन करने का शब्द ।

प्रा० छीक—( सं० छिन्ना, छिन्न वेदा शब्द, छ=छाना ) श्री० शब्द प्रोक्त में होता है ।

प्रा० छीका—( सं० छिन्ना, छि=छेदना ) गु० छाना, छेदीकी होरी, बालकी तरह बनी हुई चीज जिसमें कोई चीज गम्भीर लटका देने है ।

प्रा० छींट—( सं० चित्र रंग रंगता )

सी० एक प्रकार का रंग हुआ कण्डा । [ सींचना ।

प्रा० छीटना—कि० स० छिड़कना,

प्रा० छीटा-गु० छीटा, टपका, बिन्दु ।

प्रा० छीजना—कि० अ० घटना,

कम होना, मूलना, घटना, देना देणी कीजै योग, छीजेकाया काई रोग, कहावत० जो कोई किसी की देगा देरी तब अथवा प्रत्य आदि करता है उसका शरीर दुबना होना और बीमारी बढ़नी है ।

प्रा० छीन—( सं० क्षीण ) गु० मन्द पनना, दुबना, कम, तथा हुआ नागर ।

प्रा० छीनना—कि० स० लेखने सींचनेना, त्वरदम्नी में लेनेना, भगद लेना ।

प्रा० छीनाछानी करना—बोल भगद लेना, भगद भगदी करना छीना भगदी करना । [ दू ।

प्रा० छीर—( सं० क्षीर ) गु० दूध ।

प्रा० छीयना—कि० स० काटना छिनका उतारना ।

प्रा० छुईदर—( सं० छुईदरी, छुईमा शब्द, द=काटना ) गु० पानाना का नाम ।

प्रा० छुकुंदाछोड़ना—बोल० छुर्ना माना, छकड़ लगाना, छुर्ना

करना, निदा करना, झड़काना,  
घरकाना ।

प्रा० छुट-( सं० छुट=छुटाना ) करना  
क्रि० वि० सिवाय, २ छोटा ) गु०  
छोटा, थोड़ा ।

प्रा० छुटकारा-( छटना ) पु० छुटकाव,  
उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, रिहाई ।

प्रा० छुट्टी-श्री० छुटकारा, रुखसत,  
अवकाश, फुरसत, समय ।

सं० छुड़-( छेदना ) पु० व्याच्छादन,  
आवरण, नीच, स्थली, मिथ्यावादी,  
नुचल, पेच, फेर, किरण, भूषण ।

प्रा० छुड़ौतो-( छड़ाना ) श्री० छुड़ा-  
ने या मोल । [ चूना, मीठा ]

सं० छुर-पु० छुरा छुरी श्री० छुरा,  
सं० छुरिका } ( छुरा=काटना ) श्री०  
छुरी } चक्र, चाक ।

प्रा० छुहारा-पु० रात्रा, एक फल  
का नाम ।

प्रा० छुछा-पु० खाली, खोमला,  
गुन्य, वृथा, निष्फल, पु० टोना,  
टोटका, नाद ।

प्रा० छुट-( छटना ) श्री० छोड़ना,  
बहा, छुड़ाना ।

प्रा० छूत ( छून ) श्री० छूना, अपवि-  
त्रता, किसी से छूमा जाना ।

सं० छूद-( छूद=प्रकाशकरना ) पु०  
प्रकाश, दीप्ति, वपन, विलास, गु०  
प्रकाशक, प्रकाशवान् ।

प्रा० छेंकना-( क्रि० सं० ) रोकना,  
थटकाना, घेरना ।

प्रा० छेड़-( छेड़ना ) श्री० खिनावट,  
सताना ।

प्रा० छेड़छाड़ } बोल=टोकटाक,  
छेड़खानी } ताना, खिजावट,  
देहीवात ।

सं० छेद-( छिद=काटना ) पु० काटा  
दृमा, भिन्न का हर, भाग ।

प्रा० छेद-( सं० छिद ) पु० गड़हा,  
खड़ा, मांद ।

प्रा० छेदना-( सं० छेदन, छिद=का-  
टना, क्रि० सं० खेचना, पारकरना )  
घसाना, चुभाना, नाथना ।

प्रा० छेनी श्री० रुखानी, टाँकी, छेनी ।

सं० छेमण्ड-पु० मुराहा, माता पिता  
रहित बालक, यनीम, बेवारिस,  
शनाथ ।

प्रा० छेरी-( सं० छगी, छो=काटना )  
श्री० चकरी ।

प्रा० छेदा-( सं० छेदन, छिद=काट-  
ना ) पु० चिह्न, लकीर ।

प्रा० छैल } पु० पांकाभकइत वि-  
छैला } कनिया ।

प्रा० छैलाचिकनियां-बोल=चोंका,  
छैला ।

प्रा० छोकरा-पु० लकड़ा, बालक ।

प्रा० छोकरी-श्री० लड़की, कन्या ।



॥० छोटा-( सं० छुट ) पु० लघु,  
छहुरा, कनिष्ठ ।

॥० छोटिका-( छुट + उका ) स्त्री०  
उन्वान, रशी, छूना, अंगुष्ठ, अं-  
गूठा, कोपीन, लँगोटा, कझोटा,  
कझोट ।

॥० छोर-पु० अन्न, किनारा ।

॥० छोरण-( छुर + अन. छुर = छेद-  
ना ) पु० न्याग, पैना काना, कनेर,  
कारना ।

॥० छोरंग-पु० नींव, सटा, चूना,  
सफेदी मफेदा, करौंदा ।

॥० छोह-( सं० छोम ) पु० प्यार,  
स्नेह, मोह, भीति ।

॥० छोही-( छोम ) पु० प्रेमी, प्यारा,  
स्नेही, अनुरागी ।

॥० छोना-पु० जानर का बच्चा ।

ज

॥० ज-( नन्वेदा होना, वा जि =  
जीतना ) पु० शिव, २ विष्णु, ३ ज-  
न्म, ४ माता पिता, मरणाति, मरणा,  
अंजन, शेष, राजस, जीव, शरीर  
आदि ।

॥० जक-पु० दाढ़ाघन का रत्न ।

॥० जकड़ना-क्रि० म० कमना,  
कसके बांधना, बाँधना, बाँधना,  
जानना ।

॥० जग-( सं० जगत् ) पु० संसार,  
जगत्, दुनियाँ, भस्व, वायु ।

॥० जग-( सं० यज्ञ ) पु० यज्ञ, व-  
लि, २ उत्सव, पर्व ।

॥० जगजगाहट-स्त्री० चमक,  
चमकाहट, प्रकाश, उत्तलाहट ।

॥० जगजागी-स्त्री० संसार में  
बिदिन हुई, दुनियाँ में जाहिर हुई ।

॥० जगत्-( गम् = जाना ) पु० संसार  
जग, दुनियाँ ।

॥० जगती-( गम् = जाना ) स्त्री०  
पृथ्वी, धानी, २ लोग ।

॥० जगदम्बा ( जगत् = संसार, अं-  
म्बा = मा ) स्त्री० जगमाता, मरामा-  
या, देवी, दुर्गा ।

॥० जगदाधार-( जगत् = संसार,  
आधार = आसरा ) पु० अनन्त-  
शेषमी, संसार, का आसरा,  
२ हवा, वायु ।

॥० जगदीश ( जगत् = संसार, ईश  
= स्थायी ) पु० परमेश्वर, संसारका  
कर्ता, जगन्नाथ, विष्णु ।

॥० जगना-( सं० जागरण, जाग  
= जागना ) क्रि० अ० नींद में उठा-  
ना, सचेत होना, जागना ।

॥० जगन्नाथ-( जगत् = संसार, नाथ  
= स्वामी ) पु० विष्णु, जगदीश, जग-  
न्नाथ, जगन्नाथ का मंदिर उड़ीसा  
में जगन्नाथपुरी में है जहाँ बहुत से  
यात्री जाया करते हैं ।

॥० जगमगा-पु० जगदीश, जग-  
न्नाथ, भक्तान्धन ।

प्रा० जगमाता-(सं० जगन्माता  
- जगन्=संसार, माता=मा ) स्त्री०  
- संसार की मा, जगदम्बा, देवी  
दुर्गा, सरस्वती ।

प्रा० जगह स्त्री० और, स्थान,  
जागह डिबाना ।

प्रा० जगहछोड़ना-बोल० कागस  
में कुछ जगह बिन लिखी रखना ।

प्रा० जगहसिरस्तरचना-बोल०  
भाँके पर राखे करना, यथोचित रा-  
खना, जहाँ चाहिये वहाँ रखकरना ।

प्रा० जगह सिर होना-बोल०  
किसी काम पर होना, ठीक होना,  
यथोचित होना, जैसा चाहिये वै-  
सा होना ।

प्रा० जगाज्योति-(भे० जगज्ज्यो-  
तिः) स्त्री० चमक, मड़क, जगजगा-  
रट, बहुत लपका बढ़ी जग ।

सं० जङ्गम-(गम=गाना) गु० चलने  
वाला, जिनमें चलने की शक्ति हो  
ए पु० योगी-जिनके सिर पर ज  
टा होनी है और छोटी पंखों की  
सहायता करते हैं और महादेव के  
भजन गाया करते हैं । [ भाड़ी ।

सं० जङ्गल-(गन्=गिरना) पु०, बन

प्रा० जङ्गली-(सं० जङ्गल) गु० बन-  
ला, बनवासी ।

सं० जग्ध-(ज्ध=भोजन करना)  
भे० पु० भुक्त, खाया हुआ ।

सं० जग्ध-(ज्ध=भोजन) मा० पु०  
भोजन ।

सं० जघन-(जन+घन) पु० स्त्रियों  
के कटि का अग्रभाग, जघा, करि-  
हाँव, कटिदेश, ऊरुस्थल ।

सं० जघन्य-(जम+हन्) भे० पु० अ-  
धम, नीच, पिछला ।

सं० जघन्यज-पु० कनिष्ठ, शूद्र, अप्रथम

सं० जङ्घा-(हन्=टेढ़ा जाना, वा ज-  
न्=पैदा होना) स्त्री० जाँघ, जानु,  
जानू ।

प्रा० जचना-क्रि० सं० अटकल होना  
नगर में खटाना ।

प्रा० जचावट-(जाँघना) भा० स्त्री०  
जाँघ, परस ।

प्रा० जंजाल-(सं० जनजाल, जन्=  
मनुष्य, जाल=फँदा) पु० बल सेड़ा,  
बलभक्त, क्लेश, भ्रम, भ्रष्ट, परावृत्त,  
व्याकुलता, कठिनता ।

सं० जटा-(जट=बट्टा करना) स्त्री०  
बालों का तूड़ा, बिलोबाष्ट, मिने  
हुँथान, न जड़, हल की जड़ ।

सं० जटायूट-(जटा+टूट=तूड़ा)  
पु० जटावा तूड़ा, जटा का ढेर ।

सं० जटाधारी-(जटा+धारी=रखने  
वाला, धृ=रखना) पु० गिर, जटा  
रखने वाला ।

सं० जटामांसी-(जटा+मन्=रगना)

प्रा० छोट्टा-( सं० छुट्टा ) पु० लघु,  
छट्टा, कनिष्ठ ।

सं० छोट्टिका-( छुट्टा + इका ) स्त्री०  
उन्धान, सारी, छूना, श्रृंगुष्ठ, श्रृं-  
गूठा, कोपीन, लँगोटा, कछोट्टा,  
कछोट ।

प्रा० छोर-पु० अन्त, किनारा ।  
सं० छोरण-लघु + अन्, छुर=छेद-  
ना ) पु० व्याग, पैना करना, कर्तन,  
काटना ।

सं० छोरंग-पु० नीबू, सडा, चूना,  
मकेदी मकेदा, करीदा ।

प्रा० छोट्ट- ( सं० छोम ) पु० प्यार,  
स्नेह, मोह, प्रीति ।

प्रा० छोट्टी ( छोम ) पु० मेथी, प्यारा,  
स्नेही, अनुरागी ।

प्रा० छोना-पु० जानवर का बधा ।

## ज

सं० ज- ( जन्= पैदा होना, वा जन्म-  
प्राप्तना ) पु० शिव, २ विष्णु, ३ ब्र-  
ह्म, ४ माना पिता, उत्पत्ति, सुरमा,  
अन्त, शेष, राक्षस, जीव, शरीर  
आदि ।

प्रा० जक-पु० मादाधन का रज्ज ।

प्रा० जकड़ना-क्रि० स० कमना,  
कमके बांधना, सीधना, बांधना,  
जानना ।

प्रा० जग- ( सं० जगत् ) पु० संसार,  
जगत्, दुनियाँ, ब्रह्म, वायु ।

प्रा० जग- ( सं० यज्ञ ) पु० यज्ञ, क-  
लि, २ उत्सव, पर्व ।

प्रा० जगजगाहट-स्त्री०  
जगजगाहट, प्रकाश, उत्तल ।

प्रा० जगजागी-स्त्री० संसार में  
विदित हुई, दुनियाँ में जाहिर हुई ।

सं० जगत्- ( जम्= जाना ) पु० संसार  
जग, दुनियाँ ।

सं० जगती- ( जम्= जाना ) स्त्री०  
पृथ्वी, धाती, २ लोग ।

सं० जगदम्बा ( जगत्=संसार, अ-  
म्बा=मा ) स्त्री० जगमाना, महापा-  
या, देवी, दुर्गा ।

सं० जगदाधार- ( जगत्=संसार,  
आधार=धासरा ) पु० अन्त-  
शेषजी, संसार, का आधार,  
२ हवा, वायु ।

सं० जगदीश- ( जगत्=संसार, ईश-  
=स्वामी ) पु० परमेश्वर, संसारका  
कर्ता, जगन्नाथ, विष्णु ।

प्रा० जगना- ( सं० जागरण, जागृ-  
=जागना ) क्रि० अ० नींद में उठा-  
ना, सचेतहोना, जागना ।

सं० जगन्नाथ- ( जगत्=संसार, नाथ-  
स्वामी ) पु० विष्णु, जगदीश, जग-  
न्पति, जगन्नाथ का मंदिर उड़ीसा  
में जगन्नाथपुरी में है जहाँ बहुत से  
यात्री जाया करते हैं ।

प्रा० जगमगा-पु० बघड़ाना, बद-  
बतार, झगड़ना ।

प्रा० जगमाता- ( सं० जगन्माता )  
जगद्=संसार, माता=मा ) स्त्री०  
संसार की मा, जगदम्बा, देवी  
दुर्गा, सरस्वती ।

प्रा० जगह } स्त्री० ठौर, स्थान,  
जागह } ठिकाना ।

प्रा० जगहद्योड़ना-बोल० कागज  
में लुब्ध जगह पिन लिखी रखना ।

प्रा० जगहसिरखरचना-बोल०  
मौके पर खर्च करना, यथोचित ख-  
र्चना, जहां चाहिये वहां खर्च करना ।

प्रा० जगह सिर होना-बोल०  
किसी काम पर होना, ठीक होना,  
यथोचित होना, जैसा चाहिये वै-  
सा होना ।

प्रा० जगाज्योति- ( सं० जाग्रज्यो-  
तिः ) स्त्री० चमक, मड़क, जगजगा-  
हट, बहुत छपका बढ़ी जोत ।

सं० जह्म- ( जम्=जाना ) गु० चलने  
वाला, जिसमें चलने की शक्ति हो  
२ पु० योगी जिनके सिर पर ज  
टा होती है और छोटी पंथी को  
बनाया करते हैं और महादेव के  
भजन गाया करते हैं । [ भाड़ी ।

सं० जहल- ( जन्=गिरना ) पु०, रन  
प्रा० जहली- ( सं० जहल ) गु० बने-  
ला, बनवासी ।

सं० जग्ध- ( जग्ध=भोजन करना )  
स्त्री० पु० भुक्त, खायादया ।

सं० जग्धि- ( जग्ध+नि ) भा० पु०  
भोजन ।

सं० जघन- ( जन+घन ) पु० स्त्रियों  
के कटि का अग्रभाग, जंघा, करि-  
हॉव, कटिदेश, ऊरस्थल ।

सं० जघन्य- ( जघ+घ्न्य ) स्त्री० पु० अ-  
घम, नीच, पिछला ।

सं० जघन्यज-पु० कनिष्ठ, शूद्र, अथवा

सं० जह्वा- ( हन्=देहा जाना, वा ज-  
न्=पैदा होना ) स्त्री० मांच, जानु,  
जानू ।

प्रा० जचना-क्रि० सं० अटकल होना  
नजर में रखना ।

प्रा० जचावट- ( जांचना ) भा० स्त्री०  
जांच, परख ।

प्रा० जंजाल- ( सं० जनजाल, जन्=  
मनुष्य, जाल=फंदा ) पु० उलझा,  
वलझान, कलेश, भ्रंभट, यवराइट,  
व्याकुलता, कठिनता ।

सं० जटा- ( जट=झट्टा करना ) स्त्री०  
बालों का झूड़ा, बिखरेबोझ, मिले  
हुयेबाल, २ जड़, हल की जड़ ।

सं० जटाजूट- ( जटा+जूट=जूड़ा )  
पु० जटाका झूड़ा, जटा का बंध ।

सं० जटाधारी- ( जटा+धारी=रखने  
वाला, धृ=रखना ) पु० शिव, जटा  
रखने वाला ।

सं० जटामांसी- ( जटा, मन्=रगना )



समूह, समाज, दोस्ती, भुंड ।  
 प्रा० जत्यावोधना-बोल० भुण्ड  
 बनाना, गोल बांधना ।

सं० जन-(जन्=पैदाहोना) पु० मनु-  
 प्य, लोग, आदमी, मनुष्य जाति  
 व्यक्ति, २ दुष्ट वा नीच मनुष्य ।

सं० जनक-(जन=पैदावरना) क० पु०  
 बाप, पिता, २ मिथिला के राजा  
 और सीताके बाप का नाम ।

सं० जनकतनया (जनक=एक  
 जनकमुता) राजाका नाम,  
 तनया वा मुता=बेटी) स्त्री० सीता,  
 जानकी ।

सं० जनकपुर-(जनक=एक राजा  
 का नाम, पुर=शहर) पु० तिरहुतमें  
 एक शहर है जो राजा जनक की  
 राजधानी था । [नक बा ।

प्रा० जनकौरा-(सं० जनक) पु० ज-  
 सं० जनता-स्त्री० जनसमूह, मनुष्य  
 समूह ।

प्रा० जनना-(सं० जनन, जन्=पैदा  
 होना) क्रि० अ० जन्म होना पैदा  
 होना ।

सं० जननी-(जन्=पैदाहोना) स्त्री०  
 मा, मैया, माता, महतारी ।

सं० जनपद-(जन+पद) पु० देश, प्रा-  
 म, लोक, जाति, कौम, जनस्थान ।

सं० जनप्रवाद-पु० किंवदन्ती, अफ-  
 बाद, बदगोई, मज्मून, गुरुरत,  
 खबर, कलह ।

सं० जननीय-(जन्+जनीय) मर्म०  
 संतान, उपजायागया, पैदा किया  
 हुआ ।

सं० जनमेजय-(जन=संसार, एज=  
 चमकना, वा जन्=दुष्ट लोग, एज=  
 कंपाना) पु० राजापरीक्षितका बेटा ।

सं० जनयिता(जन्+ई+इ, जन्  
 पैदा करना) क० पु० पिता, जनक,  
 बाप, जन्मदाता ।

सं० जनयित्री(जनयि+ई) स्त्री०  
 माता, जननी, मा, महतारी ।

सं० जनलोक-(जन=मनुष्य, लोक  
 =जगह) पु० सातलोकों में कां-  
 एकलोक जहाँ धर्मात्मा मनुष्य मरने  
 के पीछे रहते हैं ।

प्रा० जनवासा-(सं० जन्यवास, जन्य=  
 हुलहेके भिन्न आदि वास=जगह) पु०  
 बरातियों के उतरने की जगह ।

सं० जनाश्रय-(जन=मनुष्य, आश्रय  
 =अवलंब) पु० विश्रामस्थान, टि-  
 वासरा, २ अतिथार, मन्त्री ।

सं० जनश्रुति-(जन=मनुष्य, श्रुति=  
 सुनी हुई) स्त्री० रक्तर समाचार, किं  
 वदन्ती, संदेश, अफवाह ।

प्रा० जनाना(जनना) क्रि० सं० पै-  
 दा करना, जन्माना, २ (जानना)  
 बिठाना, जवाना, बेठाना, बुझाना ।

प्रा० जानव-(जनाना) भा० पु० सै-  
 न मंडल, सत्तार, घेठार, सूचना ।

प्रा० जानाव-अवधान, चेष्टा,  
 रक्षायान ।

**सं० जनार्दन**—(जन्=दुष्टलोग, अर्द=पीड़ा देना, मारना, वा जन मनुष्यों से, अर्द जांचा जाना अर्थात् जिससे मनुष्य जांचने हैं) पु० विष्णु, भगवान्, नारायण ।

**प्रा० जनि** } क्रि० दि० मत, नहीं ।  
**जिन** }

**सं० जनि**—(जन्+इ) भा० स्त्री० जन्म, पैदाइश, उत्पत्ति ।

**सं० जनित**—(जन्=पैदा होना) स्त्री० पु० पैदाहुआ, उत्पन्न, भया, जन्मा ।

**सं० जनुस्**—पु० उत्पत्ति, पैदाइश, स्त्री० जनु, उत्पत्ति, जनन ।

**प्रा० जनेऊ**—(सं० यज्ञोपवीत) पु० सूत का, तार जिसको तीन वर्णों के लोग गले में पहनते हैं, उपवीत, यज्ञोपवीत—२ जनेऊ जैसा चिह्न जो होरे आदि रतनों में होता है ।

**प्रा० जनेत**—(सं० जन्म) पु० बराती, स्त्री० बरात ।

**प्रा० जज्जाल**—पु० झगड़ा, बेलड़ा, सांसारिक कार्यों का समूह ।

**प्रा० जन्ता**—(सं० यंत्र) पु० तार खींचने का औजार ।

**सं० जन्तु**—(जन्=पैदा होना) स्त्री० जीवधारी, प्राणी, जीव, जानवर, बग, देशधारी, देरी ।

**प्रा० जन्त्र**—(सं० यन्त्र) पु० कल

२ बाजा, ३ गंडा, तावीज, जन्तर, टोटका ।

**सं० जन्म**—(जन्=पैदा होना) पु० उत्पत्ति, पैदा होना, पैदाइश ।

**सं० जन्मद**—(जन्म+द=देनेवाला, दा=देना) पु० जन्मदाता, बाप, पिता ।

**सं० जन्मदिन**—(जन्म+दिन) पु० पैदा होने का दिन, वरस गांठ, वरसवां दिन, सालगिरह ।

**सं० जन्मपत्री**—(जन्म+पत्री) स्त्री० लग्न कुंडली, जन्मपत्र, जापचा ।

**सं० जन्मभूमि**—(जन्म+भूमि) स्त्री० अपना देश, उत्पत्तिस्थान, वतन ।

**सं० जन्मान्तर**—(जन्म=पैदाइश, अन्तर और) पु० दूसरा जन्म, नया जन्म, पुनर्जन्म, फिर जन्मना ।

**सं० जन्मान्ध**—(जन्म+अन्ध) पु० जन्म का अन्धा, मूरदास ।

**सं० जन्माष्टमी**—(जन्म+अष्टमी) स्त्री० श्री कृष्णका जन्म दिन भादों वदी ८ ।

**सं० जन्मोत्सव**—(जन्म+उत्सव) पु० जन्मदिन का उत्सव, २ जन्माष्टमी के दिनका उत्सव ।

**सं० जन्य**—(जन्=पैदा करना) स्त्री० पु० संग्राम, निन्दितवाद तलाब कौलीनि, इह, उत्साह सेवक भृत्य मित्र, शांति, पाप, २ दुलहे के मित्र और साथी आदि ।







भंडा, शैवाल, मित्रार, इन्द्र धनुष।  
सं० जल-(जल=दकना) पु० पानी।

सं० जलक-पु० घराटिका, कौडी,  
शुक्तिका, सूनी, शंभ, घोषा।

सं० जलकरङ्क-पु० शंभ, घोषा,  
घराटिका, नारियलरा फल दूध-  
पुक्त, सिवार, काई।

सं० जलकाक-पु० मोनोखोर, पक्क,  
पनटुंगी।

सं० जलकुमुट-(जल=पानी, कुमुट  
=मुर्गा) पु० जलमुर्गा, मुर्गापी।

सं० जलकूपी-प्री० तड़ाग, झील।

सं० जलगुल्म-पु० जल भौर, क-  
कुआ, बर्क, हिम, पाला।

सं० जलक्रीड़ा-(जल+क्रीड़ा)प्री०  
पानी में खेल करना।

सं० जलचर-(जल=पानी, चर-  
चलनेवाला, चर=चलना, पु० जन  
का जीव मकर, मछली, घाह आदि।

सं० जलचरकेतु-(जलचर=मकर  
केतु=भंडा, शर्यान् जिसके भंडेपर  
मकर का चिह्न है) पु० कामदेव,  
मदन, मकरध्वज।

सं० जलज-(जल=पानी, ज=पैदा  
होनेवाला, जन्=पैदा होना) पु०  
नैवल, कमल, पंकज, २ मछली,  
३ शङ्ख, ४ चन्द्रमा, ५ मोती।

सं० जलजात-(जल=पानी, जात

पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु०  
नैवल, कमल।

सं० जलत्र-(जल+त्र, त्र=रसो  
करना) छत्र, छाता, नौका, नाव।

प्रा० जलथल-(सं० जलस्थल) पु०  
आधी धरती पानी से ढकी हुई और  
आधी सूखी, दलदल।

सं० जलद-(जल=पानी, द=देने-  
वाला, दा=देना) पु० वादल, मेघ,  
घन, घटा, बारिद, मोथा घास,  
कलश, पद्मा, पु० पानी देनेवाला।

सं० जलधर-(जल=पानी, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० वादल  
रमभंदर, ऐकनकारका घास, पु०  
पानी को रखनेवाला।

सं० जलधारा-(जल=पानी, धारा  
=धार) धारा भरना, मवाद, सो-  
ता, झील, पानी का गिरना।

सं० जलधि-(जल=पानी, धा=रखना)  
पु० सभंदर।

प्रा० जलन-(सं० ज्वलन) स्त्री०  
जलना, तपन, २ तप, ३ रिस,  
क्रोध, कुहन।

सं० जलनिर्गम-पु० मोरी, पानी  
का निगस।

प्रा० जलना-(सं० ज्वलन, ज्वल  
=जलना) क्रि० अ० चलना, दह-  
ना, मुलगना, भड़कना, आंचक-



प्रा० जव } (सं० यव) पु० एक अ-  
जौ } नाज का नाम ।

सं० जवनिका—(जु=जाना, जिसमें)  
सौ० परदा, कनात, काई ।

प्रा० जवान—(सं० युवन्, यु=मिलना)  
पु० तरुण, सोलह बरस की उमर का ।

प्रा० जवार—पु० सपंदर की बाद,  
२ एक प्रकार का अनाज ।

प्रा० जवारभाटा—पु० समुद्र का  
जवार चढ़ाव ।

प्रा० जवासा—(सं० यवास, यु=मिलना)  
पु० एक प्रकार की घास जिसकी

गर्मी के दिनों में टट्टी बनाई जाती  
है और इसार बरसान का पानी  
गिरने से सूख जाता है ।

प्रा० जस—(सं० यश) पु० कीर्ति,  
नामवरी ।

प्रा० जस-क्रि० वि० भैसे, जिस प्रकार से ।

प्रा० जसोदा } (सं० यशोदा) स्त्री०  
जसुमति } नन्दजी की स्त्री, श्री,  
कृष्ण की दूधरी मा ।

प्रा० जस्त } पु० रांता, एक प्रकार  
जस्ता } की धातु ।

सं० जहक—(ज+हक, हाह=झोड़ना)  
पु० समय, बाहक बैकुण्ठ गुं  
त्यागी, झोड़नेवाला ।

प्रा० जहँ } (सं० यव) क्रि० वि० जिस  
जहाँ } जगह ।

प्रा० जहांतहां—बोल० हर-एक ज-  
गह, सब ठौर ।

प्रा० जहांकातहा—बोल० जहां था  
वहीं, उसी जगह । [जगह ।

प्रा० जहांजहां—बोल० जिस जिस  
प्रा० जहांकहीं—बोल० चाहे जहां,

किसी जगह ।

प्रा० जहांतहांफिरना—बोल० भट-  
कना, इधर उधर फिरना ।

सं० जहनु—पु० चन्द्रवंशियोंमें एक राजपि  
का नाम जो गंगाको उतरने के समय

पीगया था (पुराणोंके अनुसार) ।

सं० जहनुतनया—(जहुन+तनया=  
बेटी) स्त्री० गंगा, कहते हैं कि जब  
जहनु राजा तप करते थे तब गंगाकी  
धारा से व्याकुल हुए तो गंगा की

पी गये फिर देवताओं के कहने से  
पीछे पेट से निकाल दी इसलिये  
गंगाको जहनुकी बेटी कहते हैं ।

प्रा० जाई—(सं० जाना, जन्=जन्मना)  
स्त्री० बेटी, लड़की, जनी, गुं पैदा

हुई, २ (सं० जाती) चमेछी ।

प्रा० जांव—(सं० जहा) स्त्री० रान, भैंसा ।

प्रा० जांधिया—(जांव) पु० बड़नी ।

प्रा० जांचना—क्रि० स० परखना,  
अटकलना, बसना ।

प्रा० जाना—(सं० यन्) स्त्री० पक्की,  
पाट, पेपणी ।

प्रा० जाकड़—पु० घन्घरु, घरोहर,  
कोई चीज शन पर लेना ।

प्रा० जागना—( सं० जागरण, जा-  
गृ=जागना ) कि० अ० नींद से  
उठना, मनेन होना ।

सं० जागर } ( जागृ=जागना भा०  
जागरण } पु० रतजगा, जगौनी  
रात को जागर परमेस्वर का  
ध्यान करना ।

सं० जागसि ।  
जागसि ।  
जागर्ग ।  
जागस्क ।  
जाग्रत ।  
क० पु० जगैया,  
निद्रोत्थित,  
मनेन, वेदार ।

सं० जाहल—पु० गौरवाश्रि, गरगौटा ।

प्रा० जाचक—( सं० याचक ) पु० मांगने-  
वाला, भिखारी, याचनेवाला ।

प्रा० जाचना—( सं० याचन ) कि०  
मा० मांगना, चाहना ।

प्रा० जाजम—सं० जगंजी, दगी,  
रिखीवा ।

प्रा० जाट—पु० हिंदुओं में एक जाति ।

प्रा० जाड़ा—( सं० जड़, जड़=टटना )  
पु० बड़ी, डंड, खैरदाज ।

सं० जान—( जन=पैदा होना ) पु०  
जन्म, दुःख, पैदाहुआ, जन्म ।

प्रा० जान—( सं० जान ) की० जानि,

वंश, कुल, वर्ण, गोत्र, २ प्रकार,  
भेद, गण, वर्ग ।

सं० जातक—( जन=पैदा होना ) पु०  
वेदा, २ बृहज्जातक आदि ज्योतिष  
के ग्रन्थ, ३ जातकर्म ।

सं० जातकर्म—( जान=जन्म, कर्म  
=राशि ) पु० जन्मके समय की एकरीति ।

प्रा० जानपांन—( सं० जातिपांन )  
सं० वंशावली, वंश, उत्पत्ति, पीढ़ी ।

सं० जानरूप—पु० मोना, चांदी ।

सं० जानि—( जन=पैदा होना सं०  
जान, वर्ण, गोत्र, वंश, २ उत्पत्ति ।

सं० जानकर्म—पु० नादीमगध्राद्धादि ।

सं० जानी—( जन=पैदा होना ) सं०  
चमेनी, जावित्री ।

सं० जानीफल—पु० जायफल ।

सं० जानुधान—( जागु=रुभी, धान=  
पाम, अर्थात् जो समय पाकर  
मनुष्यों के पाम आजाता है ) पु०  
राजपुत्र, अमर ।

प्रा० जात्रा—( सं० यात्रा ) सं०  
नीरव होना, देगाटन, गहरा, कूच ।

प्रा० जात्री—( सं० यात्री ) पु० यात्रा  
करनेवाला, नीरव को जानेवाला,  
मुसाफिर ।

प्रा० जान—कर, शीत, आगवा ।

सं० जानकी—( न=नम )  
की० जानी, बीर, बीर,

प्रा० जानना—(सं० ज्ञान, ज्ञा=जानना)

क्रि० सं० समझना, बूझना, पर-  
चानना, जानबूझ के, धोल० मन  
से, जीसे, समझ बूझ कर ।

प्रा० जाना—(सं० यान, या=जाना)

क्रि० अ० गमन करना, चलना,  
धीतना, पहुँचना, जारी रहना,  
चला जाना ।

प्रा० जातारहना—(धोल० सोया जा-

ना, चला जाना, अदृश्य होना, अलोप  
हो जाना, मर जाना, चंपत होना,  
विलाप जाना ।

प्रा० जानेदेना—(धोल० छोड़ देना,

समा करना, कुञ्ज ध्यान नहीं करना ।

सं० जानु—(जन्=पैदा होना) पु०

घुटना, टगना, टेवना, ऊरु, जानू ।

सं० जाप—(जप्=जपना) क० पु० जप

रटन, माला फेरना, मंत्र जपना ।

सं० जापक—(जप्=जपना) क० पु०

जप करनेवाला, जपनेवाला ।

प्रा० जाम—(सं० याम) स्त्री० राह, दिन

रात का आठवाँ भाग, तीन घण्टा ।

प्रा० जामन—(सं० जम्बु, जम्ब=खाना)

पु० एकपेड़ और उसके फल का नाम ।

सं० जामाता—(जाया=पत्नी, पा=

आदर करना) पु० जमाई, बेटे

का पति, दामाद । [रात, रात्रि ।

प्रा० जामिनी—(सं० यामिनी) स्त्री०

प्रा० जाम्बवन्त—(सं० जाम्बुवन्त,

जाम्बु=जामन, पद्=वाला) पु०

रीखों का राजा जो श्रीरामचन्द्र  
का मित्र और श्रीकृष्णका समुरथा ।

सं० जाम्बूनद—पु० सुवर्ण, स्त्री०

जाया, विवाहिता स्त्री ।

प्रा० जायफल—(सं० जातिफल):

पु० एकतरह का गमे मसाला ।

प्रा० जाय—क्रि० वि० व्याप ।

सं० जाया—(जन्=पैदा होना) स्त्री०

भार्या, पत्नी, व्याही हुई स्त्री ।

सं० जायानुजीवी—(जाया + अनु-

जीवी) पु० नट, वेश्यापति, भंडु-

आ, वक्रपत्नी ।

सं० जायापती—दंपती, स्त्री पुरुषों

सं० जार—(ज=दुबला होना, अर्थात्,

स्त्री के साथ पतिका प्यार घटनेवाला)

पु० यार, दूसरा पति, उपपति ।

सं० जारज—(जार=यार, जन्=पैदा

होना) पु० जार से पैदा हुआ

लड़का, इराभी बेटा ।

प्रा० जारना—(सं० ज्वलन) क्रि०

सं० जलाना, गुलगाना, भड़काना,

आंच लगाना ।

सं० जाल—(जल्=ढकना, घेरना)

स्त्री० फंदा, पाश, २० जालीदार

सिइकी, झरोखा, ३ माया इन्द्र-

जाल, जादू, ४ समूह ।

सं० जालक—(जाल + अक) क० पु०

फरोशी, मकार, २ मछली का जाल

स्त्री० ३ जाली लोट कपड़ा, ४ शिलाजीत, ५ जोंक, ६ रौंड़, रंडा, ७ भिल्लप, बखनर, ८ व्याध, घड़े-लिया, मल्लाह । [ मयनी, रयी ।

सं० जालगणिका—स्त्री० मयनी,

प्रा० जाला—( सं० जाल, जल्=ढ-कना ) पु० मकड़ी का फांदा २ मोतियाबिंद, आंख की धीमारी ।

प्रा० जाली—(सं० जाल) स्त्री० एक तरहका कपड़ा, २ भंभरी, जालीदार सिङ्गी, झरोखा ।

सं० जाल्म—पु० नार, धूर्त, पांमर, अधम, क्रूर, डीठ ।

प्रा० जावक—( सं० यावक, यु=मिलना ) पु० महावर, अलवा ।

प्रा० जावित्री } (सं० जातीपत्री)  
जायपत्री } स्त्री० एक प्रकार का गर्म मसाला ।

प्रा० जासु—( सं० यस्य ) सर्वना० जिस वा, जिससे ॥

प्रा० जाहि—सर्वना० जिस को ।

सं० जाह्नवी—(जह्नु एक रामपिका नाम) स्त्री० गंगा, भागीरथी, (जह्नुतनया देखो) ।

सं० जिगमिषा (गम्=माना) भा० स्त्री० गमनेच्छा, जानेका इरादा ।

सं० जिगीषा—(जि=जीवना, भा० स्त्री० जीवने की इच्छा, जय की इच्छा, हिसका ।

सं० जिघत्सा—(अद्=भक्षणकरना) भा० स्त्री० भोजनेच्छा, खाने का इरादा ।

सं० जिघत्सु—( अद्=खाना ) क० पु० बुझु, भोजन करनेकी इच्छा करनेवाला ।

सं० जिघांसा—(हन्=मारना) भा० स्त्री० मारने की इच्छा करना ।

सं० जिघांसु—( हन्=मारना ) क० पु० मारने की इच्छा करनेवाला ।

सं० जिज्ञासा—(ज्ञा=जानना) भा० स्त्री० जाननेकी इच्छा, पूछना, प्रश्न ।

सं० जिज्ञासु—क० पु० पूछनेवाला ।

प्रा० जित—( सं० यत्र ) क्रि० वि० जहां, जिधर, २ जीता गया, हारा हुआ ।

सं० जितेन्द्रिय—(जित=जीतली वा बश बरली, इन्द्रिय=इन्द्रियां, जिसने) गु० इन्द्रियवित्, जिसने इन्द्रियों को बश में कर लिया हो, श्रेष्ठ, सुनि, यनी, संन्यासी ।

सं० जिन—(जि=जीतना) पु० बुद्ध, जैनियों का देवता, जैनमन में २४ जिन हुए घतलाते हैं ।

फा० जिन्स—जात, कौम ।

प्रा० जिमाना—(मं० जेपन, जिम्=खाना) क्रि० स० खिलाना । [मकार ।

प्रा० जिमि—क्रि० वि० जैसे, जिस

प्रा० जिय } (सं० जीव) पु० जीव,  
जियरा } प्राण, आत्मा, रुह ।

प्रा० जियाना (सं० जीवन) क्रि० स०  
मिलाना, प्राणदेना, रगलना, पोपना ।

प्रा० जिहि—सर्वना० जिनको, जिस  
को, जिसके, जो ।

सं० जिह्वा—(लिह=स्वाद लेना)  
ही० रसज्ञानेन्द्रि, जीभ, रसना ।

प्रा० जी (सं० जीव) पु० जीव, प्राण,  
आत्मा, जिय, २ मन, चित्त ।

सं० जिहल—क० पु० चटोरा, आ-  
स्वादक, जिमोर ।

प्रा० जीउठाना—बोल० मन खींच  
लेना, किसीसे मित्राई छोड़ देना ।

प्रा० जीबुराकरना—बोल० जीमिच-  
लाना, बचन करना, या किया  
चाहना, रद्द किया चाहना ।

प्रा० जीवदाना—बोल० मनमें कि-  
सी चीजकी चाह पैदा होना, जी  
में वत्साह होना, हौसिलता होना ।

प्रा० जीविखरना—बोल० अचेत हो-  
ना, मूर्च्छित होना, मूर्च्छा आना ।

प्रा० जीभरजाना—बोल० सन्तोष  
होना, मन तृप्त होना, आसूदा  
होना, अयाजाना ।

प्रा० जीआजाना—बोल० किसी  
चीज पर अचानक मन लग जाना,  
किसी से प्रसन्न होना ।

प्रा० जीभरआना—बोल० मन में

दयाका उपजना, दया हर्ष अथवा  
शोच से मुँहसे बोल न निकलना ।

प्रा० जीवहलाना—बोल० मन बह-  
लाना ।

प्रा० जीपाना—बोल० किसीके स्वर-  
भाव को जानना ।

प्रा० जीपानीकरना—बोल० सता-  
ना, दुखदेना, खिन्नाना, पीड़ादेना ।

प्रा० जीपरखेलना—बोल० अपने  
को जोरिम में डालना, जी देने पर  
उपन होना ।

प्रा० जीपसीजना } बोल० दया  
जीपिचलना } आना, मोह  
आना ।

प्रा० जीपकड़ाजाना—बोल० शोष  
में होना, उदास होना ।

प्रा० जीफटजाना—बोल० दिल दूट  
जाना, निराश होना ।

प्रा० जीफिरजाना—बोल० किसी  
चीजको नहीं चाहना, सन्तुष्ट होना,  
तृप्त होना, किसी चीज से अयाजाना ।

प्रा० जीजलना—बोल० मनमें दुःख-  
पाना, कुदना ।

प्रा० जीजलाना—बोल० मंहाय क-  
रना, कृपा करना, आप दुन सहकर  
दूसरेका उपहार करना, २, सनाना  
सिजाना, दिख दुनाना, बलाना ।

प्रा० जीचाहना—बोल० किसी ची-



- ।। जीकी इच्छा करना, दिललल चाना,  
मनमें किसी की चाह पैदा होना ।
- प्रा० जीछिपाना } बोल० किसी  
जीचुराना } कामको सुस्ती  
से करना, असावधानी करना ।
- प्रा० जीचलाना-बोल० किसी का-  
मको बीरता से करना ।
- प्रा० जीचलना-बोल० चाहना,  
इच्छा करना । [ वचाना ।
- प्रा० जीदान-बोल० वचाना, मरनेसे
- प्रा० जीदानकरना-बोल० किसी  
के प्राण वचाना, बड़े दोषको क्षमा  
करना, जान बलश देना ।
- प्रा० जीधड़कना-बोल० डर से  
अथवा शोच से दिछ धुकड़ धुकड़  
करना, दिल कांपना ।
- प्रा० जीधूवजाना-बोल० अचेत  
होना, मूर्च्छा आना, जी बिखरना,  
गिरावना, बेरोश होना ।
- प्रा० जीरखना-बोल० भटपट मसन्न  
होजाना, मसन्न करना, दिल खुश करना ।
- प्रा० जीसे उतर जाना-बोल०  
नहीं चाहना, दिलसे गिरना ।
- प्रा० जीसे मारना-बोल० मारदा-  
लना, जानसे मारदालना ।
- प्रा० जीकरना } बोल० चाहना,  
जीहोना } किसी चीज की  
चाह मनमें पैदा होना ।
- प्रा० जीखोलकेकुछकरना-बोल०  
किसी काम को चाह से अथवा  
मसन्नता से करना ।
- प्रा० जीपरआना-बोल० मुश्किल  
पड़ना, जी क्लेश में होना ।
- प्रा० जीघटजाना-बोल० किसी  
चीज से मन हट जाना, घिनाना,  
अवज्ञा करना, उदास होना ।
- प्रा० जीलगना-बोल० किसी से  
प्यार करना, किसीकी चाह होना ।
- प्रा० जीलगाना-बोल० किसी  
चीज पर मन लगाना, किसी की  
चाह मन में पैदा होना ।
- प्रा० जीलेना-बोल० किसीके मन  
की बातको जानना, रमारदालना ।
- प्रा० जीमारना-बोल० किसी की  
इच्छा को खोदना, निराश करना,  
अमसन्न करना ।
- प्रा० जीमिलाना-बोल० किसीसे  
मिश्राई करना, मुहव्वत बढ़ाना ।
- प्रा० जीमेंआना-बोल० कोई बात  
सूझना, याद पड़ना ।
- प्रा० जीमेंजलजाना-बोल० दाह  
से दुख पाना ।
- प्रा० जीमेंजीआना-बोल० सुख  
पाना, चैन होना, मसन्न होना ।
- प्रा० जीमेंधरकरना-बोल० मन  
भाना, किसीको बहुत चाहना ।
- प्रा० जीनिकलना-बोल० मरना ।

२. खेरल होना; ३. बहुत-दरना ।

प्रा० जीहारना—बोल० हिम्मत हा-

रना, यत्नराना, साहस नहीं रखना,

निराश होना ।

प्रा० जीहट जाना—बोल० मन हट-

जाना, जी घट जाना ।

प्रा० जी—अव्यय० हां, २. मादिव

आप ।

प्रा० जीत (सं० जित, जि=जीतना)

स्त्री० विजय, जय, फतह ।

प्रा० जीतना—(सं० जि=जीतना)

क्रि० स० जयकरना, पराजय कर-

ना, हराना ।

प्रा० जीतव—(सं० जीवन वा जीवि-

तव्य) पु० जीना, जीवन, जिंदगी ।

प्रा० जीता—(जीना) पु० जीना हुआ,

बलता, चैनस्थ, २. अधिक,

सिं० छरत्र—

प्रा० जीतेजी—बोल० जवतक

जीता है ।

प्रा० जीना—(सं० जीवन) क्रि० प्र०

जीना रहना ।

प्रा० जीभ—(सं० जिह्वा) स्त्री० जिह्वा

रसना, ज़बान ।

प्रा० जीमवदाना—बोल० बातें ब-

नाना, चरुचक करना, निंदाकरना ।

प्रा० जीमपकड़ना—बोल० चुप

होना वा करना, २. किसी की बात

काटना, ३. छोटे-दोप निकालना ।

प्रा० जीभचाटना—बोल० बड़ी

लालसा करना, जी लल्लेचाना,

बहुत चाहना ।

प्रा० जीभनिकालना—बोल० बहुत

ही बहुत यकजाना या प्यार होना,

हाँफना ।

प्रा० जीभी—(जीम) स्त्री० जीभ

साफ करने की चीज ।

जीमना } (सं० जेमन, जिम्=

जेवना } खाना) क्रि० सं०

खाना, भोजनकरना ।

प्रा० जीमूत—पु० मेघ, २. पर्वत,

३. मोघा, ४. दण्डकारण्य, ५. शेष ६

धूम, ७. इन्द्री ।

प्रा० जीरा—(सं० जीर, ज्वा=पुराना

होना) पु० पक मसाले का नाम ।

संजीर्ण—(ज=बूझा होना, पुराना

होना) पु० बूझा आदमी, पु० पु-

राना मुर्झिया हुआ, पचा हुआ ।

सं० जीर्णोद्धार—(जीर्ण + उद्धार)

परम्परा, लेसपोत ।

प्रा० जील—स्त्री० गाने में ऊँचा स्वर

तोखी राग ।

सं० जीव—(जीव=जीना) पु० प्राण

जी, आत्मा, २. जीवधारी जन्तु,

जानवर, ३. जीविका ।

सं० जीवक—(जीव+अक) क० पु०

सेवक, रिकर, कृपण ।

सं० जीवन—पु० जीना, जीतय, २ जीविका, वृत्ति, ३ पानी ४ घेडा, पुत्र ।

सं० जीवनचर्या—जीवनवृत्तान्त, हाल, सवानह उर्ग्री ।

सं० जीविका—स्त्री० जीने का उपाय, आजीविका, वृत्ति, निवाह, रोजी ।

सं० जीवित { गु० जीताहुआ, भीता,  
जीवी { पु० जीना, जीवन,  
वर्तमान ।

प्रा० जीह { (सं० जिह्वा) स्त्री०  
जीहा { जीभ, रसना ।

प्रा० जुआरी { (सं० अंतर्कारी) क०  
जुवारी { पु० नूआ खेलनेवाला ।

प्रा० जुग (सं० युग) पु० सत्य, त्रेता,  
द्वार, कलि ये चार, जुग कहलाते  
हैं, समय, २ जोड़ा ।

प्रा० जुगानजुग—(सं० युगानुयुगः  
युग, + अनु+युग) बोल० कई  
युग, कई बरस, बहुत बरसतक ।

प्रा० जुगजुग—बोल० सदा, नित,  
सर्वदा, हमेशा ।

प्रा० जुगत—(सं० युक्ति) स्त्री० चतु-  
राई, निपुणता, चलावट, हिकमत ।

प्रा० जुगनी—स्त्री० चमकनेवाला कीड़ा ।

प्रा० जुगल—(सं० युगल) गु० दो,  
जोड़ा ।

प्रा० जुगयना—क्रि० सं० देखना, बह  
करना, खबरलेना, रखना, रक्षा करना ।

प्रा० जुगालना { क्रि० अ० बना-  
जुगालीकरना { लना, पागुराना,  
राउथ करना । [रोमय ।

प्रा० जुगाली—स्त्री० पागुर, उगाल,

सं० जुगुप्सा—(गुप्=निन्दाकरना)  
भा० स्त्री० निन्दा, बुराई, असूया ।

सं० जुगुप्सित—स्त्री० पु० निन्दित,  
वदनाम ।

प्रा० जुभाऊ—(सं० युद्धीय, लड़ाई  
का) गु० लड़ाई का, जुभाऊवा-  
जा, लड़ाई का वाजा ।

प्रा० जुभार—(सं० योद्धा) क० पु०  
लड़ाका, वीर, भट, लड़नेवाला  
बहादुर ।

प्रा० जुटना—(सं० युक्त, युक्त=मिलना)  
क्रि० अ० भिड़ना, मिलना, लड़ने,  
को सामने होना ।

प्रा० जुड़ना—(सं० जुड=जुड़ना) क्रि०  
अ० मिलना, सटना ।

प्रा० जुड़ाना { क्रि० सं० छाती  
जुड़ाना { ठंडी करना, ठंडा  
होना, २ मिलाना, जोड़ना ।

प्रा० जुन्हरी—स्त्री० ज्वार, एक प्रकार  
का अनाज । [अनाज ।

प्रा० जुवार—स्त्री० एक प्रकार का

प्रा० जुहार—पु० सत्ताप, रापराम,  
पाछागन, दण्डवत्, नपरकार ।

प्रा० जुआ—(सं० पूत) स्त्री० वांसा  
खेचना, दांव लगाना ।

प्रा० जुआ } (सं० युग) पु० एक  
जुआ } लकड़ी की खीज जो

बैनों के गले में बांधने हैं, जूआट ।

प्रा० जू—स्त्री० चिन्नद, दील, चीलरह ।

प्रा० जूमना—(सं० पुष=लड़ना)  
क्रि० प्र० लड़ना, लड़ाई करना,  
२ लड़ाई में मरना ।

प्रा० जूममरना—घोल० लड़ाई में  
लड़ के मरना ।

सं० जुष्ट—(जुष्ट=सेवाकरना) मं० पु०  
जूठा, भेषित, सेवा किया गया ।

सं० जूट—(जट=बांधना) पु० बैलों  
का बंध, जटाका हूडा, २ सम्पू ।

प्रा० जूड़ा—(सं० जूट) पु० बंधे हुए  
बाल, २ (जड़) टेंड ।

सं० जुड़ित } (जुड़+इत) मं० पु०  
जुड़िया } मिलित, नौमम, दो  
लड़के जुड़े हुए ।

प्रा० जूड़ी—(सं० जड़=जाड़ा) स्त्री०  
जूर, शीतजूर, बंफजूर, जाड़ा,  
लरजा ।

प्रा० जूता } पनही, पगरखी, मोड़ा,  
जूती } चर्मगादुका ।

प्रा० जूहा—(सं० पूष) पु० सम्पू, भुंड ।

प्रा० जूही } (सं० पूषी, पुं=मिलना)  
जूही } स्त्री० एक फूल का नाम ।

सं० जृम्भ } जृम्भ = जम्भाना,  
जृम्भा } भा० स्त्री० जम्भई,  
जृम्भण } आलस्य ।

प्रा० जेट—स्त्री० डेर, डेरी, सम्पू, परत ।

प्रा० जेट—(सं० ज्येष्ठ) पु० पतिका  
बड़ा भाई, २ एक महीने का नाम ।

प्रा० जेटा—(सं० ज्येष्ठ) पु० बड़ा,  
परलौठा, २ पु० कुसुम का बहुत  
अच्छा और गाढ़ा रंग ।

प्रा० जेठानी } (जेठ) स्त्री० जेठ  
जिठानी } की स्त्री ।

प्रा० जेठीमधु—(सं० यष्टीमधु यष्टी=  
तांत, मधु=गहद) स्त्री० मुलरही,  
एक दवाई ।

प्रा० जेठौन—(जेठ) पु० जेठका बेटा ।

प्रा० जेव—स्त्री० खलीना, पाकट ।

प्रा० जेवकतरा—पु० उबका, जेव  
बनानेवाला ।

सं० जेता—(जि=जीतना) च० पु०  
विजयी, जीतनेवाला, फताह ।

सं० जेमन—(जिम=खाना) भा० पु०  
भोजन, खाना, भोज्यपदार्थ, खाने  
की वस्तु ।

प्रा० जेवड़ी } स्त्री० रस्सी, डोरी  
जेवरी }

प्रा० जेहर—पु० तपों के परने का  
एक गरना ।

प्रा० जै-गु० जितना ।

प्रा० जै-(सं० जय) स्त्री० जीत,  
विजय, जय, फतेह ।

प्रा० जैजेकार-(सं० जयकार) पु०  
आनन्द, उत्सव, हर्ष, जीत, विजय,  
जय, बोलबाला ।

प्रा० जैजेकारकरना-बोल० जय  
का शब्द करना ।

सं० जैन-(जिन अहम, बुद्ध) पु०  
जिनधर्मको माननेवाला, बौद्धधर्मी ।

प्रा० जैनी-(सं० जैन) क० पु० जैन  
धनदामाननेवाला, श्रावक, पगारक ।

प्रा० जैमा-(सं० यादव, यदु=तो,  
दश=देवता) क्रि० वि० जिम  
तरह, जिम प्रकार ।

प्रा० जैमाचाहिये-बोल० पथोचि-  
त, ठीक ।

प्रा० जैमाकानैमा बोल० ठीक  
जैम चाहिये, उथो ब-याँ

प्रा० जैहं वज्रभाषा । क्रि० अ०  
जापगा, जावेगा, जावेगे । [जव]

प्रा० जौ क्रि० वि० जैसे, जिमतरह ।

प्रा० जौनों } बोल० किसी तरहसे ।  
जौनोंकरके }

प्रा० जौकानों-बोल० जैमा का  
तैमा, जैमाया जैमाही, ठीक जैमाही ।

प्रा० जौक-(भं० जौकाँदा) स्त्री०  
मन का काँदा, जौकाँदा ।

प्रा० जौही-क्रि० वि० अभी, ठीक ।

प्रा० जोखना-क्रि० म० तौलना  
नापना ।

प्रा० जोखिम } स्त्री० बीमा, २६  
जोखों } चिन्ता, शङ्का कठि  
काम ।

प्रा० जोखिमउठाना-बोल० झप  
नई चिन्ता में डालना, कठिन का  
के बरने का साहम करना ।

प्रा० जोड़ } (मं० जोड़, जुड़=मि  
जोड़ा } लाना पु० जोड़ी, माथी  
मम, बगवरी के, गु० बगवर ।

मं० जोड़ (जड़-बाँटना, मिलाना,  
प० मंज मिलाना, इकट्ठा, मीजान,  
येगल, २ गाँड, मार ।

प्रा० जोड़देना-बोल० गिनना,  
हिमाव करना, मीजान देना, ठीक  
करना, जोड़ना ।

प्रा० जोड़नोड़ बोल० बनावट,  
तरत, ठिकमर, जुगन, २ गाँड ।

प्रा० जोड़जाड़-बोल० बचन, बचा-  
व, थोड़ा थोड़ाकरके इकट्ठा करना ।

प्रा० जोड़ना } (मं० जुड़=मिजाना)  
जोड़ना } क्रि० म० मिलाना,  
इकट्ठा करना, २ गाँटना, येगलो  
छगाना, पैवन्द लगाना, ३ गिनना,  
हिमाव करना, मीजान देना, जोड़  
देना, ४ बनाना, लगाना, बिपटा-  
ना, साटना, पीछे लगा देना ।

प्रा० जोड़ा (मं० जुड़=जोड़ना) पु०

दो धनुष्य वपश्चा दो चीज, युग्म,  
२ जूता, १ कपड़े का जोड़ा ।

प्रा० जोतना—(सं० योजन; युग्म  
=मिथाना)क्रि० सं० जुआमैछगाना,  
हल जोतना, चासना ।

प्रा० जोति } (सं० ज्योति) स्त्री०  
जोत } चमक, उजाला, प्रका-  
श, किरन, तेज, दीप्ति, रोशनी,  
दीपक का प्रकाश, २ दृष्टि, दीठ ।

प्रा० जोतिस्वरूप—(सं० ज्योतिः  
स्वरूप) गु० आप-से प्रकाशित,  
दीप्तिमान्, प्रकाशरूप, परमेश्वर  
का गुण वा विशेषण ।

प्रा० जोतिष—(सं० ज्योतिष) पु०  
ग्रह नक्षत्र आदि ज्ञान के शास्त्र ।

प्रा० जोतिषी } (सं० ज्योतिषिक)  
जोतिषी } क० पु० जोतिष  
विद्या ज्ञानेवाला, जोषी, गणक,  
दैवज्ञ, नक्षत्री ।

प्रा० जोती—स्त्री० तराजू के पलड़े  
की रस्सी ।

प्रा० जोधा—(सं० योधा) पु० छ-  
डाका, धीर, बहादुर, भट, जुझार ।

प्रा० जोना } क्रि० सं० देखना,  
जोवना } चितवना, ताकना ।

प्रा० जोवन—(सं० यौवन) पु० ज-  
वान्, तरुणार्थ ।

प्रा० जोय } (सं० जायो) स्त्री० पत्नी,  
जोरु } भार्या, स्त्री, लुगई ।

प्रा० जोरी } (सं० युग्म=मिथाना)  
जोड़ी } स्त्री० जोड़ा, युगल,  
युग्म-दो ।

सं० जोपित } (जुष=प्रसन्न करना,  
जोपिता } तृप्त करना, स्त्री० नारी,  
लुगई ।

प्रा० जोपी } (सं० ज्योतिषी) पु०  
जोसी } ज्योतिषी, ब्राह्मणों का  
प्रजाति ।

प्रा० जोहना—क्रि० सं० वाट देखना,  
वाट निहारना, अपेक्षा करना, दे-  
खना, खोजना, हुँदना ।

प्रा० जोही—गु० खोजी, हुँदवा,  
पुनर्जारी ।

प्रा० जौलें }  
जौलंग } क्रि० वि० जवतक ।

प्रा० जौ—(सं० यव) पु० जव एक  
प्रकार का अनाज ।

प्रा० जौन—(सं० यव वा यः जो)  
सर्वना० जो, जिस ।

प्रा० जौनार } (सं० जेपन) स्त्री०  
जेवनार } भोजन, भोज, खाना,  
उत्सव, अरने भाई वध अथवा मित्रों  
को खिलाना ।

सं० ज्ञात—(ज्ञा=ज्ञानना) र्म्ये० पु०  
ज्ञाना हुआ, समझा हुआ, जाना  
गया, विदित ।

सं० ज्ञाता—(ज्ञा=ज्ञानना) क० पु० ज-  
नैया, वाक्त्रि ।

सं० ज्ञाति—(ज्ञा=जानना) पु० पिता, बाप, २ सम्बन्धी, जातमाई ।

सं० ज्ञान—(ज्ञा=जानना) पु० जानना, बोध, बुद्धि, समझ, विज्ञता ।

सं० ज्ञानवान् } (ज्ञान) गु० बुद्धि-  
ज्ञानी } मान्. पण्डित, विद्वान्, विज्ञ, विचारवान् ।

सं० ज्ञानवापी—ज्ञान, वापी=शक्ती) स्त्री० एक बावली का नाम जो बनारस में विश्वेश्वर के मन्दिर में है ।

सं० ज्ञानेन्द्रिय—(ज्ञान+इन्द्रिय) स्त्री० इन्द्रियां जिनसे देखने, न सुंघने, स्वाद लेने और छूने का ज्ञान होता है अर्थात् आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा, अर्थात् शरीर पर का समझा अन्तःकरण, मन ।

सं० ज्ञापक—(ज्ञप्=जानना) क० पु० जतलानेवाला, बतलानेवाला, आह्वानेवाला ।

सं० ज्ञापन—(ज्ञप्+अन, ज्ञप्=जानना) भा० पु० मनाना, विदित करना, २ निदेश, हुक्म ।

सं० ज्ञापित } अर्थ० पु० जानाहुआ,  
ज्ञाप्य } जानने योग्य ।  
ज्ञेय }

सं० ज्या—(ज्या=पुराना होना, या बड़ा होना) स्त्री० मा, माना, २ पृष्ठी, परती, ३ पदुप का चित्रा ।

सं० ज्येष्ठ—(वृद्ध, यहाँ वृद्ध को ज्या आदेश होजाता है) गु० बड़ा प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, जेठा, पहलौठा ।

सं० ज्येष्ठा—(ज्या=बूढ़ा वा बड़ा वा पुराना होना) स्त्री० अठारहवां नक्षत्र, २ विचली अंगुली, ३ गंगा ।

सं० ज्येष्ठ—(ज्येष्ठा) पु० जेठ का महीना जिसकी पूर्णिमासी के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है ।

प्रा० ज्यों—क्रि० वि० जैसे ।

प्रा० ज्योंकात्यों—बोल० ठीक, वैसाही, ठीक २ ।

सं० ज्योतिः—(ज्यु=चमकना) भा० स्त्री० प्रोत, उजाला, प्रकाश, चमक, दीप्ति, प्रभा ।

सं० ज्योतिश्शास्त्र (ज्योतिस्+शास्त्र) पु० ग्रह नक्षत्र आदिकी चाख जानने का शास्त्र, ज्योतिष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि जानने का शास्त्र, पंचाङ्गशास्त्र ।

सं० ज्योतिर्विद्—(ज्योतिः+विद्, विद्=जानना) क० पु० ज्योतिषी, नक्षत्री ।

सं० ज्योतिष—(ज्योतिः) पु० ज्योतिष शास्त्र, ज्योतिश्शास्त्र ।

सं० ज्योत्स्ना—(ज्यु=चमकना) स्त्री० चांदनी, चन्द्रिका, चांदकी किरण ।

सं० ज्वर—(ज्वर=बीमार होना) पु०  
तप, ताप, ज्वर ।

सं० ज्वराग्नि (ज्वर+अग्नि) पु०  
तप की गरमी ।

सं० ज्वलन—(ज्वल्=जलना, चमक-  
ना) भा० स्त्री० जलन, तपन, दाह-  
न आग ।

सं० ज्वलित—(ज्वल्=चमकना) क०  
पु० प्रकाशित, जलता हुआ ।

प्रा० ज्वार—स्त्री० एक प्रकार का  
अनाज ।

सं० ज्वाला—(ज्वल्=चमकना) स्त्री०  
आंच, लौ, लपट, लूका, चमक ।

सं० ज्वालामुखी (ज्वाला=आग  
कालूरा, मुख=मुँह) स्त्री० वह जगह  
जहाँ से आग निकलती है, आग का  
पहाड़, २. देवी, अम्बिका, दुर्गा ।

भक्त

सं० भक्त—पु० वृत्तवति, २ इन्द्र, ३ शब्द  
अग्नि, ४ नैऋत्य, ५ भंकोर, ६  
मिताग, ७ स्थिति ।

सं० भक्तार—(भक्त=प्रेमाशब्द, कृ=  
करना) पु० भक्तनाइट, भक्तना  
होने का शब्द ।

प्रा० भक्तना—क्रि० अ० बह्वचना,  
चढ़वड़ाना, टेंटे करना, पढ़ना, २  
पढ़वाना, बिलपना ।

प्रा० भक्ताड़—पु० बिनपसेना वेड़ ।

प्रा० भंगा } पु० भंगा, कुरता, ऊँ  
भंगा } पर पहननेका कपड़ा ।

प्रा० भंभट—पु० पहराइट, भंगड़ा,  
रगड़ा ।

प्रा० भंभनाना—(सं० भण्टकार,  
भण्ट=पेसा शब्द, कृ=करना) क्रि०  
अ० टनडनाना, बाजना ।

प्रा० भंभरी—स्त्री० जाली, भरोसा ।

प्रा० भंडा—पु० निशान, ध्वजा, पः  
तावा, फरहरा ।

प्रा० भंय }  
भंय } स्त्री० मुर्च्छा ।

प्रा० भक्त—स्त्री० कोप, क्रोध, रिस,  
सनक, २ लहर ।

प्रा० भक्तमारना—बोल० घृषा का-  
मसरना, निरर्थक काम करना, यह  
'बोल० दूसरे की हलवाई जताने  
के लिये बोला जाता है ।

प्रा० भक्तभोरी—स्त्री० धोनाधीनी,  
भपटा भपटी, सैंबा सैंची, लूट  
पाट ।

प्रा० भक्ताभक्त—पु० भक्ताभक्त,  
जगामग, २ मुपरा, साक ।

प्रा० भक्तोरना—क्रि० स० हिलाना,  
कंपाना, भक्तोरानेना, भोका देना ।

प्रा० भक्ताड़—(सं० भंभटार) पु०  
बांधी, चौबाई, शूफान, हवा का  
बीदल ।





ट, मैना मैची, २. लपक, डहल ।  
 प्रा० भपटलेना—बोल० छीनलेना ।  
 प्रा० भपट्टा—बोल० धावा, चढ़ाव,  
 लपक, छीन, गसोट ।  
 प्रा० भपट्टामारना—बोल० भपट  
 लेना, छीनलेना ।  
 प्रा० भपाभपी—खी० उतावली, ह-  
 दबही ।  
 प्रा० भपास—खी० फूरी, कुहार,  
 भौंभी, भड़ी ।  
 प्रा० भव्वा—पु० फेंदा, लटकन,  
 गुच्छा ।  
 सं० भप—(भप=पाना) क० पु०  
 भोक्ता, खानेवाला, भोजन ।  
 प्रा० भमभम } कि० वि० ल  
 भमाभम } गानार ।  
 प्रा० भमभमाना—कि० अ० चम-  
 कना, भलकना ।  
 प्रा० भमरभमर—कि० वि० धुंद  
 धुंद से ।  
 प्रा० भर—खी० भड़ी, मेहका लगा-  
 तार बरसना, २ आंच, लूका ।  
 प्रा० भरना—(सं० भरण) पु० मो-  
 ता, चरपा, २ भरनी, कढ़ीनी,  
 कि० अ० चूना, टपकना, बहना,  
 जारी होना, २ गिरना ( जैसे फल  
 गले आदि ) ।  
 प्रा० भरोखा—पु० माली, गिरकी  
 मोला, दरीची ।

सं० भर्भरा—खी० बेरपा, पेंतुरिया ।  
 सं० भर्भरी—खी० रंगरी, डफुली ।  
 प्रा० भल—(सं० जल) धी० ज्वाला,  
 २ क्रोध ।  
 प्रा० भलक—खी० चमक, उमाला,  
 जगमगाहट ।  
 प्रा० भलकना—(सं० ज्वलन कि०  
 अ० चमकना ।  
 प्रा० भलकी—खी० चपक, दमक,  
 कटाक्ष ।  
 प्रा० भलभलाना—(सं० ज्वलन)  
 कि० अ० चमकना, भलभल कर-  
 ना, २ क्रोध करना, टीसना ।  
 प्रा० भलभलाहट—खी० चपक,  
 भलक ।  
 प्रा० भलना—कि० अ० भलकना,  
 पंखा चलाना वा हांकना ।  
 प्रा० भलाभल—( सं० ज्वलने )  
 पु० चमकीला, जगमगा ।  
 सं० भप—(भप=पारना) पु० मच्छ,  
 मकरमच्छ, बड़ीमछली, पाठीन ।  
 सं० भपकेतु—( भप = मकरमच्छ,  
 केतु=भंडा अर्थात् जिसके भंडे पर  
 मकर का चिह्न है ) पु० कामदेव ।  
 प्रा० भांकना—कि० सं० छिप-  
 कर देखना, वाकना, निहारना,  
 कमली से देखना ।



फा० करा=लौंचना, भंगी, मिश्रित,  
हलालघोर ।

प्रा० भावा-पु० तेल नापने का  
घरतन, २ मुर्गे घेद करनेका टापा ।

प्रा० भारी-(सं०भार) स्त्री० मुरारी  
जिसकी नाली लंबी होती है और  
वसके एक टोंटी लगी रहती है ।

प्रा० भारी-पु० सब, समूह ।

प्रा० भाल-स्त्री० चढ़ाटोकरा, २ तेजी,  
३ धातु के टूटे घरतन को जोड़ना ।

प्रा० भालना-क्रि० सं० ओढ़ना,  
घोटना, २ जोड़ना ।

प्रा० भालर-स्त्री० किनारा, मून या  
रेशमकी जाली ।

प्रा० भालरा-(सं०भार) पु० पानी  
का बड़ा कुंड, भरना ।

प्रा० भिभक्तना-क्रि० अ० चींकना,  
भड़कना, डर उठना ।

प्रा० भिड़कना-क्रि० सं० धपकाना,  
टराना, गुरकना, टाटना ।

प्रा० भिड़की-(भिड़कना) स्त्री०  
पपकी, पुरकी, भिड़क ।

प्रा० भित्तिभिन्नी-स्त्री० सनसनाहट,  
भनभनहाट, सनसनी जो हाथ पैर  
सो जाते हैं तब मान्य होती है ।

प्रा० भिलम-पु० लोरे की झुरती,  
कदंब, बालर ।

प्रा० भिलमिली-स्त्री० दरवाजे  
की भँभरी, भिलमिल, जाली ।

प्रा० भिली-स्त्री० पतला चपड़ा  
भिगुरी ।

प्रा० भीकना } क्रि० अ० पड़ोसावा  
भीखना } करना, रोना, हाथ  
हाथ करना । [मदली ।

प्रा० भींगा-स्त्री० एक तरह की

प्रा० भींगुर-पु० एक प्रकार की  
कीड़ा ।

प्रा० भीन } (सं०चीण) पु० पतला,  
भीना } पतिल ।

प्रा० भील-स्त्री० सेरोवर, सरवर,  
जलराय ।

प्रा० भीसी-स्त्री० फूरी, फुरार,  
भपास, भड़ी ।

प्रा० भुकना-क्रि० अ० नैवना,  
निहुरना, नीचासिर करना, ऊपना,  
मणाम करना, सलाप करना, नीचे  
लटक आना (जैसे हस्तकी डाली)  
२ क्रोध करना, प्रोथितहोना,  
चिड़ना, जैसे "भुकी शानि अरह  
अरगानी" (रामायण) ।

प्रा० भुमलाना-क्रि० चिड़चिड़ा  
होना, चिड़ना, गिसिपाना, भटपट  
क्रोधित होना, क्रोध करना,  
क्रोधित होना ।



कद मनें

कद

कद

कद

कद

ला, एक रस्सी जिसपर झूलते हैं ।

प्रा० भूमी-पु० फूरी, फुहार, भौसी,

२ इलाहाबादके सामने एक शहर

जिसको पहले मतिघानपुर कहते

थे और चंद्रवंशियोंकी राजधानीया।

प्रा० भौक-श्री० डकल; झूलने में

ढकेना, २ इवाका भौका ।

प्रा० भौकदेना-बोल० आग में

पुवालडालना, जलाना, जलादेना,

२ घुल फेंकना वा डालना, ३ फेंक

देना, किसीको नोतापमें डालना ।

प्रा० भौकना-क्रि० स० डालना,

फेंकना, पुसेदना, चूदे में डूबना

डालना ।

प्रा० भौटा-(मं० मय) पु० सिरके

विक्कले बाल, चोटी, २ दिडोले का

भौटा ।

प्रा० भौकादेना-बोल० किसीका

सिर धपरा सिर के बाल पर द

कर लोरमें दिनाना ।

प्रा० भौपड़ा-पु० } मरी, कुी

भौपड़ी-श्री० } मदिवा ।

प्रा० भौरा-पु० गला का गुच्छा ।

प्रा० भौका-पु० भौरी, इवा की

भौक, दोहर, देस ।

प्रा० भौटा } (मं० उच्छिष्ट) गु०

भूटा } माने के दंडे पड़ा

हुना जाना ।

प्रा० भौला-पु० अदंग, लकवा,

२ पैला ।

प्रा० भौली-श्री० कोपली पैली ।

प्रा० भौरा-पु० गेहूं परण, सांवला ।

प्रा० भौड़-पु० भगदा, बलेड़ा, टंटा ।

मं० ट-पु० वामन, शब्द; भवि, व

न्द्रमा, गान, रुद्र, भंकरा, हृदावस्था ।

प्रा० टंकना-क्रि० भ० सिपागाना,

लगाया जाना, लटकना, लगना ।

प्रा० टंगना-क्रि० भ० लटकना ।

प्रा० टंगड़ा } ( टङ्गा, टकि=बांध

टंगरी } ना ) श्री० पिडली ।

गोद, पैर का एक भाग ।

प्रा० टंटा-पु० भगदा, लड़ाई, बलेड़ा,

रगड़ा ।

प्रा० टक-श्री० स्वभाव, रताक, दृष्टि ।

प्रा० टकवांधना-बोल० ताकना,

पूरना ।

प्रा० टकलगाना-बोल० वाट

देखना ।

प्रा० टकटकी-श्री०, गकर, पकट ।

प्रा० टकटकीवांधना-बोल० ता-

कना, पूरना, एक टक देखना ।

प्रा० टकराना-(टकर) क्रि० स०

-टकर सिजाना, टकर देना ।

प्रा० टकताल-(मं० टङ्गाला,

टङ्ग=प्रिक, गाला=मदह) श्री०

मुद्रानिय, वह जगह जहाँ सिद्धा  
नैवार होता है ।

प्रा० टकसालकासोदा—बोल०  
शिक्षा अथवा उपदेश में बिगड़ा  
हुआ ।

प्रा० टकसालचढ़ना—बोल० शिक्षा  
पाना, उपदेशपाना, मित्रपानाना ।

प्रा० टकमानवाह—भं० अनपद,  
गुणद, अनपद, ० गोरा, गगण ।

प्रा० टका—( भं० टक=मित्र ) पु०  
दो पैसा ।

प्रा० टकुआ } ( भं० तहु, कृत्  
टकुआ } भाटना ) पु० तह-  
ना, तहुका, किर्ती ।

प्रा० टकोर—श्री० दोल का गहर,  
धुनि, धारा, नुपहार ।

प्रा० टकर—श्री० बहा, दोकर, केना-  
केना, बेहा, देहेल, भीर, देम ।

प्रा० टकरमाना—बोल० दोहर  
माना, हिमी भीत में भिड़ताना,  
दुःखमें गिरना, टकरमानउठाना ।

प्रा० टकरनाम्ना—बोल० बहा ल-  
माना, दोहर माना, देहेलना,  
केलना, गहरना, देम मानना ।

प्रा० टकुना—पु० देहना, गुल्फ, कुटी ।

भं० टकु—( श्री०=कंधना ) श्री० टंड,  
बागमोहा दोल, टंडही, डेरी,  
कनका टाटने का भीतर, ३ कल-  
वार, टंडेय, ३ अहंकार, दमुराणा,  
० सुगरी ।

सं० टंककशाला—( टंक=टंकशा,  
शाला=मकान ) श्री० टंकशाल,  
कपड़े बनाने का घर ।

सं० टंक—पु० रानिप्र, संता, सुरपा,  
फरहा, टांकी, तनवारका मियान ।

सं० टंकार—' टम्=पेसा शब्द, कृ=  
करना ) पु० धनुष के निक्षेप श-  
ब्द, २ अचंभा, ३ नामनरी ।

प्रा० टटका—पु० नया, ताजा, तुंग  
का । [येरा, येद ।

प्रा० टटड़ी—श्री० चांदी, टांड, २

प्रा० टटगंजिया—पु० थोड़ी धनी  
बाना, दिवालिया । [थोड़ी ।

प्रा० टटवानी—( टटव ) श्री० छोटी

प्रा० टटेलना—क्रि० स० दोहा-  
दोई करना, दोना, छूने में दूंदना  
( जैसे अंग्रे छोटा दूंदने हैं ) । [भांग ।

प्रा० टटूर—पु० बड़ी टट्टी, टट्टा,

प्रा० टट्टी—श्री० टटिया, जट्टे का  
बना हुआ छोटा टट्टर, भोट, आड़,  
( टट्टी समगम की श्री० दूम  
आदि की भी बनती है, 'जकार'  
की टट्टी की छोटा बंदना=दि। के  
करना, पान में रेंडना ।

प्रा० टट्ट—पु० टांगन, लड़ाई पोड़ा ।

प्रा० टटकना—पु० बढ़ना, गिरा  
डना, घुना ।

प्रा० टटका—पु० बर्तन का पैर,  
२ बड़े कल का मिश्रण ।

प्रा० टपना—क्रि० स० नाचना, फाँदना, कुटना ।

प्रा० टपाना—क्रि० म० नैयवाना, कुदवाना ।

प्रा० टप्पा—पु० टाक का घर, टाकराना, २ एक प्रकार का गीत अथवा रागिणी, ३ गेद अथवा गोली का उछालना, ४ कुद, उछल ।

प्रा० टप्पाखाना—बोल० गोली अथवा गेद का उछलना दूमाना ।

प्रा० टटना } ( सं० टल=व्याकुल  
टलना } होना वा घबराना )

क्रि० अ० टटना, सरकना, चंचल होना, चनेजाना, दबकरटना, लौट पौट जाना, क्षम्यव्यस्त होना ।

प्रा० टर्ना—पु० पगरा, दुष्ट, २ बक्री, ३ जोरावर ।

प्रा० टर्नाना—क्रि० स० टेंटे करना, चक्कर करना, बिड़बिड़ाना ।

सं० टलन—( टल=घबराना ) भा० पु० चंचल होना, शोक, उलझ पलट ।

प्रा० टसक—स्त्री० टीस, पीड़ा, कहराना ।

प्रा० टसकना—क्रि० अ० हिलना, चलना, सरकना, उरसना, २ कराना । [ डाली ।

प्रा० टहनी—स्त्री० डाली, छोटी

प्रा० टहल } स्त्री० घर का काम  
टहलटकोर } काम, सेवा, नौकरी,

दास का काम । [ सेवा करना ।

प्रा० टहलटकोर करना—बोल०

प्रा० टहलना—क्रि० अ० फिरना, चलना, हवा खानेकी वाहरजाना ।

प्रा० टहलनी } ( टहल ) स्त्री० घर  
टहलवी } का काम । काम

करवाना, टामी ।

प्रा० टहलुवा ( टहन ) पु० घर का काम काम करने वाला, दास, सेवक, नौकर, चाकर ।

प्रा० टांक—( सं० टङ्क ) स्त्री० चार भागे वा नोल, २ एक तरह की सुई, ३ सीवन ।

प्रा० टांकना—क्रि० स० सीना, टांका मारना, तुरपना ।

प्रा० टांका—पु० सीवन, टांक, जोड़ना ।

प्रा० टांके लगाना—बोल० सीना, जोड़ना ।

प्रा० टांकी—( सं० टङ्क ) स्त्री० रुखानी, छिनी, २ नासूर, फोड़ा, सर्पिले का चौकोर टुकड़ा जो उसको अच्छा बुरा देखने के लिये काटा जाता है ।

प्रा० टांग—( सं० टङ्का ) स्त्री० टंगड़ी, पिडली, गोद ।

प्रा० टांगन—पु० पहाड़ी पोंडे की एकजात ।



प्रा० टांगना-क्रि० स० लटकाना ।

प्रा० टांट-स्त्री० चांदी, दडदी, सिर  
का बिचला भाग ।

प्रा० टांडा-पु० जेप, बननारे की  
चीज वस्तु ।

अं० टाउनहाल=सभास्थान, मज-  
निस, टाकार ।

प्रा० टाट-पु० मन का कपड़ा, म-  
नाइ । [ आइ ।

प्रा० टाट्टी-स्त्री० दडी, दडिया, भाप,

प्रा० टाप-स्त्री० घोड़े के अगले पैर  
का आइट, चलने में घोड़े के खुद  
का शब्द, = मड़ली पकड़ने के लि-  
ये बान का बना हुआ टांवा ।

प्रा० टापू-पु० पानी का वह टुकड़ा  
जो बागों और पानी में बिरा  
हो, उपदीप ।

प्रा० टारना } टारना ) क०  
टालना } सं० हटाना, मर-  
ना, दूरकरना, २ बहाना करना,  
देरी डरना, दीन करना ।

प्रा० टालटोल } बोल० बहाना,  
टालमटोल } धन, दीनडाढ़,  
बकामंद, दीन युमाव, लपेट  
सपेट, बनावट ।

प्रा० टाल-पु० बहाना, टाल टाल,  
टालमटोल, = स्त्री० देर ( अनाज  
का लड्डो आदि का ) मूदा, अंका-

र, अटाल, मूखी घास का गंज ।

प्रा० टाला-पु० टालमटोल, धोल  
युमाव, बनावट, लपेट सपेट, २ देर,  
मूदा, गंज, टाल ।

प्रा० टालावाला बताना—बोल०  
टालना, धोलयुमाव करना, टालम-  
टाल बताना, टालटोल करना ।

प्रा० टिकटिकी—स्त्री० छिपकी,  
छिपकली ।

प्रा० टिकटी-स्त्री० तिपाई, निपुंटी ।

प्रा० टिकना—क्रि० अ० रहना,  
ठहरना, बसना, मुकामकरना ।

प्रा० टिकली—पु० बेंदी, बिन्दु,  
२ पनली रोटी । [ ठहरना ।

प्रा० टिकाना—क्रि० स० रखना,

प्रा० टिकिया—स्त्री० कोपने की  
गोल गोल टिकली, २ पनली और  
आदी रोटी ।

प्रा० टिकड़-पु० मोटी रोटी ।

प्रा० टिरीहरी—( सं० टिट्टिम ) स्त्री०  
एक पक्षी का नाम ।

सं० टिट्टिम—( टिट्टि ऐना शब्द,  
माउ=बोलना ) पु० टिरीहरी, एक  
पक्षी का नाम ।

प्रा० टिड़ा—पु० फनगा, पनगा ।

प्रा० टिड़ी-स्त्री० गलब, अनाज को  
नाग करनेवाला कीड़ा ।

प्रा० टिपन ( टिप=फेंकना ) स्त्री०  
मं० टिपनी } टीका, विवरण,

व्याख्या, अर्थ, टिपनी, शरह ।  
 प्रा० टिहरा-पु० पुरा, पुरवा, छोटी  
 बस्ती ।

प्रा० टीक-स्त्री० गले का एक गहरा ।

प्रा० टीका-( टीक=ताना ) स्त्री०  
 शरह, टिपनी, विवरण, कठिन  
 शब्दों के अर्थ और गूढ़ अभिप्राय को  
 आसानी तरह से समझाना ।

प्रा० टीका-( सं० तिलक ) पु०  
 तिलक, छलाट पर चन्दन केशर  
 आदिका चिह्न, २ त्रिषो के ललाट  
 पर पहनने का एक सुवर्ण का गहना,  
 ३ व्यास में दुलहिन के घर से जो भेट  
 जाती है ४ गोटी का खुदवाना,  
 छाना ।

प्रा० टीकाभेजना-बोल० व्यास के  
 शुरुआत में दुलहिन के घर से दुलहे  
 के घर में बसराया जातिपन आदि  
 भेट भेजना ।

प्रा० टीकालेना-बोल० व्यास की  
 भेट को लेना या प्ररण करना या  
 स्वीकार करना ।

प्रा० टीडी-स्त्री० टिडी, मसम ।

प्रा० टीप-स्त्री० टिपनी, चोरने का  
 समस्त एक निमेष में छल और चाल  
 के साथों के दमते कमनगर अनाज  
 आदि निम्न देने को हिसा देने है,  
 २ काने में राग को ऊँची लेजाना ।

३ जल्दी में कोई बात छिरालेना  
 या अटका लेना या टांक लेना,  
 ४ दबाव, दबावट । [पहाड़ी ।

प्रा० टीला-पु० मेड़, ऊँची परती,

प्रा० टीस-स्त्री० पीड़ा, टपक, व्य-  
 था, थकन । [रोना ।

प्रा० टीसमारना-बोल० पीड़ा

प्रा० टुक-( सं० स्तोत्र, पुत्र=मसम  
 होना ) पु० थोड़ा, कम, अलग, ज-  
 रा, जरासा ।

प्रा० टुकड़ा } ( सं० स्तोत्र, पुत्र=  
 टुक } मसम होना ) पु०  
 खंड, भाग, हिस्सा, चिट, भंश,  
 परमाणु ।

प्रा० टुच्चा-पु० पोष, ओढ़ा, पेहना, धारी ।

प्रा० टुंड-पु० टुंडा, काटा हुआ अंग ।

प्रा० टुंडी } ( सं० तुन्दि, तुद=पीड़ा  
 टुंडी } देना ) स्त्री० नाभि, सोदी,  
 पु० बिन राखी ।

प्रा० टुंडियांकमना } बोल० पीठ  
 टुंडियांचदाना } पीछे हाथों  
 टुंडियांचांधना } से बांधना,  
 मुमरे बांधना ।

प्रा० टुमकना-प्रि० अ० रोना,  
 चिनगना, मुमकना ।

प्रा० टुट-( टुटना, सं० कुटि ) स्त्री०  
 टुटन, टुटन, भंजन, २ टीटा, बर्फी,  
 शनि, मुहमान, ३ कोई बात जो

पुष्कर के लिये में धन से लूट जाते हैं और हाशिये पर पीछे से लिखी जाती हैं ।

प्रा० टूटना—( सं० प्रोटन, टुट=काटना ) क्रि० अ० टुकड़ा होना, फूटना, फटना, २ चढ़ना, चढ़ाई करना, भाग करना ।

प्रा० टूटा—( टूटना ) गु० टूटा हुआ, टूटी हुआ, पु० टोटा, कमी, हानि, गुरुमान, घटी ।

प्रा० टूटा-टूटा—बोना० टुकड़े २ संस्तर ।

प्रा० टूमी—बो० कमी, कौपन ।

प्रा० टूट-पु० क्लीप्त का फल, कर्षणका फल, दण्डका फल, आंग की कुट्टी ।

प्रा० टूट्वा—पु० मांवी, नरेदी, नरी ।

प्रा० टूट्टे—पु० बेदे, बिचड़िताइट ।

प्रा० टूक—म० श्री० धूनी, टिहार ।  
महार, अवनय, टेंहन, मरमा, रोह, २ बग, मनित्र, इट, संकल्प ।

प्रा० टूकी—गु० बनिशगलक, धान, का पूरा दमिचला, बानका घनी ।

प्रा० टूकग—पु० टीजा, कनीधारी ।

प्रा० टूटा—गु० बट, बांका, निरखा, चट्टा, रेवा ।

प्रा० टूटाकम्ना—बोना० झुझना, बांका करना, निरखा करना ।

प्रा० टूटावेडा—बोना० टेवा, बांका, बटित ।

प्रा० टेम्-श्री० बत्तीकी जलन वा फूल ।

प्रा० टेम्—गु० लय, स्वर, तान, ताल, गग, २ पुकार, हाँस, फर्हादि पुकार ।

प्रा० टेम्ना—क्रि० म० पुकारना, लछ-कारना, बुलाना, हाँकमारना, अलापना ।

प्रा० टेव श्री० चान चलन, रीति, बात, सम्भाव, आदत, चाट, चस्का ।

प्रा० टेवकी—श्री० धूनी, संभा, टेक, टेहन ।

प्रा० टेवना } क्रि० म० नीला क-  
टेना } रना, नांवा करना,  
बाइदेना, धार लगाना, पैनाना ।

प्रा० टेवा—पु० जम्मापत्री, २ टेव, सम्भाव, चाट, चस्का ।

प्रा० टेम्—पु० गलाश का फूल, टेम्, २ एक महार का लेन ।

प्रा० टेहला—पु० व्याइकी एकगीनि ।

प्रा० टेवाटेइ—श्री० टोलेना, देव ।

प्रा० टोंटा—पु० गलाश, मुरी, बाँध की गाँठ, २ कारतूस, गु० त्रिपटा हाथ टूटा हुआ हो ।

प्रा० टोंटी—बो० नजी, नज ।

प्रा० टोक—( टोकना ) श्री० रोक, बहार, यटहाय, २ बुरीरशि, नम्र, दीड ।

प्रा० टोकना—क्रि० म० रोकना, २ ठूँकना, २ हाँस करना, ४

नजर से देखना, दीड लगाना ।  
 प्रा० टोकरा—पु० टला, सांचा, बही,  
 टोकरी, छट्वा, पलड़ा ।  
 प्रा० टोकरी—स्त्री० टलिया, पलड़ी,  
 सचिया ।  
 प्रा० टोटका—पु० मंत्र, यंत्र, गूँडा,  
 ताबीज, टोना, मोहन, लटका,  
 वशीकरण ।  
 प्रा० टोटा—पु० घटी, घाटा, कमी,  
 तुकसान, टोटा, कारनूम ।  
 प्रा० टोड़ी—स्त्री० एकरागिणीकानाम ।  
 प्रा० टोना—पु० मोहन, टोटका, जादू,  
 सेहर, लटका, क्रि० स० टटोलना ।  
 प्रा० टोनाटानी } बोल० मन्त्र, यंत्र,  
 टोनाटमन } टोना, टोटका ।  
 प्रा० टोप—पु० षण्डी टोपी, २ टोका,  
 सीबन ।  
 प्रा० टोपा—पु० टोप, शिरका टकना ।  
 प्रा० टोपी—स्त्री० छोट्टा टोप, शिर  
 प्रा० टोल—पु० } योक, झुण्ड,  
 टोली—स्त्री० } जत्था, मभा, टट्ट ।  
 प्रा० टोला—पु० मरवा, खंड, शहर  
 का एक हिस्सा, टोला ।  
 अ० ट्यम्परेन्स—मुसापटी=ठग-  
 रेन्स=पवित्र, पररेतगार, मुसाप-  
 टी=समूह, जपान्न । [विश्वास ।  
 अ० टूट्टी—विश्वस्त, मुश्कनमिद, जाव  
 अ० टूट्टी—होगिश, दयोग, परिधम,  
 चेष्टा ।

अ० ट्रेडप्रेसोसियेशन—सौदगरो  
 की कमेठी ।  
 प्रा० ट्रेन्सलेटर—पु० मुतरजिम्मा,  
 अनुवादक, उल्पा करनेवाला ।  
 ठ  
 सं० ठ—पु० शिव, २ चंद्रविम्ब, ३  
 मंडल, ४ शून्य, ५ मर्यादुनि, ६  
 पूर्ति, ७ तनेसमूह । [शब्द ।  
 प्रा० ठकठक—पु० कठिन काम, २  
 प्रा० ठकठकाना—क्रि० स० ठोक्-  
 ना, खट २ करना, कूटना, मारना ।  
 प्रा० ठकुर—( सं० ठकुर ) पु० ठाकुर  
 शब्द को देखो ।  
 प्रा० ठकुराई—( सं० ठकुरा ) भा०  
 स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, स्वाधीन,  
 बढ़पन ।  
 प्रा० ठग—पु० ठगनेवाला, चट्टमार,  
 चोर, दगाबाज, बहकानेवाला,  
 झूठी, कपटी ।  
 प्रा० ठगवाजी } स्त्री० बोल०  
 ठगविद्या } ठगाई, कपट,  
 झल, माथा ।  
 प्रा० ठगलाना—बोल० ठगना, झलना,  
 धोखा देना, बहका के लेनेना ।  
 प्रा० ठगलेना—बोल० झलना, धोखा  
 देना, झल से लेना ।  
 प्रा० ठगई—( ठग ) भा० स्त्री० ठगाई,  
 ठग का काम, झल, धोखा ।

प्रा० ठगना-क्रि० स० छलना, भु-  
लावादेना, धोखादेना, बहकाना ।

प्रा० ठगाई-(ठग)भा० स्त्री० ठगाई, छ-  
ल, धोखा ।

प्रा० ठगौरी-(ठग) स्त्री० ठगाई,  
भुलावा, माया, छल, धोखा ।

प्रा० ठट्टा पु० भीड़भाड़, झुण्ड,  
ठउ } मंडली, समूह ।

प्रा० ठट्टा-पु० हँसी, ठठोली, खिल्ली,  
चुहल ।

प्रा० ठट्टाकरना-बोल० हँसीकरना,  
ठठोलीकरना, हँसना, उपहासकरना,  
मसखरापन ।

प्रा० ठट्टेवाज्ज-बोल० गु० ठठोल,  
हँसोड़, रसिक, मसखरा ।

प्रा० ठट्टेवाजी-बोल० स्त्री० ठट्टा  
करना, हँसोड़पन, खेल, खिल्ली ।

प्रा० ठट्टामारना-बोल० हँसीकरना  
ठठोलीकरना, हँसना, उपहास  
करना ।

प्रा० ठठरी-स्त्री० ठट्टा, ठाठ, २ र-  
थी, ३ ढांचा, पांजर, अस्त्रि, पंजर,  
हथिथो का ढांचा, बहुत दुबला  
मनुष्य ।

प्रा० ठठकना-क्रि० अ० रुकना,  
ठहरना, हटना, खड़ा, रहजाना, अ-  
चंभे में खड़ा रहजाना, झुझकना,  
हिचकना, चिड़कना ।

प्रा० ठठाना-क्रि० स० मारना,  
पीटना, कूटना, २ दुस्व में अपना  
सिर पीटना, ३ अपने को दुस्व में  
डालना ।

प्रा० ठठेरा-पु० कसेरा, मर्तिषा ।

प्रा० ठठोर } गु० हँसोड़, रसिक,  
ठठोल } ठट्टेवाज्ज ।

प्रा० ठठोली-स्त्री० ठट्टा, हँसी, खिल्ली,  
हंसी । [ शीतकाल ।

प्रा० ठठट्ट-स्त्री० जाड़ा, सर्दी, शीत,

प्रा० ठठट्टक-स्त्री० ठंडाई, शीतलता ।

प्रा० ठठट्टा-गु० शीतल, सर्द ।

प्रा० कलेजाठठट्टाकरना-बोल०  
प्रसन्न होना, अपने मित्र अथवा वे-  
दा आदिको देखने से आनंद में हो-  
ना, २ बदला छेने से मन प्रसन्न  
होना ।

प्रा० ठठट्टा करना-बोल० शीतल  
करना, सर्द करना, २ बुझाना, बु-  
ताना ( जैसे आग ) ३ शांत करना  
स्थिर करना, धीरज देना, दिलास  
देना ।

प्रा० ठठट्टापरना-बोल० कमहोना  
घटना ( जैसे क्रोध, पीरूप, चंचला  
हट का ) ।

प्रा० ठठट्टाहोना-बोल० सर्द होना  
शीतल होना, २ बुझना, बुतना  
३ शांत होना, धीरज परना, स्थिर  
होना ।

- उपद्राई—स्त्री० वंदी औपध,  
( जैसे सौक कामनी आदि ) २  
भंग, ३ सदी, शीतलता ।
- प्रा० उपद्राईसांसभरना—बोल० हाथ  
मारना, आह भरना, लंबी सांस  
लेना ।
- प्रा० उनकना—क्रि० अ० टीसना,  
टीस मारना, शिर में दर्द होना, २  
भनकना, भनकाना, उनउताना ।
- प्रा० उनउताना—क्रि० अ० भन-  
काना, भनकना, उनकना ।
- प्रा० उनाक—पु० भनकार, भनभ-  
नाहट, उनकार ।
- प्रा० उप्पा—पु० छापने की चीज,  
छापा, मोहर ।
- प्रा० उरक } पु० खरिया, घुरी ।  
उरर }
- प्रा० उरिया—पु० एक उररका मिट्टी  
का टुकड़ा ।
- प्रा० उवनि—स्त्री० चाल ।
- प्रा० उसक—स्त्री० भड़क, झेलपन,  
अहंकार, प्रमथाम ।
- प्रा० उस्सा—पु० सांचा, डांचा, २  
अहंकार, घमंड ।
- प्रा० उहरना—( सं० छा=उहरना )  
क्रि० अ० ठिकना, रहना, बसना,  
सड़ा रहना, रुकना, अटकना,  
उतरना, टराकरना, ठिकाना होना,  
निर्णय होना, निश्चित होना, सिद्ध

होना, पक्का होना, दृढ़ होना,  
निपटना ।

प्रा० उहराना—( उहरना ) क्रि० सं०  
ठिकाना, रखना, सड़ा करना,  
रुकना, अटकना, उतरना, टरा-  
करना, निर्णय करना, सिद्ध करना,  
ठिकाना करना, पक्का करना, निप-  
टाना, दृढ़ करना, निश्चित करना,  
नियन करना, ठानना, विचारना,  
लगाना ।

प्रा० उहराव—( उहरना ) भा० पु०  
ठिकाव, स्थापन, निर्णय, निश्चय ।

प्रा० ठां } ( सं० स्थान ) पु० स्त्री०  
ठांव } ठौर, जगह, ठिकाना,  
ठाम } स्थान, स्थल ।

प्रा० ठांसना } क्रि० सं० दवा  
ठासना } दवा के भरना, घुसे-  
रना, दूसना, दवाना ।

प्रा० ठाकुर—( सं० ठाकुर देवता की  
मूर्ति और प्रतिष्ठित पृथ्वी ) पु०  
देवता, ईश्वर, २ देवता की मूर्ति,  
३ स्वामी, मालिक, प्रधान, प्रभु,  
नाथ, नायक, मुखिया ( राजपूतों  
में ) ४ जमीनदार, धनी ।

प्रा० ठाकुरद्वारा—( सं० ठाकुरद्वार )  
पु० मन्दिर, देवालय, देवस्थान ।

प्रा० ठाकुरवाड़ी—( सं० ठाकुरवादी )  
स्त्री० मन्दिर, देवालय, ठाकुरद्वारा ।

प्रा० ठाठ—पु० ठठरी, २ तैयारी,



० तापक - (तप् + अक, कः पु० दुः-  
खदोषी, दुःखद, दुःसदाता ।

सं० तापित - (ताप् + इत) क्त्वं पु०  
दुःखित, तापयुक्त । तिहाल ।

प्रा० तापतिस्त्री - स्त्री० ग्रीष्म, पिलरी,

प्रा० तापना - ( सं० तापन, तप् = त-  
पाना ) क्त्वं अ० गर्मना, देह से-  
कना, शरीर गर्म करना, जाड़े में  
आग के पास बैठकर देह को गर्मना,  
घाम खाना ।

सं० तापस - (तपस् = तप) पु० तपसी,  
तपस्वी, तप करनेवाला, योगी ।

प्रा० तामड़ा - (सं० ताम्र) पु० ताँबे  
जैसे रंग का एक हलके मोल का रत्न ।

सं० तामरस - (तामर = पानी, तम् =  
सोना) पु० बमल, कैवल, २ ताँबा  
३ सोना ।

सं० तामस - ( तमस् = तमोगुण, वा  
अंधेरा ) गु० तमोगुणी, तामसी,  
क्रोध मोह आदि में लगा हुआ,  
पु० अंधेरा, २ तमोगुण, ३ दुष्ट, ४  
अहंकार, क्रोध मोह आदि ।

प्रा० तामसी - ( सं० तामसिक ) गु०  
क्रोध, तमोगुणी, रिस करनेवाला ।

प्रा० तामेश्वर - ( सं० ताम्रेश्वर,  
ताम्र + ईश्वर ) पु० ताँबे की राम,  
ताम्र, बेग ।

सं० ताम्बूल - ( तम् = चाहना ) पु०  
पान, नागरचेत का पत्ता ।

सं० ताम्बूली } पु० तमोली, पान  
ताम्बूलिक } बेचनेवाला ।

सं० ताम्र - ( तम् = चाहना ) पु० ताँबा,  
२ लालरंग ।

सं० ताम्रकार } क० पु० टवेरा, तां-  
ताम्रकुट्टक } वा पीटनेवाला ।

फ्रा० तार - पु० लोहे आदि धातु का  
गिचा हुआ तागा जो सितार आदि  
बाजों में लगाया जाता है, -तार  
बाँधना, बोल० किसी काम को  
लगातार जारी रखना, -तार दू-  
टना, बोल० अलग हो जाना, छूट  
जाना, किसी काम का खंड हो जाना ।

सं० तारक - ( तृ = पार करना, वा व-  
चाना ) क० पु० बचानेवाला,  
रक्षक, उद्धार करनेवाला, पु०  
एक शक्त का नाम, २ एक प्रकार  
का मन्त्र, ३ तारा, सितारा, नक्षत्र,  
४ आँख का तारा, पुतली, पनाबिक ।

सं० तारण - ( तृ = पार करना, वचाना )  
गु० पार करनेवाला, पु० उद्धार,  
पार करना, २ घर्नई, वेड़ा ।

सं० तारणतरण - ( तृ = पार करना )  
गु० पार करनेवाला, और पार  
होनेवाला ।

प्रा० तारणा } ( सं० तारण ) क्त्वं  
तारना } स०





सं० तापक-(तप्+कृ, क० पु० दुः-  
खदायी, दुःखद, दुःखदाता ।

सं० तापित-(ताप्+इत्, म्मं० पु०  
दुःखित, तापयुक्त । तिहाल ।

शा० तापतिली-स्त्री० शीता, पित्तही,

शा० तापना-(सं० तापन, तप्=त-  
पाना) क्ति० अ० गर्भिणा, देह से-  
रचना, शरीर गर्म करना, जाड़े में  
आग के पास बैठकर देह को गर्मना,  
घाम रगाना ।

सं० तापस-(तपस्=तप) पु० तपस्वी,  
तप करानेवाला, योगी ।

प्रा० तामड़ा-(सं० ताम्र) पु० ताँबे  
जैसे रंग का एक हलके धोलकार रंग ।

सं० ताम्रस-(ताम्र=तानी, सम्=  
सोना) पु० वमज, कैवल, २ ताँबा  
३ सोना ।

सं० तामस-(तमस्=तमोगुण, वा  
अंधेरा) गु० तमोगुणी, तामसी,  
क्रोध मोह आदि में लगा हुआ,  
पु० अंधेरा, २ तमोगुण, ३ दुष्ट, ४  
अहंकार, क्रोध मोह आदि ।

प्रा० तामसी-(सं० तामसिक) गु०  
क्रोधी, तमोगुणी, रिम करनेवाला ।

प्रा० तामेश्वर-(सं० ताम्रेश्वर,  
ताम्र+ईश्वर) पु० ताँबे की रान,  
ताम्र, वंग ।

सं० ताम्बूल-(तम्=चाहना) पु०  
पान, नागरेवेल का पत्ता ।

सं० ताम्बूली } पु० तमोली, पान  
ताम्बूलिक } बेचनेवाला ।

सं० ताम्र-(तम्=चाहना) पु० ताँबा,  
२ लालरंग ।

सं० ताम्रकार } क० पु० टोरा, ताँ-  
ताम्रकुट्टक } बापीटनेवाला ।

फ्रा० तार-पु० लोहे आदि धातु का  
भिचा हुआ तारा जो सितार आदि  
बाजों में लगाया जाता है, -तार  
बाँचना, बोल० किसी काम की  
लगातार जारी रखना, -तार दु-  
टना, बोल० अलग होना, छूट  
नाना, किसी काम का बंध हो जाना ।

सं० तारक-(तृ=पारकरना, वा व-  
चाना) क० पु० बचानेवाला,  
रक्षक, उद्धार करनेवाला, पु०  
एक राक्षस का नाम, २ एक प्रकार  
का मन्त्र, ३ तारा, सिंहास, नक्षत्र,  
४ आत्मका तारा, पुत्रलोक, प्रभाविक ।

सं० तारण-(तृ=पारकरना, वचाना)  
गु० पार करनेवाला, पु० उद्धार,  
पार करना, २ यत्न, बेड़ा ।

सं० तारणतरण-(तृ=पार करना)  
गु० पार करनेवाला, और पार  
होनेवाला ।

प्रा० तारणा } (सं० तारण) क्ति०  
तारना } सं० पार करना, व-

धान, उद्धारकरना, मुक्ति देना,  
मुक्त करना ।

सं० तारुतम्य - भा० पु० फर्क, अंतर,  
दली बदली ।

प्रा० तारुतोद पु० कारुतोवी, वृत्तानि-  
क जगत्-देहा काय गमेहारी ।

सं० तारु ( तृ-पाठ होना, अर्थात्  
तारु ) पु० तारु, गिता, - भाषा  
की पुस्तक, १) शक्तिमान की श्रा  
भीष्ट भगवद्गीता, २) सुहृत्पति की  
श्री, ३) देवी का नाम ।

प्रा० तारुगिनना सत - तारु  
भावा, नाद न पद ।

सं० तारु - पु० तारु, भा - तारु  
तारुतम्य ।

सं० तारुकि - ( तारु ) क० पु० तारु  
कि, तारुगिनी ।

सं० तारु ( तारु-तारु, वा तारु-  
तारु ) पु० तारुतम्य नाम, तारु,  
तारु, २) तारु वदने का शब्द, ३)  
तारुतम्य, ४) तारु, तारुतम्य  
तारुतम्य, ५) तारुतम्य, ६) तारुतम्य  
तारुतम्य, ७) तारुतम्य, ८) तारुतम्य

सं० तारुतम्य ( तारु ) क० पु०  
तारुतम्य ( तारु ) क० पु०

सं० तारुतम्य ( तारु ) क० पु०  
तारुतम्य ( तारु ) क० पु०

सं० तारुतम्य ( तारु ) क० पु०  
तारुतम्य ( तारु ) क० पु०

वादकश ।

सं० तालव्य - ( तालु ) पु० जो तालु  
से बोले जायें, जैसे ई ई च छ म  
भ अ य श ।

प्रा० ताला - ( सं० ताल ) पु० बन्द  
करने की कल, कुनक, कुफला ।

सं० तालांक - ( ताल + अंक ) पु०  
वलय, २) महादेव, ३) नाचने  
वाला, ४) ताल का लक्षण, ५)  
ताल, ६) ताल ।

प्रा० ताली ( सं० ताल ) श्रीः कुंती,  
१) ताल, २) ताल, ३) एक म-  
४) ताल, ५) ताल

प्रा० तालीगुरुतम्यवजाना -  
तारुतम्य, तारुतम्य, तारुतम्य, तारुतम्य  
तारुतम्य, तारुतम्य, तारुतम्य, तारुतम्य

प्रा० तालीवजाना, तारुतम्य, तारुतम्य  
तारुतम्य, तारुतम्य, तारुतम्य, तारुतम्य  
तारुतम्य, तारुतम्य, तारुतम्य, तारुतम्य

सं० तालु - ( तारु-पाठ होना अर्थात्  
तारुतम्य ( तारुतम्य ) पु०

सं० तालु ( तारु-पाठ होना अर्थात्  
तारुतम्य ( तारुतम्य ) पु०

सं० तालु ( तारु-पाठ होना अर्थात्  
तारुतम्य ( तारुतम्य ) पु०

सं० तालु ( तारु-पाठ होना अर्थात्  
तारुतम्य ( तारुतम्य ) पु०

हृदयही ।

प्रा० तावदेना—बोल० परोड़ना, ब-  
टना, ऐठना, २ मोड़ो पर हाथ फे-  
रना, मोड़ो सँवारना, ३ गर्भ कर-  
ना ( जैसे लोहे को ) ।

प्रा० तावपेचखाना—बोल० गर्भशो-  
न, क्रोधित होना, गुस्सा होना ।

सं० तावत्—( तव=वह ) कि० वि०  
उतना, इतना, यहाँ तक, यहाँ लो,  
तब तक ।

प्रा० तावना—सं० तपन, वा तापन,  
( तप=तपाना ) कि० सं० गर्भ करना,  
गर्भाना, २ ताव देना, परखना,  
कसना, जाँचना, ३ ऐठना, परोड़ना ।

प्रा० ताश—पु० लप्ता, बादला, बू-  
ट्टदार पट्ट ।

प्रा० तास—पु० गंजफा, २ लप्ता,  
बादला, बूट्टदार पट्ट ।

प्रा० तामु—( सं० तस्य ) सर्वना० उ-  
सका, तिसका ।

प्रा० तासो—( सं० तस्मात् ) सर्वना० उ-  
ससे, तिससे ।

प्रा० ताहि—( सं० तम् ) सर्वना० उस  
को, उससे, तिसको तिससे ।

प्रा० तिकोनिया—( सं० त्रिकोण )  
गु० त्रिकोण ।

सं० तिक्र—( तिक्र=तीखाकरना ) गु०  
तीखा, कटुका ।

प्रा० तिगुन—( सं० त्रिगुण, त्रि=तीन,

गुण=गुना ) गु० तिगुना, तीन  
गुना, तिहरा ।

सं० तिग्म—( तिग्म=तम ) र्म=पु०  
तीक्ष्ण, पैना, तेज ।

प्रा० तिच्छन—( सं० तीक्ष्ण ) गु०  
तीक्ष्ण } तीखा, तीखा, कठोर,  
कड़ा ।

प्रा० तिजारी—( सं० तृतीय ज्वर,  
तृतीय=तीसरा, ज्वर=तप ) स्त्री०  
जो तप एक दिन बीच में न आकर  
तीसरे दिन फिर आवे, अंतरिया,  
ज्वर ।

सं० तिजिल—तिग्म+इल्, तिग्म=  
छमा करना ) क० पु० चन्द्रमा ।

प्रा० तित—( सं० तत्र ) कि० वि०  
वहाँ, तराँ, तिथर ।

सं० तितिक्षक—क० पु० सहनशील,

सं० तितिक्षा—( तिग्म=सहेना ) भा०  
स्त्री० धीरज, क्षमा, सहनशीलता,  
धैर्य सहना ।

सं० तिथि—( त्व=जाना ) स्त्री० ति-  
थी महीनों के दिन, हिंदी महीनों  
की तारीख ।

प्रा० तिनका—( सं० तृण ) पु० सर,  
टांकी, घासका टुकड़ा ।

प्रा० तिनकादांतोंमेंलेना—बोल०  
आघोन होना, जी-दान माँगना,  
जी की अमन माँगना ।

**०तिवारा**—( सं० त्रि=तीन, वार=  
दरवाजा ) पु० तीनदरवाजेका म-  
कान, कपरा निदगी, २ ( तीनवार )  
गु० तीनवार, तीनदफे ।

**०तिमिर**—( तिम=भिगोना, वा  
तम=भोग होना ) पु० अंधेरा,  
अन्धकार, २ एक प्रकारका आँख  
का रोग ।

**०निर्मा** स्त्री० बड़ी मछली ।

**०निय** - सं० स्त्री ) स्त्री० नागी,  
लगाई, स्त्री ।

**०निग्या**—( सं० तृपा ) स्त्री०  
प्यास, पीने की चाह, पियाम, २  
तृष्णा, चाह ।

**०तिरछा** { सं० तिरछा-  
तिरछी } तिराम देह, अंग  
जाना ) गु० टेढ़ा, बाका, याड़ा ।

**०तिरछादेखना**—बोल-कर  
आँखोंदेखना, टेढ़ी आँखसे देख  
ना, तिरछी चिन्तनसे देखना ।

**तिरना** ( सं० तरण ) क्रि० अ०  
देखना, तैरना ।

**०तिरवाशु** ( सं० त्रि=तीन, वार=बार ) ग  
तीन और २ ।

**०तिरवा**  
ल=दरवा

ल=दरवा  
॥ २८॥

**प्रा०तिरसठ**—( सं० त्रिपष्टि, त्रि=  
तीन, पष्टि=साठ) गु० तीन और साठों

**सं०तिरस्कार**—( तिरस्=अवज्ञा, वा  
अनादर, कृ=करना) पु० अपमान,  
अवज्ञा, अनादर, निन्दा, घिन, घि-  
कार । [ वेदजती ।

**सं०तिरस्कृत**—अप० पु० अपमानित,

**सं०तिरस्क्रिया**—( तिरस्+क्रिपां )  
अनादर, न्याय ।

**प्रा०तिराना**—( तिराना ) क्रि० सं०  
तैराना, पैराना, हेलाना ।

**प्रा०तिरानवे**—( सं० त्रिनवति, त्रि=  
तीन, नवति=नब्बे ) गु० नब्बे और  
तिन, २३ ।

**प्रा०तिरासी**—( सं० त्र्यशीति, त्रि=  
तीन, अशीति=अस्सी ) गु० अस्सी  
और तीन, ८३ ।

**प्रा०तिरिया**—( सं० स्त्री० ) गु० ना  
ति, नाई, स्त्री ।

**प्रा०तिरियाचग्नि**—( सं० स्त्रीचग्नि  
च=स्त्री चग्नि के छल बल, स्थि  
के कोय

**सं०तिरोधान**—आच्छादन, गु  
अन्तर्धान ।

**०तिरोहित**—( तिराग=छिपा, धा  
गु० छिपा हुआ, गुप्त, छि

अ० छिपि

॥ २८॥

याना, २ लहकन, हिलना, फड़-  
फड़ाना, ३ पानीपर तेल का तेरना ।  
सं०तिर्य्यक्—गु० देहातिरिक्ता, कुटि-  
ल, पु० पत्र, पत्नी ।  
प्रा०तिरुत ( सं०तीरमुक्ति ) पु०  
तिरुत { एक जिलाका नाम  
तिरुति { जो सूबे बिहार में है  
और जिसका मुख्य नगर मुजफ्फर-  
पुर है ।

सं०तिल—( तिल=चिकना होना )  
पु० एक पौधा अथवा वस्तु बीज  
जिसका तेल निकलता है, २ देह  
में एक काला चिह्न ।

सं०तिलक—( तिल=जाना ) पु०  
टीका लनाद में चन्दन वा केशर  
वा रेतली आदिका चिह्न, गु० श्रेष्ठ,  
प्रधान, मुख्य, सर्वोत्तम, अग्रगण्य,  
जैसे “रघुकुनतिलकसदातुष उप-  
पन्न यापन” अर्थात् रघुवंशियों में  
प्रधान वा श्रेष्ठ, ( जानकीमंगल )

प्रा०तिलकुट—( तिल, कुट=कूटाहु-  
आ ) पु० एकतरहकी मिठाई जि-  
समें तिल कूटकर मिलाते हैं ।

प्रा०तिलहा—( सं०तैलंग, करनाटक  
देश ) पु० तैलंगदेश का प्राचीन, पहलेही  
पहल अंगरेजी सेना में तैलंग अ-  
र्थात् करनाटक देशके लोग भरती  
हुये थे इसलिये अंगरेजी सेनाके  
सब सिपाहियों को तिलहा कहते हैं ।

प्रा०तिलंगी—स्त्री० गृही, पतंग, चंग ।

प्रा०तिलड़ा—( सं० त्रि, प्रा० लड़,  
लड़ी ) पु० तीन लड़का हार ।

प्रा०तिलहा—( तैल ) गु० तेल-  
या तेल सा चिकना ।

प्रा०तिलुवा—( तिल ) पु० तिलकेलहू ।

प्रा०तिल्ली—स्त्री० पिलई, तापतिल्ली ।

सं० तिलोत्तमा—स्त्री० स्वर्गविराया ।

सं०तिलोदक—( पु० तिल + उदक )  
तिल और जल तर्पण, पितरों  
का पानी ।

सं०तिलौदन—( तिल + औदन )  
हमरात्र अर्थात् तिथि ।

प्रा०तिप ( सं० तृप ) स्त्री० प्यास,  
पिपास ।

प्रा०तिसरायत—( तीसरा ) पु०  
तीसरा अनुप्य, विचित्रता, मध्यस्थ,  
पंच, विहायत ।

प्रा०तिहत्तर—( सं० त्रिसप्तति, त्रि=  
तीन, पञ्चदश=सत्तर ) पु० सत्तर और  
तीन, ७३ ।

प्रा०तिहरा—( त्रिणि=तीन ) पु०  
तिलड़ा, गु० तिगुना ।

प्रा० तिहाई—( सं० तृतीय ) स्त्री०  
तीसरा भाग ।

प्रा०तिहायत—( तीसरा ) पु० तीसरा  
अनुप्य, तिसरायत, विचित्रता, म-  
ध्यस्थ, पंच ।

प्रा० तुल (सं० गुल्य) गु० वरावर,  
तुल } समान ।

प्रा० तुलकरगड़ेहोना-बोल० लड़-  
नेनेनिगे आपनेमापने गड़ेहोना ।

प्रा० तुलना - सं० तुलन, तुल-  
नोनाना / कि० अ० नोना जाना,  
२ वामा, वर वर होना, लड़ने को  
गड़े होना ।

प्रा० तुलमिका } ( तुला वरावरी,  
तुलमी } अम=होकरना,  
अर्थात् / अमहो वरावर मष्टिमें कोई  
नहीं पड़ता ।

सं० तुलमी, तुलमीदाम ।

सं० तुला - तुल न तन । श्री०  
वर वर, वरावर, ३ मानवीं राशि  
में (विष में) ।

सं० तुलाधार-( तुला + आधार )  
रु० पु० वैश्य, बनिषा, बह्मज ।

सं० तुलिन-सं० पु० लीन ।

सं० तुल्य-( तुल=बोलना )  
रु० पु० वरावर, समान मश ।

सं० तुल=स्वी, जिनहा, बोहा

सं० तुल्य-( तुल=वपन्न होना )  
रु० पु० जीव, पाला, हिम,  
बर्फ, सोप गु० देहा ।

सं० तुल्य-रु० वपन्न होना ) रु० पु०  
रु०, वपन्न, वपन्न, वपन्न,  
वपन्न ।

सं० तुष्टि-( तुष्ट=पसन्न होना ) भा०  
स्त्री० नृप्ति, मन्तोप, आनंद, पसन्नता ।

सं० तुहिन-( तुह=मारना, वा डालना  
पड़वाना ) पु० पाला, बर्फ, हिम ।

प्रा० तु-( सं० त्वम् ) सर्वना० मध्यम  
पुरुष, पदवचन ।

प्रा० तुन-रुने को पुकारने का शब्द ।

प्रा० तुंश-( सं० तुम्हा, तुवि=मांगना )  
पु० तुम्हा, एक तरह का बरतन  
जिसमें माधुनोप पानी रगते हैं ।

सं० तुण-( तुण=भरना, वा सिकु-  
नणार ) रु० पु० माया, तर्कम,  
रु० रगन की गेरी, जगता ।

प्रा० तुनक- सं० तुम्ह, तुम्ह=  
तुनिया ( तुन नव डकना ) पु०  
नीलाप वा

प्रा० तुन- रु० पु० तुल देहा  
रु० पु० तुल देहा, तुल देहा, तुल देहा

रु० पु० तुल देहा, तुल देहा, तुल देहा

रु० पु० तुल देहा, तुल देहा, तुल देहा

सं० तुल-( रु० वपन्न होना )  
मरना ) रु० वपन्न होना

सं० तुली- रु० वपन्न होना  
रु० वपन्न होना

रु० वपन्न होना

० तृष्णीम्—(तृष्=सन्तोषकरना) वा सन्तुष्ट होना) क्रि० वि० चुपचाप, मौन, स्तामोश ।  
 ० तृण—(तृ=नाशकरना) पु० घास, चारा, घासफूस, तिनका, मर ।  
 ० तृणवत्—(तृण=तिनका, वत्=वरावर) गु० तिनके-के बराबर, तुच्छ, हलका ।  
 ० तृतीय—(त्रि=तीन) गु० तीसरा ।  
 ० तृतीया—(तृतीय) स्त्री० तीसरी विधि ।  
 ० तृप्त—(तृप्=तृप्त होना) क० पु० सन्तुष्ट, रपित, आनंदित, मुन्नी ।  
 ० तृप्ति—(तृप्=तृप्त होना) भा० स्त्री० सन्तोष, रप, प्रसन्नता, अयाना ।  
 ० तृप् (तृप्=प्यासाहोना) भा० तृपा) स्त्री० पियास, प्यास, तृष्णा, पियामा ।  
 ० तृपार्त्त—(तृपा=पियास, आर्त्त=यशरायाहुआ) गु० पियास से व्याकुल, बहुत प्यासा ।  
 ० तृपावन्त—(तृपा=पियास, वन्त=बाला) क० पु० पियासा, प्यासा ।  
 ० तृपित—(तृपा) क० पु० पियामा, प्यासा ।  
 ० तृष्णा—(तृष्=प्यासाहोना, वा लोभ करना) स्त्री० पियास, प्यास, २ लोभ, लालच, ३ चाह, इच्छा, लालसा, जो बस्तु नहीं मिली हो इसकी चाह ।

सं० ते—मर्वना० वे, २ तेरा ।  
 प्रा० ते } अव्यय० से ।  
 ते }  
 प्रा० तेंतालीस—(सं० त्रयद्विंशत्=२३ त्रि=तीन, चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और तीन ।  
 प्रा० तेंतीस—(सं० त्रयद्विंशत्, त्रि=तीन, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और तीन ।  
 प्रा० तेंदुवा—पु० चीता, बाघ ।  
 प्रा० तेईस—(सं० त्रयोविंशति, त्रि=तीन, विंशति=बीस) गु० बीस और तीन ।  
 सं० तेज—(तेजस्, तिज्=वीर्याहोना) भा० पु० मनाप, पेशवर्ष, पराक्रम, प्रभाव, चमक, २ बल, ३ आग, ४ तीक्ष्णता । [ नायामया ।  
 सं० तेजित—स्म० पु० शाश्वत, पै-  
 प्रा० तेजपात—(सं० तेजपत्र, तेज=नीसा, पत्र=पत्ता) पु० तेज की पत्ती, एक तरह का गरम मसाला ।  
 प्रा० तेजमान } (सं० तेजस्तिन्)  
 तेजवन् } गु० मनापी, पेशवर्ष-  
 चान् । [ तिनना ।  
 प्रा० तेता—(सं० तावत्) क्रि० वि०  
 प्रा० तेतो—क्रि० वि० तिनना ।  
 सं० तोमर—पु० नाम शस्त्र, २ एक प्रकार का छन्द ।  
 प्रा० तेरस—(सं० त्रयोदशी) स्त्री०



प्रा० तुल (सं० तुल्य) पु० परावर,  
तुल (समान) ।

प्रा० तुलकरसड़ेहोना-बोल० लड़-  
नेनेनिये आपनेमामने मढ़ेहोना ।

प्रा० तुलना—( सं० तुलन, तुल्य=  
मोलना ( क्रि० अ० तोला जाना,  
२ उपास, परावर होना, लड़ने को  
मढ़े होना ।

प्रा० तुलमिका ( तुलना=परावरी,  
तुलमी ) अम्=कंकना,  
अर्थात् जिसके परावर गृष्टिमें कोई  
नहीं ) एक गीरे का नाम ।

सं० तुलमी ( पु० हिंदी समावण  
तुलमीदाम ) कर्मा ।

सं० तुल्य—( तुल=मोलना ) श्रो०  
परावरी, २ नराह, ३ मानवी राशि  
( ज्योतिष में ) ।

सं० तुल्यधार—( तुल्य + आधार )  
क० पु० बैरप, बतिया, बझाळ ।

सं० तुलित-अर्थात् पु० मोला हुआ ।

सं० तुल्य—( तुल=मोलना, वा० तुल-  
न ) पु० बराबर, समान महत्त्व, सम ।

सं० तुल्य—( तुल=मोलना, वा० तुल-  
न ) पु० बराबर, समान महत्त्व, सम ।

सं० तुल्य—( तुल=मोलना, वा० तुल-  
न ) पु० बराबर, समान महत्त्व, सम ।

सं० तुल्य—( तुल=मोलना, वा० तुल-  
न ) पु० बराबर, समान महत्त्व, सम ।

सं० तुल्य—( तुल=मोलना, वा० तुल-  
न ) पु० बराबर, समान महत्त्व, सम ।

सं० तुष्टि—( तुल्य=मोलना ) भा०  
सो० तुष्टि, मन्तोष, आनंद, पसन्नता ।

सं० तुहिन—( तुल्य=मोलना, वा० तुल-  
न ) पु० पाला, बर्क, हिम ।

प्रा० तु—( सं० तुल्य ) सर्वना० मध्यम  
पुरुष, एकवचन ।

प्रा० तुतू-कुत्ते को पुकारने का शब्द ।

प्रा० तुंवा—( सं० तुल्य, तुल्य=मोलना )  
पु० गुग्गा, एक तरह का वरतन  
जिसमें साधुनोग पानी रसते हैं ।

सं० तुण ( तुण=भरना, वा० तुल-  
न ) पु० माया, तर्कस,  
तीर रसने की पेशी, निर्गम ।

प्रा० तुतक ( सं० तुल्य, तुल्य=  
तुलित ) फेलाताबादकना पु०  
नीलाधोया ।

प्रा० तुन—( सं० तुल्य, तुल्य=पीड़ा  
देना ) पु० एक पेड़ का नाम जिस  
की लकड़ीकी भेज कुरसी आदि  
बनती हैं उसके फूल पीले होते हैं  
जिसमें कपड़े रंगे जाते हैं ।

सं० तुल्य—( तुल्य=मोलना ) क्रि० वि० भ्रष्ट, तुल्य, शीघ्र ।

सं० तुल्य—( तुल्य=मोलना, वा० तुल-  
न ) पु० कूट, निर्वात रहने ।

सं० तुल्य—( तुल्य=मोलना ) पु० विनो  
की कूट, नीला, मीठ ।

प्रा० तुल्य ( पु० गजपती की एक  
तुल्य ) जाति ।

तृष्णीम्—(तृष्=सन्तोषकरना )  
। सन्तुष्ट होना ) क्रि० वि० चुप-  
प, मौन, सामोश ।

तृण—( तृह=नाशकरना ) पु०  
स, चारा, घासफूस, निनका, खर ।  
तृणवत्—(तृण=तिनका, वत्=  
खर ) गु० निनके के परावर,  
झड़, हलका ।

तृतीय—(त्रि=तीन)गु० तीसरा ।  
तृतीया—( तृतीय ) स्त्री० तीस-  
तियि ।

तृप्त—(तृप्=तृप्त होना ) क० पु०  
तुष्ट, हर्षित, आनंदित, मुन्नी ।

तृप्ति—(तृप्=तृप्तहोना)भा०स्त्री०  
शोष, हर्ष, प्रसन्नता, अघाना ।  
[पू०] (तृप्=प्यासाहोना)भा०  
पा० स्त्री० पियास, प्यास,  
था, पियासा ।

पार्त्त—तृप्ता=पियास, आर्च=  
तायाहुआ ) गु० पियास से व्या-  
, बहुत प्यासा ।

वन्त—( तृप्ता=पियास, वन्त=  
ता ) क० पु० पियासा, प्यासा ।

पित—(तृप्ता)क०पु० पियासा,  
तासा ।

प्या—( तृप्=प्यासाहोना, वा  
प करना ) स्त्री० पियास, प्यास,  
थिप, लालच, ३ पाह, इच्छा,  
हसा, जो वस्तु नहीं मिली हो  
ही चाह ।

सं० ते—सर्वना० वे, २ तेरा ।

प्रा० ते } अण्यप० से ।

प्रा० तेंतालीस—(सं०त्रयद्वचत्वारिंश-  
द्वित्रि=तीन, चत्वारिंशत्=चालीस)  
गु० चालीस और तीन ।

प्रा० तेंतीस—( सं० त्रयद्वित्रिंशत्, त्रि=  
तीन, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और  
तीन ।

प्रा० तेंदुवा—पु० चीता, बाघ ।

प्रा० तेईस—( सं० त्रयोविंशति, त्रि=  
तीन, विंशति=बीस) गु० बीस और  
तीन ।

सं० तेज—( तेजस्, तिङ्=वीस्ताहोना)  
भा० पु० प्रताप, ऐश्वर्य, पराक्रम,  
प्रभाव, चमक, २ बल, ३ आग, ४  
तीक्ष्णता । [ नायागया ।

सं० तेजित—भ्म० पु० शाणित, पै-  
प्रा० तेजपान—( सं० तेजपत्र, तेज  
=तीसा, पत्र=पत्ता ) पु० तेज की  
पत्ती, एक तरह का गरम मसाला ।

प्रा० तेजमान—( सं० तेजस्विन् )  
तेजवन् ) गु० प्रतापी, ऐश्वर्य-  
वान् । [ तितना ।

प्रा० तेता—( सं० तावत् ) क्रि० वि०

प्रा० तेतो—क्रि० वि० तितना ।

सं० तोमर—पु० नाम शस्त्र, २ एक  
प्रकार का छन्द ।

प्रा० तेरस—( सं० त्रयोदशी ) स्त्री०

२. कुम्भी, ३. स्त्री, ३. रूपकी स्त्री,  
मुन्दर स्त्री, साहित्य में नायिका  
तीन प्रकार की हैं ( १. स्वकीया जो  
केवल अपने पतिही से प्रेम करे,  
२. परकीया जो पराये पुरुषसे प्रीति  
करे, ३. सामान्या जो धन लेकर  
किसी से प्रीति करे ) जैसे  
“ स्वकीया धारी नायिका परकी-  
या परधाम । सो सामान्या नायिका  
जाके धन सो काम ” अवस्था भेद  
से प्रत्येक नायिका आठ प्रकार की  
है ( १. प्रोषितपतिता, २. खंडिता,  
३. कलहान्तरिता, ४. विमलम्बा,  
५. वररूपिता, ६. वासकशय्या, ७.  
स्वाधीनपतिता, ८. अभिसारिका ) ।

प्रा० नार—(सं० नारी) स्त्री० लुगाई,  
स्त्री, २. ( सं० नाल ) बंदूक की  
नाल वा नली, ३. कमलों की  
नाल, ४. गरदन ।

प्रा० ना—नरकवासी,  
नरक ।

प्रा० ना—) स्त्री०  
एक

प्रा० ना—नारज  
प्रकारका

सं० न

पु० एक

वेदा और

रु

सं० नारान—( नार=मनुष्यों का मूत्र,  
आ=पारों मोर से, मय=जाना )  
पु० नीर, पाण ।

सं० नारायण—( नार=मनुष्यों का  
मूत्र, अयन=स्थान, अर्थात् जिन  
में सब मनुष्य रहते हैं, वा नार=  
पानी. अयन=स्थान, अर्थात् जो  
नारमूत्र में सोते हैं ) पु० विष्णु का  
नाम, आदिपुरुष ।

सं० नारायणी—( नारायण ) स्त्री०  
विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी, २. गंगा,  
३. शतावरी ।

सं० नारिकेल—( नारि=डांडी, क=  
हवा वा पानी, रल=चलना, अर्थात्  
जिस ही डांडी हवा से वा पानी से  
चलती है ) पु० नारियल, श्रीफल ।

प्रा० —( सं० नारीकेल )

प्रा० नालकी-स्त्री० एकप्रकार की पालकी ।

सं० नालिक-( नाल + इक ) क० स्त्री० बन्दूक, भुशुण्डी ।

प्रा० नाव-( सं० नाँ ) स्त्री० नौका, डोंगी, तरणी ।

प्रा० नावना } ( सं० नपन, नम्-  
नाना } भुक्तना ) क्रि० स०  
धुकाना, निहुराना, शिर भुक्ताना,  
नमस्कार करना ।

प्रा० नावरि-स्त्री० नाव, भुक्ताना;  
नाव फेरना, नावपर का खेल ।

सं० नाविक-( नाँ ) क० पु० नाँभी  
कर्णधार, केवट, मत्तार ।

सं० नाश-( नश = नाश देना ) भा०  
पु० ध्वंस, वरषादी, नष्ट होना, जल,  
हानि, विगाड़ ।

सं० नाशक-( नश = नाश करना ) क०  
पु० नाश करनेवाला, उजाड़, वि-  
गाड़ करनेवाला, हानिकारनेवाला ।

सं० नाशन ( नाश + न ) भा०  
पु० नाश करना, विगाड़ देना,  
उड़ा देना ।

सं० नाशवान्-क० पु० नाश करनेवाला ।

सं० नाशनीय } अर्थ० पु० नाश  
नाशितव्य } करनेयोग्य, उजा-  
नाशय } देनेलायक ।

सं० नाशी-( नाश + ई ) क० पु०  
नाश करनेवाला, उजाड़, उखाड़ ।

प्रा० नास-( सं० नाश ) पु० नाश,  
२ ( सं० नश्य, नासा = नाक ) स्त्री०  
हुलास, मुँवनी ।

सं० नासमभ-पु० अवरोध, अज्ञान ।

प्रा० नासना ( सं० नाश ) क्रि०  
अ० भागना, पताना, पीट देना,  
२ क्रि० म० नाश करना ।

सं० नासा } ( नाम = शब्द बरना )  
नासिका } स्त्री० नास, शूलने की  
शक्ति ।

सं० नासीर-( नाश = शब्द करना )  
पु० सेना का मुख, आगे चलने  
वाली सेना ।

सं० नास्ति ( न = नहीं, अस्ति = है,  
शब्द = होना ) नहीं है, नहीं, अभाव ।

सं० नास्तिक-( नास्ति = नहीं है,  
अर्थान् परलोक और ईश्वर का सृष्टि  
का कर्ता नहीं है ऐसा करनेवाला )  
पु० ईश्वर और परलोक को नहीं  
माननेवाला, अनीश्वरवादी ।

सं० नास्तिकवाद-भा० पु० ईश्वर  
को न मानना, नास्तिकों का मतवाद,  
सुद्ध की बातें ।

सं० नास्तित्व-भा० पु० अभाव,  
शून्यता, नाश ।

प्रा० नाह ( सं० नावने पु० गवाही,  
मानिक, नाप, रस ।

प्रा० नाहर-पु० नाह, रस ।

प्रा० नाहि } ( सं० नाह ) क्रि० वि०  
नाहीं } नहीं, न ।







प्रा० निष्ठावर-प्री० उगाता, बलि,  
कुरवान्, बलिहारी ।

सं० निज—( नि० जन्=जन्मा होना )  
गु० सर्वना० अपना, स्व, आपका,  
आत्मीय ।

सं० निजगति—स्त्री० अपनी दशा,  
अपनी हालत ।

सं० निजवृत्ति—स्त्री० अपनी नीति-  
का, अपना देखा ।

सं० निजतन्त्र—पु० स्वतन्त्र, स्वयं,  
स्वमुल्लेख ।

प्रा० निष्ठला—गु० निष्ठम्मा, सुन्द,  
आनसी ।

प्रा० निष्ठुर—( सं० निष्ठुर ) गु० क-  
ठोर, निर्दय, कठिन, बड़ा क्रूर,  
दिसका दिल पत्थर सा कड़ाहो ।

प्रा० निष्ठुरता } ( सं० निष्ठुरता )  
निष्ठुराई } मा० स्त्री० कठोर

ता, निर्दयता, कड़ापन, बेरहमी ।

प्रा० निष्ठर—( सं० निष्ठर निर्=नहीं,  
ह=हरना ) गु० निर्भय, निरङ्कुश,  
निःशङ्क, दौड़, वेदर, अशङ्क, बेझोका ।

प्रा० निदाल } ( सं० निदोल नि-  
निदोल } र=नहीं, दुर्=रि-

लाना ) गु० अचेत, मूलमूल, नि-  
श्चल, अचञ्चल ।

प्रा० नित—( सं० नितर ) क्रि० वि०  
सदा, सर्वदा, निरन्तर, हमेशा, हमे-

शर, रोज रोज ।

प्रा० नितउड } बोल= सदा, नि-  
नितउडके } रन्तर, रोज रोज,  
हमेशा, हरदय, हमेशा ।

प्रा० नितनित-बोल=सदा, नित उड,  
हरदय, रोज रोज, निरन्तर, हमेशा ।

सं० नितम्ब—( नि=नोचे, तम्ब=  
मान, वा स्नम्ब=ठहरना ) पु०  
कपड़के नीचे का भाग, पुट्टा, कूडा,  
चुनड़ ।

प्रा० नितप्रति—( सं० प्रतिनिन्य प्र-  
ति=हर एक, नित्य=सदा ) क्रि०  
वि० नित नित, नितउड, सदा, ह-  
ररोज, रोजरोज, हमेशा ।

सं० नितान्त—पु० पराजित, आविश्-  
य, निरन्तर ।

सं० नित्य—( नि=निरवय, अर्थात् जो  
निरन्तरहीहो ) क्रि० वि० सदा, स-  
वेदा, नित, हमेशा, सनातन, नि-  
रन्तर, लगातार, मामूली ।

सं० नित्यकर्म—( नित्य=सदा का  
कर्म धर्म का काम ) पु० स्नान,  
सन्ध्या, वन्दन, तर्पण, पूजा, जप, व-  
प आदि पदार्थ, हर एक दिनका  
अवरग करने योग्य काम ।

सं० नित्यानित्य—( सं० नित्य +  
अनित्य ) क्रि० वि० निरन्तर, हमेशा,  
हमेशगी, बाबेदानी ।

सं० नित्यानन्द—( नित्य + आनन्द )





सं० निन्दित- (निन्द=निन्दा करना)

र्म० पु० दोष लगाया हुआ, दूषित,  
पुरा, बदनाम ।

सं० निन्द्य- (निन्द=निन्दा करना)

र्म० पु० निन्दा के योग्य, बुराई  
करने के लायक ।

सं० निन्द्यकर्म- पु० कुत्सितकर्म,  
पुराण ।

प्रा० निन्नानवे- (सं० नवनवति

नव=नौ, नवति=नव्वे) गु० नव्वे  
और नौ, २६ ।

प्रा० निन्नानवेके फेरमें पड़ना-

बोल० धनके इकट्ठा करनेही में  
लगा रहना २ दुःख में पड़ना ।

प्रा० निपट- गु० बहुत, अधिक, अत्यन्त ।

सं० निपतन- (नि=नीचे, पत=गिर

ना) भा० पु० नीचे गिरना ।

सं० निपात- (नि=नीचे, पत=गिरना)

भा० पु० गिरना, मौत, मृत्यु, मर-  
ण, २ व्याकरण में च आदि-और  
प्र आदि अवयव ।

सं० निपातक- (निपात + अक)

नाशक, उजाड़नेवाला, दहानेवाला ।

प्रा० निपातना- (सं० निपात) कि०

सं० गिराना, नाश करना, मारना ।

सं० निपात- र्म० पु० नाश किया,

उजाड़ दिया ।

सं० निपातित- र्म० पु० अधगति-

त, निश्चित, नीचे गिरा, उजाड़ा हुआ ।

सं० निपान- (नि + पा=पीना) धि०

जलाधार, चरही, कुएं का चरबचा,  
दोहनी, दूध दुहने का पात्र, कठोरा ।

सं० निपीड़न- (नि + पीड़=मारना,

मथना) भा० पु० पीड़ा देना, तर-  
लीफ देना ।

सं० निपीड़ित- र्म० पीड़ा दिया

गया, घातित, निचोड़ा गया ।

सं० निपुण- (नि, पुण=पवित्र होना)

गु० प्रवीण, चतुर, बुद्धिमान् ।

प्रा० निपुणार्ड- भा० स्त्री० चतुराई,

अकृपन्दी ।

प्रा० निपूता- (सं० निपुण) गु०

जिसके लड़का न हो, पुत्रहीन, नि-  
सन्तान, बे औलाद ।

प्रा० निवड़ना } (सं० निवर्तन)

निवर्तना } कि० अ० हो चु-

कना, निपटना, राखे होना, नाश हो-

ना, पूरा होना, खत्म होना ।

सं० निवन्धन- (बन्ध=बांधना) भा०

पु० बन्धन, बन्धन, रोक, कैद ।

सं० निवन्ध- भा० पु० प्रमाण, ब-

न्धन, प्रबन्ध, कारण, आनाद

रोग, मूत्रादि रोग, ग्रन्थ की दृष्टि,

संग्रहचिह्न, भाइवारी, सालीना,

देवीसम्पत् ।

प्रा० निवल्- (सं० निवर्त) गु०

दुबला, दुर्बल, कमजोर ।



- साफ ।
- ० निर्माणक-क० पु० सुसम्पन्न, ० निर्माण- ( निर्, मा=नापना, वाचना ) पु० वनावट, रचना, तसनीक २ सार ।
- ० निर्माण करना-क्रि० स० बनाना, रचना ।
- ० निर्माल्य- ( निर्मल से, यथा निर्मल और माल्य फूल वा फलों की माला ) भा० पु० देवता का लंडा मसाला, देवता को चढ़ाया हुआ नैवेद्य, २ पवित्रता, सफाई, फर्दारी, गु० पवित्र, साफ, शुद्ध ।
- ० निर्मित- ( निर्, मा=नापना, वा बनाना ) कर्म० बनाया हुआ, रचित, कवित ।
- ० निर्मूल- ( निर्=विन, मूल=जड़ ) गु० उल्टा हुआ, जड़से लोटा हुआ, विन जड़, निर्भीक, वे ठिकाने, २ समझ, नाश, ध्वंस ।
- ० निर्मोही- ( निर्=विन, मोह=प्यार ) गु० निर्दय, कठोर, कड़ा ।
- ० निर्यास- ( निर्, यम=निकलना ) पु० हृत्तरस, गाँद, गंध ।
- ० निर्लज्ज- ( निर्=विन, लज्जा=छात्र ) गु० निर्लज्ज, वैशर्म, नरुटा ।
- ० निर्लेप- ( निर्=नहीं, लिप्=लेपना ) गु० बेजाग, विनलगाव, अलेप, बेलीस ।
- ० निर्लोभ } ( निर्=विन, लोभ=को डालच न हो, लोभहीन, वैतमा ।
- ० निर्लोभी } लालच ) गु० निस
- ० निर्वेश- ( निर्=विन, वेश=कुल ) गु० वंशहीन, जिसके वंश न हो, अपूता, निपूता, बे आलाद, लावल्द ।
- ० निरवहे-गु० बीतगये, छूटगये ।
- ० निर्वचन- ( निर्, वच=कहना ) भा० पु० चुनना ।
- ० निर्वचक-क० पु० चुननेवाला ।
- ० निर्वाण- ( निर्, वा=बहना, नाना ) पु० मुक्ति, मोक्ष, लपहोना, गु० बुता हुआ, बुझा हुआ, ठंडा किया हुआ, २ नष्ट ।
- ० निर्वति-गु० वायुरहित स्थान, बे रवा का ।
- ० निर्वस- ( निर्+वास=रहना ) भा० पु० निकालना, बाहर करना, मारना, मनाकरना ।
- ० निर्वसक- ( निर्वाप्त+थक ) क० पु० निहालने वाला । [ गया ।
- ० निर्वसित-कर्म० पु० निकाला ।
- ० निर्वह- ( निर्=निथप, वट=लेजाना ) पु० निवाह, पूराकरना, समाप्ति ।
- ० निर्विकल्प- ( निर्=नहीं, विह्वल=भेद भ्रम ) गु० भेद और भ्रम से रहित, वैशक शुद्ध ।



प्रा० निशिचर } ( सं० निशाचर  
 निशिचर } वा निशि=रात में  
 चर=चलनेवाला ) पु० राक्षस ।

सं० निशित—( नि=अच्छी तरह से  
 शि=शीला करना ) पु० सीसा, नी-  
 हण, घोसा, शणित, पैना ।

सं० निशीथि—( नि=अच्छी तरह +  
 शी=सोना ) पु० अर्द्धराशि, आधी  
 रात ।

सं० निशीथिनी—सं० रात्रि ।

सं० निशुम्भ—( नि=निश्चय, शुम्भ  
 =मारना ) पु० एक राक्षस का  
 नाम, जिसने दुर्गामे मारा ।

सं० निशेश—( निश=रात, ईशु=  
 राजा ) पु० चांद, शशि ।

सं० निश्चय—( निर=अच्छी तरह से  
 चि=इकट्ठा करना ) भा० पु० निर्णय,  
 ठीक करना, पक्का करना, भरोसा,  
 विरवास, गु० ठीक, सच, असंशय ।

सं० निश्चर—( निश=रात, चर=च-  
 लनेवाला, चर=चलना ) पु०  
 राक्षस ।

सं० निश्चल—( निर=नहीं, चल=च-  
 लना ) गु० अचल, अटल, स्थिर,  
 ठहरा हुआ, जो नहीं चले ।

सं० निश्चला—स्त्री० पृथ्वी, जमीन ।

सं० निश्चित—( निर=अच्छी तरह से,  
 चि=इकट्ठा करना ) र्म० पु० निश्चय

किया हुआ, निर्णय किया हुआ ।

सं० निश्चिन्त—( निर=नहीं, चिन्ता  
 =शोच ) गु० निश्चिन्त, वैयक्तिक,  
 विनियता, चिन्तारहित ।

सं० निश्वास—( नि=बाहर, श्वस  
 =सांस आना या लेना ) पु० मुँह  
 और नाक से बाहर निकली हुई  
 हवा, सांस, निःसास ।

सं० निपट—( नि, पञ्ज=मिलना )  
 पु० भागा, तूण, तूणीर, तर्कस ।

सं० निपण—( नि=नहीं, पद्=चल-  
 ना ) र्म० पु० बैठा हुआ, आसी-  
 न, आसन्न ।

सं० निपाद—( नि, पद्=मारना )  
 पु० पेंडाल, जो ब्राह्मण से शूद्रों के  
 गर्भ में पैदा हो, पेंडार, २ एक राग  
 का नाम ।

सं० निपिद्ध—( नि, पिष्ट=जाना, पर  
 नि, उपसर्ग के साथ आने से अर्थ  
 हुआ रोकना ) र्म० रोकता हुआ,  
 निवारित, यमित ।

सं० निपेधक—( नि, पिष्ट=अंक ) क०  
 पु० रोकनेवाला, मनश करनेवाला ।

सं० निपेध—( नि, पिष्ट=रोकना ) पु०  
 रोक, रूकावट, बाधा, नाई ।

सं० निष्क—पु० अशक, सोनेका राप, १  
 दीनार ।

सं० निष्कण्टक—( निर=बिना, कंट-



नम्र पराण का निवेदा कराना ।

प्रा० निस्तारना (सं० निस्तारण)

क्रि० स० पचाना, उबारना, मुक्ति देना, मन्त्र पराणमेष्टकारा करना ।

प्रा० निस्तारा—(सं० निस्तार) पु०

मुष्टकारा, निवेदा, मोक्ष, मुक्ति २ पर, आशिष ।

० निस्त्रय—स्त्री० संगीनषट्ककी ।

सं० निस्सन्देह—(निस्=विन, संदेह =शक) पु० निश्चय, वेगक ।

सं० निहत—(निहन्=मारदालना) र्भ्य० पु० मारागया, पचकियागया ।

सं० निहित—(नि=निश्चय, धा=धरना) र्भ्य० स्थापित, गुप्त, स्थित, निहित ।

॥० निहाडि—स्त्री० घन, इयाँडा ।

॥० निहार पु० कुरार, कुदिरा ।

प्रा० निहारना—क्रि० स० ताक ल-गाना, देखना ।

प्रा० निहाल—गु० मसम, सुखी, आनंदित, हसित, बड़ा हुआ ।

प्रा० निहाली—स्त्री० रसार्ति, प्रेर्द ।

प्रा० निहुरना—क्रि० अ० भुक्कना, नमना, दबना ।

प्रा० निहोरा—पु० उपकार, २. वि-नयी, इहसान ।

प्रा० नीद } (सं० निद्रा) स्त्री०

नीद } सोनेकी चार, ऊँचाई ।

प्रा० नीदउचाटहोना—बोल०

नीद नहीं आना, नीद का दूटना,

चाप नहीं भिनना ।

प्रा० नीदभरसोना—बोल० गर नीद आना, सैन से सोना ।

प्रा० नीव—(सं० निम्बूक, निम्बू =नीचना) पु० लेपू, एक प्रकार का गट्टा फल ।

प्रा० नीका } (का० नेक) पु०

नीकी } मला, सुन्दर, अच्छा, मुशील, चंगा ।

प्रा० नीगुने—(सं० निर्गुण) पु०

बेगिनन, बेगुमार, अनगिनन, नहीं गिना हुआ ।

सं० नीच—(नि=नीचे, अञ्च=जाना

अथवा नि=नीच संपदा को, चम् =जाना, भोगना) पु० नीचा, अ-

धम, छोट, निकम्मा, निरुष्ट, कमीना ।

प्रा० नीचा—(सं० नीच) पु० नी-

च, अचम, छोटा, पु० तडा, तल ।

प्रा० नीचाऊंचा—बोल० नाचरा-

वर जमीन, न हम बार ।

प्रा० नीच—(सं० नीचम्) क्रि०

वि० तले ।

सं० नीचगा—(नीच=नीचे, गम्=

जाना) स्त्री० नदी, दरिया ।

सं० नीड—(नि=निकटीतरसे, इन्=

सोना निममें) पु० पसेरुओं का

पर, घोंमछा, स्रोता, आशिषाना ।

सं० नीत—(नी + त, नी=ले जाना )



मं० पु० प्राप्त, लाया गया ।

सं० नीति-( नी=ने जाना ) श्री०  
अन्ता चन्तन, उचित व्यवहार,  
राजनीति, देशवर्षाविद्या, व्याप, ४  
प्रकारके हैं गाय, दाम, दण्ड, भेद ।

मं० नीतिकला श्री० राजनीति,  
हिक्मत व्यवसाय, गानगी ।

मं० नीतिवात्री } मुद्रकमा  
नीतिस्वायक } दीवानी ।

मं० नीतिज्ञ नीति + ज्ञा=ज्ञानना )  
पु० नीतिज्ञानवेत्ता, राजज्ञानी ।

मं० नीति ( मं० निश्चय, निश्चय-  
गयना पु० एक वृत्त  
नीति ) का नाम ।

मं० नीति ( नी=जाना ) पु० गानी  
जान, २ रस ।

मं० नीतिज्ञ-( नीति=गानी, जन्म पीदा  
होना ) पु० कपत, कपत, २ उद  
विज्ञान, गुणात्मा मे पीदा दृष्ट नीति ।

मं० नीतिज्ञ-( नीति=गानी, दा=देना )  
पु० वादन देना, दन ।

मं० नीतिज्ञ-( नीति=गानी, पु०-  
कपत ) पु० वादन, देना ।

मं० नीतिज्ञि-( नीति=गानी, निधि  
=जातना ) पु० समुद्र, समुद्र,  
सागर ।

मं० नीतिज्ञि-( नीति=गानी, निधि  
=जातना ) पु० समुद्र, समुद्र, २ समुद्र ।

सं० नील-( नील्=नीला होना )

गु० नीला, काला, कृष्ण २ शी सरव ।  
श्री० एक पीया जो नीला रंगने के  
काम में आता है, २ एक नदी का  
नाम जो मिगर देश में है, पु० एक  
पहाड़ का नाम, २ एक बानर का  
नाम, ३ कुवेर की नी निधि अथवा  
राजाने में का एक राजाना ।

मं० नीलकण्ठ-( नील=नीला, कण्ठ  
=गला ) पु० महादेव जिन्होंने ने  
समुद्र मथने के समय विष निकाला  
था उसको पिया इस लिये उनका  
गला नीला हो गया, २ मोर  
मयूर, ३ एक पत्थर का नाम कटगाम ।

मं० नीलगांव-( सं० नीलगौ )  
श्री० नीली गाय, रोऊ ।

मं० नीलप्रीति-( नील=नीली, प्रीति  
=गादन ) पु० महादेव, शिव, गु०  
नीला गलाया जाता, जिमका गला  
नीला हो, २ मोर ।

मं० नीलम-( मं० नीलमणि ) पु०  
नीले रंग का रत्न, समुद्र ।

मं० नीलमणि-( मं० नील=नी-  
ला, मणि=रत्न ) श्री० नीलम,  
समुद्र ।

मं० नीला-( मं० नील ) पु० नील  
में रंग दूना, नीलमणि ।

मं० नीलाकिया- पु० नीला,  
नीला ।

प्रा० नीलाम—( पोर्तुगालकी भाषा  
के शब्द "लेलाम" "Lellam"

रा अर्थभंग) पु० किसी चीज को  
एक मोल पर नहीं बिकित पड़े के कुछ  
मोल घोलना फिर ज्यों ज्यों ग्राहक  
मोल बढ़ाते जाते हैं अन्त में जो सब  
से अधिक बोझ उसीको बेच देना ।

सं० नीलाम्बर—(नील=नीला, अम्बर  
=रूपड़ा जिसके हो ) पु० बलदेव,  
शंकरर ३ नीला रूपड़ा ।

सं० नीलोत्पल } नील = नीला,  
नीलोत्पल } उत्पल=पत्थर, उ  
त्पल=रूपल, पु० नीला पत्थर,  
नीलमणि वा नीलरूपल ।

सं० नीवार—नी, वृ=आच्छादनकरना  
पेना) पु० विष्णु का वृत्त, तालाब  
का चावल ।

सं० नीवी—स्त्री० वनिषों का मूल धन,  
पूँजी, कमरबन्द, ईजारबन्द, नारा ।

सं० नीवृत्त—पु० देश, जनपद, जनस्थान ।

सं० नीशार—(नी + शृ=पारना) पु०  
नम्प, कनात देरा, रूपल, रेशमीर ।

सं० नीहार—(नी, ह=छेना) पु० घना  
पाछा, ओस, कुरर, शिशिर ।

सं० नूतन } (नव, नु=पराटना)  
नूत } पु० नया, नवतन, दृढ़ता ।

प्रा० नून } (नं० लक्षण) पु० नि-  
नोन } मक, नमक, लोन, सार ।

सं० नूपुर—( नू=गहना, पुर=भागे  
जाना, अर्थात् जो सब गहनों के  
आगे रहता है ) पु० बिलिया, पाँव  
की अंगुलियों में पहनने का गहना,  
नूपुर । [ मनुष्य, पुरुष, नर, मर्द ।

सं० नृ—(नी=लेजाना वा चलनी) पु०

सं० नृग—पु० एक सूर्यवंशी राजा  
का नाम ।

सं० नृत्त } (नृ=नाचना) पु० नाच,  
नृत्य } नर्तन ।

सं० नृत्यक—( नृ=नाचना ) पु०  
नाचनेवाला, नचवैया ।

सं० नृप—(नृ=मनुष्य, प=पालनेवाला,  
पा=पालना) पु० राजा, भूपाल, स्वपति ।

सं० नृपचापी—( नृप=राजा, इन्=  
मारना ) पु० पु० राजाओं का  
मारनेवाला, परशुराम ।

सं० नृपति—(नृ=मनुष्य, पति=स्वामी,  
पालिक) पु० राजा ।

सं० नृपाल—(नृ=मनुष्य, पाल=पा-  
लना) पु० राजा ।

सं० नृपाम—(नृ=मनुष्य, शृ=पार-  
ना) पु० मारनेवाला, दुष्ट, दुःम-

दायी, क्रूर, शत्रुघ्नी, वेदपा, बदकार ।

सं० नृमिह—( नृ + मिह ) पु० नर-  
मिह अन्तार ।

सं० नृहरि—(नृ=मनुष्य, रि=मिह)  
पु० नरमिह अन्तार ।



प्रा० नेवल } (सं० नकुल) पु० एक  
नेवला } जानर का नाम ।

प्रा० नेवार } (फा० नेवार) स्त्री० एक  
निवार } मकार की चौड़ी पट्टी

या कोर जिससे पलंग बुने जाते हैं ।

प्रा० नेह- (सं० स्नेह) पु० प्यार, प्रीति,  
मोह, मुहब्बत । [ मित्र ।

प्रा० नेही- (सं० स्नेही) पु० प्यारा,

प्रा० नेन } (सं० नदन) पु० छां-  
नेना } रा, नेत्र, जोवन ।

सं० नेमित्तिक-भा० पु० निमित्त स-  
म्बन्धी, निमित्तसे ज्ञाया, पैरमम-  
मुत्ती, जो रोज न हो ।

सं० नेमिप- (निमिष, अर्थात् जहां  
चिप्पुने पल भर में एक राक्षस को  
माराया) पु० एक तीर्थका नाम ।

सं० नेमिपारण्य- (नेमिप + आरण्य)  
पु० एक जंगल का नाम जहां  
बहुत श्रृपि रहते थे और जहां मू-  
नभी ने इन सनकादि श्रृपियों को  
माराभारत और पुगण आदि  
मुनाये थे ।

सं० नेयायिक- (न्याय) पु० न्याय  
शास्त्र ज्ञाननेवाला, न्यायशास्त्र का  
पण्डित, मुनिक ।

सं० नेराश्य-भा० पु० निरासर,  
न तम्बेदी, आशाशून्य, आशाहीन ।

सं० नेर्हृत्य- (नैर्हृत्य= एक राक्षस  
का नाम जो इसकोण का दिक्पाल  
है) पु० दक्षिण पश्चिमका कोण ।

सं० नैवेद्य- (निवेद पु० देवता का  
भोग, मसाद, चढ़ावा, बलि ।

सं० नैसर्गिक-भा० पु० स्वाभावि-  
क, वषयी, दिल्ली ।

सं० नैष्ठिक-भा० पु० धार्मिक, मुख्यतः  
किंद, विश्वासिक, स्त्री० नैष्ठिका, धा-  
मिका, विश्वासिका ।

प्रा० नेहर-पु० पीढर. पैरा, स्त्री के  
बाप का घर ।

प्रा० नोकचोक-बोल० स्त्री० संके-  
नों से बातें करना, इशारों से बातें  
करना, २ लागडाट ।

प्रा० नोकभोक-बोल० स्त्री० सँचा-  
सँची, चढ़ाउपरी ।

प्रा० नोचना-कि० स० ससोटना,  
बसोटना, सरोटना, बीलडालना,  
नख से तसादना ।

अं० नोट-पाददारन, २ हुण्डी,  
३ हागिया, ४ निशान ।

फा० नोकर-पु० चाकर, सेवक, दास ।

फा० नोकरा-स्त्री० चाकरी, सेवा ।

सं० नो } (नुइ= चलाना) स्त्री०  
नोका } नाव, तराई ।

प्रा० नोस्तण्ड- (सं० नव सण्ड) पु०  
पृथ्वी के नव भाग, १ मरत २ इ-  
नावन ३ त्रिमुखपट भद्र ४ वेगुमा-  
ट ५ हिरण्य ६ कुरु = रम्य ७  
हरिवर्ष ।

प्रा० नौगरी-स्त्री० स्त्रियों के हाथ में  
पहनने का गहना, नौगिरही ।

प्रा० नौदावर-स्त्री० निदावर, म-

प्रा० नेक } गु० कुद, थोड़ा, अल,   
 नेकु } तनक, जरा ।

फ्रा० नेकनाम—नामवार, यशस्वी,   
 मुखौ ।

सं० नेका—(निज् + कृ, मिज् = पोषण   
 करना) क० पु० पोषक, पालक,   
 पोषणकर्ता ।

प्रा० नेग } पु० व्याह में अथवा   
 नेगचार } और किसी उत्पन्न में   
 अपने मानेदारों को कुछ देना,   
 व्याह में पुरोहित की दक्षिणा, २   
 बांटा हिस्सा ।

प्रा० नेगी—(नेग) गु० बैटानेवाला,   
 हिस्सेदार, २ परमा, मँगना ।

सं० नेजक—(निज् + अक, निज् = गुद   
 करना) क० पु० पोषी, परिष्कारक ।

सं० नेजन—पा० पु० शोधना ।

सं० नेजा—(नी = नेजाना) क० पु०   
 नेजानेवाला ।

सं० नेज्य—सं० पु० नेजाने योग्य ।

सं० नेति—(न = नहीं, इति = यह) गु०   
 ऐसा नहीं, यह नहीं, जिसका पार   
 नहीं, अत्यन्त, परस्परका गुण ।

प्रा० नेती—(सं० नेर, नी = नेजाना वा   
 चजाना) स्त्री० दही पाने की रस्मी ।

सं० नेत्र—(नी = नेजाना, वा चजाना   
 वा बड़े चजाना, वा पाना) पु० आंग,   
 नरन, लोचन, २ नेरी, गु० ना-   
 बह, बड़ा नेरना ।

सं० नेत्रन्द—(नेत्र = आंग, दृष्टि =

दृष्टि) पु० नेत्र पुट, आँख, पुट ।

सं० नेत्राम्बु—(नेत्र = आंग, अम्बु   
 = पानी) पु० आँसू, आँसूका पानी ।

सं० नेपथ्य } पु० पर्दा से रास्ता,   
 नेपथ्य } आड़का रास्ता, विनय   
 के लिये सजी भूमि, मतान्तर, अलं-   
 कार, पन्थ ।

सं० नेपाल—पु० एक देश का नाम ।

प्रा० नेपुर—(सं० नूपुर) पु० नूपुर ।

सं० नेम—गु० अर्द्ध, आधा, निरुद्ध ।

प्रा० नेम—(सं० नियम) पु० बचन   
 मण, प्रतिज्ञा, संकल्प, चांचा, शोध,   
 हठ, २ वन संधम आदि ।

सं० नेमि—स्त्री० धुरी जिसमें गरिषा   
 लगे पु० नित्री, जड़ली चावल ।

प्रा० नेमधर्म—(सं० नियम धर्म) पु०   
 उपवास, व्रत, २ अच्छा चलन ।

प्रा० नेरे } (सं० निकट) निरप   
 नेरी } वाम, समीप, नगीच ।

प्रा० नेव }   
 नीव } स्त्री० मीन की जड़ ।

प्रा० नेवतना } (सं० निमन्त्रण)   
 न्योनता } हि० सं० न्योनतादेना,   
 गिनाने के लिये बुलाना ।

प्रा० नेवता } (सं० निमन्त्रण) पु०   
 नोता } बुलाहट, गिनाने के   
 न्योता } लिये बुलाना ।

प्रा० नेवर } पु० थोड़े के पड़े का पार,   
 नेवल } अथवा रोग ।

प्रा० नेवल (सं० नेवल) पु० एक  
नेवला } जलरत्न का नाम ।

प्रा० नेवार (का० नेवार) स्त्री० एक  
निवार } मछार की बीड़ी पड़ी

या कोर जिसमें पलंग हुने जाते हैं ।

प्रा० नेह (सं० नेह) पु० स्थावर, भीति,  
घोर, दुःखद । [ मित्र ।

प्रा० नेही (सं० नेही) पु० स्थावर ।

प्रा० नेन (सं० नेन) पु० जल-  
नेना } न, नेत्र, लोचन ।

सं० नेमित्तिक-भा० पु० निमित्त स-  
म्बन्धी, निमित्तसे आया, गैरसम्ब-  
न्धी, जो रोज न हो ।

सं० नेमिप- (निमित्त, अर्थात् जहां  
विष्णु ने पल भर में एक राजस को  
मारया ) पु० एक तीर्थका नाम ।

सं० नेमिपारण्य- (नेमिप + आरण्य  
पु० एक जंगल का नाम जहां  
पहुत ऋषि रहते थे और जहां मू-  
तभी ने इन सनरादि ऋषियों को  
महाभारत और पुराण आदि  
शुनाये थे ।

सं० नेयायिक- (न्याय) पु० न्याय  
शास्त्र ज्ञाननेवाला, न्यायशास्त्र का  
पण्डित, मुनिक ।

सं० नेराश्य-भा० पु० निरासरा,  
न वस्त्रेदी, आशुशुष्क, आशरहित ।

सं० नेर्ऋत्य- (नेर्ऋत=एक रासस  
का नाम जो इस कोण का दिक्पाल  
है) पु० दक्षिण पश्चिमका कोण ।

सं० नेवेद्य- (निवेद्य पु० देवता का  
भोग, सम द, चढ़ावा, बलि ।

सं० नेसर्गिक-भा० पु० स्वाभाविक,  
वर्णी, दिग्गो ।

सं० नेष्टिक-भा० पु० धार्मिक, मुख्यतः  
हिन्दू, विरसासिद्ध, स्त्री० नेष्टिका, भा-  
मिका, विरसासिका ।

प्रा० नेहर-पु० पीहर, पैरा, शी के  
पाय का पा ।

प्रा० नोकचोक-चोल० स्त्री० संके-  
तो से जाने करना, इशारों से जाने  
करना, २ नागटाट ।

प्रा० नोकभोक-चोल० स्त्री० संवा-  
रेंबी, चढ़ाउपरी ।

प्रा० नोचना-क्रि० स० ससोटना,  
चरोटना, सरोटना, झीलझालना,  
नख से उखाड़ना ।

अं० नोट-याददाहन, २ हुण्डी,  
३ हाशिया, ४ निरान ।

फा० नौकर-पु० चाकर, सेवक, दास ।

फा० नौकरी-स्त्री० चाकरी, सेरा ।

सं० नौ (नुइ=चलाना) स्त्री०  
नौका } नाव, तरणी ।

प्रा० नौखण्ड- (सं० नव राखण्ड) पु०  
पृथ्वी के नव भाग, १ भरत २ इ-  
लाह ३ किम्बुरुष ४ भद्र ५ वेगुमा-  
क ६ हिरण्य ७ कुरु ८ रम्य ९  
हरिष्य ।

प्रा० नौगरी-स्त्री० सियों के हाथ में  
पहनने का गहना, नौगिररी ।

प्रा० नौलावर-स्त्री० निदावर, स-

नाः ॥—अर्थ १ मोहना, २ मस्तकर  
ना, ३ मुगाना, ४ सताना या नलाना,  
५ शिथिल अथवा अचेत करना  
येषां कामदेवके बाण कहलाने हैं।  
सं० पञ्चगात्र—पु० हाथ, कर, पां-  
चगात्रा अर्थात् अंगुली ।  
सं० पञ्चमुखा—श्री० शीव=वय-  
म्भान, चुन्नी चुन्हा, पेपनी, चन्नी,  
चंदनी, गली व पोपला, उपस्कर,  
बहनी, उदकुम्भ, पनीपी वा पड़ा  
रगनेहा स्थान ।  
सं० पञ्चाक्ष—( पञ्च + अक्ष ) पु०  
निविपय, पथा ( निमये १ निधि,  
२ वाह, ३ नक्षत्र ४ पाप ५ करण  
ये पांच मान जाते ) पञ्चनका  
चन्द्रनामक कृष्ण कुंडलं गुग्गुलुम-  
या । पञ्चवक्त्रमुखां वीर्यादानवि-  
शालमुखां पञ्चनकं च अक्षय, १ कृष्ण  
२ शङ्ख, ३ गुग्गुलु, ४ कज, ५ कुष्ठ,  
६ लह, ७ पत्र, ८ दूर ।  
सं० पञ्चानन—( पञ्च—विम्बुन, या  
पांच, आनन=मुख ) पु० मिह,  
केसरी, मेर, २ मित्र, महादेव ।  
सं० पञ्चामृत—( पञ्च + अमृत ) पु०  
१ दूध, २ दही ३ खीर, ४ दही, ५  
महुइत पांचों से बनी हुई वस्तु ।  
प्रा० पञ्चादन—( सं० पंच ) श्री०  
सभा जहां पांच आदमी मिलकर  
विषय चर्चा है, विचार करने

की सभा ।

सं० पञ्चाल—पु० पंजाबदेश ।

सं० पञ्चालिका—श्री० कठपुतली,  
गुड़िया, गुट्टा, २ द्रौपदी ।

सं० पञ्चावस्था—श्री० बाल्य, कुमार,  
पौगंड, युवा, वृद्धा ।

सं० पञ्चेन्द्रिय—( पञ्च + इन्द्रिय )  
श्री० पाच=इन्द्रि, ( इन्द्रिय शब्द  
को देगा ) ।

सं० पञ्जर—( पञि=रोकना वा घेर-  
ना ) पु० पंमथी, ठडरी, पंसलियाँ का  
समूह, २ पिजरा ।

सं० पट—( पट्—घेरना वा बँटना ) पु०  
कपड़ा, पट्टा, २ पगड़ा, आड़, मोटा

प्रा० पट ( सं० पटन, पट=माना )  
पु० गिरने या मारने का शब्द, २  
झिवाड़, भिगमिल, गु० ऊपर,  
नीचे, उलटा, ऊँचा ।

सं० पटक—क० पु० देश, कनाक,  
पटाव, दावनी काग र होने की जगह ।

सं० पटकार—क० पु० मुलाहा, कोरी,  
तुलनेवाला ।

सं० पटवार—पु० जीर्णोपग, निषादा,  
२ खोर, संव देनेवाला, ठग ।

प्रा० पटकन—( पटकना ) श्री०  
पड़ाइ, धँड ।

प्रा० पटकनमाना—बोत= पड़ाइ  
माना, नीचे गिरना ।

प्रा० पटकना—दि० ग० पड़ाइना

बि गिराना, दे मारना ।

पटका ( सं० पट्ट=बैठना वा बैठना ) पु० कपरबंधा, दुष्टा ।

पटड़ा } ( भं० पट्ट, पट्ट=घेरना )

पट्टरा } पु० तल्लुना, पाटा, पीड़ा ।

पट्टर-गु० बराबर, समान ।

पट्टना-क्रि० अ० मिलना,

र पाना ( जैसे हुंटी का पट्टना )

( पानी सींचा जाना, पनियाना,

भरना, ऋद्धाया जाना, दूध माना ।

पट्टना ( सं० पाटलिपुत्र ) पु०

उहरकानाम जो सूखे विहार में है ।

पट्टनि-पु० रुगड़े, बख्त, उदना ।

पट्टानी } ( पाट + रानी )

पाट्टानी } स्त्री० पट्टनी और

बड़ी रानी, महारानी ।

पट्टी ( सं० पट्ट, पट्ट=घेरना )

स्त्री० लिखने की पट्टी, पट्टिया, त-

ल्ली, २ बड़ी सड़क ।

पट्टल—( पट्ट=कपड़ा, वा भाद,

ला=लेना ) पु० टकने का कपड़ा,

परदा, २ आँख का परदा, ३ समूह ।

पट्टली-स्त्री० पांत, पंक्ति, धेनी ।

पट्टवाय-पु० कनान, नग्ग, डेरा ।

पट्टवारी-पु० गाँव का हिसाब

रखनेवाला ।

पट्टह—पु० बाना, पटा, रंका,

नङ्गारा, नगारा ।

प्रा० पट्टा—( सं० पट्ट, पट्ट=घेरना )

पु० पाट, पाटा, आसन जिस पर

हिन्दू लोग बैठ कर पूजा करते हैं

अथवा खाना खाते हैं, २ गद्दा ।

प्रा० पट्टाका } पु० टोटा, मुर्गी,

पट्टाखा } सुन्दर ।

प्रा० पट्टाना—क्रि० सं० सींचना,

पानी देना, पनियाना, २ चीका

देना, लीपना, धोपना, ३ छत को

कड़ी अथवा धरन से छाना, ४

हुंटीके रुपये पाना, ५ भगड़ा शांत

होना, भाग शांत होना ।

प्रा० पट्टाव—भा० पु० सिंघार, २

छत बनाना, द्वारके ऊपरका काठ ।

प्रा० पट्टिया ( सं० पट्टिका ) स्त्री०

पट्टी, पट्टी, स्लेट, २ पु० गलेमें पहनने

का एक गहना, ३ शिरके गुदे चार ।

सं० पट्टीर-पु० बसफोड़, २ चंदन,

३ घटा, ४ मूल, ५ केदार, बपारी,

६ कामदेव, ७ चलनी, ८ परीरा,

९ रांग, १० खदिर, ११ उदर ।

सं० पट्ट ( पट्ट=जाना वा चपकना ) गु०

चतुर, निरुण, प्रवीण, नेज, होशियार ।

सं० पट्टत्व—भा० पु० } ( पट्ट )

पट्टता भा० स्त्री० } चतुराई,

निपुणता, प्रवीणता ।

प्रा० पट्टवा ( पाट ) क० पु० रेशम





२ बीस गंडे अथवा सं० कौड़ी का परिमाण, ३ व्यर्थहार, लेनदेन, मूल्य, वेतन, शक, साग, करार ।

सं० पणन-भा० पु० विक्रय, बेचना ।

सं० पणित-र्म० पु० बेचागया स्तुत ।

सं० पणव-(पण=व्यवहार का ज्ञाना अथवा पण=सराहना) पु० छोटा होल । [बुद्धि, मति, समझ ।

सं० पण्डा-(पण=सराहना) श्री०

प्रा० पण्डा-(पं=पंडित) पु० दुजारी ।

सं० पण्डित-(पण्डा=बुद्धि) पु० बुद्धिमान्, विद्वान्, पंडा हुआ, विद्वन्, २. पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक । [भिक्षा, धर्म ।

सं० पण्डितमन्य-पं० पु० विद्वान् ।

प्रा० पण्डु-(पं=पण्डु) पु० दि-  
ल्ली का पुराना राजा, हुनो का पति, और दुर्बिष्ट आदि पाँचों पाण्डवों का बाप ।

सं० पण्य-(पण=लेन देन करने का सराहना) भा० पु० बेचने योग्य, लेन देन करने योग्य, व्यवहार करने योग्य, बेचने की वस्तु, व्यापिक, २ सराहने योग्य ।

सं० पण्यनाला-(पण्य=लेन देन करने योग्य, रत्ना=वस्त्र) श्री० दुकान, हाट, बाजार ।

सं० पण्यस्त्री-(पण्य+स्त्री) श्री० बेचपा, नपारकी, दुर्बिष्ट, रत्नी ।

प्रा० पत-(सं० पद=अधिकार) श्री० प्रतिष्ठा, इज्जत, आदर, बड़ाई, नामकरी, २ (सं० पति) पु० स्त्री, मधु, धनी, मालिक, मर्चा, ३ (सं० पत्र) पचा ।

सं० पतह-(पतन=गिरना, पतन=गिरना) पु० सूर्य, २ पड़ह, पंगु, टिहरी, उड़नेवाला कीड़ा, ३ गुड़ी, कनकव्या, ४ पालकड़ी जिनसे रंग निकलता है, पारा ।

प्रा० पतहा-पु० विनमारी, विनयी ।

सं० पतञ्जलि-पु० शेष, परामाण्य का बनानेवाला अर्थशास्त्र ।

प्रा० पतझड़-(पत=पतना, झड़=झड़ना) श्री० पड़ अथवा नाम त्रिम में हड़ों के पड़े झड़ जाने हैं, शिशिर ।

सं० पतन-(पद=गिरना) पु० पड़ना, गिरना, पड़क, पड़कन, पड़ना ।

सं० पतन-पु० पड़, पड़, पड़ ।

सं० पतनप्रद-पु० पीडादान, अन्-  
शेष, शेष, लघुहर ।

प्रा० पतला-(सं० पतन) पु० पतल, भीना, पिरिन, दारिक, २ दुकान ।

प्रा० पतवार-श्री० पतन में पड़ बीज जिनसे प्रसूत बनना या नही, नव का समय ।

प्रा० पता-पु० दिक्क, बिना, गोज ।

सं० पताका-(पद=पतन)

सं० पनस—(पन्=सराहना) पु० कट-  
हर, २ वन्दर का नाम ।

प्रा० पनसारी—( सं० पण्य=वेचने  
योग्य वस्तु, गृह=फैलाना) पु० पसारी ।

प्रा० पनसोई—स्त्री० छोटी नाव ।

प्रा० पनहारिन्—( सं० पानीय हा-  
पनहारी ) रिणी, पानीय=  
पानी, हरिणी=लानेवाली ) स्त्री०  
पानी भरनेवाली ।

प्रा० पनही—( सं० पन्नद्धी, पद=पांव,  
नह=वाँधना ) स्त्री० जूता, जूनी,  
पगरसी ।

प्रा० पनारी—( सं० मणाली ) स्त्री०  
पनाली । मोरी, नाली, पणाली ।

प्रा० पनिया—( सं० पानीय ) पु० पानी,  
जल, गु० पानी का ।

प्रा० पनियाना—( पानीय ) क्रि० सं०  
सींचना, पानी देना ।

प्रा० पन्थ—( सं० पन्था, गम्=गाना )  
पु० रस्ता, मार्ग, राह, २ मत, धर्म ।

सं० पन्नग—( पन्न=गिरता हुआ, वा  
नीचे झुँक फिरे, गम्=चलना, वा पद=  
पैर, न=नहीं, गम्=चलना, जो पैरों  
से न चले ) पु० साँप, सर्प, नाग ।

सं० पन्नगारि—( पन्नग=साँप, अरि=  
वैरी ) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन ।

सं० पन्नगाशन—( पन्नग=साँप, अश्न  
=खाना ) गरुड़, विष्णु का वाहन ।

प्रा० पनही—( सं० पन्नद्धी वा पन्नद्धी,

नह=वाँधना ) स्त्री० उपानह, जूता,  
पदत्राण । [ पन्ना, २ नीलमणि ।

प्रा० पन्ना—( सं० पर्ण ) पु० पत्र,  
सं० पपि—( पा=पीना ) क० पु० पीने  
वाला ।

सं० पपिम्—( पु० सूर्य, चन्द्रमा, रत्नक,  
पपी ) पीनेवाला ।

प्रा० पपनी—स्त्री० आँख की घरनी ।

प्रा० पपिहा—( पु० एक पखेरू जो  
पपीहा ) बरसातमें बहुत बोला  
करता है ।

सं० पपु—( पा=पाकना ) क० पु० पालक,  
पालनेवाला, रत्ना, रत्नक, पिता,  
पालक, स्त्री० माता, धात्री, दाई,  
उपमाता, धाय ।

प्रा० पपोटा—पु० पलक, आँसू का पुट ।

सं० पयः—( पा=पीना ) पु० दूध,  
२ पानी, जल ।

प्रा० पयनिधि—( सं० पयः  
पु० समुद्र ।

सं० पयः—( सं० पयः )

दा=देना ) पु० बादल, बदल ।  
 सं० पयोधर-( पयस्=पानी वा दूध,  
 धर=रखनेवाला, धृ=रखना ) पु०  
 धेय, बादल, २ स्त्रीकी सूँची, स्तन,  
 ३ नारियल, ४ गद्या, ५ सुगंधित  
 घास, ६ पर्वत, दुग्धवृक्ष ।  
 सं० पयोधि-( पयस्=पानी, धा=रख-  
 ना ) पु० समुद्र, ७ सागर ।  
 सं० पयोनिधि-( पयस्=पानी, निधि  
 =खजाना ) पु० समुद्र, सागर ।  
 सं० पयोराशि-( पयस्=पानी, राशि=  
 समूह, ढेर ) पु० समुद्र, सागर ।  
 सं० पर-( पू=भरना ) पु० दूसरा,  
 पराया, और, भिन्न, अन्य, विदेशी,  
 परदेशी, २ दूर, परे, अन्तर, पर, ३  
 पिछना, ४ उच्च, श्रेष्ठ, शिरोमणि,  
 प्रधान, सब से बड़ा, ५ विरोधी,  
 प्रतिहूल, ६ बहुत, अत्यन्त, अधिक,  
 तत्पर, लगा हुआ, पु० बैरी, शत्रु,  
 क्रि० वि० केवल, इसके पीछे,  
 समुच्च० परन्तु, किन्तु, लेकिन ।  
 प्रा० पर-( सं० उपरि ) नित्य सं०  
 ऊपर, वै ।  
 सं० परकीया-( पर=दूसरा ) स्त्री०  
 दूसरे की स्त्री, पराये पुरुष के पास  
 जानेवाली स्त्री ।  
 ० परख-( सं० परीक्षा ) स्त्री०  
 जाँच, इम्तिहान, परीक्षा, कसौटी ।  
 ० परखना-( सं० परीक्षण ) क्रि०

स० जाँचना, परीक्षा करना, देख-  
 ना, निराखना ।  
 प्रा० परचूनिया-पु० आटा दाल  
 बेचने वाला, मोदी, यनियर् ।  
 प्रा० परछना-क्रि० स० दुल्हा और  
 दुल्हिन बीं आरती उतारना ।  
 प्रा० परजंक-( सं० पर्यङ्क ) पु० पलंगी  
 सं० परजात-( पर=अन्य, जात=  
 उत्पन्न ) र्थ्य० पु० अन्य से उत्पन्न,  
 दूसरे से पैदा हुआ, वर्णसंकर, मार-  
 ज, यार से पैदा किया गया,  
 २ दूसरी जात का, दूसरे कौमका ।  
 प्रा० परत-स्त्री० पुट, तह, चुनत,  
 लड़, थाक, २ नकल, कापी ।  
 सं० परतन्त्र-( पर=दूसरा, तन्त्र=  
 प्रधान है जिस का, अथवा पर=  
 दूसरे के तन्त्र-बश में ) पु०  
 परवश, पराधीन, दूसरे के बश ।  
 प्रा० परतला-० तलवारकी पट्टी ।  
 प्रा० परती-( पढ़ना ) स्त्री० पढ़ी  
 धरती, बिन कोई धरमी, चंनर ।  
 सं० परत्र-अध्य० अन्यत्र, परलोक,  
 और जगह, दूसरी जगह ।  
 सं० परत्व-मा० पु० मिश्रता, दुर्दार,  
 कासला, शत्रुता, श्रेष्ठता, महत्त्व ।  
 सं० परदेश-( पर=दूसरा, देश=मुलक )  
 पु० विदेश, पराधादेश, और मुलक ।  
 सं० परदेशी-( परदेश ) पु० विदेशी ।  
 सं० परन्तप-पु० शत्रु, दुष्ट, पु० शत्रु=



सं० परमायुस् - ( परम + आयुस् ) पु०  
पु० बड़ी उमर, दीर्घायु, दी-  
र्घायु, दशसत्वर ।

सं० परमेस्वर - ( परम + ईश्वर ) पु०  
सर्वशक्तिमान्, परमान्वा, ईश्वर ।

सं० परमेष्ठ - ( परम + ईष्ट ) पु० श्रेष्ठ,  
प्रधान, परमेश्वर, प्रसा, देवता ।

सं० परमेष्ठिन } पु० प्रसा, गुरु ।  
परमेष्ठी }

सं० परमोदार - ( पर = पड़ा, उ-  
दार = दातार ) पु० बड़ा दातार,  
श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० परम्परा - ( परम् = पड़ना, पृ वा  
पू = पूरा करना वा भरना ) स्त्री०  
सन्तान, वंश, पीढ़ी, २ रीति, परि-  
पाटी, क्रम, अनुक्रम, पुराने समय  
की रीति, क्रदामत, परंपरा से, किं०  
वि० पहले से, अगले समय से ।

० परला - ( सं० पर ) पु० दूसरी  
ओर का, उस तरफ का ।

परलोक - ( पर + लोक ) पु०  
१, दूसरा लोक, मृत्यु, श्मशान,  
यजन, श्रेष्ठजन ।

वश ( पर = दूसरे के, वश =  
नि ) पु० पराधीन ।

1 { ( पर = बैरी, मृ = मारना,  
नाराकरना ) पु० फ-  
रसा, कुल्हाड़ी, टांगी ।

र - ( पर + र = फरसा, धृ = रत्न-  
ना ) पु० परगुराम ।

सं० परगुराम - ( पर + गुराम,  
फरसा रत्नगाला राम ) पु० गुराम  
कपिता बेटा और विष्णुका  
अवतार जिसने रामा-सदृश  
को मारा और इसीसे गुरा पुरि  
के सब छत्रियों को नारा किया ।

सं० परवश - पु० पराधीन, पराय  
भरोसा, पराया सहारा ।

प्रा० परस - ( सं० सार्श ) पु० छूना,  
गुहावत, स्पर्श ।

प्रा० परसत - कि० वि० छूने की, स्पर्श  
करते ही ।

प्रा० परसना - ( सं० सार्श, स्पर्श =  
छूना ) कि० सं० छूना ।

प्रा० परसों - ( सं० परश्म, पर =  
पिछला वा दूसरा, श्म = कल का  
दिन ) कि० वि० आगे वा पीछे  
का तीसरा दिन । [ ठहरना ।

प्रा० परस्यो - पु० रहना, वास करना,  
सं० परस्पर - ( पर = दूसरा, पर = दूसरा )  
कि० वि० आपस में, दोनों में,  
अन्योन्य एक दूसरे को, वास्व ।

सं० परा - उपस० उलटा, पीछे,  
विपरीत, २ प्रभुता, बढ़ाई, ३ विरोध,  
४ अहंकार, ५ अनादर, तिरस्कार,  
६ बहुत, अधिक, ७ जोर, बल,  
सामर्थ्य, ८ से ।

प्रा० परा - पु० पात, श्रेणी, दल,  
समूह, पंढली, से ।



सं० परिहास्य—स्पर्ध० पु० हसी के  
लायक, हँसनेयोग्य ।

सं० परिहित—स्पर्ध० पु० आच्छादित,  
चेरादुआ, आच्छाद, गुम पोशीदा ।

सं० परीक्षक—( परि=चारों ओर से,  
ईश्व=देखना ) भा० पु० परीक्षा करने  
वाला, परखनेवाला, इम्तिहान  
छेनेवाला ।

सं० परीक्षा—( परि=चारों ओर से,  
ईश्व=देखना ) भा० स्त्री० परख, नाँच,  
इम्तिहान । [ को देखो ।

सं० परीक्षित—पु० परिचित गुण

सं० परीक्षोत्तीर्ण—( परीक्षा + उत्ती-  
र्ण, तृ=भरजाना ) गु० परीक्षा में  
पुरा, इम्तिहानपास, केननहीं, गस ।

सं० परूप—( पृ=भरना, गु० कठोर,  
कड़ा, पु० कुचबन, गाली ।

प्रा० परे—( सं० पर ) क्रि० वि० उधर  
उस ओर, दूर, परे रहना, बोल०  
दूर रहना ।

प्रा० परेखा—( सं० परीक्षा ) स्त्री०  
परख, नाँच, देखतावा, परचाचाप ।

सं० परेत—( परा, इग=जाना ) पु०  
भूत, पिशाच, शैवान, गु० मुर्दा, मृतक ।

प्रा० परेता—पु० रहता, चर्खा, चर्खी ।

प्रा० परेवा—पु० कपोत, बध्तर,  
प्रतिष्ठा । [ कल, कर्दा ।

सं० परेशुम्—अव्य० दूसरा दिन,  
परीक्ष—( पर=परे, अक्ष=माँस )

गु० नहीं देखा हुआ, आँखोंके परे ।

सं० परोपकार—( पर=दूसरे का,  
उपकार=मला ) पु० दूसरेका मला,  
पराये का दिव ।

सं० परोपकारी—( परोपकार ) गु०  
दूसरे का मला करनेवाला ।

प्रा० परोस—पु० समीपता, श्वेदा,  
नजदीकी ।

प्रा० परोसना—( सं० परिवेषण,  
परि=चारों ओर से, विष्=फैलाना )  
क्रि० म० खाना पचनोपे रखना,  
खाना चुनना, पचल लगाना ।

प्रा० परोहा—( सं० परीवार, परि=  
सब ओर से बढ़=छे जाना ) पु०  
वरस, मोट, पुर ।

सं० पर्कटि—स्त्री० पाकरि, पकरिया ।

प्रा० पर्चा { ( सं० परीक्षा ) पु० परख,  
पर्चा } नाँच, परीक्षा ।

प्रा० पर्चाना—( सं० परिवचन ) क्रि०  
सं० भेंट कराना, मिलाना, बातों  
में लगाना ।

प्रा० पर्छाई—( सं० मतिच्छाया, पति  
=अपने रूप, छाया=छाँव ) स्त्री०  
पतिविम्ब, अक्स ।

सं० पर्ज्जन्य—( पृष्=सींचना, पर्जन्य  
गर्जना ) क० पु० मेघ, इन्द्र, मेघ-  
गर्जन, नवीन मेघ, बरसाती + मेघ ।

सं० पर्ण—( पर्ण=हराशोना, वा पृ=  
भरना ) पु० पत्ता, पान ।



सं० परिंरंभ- (परि+रंभ=उत्सुक  
होना) पु० आलिङ्गन, भेटना,  
श्लेष, मुलाकात ।

सं० परिवर्जन- (परि+वृज्=त्या-  
गना) भा० पु० मारना, त्यागकरना ।

सं० परिवर्त्तन- (परि, वृत्=होना,  
परि परि उपसर्ग के साथ आने से  
इसका अर्थ बदलना होता है) पु०  
बदल, पराफेरी, पलटना, तबादिल ।

प्रा० परिवा- (सं० प्रतिपदी) स्त्री०  
पलकी परिलीटिधि, पहली तारीख ।

परिवाद- (परि=वृत्, वद=  
कहना) पु० गाली, निन्दा, अप-  
वाद, दुर्वोद ।

सं० परिवादक- क० पु० निन्दक,

सं० परिवार- (परि=चारों ओर से  
वृ=घेरना वा दबना) पु० पराना,  
कुटुम्ब, परिवन्ध ।

सं० परिवारण- (परि, वृ=घेरना) भा०  
पु० मांगना, तकाजा करना ।

सं० परिवह- (परि, वह=बहना) पु०  
उपद्रव, जलका, बहलना, बहाव,  
चहचहा, तरंग, लहर ।

सं० परिवृत- (परि=चारों ओर से  
वृत्=रहना) भ्म० पु० रक्षित आ-  
च्छादित, घिरा हुआ, परिबेष्टित ।

सं० परिवेष्टन- (परि, वेष्ट=लपेटना)  
भा० पु० लपेटना, लिफाफा ।

सं० परित्राज- (परि=सब तरफ  
परित्राजक) वा उपकाम छोड़

के, ब्रह्म=फिरना) क० पु० संन्यासी,  
यती, योगी, गुसाई ।

सं० परिशिष्ट- (परि, शास्=सिखाना) क०  
पु० अवशेष, तितिम्मा, बाकी, अवशिष्ट ।

सं० परिशोधन- (परि, शुध्=शुद्ध कर-  
ना) भा० पु० श्रृणुचुकाना, कर्जा  
अदा करना, कर्चा करना ।

सं० परिश्रम- (परि=चारों ओर से  
श्रम=मिहनत करना) पु० मिहनत,  
श्रम, मेकाबू ।

सं० परिश्रान्त- भ्म० पु० थक गया ।

सं० परिश्रमी- क० पु० मेहनती ।

सं० परिपद- (परि+सद्=जाना)  
अनुचर, सेवक, समासद ।

सं० परिष्कार- (परि+कार, कृ=  
करना) भा० पु० सफाई, स्वच्छता,  
शुद्धता । धूयित ।

सं० परिष्कृत- भ्म० पु० अलंकृत,

सं० परिष्वंग- पु० आलिङ्गन, भेटना,  
हमागोश होना ।

प्रा० परिहरना- (सं० परिहरण परि,  
हृ=होना) क्रि० सं० छोड़ना,  
दूर करना ।

सं० परिहार- परि+हार, हृ=ह-  
रना, लेना) भा० पु० हरना, लेना,  
छीनना, अवज्ञा, अपमान, न्याय ।

सं० परिहाम- (परि=बहुत, हस=  
हँसना) भा० पु० हँसी, ठट्ठा, की-  
तुक, खल, मरखरी, लोकापवाद ।

सं० परिहास्य-र्म० पु० इसी के  
लापक, हैमनेयोग्य ।

सं० परिहित-र्म० पु० आच्छादित,  
पेरा हुआ, आच्छन्न, गुप्त पोशीदा ।

सं० परीक्षक-(परि=चारों ओर से,  
इक्ष=देखना) भा० पु० परीक्षा करने  
वाला, परखनेवाला, इन्तिशान  
छेनेवाला ।

सं० परीक्षा-(परि=चारों ओर से,  
इक्ष=देखना) भा० स्त्री=परख, मांच,  
इन्तिशान । [ को देखो ।

सं० परीक्षित-पु० परिक्षित शब्द

सं० परीक्षोत्तीर्ण-(परीक्षा+उत्ती-  
र्ण, कृ=भारमाना) गु० परीक्षा में  
पूरा, इन्तिशानपास, केननहीं, पास ।

सं० परुष-(पृ=भरना) गु० बटोर,  
कड़ा, पु० कुरबन, गाली ।

प्रा० परे-(सं० पर) क्रि० वि० उधर  
उस ओर, दूर, परे रहना, बोन  
दूर रहना ।

प्रा० परेखा-(सं० परीक्षा) स्त्री०  
परख, मांच, देखनावा, परखाचाप ।

सं० परेत-(परा, इण्=माना) पु०  
मृत, पिशाच, भैरान, गु० दुर्गा, मृतक ।

प्रा० परेता-पु० ररटा, बरता, बरती ।

प्रा० परेता-पु० बरतो, बरता,  
मरिचदा । [ बल, बर्दा ।

प्रा० परेशुम्-अरु० दूषण दिन,

प्रा० पराम-(पर=परे, मस=मांस)

गु० नहीं देखा हुआ, मांसोंकेपरे ।

सं० परोपकार-(पर=दूसरे का,  
उपकार=मला) पु० दूसरेका मला,  
पराये का हित ।

सं० परोपकारी-(परोपकार) गु०  
दूसरे का मला करनेवाला ।

प्रा० परोस-पु० समीपता, खेड़ा,  
नजदीकी ।

प्रा० परोसना-(सं० परिवेषण,  
परि=चारों ओर से, विष्=फैलाना)  
क्रि० म० खाना पचलोंमें रखना,  
घाना चुनना, पचल लगाना ।

प्रा० परोहा-(सं० परीवार, परि=  
सब ओर से बढ=ले जाना) पु०  
वरम, मोट, पुर ।

सं० पर्कटि-स्त्री० पाकरि, पकरिषा ।

प्रा० पर्चा (सं० परीक्षा) पु० परख,  
पर्चा } मांच, परीक्षा ।

प्रा० पर्चाना-(सं० परिवेषण) क्रि०  
स० भेंट कराना, मिलाना, बाँटो  
में लगाना ।

प्रा० पर्छाई-(सं० मन्त्रिच्छाया, पानि  
=मपने कर, दाया=छाँव) स्त्री०  
पनिदिम्ब, मयम ।

सं० पर्जन्य-(पृष=मीनना, गर्भ=  
गर्भना) पु० पु० देव, इन्द्र देव-  
गर्भन, वर्षा देव, वरदात्री देव ।

सं० पृथ्वा-(परि=हरा होना, वा दृ=  
भरना) पु० वरदा, पान ।

सं० पर्णकार—क० पु० वर्ग, तन्मोली।

सं० पर्णशाला (पर्व=पत्ता, शाखा  
=वर्ग) स्त्री० पत्तों की बनी कुटी, भोपड़ी।

सं० पर्णी—क० पु० वृत्त, पेड़।

—(पर्व + गना या पूरा होना)

गोंड, गिरह।

सं० पर्व—(परि=प्राप्त, अङ्क=गोटे

अङ्क=माना या चिह्न करना) पु०  
पलंग। [पथिक।

सं० पर्यटक—क० पु० मुसाफिर,

सं० पर्यटन—(परि=चारों ओर, अ-  
टन=चूमना) भा० पु० घूमना, भ्र-  
मण करना, सफर करना, सै-  
र करना।

सं० पर्यन्त—(परि=प्राप्त, अन्त-  
सीमा) पु० अन्त, सीमा, दद,  
अव्य० तक, तलक।

सं० पर्याप्त—(परि=चारों तरफ, आ-  
प्त=व्याप्त होना) पु० समर्थ, तुम योग्य।

सं० पर्याय—(परि=चारों ओर से,  
इष्ट=माना) पु० एक अर्थ का शब्द,  
इकार्थी शब्द २ — सीति, ३  
प्रकार, ४ प्रवर्णन।

—(परि

बोधक, सुतरादिक

—(परि

करना, सब प्रकार से देखना।

सं० पर्व—(पृ=भरना) पु० त्योहार,  
उत्सव, अध्याय, परिच्छेद, रेगांडी।

सं० पर्वणी (पृ=भरना) स्त्री०  
पर्वणी } त्योहार, उत्सव,  
तिवहार।

सं० पर्वत—(पर्व=भरना) पु० पहाड़,  
शैल, गिरि, भूवर।

सं० पर्वतारि—(पर्वत + अरि) पु० शत्रु।

सं० पर्वतीय—(पर्वत गु० पहाड़ी,  
पहाड़ का।

सं० पल—(पल=माना स्त्री० पड़ी  
का साठवां भाग, निमेष, दम, आन,  
लक्ष्मा। [रुग निकारी, दूरकी।

प्रा० पलगात्रि—क्रि० वि० निवार,  
प्रा० पलभरमें—बोल० तुम्ह, उसी  
दम, पल मारने। [भरमें।

प्रा० पलमारने बोल० तुम्ह, पल

प्रा० पलक—स्त्री० आन्ध का पुट, प-  
पेटा, बरुनी, पपनी, २ पल, क्षण।

प्रा० पलंग (सं० पलङ्ग परि + अङ्क)  
पु० मेज, शय्या, रसद, चारपाई।

—टन—(अं० वैतालियन)

१ सिंगरियो का मूँथ, या

क्रि०

प्रा० पलटा-(पलटना) पु० बदला,  
पराफेरी, घटा, बदला बदला,  
२ मतिकल, पीछा, चपार करना,  
३ पीछा पैर छेना ।

प्रा० पलटालेना-बोल० पीछा ले  
लेना, लौटा लेना, २ बदला लेना,  
पैर लेना, पैर सारना ।

प्रा० पलड़ा-पु० तराजू का एक पल्ला ।

सं० पलाण्डु-पु० व्याघ्र, सल्लाम ।

प्रा० पलथी-खी० कूना टेक कर  
जमीन पर बैठना, एक मशर का  
आसन वा बैठने का ढंग ।

प्रा० पलना-(सं० पलन, पल्=च-  
राना) क्रि० अ० पनपना, प्रति-  
पालित होना ।

प्रा० पलवल-(सं० पटोल, पट=  
जाना) पु० परवल, एक तरकारी  
का नाम ।

प्रा० पलवार-पु० एक प्रकार की नाव ।

प्रा० पला-पु० वधानपचा, कलहुड,  
दर्धी, होई, तेल आदि निकालने  
का यंत्र ।

सं० पलायन-पिटा से, अथवा च-  
लटा, अय=जाना) पु० भागना,  
भागभाग ।

सं० पलायक-क० पु० भेगोड़ा ।

सं० पलायित-क० पु० भेगोड़ा,  
प्रस्थित, चम्पत ।

सं० पलाश-(पल्=चलना, अशु-

फैलाना वा खाना) पु० टेसू का  
वृक्ष, दाक का वृक्ष ।

सं० पलित-(पल्=खालना, जाना)

भा० पु० वृद्ध, बुढ़ापा, सफेदवाल,  
गु० वृद्ध, शिथिल, पुराना ।

प्रा० पली-खी० चमची, जिससे  
तेल आदि निकाला जाता है ।

प्रा० पलीत-(सं० पेत) पु० भूत,  
पिराच, पेत ।

प्रा० पलीता(का० पलीता वा फलीता)  
पु० चची, २ वृद्धका तोड़ा, जामगी ।

प्रा० पलेथन-पु० सूखा आटा जो  
रोटीपर चेलने के समय लगाया  
जाता है ।

प्रा० पलेथननिकालना-बोल०  
बहुत मारना, बहुत पीटना ।

प्रा० पलोटना-क्रि० सं० धीरे २  
पाँव दाबना ।

सं० पल्ल-पु० गोला, गोली ।

सं० पल्लव-(पल्=जाना, और ल्=  
घाटना, अथवा पल्=जाना) पु०  
नया पचा, अंकुर, बेल ।

सं० पल्लवग्राही-(ग्रह=लेना) क०  
पु० पत्रा बांधनेवाला, पुरोहित ।

सं० पल्लवित-(पल्लव) पु० नये पत्तों  
वाला, नये पत्तों से युक्त, २ पुनर्जित,  
पुनर्प्राप्त, हर्षित, प्रसन्न ।

प्रा० पल्ला-पु० अन्तर, दूरी, टप्पा,  
२ सहायता, ३ कपड़े का छोर,  
अंचल, छोर, किनारा, ४ कि-

बाढ़, ६ तीनमन बोझका ।

सं० पल्ली-स्त्री० छारकिली, २ स्वल्प  
ग्राम, छोटा गाँव, ३ कुटी, भोपड़ी,  
४ कुटनी । [ चल, अंचल, छोर ।

प्रा० पल्लू-पु० कपड़े का खंड, आं-

प्रा० पल्लूदार पु० कपड़ा जिसका  
पल्ला, मुनहरी वा रूपहरी हो ।

सं० पल्लव-पु० तलैया, पानी का  
भरा गड़हा, छोटा तलाव ।

सं० पवन-(पू=पवित्रकरना) स्त्री०  
हवा, वायु, वपार, यतास, धाव, पवन  
का पून=हनुमान् ।

सं० पवनकुमार-(पवन=हवा, कु-  
मार=बेटा) पु० हनुमान् पवन  
का बेटा । [=बेटा] पु० हनुमान् ।

सं० पवनतनय-(पवन=हवा, तनय

सं० पवनायन-पु० भरोसा, लिङ्ग-  
की, मोसा ।

सं० पवनरेखा-(पवन=हवा, रेखा=  
लाकीर) स्त्री० उग्रभेनकी स्त्री और  
कंस की मा ।

सं० पवनाशन-(पवन=हवा + अ-  
शन=भोजन, अशू=खाना) पु०  
बाहुभक्षर, मर्ग, मार्ग ।

सं० पवनमुत्त-(पवन=हवा, उ-  
त्त=उपर) पु० हनुमान् पवन का

प्रा० पवारना-ठि० स० फे-  
रातना, भेसना ।

सं० पवि-(पू=शुद्ध करना,

दुष्ट जनों को मार पीटकर शुद्ध  
करना) पु० वज्र, इन्द्रकाशस्त्र, हीरा ।

सं० पवित्र-(पू=शुद्ध करना) पु०  
शुद्ध, निर्मल, पापरहित, साफ,  
विमल, पु० यत्रोपवीत, जनेऊ, २  
कुश, ३ नाँवा, जल ।

सं० पवित्रता-(पवित्र) भा० स्त्री०  
निर्मलता, शुद्धता, मफाई ।

प्रा० पवित्री-(सं० पवित्र) स्त्री०  
कुश घामकी अथवा सोना, चांदी,  
और तांबा इन तीनों धातु की  
बनी हुई अंगूठी जिसको हिंदू लोग  
पूजा करने समय पहनते हैं ।

सं० पश-(पश जाना बोधना)  
पु० स्पर्श, बोधना, प्रथना, पीढ़ा,  
गु० छूनेवाला, बोधनेवाला, जन्म ।

सं० पशु-(दृश=देखना, जो सब को  
बराबर देखता है और भले बुरे का  
विचार नहीं करता) पु० चौपाया  
जन्तु, भौव, गाय भैंस घोड़ा आ-  
दि, २ देवता ।

सं० पशुपति-(पशु=देवता, अथवा  
चौपाया (पशुपति) पु०  
पु० महादेव,

पशुपाल }

सं० पञ्चात्—क्रि०वि० पीदे, इसके  
: पीदे; २. पश्चिम दिशा की ओर ।

सं० पञ्चात्ताप—( परचात=पीछे,  
ताप=दुःख ) पु० रक्षतावा, रक्षतावा,  
रक्षतावा ।

सं० पश्चिम—(१२५१=११६) स्त्री०  
 'पश्चिमदिशा, पक्षाद, गु० पश्चिमा ।

सं० पर्यतोहर—(परपनः=देसते २  
हर=सुता लेना) पु० सुनार, २  
मृत्यु, ३ धोर । [ पन्थर, शिना ।

प्रा० पपान-( सं० पाषाण ) पु०

सं० पस (पस्=वांछना, मांड देना)  
पु० वांछना, छना, मु० वांछनेखाना,  
छनेखाना ।

प्रा० पसरना - (मं० पसरण, व=वस्तु.  
सु=बः नाश पैलना) कि० मं० पैलना।

प्रा० पमली—(सं० पार्ष) मं०  
पांमली, १५४४, पांमली ।

प्रा० पमाना - (मं० समारण, सप्त=  
पूग वा टावना) शि० म० बाँद  
विद्यालना, विष्टुदे बाँदनी ये से  
दानी विद्यालना ।

सं० पद्माना—(सं० दत्तानन्द  
नर नाथपति नर) वि० न० पद्माना.  
वि० न० । [देखो]

प्रा० पन्नागि - पु० पन्नागि ३१३ ६०

प्रा० पत्नीलिना - (से० शास्त्रेय व,  
निदेश-पत्नीलिना निदेशिका) वि०

अ० विरलना, नर्य होना, पत्तीना  
निहलना, २ कोपनविष होना ।

प्रा० पमूजना—क्रि० म० बुर्जना वा-  
गना, रोरा हाटना ।

प्रा० पसीना—( मं० वस्त्रेण, प० विर ।  
= नमीना शीता ) व० पमेरु, स्त्रेण ।

प्रा० पसेव—( मं० वसुदेव ) पु०  
पमोवा, ३ अमरकान्त, गरी ।

प्रा० पस्वाना - (मं० पदमाचारिणः।  
 य० पदमाचारः, पदमाचारः कृतः।

प्रा० पह शी० भोर, गढ़वा, रोह,  
भिरसाह, सदेवा ।

प्रा० पदपठना } सेनः धीरसेन,  
पौपठना } लक्ष्मण सेन, से.

शुद्धी के लिये, दिन विहाय ।  
 प्र० पहचान—( १५५५५५ ) रु०

मन्त्रः, ज्ञान एतत्तु. इत्येव, वि-  
नाश, नष्टादि विनाशः. विद ।

प्रा० पहिबानना { सः ६३३३३३ }  
पहिबानना { सः ६३३३३३ }  
सः ६३३३३३

प्रा० एमनता : ( मं० एमनता )  
पुनः प्रा० मं० एमनता :

सहितम् धेनुः, सप्तः  
सप्तः, सप्तः सप्तः सप्तः सप्तः

म. २ (नारायण) - ( १५५८ ) दृ. ४. ४.  
वि. १५. १५५८.

[illegible]



प्रा० पहुप (सं० पुण) पु० फूल,  
 पुहुप } सुमन ।  
 प्रा० पहेली- (सं० प्रहेलि अथवा  
 प्रहेलिका, प्र=बहुत, हेल् वा हेड  
 =मनादरकरना) स्त्री० दृष्टकूट, गूढ  
 मदन श्लेष, बुझवल ।  
 प्रा० पांक (सं० पंक) पु० कीचड़,  
 पांकां } दलदल, कांदा । [तीन ।  
 प्रा० पांच- (सं० पंच) गु० दो और  
 प्रा० पांचसात-बोल० चराराट्ट,  
 चशकुलतां, भ्रंभट्ट, मंजाल ।  
 प्रा० पांजर- (सं० पञ्जर) पु० देसली,  
 पारव ।  
 प्रा० पांडे (सं० पंडित) पु० ब्राह्मणों  
 पांडे } की पदवी, पाउड,  
 अयापक, पदनिवाला ।  
 प्रा० पांती (सं० पंक्ति) स्त्री० कतार,  
 पांती } धेला, छतार, नवली,  
 पांति } मिपारिषों का परी ।  
 प्रा० पांयती- (सं० पादान्त, पाद=  
 पांव + अन्त) स्त्री० पादनत, दिखाने  
 के पैर की ओर ।  
 प्रा० पांय- (सं० पाद, और प्रा० पा)  
 पु० पैर, पद, परण, गोड़ ।  
 प्रा० पांवउठाना- व चलाना-  
 बोल० भट्ट भट्ट चलना, जल्दी  
 जल्दी चलना ।  
 प्रा० पांवउतरना- बोल० चारहा  
 जोड़ चलना, पांव पांड से उतरना ।

प्रा० पांवकांपना या धरथराना-  
 बोल० किसी कामके करनेसे डरना ।  
 प्रा० पाव किसीका उखाड़ना-  
 बोल० किसी को किसी काम पर  
 जमने नहीं देना ।  
 प्रा० पांवकिसीकागलेमें डालना-  
 बोल० किसी मनुष्य को उसी की  
 बातोंसे अथवा तर्कोंसे दोषी अथवा  
 अपराधी ठहराना ।  
 प्रा० पांवचलजाना- बोल० दगम-  
 गाना, अस्थिर होना ।  
 प्रा० पांवजमाना- बोल० रद्द होके  
 ठहरना, पतननी से ठहरना ।  
 प्रा० पांवजमीन पर न ठहरना-  
 बोल० बहुत ममप्रयोग, बहुत गुरु  
 होना, बहुत घमण्ड करना ।  
 प्रा० पांवडालना- बोल० किसी  
 बड़े काम के करने के लिये तैयार  
 होना और उसको गुरुत्व करना ।  
 प्रा० पांवडिगना- बोल० क्लिप्त-  
 ना, विमदना, रयटना, किसी काम  
 में रिसपन डार जाना ।  
 प्रा० पांवतलेमलना- बोल० किसी  
 को दुग देना, विमाना, गताना,  
 पीड़ा देना, गुरुत्व करना ।  
 प्रा० पांव नोटना- बोल० किसी  
 के दिलने में रुक रहना, २. किसी  
 मनुष्य से मिलने के लिये तैयार  
 होना, ३. पक जाना ।



प्रा० पावधोधीपीना—बोल० बहुत  
मानना, किसी का बहुत विश्वास  
करना, बहुत-सुशामद करना ।

प्रा० पावनिकालना—बोल० अपनी  
मर्यादा अथवा हद्द से बढ़ जाना  
२ किसी बड़े कामके करनेसे फिरना  
३ किसी अपराध के करने में  
मुत्तिया होना ।

प्रा० पाव पकड़ना—बोल० गरीबी  
अथवा अधीनी से चिनती करना,  
२ किसी को जाने से रोकना, ३  
अधीन होना, शरण लेना ।

प्रा० पावपड़ना—बोल० धिधियाना,  
गिड़गिड़ाना, गरीबी से चिनती  
करना, सुशामद करना ।

प्रा० पांवपर पाव रखना—बोल०  
दूसरे मनुष्यका चाल चलन ग्रहण  
करना अथवा ले लेना, दूसरे की  
चाल चलना, २ पैर फैल बैठना  
आराम से बैठना, एक पैर को दू-  
सरे पैर पर रखकर बैठना, बड़ा  
तकाजा करना ।

प्रा० पांवपांव } बोल० पैदल, पि-  
पांवोंपांवों } यादेपांव, पैरों ।

प्रा० पांवपीटना—बोल० अधीरतासे  
पारपटवना, २ बुरा कोशिशकरना ।

प्रा० पांवपूजना—बोल० किसीको  
बड़ा मानना, २ किसी से वचना  
भूलग रहना, दूर रहना ।

प्रा० पांवफूंकफूंककरखना—बोल०  
हर एक काम को सावधानी से क-  
रना समझ कर काम करना ।

प्रा० पांवफैलाकरसोना—बोल०  
सुखी रहना, चैनसे रहना, बचाव  
से रहना, बेखटकेरहना, निडररहना ।

प्रा० पावफैलाना—बोल० हठ क-  
रना, अड़ना ।

प्रा० पांवभरजाना—बोल० पांव  
ठिठरना, २ पांव सो जाना ।

प्रा० पांवसगड़ना—बोल० बुरा और  
मूर्खता से भटकना फिरना, बुरा  
चरखाना, २ मरनेके दुगधे होना ।

प्रा० पांवलगना—बोल० प्रणाम क-  
रना, नमस्कार करना ।

प्रा० पांवसेपांववांधना—बोल०  
किसी के पास बराबर बैठा रहना  
अथवा किसी की रूख रखवाली  
रखना । [पासहोना ।

प्रा० पांवसेपांवभिड़ाना—बोल०

प्रा० पांवसोना—बोल० पांव सुन  
हो जाना । [आना ।

प्रा० पांवदवेआना—बोल० पीरे से

प्रा० पांवड़ा—(पांव) पु० बड़ कपड़ा  
अथवा श्वरंजी, सजीचाआदि जिस  
पर बड़ेआदमी पैर रखकर चलतेहैं ।

सं० पांसव—(पांगु=बांधना) पु०

पांशु—पु० पिंडी, धूलि, रेणु,  
सं० पांगु—पु० पिंडी, धूलि, रेणु,

रनोपर्म, हैजे, गुणक-गोषप, स्मृत्य  
गोबर, गोबरका देर, पांस, वरु  
सं० पांशुकां—स्त्री० रेंगु, शूलि, रज-  
स्वला स्त्री, वेरवा ।

सं० पाशुपत्र—पुं० वधुकोशका

सं० पांशुल—पुं० शिव, शूलियुक्त ।

सं० पांशुला—स्त्री० कुजटास्त्री, वेरवा,

“अपांशुलानां पुरि कीर्तिनीपे”

तिरपुः (अ=नहीं, पांशुल=कुलटा

अर्थात् पतिव्रता) ।

प्रा० पाई—(सं० पाद, चौथा भाग)

स्त्री० एक आने का चौथा भाग,

एक पैसा, अंगरेजों पाई एक आने

का चारहवां हिस्सा होता है ।

सं० पाक—(पच=पकना वा पकाना)

पुं० रीथना, पचन, रसोई, पिकनेल,

पकाई हुई दवाई अथवा शौरकोई

घरतु, रेंगलू, २ एकदरबका नोम,

३ फलमासि, ४ दशा, ५ संकेदवाला

(पा=पीना) वालका शिशु, छोट

लहकानी ।

सं० पाकपुटी—पुं० स्थाली, चूल्हा,

चूल्ही, पनाथा, आवी, भेड़ा, पाक-

शाली ।

प्रा० पाकड़—(सं० पकड़ी, पच=पि-

काना वा हना) पुं० एकठुक्का

नाम, पाकड़िया, एक अक्षर का

गुणरहस्य ।

सं० पाकरिपु—(पाक=एकअक्षरका

नाम, रिपु=वैरी) पुं० इन्द्र ।

सं० पाकशाली—(पाक=पकाना,

शाली=घर) पिठे स्त्री० रसोई घर,

२ पाकस्थान, पकाने की जगह ।

सं० पाकशासन—(पाक, पकरात्तस

को नाम, शास=इददना) पुं० इन्द्र ।

सं० पाकुंक—कं० पुं० पकानेवाला,

रसोईघर । [पदददनेवाला ।

सं० पाश्र्विक—पुं० सहायक, हिमायती,

प्रा० पाखर (सं० मखर) पुं० मोड़े

हाथी को बचाने के लिये धार,

भूल ।

सं० पाखण्ड—पुं० दम्भ, हिम्भ, पा-

सण्ड, छल । [प्रकार ।

सं० पाखण्डी—पुं० दम्भ, छली,

प्रा० पाग—स्त्री० पगड़ी ।

प्रा० पागल—पुं० पगला, सिद्धी, उ-

त्तम, आवला, सोदाहा, मुर्ख ।

सं० पाचक—(पच=पकाना) कं०

पाचुक) पुं० पचानेवाली वस्तु

जैसे चरणआदि, २ आग, रसोइया ।

सं० पाचिका—स्त्री० पकानेवाली ।

सं० पाचजन्य—(पचजन=वैद्य से

जुमा अर्थात् चन) पुं० विष्णुकाश ।

सं० पाञ्चाल—पुं० नाम देश ।

सं० पाञ्चाली—स्त्री० द्रौपदी ।

प्रा० पाछे? (सं० पश्चात्) क्रि० वि०

। १ पाछे? पीछे, इसके बाद, इसके

वार=स पार) पु० समुद्र, रेनदी  
केन्द्रोनी सीर, त्रिभारपार, त्रिभार  
पार इस उस पार, ४-द्व, सीव ।

सि० पाराशर—(पराशर) पु० लक्ष्म-  
न शर अष्टिका घेरा घेदेव्यास, पराशर

र के बनाये हुये ग्रंथ, जैसे पाराशर  
रंभृति, भिषुमूत्र आदि । [ जेद्व्यास ।

सं० पाराशर्य—पु० पराशरका पुत्र

सं० पारिज्ञान—( पारी=समुद्र, जन  
=पैदा होना ) पु० देवताओं का ज्ञान

ज्ञ, त्रुंवा, देवतक, सुसंद्रुम, न भूंगा ।

सं० परिणीत—( परि=बहुत, नद=  
सम्पन्न करना ) भा० पु० भवन्व,

बन्धन, रिज्जेदारी, विगादगाना,  
निबन्धनता, चौड़ई ।

सं० पारितथ्य—स्त्री० बेंदी, टिकुनी,  
पु० निज्ञक, यथार्थ ।

सं० पारिपन्थिक—पु० चोर, दग,  
बन्धो, नुटेक ।

सं० पारितोषिक—(परि=बहुत, तुष  
=रमझ होना, भंतुष्ट होना) पु० इ-

पेट, मानिकन, दापन,

सिंह

सं०

को ठिलिया ।

प्रा० पारी—स्त्री० बारी, अवसर, उंसरी ।

सं० पार्थ—( पृथा=कुन्ती ) पु० कुन्ती  
के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम ।

सं० पार्थिव—( पृथ्वी ) पु० पृथ्वीका,  
पु० राजा, २ शिव, पार्थिवी, स्त्री०

सीता, जानका ।

सं० पाणिपार्थिक—पु० नर, नदी,  
विष्णुक, भांड ।

सं० पाणिभाष्य—पु० कूट औपय,  
तपानन, जायिनी, अविरवास्त,

अनादरना ।

सं० पाणिपट—पु० मेरक, पभामद ।

सं० पार्यण पर्व+अन, पर्व=पू-  
र्णकरना ) भा० पु० पर्व अभावम

आदि में जो हो, उन्मव ।

सं० पार्वती । पर्वत-पहाड की  
हिमाचलकी देवी, शिवगानी, दुर्गा ।

सं० पार्श्व पार्श्व=दना व पार्श्व  
मर्ला ) पु० पार्श्व, पार्श्व, २ वगल

के नीचे का भाग, ३ पम्पनियों का

समूह, पु० पाम, नमीन, नजदीक,  
समीप ।

सं० पार्श्ववर्त्ति—(पार्श्व=पाम, वर्त्ति  
होने या रहनेवाला, वृत्त=होना या  
रहना) पु० पाम, लिल, निह  
द्वि, समीप

दिहा तह मिसमें रखकर कचे  
मपकाने हैं, ४ पालना ।

पालक-(पाल्=पालना) क० पु०  
लिनेवाला, बचानेवाला, रक्षक,  
रक्षित ।

पालक-(सं० पालक, पाल=  
बाना, और अङ्ग=माना ) पु०  
मा, एक तरह का साग, २(सं०  
अङ्ग) पत्तंग । [ दपालुका ।

पालकता-भ० पु० परवरिश,

पालकी-(सं० पर्येक, वा पत्येक)  
ही० एक प्रकार की मचारी, चौ-  
पाता, रोती ।

पालन-(पाल्=पालना) मा०  
१० पालना, पोषण, रक्षा, बचाव,  
रक्षाना ।

पालना-(भं० पालन) कि० ता०  
पोसना, बचाना, रक्षा करना, २ पु०  
रिरोता, भूतना ।

पालनीय (पाल्+अनीय) भ्ये०  
पु० पालनेयोग्य, रक्षायोग्य ।

पाला-(सं० पालेय, म=बहुव  
आ=चारों ओरसे, ली=विपलना)  
पु० हिम, बर्फ, टार, गुप्तर, २ (सं०  
पालन) भरोसा, विश्वास, आश्रय  
बचान, ३ बचकी के रेतमें रेतरी  
देड़ ओ बीच में बनाई जाती है, ४  
भड़पेरी के पत्ते ।

पालागन-(सं० पादनान्नः

पाद=पैर, लग्न=लगना) पु० पांश  
का हुना, मणाम करना ।

संपालि-(पाल्=बचाना) स्त्री०  
मागधी भाकृष्णभाषा, मगधदेश की  
मातृभाषा ।

सं० पालित-(पाल्=पालना) भ्ये०  
पु० रक्षित, बचाया हुआ, पाला हुआ ।

संपाली-स्त्री० पंक्ति, कोण, मरांभा,  
परिचय भोजन, पान्थ, कर्णपत्र, कर्ण-  
फूल, सेतु, विह्व अस्त्रीकी धारा, अद्भु,  
झोड़, गोद, उत्तमंग, बनिपों ।

प्रा० पाले-(सं० पालन=बचाव)  
अपीन, बचाव में, हाप में, बरा में ।

प्रा० पालेपड़ना-बोल० दूसरेके बरा  
में आ जाना, जैसे "आमकरवै रत्न  
बालहवाले, परेउवठिनराबणके पा-  
ले" ( रागायण ) ।

प्रा० पाव-(सं० पाद) पु० चौगाई,  
चौथा माग, चौद, चतुर्धारा ।

सं० पावक-(पु०=पवित्र करना) पु०  
आग, अग्नि, गु० पवित्र ।

सं० पावन-(पु०=पवित्र करना) पु०  
पवित्र, पवित्र करनेवाला, स्वच्छ,  
पु० पानी, २ आग, ३ गोधरा, ४  
कुरा, ५ पृथ्वी, ६ स्त्री० ७ मंगल ८ गौर ।

प्रा० पावला-(पाव) पु० चार  
आना, घुरा अर्धवृ मिट्टे का चौपा  
भाग ।

प्रा० पावस (सं० पावस् पा=बहुव



सी बोली हो, मीठी बोलनेवाली स्त्री।  
 १० पिचलना—(सं० प्रगलन, प्र=  
 बहुत, गन्=उपकृता) क्रि० अ०  
 गलना, टिघलना, पानी होना।  
 ११ पिङ्ग—(पिजि=रंगना) गु० पीला  
 कपिल, पीतवर्ण।  
 १२ पिङ्गल—(पिङ्ग=पीला रंग, ला=  
 लेना) गु० पीला, पीतवर्ण, २.  
 दीपा की लौ, सारंग, पु० छन्द  
 शास्त्र का कर्त्ता, छन्दग्रन्थ, कपिल  
 वर्ण, चिपगादर, मूर्ख।  
 १३ पिङ्गरा—पु० हिंदोला, झूला।  
 १४ पिचकारी—स्त्री० पिच्छिका,  
 दमकला। [स्पृज, बड़े पेटवाला।  
 १५ पिचगिडल—क० पु० तोंदवाला,  
 १६ पिचु—पु० रुई, कपास, कर्प, नाम  
 अमुर, शस्यभेद, कुष्ठभेद।  
 १७ पिचुमन्द—(पिचु=कुष्ठ मन्द=  
 जड़ करना) नीच वृत्त।  
 १८ पिच्छ—पु० पेंड, मोरपंख, मुकुट,  
 मोर, रिंसा, कपास वृक्ष, केला,  
 सेदर, भात का माँड़, घोड़े के पैर  
 का रोग। [पिंसलना।  
 १९ पिछलना—क्रि० अ० फिसलना,  
 २० पिछलपाई—स्त्री० चुड़ैल, सुवनी।  
 २१ पिछला—(पीछा) गु० पीछेछा,  
 पिछाड़ी का, नया।

प्रा० पिछवाड़ा-पु० } (पीछ) }  
 पिछवाड़ी-स्त्री० } पीछ का  
 भाग, पीछा। [पिछला भाग।  
 प्रा० पिछेत—(पीछा) पु० घर का  
 प्रा० पिछोरा-पु० } दोहर, चहर,  
 पिछोरी-स्त्री० } दुआड़ा, ओढ़नी।  
 सं० पिञ्जन—पु० मारणे, रुई का  
 ओढ़ना, रुईघुनना, धनुही।  
 सं० पिञ्जर—(पिजि=शब्दकरना, वा  
 रहना जिस में पस्तेरु शब्द करते हैं  
 वा रहते हैं, वा पिजि रंगना) पु०  
 पिमरा, पस्तेरुओं का घर, २ पीला  
 रंग, लाल और पीला मिलाहुआ  
 रंग, मूरा रंग।  
 प्रा० पिञ्जरा—(सं० पिमर) पु०  
 पस्तेरुओं के रहने का काठका घर,  
 पिमरा होना, बोल० दुबला होना।  
 सं० पिञ्जल—पु० अतिसवन, मिला  
 हुआ पु० विनायक, नंकरण, मोशन,  
 बिष्टर अर्थात् कुशा।  
 प्रा० पिञ्जियारा—(पिजिना) पु०  
 घुनियाँ, रुई पीननेवालों, रुई  
 घुननेवाला। [पिञ्जल।  
 सं० पिञ्जल—पु० बर्तिका, बची,  
 सं० पिञ्जुप—पु० पीप, सेंडक, पिडारा,  
 पिडारी, लोभी, खड़ी।  
 सं० पिट—पु० सेंडक, टोकरी, पिडारी,



१० पुण्य—(पु=पवित्र होना) पु० पुं०  
पवित्र काम, सुकृत काम, धर्म, गुं  
पवित्र, शुद्ध, पावन, सुन्दर, सुगंधित।

३० पुण्यकृत—क० पु० धार्मिक।

३० पुण्यजनक—क० पु० पुण्यो-  
त्पादक, पुण्यकर्ता।

सं० पुण्यभूमि—(पुण्य=पवित्र, भूमि  
=धरती) स्त्री० पवित्र धरती, धार्मिक-  
धर्म, अन्तर्बद्ध।

सं० पुण्यवान्—(पुण्य=धर्म, वन्=  
वाला) गुं० धर्मात्मा, धार्मिक।

सं० पुण्यात्मा—(पुण्य=पवित्र, आ-  
त्मा, मन, जिसकी आत्मा धर्म में  
लगी हो) गुं० पुण्यवान्, धर्मात्मा,  
पवित्रात्मा।

प्रा० पुतला } (सं० पुतल) पु० स्त्री,  
पूतला } काठकी बनी हुई मूर्ति।

प्रा० पुतली } (सं० पुतली) स्त्री०  
पूतली } आँस का तोरा, २  
काठ की मूर्त। [मूर्ति]।

सं० पुत्तिका—स्त्री० पुतली, २ छुद्र

सं० पुत्र—(पुत्र=पुत्र, नरक का नाम,  
प्रे=वचाना, जो पुत्र=नाम नरक से  
अपने बाप को वचाने) पु०, पु०।

सं० पुत्रिका } (पुत्र) स्त्री० घेरी,  
पुत्री } लक्ष्मी, कन्या, २  
गुहिया।

प्रा० पुन } (सं० पुनर) समुच्च-  
पुनि } फिर, बहुरि, पीछे।

सं० पुनःपुनः—(पुनर=बारबार, पु-  
नः=पुनः 'करना') स्त्री० पुनपुन  
नदी जो मरने से पाँच फीस गयी  
के रास्ते पर है, “कीटेषु यथा  
पुनःपुनः नदी पुनःपुनः” (व. सु-  
पुराणा) विर्य—कीट अर्थात् म-  
गय देश में गया और पुनपुन नदी  
पवित्र है।

सं० पुनःपुनर—अव्य० बारबार, फिर

सं० पुनर—अव्य० मरम्, निश्चय,  
अधिकार, भेद, पक्षान्तर, फिर  
फिर और।

सं० पुनरागमन—(पुनः=आगमन)  
भा० पु० फिर आना, लौटना।

सं० पुनरुक्ति—पुनर=फिर, वक्ति  
=कहना) स्त्री० फिर कहना, दो-  
बार करना।

सं० पुनर्जन्म—(पुनर=फिर, जन्म=  
पैदा होना) पु० दूसरा जन्म।

सं० पुनर्भव—पु० जन्म, नई, पुनर्जन्म,  
दूसरी पैदाइश।

सं० पुनर्वसु—(पुनर=फिर, वसु=  
रहना) पु० सातवां नक्षत्र, शुक्र,  
शुनि भेदा।

सं० पुनीत—(पुन=पवित्र होना) गुं०  
पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ। [पुण्य]।

सं० पुमान्—क० पु० पुरुष, आदमी,  
सं० पुर—(पुर=आगे जाना, वाप-  
भरना) पु० नगर, शहर, २ घर,



१३ देह, ४ एक राजसूय का नाम।  
 सं० पुरजन—क० पु० पुर के मनुष्य।  
 सं० पुरञ्जन—पु० जीव।  
 सं० पुरःसर—( पुरम्=आगे, सर=जाना ) गु० अगुवा, अग्रगामी, पेशवा।  
 सं० पुरट्ट—( पुर=मागे जाना ) पु० सोना, कंचन।  
 सं० पुरतः—अव्य० अग्रे, आगे, पेश।  
 सं० पुरन्दर—( पुर=नगर, द=फाड़ना ) क० पु० इन्द्र जो राजसूय के नगरों को नाश करता है, रचौर।  
 सं० पुरन्ध्री—स्त्री० कुटुम्बिनी, भिक्षिनी।  
 सं० पुरारि—( पुर=दैत्य, अरि=यज्ञ ) पु० मह देव, शिव।  
 सं० पुरवासी—( पुर=नगर, वासी=रहनेवाला ) पु० शहर का रहनेवाला, नगरनिवासी।  
 सं० पुरस्कार—( पुरम्=आगे, कृ=करना ) पु० आदर, सत्कार, पूजा, दान, फल, इनाम, बदला।  
 सं० पुरस्तात्—अव्य० आगे, अग्रे, पेशतर, पूर्व, पूर्व में।  
 प्रा० पुरा—( सं० पुर ) पु० गांव।  
 सं० पुरा—अव्य० माचीन, पुराना, पुराण, निकट, अतीत, मोची, पूर्व समय, पिछला वक्त।  
 सं० पुराकृत—( पुरा=पहले, कृत=किया ) स्म० पु० पहले का किया हुआ, पूर्वजन्म।

सं० पुराण—( पुरा=पुराना, ण=आगे जाना—अर्थात् किसी पुराने समय की बातें हों, अतः जो पुराने समय में बने हों ) पु० वे ग्रन्थ जिसमें से, बहुतों से आज जीने बनाये अथवा इकट्ठे हों। पुराण सब प्रग में जिसे पुरा और उनको हिन्दू पवित्र मानते हैं। हर एक पुराण में विशेष करके पांच बातों का वर्णन है जैसे—  
 “सर्गश्च मेतिसर्गश्च”  
 “वंशोमन्वन्तराणि च”  
 “वंशानुचरितं चैव”  
 “पुराणं पंच लक्षणम्”

अर्थात् १ संसार की उत्पत्ति, २ मलय और मलय के पीढ़े हैं संसार की उत्पत्ति, ३ देवता और शूचीरों की वंशावली, ४ मनुष्यों का राज, और ५ उनके वंश के लोगों का व्यवहार और चलन। पुराण अठारह हैं १ ब्रह्मपुराण, २ पद्मपुराण, ३ अद्भुतपुराण, ४ अग्निपुराण, ५ विष्णुपुराण, ६ गरुडपुराण, ७ ब्रह्मवैवर्तपुराण, ८ शिवपुराण, ९ लिंगपुराण, १० नारदपुराण, ११ स्कन्दपुराण, १२ मार्कण्डेयपुराण, १३ मत्स्यपुराण, १४ मत्स्यपुराण, १५ वराहपुराण, १६ कूर्मपुराण, १७ वामनपुराण, १८ श्रीमद्भागवतपुराण।

इन सब पुराणोंमें चारलाख श्लोक  
मिनेगये हैं और अठारह उपपुराण  
भी हैं प्राचीन, जीव गु० पुराणा,  
पहले का, सबसे पहला, बृद्धा, ८०  
कौड़ी की संख्या, मूल्य ।

सं० पुराणपुरुष- ( पुराण=पुराणा  
वा सबसे पहला, पुरुष=मनुष्य ) पु०  
विष्णु, भगवान्, २ बृद्धा आदमी ।

सं० पुरातन- ( पुरा=पुराणा ) गु०  
पुराणा, प्राचीन, अगले समय का ।

प्रा० पुरातम- ( सं० पुरातन ) गु०  
पुराणा, कदीम, प्राचीन ।

प्रा० पुराणा- ( सं० पुराण ) बोल०  
अगले समय का, प्राचीन, पुरातन,  
बोद्धा, बहुत दिनका, बृद्धा ।

प्रा० पुराणा- ( सं० पूर=पूराकरना )  
क्रि० सं० भरदेना, भरना, पूरा क० ।

सं० पुरासति } ( पुर एक राक्षसका  
पुरारि } नाम, आराति वा

अरि बरी ) पु० शिव, महादेव जि-  
न्होंने पुर नाम दैत्यको माराया ।

सं० पुरी- ( पुर ) स्त्री० नगरी ।

सं० पुरीष- ( पू=भरना ) विष्णु, गृह,  
मल । [ वंशी राजाका नाम ।

सं० पुरु- ( पू=भरना ) पु० एक चन्द्र-  
प्रा० पुरुखा } ( सं० पुरुष ) पु० बड़े,

पुरखा } वायुदादे, दादेपरदादे,  
पुरखा } पूर्वपुरुष ।

सं० पुरुष- ( पुर=भाग्य माना ) पु०  
मनुष्य, नर, परमेश्वर; २ पुरुखा ।

सं० पुरुषसिंह- ( पुरुष + सिंह ) पु०  
पुरुषों में सिंह, श्रेष्ठमनुष्य ।

सं० पुरुषार्थ- ( पुरुष=मनुष्य, अर्थ=  
प्रयोजन ) पु० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,  
२ बल, जोर, वीरता, साहस, पराक्र-  
म, परोपकार ।

सं० पुरुह } गु० प्राचीन, बहल, बहुत,  
पुरुह } अधिक ।

सं० पुरोगम- ( पुरस्=आगे, गम्=  
जाना ) गु० श्रेष्ठ, अग्रगामी, गेश्वर ।

सं० पुरुषोत्तम- ( पुरुष=मनुष्य,  
उत्तम=श्रेष्ठ ) पु० विष्णु, नारायण,  
२ उत्तम मनुष्य ।

सं० पुरोडाश- ( पुरस्=आगे, दाश=  
देना ) पु० होम की सामग्री आदि  
हविस्, स्त्री ।

सं० पुरोधा } ( पुरस्=आगे, धा=  
पुरोहित } रखना ) पु० कुलगुरु,  
उपाध्याय ।

प्रा० पुर्वी } ( सं० पूर्व=बायु ) स्त्री०  
पुर्वेया } पूर्व की हवा ।

प्रा० पुर्सा- ( सं० पौरुष ) गु० मनुष्य  
की उँचाई के बराबर, पु० मनुष्यके  
होत की उँचाई के बराबर विस्तार;  
चौर हाथ का नाप ।

सं० पुल- ( पुल=ऊँचा होना ) पु०  
सेतु, बंध, बांध, गु० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० पुलक- ( पुल=बढ़ना, वा. ऊँचा  
वा खड़ा होना ) पु० पारे खुशी के  
सीवां सड़ा होना, रोमांचित होना,

(पूत=पूतना) स्म०

पू० पूताहुमा, अभित, तिरमत  
कियागया ।

सं० पूज्य—(पूत=पूतना) स्म० पू०  
पूतने योग्य, पूतनीय, पु० समुद्र,  
पू० मुद्गन ।

प्रा० पूत—पु० कला, चूतक, पुद्गा ।

प्रा० पूठा—(सं० गृह्य) पु० गच्छानिन्दा ।

प्रा० पूणी—शी० र्ही का पहल जो  
कादने के लिये बनाया जाता है ।

सं० पूत—(पू=पवित्र करना) पु०  
पवित्र, सका, शुद्ध, सथाई, सकाई,  
कुल, शक ।

प्रा० पूत—(सं० पुत्र) पु० बेटा ।

सं० पूतना—(पू=पवित्र करना) शी०  
पूतनाशमी मितकोभी कृष्णनेपारा ।

सं० पूति—भा० शी० पवित्रता, सा-  
कॉ, स्वच्छता, निषेधता, महक ।

प्रा० पूनियां—(सं० पूर्णिमा शी०  
पूनीं, पूर्णमासी, हिन्दी  
पूनीं) महीनेका पवित्रतादि ।

सं० पूय—(पू=मुदकाना) पु० पूया,  
मानपुष्पा । [ विषयार्थक ।

सं० पूय—पु० निषिद्ध, पुनि

सं० पूय—(पू=पवित्र) पु०  
पवित्रता, पूनी का-

सं० पूरण—(पूर=पूरा करना) पु०  
भरा, पूरा, सारा, सब ।

सं० पूरणीय—(पूर+अनीय) स्म०  
पु० पूरा होनेयोग्य ।

प्रा० पूरव—(पूर) पु० पूर्वदिशा ।

प्रा० पूरा—(सं० पूर्ण) पु० सक, मारा,  
भरा, समाप्त, पस, ठीक, समाप्त, पका ।

सं० पुरुष—(पूर=पूरा करना) पु०  
पुरुष, नर, पुरुष ।

सं० पूर्ण—(पूर=पूरा करना) पु० पूरा,  
भरा, पूरा, सब, सारा, समाप्त,  
समस्त, समाप्त, ठीक, पका ।

सं० पूर्णमासी—(पूर्ण=पूरा, मास=  
चांद, वा महीना) शी० पूर्ण, पूर्णिमा ।

सं० पूर्णाहुति—(पूर्ण+आहुति) शी०  
होयये सबके पीछे आहुति वा यज्ञ ।

सं० पूर्णिमा—(पूर्ण=पूरा, अर्धमास  
पूर्णमा) मित दिन चांद की  
कला पूरी होती है ) शी० पूर्ण,  
पूर्णमासी ।

सं० पूर्त—स्म० पु० पूरा, समाप्त, पूरित  
पु० वाचनी, जाना, प, कुओं, वागी, वा  
देवधंदि ।

सं० पूतिन—क० पु० पूर्णता ।

सं० पूवे—(पूर्व=पहला वा पुजाना) पु०  
पूर्व, पूर दिशा, पु० पूरदि-

का, पूर्वी, दि० दि० पूर  
विषयार्थक  
पूर

सं० पूर्वाह्नि—( पूर्व=पहला, अर्द्ध=आधा ) पु० पहला, आधा ।

प्रा० पूर्विया } ( सं० पूर्विक, पूर्व )

सं० पूर्वोक्त—( पूर्व=पहले, उक्त=कहा हुआ ) र्म्यं पु० पहले कहा हुआ,

सं० पूर्वलिखित—( पूर्व=पहलेका, लिखित=लिखना ) र्म्यं पु० पहले का लिखा हुआ ।

प्रा० पूला—( सं० पुल, पुल=ढोलागाना ) यासका घोड़ा अथवा गढ़ा ।

सं० पूषन—( पूष=पेदना ) पु० सूर्य ।

प्रा० पूस—( सं० पौष, पुष्य एक नक्षत्र का नाम ) पु० चन्द्र वर्ष का

नवरा महीना जिसमें पूषा चांद पुष्य नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णिमा सो के दिन यह नक्षत्र होता है ।

सं० पूक—( पूष=मिलाना ) क० पु० विभिन, मिला हुआ, मुरकब ।

सं० पून्दक—( पूष+अक, पूष=पेदना, मरनकरना ) क० पु० मरनकर्ता, जिह्मागु, पेदनेवाला ।

सं० पून्दण—भा० पु० पेदना, पेदन ।

सं० पूतना—स्त्री० मेघा, मौन २४३ हाथी, २४३ रत्न, ७०३ घोड़े, ३२३ मनुष्य जिस मौन में हो ।

सं० पृथक्—( पृथ=पेदना ) पु० वि० वि० कृश, अलग, विद्यमान ।

सं० पृथक्तरण—( पृथक्=पेदना, तरण=

वरना ) पु० जुदाकरना, अलग करना ।

सं० पृथक्क्षेत्र—पु० भिन्नक्षेत्र, अलग का क्षेत्र, आरक्षपत्र, वर्णमंकर

माता जो बारसे पुत्र-पेदाकरे ।

सं० पृथा—स्त्री० सुन्ती, पाण्डु की स्त्री श्री युधिष्ठिर धर्मन और भीष्म की मा, विद्वान्, मध्ये ।

सं० पृथ्वी } ( पृथ=विद्यमान होना पृथिवी } फैलाना ) स्त्री० धरती, धरणी, भूमि, जमीन ।

सं० पृथिवीनाथ } पृथिवी=पराधी, पृथिवीपति } नाथ या पति=

मालिक ) पु० राजा, नृपति, भूवर्षी ।

सं० पृथिवीपाल—( पृथिवी=पराधी, पाल=रक्षाना ) पु० राजा, पृथिवीनाथ, भूवर्षी ।

सं० पृथु } पृथ=पेदना, या पृथ=विद्यमान होना ) पु० संघे

पृथुक } बाणों का संघरा राजा गु० पहा, मोटा, २ चतुर, विमान, ३ साहसिक, ४ विद्वान् ।

सं० पृथिकु—( पृथ=विद्यमान होना ) पु० पृथुवर्षियों का एक राजा और भीष्म का पुत्र ।

सं० पृथुल—पु० माट, बड़ा ।

सं० पृथ्वी—( पृथ=पेदना, पृथ्वी=विद्यमान होना, फैलाना ) स्त्री० धरती, धरणी, भूमि, जमीन ।

सं० पृथु—पु० मोबका, तेरा, छोटा, दान, साम, छोटा करना ।



पिडला बालक । [ टपान ।

पिसू—खाऊ, पेड़, पेयार्थ, पे-

हलना—बोल० बहुत हँसना,

हँसते लोटना, रगड़ रहना ।

पड़ना—बोल० बहुत खाना-

सरे के हिस्से पर हाथ पड़ना ।

बांधना—बोल० भूतसे कम

। [ अघाके ।

भर—बोल० जीभर, भरपेट,

भरना—बोल० खाना, खा

ना, अघाना, वृत्त होना ।

भारना—बोल० आत्मघात

ना, आघात करना, खुदकुशी

।

टमें पेटना—बोल० दूसरे का

लेना, २ गुणमद की बातें

हँसना ।

टमें लेना—बोल० सहना,

प रहना ।

टिरहना—बोल० पेटमें होना,

रंछी होना, गर्भ रहना ।

टिलगजाना—बोल० भूखों

ना, बहुत भूखा होना ।

टिलगरहना—बोल० बहुत

शा होना ।

पेटवाली } बोल० गर्भिणी,

पेटसे } गर्भवती ।

पेटसे होना—बोल० गर्भिणी

होना, पेट रहना ।

पेट हड़बड़ाना—बोल० दस्त

की हाजन होना, पेट हड़बड़ाना ।

सं० पेटार्थी ( सं० पेट, और

प्रा० पेटार्थी { अर्थां चाहने वाला,

{ अर्थ=चारना, वा मां

गना ) गु० खाऊ, पेड़, पेटपालू ।

सं० पेटिका—( पिड=इकट्ठा, करना )

स्त्री० सन्दूक, पिटारा, पेट, टोकरी,

टप्पा । [ एक दिन का खाना ।

प्रा० पेटिया—( पेट ) पु० सीधा, हर

सं० पेट्टी—(पिड=इकट्ठा करना) स्त्री०

पिटारी, २ कमरबन्द, पेटपर बांधने

की चपड़े की बन्धनी, ३ छाती ।

प्रा० पेट्टू—( पेट ) गु० अपना पेट

भरनेवाला, पेटार्थ, पेटार्थी, मर्भूखा,

पेटपालू, खाऊ ।

प्रा० पेटौखा—( पेट ) पु० पेट च-

लना, अतिसार रोग, आँव ।

प्रा० पेटा—पु० कूष्माण्ड, कुम्हड़ा ।

प्रा० पेट्ट—पु० रुख, तरु, वृक्ष, पौधा ।

प्रा० पेट्टा—( सं० पिण्ड ) पु० एक

प्रकार की मिठाई ।

प्रा० पेट्टी—स्त्री० छोटा पेट्टा, २ एक

तरह का पान. ३ नील की टांगी ।

प्रा० पेट्टू—( पेट ) पु० नामि के नी-

चे का भाग, तलपेट, पेटतल ।

प्रा० पेम—(सं० प्रेम) पु० प्यार, स्नेह ।

प्रा० पेमी—(सं० प्रेमी) ग० प्यारा,

मीतप, प्रेमी, छोड़ी, मित्र ।

सं० पेय—( पा=पीना ) पु० पानी,

२ दूध, गु० पीने योग्य ।

प्रा० पेलना—( सं०पेलन, पिल् वा पेन्=नांना ) क्रि० स० डेलना, डकेलना रेलना, पका देना, २ ठांसना, ३ निचोड़ना, ४ आधा भंग करना, वचन तोड़ना ।

सं० पेश } गु० सुन्दर, दृढ, कोमल,  
पेशल } चतुर, निर्मेज, मनोहर,  
रुनिर ।

प्रा० पेशाव—( सं०पश्चाव प्र, सु= चूना, बहना ) पु० मूत्र, मूत्र ।

सं० पेशि—( पिश=अंगविभा ) पु० वस्त्र, अण्डा ।

सं० पेशी—स्त्री० भुंगी, पड़ी कछी, मिथान, मांस, पुंज, समूह ।

सं०पेपक—क०पु०मर्दक, पीसनेवाला ।

सं० पेपण—भा० पु० पीसना ।

सं० पेपित—र्म० पु० पीसाहुआ ।

सं० पेपणि } ( पिप्=पीसना ) गु०  
पेपणी } स्त्री० चक्री, दलैती,  
गांता ।

सं० पेपि—पु० लोटा, बट्टा ।

पु० हाथउधार, उधारधरणी ।

( सं०पपड, पपड=जाना )

दग, कदम, पद, क  
चान, रूची घरनी

अन्न ) पु० पायती, पायतल ।

प्रा० पेंतालीस—( सं० पञ्चत्ता रिशन् पंच=पांच, चत्वारिशन्=कलीम ) गु० चालीस और पांच ।

प्रा० पेंतीस—( सं०पञ्चत्रिंशत्पञ्च=पांच, त्रिंशन्=तीस ) गु० तीस और पांच ।

प्रा० पेंसठ—( सं० पञ्चपष्टिपञ्च पांच, पष्टि=पाठ ) गु० साठ और पांच ।

प्रा० पे—( सं०पयस् ) पु० दूध, गाँव  
२(सं०उपरि)मुंकेनवर्ग० पर, ऊपर  
३(सं०पर)समुच्च०परन्तु पर ।

प्रा० पैज—पु० पण, होड़, मजि  
अहेद, कौल, वचन ।

प्रा० पैठ—स्त्री०हुंटीकी दूसरी नक  
जब हुंटी सोय जाती है तब  
कराते हैं, २ पैठना, पहुँच, ३भरोस

प्रा०पैठना—( सं०प्रविष्ट ) क्रि०  
पुसना, घसना, प्रवेश करना ।

प्रा०पैड़ी—स्त्री०सीड़ी, जीना, निसे

प्रा० पैतृक—( पित्र ) गु० पिता  
बाप का, वपौती, मौरुसी ।

प्रा० पैदल—( सं०पादात वापदाति  
पु० पिपादा, पैरोसे चलनेवाला

प्रा० पैन—( सं०पानीय ) पु०नाल  
नाला ।

पैना—पु

अंकुश, आंकुश

क, तील

प्रा० पैया-पु० परिषा, चक्र चक्र ।

प्रा० पैर-( सं० पद ) पु० पांव,  
घरण, कदम ।

प्रा० पैरना-क्रि० म० तैरना, रेलना ।

प्रा० पैराक-क० पु० तैरनेवाला,  
पैरनेवाला ।

प्रा० पैवंदीवेर-पु० बड़े २ पैर ।

प्रा० पैसा-पु० तांबे का सिक्का, २  
धन, दोलत, रोक, रोकड़, संपत्ति ।

प्रा० पैसाउड़ाना-पोल० बहुतबर्च  
करना, अन्व्याधुन्य सर्व करना, २

दूसरेका धन चुरालेना या टगलेना ।

प्रा० पैसाखाना-बो० पैसा उड़ाना,  
पहुन सर्वकरना, २ मजदूरी करके

पेट भरना, ३ रिश्वत लेना, ४  
टटारजाना, विश्वासघात करके

ले लेना ।

प्रा० पैसाहुवोना-बोल० धनगंवाना ।

प्रा० पैसाहुवना-बोल० धन बरबाद  
होना, खपना पैसा खोयाजाना ।

प्रा० पैसेलगाना-बोल० धन सर्व  
करना, धन लगाना ।

प्रा० पैसेवाला-पु० धनवान्, दो-  
लतवंद, २ एक पैसेका ।

प्रा० पैसोसेदरवारखांधना-बो०  
रिश्वतदेना, घम देना ।

प्रा० पैसार-पु० पहुँच, पैठ, प्रवेश ।

प्रा० पैहें (पाना) क्रि० स० पावेगा,  
पाओगे ।

प्रा० पौइस-(सं० परप=देस) क्रि०

वि० अछगरो, दूरहो, भरे, जब  
कि रस्तेपर बहुत से आदमी हों

तब उनको भजग करने और नहीं  
छुमाने के लिये भंगी यह शब्द

बहुतवार बोला करता है ।

प्रा० पौछना-क्रि० स० पूछना,  
भाड़ना, फर्झ करना, माँफकरना ।

प्रा० पोखर } (सं० पुष्कर) पु०  
पोखरा } तालाब, ताल, भील,

तड़ाग ।

सं० पोगण्ड-पु० विक्रान्त, नुपुं-  
सक, अंगहीन, कुपुरुष, पु० सोलह

वर्षकी अवस्था ।

प्रा० पोच-( प्रा० "पूच" ) पु०  
नीच, तुच्छ, घुरा ।

प्रा० पोड-सी० मोट, गांड, गठरी ।

प्रा० पोडला-पु० बड़ी गठरी ।

प्रा० पोडली-सी० दोरीगठरी, मोटरी,

प्रा० पोड़ा } (सं० प्रौढ़) पु० बल-  
पोड़ा } वान, २ बड़ा, ठोस, दृढ़ ।

प्रा० पोड़ाई } (सं० प्रौढ़ता) प्रा०  
पोड़ाई } सी० बल, २ बड़ापन,

दृढ़ता, ठोसाई ।

सं० पोत-( पु०=शुद्ध करना ) पु०

बहा, बालक, २ स्त्री० नाव ।  
प्रा० पोत-पु० स्वभाव, प्रकृति,  
गुण, वाचका, दाना



२ दूध, गु० पीने योग्य ।

प्रा० पेलना—( सं० पेलन, पिल् वा. पेन=माना ) क्रि० स० डेलना, ढकेलना रेलना, धक्का देना, २ ठाँसना, ३ निचोड़ना, ४ आधा भाग करना, बचन तोड़ना ।

सं० पेश } गु० सुन्दर, दक्ष, कोमल,  
पेशल } पगुर, निर्मल, मनोहर,  
कनिर ।

प्रा० पेशाव—( सं० पेशाव प्र, सु= गुना, पशना ) पु० मूत्र, मूत्र ।

सं० पेशि—( पिशु=भंगनिमा ) पु० पश, पाश ।

सं० पेशी—श्री० भृंगी, पक्षी कछी, विमान, पाँच, धुन, समूह ।

सं० पेपक—क० पु० मर्दक, पीसनेवाला ।

सं० पेपण—भा० पु० पीसना ।

सं० पेपित्त—स्य० पु० पीमादुआ

सं० पेपणि ( पिशु=पीसना )

पेपणी } श्री० पक्षी, द

जाता ।

सं० पेपि—पु० लोटा, बट्टा ।

प्रा० पेचा—पु० हाथपार, ३

प्रा० पेड़—( सं० पेड, ३

पु० पाँच, दण, कदम, पद,

३० पेरी ।

३० पेड, पेड़=३

अन्त ) पु० पायन्ती, पायतल ।

प्रा० पेंतालीस—( सं० पञ्चचत्वारिंशत् पंच=पाँच, चत्वारिंशत्=चा-  
लीस ) गु० चालीस और पाँच ।

प्रा० पेंतीस—( सं० पञ्चत्रिंशत् पञ्च=पाँच, त्रिंशत्=तीस ) गु० तीस और पाँच ।

प्रा० पेंसठ—( सं० पञ्चपष्टिपञ्च=पाँच, पष्टि=साठ ) गु० साठ और पाँच ।

प्रा० पे—( सं० पयस् ) पु० दूध, पानी,  
२ ( सं० उपरि ) संकेतवर्ण० पर, ऊपर,  
३ ( सं० पर ) समुच्चरण्णु पर ।

प्रा० पेज—पु० पण, होड़, प्रतिज्ञा, अहेद, क्रील, बचन ।

प्रा० पेठ—श्री० झुंडी की दूसरी नकल  
अथ झुंडी सी ३ ३ पेठ  
कराने हैं, २ ३ ३

पेठना—(

प्रा० पैया-पु० पहिया, चक्र चक्का ।

प्रा० पैर-( सं० पद् ) पु० पांव, चरण, कदम ।

प्रा० पैरना-क्रि० भ० तैरना, हेलना ।

प्रा० पैराक-क० पु० तैरनेवाला, पैरनेवाला ।

प्रा० पैवंदीवेर-पु० बड़े २ वेर ।

प्रा० पैसा-पु० ताँचे का सिक्का, धन, दौलत, रोक, रोकड़, संपत्ति ।

प्रा० पैसाउड़ाना-बोल० बहुत खर्च करना, अन्धाधुन्ध खर्च करना, २ दूसरेका धन चुरालेना या उगलेना ।

प्रा० पैसाखाना-बो० पैसा उड़ाना, बहुत खर्च करना, २ मजदूरी करके पेट भरना, ३ रिश्वत लेना, ४ डकारनाना, विरवासघात करके ले लेना ।

प्रा० पैसाहुवोना-बोल० धनगंवाना ।

प्रा० पैसाहूवना-बोल० धन बरबाद होना, रुपया पैसा खोयाजाना ।

प्रा० पैसेलगाना-बोल० धन खर्च करना, धन लगाना ।

प्रा० पैसेवाला-पु० धनवान्, दौलतपंद, २ एक पैसेका ।

प्रा० पैसोंसेदरवारवांधना-बो० रिश्वतदेना, घूस देना ।

प्रा० पैसार-पु० पहुँच, पैट, प्रवेग ।

प्रा० पैहें (पाना) क्रि० सं० पावेगा, पाओगे ।

प्रा० पौइस-(सं० पर्य=देस) क्रि०

वि० अलगहो, दूरहो, भरे, जब कि रस्तेपर बहुत से आदमी हों तब उनको अलग करने और नहीं छुमाने के लिये भंगी यह शब्द बहुतवार बोला करता है ।

प्रा० पौछना-क्रि० सं० पंछना, भाड़ना, फर्जी करना, साँफकरना ।

प्रा० पोखर } (सं० पुष्कर) पु०  
पोखरा } तालाब, ताल, भील, तड़ाग ।

सं० पोगण्ड-पु० विकलांग, नपुंसक, अंगहीन, कुपुरुष, पु० सोलह वर्षकी अवस्था ।

प्रा० पोच-(क्रा० "पूच") पु० नीच, तुच्छ, बुरा ।

प्रा० पोटर-खी० मोट, गाँठ, गठरी ।

प्रा० पोटरला-उ० यही गठरी ।

प्रा० पोटरली-खी० थोड़ीगठरी, मोटरी,

प्रा० पोढ़ा } (सं० पीढ़) पु० बल-  
पोढ़ा } बान्, २ बड़ा, ओस, रद ।

प्रा० पोढ़ाई } (सं० पीढ़ता) मा०  
पोढ़ाई } खी० बान्, २ बड़ाबान्, रदवा, डोमाई ।

सं० पोत-(पु० शब्द, करना) पु० बहा, बालक, २ खी० नाव ।

प्रा० पोत-पु० स्वभाव, मर्ति, गुण, बनावट, २ कायका ।

सं० पौतक-( पु=शुद्धकरना ) पु०  
वालक, बच्चा ।

प्रा० पौतड़ा-पु० बच्चे का बिछौना ।

प्रा० पौतना-क्रि० स० लीपना,  
लेसना । [ बेटा ।

प्रा० पौता-( सं० पौत्र ) पु० बेटे का

प्रा० पौतिया-स्त्री० नहाने के समय  
पहनने का कपड़ा, गँवार लोग के  
शिर पर बांधने का कपड़ा, २ एक  
खिलौने का नाम । [ की-बेटी ।

प्रा० पौती-( सं० पौत्री ) स्त्री० बेटे

प्रा० पौथा-(सं० पुस्त, पुस्=आदर  
करना, वा बांधना) पु० बड़ी पुस्तक ।

प्रा० पौथी-(सं० पुस्ती, पुस्=आदर  
करना, वा बांधना ) स्त्री० पुस्तक,  
बही, किताब ।

प्रा० पौदना-एक पत्थर का नाम ।

प्रा० पौना-क्रि० स० पिरोना, गा-  
यना, गुणना, गुहना, २ रोटी बे-  
लना वा बनाना ।

प्रा० पौपला-गु० बेशीत, दाँत रहित,  
अदाँत, जिस के दाँत गिरगये हों ।

प्रा० पौमचा-पु० एक तरह का  
रंगीला कपड़ा ।

प्रा० पौर-( सं० पर्व ) स्त्री० गाँठ,  
गिरहा, दो गाँठों का घीब ।

प्रा० पौरी-( सं० पर्व ) स्त्री० चोंस  
की अथवा गन्ने की गाँठ ।

प्रा० पौला-गु० खाली, सूझा, को-

मल, नर्म । [ मचग्य कर्ता ।

अं० पौलेटिकल एजेण्ट=राज्य

अं० पौलेटिकल सभा=राज नै-  
तिक सभा । [ नीति शास्त्र ।

अं० पौलेटिकल एजुकेशन=राज

अं० पौलेटिकल आफिसर=राज  
नैतिक रम्येचारी ।

अं० पौलेटिकल डिपार्ट्म्यण्ट  
=पौलेटिकल=राजनैतिक, डिपार्ट्-  
म्यण्ट=मकरण, विभाग ।

सं० पौपक-( पुप्=पोसना पालना )  
क० पु० पोसनेवाला, पालनेवाला,  
रक्षक ।

सं० पौपण-(पुप्=पोसना) भा० पु०  
पालन, भरण, रक्षा ।

प्रा० पौपना } ( सं० पौपण ) क्रि०  
पोखना } स० पालना, रक्षा  
पोसना } करना, प्रतिपालन  
करना ।

सं० पौपणीय-( पुप्+अनीय )  
र्म्य० पु० रक्षायोग्य, पालनयोग्य ।

सं० पौपयित्तु-क० पु० भर्ता, स्वामी,  
खाविंद ।

सं० पौष्टा-क० पु० पालनकरनेवाला ।

सं० पौप्यपुत्र-(पौप्य=पालाहुआ,  
पुत्र=लड़का) र्म्य० पु० लेपालक,  
दत्तपुत्र, गोद लियाहुआ बेटा,  
मुतबन्ना । [ हान, सुबह ।

प्रा० पौह-स्त्री० भोर, तड़का, बि-

० पोहना—क्रि० रोटी बनाना ।

० पौ—स्त्री० पासे में का एका, २ वह जगह जहाँ बटोहियों को पानी पिताया जाता है ।

० पौड़ा—( सं० पुण्ड्र, वा पौण्ड्र, पुण्ड्र=मलना ) पु० एक प्रकार की ऊँस ।

० पौटना—क्रि० अ० सोना, लेटना, आराम करना । [ बेटा ।

सं० पौत्र—( पुत्र ) पु० पोता, बेटेका

सं० पौत्री—( पुत्र ) स्त्री० पोती, बेटे की बेटा ।

प्रा० पौधा—पु० नया पेड़, केड़ा ।

प्रा० पौन—( सं० पवन ) स्त्री० हवा, वायु ।

प्रा० पौन—( सं० पादोन, पाद=चौपा, हिस्सा, ऊन=कप ) मु० तीन चौथाई, चौथे हिस्से तीन, चारभागका तीन ।

प्रा० पौना—पु० भरना, भरनी, एक लोहेकी चीज जिसमें बहुत से छेद होते हैं और उससे पकौड़ी आदि तली जाती हैं । [ फाटक ।

प्रा० पौर—स्त्री० पड़ा दरवाजा, द्वार-सं० पौराणिक—( पुराण ) पु० पुराण वक्ता, पुराण वाचनेवाला, पुराण गदाहुआ, पवित्र ।

प्रा० पौरिया—( पौर ) पु० देवरी बान, द्वारपाल ।

प्रा० पौरी—स्त्री० पौर, देवरी, द्वार ।

सं० पौरुष—( पुरुष ) पु० पुरुषत्व, पु-

रुपार्थ, पराक्रम, बल, जोर, २ पुर्सा ।

सं० पौर्णमासी—( पूर्ण=पूरा, मास=महीना, वा चांद ) स्त्री० पूर्णमासी, पूर्णमा, पूर्णनी ।

प्रा० पौली—स्त्री० पौर, पौरी ।

प्रा० पौवा—( सं० पाद=चौथाभाग ) पु० चौथाभाग, पावभरका चांद ।

सं० पौष—पूष शब्दको देखो ।

प्रा० प्यार—( सं० प्रीति, वीर्य ) पु० पियार, प्रेम, प्रीति, प्रेह, प्रोह, दुलार, मुहब्बत ।

प्रा० प्यारा—( सं० प्रिय ) पु० प्रेमी, स्नेही ।

प्रा० प्याराजानना—बोल० आदरकरना, सम्मान करना, श्रेष्ठ सम्मान ।

प्रा० प्यारी—( सं० प्रिया ) पु० स्त्री० प्रियारी, प्रिया, २ मनोरंज ।

प्रा० प्यास—( सं० पिपासा ) स्त्री० पिपास, तृष्णा, तृषा, पीनेकी चाह ।

प्रा० प्यासबुझाना—बोल० प्यास पिटाना, कृपशीलता, पानी पिलाना ।

प्रा० प्यासलगना—बोल० प्यास होना ।

प्रा० प्यासा—( सं० पिपासित ) पु० पिपासा, तृष्णा, पानी माग्ने वाला । [ प्यासा होना ।

प्रा० प्यासे मरना—बोल० बहुत

मै० प्र—उत्तम० पाने, २ आगे बढ़ने,

१. ३ दूर, ४ श्रेष्ठ, प्रधान, बड़ा, ऊपर,  
मुख्य, ५ बहुत, अधिक, अतिशय,  
६ पारम्पर्य, शुरुआत, ७ चारों ओर से,  
सब तरफ से, ८ उत्पत्ति, पैदा होना।

सं० प्रकट—(प्र=सब तरफ से कट  
(प्र=घेरना) पु० प्रकट, प्रत्यक्ष, चाँदे,  
जाहिर, स्पष्ट, खुलासा।

सं० प्रकटन—भा० पु० प्रकाश करना,  
जाहिर करना। [रोशन।

सं० प्रकटित—र्म० पु० प्रकाशित,

सं० प्रकम्प—(प्र=बहुत, कंप=काँप-  
पना) पु० काँपना, धरपराहट,  
कंपकंपी।

सं० प्रकरण—(प्र=बहुत, वा शुरुआत  
क=करना) पु० भूमिका, आशय,  
धातु, वृत्तान्त, प्रस्ताव, प्रसङ्ग, कांड,  
संग्रह, विषय, अध्याय, सरिता,  
अवसर, मौक़ा, विभाग।

सं० प्रकर्ष—(प्र=बहुत वा ऊपर, कृप  
=खींचना) भा० पु० उच्चमता,  
बड़ाई, श्रेष्ठता, उत्कर्ष।

सं० प्रकाण्ड—पु० वृक्षकी जड़ और  
दालीके बीच की लकड़ी, वृक्षका  
पद वा स्तम्भ, प्रशस्तवाणी, आ-  
शीर्वाद। [पूर्वक।

सं० प्रकाम—गु० यथेच्छ, यथेष्ट, इच्छा

सं० प्रकार—(प्र, कृ=करना) पु०

भेद, भाँति, दृष्टि, दौलत, तराई, रीति,  
सादरप, किस्म।

सं० प्रकाश—(प्र=बहुत, काश=च-  
मकना) पु० उजाला, ज्योति,  
रोशनी, धूप, तेज, चमक, २  
फैलाव, प्रसिद्ध, गु० प्रकट, प्रसिद्ध,  
विख्यात, चमकीला, उज्ज्वल,  
उजागर, प्रकाशित, चमकता, कि०  
वि० खुले खुले, साफ़ साफ़।

सं० प्रकाशक—प्रकाश) क० पु०  
प्रकाश करनेवाला, रोशन करने  
वाला, जाहिरकुनिदा।

सं० प्रकाशात्मन्—(प्रकाश+आ-  
त्मन्) पु० सूर्य, परमेश्वर।

सं० प्रकाशनीय } र्म० पु० प्रकाश  
प्रकाश्य } नाई, प्रकाशयोग्य

सं० प्रकाशित—(प्रकाश) र्म० प्रकट,  
प्रत्यक्ष, जाहिर, उजागर, प्रसिद्ध,

सं० प्रकीर्ण—(कृ=फैलाना) र्म० पु०  
वित्तित, विस्तृत, फैला हुआ पु०  
चमक, चौर, अरब।

सं० प्रकृत—(प्र, शुरुआत वा पहले, कृ=  
करना) र्म० पु० क्रिया हुआ, शुरुआत  
क्रिया हुआ, २ ठीक ठीक, यथार्थ, मंच।

सं० प्रकृत—(प्र=बहुत, कृ=करना)  
स्त्री० स्वभाव, गुण, २ माया,  
परमेश्वर की शक्ति, ३ किसी वस्तु

की असली दशा, ४ एक छन्दका  
नाम जिसके हर एक पद में इसीस  
अक्षर होते हैं, प्राना, मन्त्री, मित्र,  
रत्नाना, देश, मन्त्री

सबके समूहको भी प्रकृति करते हैं ।  
सं० प्रकीर्तिन-( म=बहुत, कृन्=कर-  
ना) भा० पु० वर्णन, कथन, भना ।

सं० प्रकीर्त्य-( कृ=कैलाना ) र्म्य०  
विपराहुआ, छिटकाहुआ ।

सं० प्रकीर्तित-र्म्य० पु० कथित, वर्णित ।

सं० प्रकृष्ट-( म=बहुत अथवा ऊपर  
कृष्=सींचना ) गु० उत्तम, मुख्य,  
च्छष्ट, श्रेष्ठ ।

सं० प्रकोष्ठ-पु० कोठे के नीचे का  
कोठा, अटारी, हाथकी बल्लाई से  
कोरनीतक, बल्लाई और कोहनी  
के मध्यका भाग ।

सं० प्रक्रम-( म=शुरू, क्रम=ज्ञाना )  
पु० प्रारंभ, शुरू, पर्यटन, रजाना,  
३ अक्षराक्ष, अक्षर ४ गणना ।

सं० प्रक्रिया-( म+कृ=करना ) स्त्री०  
विभाग, प्रकार, २ रीति, प्रकार,  
विधि, व्यवहार, ३ बदती, उन्नति,  
४ महिमा, प्रभाव, प्रताप, प्रगणना,  
६ स्थल, ७ अधिकार ।

सं० प्रक्लिन्न-( क्लिन्न=तरहोना ) क०  
पु० तप्त, जघाना, आसुरा ।

सं० प्रक्षालन-( म=बहुत, क्षल=  
शुद्ध करना ) पु० प्रक्षालना, धोना,  
शुद्ध करना ।

सं० प्रक्षेप-( क्षि=फेंकना ) पु० फें-  
कना, त्यागकरना ।

सं० प्रखर-( म=बहुत, खर=तीखा )

गु० बहुत तीखा, तेज, ( पु० घोड़े  
हाथी का बख्तर, पाखर, घोड़ेका  
चारनामा ।

सं० प्रखरांशु-पु० तीक्ष्ण-किरण,  
तीव्र किरण ।

सं० प्रख्यात-( म=बहुत, ख्या=प्र-  
सिद्धिहोना ) गु० प्रसिद्ध, विख्यात,  
नामवर, प्रतिष्ठित, मुष्मज्जित ।

प्रा० प्रगट् ( सं० प्रकट ) गु० प्र-  
परगट् } सिद्ध, जाहिर, प्रत्यक्ष ।

प्रा० प्रगटना-( सं० प्रकट ) क्रि०  
अ० प्रगट होना, प्रत्यक्ष होना,  
पैदाहोना, उत्पन्न होना, जन्मलेना ।

सं० प्रगल्भ-( म=बहुत, गल्भ=दीठ  
होना ) गु० धृष्ट, श्रोत्र, दीठ, निडुर,  
साहसी, दृढ़, प्रबल, सामर्थी ।

सं० प्रगल्भता-( प्रगल्भ ) स्त्री०  
दीठपन, साहस, पराक्रम, दृढ़ता,  
ढिठाई ।

सं० प्रगाढ़-गु० दृढ़, बडीर, अधिक,  
बहुत ।

सं० प्रग्रह-पु० लगाम, रथकड़ी,  
बेड़ी, तराजूकी रस्सी, किरण, धे-  
दन, बेध, भुजा, बाँधने की रस्सी ।

सं० प्रग्रह-पु० पगहा, बाँधने की  
रस्सी ।

सं० प्रघाण-पु० बराण्डा, बराम्दा,  
मकन के आगे का सावान ।

सं० प्रचण्ड-( म=बहुत, चण्ड=द-

रावना) गु० बहुत डरावना, भया-  
नक, २ बहुत तीखा, मचल, ३  
बहुत कोपी, ४ अत्यन्त गर्म अथवा  
मनना हुआ, ५ अनसहा, नहीं  
सहने योग्य, अमंज, अत्युग्र,  
बहुत तेज ।

मं० प्रचलित-( म=आगे, चल=च-  
लना ) गु० व्यवहारी, चलनी,  
बोझान, मिगता चलनही, जो च-  
लता हो अथवा व्यवहार में आता  
हो अथवा चलित मिगता—मचलित  
आता ।

मं० प्रचार-( म=बहुत वा आगे,  
चर=जाना ) पु० चलन, व्यवहार,  
रिनि, २ बहर करना, ३ फैलाना,  
विस्तार ।

मं० प्रचारक-क० पु० प्रचारक,  
वेक, विचारक, फैलानेवाला ।

मं० प्रचारणा-( मं० प्रचारण म=  
आगे, चर=जाना ) क्रि० म०  
चलना, पुकारना ।

मं० प्रचार-क० वहुत, अधिक ।

मं० प्रचुर-पु० माफी, मंगनी,  
हजारों ।

मं० प्रचुरद-( दह=आच्छादन )  
क० पु० डगडि, दुगडा, डगन ।

मं० प्रचुरदद-पु० गदा, डगन,  
विह ।

मं० प्रचुरद-क० वहुत-डगन ) मं०  
पु० डग, डगडि, डगन ।

सं० प्रजा-(म=बहुत, जन्=पैदा हो-  
ना ) स्त्री० संतान, २ प्राणी,  
सृष्टि, ३ राज के लोग, रहस्य,  
अधिकार, स्थितजन ।

मं० प्रजापति ( मना + पति ) पु०  
सृष्टि का स्वामी, सृष्टि का बनाने  
वाला, ब्रह्मा, दत्त, करण आदि  
दश मुनि जिनको ब्रह्मा ने पहले  
ही पढ़ना पैदा किया और सृष्टि  
बनाने का काम सौंपा उनके  
नाम—१ मरीचि, २ अत्रि, ३ अ-  
क्षिरा, ४ पुनस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु,  
७ मनेना, ८ वशिष्ठ, ९ भृगु, १० नारद  
और कितने एक आचार्य करते हैं  
कि प्रजापति सात हैं और कितने  
एक दत्त, नारद और भृगु इन तीनों  
हीको प्रजापति कहते हैं और कितने  
एक ग्रंथकार इसीस प्रजापति बन-  
लाने हैं २ राजा ३ बाप, पिता ४  
मैयई, नामाना ५ सूर्य ६ आग  
कुमार ।

मं० प्रजाधिकारी राज्य-पु० ज-  
हूरी मज्जनत जिस राज्य की  
वशा पर राज कार्य करे राजा  
होई न हो ।

मं० प्रजाशान(वशा + शान क०=  
बहुत ह०) पा० पु० प्रजाकी दुःख  
देना, वशा का नाश करना ।

मं० प्रजाशान्त-वशा + शान्त

श्राव=सिखाना ) भा० पु० मना  
को सिखाना, दण्ड देना, संज्ञा देना ।

प्रा० प्रजारना—( सं०, प्रज्वलन )  
क्रि० सं० जारना, जलाना ।

सं० प्रजेश ( मना + ईश वा ईश्वर )  
प्रजेश्वर } पु० दत्तमनापति ।

सं० प्रज्ञ-क० पु० प्रणिदत्त, बुद्धिमान् ।

सं० प्रज्ञा—( म=बहुत, ज्ञा=ज्ञानना )  
स्त्री० बुद्धि, पति, ममभक्त, २. मारम्भनी ।

सं० प्रज्ञाचक्षु—धृताक्ष, चक्षुहीन,  
बुद्धिचक्षु वाला ।

सं० प्रज्ञापत्र—( का० इत्यकता )  
उसे करते हैं जिसमें गुरु अथवा आ-  
चार्य से पंडित सौमरिक कार्य  
किये जायें ।

सं० प्रज्वलित—( म=बहुत, ज्वल=ज-  
लना वा चमकना ) क० पु० ज्वेलि-  
मान्, प्रकाशित, उज्ज्वल, चमकीला ।

सं० प्रज्ञीन—( म, ज्ञी=उड़ना ) भा० पु०  
उड़ना, पक्षीकी गति ।

प्रा० प्रण—( सं० पण ) पु० प्रतिज्ञा,  
वन, होड़, नियम, पण, पैसा ।

सं० प्रणत—( म=बहुत, नम्=भुक्तना )  
क० पु० अशीन, भुक्ता हुआ, नम्र  
भक्त, दीन शरणागत ।

सं० प्रणतपाल-भा० पु० दीनपालक ।

सं० प्रणति—( म=बहुत, नम्=भुक्त-  
ना ) स्त्री० नमस्कार, प्रणाम, दंडवत् ।

सं० प्रणय—( प, नी=लेजाना ) पु०  
प्यार, प्रेम, २. प्यार से भाषना ।

३. भरोसा, प्रेम, ४. नम्रता, मुरी-  
लता, ६. विनयी, स्तुति ।

सं० प्रणव—( म=बहुत, नु=स्तुतिकरना )  
पु० अम्, अम्हार नीनों देवताओं  
का मंत्र ।

सं० प्रणष्ट—( नष्ट=नाशकरना ) भ्रं०  
पु० नाश होगया, विशेष नाश ।

सं० प्रणाम—( म=बहुत, नम्=भुक्तना )  
पु० नमस्कार, दंडवत्, प्रणत ।

सं० प्रणमित—क० पु० प्रणाम करने  
वाला, प्रणामकर्ता या प्रणाम  
कराया हुआ ।

सं० प्रणम्य—भ्रं० प्रणाम योग्य,  
नमस्करणीय या प्रणामकर ।

सं० प्रणाली—( म=बहुत अथवा चारों  
ओर से, नल=बांधना, वा नद=  
गिरना ) स्त्री० नाली, पनाला, २.  
परम्परा की रीति, कदामन ।

भं० प्राणिधान—( प्रा=धारण, पोषण  
करना ) भा० पु० मन में ध्यान  
करना, वर्णारसोचना, समाधिप्रेत ।

सं० प्राणिधि—( प्राणि + धा=धारण कर-  
ना ) क० पु० चर, दूत, जामूस ।

सं० प्राणिपान—( न=बहुत, नि=नीधे  
और पन्=गिरना ) पु० प्रणाम, दंड-  
वत्, सलामी ।

सं० प्रताप—( म=बहुत, नम्=भुक्तना ) पु०  
तेज, ऐश्वर्य, महिमा, शोभा, श्रवणाला ।

सं० प्रतापवान् ( प्रताप ) पु० तेज-  
प्रतापी स्त्री, ऐश्वर्यवान् ।



सं० प्रतारण- (प्रति=पार जाना, तेरना)

भा० पु० प्रवञ्चना, दत्तना ।

सं० प्रति-उपस० की, केन, की

प्रति, २ पास, ३ सान्ने, ४ वि-

रुद्ध, उलटा, विपरीत, ५ इसकी

प्रतिपक्षा, इसके देखते-बनिसुवत,

६ ऊपर, पर, ७ लगभग, ८ लिये,

चास्ते, ९ विषय में, १० अनुसार

से, ११ हर एक की एक एक, सब,

१२ पीछे, फिर, पीछा, १३ एवम्,

१४ बदले में, पलटे में, जगह में, स्थान

में, १५ आपसमें, १६ बराबर, समान,

सदृश, १७ नकल, १८ दुस्वक, निरुद्ध ।

भा० प्रतिउपकार- (सं० प्रत्युपकार

प्रति=पीछा, उपकार=प्रजा) पु०

पीछा उपकार, उपकारकावदना ।

सं० प्रतिकार) मान=बदलेमें कृ=

प्रतीकार) करना । पु० बैर का

रुद्धता, पलटा, १९ दुःख, दुः करने

का उपाय, इच्छा, निवारण, बर्जन,

बदला, एवम् ।

सं० प्रतिकारक-क० पु० निवारक,

नामिष । [ कर्मयोग्य

सं० प्रतिकार्य-सं० निवार्य, रो

सं० प्रतिकूल- (प्रति=उलटा या विरु

द्ध, कृन्=नाश, कृन्=ढकना) गु०

उलटा, विरुद्ध, विमुख, विपरीत

सं० प्रतिग्रह- (प्रति=हर एक, जग

=रन) कृ० वि० पलपल में, हर

एक एक, हर एक, हर एक ।

सं० प्रतिग्रह- (प्रति=पुनः, ग्रह=लेना)

दान लेना, खैरान लेना ।

सं० प्रतिवात- (प्रति=पीछा, वात=

मारना) पु० पीछी मारना, मारके

बदले मार । [ निरुद्ध ]

सं० प्रतीच्छा-स्त्री० इन्तिजारी ।

सं० प्रतिच्छाया- (प्रति=पिछा, छाया

छाया) स्त्री० प्रतिविम्ब, पछाई ।

सं० प्रतिज्ञा- (प्रति=आपस में, ज्ञा=

जानना) स्त्री० गवने, पण, नेप,

कौतुकर । [ दनाया ।

सं० प्रतिज्ञापत्र-पु० प्रणपत्र, सह-

सं० प्रतिदान भा० पु० दानोपरि

दान, दान के पीछे दान ।

सं० प्रतिदिन (प्रति=हर एक, दिन)

दि० वि० हर एक दिन, दिन दिन ।

सं० प्रतिव्यनि- (प्रति=पीछा अथवा

बराबर, व्यनि=शब्द) स्त्री० प्रति-

शब्द, गूँ, शब्द प्रति शब्द ।

सं० प्रतिनिधि- (प्रति=एवम्, धि

बराबर, नि=में, धि=रसना) पु०

एवम्, एक की जगह दूसरा, २ सह-

शाना, प्रतिभा, मूरत, मुख्यतार ।

सं० प्रतिपक्ष- (प्रति=उलटा, पक्ष=

तरफ) पु० बैठी, शत्रु, विपु, दुश्पक्ष ।

सं० प्रतिपत्ति- (प्रति=गिरना) स्त्री०

मट्टति, बाप, निपाति, प्राप्ति,

आगम, गौरव, पदप्राप्ति, दान,

प्रवेष्ट, दीनता । )-<sup>प्रतिपद</sup> ०५

सं० प्रतिपद-(<sup>प्रति</sup>, पद=जाना,

और प्रति उपसर्ग के साथ आने से

अर्थ हुआ गुरुत्व होना) स्त्री० परिवा,

परती तिथि । )-<sup>प्रतिपन्न</sup> ०५

सं० प्रतिपन्न-(<sup>पद</sup>=जाना) र्भ्यं०

विज्ञात, अंगीकृत, प्राप्त, श्रुत होना ।

सं० प्रतिपादन-भा० पुं० द्वाग,

कथन, दान, प्रतिपाति, निरूपण,

समर्पण, बोध करना, गतिना ।

सं० प्रतिपादक-क० पुं० कहनेवाला,

निरूपक, सुधारक ।

सं० प्रतिपाद्य-र्भ्यं० पुं० बोधनीय,

विरासयोग्य, कथनयोग्य ।

सं० प्रतिपाल-(<sup>प्रति</sup>, पाल=पालना)

पुं० पोषण, भरण, पालन, प्रतिपालन ।

सं० प्रतिपालक-(<sup>प्रति</sup>, पाल=पाल-

ना) क० पुं० पालनेवाला, पुं०

राजा, रक्षक ।

सं० प्रतिपालन-(<sup>प्रति</sup>, पाल=पाल-

ना) पुं० पोषण, भरण, पालन,

रक्षा, बचाव, परवरण ।

प्रा० प्रतिपालना-(<sup>सं० प्रतिपालन</sup>)

क्रि० स० पालना, पोषण ।

सं० प्रतिपालित-र्भ्यं० पुं० रक्षित,

पररक्षित । )-<sup>प्रतिफल</sup> ०५

सं० प्रतिफल-पुं० बदला, वापस ।

सं० प्रतिबन्धक-(<sup>प्रति</sup>, बन्ध=बध्ना)

क० पुं० बाधक, रोकनेवाला, पुं०

रुकाव, रोक, बाधा । )-<sup>प्रतिबन्धन</sup> ०५

सं० प्रतिबन्धन-भा० पुं० रोकना,

सं० प्रतिभा-(<sup>प्रति</sup>, भा=चमत्काना)

स्त्री० सपत्नी, बुद्धि, बुद्धिहीनता,

२ गीत, चमत्काना । )-<sup>प्रतिभू</sup> ०५

सं० प्रतिभू-(<sup>प्रति</sup>=प्रतिनिधि, वा

प्रवक्तृ, भू=होना) पुं० जामिन ।

सं० प्रतिभू-स्त्री० जामिन, जामिनी ।

सं० प्रतिभूति-स्त्री० जामिन, जामिनी ।

सं० प्रतिमा-(<sup>प्रति</sup>=परावर, मा=

नादना, अर्थात् किसी के परावर

बनाना) स्त्री० मूर्ति, मूर्तली ।

सं० प्रतिमाला-स्त्री० नयमाला,

मण्डल, परिधि, चैनपाती ।

सं० प्रतिमास-(<sup>प्रति</sup>=हर एक, मा-

स=महीना, क्रि० वि० हर महीना

महीने, हर महीने, महीने, महीने ।

सं० प्रतियोगिन्-(<sup>प्रति</sup>=प्रतिष्ठा,

जोड़ना) पुं० विद्वत्पक्ष, विरोधी,

उद्योगी, प्रतिद्वन्द्वी ।

सं० प्रतिरम्भ-(<sup>प्रति</sup>=प्रतिकूल, रम्भ=

पुं० भेद, विचार, आतिशय, अभिप्राय ।

सं० प्रतिरूप-(<sup>प्रति</sup>=परावर, रूप

=आकार) पुं० प्रतिविम्ब, मूर्त,

पुं० सपान, मूर्त ।

सं० प्रतिरोध—(मति + रुध=रोकना)

पु० निरोध, रोक, मतिवन्ध, नि-  
रादर, अविष्टम्भ ।

सं० प्रतिलेखक—क० पु० मरनुव-  
अलेह या जिसको पत्रलिखना पड़े ।

सं० प्रतिलोम—गु० विलोम, उल-  
टा, वाम, बायें, विररीन, अधम,  
नीच, कुत्सित पु० रोम रोम, दर  
एक रोम ।

सं० प्रतिलोमन—गु० वर्णसंकर,  
शूद्रपुरुष और उत्तम वर्ण की स्त्री  
से उत्पन्न ।

सं० प्रतिवादी—क० पु० विरोधी,  
मुंहमाअलेह ।

सं० प्रतिविधान—भा० पु० कथ-  
नोपकथन, करेको कहना, दोबारा  
कहना ।

सं० प्रतिवामी—(वम्=रहना) क०  
पु० परोसी, हमसाया ।

सं० प्रतिविम्ब—(मति=पौछा, वा  
समान, विम्ब=छाया) पु० पर्दाई,  
छाया, प्रतिरूप, अवस ।

सं० प्रतिश्रव—(श्रु=सुनना) भा०  
पु० अंगीकार, मंजूर । [स्वीकृत] ।

सं० प्रतिश्रुत—सर्व० पु० अंगीकृत,

सं० प्रतिषेध—(मिथ्=सिद्ध करना)  
भा० पु० निषेध, निरोध, मुमानि-  
जन, मनस करना ।

सं० प्रतिष्ठा—(मति, घा=उदरना)

स्त्री० बड़ाई, गौरव, मान, यश,  
आदर, इज्जत, सम्मान, नाम, दे-  
वता के नये मन्दिर को अथवा  
देवताकी नई मूरतको संस्कारों से  
पवित्र करना, स्थापना ।

सं० प्रतिष्ठामूचक—प्रतिष्ठा + मूच=  
जाना ) क० पु० इज्जत वा ज्ञा-  
दिर करनेवाला ।

सं० प्रतिष्ठित—(प्रतिष्ठा) सर्व० पु०  
नामी, नामवर, मतिष्ठावाला, यश-  
स्वी, गौरवयुक्त, सम्मानित, आदरित,  
मुष्टज्जम, सुकरम, गिरामी, देस्था-  
पित, संस्कार किया हुआ ।

सं० प्रतिहत—(मति, हन्=मारना)  
सर्व० पु० नष्ट, हर्षहीन, चिद्विग्न,  
तिरस्कृत, अपमानित ।

सं० प्रतिहार—पु० द्वारपाल, द्विधी-  
दार, सिपाह, द्वार, दरवाजा, स्थाप,  
ग्रहण, उपाय ।

सं० प्रतिहारक—(मति, ह=हरना)  
पु० इन्द्रमाली, मायाधी, ज्ञाजीमर,  
उयोगी, उद्धारक ।

सं० प्रतीकार—(मति, कृ=करना) पु०  
उपाय, यत्न, तदवीर, चारा ।

सं० प्रतिसर्ग—(मति, सृज=पैदा  
करना) पु० मलय, नाश, कृपाघत ।

सं० प्रतीक्षा—(मति=हर-एक बार,  
ईश=देराना) स्त्री० बाट देखना,  
प्रत्याशा, इन्तजारी, अपेक्षा ।

सं० प्रतीक्षक—क० पु० राहदेखने  
वाला, मत्प्राणी, मुन्नाजिर ।

सं० प्रतीत—(प्रति, इण्=जाना) कर्म०  
पु० प्रसिद्ध, विख्यात, नामी, जाना  
हुआ, सिनासा, इति ।

प्रा० प्रतीत—(प्रति+इति पु० इण्=  
जाना) स्त्री० भरोसा, विश्वास ।

प्रा० प्रतीतकरना—बोल० परीक्षा  
करना, २ भरोसा करना ।

सं० प्रतीति—(प्रति+इति) भा०  
स्त्री० विश्वास, निश्चय, पतझड़,  
आदर, हर्ष ।

सं० प्रतीप—(प्रति+अप्=जाना)  
गुं० प्रतिफल, नाकपरिवारदार, वि-  
परीति, पु० शत्रु, राजाशत्रुनापिता ।

सं० प्रत्यक्ष—(प्रति+साप्=जाने, अच्  
=मांस) गुं० सम्मुख, साहजिक,  
आगे, मकड़, प्रसिद्ध ।

सं० प्रत्यय—(प्रति+फिर, इण्=जाना)  
पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीति, श्रद्धा,  
एतवार, २ ज्ञान, ३ व्याकरण में  
ऐसा शब्द जो धातु और मन्त्र के  
अन्त में जोड़ा जाता है इत्युपानवी ।

सं० प्रत्याख्यान—(प्रति+आख्यान,  
ख्या=करना) पु० स्थापन, निरस्तार,  
संयोजन, तरदीद करना, मनस  
करना, रोक देना ।

सं० प्रत्याशा—(प्रति+किर, आशा

आस) स्त्री० आशा, भरोसा, उम्मेद  
२ वाट देखना, इन्तजारी, प्रतीक्षा ।

३ चाह, इच्छा । पु० मुन्नाजिर,  
सं० प्रत्याशी—क० पु० मुन्नाजिर,  
राह देखनेवाला ।

सं० प्रत्याहार—(प्रति=फिर, आ=  
चारों ओर से, इ=लेना) पु०  
व्याकरण में वर्णमाला के दो अक्षरों  
अधिक अक्षरों का समूह—जैसे अइ-  
उण् श्रुत् लृष् आदि, तिसपायि, योग ।

सं० प्रत्युत्तर—(प्रति=पीढ़ा, उत्तर=  
जवाब) पु० उत्तर का उत्तर, पीढ़े  
जवाब ।

सं० प्रत्युह—(प्रति+ऊह=उत्तरकरना)  
पु० विज्ञे, उपद्रव, हर्ष ।

सं० प्रतीकार—(प्रति+कृ=करना) पु०  
उपाय, यत्न, उद्धार, निर्धार, तद-  
वीर, चारा ।

सं० प्रत्येक—(प्रति+एक) गुं० एक  
एक, हर एक, अलग अलग ।

सं० प्रथम—(प्रथ्=नामवर होना) गुं०  
पहला, प्रधान, उत्तम, मुख्य, आदि,  
कि० वि० पहले, परछेरी ।

सं० प्रथा—स्त्री० ख्याति, परंपरा, विश्वास,  
मतेप, कीर्ति, नामवरी, पांडुकी स्त्री  
कुली ।

सं० प्रथित—(प्रथ्=प्रसिद्ध होना) कर्म०  
पु० ख्यात, प्रसिद्ध ।

सं० प्रद—(प्र=बहुत, द=देनेवाला,  
दा=देना) गु० देनेवाला ।

सं० प्रदक्षिण—(प्र=प्रारम्भ, दक्षिण  
=दाहिना ओरसे) स्त्री० दाहिनी  
ओर से देवता के चारों ओर फिर-  
ना, परिक्रमा, तवाकूफ़ ।

सं० प्रदर्शक—(प्र=आगे, दर्शक=दि-  
सानेवाला) पु० दिखानेवाला,  
शिक्षक, पढ़ानेवाला ।

सं० प्रदर्शनी—भा० स्त्री० नुमायश,  
शोभा, सजावट ।

सं० प्रदर्शनस्थान—धि० पु० नुमाय-

सं० प्रदान—भा० पु० दान, धैराव ।

सं० प्रदीप—(प्र=बहुत, दीप्=धमकाना)  
पु० दीपक, दिया, चिराग, सूर्य, प्रकाश ।

सं० प्रदेश—(प्र=मुख्य, देश=देश) पु०  
मुख्यदेश, मुल्क, जिला, परगना )  
२ परदेश, दूसरा मुल्क ।

सं० प्रदोष—(प्र=प्रारम्भ, दोष=रान,  
दुष्=बदलना वा बिगड़ना) पु०  
सन्ध्या, सायंकाल, सूर्य ढूँढ़ने के  
पीछे दोषहीनता का समय, रजनी  
मुक्त, सफ़ेद ।

सं० प्रदोषकाल—पु० सायंकाल,  
शाम का वक़्त ।

सं० प्रद्युम्न—(प्र=बहुत, युम्न=वज्र,  
दिग्=धमकाना) पु० कामदेव का  
अवतार, श्रीकृष्ण का बेटा ।

सं० प्रधान—(प्र=बहुत, प्रानि=पाना)

पु० प्रकृति, माया, २ शिव, ३  
मुखिया, राजा का मुखपति, से-  
नापति आदि, अधिकारि गु० मुख्य,  
श्रेष्ठ, बड़ा ।

सं० प्रधी—गु० श्रेष्ठ, प्रधान, प्रचारि,  
बड़ा बुद्धिमान, मोरमुखी बुद्धिपुक्ता ।

सं० प्रध्वंस—(प्र=बहुत, ध्वंस=नाश  
करना) पु० नाश, विध्वंस, हानि,  
विनाश, क्षय ।

सं० प्रपञ्च—(प्र=बहुत, पचि=फैला-  
ना) पु० विस्तार, फैलाव, २ वि-  
रोध, विरोधता, ३ छल, धोखा,  
कपट, ठगाना, झूठ, भूल, ४ संसार,  
जगत्, माया, दिस्वाव ।

सं० प्रपा—(प्र=बहुत, पा=पान कर-  
ना) स्त्री० पनघट, पानी का घर ।

सं० प्रपात—(प्र=बहुत, पत=गिरना)  
पु० निर्भर, कुल, किनारा, तटहीन,  
पर्वतस्थान, निरवलम्ब, जलधारा,  
शृङ्ग, पतन, गिरना ।

सं० प्रपितामह—(प्र=पिता, माह=  
है, पितामह=दादा (जिसे) वा  
प्रपितामह (दादा) पु० परदा-  
दा, २ पुत्रता, ३ ममा ।

सं० प्रपूर्ति—(प्र=पूर=पूर=करना)  
स्त्री० संपूर्णता, समाप्त, शक्तिताम ।

सं० प्रपौत्र—(प्र=आगे, पौत्र=पुत्र)

दुष्मा, पीय पोता से ) पु० पोते, का  
पेदा, परपोता ।

सं० प्रफुल्ल (प्र=वहुत, फल=विक-  
प्रफुल्लित) सना, वा सुनना ) गु०

फुला हुआ, खिलेला हुआ, विकसा  
हुआ, २ मसम, आनंदित, हँसित,  
३ समस्ता हुआ, दीप्तिमान् ।

सं० प्रफुल्लवदन - (प्रफुल्ल=मसम,  
वदन=मुख) गु० जिससे मुखसे सुशी  
मवटहोती हो, जो मसम देता जाय ।

सं० प्रवञ्चक - (प्रवञ्च=छलना ) क०  
गु० प्रसारक, छली, दगाबाज ।

सं० प्रवजना - भा० पु० प्रसारणा,  
छलना ।

सं० प्रवन्ध - (प्र=वहुत, अथवा चारों  
ओरसे, दण्ड=बांधना ) भा० पु०  
बन्धोबस्त, २ कट्य की रचन, जे-  
मक, बगल, इतिजाय, छायादा ।

सं० प्रवन्धक - क० पु० बन्धवर्ता,  
मुन्तजिम ।

सं० प्रवल - (प्र=वहुत, वल=जोर )  
गु० घनवान्, जोर वर, सामर्थी,  
बनी, पूर, तीव्र, साहसी ।

सं० प्रवाल - (प्र=वहुत, वल=बांधना )  
गु० नदीन बाँध, जय वधा, २  
मुँगा, बगल, बाँध-दण्ड ।

सं० प्रवृद्ध - (प्र=वहुत, वृद्ध=जानना )  
गु० प्राग्गत हुआ, सुखी ।

सं० प्रबोध - (प्र=वहुत, बुध=जानना )

गु० ज्ञान, उपदेश, समझ, चेतना,  
२ सावधानी, नौद से अथवा अज्ञा-  
नता से जागृता वा चेतन्य होना ।

सं० प्रबोधन - (प्र=वहुत, बुध=जा-  
नना ) भा० पु० जगाना, चिताना,  
सावधान करना, सिखाना, जतना-  
ना, बनाना ।

सं० प्रभञ्जन - (प्र=वहुत, भञ्ज=तोड़ना )  
भा० पु० हवा, पवन, वायु, विदारण,  
तोड़ना, टूटना, गु० विदारण, तोड़-  
नेवाला ।

सं० प्रा० प्रभञ्जनजाया - ( सं० प्र-  
भञ्जन=पवन, प्रा० जाया=पैदाहुआ )  
पु० अनुमान । [पु० अनुमान ।

सं० प्रभञ्जनमुत्त - (प्रभञ्जन+मुत्त )

सं० प्रभव - (प्र=पैदाहोना, प्रमसे)  
गु० उत्पत्ति, जन्मकारण, जिनसे  
पैदा होने हैं, जैसे मेषा, उत्पत्ति  
स्थान, २ जोर, पराक्रम, ३ जन्म ।

सं० प्रभा - (प्र=वहुत, भा=बदलना )  
गु० चमक, झलक, चमोदि, जोर,  
महान्, दीप्ति ।

सं० प्रभाकर - (प्रभा=चमक, कर  
=करनेवाला, २=करना ) क० पु०  
सूर्य, २ चाँद, ३ जामोई ।

सं० प्रभात - (प्र=वहुत, भा० बद-  
लना ) पु० जोर, विहार, जाग-  
रना ।

( फलित, क्रमरे, सुवह ।

सं० प्रभाव- ( प्र=बहुत, प्र=होना ) पु०

तेज, प्रताप, बल, शक्ति ।

सं० प्रभास- ( प्र=बहुत, भास=चमकना ) पु० एकतीर्थ की जगह ।

सं० प्रभु- ( प्र=पहले या बहुत, प्र=होना ) पु० नाथ, स्वामी, धनी, मालिक, पति, पालक, ईश्वर, विष्णु, गु० बड़ा, समर्थ, चलवान ।

सं० प्रभुत्व भा० पु० } ( प्रभु )  
प्रभुता भा० स्त्री० } बढ़ान  
ईश्वरता, स्वामीपन, बड़ाई, महत्त्व,  
गौरव, ऐश्वर्य, हकूमत ।

सं० प्रभृति- ( प्र=बहुत, प्र=भरना )  
स्त्री० महार, भांति, २ आदि, ३ न्यादि,  
और सब ।

सं० प्रमथ- ( प्र=बहुत, प्रमथ=मथना ) पु०  
महादेवके एक गणानाम, २ घोड़ा ।

सं० प्रमथधिप- ( प्रमथ + अधिप )  
पु० शिव, महादेव ।

सं० प्रमदा- ( प्र=बहुत, प्रद=प्रसन्न  
होना, जिसको देव कर ) स्त्री०  
श्री, नारी, सुलक्षण स्त्री, रूपवती  
नारी, सुन्दर स्त्री, उच्चम स्त्री ।

सं० प्रमा ( प्र=बहुत, प्र=नापना )  
स्त्री० यथार्थज्ञान, सच्चाज्ञान, ऐसा  
ज्ञान जिसमें किसी तरहका भ्रम न  
हो प्रमाण, उभा ।

सं० प्रमाण- ( प्र=बहुत, प्र=नापना ) पु० नाप, माप, तौल, अन्दाजा,  
परिणाम, २ साख, साक्षी, गवाही,  
सिद्धान्त, मवत, निश्चय, सच्चा, उद्हराना  
निर्णय, निष्पत्ति, ३ कारण, ४ हद,  
सीमा, ५ उदाहरण, दृष्टान्त, ऐसे  
शास्त्र जिसका पवित्र प्रमाण मिले,  
गु० मन्त्र, मही, ठीक ठीक, यथार्थ,  
मानने योग्य ।

प्रा० प्रमाणिक- ( सं० प्रमाणिक )  
गु० भरोसावाला, विश्वासपात्र,  
योग्य, प्रतिष्ठित, पु० सभापति ।

सं० प्रमातामह- ( प्र=उत्पन्न हुआ  
है, मातामह=नाना जिससे ) पु०  
परनाना ।

सं० प्रमाथ प्रमथ=मथना ) पु०  
नाश परण, विनोदन, मथना, विन  
हानि ।

सं० प्रमाद- ( प्र=बहुत, प्रद=प्रसन्न  
होना ) पु० नशा, २ मनवालापन-  
मस्ती, उन्मत्तता, पागलपन, ३ अमा,  
व्यानी, भूल, चूक अमावधानता ।

सं० प्रमादी- ( प्रमाद ) क० पु०  
उन्मत्त, बाबला, बौद्धहा, २ नशे में  
मस्त, ३ अमावधान, अनेन-वेहोश,  
हठी, जिद्दी ।

सं० प्रमित- ( प्र, प्र=नापना ) प्रमे-

पु० नापा हुआ, मापा हुआ, जांचा हुआ, २ जाना हुआ । [ सपक्ष ।

सं० प्रमिति—स्त्री० यथार्थज्ञान, ठीक

सं० प्रमीला—(प्र, पील्=ने प्रमीचन)

भा० स्त्री० तन्द्वा, उर्नीदा, उत्साह शून्य, काहिल ।

सं० प्रमुख—पु० मान्य, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, मुखिया, सम्मुख, पु० मुनि, आरम्भ ।

सं० प्रमुदित—(प्र=बहुत, मुद्=ममज्ञ होना) क० पु० ममज्ञ, हर्षित, आनन्दित, प्रफुल्ल, खुरा ।

सं० प्रमेह—(प्र, मिह=सींचना) पु० पोत बिगाड़ रोग, वीर्य में का रोग यह रोग इस्त्रीस मकार का है जिरियास ।

सं० प्रमोद—(प्र=बहुत, मुद्=ममज्ञ होना) पु० रर्ष, आनन्द, खुरा, सुशी, हुलास ।

सं० प्रयत्—(प्र=बहुत, यत्=शांति) पु० पवित्र, नियम युक्त आचारी, पवित्र, शुद्ध, नियत, नैय र ।

सं० प्रयत्न—(प्र=बहुत, यत्=जनन करना) पु० बहुत परिश्रम, लगानार मिहनत, बहुत स.वधानी ।

सं० प्रयाग—(प्र=बहुत, यत्=यज्ञ करना) पु० हिंदुओं का एक बड़ा तीर्थ जिसको इन दिनों में इलाहाबाद भी कहते हैं जहां गंगा और यमुना इन दोनों नदियों का प्रकट

संगम हुआ है और कहते हैं कि तीसरी नदी सरस्वती का संगम परती के नीचे हुआ है—उस नगर को निवेणी करते हैं और यहाँ ब्रह्मा ने शंखामुर शक्त से वेदों को लेकर दशअस्त्रमेघयज्ञ किये, २ यज्ञ ।

सं० प्रयाण—(प्र=गहले वा दूर, वा बहुत या=जाना) पु० धावा, कूच, गवन, गमन, यात्रा, जाना, मस्थान ।

सं० प्रयास—(प्र=बहुत, यत्=जतन करना वा परिश्रम करना) पु० परिश्रम, मेहनत, थकावट, यतन ।

सं० प्रयोग—(प्र=बहुत, युग्=मिलना) पु० अनुष्ठान, प्रयोगकरण, प्रयोजना, २ इष्टान्त, उदाहरण, हे कारण, प्रयोजन, फल, ४ काम, कार्य, व्यापार, ५ नियुक्त करना नियत करना, दहराना, लगाना, इस्तमाल करना, निदर्शना, उदाहरण, सूक्ष्म योद्धा, अपनोदरापद, चर्चा करना ।

सं० प्रयोजक—क० पु० मेरक, मे-पा, नियोग करनेवाला, लगाने वाला, प्रपाय करनेवाला ।

सं० प्रयोजन—(प्र=बहुत, युग्=मिलना) पु० कारण, अभिमाय, मतनय, आशय, मनोरथ ।

सं० प्ररोह—(प्र=हर=वीनजपना, निकलना) मा० पु० ऊपरजाना, निकलना, चढ़ना ।





पु० नापा हुआ, मापा हुआ, जांचा हुआ, २ जाना हुआ । [ समझ ।

सं० प्रमिति—स्त्री० पथार्थज्ञान, ठीक

सं० प्रमीला—(प्र, पीन्=ने प्रमीचन) भा० स्त्री० सन्दा, उनींदा, उतमाह शून्य, काहिल ।

सं० प्रमुख—पु० मान्य, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, मुखिया, सम्मुख, पु० मुनि, आरम्भ ।

सं० प्रमुदित—(प्र=बहुत मुद=ममम होना) क० पु० ममम, हर्षित, आनन्दित, महुल, खुश ।

सं० प्रमेह—(प्र, मिह=मीचन) पु० पान बिगाड़ रोग, पीरप में का रोग यह रोग इस्तीम नकार का है निरिपान ।

सं० प्रमोद—(प्र=बहुत, मुद=ममम होना) पु० हर्ष, आनन्द, सुख, खुशी, हुलास ।

सं० प्रयत्न—(प्र=बहुत, यत्=शक्ति) पु० परिश्रम, निरप पुनः आचारी, परिश्रम, मुद, निरप, निरप ।

सं० प्रयत्न—(प्र=बहुत, यत्=ममम होना) पु० बहुत परिश्रम, लगातार निरप, बहुत म बचानी ।

सं० प्रयाग—(प्र=बहुत, यत्=ममम होना) पु० हिंदुओं का एक बड़ा तीर्थ जिसकी इन दिनों में इलाहाबाद भी कहते हैं जहां गंगा और यमुना इन दोनों नदियों का मकर

संगम हुआ है और कहते हैं कि तीसरी नदी सरस्वती का संगम पत्नी के नीचे हुआ है—उस नगर को त्रिवेणी कहते हैं और यहाँ प्रसा ने शंखामुर राजस से वेदों को लाकर दशमस्कन्धेयम् किया, २ यम् ।

सं० प्रयाण—(प्र=गच्छे वा दूर, वा बहुत या=जाना) पु० धारा, कूच, गवन, गमन, यात्रा, जाना, प्रस्थान ।

सं० प्रयाम—(प्र=बहुत, यम्=ममम करना वा परिधम करना) पु० परिधम, मेहनत, यथावर, यत्न ।

सं० प्रयोग—(प्र=बहुत, युग्=वि-लना) पु० अनुष्ठान, यगोपकरण, बराकरना, २ इष्टान्त, उदाहरण, हे कारण, योजन, फल, २ काय, वार्य, व्यापार, ३ नियुक्त करना नियत करना, उदाहरण, लगातार, इस्तकमाल करना, निदर्शना, उदाहरण, मूल्य घोड़ा, अपनोदरापद, यथाव करना ।

सं० प्रयोजक—क० पु० मेरक, वे-पा, निषेध करनेवाला, लगाने वाला, बचाव करनेवाला ।

सं० प्रयोजन—(प्र=बहुत, युज=विनना) पु० कारण, अपिनाय, यत्न, आनन्द, यथोक्त ।

सं० प्रमेह—(प्र=बहुत, मेह=ममम होना, निरपना) क० पु० उपराना, निरपना, पन्ना, मंजूर ।



पु० नापा हुआ, मापा हुआ, नांचा हुआ, २. जाना हुआ । [ ममभ्र ।

सं० प्रमिति—(प्री० पदार्थज्ञान, टीक

सं० प्रमीला—(प, पील=नेवपीचना)

भा० री० तन्त्रा, उनीदा, उरसाह शून्य, बाहिल ।

सं० प्रमुख—पु० मान्य, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, सुमिया, सम्मुख, पु० मुनि, धारम्भ ।

सं० प्रमुदित—(प=बहुत मुद=मसम होना) क० पु० ममय, हर्षित, आनन्दित, मफुद्ध, खुश ।

सं० प्रमेह—(प, मिह=सींचना) पु० फोत बिगाड़ रोग, बीर्य में का रोग यह रोग इसीस प्रकार का है निरिपान ।

सं० प्रमोद—(प=बहुत, मुद=मसम होना) पु० हर्ष, आनन्द, सुख, सुखी, हुलास ।

सं० प्रयत्—(प=बहुत, यम्=शान्ति) पु० पवित्र, निपम युक्त आचारी, पवित्र, शुद्ध, निपत, नैप र ।

सं० प्रयत्न—(प=बहुत, यम्=मनन करना) पु० बहुत परिश्रम, लगानार मिश्रण, बहुत सावधानी ।

सं० प्रयाग—(प=बहुत, यम्=यज्ञ करना) पु० हिंदुओं का एक बड़ा तीर्थ जिसको इन दिनों में इलाहाबाद भी कहने हैं जहाँ गंगा और यमुना इन दोनों नदियों का प्रकट

संगम हुआ है और कहने लगी है सीसरी नदी सरस्वती का परती के नीचे गुप्त हुआ है जगह को निचोणी कहने हैं और प्रयाग ने गंगामुख राजस से वेदों लाकर दशमरवमेयपक्ष किये, २ यज्ञ

सं० प्रयाण—(प=गइले वा दूर, व बहुत पा=जाना) पु० धावा, कूच, गवन, गमन, यात्रा, जाना, प्रस्थान ।

सं० प्रयास—(प=बहुत, यम्=मनन करना वा परिश्रम करना) पु० परिश्रम, मेहनत, यत्नवद, यत्न ।

सं० प्रयोग—(प=बहुत, युग्म=मिलना) पु० अनुष्ठान, परीक्षण, पराकरना, २ इष्टान्त, उदाहरण, हे कारण, प्रयोजन, फल, ४ काम, कार्य, व्यापार, ५ नियुक्त करना नियत करना, उदाहरण, उदाहरण, संसृष्ट योद्धा, अमनोदरामद, बर्ताव करना ।

सं० प्रयोजक—क० पु० मेरक, पैपा, निषोग करनेवाला, लगाने वाला, चपाप करनेवाला ।

सं० प्रयोजन—(प=बहुत, युग्म=मिलना) पु० वारण, अभिभाव, मनन, आशय, मनोरथ ।

सं० प्ररोह—(प=बहुत=बीजजपना, निकलना) मा० पु० ऊपरजाना, निकलना, चक्को, कंकड़ ।

सं० प्रलम्ब—(प्र=आगे, लघि=रो-  
कना, ठहराना वा लटकाना) गु०  
लम्बा, विशाल, नीचे लटका हुआ  
बड़ा पु० एक राजस का नाम  
जिसको बलदेवजी ने मारा ।

सं० प्रलय—(प्र=बहुत, वा चारों  
ओर से ली=गलना, वा मिलना)  
पु० कल्प का अन्त, जब सारा  
संसार नष्ट हो जाता है, युगान्त ।

सं० प्रलाप—(प्र=बहुत, लप=बोल-  
ना) पु० व्यापकवाद, निरर्थक  
वात, अनर्थक वाक्य ।

सं० प्रलापी—(प्रलाप) क० पु०  
बहुतबोलनेवाला, प्रवापकनेवाला ।

सं० प्रलोभन—(प्र, बहुत, वा चारों  
ओर से, लुम्=लुमाना) भा० पु०  
मोहन, लुभाव, लोभ, लालच,  
कुसलारुह, लुभाना ।

सं० प्रवण—(प्र=चलना) पु० गम-  
न, पशु, नीचीमगद, बदर, नम्र,  
आपन, गुण, क्षण, मुन, स्निग्ध,  
चिकना, आसक्त, सीण ।

सं० प्रवर—(प्र=बहुत, वर=अच्छा, वृ-  
त्तासंद करना) पु० मन्त्रान, दे-  
मोच, मोच, ३ एक मुनि का नाम  
जिन्होंने हर एक कुल का गोत्र उह-  
राया, ४ वनवास गोत्र में का एक  
गोत्र, गु० भेट, उपप ।

प्रवर्त्तक—(प्र, वृत्=होना, पर

प्र, उपसर्ग के साथ आने से इसका  
अर्थ, शुल्भ करना, आगे बढ़ना,  
लगना, इत्यादि होने दें) क० पु०  
आरम्भ करनेवाला, उठानेवाला,  
करनेवाला, उभाड़नेवाला, प्रेरक,  
लगावृत्त, आदिकर्त्ता, मूळकारक ।

सं० प्रवर्त्तन—(प्र+वृत्=काम में  
लाना) भा० पु० प्रवृत्ति, आज्ञापन,  
प्रेरण प्रेषण, पठावना ।

सं० प्रवर्त्तित—प्र० पु० आज्ञापित  
प्रेरित, प्रेषित ।

सं० प्रवर्षण—(प्र=बहुत, वृष्=बर-  
सना) पु० एक पहाड़ का नाम जो  
किष्किन्धा पुरी के पास था उसपर  
श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण वरसातकी  
ऋतु में रहे थे ।

सं० प्रवास—(प्र=दूर, वस्=रहना)  
पु० विदेश, परदेश में रहना ।

सं० प्रवासन—भा० पु० प्रक्षेप मा-  
रण, देहत्याग, निकारना, भगाना  
परदेश भेजना ।

सं० प्रवासी—क० पु० परदेशी, विदेशी ।

सं० प्रवाह—(प्र=बहुत, वा लगातार  
वह्=बरना) पु० धारा, बहाव,  
सोता, स्रोत ।

सं० प्रवाहक—क० पु० गाढ़ीधान,  
संप्रहर्णी, दस्त ।

सं० प्रविष्ट—(प्र+विश्व=पुसना, जाना)  
क० पु० पुसनेवाला, पैठनेवाला ।

सं० प्रवीण-(म, बीणा, धीन, अर्थात्  
जो बीणा यनाके गावे, पर यह पद  
एकद्वैदलिखे इसका अन्तरार्थ ठीक  
नहीं लगता ) पु० चतुर, निपुण,  
बुद्धिमान्, स्थाना, होशियार ।

सं० प्रवीणता-(मवीण) स्त्री० चतु-  
रार्ति, निपुणता, स्थानपन, लिपाकृत ।

सं० प्रबुद्ध-(म=बहुत, धुय=ज्ञान)  
क० पु० जाग्रत, जगैषा ।

सं० प्रवृत्ति-(म, वृत्=होना) स्त्री०  
किसी काममें लगना, २ अभ्यास,  
३ समाचार, वार्ता, खबर, ४ प्रवा  
ह, ५ इच्छा ।

सं० प्रवेश-(म, विश्=पुसना) पु०  
पुसना, पैटना, पहुँचना ।

सं० प्रवेशक-क० पु० प्रवेशकारी,  
पुसनेवाला ।

सं० प्रवोधन-(म + पुव=समझाना)  
भा० पु० समझाना, उपदेश करना ।

सं० प्रवोधक-क० पु० समझाने  
वाला, प्रयत्नित (प्रवृत्=चलना) क०  
पु० विप्रवृत्, फकीर । [काह ।

सं० प्रव्रज्या-स्त्री० परवाश्रम स्नान

सं० प्रशंसनीय (मशंसा) र्थ्य० पु०  
मशंसा के योग्य, सराहने योग्य,  
स्तुति करने योग्य ।

सं० प्रशंसा-(म=बहुत, शंस=सरा-  
हना) स्त्री० सराह, बहार्ति, स्तुति,  
तारीफ, रत्नाया ।

सं० प्रशंसित } र्थ्य० पु० स्तु  
प्रशंस्य } तारीफकेलायक

सं० प्रशमन-(म=बहुत, शम्=ठं  
करना) पु० ठंदा करना, शांत क  
रना, दूर करना, २ मारना ।

सं० प्रशस्त-(म=बहुत, शम्=सराह-  
ना) क० पु० सराहने योग्य, श्रेष्ठ,  
यथोचित, यथायोग्य, सत्य, योग्य,  
उत्तम, बहुतमच्छा, मुकल, अमोघ,  
समन्वित ।

सं० प्रशस्ति-(म=बहुत, शम्=स-  
राहना) स्त्री० सराह, बहार्ति,  
मशंसा, तारीफ, अलकाय ।

सं० प्रश्न-(मच्छ=पूछना) पु० पूछना,  
सवाल, निष्ठासा, जाननेकी इच्छा ।

सं० प्रश्न्य-(प्र + धि=सेवाकरना) पु०  
मणप, नम्रता, मेम, सेवा, आरापन ।

सं० प्रशान्त-भा० पु० रक्षादकाहोगया

सं० प्रश्रित-क० पु० विनीत आश्रि-  
त, निर्भेद ।

सं० प्रष्टव्य-(मच्छ=पूछना) र्थ्य० पु०  
पूछने योग्य । [पूछनेवाला ।

सं० प्रष्टा (क० पु० निष्ठासु, मच्छक,

सं० प्रसक्त-(म=परलौ, मत्=पिजना),  
पु० प्रस्ताव, सङ्गम, मेज, चर्चा,  
बात, कथा, सम्बन्ध ।

सं० प्रसन्न-(म=मच्छाकरासे, सद्  
बैटना) क० पु० इयित, आनन्दित

एक सफेद पुन्दा सा होजाता है ।

प्रा० कुसकुपाना—क्रि० अ० काना-  
कुसी करना, कानाकानी करना ।

प्रा० कुसलाना—क्रि० स० दिनासा  
देना, भूलाना, भ्रांसा देना, धो-  
खा देना, बहकाना, दमदेना,  
बसलाना ।

प्रा० फूंक—(फूंकना) क्री० दम, सांभ ।

प्रा० फूंकदेना—बोल० आगलगा देना ।

प्रा० फूंकना—(सं० फुत्कार) क्रि०  
स० मुँहसे हवा निकालना, २ आग  
लगाना, जलाना, सुलगाना, ३ ब-  
जाना, (जैसे तुरही, सँगी आदि) ।

प्रा० फूंकफूंककरपावधरना—बो-  
ल० बहुत सावधानी से काम क-  
रना या रहना ।

प्रा० फूंकारना—(सं० फुत्कार) क्रि०  
अ० फाफनना, फुत्कार मारना,  
फुत्कारना ( जैसे साँपका ) ।

प्रा० फूँही } स्त्री० छोटी छोटी मेह  
फोहार } की बूँदें, भीसी, मन्द  
फूहार } मन्द बर्षा ।

प्रा० फूट—(सं० स्फुटि, स्फुट=फूटना  
या टूटना) स्त्री० एक तरह की  
ककड़ी, पकी हुई ककड़ी, २ (स्फुट)  
विगाड़, बैर, विरोध, बसेड़ा, भ-  
गड़ा, असम्पत्ति, अनमेल, ३ जुदा  
होना, अलगगव, बिलगव, ४ ख-  
टन, ५ सेंध, दार ।

प्रा० फूटपड़ना—बोल० बसेड़ा  
मचना, विरोध होना, भगड़ा उठ-  
ना, बीच पड़ना ।

प्रा० फूटफूटकररोना—बोल० उमंड  
उमंड कर रोना, बहुत रोना ।

प्रा० फूटहोना बोल० किसी की  
सम्पत्ति नहीं मिलना, एक मना  
न होना । [ जाना ।

प्रा० फूटरहना—बोल० अलग हो-

प्रा० फूटना—(सं० स्फुटन, स्फुट=  
फूटना) क्रि० अ० टूटना, २ बि-  
भिमन्न होना, विखरना, अलग  
होना, ३ फटना, चिरना, ४ उठ-  
ना, फैलना ( जैसे सुगंध ), ५ क-  
लीका खिलना, ६ भेद खुलमाना,  
७ बैरी से मिलना ।

प्रा० फूटीसहें परं काजलन सहें-  
कहावत—घोड़ी घंटों नहीं सहना  
और सब का सब नुकसान सहना ।

प्रा० फूफा—पु० फूफी का पति ।

प्रा० फूफी } स्त्री० बापकी बहिन ।  
फूफू }

प्रा० फूल—(सं० फुल्ल, फुल्ल=फूलना)  
पु० पुष्प, पुद्ग, कुसुम, सुमन, २  
स्त्री का रज, निहानी, ३ मुँह की  
इडियाँ जो जळ जाने के पीछे सु-  
नी जाती हैं, ४ एक प्रकारका कौं-  
सा जो बहुतसाफ और सफेद होता  
है, ५ फुजाव, सूज, गुंथवतवत्तका ।

प्रा० फूलजाना—बोल० मूनजाना,  
५ मसस होना, आनन्दित होना, ३  
मोटाहोना ।

प्रा० फूलफड़ना—बोल० सुन्दरताई से  
बोलना, मीठा बोलना, २ दीपक  
से जले हुए नेत्रों के टपकों का गिरना ।

प्रा० फूलपड़ना—बोल० आग लग-  
जाना, जलजाना ।

प्रा० फूलवैठना—बोल० तुल्य होना,  
मसस होना, शपित होना, बहुत  
मसस होकर बैठना । [मससा ।

प्रा० फूलगोभी—सी० गोभी, कर-

प्रा० फूलना—(सं० फुलन, फुल्लन=

फूलन) क्रि० अ० मिलना, विक-  
सना, दृढ होना, २ पताब होना,  
तुल्य होना, कुलसना, निरोग रहना,  
बढ़ना, पनपना, फलना, ३ मूतना,  
मोटा होना, बापुसे भाना, बापुसे

फूलना, ४ पपण्डहरना ।

प्रा० फूलताफिरना—बोल० अत्य-  
न्त मसस होना ।

प्रा० फूला (सं० फुल) गु० फूला

हुमा, सुना हुमा, २ सिल्लाहुमा,  
विहता हुमा, दृढता हुमा ।

प्रा० फूलानसमाना बोल० मगन  
होना, अत्यन्त आनन्दित होना,  
आनन्द से फूल जाना ।

प्रा० फूस—गु० सदा और मूलापास,

प्रा० फूसमें चिनगारी डालना—  
बोल० पलेबा मचाना, भेदना

प्रा० फूहड़—गु० अतमीसी, पूर्ण,  
यामद, मोदी (यह शब्द स्त्री के  
लिये बोला जाता है) स्त्री० मैली  
कुनैली स्त्री ।

प्रा० फूहा—गु० हाँका फास जिस  
को दूध में भिगो कर बच्चे के मुँह में  
निचोदते हैं जब कि यथा अपनी मा  
की घुँची से दूध नहीं पीसकता होता ।

प्रा० फेंकना—(सं० फेंकण, छिप-  
केंकना) क्रि० स० दाँतना, बीसना,  
दूर गिराना, अलग करना, बगभूट  
दौड़ाना (गोड़े को) सरपट जाना ।

प्रा० फेंकदेना—बोल० दूर गिरा देना ।

प्रा० फेंट) सी० कपूरबन्द, पट्टा,  
फेंट) बटि-बन्ध ।

प्रा० फेंटबांधना—बोल० किसी काम  
के करने के लिये तैयार होना, ठान-  
ना ठहराना, बमर बांधना ।

प्रा० फेंटा } गु० स्त्री० कपूरबन्द,  
फेंटा } २ छोटी सी गेंदी ।

सं० फेन—(स्काय=बढ़ना) गु० भाग,  
बफ, फेना, मसुदफल ।

सं० फेनावाहिनू गु० जल, रग,  
दुग्ध, दूध, मसुदफल ।



प्रा० फेनी—( सं० फेन ) स्त्री० एक भाँति की मिठाई ।

सं० फेर—पु० शृगाल, गीदड़ ।

प्रा० फेर—(फेरना) पु० घुमाव, बाँका, चक्र, पैच, २ तवदील, बदली, चिह्नार, ३ घुरे दिन, घुरा भाग, अभाग्य, ४ कठिना, ५ दूरी, क्रि० वि० दूरीवार, पीछा, फिर, उलटाना ।

प्रा० फेरखाना—बोल० घुपना, चक्र खाना, २ दुखाना, तल्लीक उठाना ।

प्रा० फेरदेना—बोल० उलटा देना, पीछा दे देना, लौटा देना ।

प्रा० फेरपड़ना—बोल० फरक पड़ना, पीछे रहना, २ चक्र पड़ना, दुःख होना ।

प्रा० फेरफार—बोल० छल, फोव, धोखा, दसा, २ ओसराना, ओसरी, परस्पर, फेरफेरी ।

प्रा० फेरफारकरना—बोल० अदल बदल करना, परिवर्तन करना, २ कष्ट करना, धोखा देना ।

प्रा० फेरफेरी—बोल० आपस में किसी बात को लेना और पीछे देना ।

प्रा० फेरना—क्रि० सं० उलटाना, घुमाना, लौटाना, पीछा दे देना, रथाना, दूर करना, २ पोतना ( जैसे चूना, कलाई आदि ) ।

प्रा० सिरपरहाथफेरना—बोल० कुसलाकर ठगना ।

प्रा० हाथफेरना—बोल० प्यार करना, दुनार करना, छोड़ करना ।

फा० फेञ्चल } काम, क्रि० ।  
फेल }

सं० फेलक—( फेल + अक, फेन = जाना ) क० पु० लच्छिट्ट, जूट ।

सं० फेलन—भा० पु० फेंकना ।

सं० फेलित—र्म० पु० फेंका हुआ ।

अं० फेनोज=म्यम्यर, अंग ।

प्रा० फैलना—क्रि० अ० बिछना, पसरना, विथरना, बिगारना, २ चौड़ा होना, ३ प्रसिद्ध होना ।

प्रा० फैलाना—क्रि० सं० बिछाना, पसारना, बिखराना, २ खोल देना, ३ चौड़ा करना, ४ प्रसिद्ध करना, प्रकट करना, ५ हिसाब करना ।

प्रा० फैलाव—पु० मचार, बिछाव, पमगन, चौड़ाई ।

प्रा० फौफी—स्त्री० नजी, लूझी, २ पोली चीज ।

अं० फोटो—प्रतिविम्ब, चित्र ।

अं० फोटोग्राफर=चित्रलेखक, मुद्राकार ।

प्रा० फोड़ना—( सं० स्फोटन, स्फुट = फटना ) क्रि० सं० तोड़ना, फाड़ना, चीरना, दुकड़े २ करना, २ प्रकट करना, भेद खोल देना ।

प्रा० फोड़ा—( सं० स्फोटक, स्फुट =

फूटना) पु० घाव, जखम, कुनमी  
प्रा० फोला - पु० फफोला, दाना ।

फा० फौरन् - क्रि० वि० मघः, तुम्ह  
सभीदय, तलाहल, तल्लण ।

अं० फोटो - स्थायी, परदेसीय,  
वाणिज्य ।

( व )

सं० व - पु० वरुण, = यदा, ३ समुद्र  
४ गानी ।

प्रा० वेंकई - ( सं० वट्टा, वट्ट, वट्टि =  
टंका होना ) भा० स्त्री० टंकागन,  
टंकाई, निहायन, वांरागन, फेर,  
पुणव ।

प्रा० वेंगडी - स्त्री० शिपों के हाथ में  
पहननेवा का एक पहना ।

प्रा० वेंगला - पु० एतद्वामकान  
जो चारों ओर से घुमा रहता है,  
२ ( सं० वट्ट ) एक तरह का पाव,  
३ बंगाली बोली ।

प्रा० वेंगाला - ( सं० वट्ट ) पु० बंगाल  
देरा का नाव ।

प्रा० वेंगाली - ( सं० वट्ट ) पु० व-  
गाने का रहनेवाला, स्त्री० बेंगाले  
की बोली ।

प्रा० वेंचना - ( सं० वट्टन, वंजु = व-  
ना ) क्रि० प्र० चटना, चंचना ।

प्रा० वेंदवार - ( सं० वट्ट = वांरागन,  
४ वार = दरावा ) स्त्री० पूर

आर पत्तों की बाना मोड़प'ह अगवा  
कोई उत्तर और परी दिन दरावाजे  
पर बाँधे हैं ।

प्रा० वेंदर - ( सं० वानर ) पु० एक  
जानवर जिसका डीन डील और  
मुँह आदमी से बहुत मित्रता है ।

प्रा० वेंदरकीसी - ( सं० वट्टलना -  
बोल० गुप्त रिसाना, अर्द्ध गुप्ते  
में होना ।

प्रा० वेंदरकीतरह नचाना - बोल०  
यदा कठिन काम करना ।

प्रा० वेंदर क्या जाने अदरक का  
स्वाद - वशावत - मर्त्य आदमी अदरक  
की भाँटा गुण नहीं जानता ।

प्रा० वेंदवा } ( सं० वंजु = वांरागन )  
बंधुवा } पु० कैदी ।

प्रा० वेंदी - ( सं० वट्टी, गट्टे = मगरना  
५ भुजना, नमकदार करना ) पु०  
बंधुवा, कैदी, २ भाट ।

प्रा० वेंदी - स्त्री० शिपों के लिलाट  
पर पहननेवा एक पहना, बन्दिषा ।

प्रा० वेंदीगृह - ( सं० वट्टागृह, वट्टी  
= वेंदी, गृह = घर ) पु० जेलखाना,  
बंद रहना, कारागार ।

प्रा० वेंदीजन - ( सं० वट्टी + जन )  
पु० भाट, पारख, दण्ड बगानेवा ।

प्रा० वेंदीड - ( सं० वट्ट = वांरागन )  
स्त्री० दासी, लौकी, काँदी ।

प्रा० वक्र - ( सं० वट्ट, वट्टि = टंका



तराना, विषगाना, छोटना ।

प्रा० वग - ( सं० वरु ) पु० वगुचा ।

प्रा० वगहूट - ( वग=वगहोर, हूट=हूटना ) श्री० गरपट, चचा ।

प्रा० वगहूटदोड़ना - बोल० सपेट जाना, नेत्र दोड़ना ।

प्रा० वगला } ( सं० वरु ) पु० एक  
वगुला } जलका जीव, वग ।

प्रा० वगलाभक्त - बोल० कपटी, छनी, पातण्डी, कपट पर्या, करीबी ।

प्रा० वगलामारेपंतहाथजाये - बहावर० गरीबको दुःख देनेसे बहुत लाभ नहीं होता है ।

प्रा० वगार-पु० चरागाह, रमना, दगावों की क़तर, बाघ ।

प्रा० वगूला ( ॥ व. अथवा वायुसे ) पु० हवाका चकर जिसमें घूम ऊंची चढ़ती है बरफ़, चक्रवात ।

प्रा० ववार-पु० छोकना, धी और बुद्ध ममाला गर्म करके दाल आदि तरकारीयों में टाटना ।

प्रा० वग्धी } स्त्री० एक नरक की  
वर्गी } अंगरेजों गाड़ी जिसमें घोड़ा जोता जाता है ।

प्रा० वघेला - ( बाघ ) पु० एक जाति के राजपूत, २ बाघका घवा ।

प्रा० वच - ( सं० वचस्, वच्=बोलना ) पु० वचन, वाक्य ।

प्रा० वचकाना - ( का० वचाते ) गुछोट, पु० कथक्का लड़का २ छोट, जूना, बघोका जूता ।

प्रा० वचत-स्त्री० शेष, बचती, बकिया, बकाय, अवशेष ।

प्रा० वचन - ( सं० वचन ) पु० बान, वाक्य, कहना, २ कौल, करार, पण, होड़, गर्न ।

प्रा० वचनचूक - बोल० अचिरवःसी, घण्टवार ।

प्रा० वचनछोड़ना - बोल० वचन तोड़ना, कौलछोड़ना ।

प्रा० वचनतोड़ना - बोल० कहींहुई पान से फिर जाना, शर्न से फिर जाना ।

प्रा० वचनदेना - बोल० पक्का कौल करना, पण करना, प्रतिज्ञा करना ।

प्रा० वचननिभाना या पालना - बोल० कहेको पूरा करना, अपनी बात पर पक्का रहना ।

प्रा० वचनबन्धकरना - बोल० बधन लेना, इकरार करना ।

प्रा० वचनबंधहोना - बोल० बचन देना ।

प्रा० वचनमानना - बोल० बान मानना, आज्ञा पालन करना ।

प्रा० वचनलेना - बोल० इकरार करना ।

प्रा० वचनहारना - बोल० मानले-

आग जो घोंड़ी के मुँह में निकलती है ( हिंदुओं के शास्त्र अनुसार ) ।

प्रा० बड़हल—पु० एव फल का नाम ।

प्रा० बड़ा } ( सं० बड़ा, बड़=विभाग  
बग } करना, वा घेरना ) पु०  
पीसी हुई दाल की टिकिया जिस  
सहो पी भगवा नेत्र में नलकर  
रामे हैं, चक्र ।

प्रा० बड़ा—( सं० बड़, बन्=घेरना )  
पु० नेत्रा, प्रधान, मुद्रिणा बड़ी  
बन बा. महा ।

प्रा० बड़ाकरना—पेल० बड़ाना, २  
विभाग हो बुझा देना । [ बात ।

प्रा० बड़ाबोल बोल० बड़बोल की

प्रा० बड़ेबोलकाभिरनीचा बोल०  
घण्ट से गगनी होनी है ।

प्रा० बड़ागस्ताफकड़ना—बोल०  
मर जाना, कत्त मरना ।

प्रा० बड़ेपेटालाहोना—बोल०  
संकोपी होना, धीर होना, क्षा-  
बन् होना ।

प्रा० बड़ाई ( सं० बड़ना ) प्रा० श्री०  
बड़ावन, बड़वान, बरबर, २ गगन,  
मृत्ति, वरंसा, ३ बरंदा, आविधान ।

प्रा० बड़ाईकरना } बोल० गग-  
बड़ाईमानना } रना, बरसा  
कर २ बरंदा ह-  
व मरना ।

लंबी चौड़ी हांकना, अपनी सराह-  
ना करना ।

प्रा० बड़ाईदेना—बोल० आदरदेना,  
उज्जत देना ।

प्रा० बड़ी—( सं० बड़ी ) श्री० एक-  
रुई की गाने की चीज जो दालकी  
गनरी है । इस गाने की तरकारी की  
गाने में ( बड़ा ) बड़ी उमर की  
श्री० पु० बड़ शब्द का स्त्रीलिंग ।

प्रा० बड़ीवातनहीं—बोल० कुछ  
कठिन नहीं ।

प्रा० बड़ई—( सं० बड़ेकि, बृध=बड़ा-  
ना ) पु० गानी, सुनार, मिस्त्री ।

प्रा० बड़ती } ( सं० बड़ना, बृध=व-  
बड़ती } दना ) श्री० अधिकारी  
बुद्धि, साम्राट का बड़ना, तरकी,  
व्यक्ति ।

प्रा० बड़ना ( सं० बड़ना, बृध=बड़-  
ना ) क्रि० अ० अधिक होना, बहुत  
होना, ऊंचा होना, २ आगे चलना ।

प्रा० बड़चरना—बोल० डीठराना,  
अभिमान होना ।

प्रा० बड़जाना—बोल० अन्दाज से  
बाहर जानना ।

प्रा० बड़नी—श्री० भाइ, गुमारी ।

प्रा० बड़ाना—क्रि० अ० अधिक होना,  
बहुत होना, बड़ा करना, २ ऊंचा  
करना, लम्बा करना, ३ आगे

लाना, ४ घठा लेनाना, भलग  
करदेना, ५ बन्द करना (बंद  
कानको) ।

प्रा० वढ़ाव-(बढ़ना) भा० पु० बढ़ती,  
अधिकारी, २ चढ़ाव, उभार ।

प्रा० वढ़ावा-(बढ़ना) पु० खुशामद,  
सारीफ, बढ़ाई, २ उभार ।

प्रा० वढ़िया-(बढ़ना) गु० बहुत  
मोलका, महंगा, बहुमत्त ।

सं० वणिक्-(वणिकलेखन करना)  
पु० बनियां महाजन, ज्योपारी,  
सौदागर ।

सं० वणिक्पथ-पु० हट्ट, हाट, बाजार ।

प्रा० वणिज-(सं० वणिक्पथ) पु०  
ज्योपार, लेन देन, सौदागरी ।

प्रा० वणिया-(सं० वणिक्पथ) पु०  
बनियां, महाजन, ज्योपारी,  
बैरप, सौदागर, दुकानदार ।

प्रा० वत-वात, कोत ।

प्रा० वतवढ़ाव-बोल० वात बढ़ाना ।

प्रा० वतवना-बोल० वातनी, वात  
बतलवाला ।

प्रा० वतक-(अ० वतकी) स्त्री०  
एक जल का मीठा ।

प्रा० वतकड़ाव, पु० (सं० वा-  
तकही, स्त्री०) चोरी, चपन )  
वातचीत ।

प्रा० वतकड़-गु० पकी, चटानी,  
बाचाल, गपौदिया ।

प्रा० वतराना-(सं० वार्ता) कि०  
अ० वतिथाना, बातचीत करना ।

प्रा० वतलाना } (सं० वद=कर-  
वताना } ना ) कि० सुन

जताना, चिताना, सुझाना, सुझा-  
ना, दिखाना, सिखलाना, समझा-  
ना, सीखत करना, इशारा करना,  
व्याख्या करना, अर्थ करना ।

प्रा० वतास्त-(सं० वात, स्त्री० इ-  
बा, पवन, पाव, बयार, वायु) ।

प्रा० वतासा } (वतास, इबा) पु०  
वताशा } एक तरह की मिठाई,

२ पुतपुता ।

प्रा० वत्ती-(सं० वत्ति, वट्ट=रोना)

स्त्री० बाती, २ पलीना, ३ बांस  
आदि की छड़, ४ छाख की छड़ी,  
जिस पगड़ी जिसको मसिवाही लपेट  
कर मोलकर लेते हैं ।

प्रा० वत्तीजलाना-बोल० चिरास  
जलाना, दीया जलाना ।

प्रा० वत्तीचढ़ाना-बोल० पाबो में  
वत्ती डालना ।

प्रा० वत्तीस-(सं० दाविश्व) गु०  
तीस और दो ।

प्रा० वत्तीसी स्त्री० दांतों की लड़ी,  
सब दांत, चोमी गिनाला, बो-

ल० दांत दिखाना, ईसना ।  
प्रा० वत्तीसी-स्त्री० वत्तीस, गुपारी ।

और बतीस दुहारा और रुखा जो दुन्हा दुन्हन के ननिहाल को जाना है उसे बतीसी कहते हैं ।

प्रा० बधुवा—(सं० वास्तूक) पु० एक तरह का साग ।

प्रा० बदना—(सं० बदन. बधू=कहना) क्रि० सं० दांव लगाना, मानना, र रचना, भाग में लिगा जाना ।

सं० बदर—(बधू=कहना) पु० पेर का वृक्ष, विनोला, कलासर्पों में ।

सं० बदरि—(बधू=दृक् होना) पु० बेर, एक फल का नाम ।

सं० बदरिकाश्रम—(बदरिका + आश्रम) पु० बदरिनाथ, बदरिनाथ का पहाड़ ।

प्रा० बदलना—(अ० बदल) क्रि० सं० गलटना, बदला करना, उलटना, और तरह से बना देना ।

प्रा० बदली—(बदल) श्री० बादल, देर ।

प्रा० बदली—(बदलना) श्री० नद-हीनो, एक जगह से दूसरी जगह जाना ।

प्रा० बदल (सं० बधू=कहना) पु० होना, परिवर्तन ।

सं० बदल (श्री० भीष्म पण, क-वर्दी) धातु, बदलने का क-विज्ञापन ।

कदल—(सं० कदल) पु०

बादल, बेघ, घटा ।

सं० वद्ध—(वन्धू=वांछना) र्म्य=५ वांछा हुआ, रुका हुआ, रुक, रुचिन, रुचमेद ।

सं० वध—(वधू=पारना) पु० पारना, हिंसा, हत्या, इनना ।

प्रा० वधना—(सं० वधन, वधू=पारना) क्रि० सं० मारना ।

प्रा० वधना } पु० लोटे, ऐसा प-  
वदना } क मिट्टी को छोटा  
बतान ।

प्रा० वधाई, स्त्री० } मंगलाचार,  
वधावा. पु० } आनन्दमन्त्र,  
आनन्द के गीत, मयनपहार मुवा-  
रक दी. सुशी का घाना ।

सं० वधक (वधू=पारना) क०=पु०  
वधिक } शिखरी, बोलिया, आ-  
वधी } नेहरी, मारनेवाला ।

सं० वधनीय—(वधू=मनीय) र्म्य=५ पु० मारनेयोग्य ।

प्रा० वधिया—(सं० वधू=वांछना) पु० नपुंसक पैल, मादना ।

सं० वधिर—(वन्धू=वध होना) पु० यान्तिमही सुनने की इन्द्रिय बँधी हुई हो ) पु० बरग, बनकूटा ।

सं० वधू (वन्धू=वांछना, वधू=नेहार) र्म्य=५ वधू. लड़के की श्री, माती, पत्नी, भोक्, श्री.—वधू-वधू=पण पगने की श्री.—देव-

वधू=देवी, देवता की स्त्री ।

सं० वधूटी—( वधू ) स्त्री० वह स्त्री,

पत्नी, मांया, मोरु, लड़के की स्त्री ।

सं० वध्य—( वधू=मारना ) स्त्री० पु०

मारने योग्य ।

सं० वध्यस्थान—धि० कांसी देने

की जगह, वधूमि ।

प्रा० वन—( सं० वन ) पु० जंगल,

आपसे लगे वृक्ष ।

प्रा० वनजात्रा—( सं० वनपाषा )

स्त्री० प्रसंगे ८४ वन की पाशा ।

प्रा० वनज } ( सं० बाणिज्य ) पु०

वनिज } स्त्री० पार, लेन देन,

सौदागरी ।

प्रा० वनजर—( सं० वन्या ) स्त्री०

पक्षी धरती, ऊपर, बह धरती,

जिसमें कुछ नहीं उपज सक्ता ।

प्रा० वनजारा—( सं० वणिज ) पु०

जो नाश आदि बाणिज्य की चीजों

को पैसों पर लाद कर खे जाने हैं ।

प्रा० वनठनके—क्रि० पु० सज धज

के, भिगार करते ।

प्रा० वनन—धि० मोटा कितारी की

बाज ।

प्रा० वनमानुष—( सं० वनमानुष )

पु० एक जानवर जिसका होना

होम आदिकी का ता होना है, २

अंश है, बजसी ।

फूलों की माला जो पैसों तक लंबी

बन गई जानी है और बहुत बार

मुनसी, कुन्द, पंदार, पारिजात और

रूपल के फूलों से बनती है ।

प्रा० वनरा } पु० दुलहा, बर ।

वना } स्त्री० दुलहिन ।

प्रा० वनसी } स्त्री० दुलहिन ।

वनी } स्त्री० दुलहिन ।

प्रा० वनसी—( सं० वदिरा ) स्त्री०

मंझती पक्षीने हा बांटा, २ ( सं०

बेरी ) मुरली, बांसुरी ।

प्रा० वनात—स्त्री० ऊनी कपड़ा जो

दलदार मोटा होता है ।

प्रा० वनाना—क्रि० सं० रचना करना,

सैपार करना, निर्माण करना, २, ३ कर

करना, १ ठडाना ( जैसे मकान,

दोवार आदि ) ४ इकट्ठा करना,

पिलाना, ५ प्रथ रचना, ६ सैपारना,

भिगारना, ७ मेल कराना, पिछाना,

मनाना, ८ पढ़ाना, ९ सुपारना,

मरम्मत करना, १० निरानना,

११ मुद्र करना, १२ निरमल-

न, बिडाना, ठडाना करना, पुरल

करना, १३ मिरमना, पेदा करना,

१४ पूरा करना, १५ मारमाना,

ठडाना, १६ पारना करना ।

प्रा० वनाव—वनावा) पु० पु० मि-

शार, मेवार, २ देन, दिनाप-



बलगाय, भीष्मका का बड़ा भाई ।  
 सं० बलराम—(बल=जोर, रम=सेनना) पु० बलदेव, शेषजी का अग्रज और भीष्मका बड़ा भाई ।  
 सं० बलवत्—पु० बलपुक्त, बली, पुष्ट, पतन, पनवान् ।  
 सं० बलवन्त } (बल=जोर, वत्=बलवान्) पु० जोरा-  
 वर, बली, सामर्थी ।  
 सं० बलवीर—(बल=बलदेव भी-  
 =भाई) पु० भीष्मका नाम ।  
 बलवा—पु० दंगा, झगडा,  
 कलह, बलावत् ।  
 बलवान्—(बल=बलपुष्ट, व-  
 न्=बलवान्) पु० भीष्मका ।  
 (बल=अमर, वा-  
 =इन्द्र, देवराज ।  
 =वक्रावर्ति, वगु-  
 कनार ।  
 अग्रज, इन्द्र ।  
 वर—पु० इन्द्र, वक्रावर्ति,  
 इन्द्र ।  
 इन्द्र-  
 त्रिमये  
 रा=श्री  
 , देव पति ।  
 देवा ) पु० इन्द्र  
 त्रिमये त्रिमये

का मोग, भेंट, कुर्बानी ।  
 सं० बलिदान—(बलि+दान) पु०  
 देवता के सामने बकरा आदि पशु  
 को मारके चढ़ाना, देवता के लिये  
 भोग, नैवेद्य ।  
 सं० बलिसङ्ग—पु० अंकुश, बाधुक,  
 कोडा, बन्दरों का समूह ।  
 सं० बलिष्ठ—पु० बड़ा, बलवाला ।  
 प्रा० बलिहारी—(संवलित) श्री०  
 निश्चावर, ममदुक, कुर्बान जानी ।  
 प्रा० बलिहारी जाना—श्री० निश्चा-  
 वर होना, बलवान्, पतनपतमाना ।  
 सं० बली—(बल) पु० जोरावर,  
 बलवान्, पराक्रमी ।  
 सं० बलीवर्द्ध—पु० मापट, माँड़ ।  
 सं० बलीमुख } (बली वा बलि=  
 बलिमुख } शीता चमड़ा, वन्=  
 हिलना वा वेगना) मुख=मुख अर्थात्  
 तिमके मुख पर का चमड़ा शीला  
 हो ) पु० बानर, बन्दर, बगि, मकड़ ।  
 सं० बलीयस } पु० अत्यन्तबली,  
 बलीयान् } बड़ा जोरावर ।  
 प्रा० बलुवा—(बालू) पु० बालुका  
 बालुवय, रेवला, कालूनि  
 प्रा० बल्लम—पु०  
 प्रा०  
 प्रा०

में मस्सों का रोग ।

प्रा० वस- (सं० वश, वश=बाहना)

पु० काइ, बल, जोर, २ अधिकार,  
गु० आधीन,—वश करना, शील०  
आधीन करना, दबाना,—वश में  
आना, काबू में आना, आधीन होना ।

फ्रा० वस- (सं०) गु० बहुत, २, ३,  
बहुतेरा, बहुवसत करना, शील० दह-  
रना, कर चुकना ।

प्रा० वसन्- (सं० वसन, वस्=पहन-  
ना) पु० कपड़ा, जोड़ा, वस्त्र, लूगा ।

प्रा० वसना- (सं० वसन, वस्=रहना)  
क्रि० अ० रहना, ठिकना, यासा  
करना, आयाद होना, घर बनाना ।

प्रा० वसन्त- (सं० वसन्त, वस्=रहना  
या मुगन्ध आना) स्त्री० एक श्वेत  
का नाम जो चैत्र और कुङ्कुम वैशाख  
के महीने तक रहती है, २ एक राग  
का नाम,—वसन्त फूलना, शील०  
सों के फूलों का भिलना,—

सों में वसन्त फूलना, शील०  
राना—वसन्त के घर की भी  
है,—कहावत यह जानने भी  
पा हो रहा है ।

सन्ती- (वसन्त) पु० एक  
हार का पीला रंग, गु० पीला ।

वसना- (वसना) क्रि० म०

आकाद करना, वस्ती करना, आद-  
मियों से भरना, २ (वस्=मुगन्धित  
होना) मुगन्धित करना ।

प्रा० वसूला-पु० वह औजार जिस  
से वस्त्रें लकड़ी की जाती हैं ।

प्रा० वसेरा- (सं० वास) पु० वासा,  
रहने की जगह, पत्थर का घोंसला  
अथवा अट्टा, पत्थर के रात की रहने  
का वासा ।

प्रा० वसुदेव- (सं० वसुदेव, वसु=धन  
दिव=चमकना) श्रीकृष्ण का बाप  
और शूरसेन का बेटा ।

प्रा० वस्ती- (सं० वसती, वस्=रहना)  
स्त्री० छोटा गांव, आवादी ।

प्रा० वस्तु- (सं० वस्तु, वस्=रहना  
वस्तु) याद करना) स्त्री० चीज,  
पदार्थ ।

प्रा० वस्त्र- (सं० वस्त्र, वस्=पहनना)  
पु० कपड़ा, लूगा, वसन ।

प्रा० वहकना- क्रि० स० थोसा खाना,  
२ नश्ये कुङ्कुम करना, ३ नींद में कुङ्कुम  
थोसना, ४ यद के करना ।

प्रा० वहकाना- क्रि० स० थोसा देना,  
मुलाना । [वांछित ।

प्रा० वहँगी- (सं० विहँगी) स्त्री०

प्रा० वहत्तर- (सं० दिसतन) गु०  
मत्तर और दो ।

प्रा० वहधा- (सं० वाधा) पु० दुःख,  
आपदा, २ कष्ट ।

प्रा० वहन- (सं० वहनी) स्त्री०  
वहिन) माँ की बेटी, सौंदर्य, २  
संसार, बरना ।

बलराय, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० बलराम— बल=जोर, रम=

सेलना ) पु० बलदेव, शेषजी का

अबन्तार और श्रीकृष्ण का बड़ा भाई ।

सं० बलवत्—गु० बलयुक्त, बली, पुष्ट,

मज्ज, बलवान् ।

सं० बलवन्त } ( बल=जोर, वन्=

बलवान् } वाला ) गु० जोरा-

वर, बली, सामर्थी ।

सं० बलदेव—( बल=बलदेव जी,

पु० श्रीकृष्णकानाम ।

दंगा, भगदा,

बलाबल ।

बल—( बल=बलमद, अ-

भाई )

का मोग, भेटे,

सं० बलिदान—(

देवता के सामने

को मारके

मोग, नैवेद्य ।

सं० बलि

कोड़ा, बन्दगी

सं० बलिष्ठ—गु०

प्रा० बलिहारी

निष्ठावर,

प्रा० बलिहारीजः

पर होना, बलवान्

सं० बली—( बल

बलवान्, पराक्रमी

सं० बलीवर्द्ध—पु०

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

सं० बलीवर्द्ध

कता

=शानी, बल=

अर्थात् जिसमें

लक्ष पाता-

लमें भेज दिया, २ नैवेद्य देवता

सं० बली-स्त्री० नाबका देव

बली मारना, बोल

प्रा० क्वासीर-पु०

में मस्तों का रोग ।

प्रा० वस—(सं० वश, वश=वाहना)

पु० काव, बल, जोर, २ अधिकार,  
गु० आधीन,—वश करना, बोल०  
आधीन करना, दबाना,—वश में  
आना, काबू में आना, आधीन होना ।

फ्रा० वस—(ल०) गु० बहुत, पूरा,  
बहुतेरा,—व्यवस्यकरना, बोल० ठह-  
रना, कर चुकना ।

प्रा० वसन्—(सं० वसन, वस्=पहन-  
ना) पु० कपड़ा, जोड़ा, पस्त्र, लूगा ।

प्रा० वसना—(सं० वसन, वस्=रहना)  
क्रि० अ० रहना, ठिकना, वासा  
करना, आवाह होना, घरवाना ।

प्रा० वसन्त—(सं० वसन्त, वस्=रहना  
या मुगन्ध आना) स्त्री० एक श्रुतु  
या नाप जो चैत और कुद वैशाख  
के महीने तक रहती है, २ एक राग  
का नाप,—वसन्त फूलना, बोल०  
सरसों के फूलों का फिलना,—  
आंखों में वसन्त फूलना, बोल०  
निमिराना—वसन्त के घरकी भी  
खरर है,—कहावन यह जानने भी  
हो क्या होरहा है ।

प्रा० वसन्ती—(वसन्त) पु० एक  
महार का पीलारंग, गु० पीला ।

प्रा० वसना—(वसना) क्रि० म०  
आवाह करना, वस्ती कराना, आह-  
वियों से भरना, २ (वस्=मुगन्धित  
होना) मुगन्धित करना ।

प्रा० वसूला-पु० वह औजार जिस  
से यई छकड़ी खीलत है ।

प्रा० वसेरा—(सं० वास) पु० वासा,  
रहने की जगह, पत्तेरु का घोंसला  
अथवा झंझा, पत्तेरु के रातको रहने  
का वासा ।

प्रा० वसुदेव—(सं० वसुदेव, वसु=वन  
दिव=वपकना)—श्रीकृष्ण का बाप  
और शूरसेन का बेटा ।

प्रा० वस्ती—(सं० वसती, वस्=रहना)  
स्त्री० छोटा गांव, आवादी ।

प्रा० वस्तु } (सं० वस्तु, वस्=रहना)  
वस्तु } या दकना) स्त्री० चीज,  
पदार्थ ।

प्रा० वस्त्र—(सं० वस्त्र, वस्=पहनना)  
पु० कपड़ा, लूगा, वसन ।

प्रा० वहकना—क्रि० स० घोसा खाना,  
२ नशेमें कुद कहना, ३ नोदमें कुद  
खोलना, ४ यई के करना ।

प्रा० वहकाना—क्रि० म० घोसा देना,  
भुजाना । [बांवरि ।

प्रा० वहँगी—(सं० विहंगी) स्त्री०

प्रा० वहत्तर—(सं० दिसतति) पु०  
मत्तर और दो ।

प्रा० वहधा—(सं० वाधा) पु० दुःख,  
आपदा, २ रुकाव ।

प्रा० वहन } (सं० वहिनी) स्त्री०  
वहिन } माँकी बेटा, सरोदर, २  
संतति, बरना ।

प्रा० वहना—(सं० वह=वहना या ले जाना) क्रि० अ० चलना, पानीका जानारी होना, २. हवाका चलना ।  
 प्रा० वहतेपानीमेंहाथधोना—क० हाथत—जबतक अपना कामबना रहे तबतक अच्छा काम करलेना ।  
 प्रा० वहनेऊ } (सं० भगिनीपति) पु० वहनोई } वहिन का पति ।  
 प्रा० वहरा } (सं० वहिर) गु० वह वहिरा } आदमी जिसके सुनने की इन्दी सराव होगई हो, कनफूटा ।  
 प्रा० वहल } स्त्री० एक—तेरह की वहली } गाड़ी ।  
 प्रा० वहलाना—क्रि० स० मसखरना, २. भुनाना, चढेकाना, किसी चीज में लगा रमेना । [नुशरी ।  
 प्रा० वहेलिया—पु० शिकारी, घ-  
 प्रा० वहाना—(वहना) क्रि० स० चलाना, पानी जारी करना, २. पु० हल, कपट, होला । [करना ।  
 प्रा० वहादेना—बोल० उजाड़ना, नाश ।  
 प्रा० वहाफिरना—बोल० भटकना फिरना, इधरवधर फिरना ।  
 प्रा० वहाव—(वहना) भा० पु० पानीका जारी होना, वाद, चढ़ाव ।  
 प्रा० वहिर्मुख—(सं० वहिर=बाहर, मुख १० पसीरेमुख, अर्थात्, बागी ।  
 २. वहाजनों के हिस्साव

रखने की किताब जो एक किनारे की ओर सी जाती है ।  
 प्रा० वहीर } स्त्री० सेनाकी सामग्री, वहीड़ } डेराउपट्टाआदि ।  
 सं० वहु (वहि=वहना) गु० बहुत, डेर, वड़ा, अधिक ।  
 प्रा० बहुत—(वह) गु० अधिक ।  
 प्रा० बहुतगई थोड़ीन्ही—बोल० उतर पूरा हो चुका है ।  
 प्रा० बहुतान } (सं० वहना) स्त्री० बहुतायत } अधिकारी ।  
 सं० बहुनिथ गु० बहुत दिन, बहुत बेर, अनेकवार, अनेक, बहुत ।  
 प्रा० बहुतेरा—(सं० वहना) गु० बहुतसा, बहुतही बहुत ।  
 सं० बहुधा—(वहु=बहुत, धा=प्रकार) क्रि० वि० बहुत प्रकारसे बहुत भांति से, बहुत बार, अकसर ।  
 सं० बहुबाहु—(वहु=बहुत, बाहु=भुजा) गु० रावण व सहस्रबाहु आदि ।  
 सं० बहुमूल्य—(वहु=बहुत, मूल्य=मोल) गु० बहुत मोलका, बढ़िया, महंगा ।  
 प्रा० वहुरि } समुच्चय—फिर, पुनि, और । वहारी }  
 प्रा० वहुरूपिया—(सं० वहुरूपी) पु० भांड, स्थांगी ।  
 सं० बहुवचन—(वहु+वचन) पु० बहुतको मतलबानेकाना, बहुतवर्ग ।  
 सं० बहुल—गु० प्रचुर, बहुत, पु०

कृष्णवर्ण, अग्नि, आकाश ।

सं० बहुलगांधा-श्री० एता, इलायची ।

सं० बहुविधि-( बहु=बहुत, विधि=प्रकार ) क्रि० वि० बहुत प्रकार से, अनेक भाँति से ।

सं० बहुश्रुत-( श्रु=सुनना ) गु० पण्डित, विद्वान्, शास्त्री ।

प्रा० बहु-( सं० बहु ) स्त्री० दुलहिन, भार्या, मोरु, अपनोह, चेकीदुलहिन ।

प्रा० बाँक-( सं० बाँक, बनि=देना, होना ) स्त्री० देनापन, निर्झापन, भुसाव, ३ नदी का मुखाव, ४ दोप, अपराध, दुष्टता, ५ एक गहने का नाम जो धातू पर पहनते हैं ६ एक शस्त्र का नाम जो कटार के ऐसा होता है ।

प्रा० बाँका } ( सं० बाँक ) गु० टेढ़ा,  
बाँकुस } निर्झा, २ बड़ादुर्ग, घोर ३ छेड़ा, अकड़ित, अकड़वेग ।

प्रा० बाँचना-( सं० बाँचन, बाँच=बोलना ) क्रि० सं० पढ़ना, पाठकरना, बचना ।

प्रा० बाँचना-क्रि० अ० बाँचना, जीता रहना ।

प्रा० बाँझा-( सं० बाँझा ) स्त्री० इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

प्रा० बाँझित-( सं० बाँझित ) गु० चाहा हुआ, इच्छित ।

प्रा० बाँझ-( सं० बाँझा ) स्त्री० चह स्त्री जिसकी लड़का बालीन होता हो ।

प्रा० बाँट-( सं० बाँटन, बाँट=बाँट

ना ) पु० भाग, हिस्सा, प्रेश, २ बटारा, ३ गाय भैंस का दूधने समय का खाना ।

प्रा० बाँटना-( सं० बाँटन, बाँट=हिस्सा करना ) क्रि० सं० हिस्सा करना, भाग देना ।

प्रा० बाँडा-( सं० बाँड, बाँड=बाँटना ) गु० पूँछ फटा, बेपूँछ, बेवैश्रामा, निर्लज्ज ।

प्रा० बाँदी-स्त्री० लोन्डी, दासी, चेरि ।

प्रा० बाँध-( सं० बाँध ) पु० पानीकी रोक, नालाबन्धी पाल, मेड़बन्ध, बाड़ा ।

प्रा० बाँधना-( सं० बाँधना ) क्रि० सं० जरुड़ना, बसना, २ बाँध करना, ३ पानी रोकना, ४ बहाना, धामना, ५ लेपटना, ६ मोड़ देना, गिरा देना ।

प्रा० बाँधनू-( सं० बाँध=बाँधना ) पु० एक तरह का रंगना जिसमें कपड़े को बहुत सी जगह बाँधकर के रंग चढ़ाते हैं कि हर एक रंग जुदा दिखलाई दे ।

प्रा० बाँस-( सं० बाँस ) पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी पीकी होती है ।

प्रा० बाँसपरचढ़ना-बाल० कलड़ी होना, बदनग होना ।

प्रा० बाँसफाड़-पु० बाँस की रक टोकरी आदि बनाने वाली ।

प्रा० बाँसरी } ( सं० बाँसरी ) स्त्री०  
बाँसली } मुरली, धुरी, बणु  
बाँसुरी }

प्रा० वांह ( सं० वाहु ) स्त्री० भुना,  
बाहु, २ आस्तीन ।

प्रा० वांहट्टना-बोल० कोई सहा  
यक न रहना ।

प्रा० वांहचढ़ाना-बोल० लड़ाई को  
तैयार होना ।

प्रा० वांहदेना-बोल० सहायता दे-  
ना, मदद करना ।

प्रा० वांहपकड़ना-बोल० सहायता  
करना, पकड़करना, आश्रयदेना ।

प्रा० वांहवल-बोल० सहायक, सा-  
थी, विभायनी । [ करना ।

प्रा० वांहगहना-बोल० सहायता

प्रा० वांहगहेकीलाज-गु० जिसको  
सहायता करे उसको छोड़ना पड़ी  
लाज भी पात है ।

प्रा० वाई-स्त्री० महारानी, ( मरहठों  
में ) २ कंचनी ।

प्रा० वाई-( सं० वायु ) स्त्री० हवा,  
बादली, बात रोग ।

प्रा० वाई पचना-  
उतरना, ..

प्रा० वाईममड़  
बढ़ाना, ..

प्रा० वाईस-( सं०  
बीस और दो ।

घर जो एक हाने में होते हैं ।

प्रा० वाग } स्त्री० वागडोर, लगाव,  
वागुरु } फंदा, जाल ।

प्रा० वागमोड़ना-बोल० शीतका  
दन्त जाना ।

प्रा० वागलूटना-बोल० वेवराहीना,  
बरा में न रहना ।

प्रा० वागडोर-स्त्री० बहरस्ती जिस  
को लगाव में लगा कर साईस घोड़े  
को ले चलता है ।

प्रा० वागा-( सं० वस्त्र ) पु० जोड़ा,  
पहनने के बहुत अच्छे कपड़े,  
खिलौना ।

प्रा० वाघ } ( सं० व्याघ्र ) पु० ना-  
वाघा } हर शेर ।

प्रा० वाघम्वर-( सं० व्याघ्राम्वर )  
पु० वाघकी छाल, शेर की पोस्त ।

प्रा० वाछना-( सं० वाञ्छ=चाहना )  
क्रि० स० छांटना, चुनना ।

प्रा० वाजन } ( सं० वाय ) पु०  
वाजा } बजाने का यंत्र, जो  
बीज-बजाने के लिये बनाई जा-  
ता गाता, बोल० बहुत से  
की आवाज ।

सं० वाय, बहु-  
क्रि० अ० आवाज

फा०वाजू } पु० एक गरना जिसको  
वाजूबंद } बाजू पर बांधने हैं,  
धुनबन्ध ।

प्रा०वाट—(सं०वाट, बट=घेरना) पु०  
मार्ग, रस्ता, राह, इगर, पन्थ ।

प्रा०वाटकाटना—बोल० रास्ता च-  
लना, सफर तैयार करना ।

प्रा०वाटिका—(सं०वाटिका, बट=  
घेरना) स्त्री० बाड़ी, कुलवाड़ी  
बगीचा, उपवन ।

प्रा०वाड़—(सं० वाट, बट=घेरना)  
स्त्री० झूरी या तलवार की पार, २  
अहावा या घेरा जो बांटोंसे बनाते  
हैं, ३ सिपाहियों की कतार ।

प्रा० वाड़उड़ाना—बोल० एकसाथ  
बन्दूक चलाना, बन्दूकोंको फेरकरना ।

प्रा० वाड़झाड़ना—बोल० बहुत  
आदमियोंका एकसाथ बन्दूक दागना ।

प्रा०वाड़दिलवाना—बोल० सान-  
परचवाना, भीगाकरना, भीक्षणकरना ।

सं०वाड़व—पु० नरक, समुद्रकी अग्नि,  
क्षिपों का कान, घोड़ोंका मध्य,  
प्रक्षरण ।

प्रा०वाड़बांधना—बोल० बांटों से  
रेतको वा किसी जगहको घेरना ।

प्रा०वाड़रखना—बोल० लीगाहर-  
ना, सानकर बहाना ।

प्रा०वाड़हीनवसेतको मारने  
रखवालीकोनकरे—बुराई

जिम पर भरोसा हो या न हो

राले तब कोई चीजनहींपचसक्ती ।

प्रा०वाड़ा—( बट=घेरना ) पु० क-  
हाता, घेरा ।

प्रा०वाड़ी—( सं०वाटी, बट=घेरना )  
स्त्री० छोटा बाग, बगीचा, उपवन,  
बगीचेमें घर, बंगाली घरको वाड़ी  
कहते हैं ।

प्रा०वाड़—( वाड़ना ) स्त्री० दूती,  
अभिधाई, नदी के पानीका उध-  
ड़ना या अपनी हड से अधिक पड़  
झाना ।

प्रा०वाड़ना—(सं०वाड़=बड़ना) क्रि०  
अ० बड़ना, चमंदना ।

प्रा०वाण } ( सं०वाण, वाण=वाण्ड  
वान ) करना ) पु० तीर, २ मुंज  
की पनीहुई रस्सी, बिरोधन का  
पुख बाणामुरा ।

सं०वाणलिंग—पु० वाणामुर के  
मर्मदा नदीके मध्य में बने  
एक को उसको कहते हैं ।

प्रा०वाणि } ( सं० वाणिज्य =  
वाणी ) वाणिज्य, वाणिज्य  
बोली, वाणिज्य, वाणिज्य

सं०वाणिज्य—वाणिज्य, वाणिज्य  
वाणिज्य, वाणिज्य, वाणिज्य

वाणिज्य, वाणिज्य, वाणिज्य  
वाणिज्य, वाणिज्य, वाणिज्य

वाणिज्य, वाणिज्य, वाणिज्य  
वाणिज्य, वाणिज्य, वाणिज्य





प्रा० बारम्बार—( सं० बारंवार, बार ) क्रि० वि० बार बार, फिर फिर, घड़ी घड़ी, मुतरातिर, लगातार [ और दो ।

प्रा० बारह ( सं० द्वादश ) पु० दश

प्रा० बारहवाँट—? मोह, २ दैन्य, ३ भय, ४ हाव, ५ हानि, ६ ग्लानि, ७ धुषा, ८ तृषा, ९ मृत्यु, १० लोभ, ११ मृषा, १२ अगतीति ।

प्रा० बारहवाटहोना—बोल० टन-डना, बिगडना, सन्धानःश होना, २ दुःखपाना, सनाया जाना ।

प्रा० बारहदरी—( बारह + दर = दरवाजा ) स्त्री० वह महानभिसरेबारह दरवाजे हैं, बंगला, हवादार महान ।

प्रा० वाराखरी—( सं० द्वादशखरी ) स्त्री० व्यंजनों में बारह स्वरों का मिलान ।

प्रा० वारासिंगा } ( सं० द्वादश  
वारहसिंगा } = बारह, भृंग = सींग ) पु० एक जानवर जो हरिण सा होता है जिसके सींग लंबे होते हैं और सींग में सींग होते हैं ।

प्रा० वाराह—( सं० वगह ) पु० शूहर, मूयर ।

प्रा० वारी—( सं० वारी ) स्त्री० बाड़ी, पगीचा, २ ( सं० बालिका ) लड़की, ३ ( सं० बार ) निपट

समय, पारी, नौबत, उसरी ।

प्रा० वारीदार—पु० वह नौकर जिसकी नौकरी का समय नियत हो ।

प्रा० वारी—स्त्री० भरोखा, दरीची, छोटा दरवाजा, २ हिंदुओं में एक जाति, के लोग जो मशाल और पत्ती बनाते हैं, ३ एकगहनेका नाम जो नाक और कानमें पहना जाता है ।

प्रा० वारुणी—( सं० वारुणी, वरुण अर्थात् भिसे का देवता वरुण है ) स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब, २ पश्चिम दिशा, ३ शताभिषानक्षत्र, ४ दूध ।

प्रा० वारुत—स्त्री० दारु, शोरा, गंधक और कोयला आदि से बनी हुई चीज जो आग पड़ने ही भस्म से उड़ जाती है ।

प्रा० वारी—( सं० बाल ) पु० बालक ।

सं० बाल—( वच् = जीना, दान, कटना ) पु० लड़का, बालक, २ केश, ३ पु० मूत्र, नाममभ, अन्नान, बेहोश ।

प्रा० बाल—( सं० बाला ) स्त्री० सोलह बरस की लड़की, २ पु० सात आठ बरस का लड़का लड़की, — ३ अनात की कुनारी, ४ वह निशान जो काच और गिपाचे आदि में होता है । [ बाले, बाले वंश ।

प्रा० बालगोपाल—बोल० लड़के सं० बालग्रह—पु० बालकों के दुःख देनेवाले ग्रह, उपग्रह ।

- १० विदारना—क्रि० सं० भगाना,  
विचनाना ।
- १० विताना—( वीतना ) क्रि० सं०  
विधाना, काटना ।
- ० वितीत—( सं० व्यतीत ) गु०  
वीता हुआ, गुजरा हुआ, जो पूरा  
हो चुका, मुत्कृती ।
- प्रा० वित्त—( सं० वित्त, वित्त=व्यो-  
दना, देना ) पु० धन, दौलत,  
दण्ड, २ गात, घना ।
- प्रा० विथकना—क्रि० अ० चथित होना  
अधंभे में होना, ईर्ष्या में आना ।
- प्रा० वियेना } ( सं० विस्तरण )  
विथुरना } क्रि० अ० विस्तरना,  
विथरना, फैलना ।
- प्रा० विथा—( सं० व्यथा ) स्त्री०  
पीड़ा, दुःख, दर्द ।
- प्रा० विदा } ( सं० विद फाड़ना वा  
विदाई } जुदा होना और  
परस्पर में विद्वेष=द्वेषित होना )  
स्त्री० लुदी, जाने की आज्ञा, रुख-  
सत, रुखसती ।
- ० विदाकरना—बोल० रुखसत  
करना ।
- ० विदारना—( सं० विदारण, वि-  
वहृत, व=फाड़ना ) क्रि० सं०  
फाड़ना ।
- ० विदेश—( सं० विदेश, वि=दूसरा,  
देश=भूतक ) पु० दूसरा देश, दूस-  
रा भूतक, परदेश ।
- प्रा० विदेशी—( विदेश ) गु० परदे-  
शी, सैर भूतक का ।
- प्रा० विधना—( सं० विधि ) पु० वि-  
धाना, प्रथा, देव ।
- प्रा० विधवा—( सं० विधवा वि=वि-  
न, धव=पति ) स्त्री० रांड, बेवा, जिस  
का पति मर गया हो ।
- प्रा० विन } ( सं० विना, वि+ना )  
विना } क्रि० वि० छोड़के, छुड़-  
रहित, विद्वन, सिवाय ।
- प्रा० विनआये तरना—बोळ० वि-  
मोत मरना ।
- प्रा० विन रोये लड़का दूध नहीं  
पाता—कहावत० विन मांगे कुछ  
नहीं मिल सकता ।
- प्रा० विनभयप्रीत नहीं—कहावत०  
विनडराये कोई नहीं मानता ।
- प्रा० विनमांगे दूध बराबर मांगे  
सो पानी—कहावत० विनमांगे  
पिले वही अच्छा है ।
- प्रा० विनवना } ( सं० विनमन, वि=  
विनोना } बहुत, नम्र=नम-  
स्कारकरना ) क्रि० सं० नमस्कार  
करना, पूजना ।
- प्रा० विनसना—( सं० वि, नश=नाश  
होना ) क्रि० अ० नाश होना,  
विगड़ना ।
- प्रा० विनास—( सं०  
नाश, संसार,

प्रा० विनीला—पु० रुईका चीज ।

प्रा० विन्ती } (सं० विनीति, वा  
विनती } विनति, वा विनय ।

वि=बहुत, नि=गाना वा चलाना वा  
नह=नमस्कारकरना ) स्त्री० विनय,  
नम्रता, मार्थना, अर्ज ।

प्रा० विन्द } (सं० विन्दु) स्त्री  
विन्दी } शून्य, सिफर, बिन्दु ।

प्रा० विपत } (सं० विपत्ति) स्त्री०  
विपता } आपदा, दुःख, विपदा,  
तकलीफ । [ गुठली ।

प्रा० विया—(सं० बीज) पु० बीज,  
प्रा० वियालू—पु० रातका ताना ।

प्रा० विरद—पु० यश, नाय, ग्याते,  
रहियार ।

प्रा० सं० विरदावलि—(विरद=यश,  
सं० अवलि=पात) स्त्री० बहुत यश,  
बहुत ख्याति, बड़ी नामचरी ।

प्रा० विरमना—(सं० वि, रम=  
ठहरना, चैन करना) क्रि० अ०  
ठहरना, रहना, विलपना ।

प्रा० विरला—(सं० विरल, वि, रा  
=देना या लेना) गु० कोई कोई,  
अन्धा, अपूर्ण, अनूप ।

प्रा० विरवा—पु० रुख, वृक्ष, पौधा ।

प्रा० विरह—(सं० विरह, वि=बहुत,  
रह=झोड़ना) पु० जुदाई, विद्वोह,  
विपोग, बिजुड़ना, फुफव ।

प्रा० विरहनी—(सं० विरहिणी,

विरह) गु० स्त्री० वह स्त्री जो  
पति से जुदी रहे ।

प्रा० विराजना—(सं० वि=बहु  
राज=शोभना) क्रि० अ० शोभना  
र मुख्य भोग करना चैनसे रहना ।

प्रा० विराना—गु० पराया, रदूसरेको ।

प्रा० विरियां—(सं० बेला) स्त्री०  
सगप, बक्क, काले, बेला ।

प्रा० विरोग—(सं० विपोग) गु०  
विरह, विपोग, जुदाई ।

प्रा० विरोगन—(सं० विपोगिनो)  
गु० स्त्री० वह स्त्री जो विरह से  
व्याकुल हो ।

प्रा० बिल } (सं० बिल, बिल=द-  
विला } कना या छिपना) पु०  
चूरे आदि जानवरों के रहने का  
देह, द्विद । [ लकड़के का रोना ।

प्रा० विलकना—क्रि० अ० सिसकना,  
प्रा० विलखना—(सं० विलखण,  
वि=बुरा, लक्षण=बिह) क्रि० अ०  
उदास होना, क्रि० सं० देतना,  
उदास होकर देखना ।

प्रा० विलग—(सं० विलग्न, वि=  
नहीं, लग्न=पिनना) गु० अलग  
जुदा, न्यारा ।

प्रा० विलगमानना—(सं० विलग्न,  
मानना) क्रि० अ० अलग  
पुदा, जुदा होना, अलग  
होना, र फटना ।

प्रा० विलगना—(सं० विलग्न,  
अ० जुदा, जुदा होना, अलग  
होना, र फटना ।

१००० रुपये के जिसे माता कर  
 १०००-दिये गये व रीत है हिन्दु  
 १०००-माता को कति काम था  
 १०००-इसे वह अपने मोहर मा-  
 १०००-करके इच्छा करते उन काम  
 १०००-को वहमा है फिर एक पान का  
 १०००-ही वह कहते हैं वह कर मा के  
 १०००-कहते थे माता है मो उमरों  
 १०००-क कहते वह माता उमरों  
 १०००-क कहते हैं

[illegible][illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

प्रा० योग-पु० मडि, भैया । ॥ ७७७ ॥

प्रा० वैरी—( सं० वीटिका ) स्त्री०  
पान की मेलनी । [ दृष्टि ]

मं० श्रीम- ( मं० विंगति ) गु० दो

प्रा० बीसी-श्री० अनाज नापने का  
परिमाण, २ सं० विंगति) ताम, चौड़ी।

प्रा० बुद्धा—(पं० चन्द्र) पु० मिन्दी,  
शम्भु, मिन्दी, विदु । [ गान्धर्व ।

प्रा० पुंढेल्या पु० पुंढेल्या मगड का

प्रा० बुधनी सं० चर्च, दूध, चूर।

म० पु०-पु० हय वा मांय, कलं  
मा, वेग, दितक, यमिन, देना०  
पु० दावा, वना ।

मं० पु० न- ( वृत्त + यत्, वृत्त = कृ-  
ना, यत् = कृता ) पु० वृत्त + यत्, कृता  
या वृत्ता ।

ਸਾਡਾ ਗੁਣ-ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਸਾ, ਗੁਣੀ ।

मैत्रेय उवाच ॥ १० ॥ अथ तदा, गीतं वा  
वाच, इत्यतः, अनेका, विद्वन्मते ।

प्र० मुक्तना - शि० अ० देश सेवा,  
मुक्त, विद्यार्थी मुक्त सेवा, आत्म  
सेवा सेवा ।

प्रा. पुस्तकालय - डि. म. देस. क. -  
प्रा. पुस्तकालय, विभाग. पुस्तकालय,  
म. म. देस. क. ।

मौ० बुद्ध- (बुद्ध-संस्कृत, अथर्ववेद)  
बुद्ध-संस्कृत, अथर्ववेद, अथर्ववेद

दापना गु० दापने वाला ।  
 प्रा० बुढ़ाना—क्रि० स० बुढ़ाना, चोरना ।  
 प्रा० बुढ़ा—(सं० वृद्ध) गु० बुढ़ा ।  
 प्रा० बुढ़भस—गु० १८ बुढ़ा जो जवानों की चाल चले ।  
 प्रा० बुढ़भसलगना—बोल० बुढ़ापे में जवानी की बातें करना ।  
 प्रा० बुढ़वा—(सं० वृद्ध) गु० बुढ़ा ।  
 प्रा० बुढ़ापा—(बुढ़ा) भा० पु० बुढ़ापन, वृद्धावस्था ।  
 प्रा० बुढ़ापाविगड़ना—बोल० बुढ़ापे में दुःख होना ।  
 प्रा० बुढ़िया—स्त्री० बुढ़ी स्त्री ।  
 प्रा० बुत्ता—पु० टगाई, छल, कपट, धोखा । [ ना, धोखादेना ।  
 प्रा० बुत्तादेना—बोल० टगना, छल-करना ।  
 सं० बुद्ध—(बुध=ज्ञानना) पु० विष्णु का नववां अवतार, चौथमवस्था स्थापन करने वाला, २ बुद्धिमान्, पंडित, पञ्चवितवृत्त-सं० विदिन, जाना हुआ, जानना हुआ ।  
 सं० बुद्धि—(बुध=ज्ञानना) स्त्री० मनीषा, मति, धी, विपण्णा, समझ, सोच, विचार, ज्ञान, विवेक, पहचान, अह ।  
 सं० बुद्धिवल—पु० अहंकीताकेत ।  
 सं० बुद्धिमान्—(बुद्धि+मान्) गु० समझदार, ज्ञानवान्, विवेकी, अहमन्द ।

सं० बुद्धिहीन—(बुद्धि+हीन) गु० बेसमझ, मूर्ख, वचक ।  
 सं० बुद्धीन्द्रिय—(बुद्धि+इन्द्रिय) पु० स्त्री० आँख, नाक, कान, जीभ, त्वचा अर्थात् शरीर परेको चमड़ा ।  
 सं० बुध—(बुध=ज्ञानना) पु० बुध-रवा की स्त्री के चान्द से उत्पन्न हुआ देवा, चौथा ग्रह, २. बुधवार, ३ पंडित, बुद्धिमान् ।  
 सं० बुधजन—(बुध+जन) पु० पंडित लोग, बुद्धिमान् ।  
 सं० बुधवार—(बुध+वार=दिन) पु० बुध का दिन, चौथावार ।  
 सं० बुधान—क० पु० बुद्ध, पंडित, अध्यापक, ब्रह्मा वा पारंपर ।  
 सं० बुधित—सं० पु० ज्ञान, जाना हुआ ।  
 प्रा० बुना—क्रि० स० बुना ।  
 सं० बुभुक्षा—(बुभु=खाना) भा० स्त्री० भुषा, भूष, खाने की चाह ।  
 प्रा० बुभुक्षित—(बुभुक्षा) पु० भूषा ।  
 प्रा० बुरा—गु० राशय, दुष्ट, नीच, निक्कमा ।  
 प्रा० बुगकहना—बोल० निन्दा करना, बदनाम करना ।  
 प्रा० बुगचीतना—बोल० किसी का बिगाड़ चाना, किसी की बुराई चाना ।  
 प्रा० बुरावेडा, सोटा पैसाकाम आता है—करा० अगुना देवा



मा, लगमात, स्वरो का व्यञ्जनो के साथ मिलान, २ ( सं० माता ) मा, माता । [ नना, श्रमान ]

फा० मात-स्त्री० बाजी हराना, जी-

प्रा० मातकरना-बाजी जीतना ।

सं० मातङ्ग-(मद=मस्त होना) पु०

हाथी, हस्ती, गज ।

सं० मातलि-(मत्+सल्लट्, ला=

लाना अर्थात् सल्लट् चवत्ताना )

पु० इन्द्र का रथवान्, इन्द्र का सारथी ।

प्रा० माता-( सं० मत् ) पु० मस्त,

मत्वाछा, उन्मत्त ।

सं० माता-(मान् पूजना, या मन्

=आदर-मान् करना) स्त्री० मा,

मैया, माई २ शीतला ।

सं० मातामह-(माना) पु० माका

चाप, नाना । [ माई, मामा ]

सं० मातुल-(मातृ=माँ) पु० माका

सं० मातुलानी स्त्री० मामी,

मातुली माई ।

सं० मातृष्वसा-स्त्री० मौसी, खा-

ला, माकी बहिन ।

सं० मातृष्वसेय-पु० मौसी का बेटा,

खालाजाद ।

सं० मात्र-(मा=नापना) क्ति० वि०

केवल, अल्प, थोड़ा, कुछ, उतनाही,

बहीभर ।

सं० मात्रा-(मा=नापना) स्त्री० नाप,

परिमाण, २ ह्रस्व दीर्घप्लुतस्वर

दबाका नाप, औपधापरिमाण ।

प्रा० माथा-( सं० मस्तक, त्र ) पु०

शिर, कपाल, मस्तक, २ नाच का

( अंगना भाग )

प्रा० माथाउनकना-बोल० किसी

कामके विगड़ने का हाल पहले से

मालूम होजाना ।

प्रा० माथारगड़ना-बोल० बहुत

गरीबी से माथना करना, या देवता,

मुक्ति, अथवा राजासे गरीबी के साथ

मांगना, २ बहुत मिहनत करना ।

प्रा० माथेपरचढ़ना-बोल० अन्धाप

करना, जुलम करना, मनाको बहुत

दुःख देना, सताना ।

सं० माथुर-( मथुरा ) पु० मथुरा

का रहने वाला, २ कायथोही एक

जात, ३ मथुराके ब्राह्मणों की एक जाति ।

सं० मादक-(मद=मस्त होना) क०

पु० मस्त करने वाला, नशी की चीज ।

सं० मादन-क० पु० ३ परदारक,

फा० खानसे निकली चीजें (खानि)

सं० माधव-(मा=लक्ष्मी, धव=पति)

पु० लक्ष्मीपति, विष्णु ।

सं० माधव-( मधु ) पु० श्री कृष्ण,

२ बसेल शत्रु, ३ बैशाख का महीना,

४ मधुमा, पु० शरद का

सं० माधुर्य-( मधुर ) भा० पु०

मिठास, मधुरता ।

सं० माध्वी-( मधु ) स्त्री० मधुवती

मदिरा, २ एक तरह की मद्यकी ।



२ वर्षों के नवीन जेन का फेना ।

प्रा० मांभ-( सं० मंभ ) पु० बीच,  
मंभ-मांभगर=नदी के बीचमें ।

प्रा० मांभा-पु० पतंगकी डोर, जिस  
में बाँव पीस कर और लेई या  
भौंसे से मिनाकर लगाया जाता  
है जिममे दूमेरे की पतंगकी डोर  
को काटने हैं ।

प्रा० मार्मा-( मंभ ) पु० नाविक  
नार का गालिक ।

प्रा० मांड़-( सं० मण्ड, मन्=रख-  
ना ) पु० मानका पानी ।

प्रा० मांड़ना-( सं० मर्दन ) क्रि०  
म० मजना, मीजना, मसलना,  
रकरना, रचना, बनाना ।

प्रा० मांद-श्री० जंगली जानवर की  
गुहा, पु० इतका, रफीका, सीठा ।

मं० मांम-( मन्=गना वा पूजना,  
श्री० गति की पूजा और यज्ञ आदि  
में पूजा जाता है ) पु० गोश्व, सालन ।

मं० मांमल-पु० रयत, मोटा ।

मं० मांमाद-( मांम + मद ) क०  
पु० मायमानेवाला, मोहनकार ।

मं० मांमादगी-मांम + आदारी=  
मानेवाला ) क० पु० मांम माने  
करना, मांममशी ।

मं० मांममशक } ( मांम मण्ड=  
मांममशी ) गाना ) क० पु०

मांम मानेवाला, मांम आदारी ।

प्रा० मांह } ( सं० मंभ ) मै, भीतर,  
मांहि } बीच ।

प्रा० माखना-क्रि० अ० क्रीपकरना,  
कोपना, खिसियाना ।

प्रा० माखित ( माखना ) पु० क्री-  
षित, खिसियाना हुआ, २२ वर्षी  
या द्वेप या डाह करता हुआ ।

मं० मागध-( मगध ) पु० मगधेश  
क, पु० माट या बड़मैत जिनका  
काय राजाओं की और बड़े आद-  
मियों की बढ़ाई करने का है ।

सं० माघ-( मघा एक नक्षत्र का नाम  
इस महीने में पूजा चांद इस नक्षत्र  
के पास रहता है और इस महीने  
की पूर्णों के दिन यह नक्षत्र होता-  
है ) पु० वरम का ग्याहवां महीना ।

प्रा० माछी-( सं० मत्तिका ) श्री०  
मत्तली, मायी ।

प्रा० माजूफल } पु० एक फल जो  
माजूफल } दवाई में काम  
आता है । [ मिट्टी, मट्टी ।

प्रा० माटी-( सं० मृत्तिका ) श्री०

प्रा० माटा-पु० नरगट, दीठ, मगर,  
मुत्त, २ ( सं० मन्थित, मन्थ=मथना )  
पु० मट्ट, द्यद ।

प्रा० माणिक-( सं० माणिक्य, म-  
णि ) पु० लाल, एक लाल रंग का  
यहूत मोल का पत्थर ।

प्रा० मात-( सं० मात्रा ) श्री० वा-

मा, लगमात, स्वरों का व्यञ्जनो के साथ विज्ञान, २ ( सं० माता ) मा, माता । [ तना, शृङ्गान ।

फा० मात-श्री० बाजी हराना, नी-

प्रा० मातकरना-बाजी जीतना ।

सं० मातह-(मद=मस्त होना) पु० हाथी, हस्ती, मत्त ।

सं० मातलि-(मत+सत्यार्, ला=लाना-अर्थात् सच्चा बनाना) पु० इन्द्रावरुणान्, इन्द्रका मारपी ।

प्रा० माता-(सं० मत्त) पु० मत्त, मत्तका, उन्मत्त ।

सं० माता-(मान् पूजना, या मन्=आदर मान् करना) श्री० मा, देवा, माता २ शीतना ।

सं० मातामह-(माता) पु० माता पाप, नाता । [ भाई, भाया ।

सं० मानुल-(मान्-मा) पु० माता

सं० मानुलानी } श्री० मादी,  
मानुनी } मादी ।

सं० मानुषला-श्री० मादी, माता, मादी करिना ।

सं० मानुषलेय-पु० मादीका बेटा, माताका पुत्र ।

सं० मात्र-(मा=माता) हिं० हिं० बेटना, पालना, पोषण, हुण्ड, बालिका, बालिका ।

सं० मात्रा-(मा=माता) हिं० माता, माताका, २ पुत्र हीन, माताका पुत्र, माताका पुत्र ।

प्रा० माथा-( सं० मस्तक )-पु० शिर, कपाल, मस्तक, २. नाथ का अंगना भाग ।

प्रा० माथाटनकना-चौल० किसी कामके विगड़ने का हाल पहने से मान्नुम होनाना ।

प्रा० माथारगड़ना-चौल० बहुत तरीकों से मारना करना, या देवता, मुनि, अथवा रामामेगयीकी सार्थ मांगना, २ बहुत विहनन करना ।

प्रा० माथेपरचढ़ना-चौल० अन्धाधुन करना, दुस्व करना, मनाही बहुत दुःख देना, सताना ।

सं० माथुर-(मथुरा) पु० मथुरा का रहने वाला, २ कापथीकी पट्टा, ३ मथुराके प्राध्यापकीकी पट्टा ।

सं० मादक-(मद=मस्तहोना) पु० मत्त करने वाला, मग्नेही पीता ।

सं० मादन-पु० १. मद्य, २. मातमे निहती पीने (मानि)

सं० माधव-(मा=मादी, व=वति) पु० मदीवति, विष्णु ।

सं० माधव-(मधु) पु० धीकृष्ण, २. मधुका, ३. मद्यका मदीका, ४. मधुका, पु० मद्यका ।

सं० माधुर्य-(मधुर) मा० पु० मिठा, मधुरता ।

सं० माप्यी-(मपु) मा० पु० मदीका, २. मद्यका मदीका ।

सं० मान-(मा=नापना) पु० नाप,  
माप, श्रंदाज, परिमाण, २ (मच्छ=  
घमंड करना वा बढ़ा जानना)  
आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा, नाम, पत्र,  
३ घमंड, अभिमान, ४ चौबला  
तावभाव, नाज नखरा, गुं वरावर ।

सं० मानन-(मान्+अन) भा०  
पु० पूजा करना, आदर करना ।

सं० मानव-(मनु) पु० मनुके बेटे  
पोते, भनुंण, आदमी, २ बालक ।

सं० मानस-(मनस्=मन) गु० मनका,  
मानसिक, पु० मन, मनमा, २  
हिमालय पहाड़के पास मानसरो-  
वर नामकील ।

सं० मानसिक-(मनस्=मन) गु०  
मनका, मनसे पैदाहुआ, दिली ।

सं० मानहानि-स्त्री० अपमान, निरा-  
दर, बेरुदरी, बेरज्जती ।

सं० मानिनी-(मान=घमंड) स्त्री०  
गु० घमंडकरनेवाली स्त्री, मानवती स्त्री ।

सं० मानी-(मान) गु० घमण्डी,  
अभिमानो । [आदमी ।

सं० मानुष-(मनु) पु० मनुष्य,

प्रा० मात्रा-(सं० मान्=विचारना)

क्रि० सं० सम्मान करना, आदर  
करना, चाहना, जानना, २ पति-  
याना, मरौसा करना, ३ स्वीकार  
करना, कबूल करना, इकार  
करना, ४ उदरालेना, अनुमान क-

रना, कल्पना करना ।

सं० मान्य-(मान्=पूजना) र्म० पु०  
पूजने योग्य, मानने योग्य, मा-  
ननीय । [परिमाण ।

सं० माप-(मा=नापना) पु० नाप,

सं० मापक-(मा=नापना) व० पु०  
नापने वाला, २ नाप बिद्या में दो  
वरावर सेतों में कोई आध काट से  
कटे हुए सेत और बाकी दो वरा-  
वर सेतों के मिलने से मापक बन-  
ताहै, ३ पैमाना, ४ अभीन ।

प्रा० मापा-र्म० पु० व्यापा, अ-  
सरकिया, लगा ।

प्रा० मामा-(सं० मामक, मप=पैरा)  
पु० मा का भाई, मामू ।

सं० माया-(मा=नापना, या बना-  
ना) स्त्री० ईश्वरकी शक्ति, कुदस्त,  
२ इन्द्रजाल, कुदक, ३ कृपा, दया,  
४ मोह, प्यार, नेह, मुहब्बत, ५  
छल, दम्भ, कपट, ६ धन, संपदा,  
दौलत, -मायापात्र, गु० धनवान् ।

सं० मायापति-(माया+पति) पु०  
विष्णु, ईश्वर ।

सं० मायावी-(माया=छल) पु०  
एक राक्षस का नाम जो मय का  
बेटा था जिसकी बालिने मारा,  
गु० छली, फरेबी ।

सं० मार-(मृ=मरना या मारना)  
पु० मरना, २ कामदेव ।

प्रा०मार—( मारना ) स्त्री० मारना,  
पीटना, २ लड़ाई, युद्ध, ३ घोट ।

सं०मारक—क० पु० कापड़े, २  
नाशक, हिसक ।

• प्रा०मारकुटाई—बोल० मारना,  
और कुचलना, मारपीट ।

सं०मारकेश—जन्म पत्र में लग्न से  
दूरे व सातवें घर का स्वामी ।

प्रा०मारखाना } बोल० पिटना,  
मारखानी } मार पड़ना ।

प्रा०मारगिराना—बोल० पड़ाइना,  
पटक देना ।

प्रा०मारपड़ना—बोल० पिटना,  
मारखाना । ( ना, पीटना ।

प्रा०मारपीट—बोल० मारकुटाई मार-

प्रा०मारमरना—बोल० आपघात  
करना, आत्महत्याकरना, २ लड़ाई  
में बेटी को मारके मरना ।

प्रा०मारखाना—बो० लड़खाना ।

प्रा०मारलेना—बोल० मारना, भी-  
त लेना ।

• प्रा०मारहत्याना—बोल० जीतलेना,  
मारना और निकाल देना ।

प्रा०मारग—( सं० मार्ग ) पु० रस्ता,  
राह, पन्थ, वाट, दगर, पैदा ।

प्रा०मारना—( सं० मारण, मृ=  
मरना या मारना ) क्रि० स० जी  
लेना, मार डालना, मारण निका-  
लना, २ पीटना, टोकना, टकरा-  
ना, ३ दण्ड देना, सजा देना, ४  
नाश करना, बिगाड़ना ।

प्रा०मारापड़ना—बोल० माराजाना ।

प्रा०मारामाराफिरना—बोल० मट-  
कना फिरना, डोंबों डोल फिरना,  
इधर उधर फिरना ।

प्रा०मरामारी—बोल० आपस में  
मार पीट, धौल घप्पा, लातमुकी ।

सं० मारात्मक—( मार=मारना  
आत्मा=जीव ) पु० मारनेवाला,  
हिसक, घातक, शत्रु ।

सं०मारी—( मृ=मरना, बा=मारना )  
स्त्री० मरी, मौत, महामारी ।

सं०मारीच—( मृ=मरना, बा=मा-  
रना ) पु० एक राक्षसी का नाम जो  
ताड़का राक्षसी का चेहरा और सु-  
बाहुका भाई और राक्षसों का नौकर  
था जिसको श्रीरोमचन्द्र ने मारा ।

सं०मारुत—( मृ=मारना ) पु०  
हवा, पार, चयार, दूधन, वायु  
देवता ( मरुत् शब्द को देखो ) ।

सं०मारुतसुत—( मारुत + सुत ) पु०  
इन्द्रमान्, पवनका पुत्र ।

सं०मारुतात्मज—( मारुत + आ-  
त्मज ) वायुपुत्र, इन्द्रमान् ।

सं०मारु—( मृ=मारना ) पु० लड़ाई  
का बाजा, २ एक रागिणी का  
नाम जो लड़ाई में गाई जाती है ।

सं०मार्कण्डेय—पु० एक मुनि का  
नाम, मरुण्ड मुनिका पुत्र ।

सं०मार्ग—( मृत्=साफ वरना वा  
मृत्वा मार्ग=लोचना ) पु० रस्ता  
मार्ग, वाट, पंथ ।

सं०मार्गित—र्म० पु० तज्ज्ञाशक्तिया  
गया, हुंदा गया ।

सं०मार्ग्य—र्म० पु० हुंदाये योग्य ।

सं०मार्गण—( मार्ग + अण, मार्ग  
=हुंदा ) पु० वाण, अन्वेषण  
यात्रा, भिक्षा, तलाश ।

सं०मार्गव—पु० व्याध, अहेरी ।

सं०मार्गशिर } ( मृगशिरा—एक  
मार्गशीर्ष } नक्षत्र का नाम  
इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र  
के पास रहता है और इस महीने  
की पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र  
होता है ) पु० अगहन, मंगसर,  
मंगशिर ।

सं०मार्जन—( मृत्=शुद्ध करना )  
पु० शुद्ध करना, पवित्र करना,  
साफ करना, २ सन्ध्यापूजा अदि  
करने के पहले पवित्रता के लिये  
शरीर आदिको पानीकी छिड़कालना ।

सं०मार्जनी—ण० स्त्री० झाड़ू, पदनी ।

सं०मार्जनीय—र्म० पु० साफ  
करने योग्य ।

सं०मार्जार—मृत्=शुद्ध करना वा  
मलना ) पु० विलाव ।

सं०मार्त्तण्ड—( मृत्ण्ड=मूर्ध्नि वाप )  
पु० मूर्ध्नि शूर ।

सं०मालका } ( माला ) स्त्री०  
मालिका } माला, हार, २  
पांन, पांते, श्रेणी, पंक्ति ।

सं०मालती ( मान=विष्णु, अन्=  
जाना, अथान् विष्णु को चढ़नावां  
मा=शोभा ला=लेना ) स्त्री० एक  
फूल का नाम, चमेडी ।

प्रा०मानपूवा पु० भीटा पूरा ।

सं०मालव—पु० मालवा देश ।

सं०माला—(मा=शोभा ला=लेना )  
स्त्री० फूलोंका हार, सोनेवा मोती  
आदि का हार, २ मुपरना, अपमाला  
२ पात, पंक्ति, श्रेणी, कतार ।

सं०मालाकार—(माला=हार, कार=  
करने वाला, कृ=करना ) पु० मा-  
ली, बगवान । [ भेद ।

सं०मालादीपक—क० पु० अर्धालङ्कार  
सं०माली (माला) पु० बगवान,  
मालाकार ।

सं०माल्य (माल) र्म० माला के  
योग्य, पु० फूल, २ माला, हार ।

प्रा०मावस—( सं०अमावस्या ) स्त्री०  
अंधेर पास की पन्द्रहवीं तिथि,  
अमावस ।

प्रा०माप—पु० क्रोध, कोप, २ उरद ।

प्रा०मापा—(सं०माप, मप्=अन्दाज  
करना ) पु० आठरुची की तौल ।

सं०मास—(मा=नापना ) पु० मही-  
ना २ चाँद ।

प्रा० मासकवार-(मास+वार) की  
मापा वा शब्द (मास महीना,  
week-पर होना) से विभक्त  
हुआ ) पु० महीने के वारों का  
दिन, २ माहवारी नकशा और  
यह शब्द, मास एकवार से भी बना  
मान्य होता है क्योंकि माहवारी  
नकशे आदि महीने में एक बार  
भेजे जाते हैं ।

सं० मासान्त-(मास+अन्त) पु०  
पूर्वमासी, संक्रांति ।

सं० मासिक-(मास) गु० महीने  
का जो महीने में मिले, पु० तने-  
लवाह, वेतन, २ हर एक महीने में  
अमावस के दिन का आद ।

प्रा० मासी-(सं० मातृस्वमातृ=  
मा, स्वमा=रविन) स्त्री० मासी च-  
दिन, मासी ।

सं० माहेश्वरी-(माहेश) स्त्री० दु-  
र्गा, देवी, पार्वती, शिवगामी ।

प्रा० माहुर-पु० जहर, विष ।

प्रा० मिचना-क्रि० अ० घट होना  
हुँदना ।

प्रा० मिटना-(सं० मृष्ट, मृत्त=साफ  
रना) क्रि० अ० बिगड़ना, सा-  
फ होना, दूर होना, चला जाना,  
मिलपट होना ।

प्रा० मिटिया-(मिट्टी) पु० एक  
सरह का रंग, खाकी रंग, स्त्री०

मिट्टी का घातन ।

प्रा० मिठाई-(सं० मिष्टान्न, मिष्ट=  
मीठा, अन्न=अनाज) भावे स्त्री०  
शीरीनी, मीठी चीज, मीठा एक-  
वान, मिठास, मधुरता ।

प्रा० मिठास-(सं० मिष्टान्न, मिष्ट-  
+अंश) भा० पु० मिठाई, मीठापन ।

सं० मित-(मा=मापना) स्त्री० पु०  
नापा हुआ, मापा हुआ, परिमित ।

सं० मितम्पच-पु० मूल, किफायती ।

सं० मितप्रद-पु० थोड़ा देनेवाला ।

सं० मिति-स्त्री० परिमाण, सोदाह,  
अन्न, मर्यादा ।

प्रा० मिती-(सं० मिति, मा=मापना)  
स्त्री० तिथि, २ व्याज, सूद ।

सं० मित्र-(मित्र=प्यार करना) पु०  
जो परपुत्र वारकी इच्छा से उपकार  
करे व स्नेहकरे वह मित्र है ।  
दोस्त, सनेही, प्यारा, हित, बन्धु,  
सगा, सुहृद, ३ सूर्य ।

सं० मित्रता-(मित्र) भा० स्त्री०  
मित्राई, मित्राई, दोस्ती, प्यार, रेत ।

सं० मित्रदोही-पु० मित्रवासी ।

सं० मित्रवर्ग-पु० सुहृद ।

प्रा० मित्राई (मित्र+आइ) भा०  
मित्राई स्त्री० दोस्ती, प्यार ।

सं० मिथम्-(मिष्ट=मिलना, वा  
समझना) क्रि० वि० आपस में,  
एक दूसरे को, परस्पर, बारम्बार ।

सं० मिथिला-(मिथ=जागृ, करना

बेरियों को, स्त्री० - तिरहुत, जनक  
राजा की नगरी, जनकपुर ।  
सं० मिथिलेश-( मिथिला + ईश )  
पु० जनक राजा ।  
सं० मिथिलेशकुमारी-(मिथिलेश  
+ कुमारी) स्त्री० जानकी, सीता  
वैदेही ।  
सं० मिथिलेशि-(मिथिलेश) स्त्री०  
जनकराजा की राणी ।  
सं० मिथुन-(मिथु=मिलना वा सम्-  
भूति) पु० जोड़ा, स्त्री० पुरुष २  
उपोत्तिपमें एकराशिद्ध नाम ।  
सं० मिथ्या-(मिथु=मारना वा हानि  
पहुंचाना) कि० वि० अथवा गु०  
दोष, भ्रूट, असत्य अर्थ ।  
प्रा० मिरगी-स्त्री० एकरोगका नाम ।  
प्रा० मिर्च-( सं० मरिच, मृ=मारना )  
स्त्री० एक मसालेका नाम,—गोठ  
मिर्च=वाली मिर्च ।  
सं० मिलक-कं० पु० संविचारी, मे-  
ल करनेवाला ।  
सं० मिलन-(मिल्=मिलना) भा०  
पु० मिलना, मेल, मिताप, संयोग ।  
प्रा० मिलनसार ( मिलन ) गु०  
मेली, मितापी ।  
प्रा० मिलना-( सं० मिलन ) कि०  
अ० मिताप होना, भेंटना, मिता  
रहना, २ पचमेज होना, गड़बड़  
होना, ३ पाना, ४ एक होना,  
बराबर होना ।

प्रा० मिलनाजुलना-बोल० सदा  
मिनारहना, सदाई से मिलना ।  
प्रा० मिलनाहिलना-बोल० बड़ा  
रहना, शामिलरहना ।  
प्रा० मिलेजुलेरहना-बोल० मेल  
से रहना, मिताप से रहना ।  
प्रा० मिलाप-(मिलना ) पु० मेल,  
बनाप, भेंट, योग, संयोग ।  
सं० मिलित-(मिल्=मिलना) र्भ०  
पु० मिलाहुआ, छगाहुआ ।  
सं० मिश्रक-(मिधु + अक) कं० पु०  
मेलक, मिलाने वाला, देवोधान,  
देववन ।  
सं० मिश्र-(मिधु=मिलना) गु० मि-  
लाहुआ, पु० ब्राह्मणों की पदवी  
२ प्रतिष्ठित मनुष्य, ३ हिन्दू वैद्य ।  
सं० मिश्रकेशी-स्त्री० स्वर्गदेवता ।  
सं० मिश्रित-(मिधु=मिलना) र्भ०  
पु० मिलाहुआ, जुड़ाहुआ, यौगिक ।  
सं० मिष-(मिष=हिस्का वा घराबरी  
करना ) पु० छल, कपट, घहाना,  
हीला, घनाघट, २ हिस्का ।  
सं० मिष्ट-( मिष=सौचना ) गु० मी-  
ठा, मधुर ।  
सं० मिष्टान्न-( मिष्ट + अन्न ) पु०  
मिठाई, शरीरीनी, पकवान ।  
प्रा० मिस्सी-स्त्री० काले रंग का  
चूरण जिसको स्त्रियाँ दाँतों में ल-  
गाती हैं ।  
प्रा० मिहदी ( सं० मेघी भा०=  
मैहदी ) शोभा, इन्ध=चमक

ना) स्त्री० एक पौधा जिस के पत्तों से घियां अपने हाथ रचाती हैं।

प्रा० मिहना—(सं० बोलो डोलो, ताना।

प्रा० मिहारा—(सं० मोहिला, मह  
मिहरिया } = पूजना ) स्त्री०  
मिहरी } लुगाई, नारी,  
स्त्री।

सं० मिहिका—स्त्री० नीहार, कुहिरा  
हिम, वर्षा।

सं० मिहिर—पुं० सूर्य, आकाश।

प्रा० मीजना—(सं० मृज=साफ़ कर-  
ना) क्रि० स० मसलना, मलना,  
रगड़ना। [ कजना।

प्रा० मीच—(सं० मृच) स्त्री० मीठ,

प्रा० मीचना—क्रि० स० आँख बन्द  
करना, मूढ़ना।

प्रा० मीठा—(सं० मिष्ट) पुं० मधुर,  
मिष्ट, २ धोपा, पुं० चुम्पा, पोसा।

प्रा० मीणा } पुं० जंगली आदि पि-  
याँकी एक जात जो  
मीना } चोर और डाकू  
होते हैं।

प्रा० मीत—(सं० मित्र) पुं० मित्र,  
दोस्त, गुजन, सहृद, सत्ता।

सं० मीन—(मी=मारना) स्त्री० वा  
पुं० मछली, २ एक राशिका नाम।

सं० मीनकेतन—(मीन=मछली,  
केतन=पताका) पुं० पापदेव।

सं० मीमांसक—(मीमांसा) पुं०  
मीमांसाशास्त्र का ज्ञानवेत्ता, २  
विचार करनेवाला।

सं० मीमांसा—(मान्=विचारना)

स्त्री० द्वः शास्त्रों में का एकशास्त्र, २  
सिद्धान्त विचार।

सं० मीमांसित—स्त्री० पुं० विचार-  
रित, विचारगण।

प्रा० मिमियांना } क्रि० अ० में मे  
मीमियांना } करना, धक्का  
के धक्के का बोलना।

सं० मीलन—(मील=पलक मारना)  
पुं० टिमकाना, टमटमाना।

सं० मीलित—स्त्री० पुं० संकुचित, संभिता।

प्रा० मुंह } (सं० मुख) पुं० मुखड़ा,  
मुंह } मुख, बदन, चेहरा, २  
बल, शक्ति, जोर, योग्यता।

प्रा० मुंहअंधेरा—बोल० सन्ध्या, सांझ  
शाम, कुछ कुछ अंधेरा।

प्रा० मुंहअपनासा लेके फिरजा-  
ना—बोल० निराश होकर चला जाना।

प्रा० मुंहआना—बोल० मुंहफूलना,  
मुंह में ढाले हो जाना।

प्रा० मुहामुंह—बोल० खूब पूरा भरा  
हुआ, लबालब। [ हो जाना।

प्रा० मुंहउतरजाना—बोल० उदास  
होना।

प्रा० मुंहकरना—बोल० सांभरने हो-  
ना, मिलाजाना, बराबरी देना, २ गा-  
ली देना, ३ फोड़े को छिदकरना,  
फोड़े या घावका फूटना, ४ मक्खे  
पहने हमला करना ( जैसे शि-  
कारी कुत्ता या और जानवर दूसरे  
कुत्ते या जानवर पर करते हैं )



५ किसी चीज या जगह की ओर देखना या उसतरफ पांथ उठाना ।

प्रा० मुंहकाफूहड़-बोल० बुरीयात बोलनेवाला, बदजबान, निन्दक ।

प्रा० मुंहकाला-बोल० कलङ्क, अपमान, अनादर, बुरा ।

प्रा० मुंहकालाकरना-बोल० कलङ्क लगाना, दासलगाना, आवरु चतारना, २ सजा देना ।

प्रा० मुंहकेकौवेउड़जाने-बोल० सदास दिखाना देना, व्याकुल दिखाना देना ।

प्रा० मुंहखोलना-बोल० गाली देना, निन्दाकरना ।

प्रा० मुंहचढ़ाना-बोल० श्लिष्टिलाना, मुंह लगाना, २ सम्मान करना, सम्मुख होना ।

प्रा० मुंहचलाना-बोल० काटना, काटा चारना ( जैसे घोड़ा ) ।

प्रा० मुंहचोर-बोल० शरपीला, लजाला, दरपोकरना ।

प्रा० मुंहचोरी-बोल० लाज, शर्म ।

प्रा० मुंहछिपाना-बोल० लाज से मुंह ढकना ।

प्रा० मुंहउठाना-बोल० किसी के मुंह पर तमाचा मारना, धपड़ मारना ।

प्रा० मुंहडालना-बोल० मांगना, बाचना, चारना, २ काटना ( जैसे घोड़ा ) ।

से घोड़ा ) ।

प्रा० मुंहतकना-बोल० चकित रह जाना, मैचक रहना, घबराना, व्याकुल होना ।

प्रा० मुंहतोड़ना-गु० सिझाना, मुंहमें मारना, तरुनीक देना ।

प्रा० मुंहतोंदेखो-बोल० यह मुहावरा उम जगह बोला जाना है जब कोई आदमी अपनी ताकत या योग्यता से अधिक कोई काम करने का यशाना करता हो ।

प्रा० मुंहथुथाना-बोल० मुंहचनाना ।

प्रा० मुंहदिखाई-स्त्री० जब किनई दुलहिन आती है तब उसको उसकी सास नन्द आदि सुसराल की लुगाइयां मुंह देख कर रोग्या अथवा गहना आदि देती हैं उसको मुंहदिखाई कहते हैं ।

प्रा० मुंह देखकर बात करना-बोल० सुशामद करना, ऐसी बात कहना जो सुनेवाले के मनभाये ।

प्रा० मुंहदेखना-बोल० मददचोहना, सहायता मांगना, २ किसी का बहुत आदर सम्मान करना, ३ प्याराना, या बेवश होना ।

प्रा० मुंहदेखना-बोल० मुंहमें किसी का मुंह

और उसके पीठ पीछे बसकर कुछ ध्यान नहीं करना, दिखाऊ मित्रादि अपवा प्रार ।

प्रा० मुंहपरगर्महोना—बोल० बड़े आदमी के अपवा अपने अकसर के सामने वे अदबी अपवा दिखाई से बोलना ।

प्रा० मुंहपरलाना—बोल० कहना, जताना ।

प्रा० मुंहपरहवाई उड़ना—बोल० मुह का रङ्ग बदलजाना ।

प्रा० मुंहपसारना—बोल० अच्छे में होके मुह फाड़ना, जमुहाना ।

प्रा० मुंहफेरना—बोल० किसी काम के करने से रुक जाना ।

प्रा० मुंहफैलाना—बोल० धमँडकरना २ बहुत चाहना, ३ जमुहाना, जमुहई लेना ।

प्रा० मुंहवन्दकरना—बोल० किसी को चुप करना, जीभ पकड़ना ।

प्रा० मुंहवनाना—बोल० मुह धुयाना, भौं टेढ़ी करना, तयारी चढ़ाना ।

प्रा० मुंहवना—बोल० मुह खोलना, मुह फाड़ना, जमुहाना, जमुहई लेना ।

प्रा० मुंहविगड़ना—बोल० अपसन्न होना, नाराज होना, घुरा मानना, रिसाना, २ कोई कदवी या घुरी

चीज के खाने से मुह का स्वाद बिगड़ जाना ।

प्रा० मुंहविगाड़ना—बोल० भौं टेढ़ी करना, तयारी चढ़ाना, मुह बनाना ।

प्रा० मुंहबोला—बोल० मानाहुआ, कियाहुआ, धर्म का,—जैसे मुह बोला भाई=धर्म का भाई, वह आदमी जिसको अपना भाई कर माने ।

प्रा० मुंहभरी—बोल० रिशवत, घूस, अकोर ।

प्रा० मुंहमांगा—बोल० जैसा चाह वैसाही, जैसा मुहसे मांगा वैसाही ।

प्रा० मुंहमारना—बोल० चुप करना, जीभ पकड़ना, मुह बन्दकरना, २ काटना ।

प्रा० मुंहमेंपानीआना—या भर आना—बोल० किसी चीज को बहुत चाहना, किसी चीजके लिये मन बहुत ललचाना ।

प्रा० मुंहमोड़ना—बोल० फिर जाना, चला जाना, किसी कामके करने से रुकजाना ।

प्रा० मुंहलगना—बोल० परिचयादि चरपरी चीज से मुहललना या चरपराणा, २ दिल मिल जाना, मुसाहिबहोना, पक्कादोस्त होना ।

प्रा० मुंहलगाना—बोल० छोटे आदमीसे मेल करना, हिनाना, मुसाहिब बनाना ।



- दुःखिन्नुद्दिग्गमनाः - मुग्धेषु विगत-  
 स्मृतिः । शीतरागभयक्रोधः स्थिरधी-  
 मुनिरुच्यते (अर्थ) दुग्धमुग्धमे एकसा-  
 रं राग भय और क्रोधरहित स्थिर  
 बुद्धि मुनिकहाता है अपि, तपस्वी,  
 तपो, ज्ञानी, सातकी संख्या ।  
 प्रा० मुनिघरनी - ( सं० मुनिघरि-  
 नी ) स्त्री० मुनि की स्त्री ।  
 प्रा० मुनिन्द - ( सं० मुनीन्द्र ) पु०  
 बड़ा अपि, श्रेष्ठ मुनि, मुनीश,  
 अपिराज ।  
 सं० मुनिपट - पु० बलकछ, भोजपत्र ।  
 सं० मुनिपुंगव - ( मुनि=अपि, पुं-  
 गव=श्रेष्ठ ) पु० मुनियों में श्रेष्ठ,  
 मुनिवर, मुनिनाथक ।  
 सं० मुनिराज } ( मुनि+राजा )  
 प्रा० मुनिराय } पु० प्रधान अ-  
 पि, मुनीश ।  
 प्रा० मुनिन्दा } ( मुनि, अपि,  
 सं० मुनीन्द्र } इन्द्र, सा ईश, स्वा-  
 मुनीश } मी ) पु० मुनिवर,  
 अपिराज, मुनिन्द, बड़ा अपि ।  
 प्रा० मुन्दना - ( सं० मुदण ) क्रि०  
 अ० रेंद होना, पिचना, ढरना ।  
 सं० मुन्यन्न - ( मुनि+अन्न ) पु०  
 नैवार, तिथी का चौरस ।  
 सं० मुमुक्षु - क० पु० मुक्ति इच्छुक,  
 मुक्ति चाहनेवाला ।  
 सं० मुमुर्षु - क० पु० मृतनाथ, आ-

- सन्नमृत्यु, परणारांभी, करीबुत्पत्ति ।  
 सं० मुर - ( मुर=पेरना ) पु० एक  
 राक्षस का नाम जिसके पांचगिर  
 ये उसको भीकृष्ण ने मारा ।  
 प्रा० मुरई - ( सं० मुर ) स्त्री० मूली ।  
 प्रा० मुरकी - स्त्री० बान का एक  
 गरना । [ पानो ।  
 प्रा० मुरचंग - स्त्री० एक तरह का  
 प्रा० मुरभाना - ( सं० मूर्च्छन  
 मूर्च्छ=मुरभाना ) क्रि० प्र० मुर  
 गाना, कुम्हिलाना ।  
 सं० मुरली - ( मुर=पेरना, और  
 ला=लेना ) स्त्री० बंगी, पांमुरी ।  
 सं० मुरलीधर - ( मुरली=बंगी, धर  
 =रखनेवाला, धृ=रखना ) क०  
 पु० श्रीकृष्ण, बंगीधर ।  
 सं० मुरारि - ( मुर+अरि ) पु०  
 विष्णु, श्रीकृष्ण ।  
 प्रा० मुरी - पु० बहंदर, पडासा ।  
 प्रा० मुलतानी - स्त्री० एकसोमिणी  
 का नाम, पु० मुलतान की, ( जैसे  
 मुलतानी मही ) ।  
 प्रा० मुलहट्टी - ( मुल ) स्त्री० देवी  
 पशु । [ श्रेष्ठ, बूढ़, निराश ।  
 प्रा० मुलाई - ( मुलाता ) स्त्री०  
 प्रा० मुलाता - ( सं० मूल ) क्रि०  
 म० पील करना, भावदरमाना,  
 पंजना ।

असल, २. वंश, कुल, सन्तान, ३  
असल, धन, पूंजी, ४ मूलग्रन्थ.  
किसी पुस्तकका सूत्र अथवा श्लो-  
क (पर टीका नहीं) ५ उच्चीस  
वाँ नक्षत्र ।

सं० मूलक—(मूल=जमान, रोपना)

५० मूला, मुरई ।

सं० मूलकारिका—स्त्री० महानस,  
रसेई, चूल्हा, नूल्ही । [पूंजी।

सं० मूलधन—पु० मूलद्रव्य, असल

सं० मूलभूत—पु० जड़, असलस्थित ।

सं० मूल्य—(मूल) पु० मोल, कीमत.

मावे, निंग, दर, दाप ।

सं० मूप

मूपक } (मूप=चुराना) क० पु०  
मूपिक } मूसा, चूहा, २ चौर ।

सं० मूपिका—क० स्त्री० मुमरिया ।

प्रा० मूसना—(सं० मुप्=चुराना)

क्रि० म० चुराना, चोसना, नूटना ।

प्रा० मूसला—(सं० मुस=डुकड़े २

बरना) पु० अमल जड़ ।

प्रा० मूसलाधारवरसना—शोल०

बहुत जोर से घेर बरसना ।

प्रा० मूसा—(सं० मूपक) पु० चूहा ।

सं० मृग—(मृग=सो जना) पु० १ गुमाय,

सब चीजाये जानवर, २ हरिण, कुंग,

३ शपी, ४ नंदेई नक्षत्र, ५ सो जना ।

प्रा० मृगछाला—(मृग=हरिण, छाला

=पड़ा) स्त्री० हरिणका चमड़ा.

हरिणकी खान ।

मं० मृगणा—भा० स्त्री० अण्डा

द्रव्यका अन्वेषण, जातीगद्दी द्रव्य

का खोजना, पतालगाना ।

सं० मृगतृपा } (मृग=शु, तृपा

मृगतृष्णा } =तृष्णा और

मृगतृष्णिका } तृष्णिका=प्यास)

स्त्री० एक तरहरी

भाक जो रेतके मैदानों में बालू

रेतके कणों पर पढ़नी है तब दूर से

पानीके ऐसी जानी जाती है । अ-

थवा रेतले देशों में बालू के कणों

पर सूर्य की चिरण के पड़ने से दूर

से पानी ऐसी दिखाई देनी है तब

प्यासे हरिण उस ओर पानी के

लिये जाते हैं पर पानी न होकर उ-

लटे फिर आते हैं इस लिये ऐसा

नाम पड़ा, आवसुराय ।

सं० मृगनयनी—(मृग=हरिण, नयन

=आंख) पु० स्त्री० वह स्त्री जिस

की आंखें हरिणीकी ऐसी हों, सुन्दर

स्त्री, कण्वनी ।

सं० मृगनाभि—(मृग=हरिण, नाभि

नाभ में पैदा हुई चीज) स्त्री० क-

स्तुरी, मृगमद ।

सं० मृगपति—(मृग+पति) पु०

पशुओं का राजा, सिंह, शेर ।

- सं० मृगमंद—(मृग=हरिण, मंद=पमंद, अर्थात् जिससे हरिण को पमंद रहना है) पु० कस्तूरी ।
- सं० मृगया—(मृग=लोजने की, या =जाना) स्त्री० शिकार, अहेर ।
- सं० मृगयु—क० पु० व्याध, चिकारी ।
- सं० मृगराज—(मृग+राजा) पु० पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।
- सं० मृगलोचनी—(मृग=हरिण, लोचन=आंख) गु० स्त्री० वह स्त्री जिसकी आंखें हरिण की ऐसी हों, मृगनयनी ।
- सं० मृगशिरा—(मृग=हरिण, शिर=शिर अर्थात् जिसका आकार हरिण के शिर ऐसा है) पु० एक नक्षत्र का नाम ।
- सं० मृगाङ्ग—(मृग=हरिण, अङ्ग=चिह्न, अर्थात् जिस में हरिण के ऐसा चिह्न हो) पु० चांद, चन्द्रमा ।
- सं० मृगित—(मृग+इत, मृग=खोजना) कर्म० पु० अन्वेषित, दर्शित ।
- सं० मृगी—(मृग) स्त्री० हरिणी ।
- सं० मृगेन्द्र—(मृग+इन्द्र) पु० पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।
- सं० मृग्य—कर्म० पु० अन्वेषणीय, दर्शनीय या ढूँढ़ने लायक ।
- सं० मृजा—(मृज=शुद्ध करना, मांजना) भा० स्त्री० मांजन, मांजना ।
- सं० मृङ्ग—(मृङ्ग=मसंघ करना) पु० शिव, स्त्री० मृङ्गानी, पार्वती ।
- सं० मृण—(मृण=मारना) पु० केश, शोष, २ मही, गुं० केशदेव ।
- सं० मृणाल—(मृण=नाश करना) पु० कपलनाल, कपलकी जड़ व भूसीड़ी ।
- सं० मृत—(मृ=मरना) कर्म० पु० मरा हुआ, मुआ, मरा, मुदीर, पुं० मरण, मरना, मौत ।
- सं० मृतक—(मृ=मरना) क० पु० मुदीर, मरा, लोप, मरा हुआ, शरीर ।
- सं० मृतसंजीवनी—स्त्री० विद्याभेद, औषधभेद ।
- सं० मृत्तिका—(मृद=चूर २ करना वा, मलना) स्त्री० मिट्टी, मट्टी ।
- सं० मृत्यु—(मृ=मरना) स्त्री० मौत, मरण, काल, २ यम, जम, कत्ता ।
- सं० मृत्युञ्जय—(मृत्यु=मौत वा जय=जीतनेवाला, जि=जीतना) पुं० शिव, महादेव ।
- सं० मृत्युनाशक—क० पु० अमृत, पाराशक्तु का रस ।
- सं० मृत्युपुष्प—पु० १ बुद्ध, ऊँख, मन्ना फूलने से खराब जाता है ।
- सं० मृत्सा } स्त्री० मरसमृत्तिका, श्रेष्ठ  
मृत्स्ना } मट्टी, २ तुम्बी, लौकी ।
- सं० मृदंग—(मृद=पीटना) पु० स्त्री० दोलक, तबलक, एक

अश्लीर्भी बनलाने के लिये बोला जाता है ।

सं० मोह—(मुह=अचेत या अज्ञानी होना) पु० मूर्च्छा, बेहोशी, गरी ।  
२ अज्ञानता, अविद्या, बेवकूफी, ३ प्यार, माया, दया, दुत्तार, लाइ, स्नेह, छोह ।

प्रा० मोहमेंआना—बोल० अपने पित्र अथवा अपनी प्यारी के अचानक मिलने से अचेत होजाना ।

प्रा० मोहलेना—बोल० रिक्ताना, किसीका मनअपनीओर खींचलेना, लुभाना, बश करना, मंत्र फूंकना ।

सं० मोहन—(मुह=मोहना) गु० मोहनेवाला, जिस के देखने से शरीर की सुधि न रहे, मनमाना, प्यारा, पु० श्रीकृष्ण का नाम २ मोहना, बश करना ।

सं० मोहनभोग—मोहन=मनमाना, भोग=ज्ञाना) पु० हीरा, उत्तमभोजन ।

सं० मोहनमाला—(मोहन+मा-  
ला) स्त्री० एक तरह की माला जो सोनेके दाने और मंगेकी बनती है ।

प्रा० मोहना—(सं० मोहन) क्रि० स० बश करना, मनहरना, लुभाना, मंत्र फूंकना, पसम करना ।

सं० मोहनी—(मोहन) क० स्त्री० मन हरनेवाली स्त्री, मोहनेवाली, रु-

बती, मनोहर, सुन्दर ।

सं० मोहमय-गु० मिथ्या व भ्रूट ।

प्रा० मोहि—सर्वना० मुझको, मुझे ।

सं० मोही—क० पु० मुग्ध, अवाच्य ।

प्रा० मौ० सं० मधु) पु० शहद, मधु ।

सं० मौक्तिक—(मुक्ता) पु० मोती ।

सं० मौञ्जी—स्त्री० मूंनकी करवनी, मेलका ।

प्रा० मौड़—(सं० मौलि) पु० सिहरा, मुकुट, मोर जो दुलहा के शिरपर बांधा जाता है ।

सं० मौन—(मुनि) पु० चुप, चुप्पी, अवाक्, नहीं बोलना,—स्मृति में लिखा है कि ( १ पाखाने जाते, २ पिराव करते, ३ स्त्रीसंग करते, ४ दंतवन करते, ५ स्नान करते, ६ स्नाना खाने ) इन छः जगह मौन रहना चाहिये ।

सं० मौनी—(मौन) पु० एकतरहके मुनि जो सदा चुप रहते हैं, श्यापि, योगी ।

प्रा० मौर—पु० आम की मंजरी ।

प्रा० मोराना—क्रि० अ० आम के मोर का खिचना ।

सं० मोर्वी—स्त्री० जया, रोदा, धनुष की दोरी, बिद्या ।

प्रा० मौलसरी—स्त्री० एक तरह के सुगंधदार फूलके पेड़ का नाम ।

सं० मौलि-(मूल) पु० किरीट,  
मुकुट, २ शिवा, चोटी, ३ शिर, ४

स्त्री० प्रती, पृथ्वी ।  
प्रा० मौसी-स्त्री० माँ की बहिन,

(मौसी शब्द को देखो) ।

सं० म्लान-क० पु० म्लानिपुक्त,  
उदासीन, लज्जित, मलीन, शुद्ध,  
मुरझाया ।

सं० म्लानि-(मनै=उदास होना, वां  
मुरझाना) स्त्री० यकाबट, यकान,  
२ मलिनता, पैलापन, ३ कुम्ललाना,  
मुरझाना, उदास होना ।

सं० म्लिष्ट-गु० मलीन, म्लानिपुक्त,  
पु० अव्यक्तवचन, गद्गदवाक् ।

सं० म्लेच्छ(म्लेच्छ=अशुद्ध वा, बुरा  
बोलना या गैवारु बोली बोलना )  
पु० नीचजानि, प्रेक्ष्य जिनकी  
बोली संस्कृत नहीं है और न वे  
हिन्दुओं के शास्त्रों को मानते हैं, यह  
शब्द मुसलमानों और दूसरी बिला-  
यत के लोगों के लिये बोला जाता  
है, २ पापी ।

(य)

सं० य-(य=जाना) पु० हवा, २  
यश, कीर्ति, ३ मेल, योग, ४  
संचारी, ५ गति गु० जानेवाला ।

सं० यकृत-पु० उदररोग, वासन्ध्री,  
हृश, पित्तरी रोग ।

सं० यज्ञ-(यज्ञ=पूजना, ) पु० गुह्य  
देवता, कुंवरके मौकर ।

सं० यक्ष्मन् } ज्वरीरोग, राजरोग,  
यक्ष्मा } तपेदिक ।

सं० यजन-(यज्ञ=पूजना) भा० पु०  
यज्ञ, पूजा ।

सं० यजमान-(यज्ञ=पूजना, या  
यज्ञ करना) क० पु० यज्ञ करने  
वाला, यजमान ।

सं० यजुः-(यज्ञ=पूजना) गु० पु०  
यजुर्वेद, दूसरा वेद ।

सं० यज्ञ-(यज्ञ=पूजना) पु० वलि-  
दान, पूजा, होम, हवन, याग, २  
विष्णुभगवान् । [जनेऊ ।

सं० यज्ञसूत्र-(यज्ञ+सूत्र) पु०  
सं० यज्ञोपवीत-(यज्ञ+उपवीत),  
पु० जनेऊ ।

सं० यत्-अव्य० जो, जितना ।

सं० यज्वा-(यज्ञ=पूजना) क० पु०  
यज्ञ करनेवाला ।

सं० यतः-अव्य० क्योंकि, यस्मान् ।

प्रा० यतन-(सं० यत्) पु० यतन,  
उशय, तदवीर, हिमन ।

सं० यति } (यत्=यतन करना  
यती } मुक्ति के लिये ) पु०  
संन्यासी, बैरागी, जैनियों का  
भिक्वारी ।

सं० यन्ता } क० पु० सारथी, सूत,  
यन्तार } रथारूढ़नेवाला ।

सं० यज्ञ-(यज्ञ=पूजना करना) पु०



यतन, उद्योग, कौशिल्य,  
मिहनन, सावधानी ।

सं० यन्त्रित—(यन्त्र=जो) पु० यद्वा कौद ।

सं० यन्त्र—(यद्वा=जो) क्रि० वि० ज-  
हो, जिस जगह ।

सं० यथा—(यद्वा=जो) क्रि० वि०  
जैसे, जिस प्रकार से, उषों, जिस  
रीति से, २ बराबरा, मुख्य ।

सं० यथाकाम—क्रि० वि० यथेच्छम्  
२ अभिलाषा से अधिक ।

सं० यथायोरय—(यथा=जैसा, यो-  
म्प=ठीक) क्रि० वि० जैसा चा-  
हिये, जैसा ठीक है, जैसा उचित,  
यथोचित ।

सं० यथार्थ—(यथा=जैसा, अर्थ, अ-  
भिप्राय, मतलब) पु० ठीक, सत्य,  
सच, क्रि० वि० ठीक ठीक, इकी-  
कतद, जैसा चाहिये ।

सं० यथाशक्ति—(यथा=जैसी, या  
अनुसार, शक्ति=बल) क्रि० वि०  
जैसी सामर्थ्य हो, अपने बलके अ-  
नुसार, जितना हो सके, इष्टानु-  
समान ।

सं० यथासाध्य—क्रि० वि० इच्छा  
पूर्वक, इष्टानुसमान ।

सं० यथेच्छा—क्रि० वि० इच्छा-  
यथेच्छ—नुसार, दिनांतर ।

सं० यथेच्छाचारिता—क्रि० वि० इच्छा-  
नुसार ।

सं० यथेप्सित—क्रि० वि० यथेच्छ ।  
इच्छानुसार, मनचाहा, इच्छादिनुसार ।

सं० यथोचित—(यथा=उचित)  
क्रि० वि० जैसा चाहिये, यथोचित ।

प्रा० यद्यपि—(सं० यद्यपि) मनुष्य  
जोभी, जो ।

सं० यदा—(यद्वा=जो) क्रि० वि०  
जब, जिससमय ।

सं० यदि—(यद्वा=जो) क्रि० वि० जो ।

सं० यदु—पु० एक राजा का नाम जो  
राजा ययाति का बड़ा बेटा और  
श्रीकृष्ण का पुत्रपौ और चन्द्रवंशी  
राजाओं में पाँचवां राजा था ।

सं० यदुकुल—(यद्वा+कुल) पु० यदु  
राजा का घराना, यदुवंश ।

सं० यदुनाथ—(यद्वा=यदुवंशीयोंका,  
यदुपति) नाथ या पति माणिक्य  
पु० श्रीकृष्ण ।

सं० यदुवंश—(यद्वा+वंश) पु०  
यदुकुल, यदु राजा का घराना ।

सं० यदुवंशी—(यदुवंश) पु० यदु  
के वंशके लोग, यादव ।

सं० यदृच्छा—(यद्वा+इच्छा+आ)  
स्त्री० स्वान्देश्य, सुदराय ।

सं० यद्यपि—(यदि जो, यद्यपि=भी)  
समर्थ=जोभी, यद्यपि । [उषों ।

सं० यद्वा—अथवा पदान्तर, यथार्थ,  
सं० यन्त्र—(यदि, या यम्=रोकना)

कल, हर एक-तार का भी-  
जार या हथियार, २ बाजा, ३  
नेत्रशास्त्र में अपने हृष्टदेवता का  
चक्र, ४ टोटका, पंच, पंच, ५ ताला,  
कुल्ल ।

सं० यन्त्रणा- ( यन्त्र=रोचना या य-  
न्त्र=देहदेना) श्री० दुःख, गीहा-हेरा ।

सं० यन्त्रस्थ-यु० जेतवक जो ध्व-  
रारा, मुद्रित हो रहा ।

सं० यन्त्रिका- ( यन्त्र=रोचना,  
यन्त्र करना ) पु० ताला, कुल्ल ।

सं० यन्त्रित- ( यन्त्र=रोचना ) श्री०  
पु० रोहा हुआ, बंध दिया हुआ,  
मुद्रित ।

सं० यम्- ( यम्=रोचना, देहदेना, य-  
करना या दहना ) पु० यमराज,  
यमराज, दक्षिणदिशा का दिक्  
पाल, काल, २ इन्द्रियों की रोह-  
ना, पु० जोड़ा ।

सं० यमक- ( यम्=यितना ) पु०  
जोड़ा २ एक शब्दालंकार जहां  
एकही पद दो तीन बार आते हैं  
पर जहां उस पद का अर्थ हर एक  
बराबर होता है ।

श्री० यमगुप्ता- ( यम्=यितना, श्री०  
यौन का गुप्त, छिपे हुए गुप्ता ।

सं० यमज- ( यम्=जोड़ा, यन्त्रित )  
पु० जो दो लड़के एक साथ जन्मे  
हैं, यौवन ।

सं० यमदग्नि-पु० परगुप्तग जो  
का चाप ।

प्रा० यमदिया- ( सं० यमदीरक )  
पु० यह दीरक जो दानिद्वयी  
११ के दिन यम के नाम से जाना  
या जाता है । [ केदुग ।

सं० यमदूत- ( यम्+दूत ) पु० यम

सं० यमधार- ( यम्+धार ) श्री०  
बहार, घुसा, तेगा, लटकार ।

सं० यमल- ( यम्=जोड़ा, ना=लोना )  
पु० जोड़ा ।

सं० यमलार्जुन- ( यमल=जोड़ा,  
अर्जुन एक प्रकार का पेड़ ) पु०  
एक तरह के दो पेड़ जो घुम्रावन  
में थे कुश के दो लड़के जो बादलों  
बदिरा की पीछर मंगा में बरपा  
और के माय नगमनाय बरने थे  
नारद के शत्रु से हल होकर  
हृष्य जो बरागन में उन की  
हृष्य में मुक्त दिया ।

सं० यमुना- ( यम् ) श्री० यमुना  
नदी जो यमराज की बहिन और  
हृष्य की बेटी है ।

सं० यपाति- ( य=यत्, पा=पात )  
जो हल के दाढ़ मर जहा नाममा  
है ) पु० यत्तु पात का रेट ।

सं० यव- ( यम्=यितना ) पु० यौ,  
यह नार का पत्ता, २ रेट, रेट ।

नन्द, हर्ष, खुशी, रंगरस, हँसी  
 खुशी, हुलास, भोगविज्ञास ।  
 प्रा० रंगरस—( सं० रत्न + रस )  
 बोल० आनन्द, हर्ष, सुख, खुशी ।  
 प्रा० रंगरातना—बोल० खूब गहरा  
 प्यार होना ।  
 प्रा० रंगराता—बोल० रंग में रंगा  
 हुआ, प्रसन्न, आनन्दित ।  
 प्रा० रंगरूप—( सं० रंग + रूप )  
 बोल० चमक दमक, अति, दृश्य,  
 जवाब ।  
 प्रा० रंगलगाना—बोल० रंगना, रंग  
 चवाना, २ भगवा चवाना, बस्ते-  
 डा मचाना । [ शोभा, हुस्न ।  
 प्रा० रंगत—( रत्न ) स्त्री० रंग, वर्ण,  
 प्रा० रंगना—( सं० रञ्जन ) क्रि० स०  
 रंग चवाना, रंग देना ।  
 सं० रंगभूमि—( रंग + भूमि ) स्त्री०  
 नाच घर, अस्तादा, नाट्यशाला,  
 रंगशाला, धनुषपट्ट की भूमि ।  
 प्रा० रंगचर्डि } ( रंगना ) स्त्री०  
 रंगचर्डि } रंगनेकी मजूरी ।  
 प्रा० रंगीला—( रंग + गु० चटकीला,  
 मटकीला, रमीला, रमिया, रसि-  
 क, देना ।  
 प्रा० रचना—( सं० रचन, रच=रच-  
 नाना ) क्रि० स० बनाना, नई  
 न विद्यानन, मिररना, पैदा  
 , तैयार करना, २ क्रि० अ०

बनना, पैदा होना, तैयार होना ।  
 सं० रचक—( रच + अक ) क० पु०  
 बनानेवाला, मुसन्निक, उत्साहक ।  
 सं० रचना—( रच=बनाना ) स्त्री०  
 तमनीक, बनावट, सजावट, तैयारी,  
 २ पैदाकी हुई चीज, ३ ग्रन्थ ।  
 सं० रचयिता—क० पु० निर्माणकर्ता,  
 रचनेवाला, मुसन्निक ।  
 प्रा० रचाना—( सं०, रच=बनाना,  
 या रच=रंगना ) क्रि० स० करना,  
 बनाना, २ मेंहदी से धयवा अलता  
 आदि और किसी चीज से हाथ  
 पैर रंगना, ३ व्याह आदि शुभ  
 काम को शुरू करना ।  
 सं० रचित—( रच=बनाना ) क्ति०  
 पु० बनाया हुआ, सिरजा हुआ,  
 पैदा किया हुआ, निर्मित ।  
 सं० रज } ( रज=रंगना ) स्त्री०  
 रजस् } रेत, धूलि, २ पराग, फूलों  
 की सुगंधित धूलि, ३ स्त्रीका बँवल  
 या फूल, ४ रनोगुण । [ पु० घोषी ।  
 सं० रजक—( रज=रंगना ) क०  
 सं० रजकी—( रजक ) स्त्री० घोषिन ।  
 सं० रजकण—पु० धूलिकण ।  
 सं० रजत—( रज=रंगना, या चमक-  
 ना, या राह=शोभना ) पु० चाँदी,  
 रत्ना, २ हाथी दाँत, ३ हार, ४  
 मोना, गु० चाँदा, शुद्ध वर्ण, श्वेत,  
 मन्द ।

सं० रजतद्युति—पु० महंभीर यु०  
गौरवर्ण, रजतवर्ण ।

सं० रजन—भा० पु० रागोत्पादन,  
रंगना, रंगसाजी ।

सं० रजनि } ( रज्जु=प्यारकरना )  
रजनी } स्त्री० रात, रात्रि ।

सं० रजनिकर } ( रजनी=रात, कृ=  
रजनीकर } करना ) पु० चांद,  
चन्द्रमा ।

सं० रजनिचर } ( रजनी=रात,  
रजनीचर } चर=चलना ) पु०  
राक्षस, असुर, निशाचर, २ भूत,  
मेन, ३ चोर, ४ रातको फिरनेवाला ।

सं० रजनीजल—पु० तुपार, ओस,  
नीहार, कुहरा ।

सं० रजनीमुख—( रजनी=राति, मुख  
=मुँह ) पु० साँझ, संध्या, मदीप,  
राति का मारम्भ, संक्रा ।

प्रा० रजवाड़ा—( राजा ) पु० राज,  
राजपूताना ।

सं० रजस्वला—( रजस् ) स्त्री० वह  
स्त्री जो कपड़ों से हो, कलुमनी ।

प्रा० रजई } ( सं० राजादेश, राज  
रजायमु ) =राना, आदेश=आ-  
शा ) स्त्री० राजा की आशा, राजा  
का हुक्म ।

सं० रजोगुण—( रजस्+गुण ) पु०  
हंसरागुण जिससे मोह, क्रोध प्यार,  
अहंकार आदि पैदा होते हैं ।

सं० रजोग्राहि—क० पु० ब. पु, घात,  
हत्या ।

सं० रज्जु—( मृज्जु=पैदा होने, या  
बनाया जाना ) स्त्री० रस्सी, रास  
दोरी, जेबरी ।

सं० रज्जक—( रज्जु=प्यार करना, वा  
रंगना ) क० पु० प्यारकरनेवाला,  
प्रीति करनेवाला, खुशकरनेवाला,  
मसखरनेवाला, २ रंगनेवाला,  
चित्रकार, ३ पु० रंग ।

सं० रज्ज—पु० रंजन, रंगना, रंगसाजी,  
रंग, राग ।

सं० रज्जन—( रज्जु=प्यार करना, वा  
रंगना ) भा० पु० मसखना, प्यार,  
अनुराग, २ रंगना, रंगावट, चित्र-  
कारी, ३ लालचन्दन, गु० प्रीति  
करनेवाला, मसखकरनेवाला, खुश  
करनेवाला, हर्षदेनेवाला ।

सं० रजित—( रज्जु=प्यारकरना वा  
रंगना ) स्त्री० पु० मसख, मार कि-  
या हुआ, २ रंगा हुआ ।

सं० रटन—भा० पु० घेपणा, रटना  
यादकरना ।

प्रा० रटना—( सं० रटन, रट=बोल-  
ना ) क्रि० सं० बोलना, बहना, बराबर  
बोलना, दोहराना, तिहराना ।

सं० रटित—स्त्री० पु० घोपित, याद  
किया हुआ ।

सं० रण—( रण=शब्द करना ) पु०



सं० रत्नावन—(रत्न=रत्नारि, अ-  
 मरा मोती, आवन=आनि) पु०  
 मण्ड, ७. रत्नों की माला।  
 सं० रत्नावली—(रत्न+आवली)  
 श्री० रत्नों की माला, रत्नमाला,  
 २ एक नाटक।  
 सं० रथ—(रथ=रथानां, प्रमथ होना)  
 पु० एक तरह की चार पहियों की  
 गाड़ी।  
 सं० रथकार—क० पु० रथ बनाने  
 वाला, चरवा, मूषकार, वर्धमानर,  
 ७. चरवा से वैश्य कन्या में उत्पन्न उस  
 की माहिष्य कहते हैं वैश्य से शूद्र  
 कन्या में अन्ना उते करण कहते हैं  
 माहिष्य से करण संहावनी कन्या  
 में उत्पन्न मुप्रउसे रथकार कहते हैं।  
 सं० रथगर्भक—क० पु० रथों की  
 सचारी, शिपिका, पालकी, रोली।  
 सं० रथगुप्ति—श्री० रथ का परदा,  
 रथ का ओहार, पोशिर, परदा।  
 सं० रथवान्—पु० सारथी।  
 सं० रथवाहक—क० पु० सारथी,  
 रथार।  
 सं० रथाङ्ग—(रथ+अंग) पु० पहिया  
 चक्र, चाक्र, २ चक्रों वाली, चक्रवाह।  
 सं० रथिक—(रथ) क० पु० रथ का  
 रथी, स्वाधी, रथ पर चढ़ने  
 वाला, रथपर चढ़कर लड़नेवाला

मनाजा, तावून मुर्दा, की टिकरी।  
 सं० रद } (रद=टुकड़े करना) पु०  
 रदन } दांत, दन्त, दशन, १२  
 संख्या।  
 सं० रदनी—क० पु० हाथी।  
 सं० रदच्छद } (रद वा रदन=दांत  
 रदनच्छद } छद=ढकना) पु०  
 रौठ, ओष्ठ, लव।  
 सं० रदपट—(रद=दांत, पट=माह)  
 पु० रौठ, लव।  
 प्रा० रंही—(अ० रं) श्री० निकम्मे  
 और पुराने काकाज।  
 प्रा० रनवास } (रानीवास) पु०  
 रनिवास } रानियों के रहने के  
 मरल।  
 सं० रन्ति—श्री० प्रीति, प्रसन्नता,  
 रमण, मोति। [ २ कुसुम, कुशा।  
 सं० रन्तिदेव—पु० चन्द्रवशी राजा,  
 प्रा० रन्धना—(सं० रन्धन, रथ=  
 पकना) कि० अ० पकना।  
 सं० रन्ध्र—(रथ=नाश होना, या घुग  
 होना) पु० इंद्र, विद, मृगधर, ३  
 दोष, दुष्मा, मेष।  
 प्रा० रपदना } (रि० अ० पिपिलना,  
 पिपिलना।  
 प्रा० रयणी—  
 सं० रयणी—



० विपर्यास—भा० पु० विलोम,  
विपरीत, विपर्यय ।

० विपल—पु० क्षण, लक्ष्मी ।

० विपश्चित—पु० बुद्धिमान् ।

० विपाक—पु० कर्मभोग, फल,  
नतीजा । [ जंगल ।

० विपिन—( वप=बोना ) पु० वन,

० विपुल—( वि=बहुत, पूल=वड़ना,  
या फैलना ) पु० बड़ा, बहुत, फैला  
हुआ, गंभीर ।

० विप्र—( वि=बहुत, प्रा=भरना,  
वा वप=बोना ) पु० ब्राह्मण ।

० विप्रलब्ध—स्म० बञ्चित, पो-  
रा दिवागया ।

० विप्रव—( वि, पूल=जाना ) पु०  
देशाग्रद्वर, राष्ट्राग्रद्वर ।

० विप्लुत—स्म० व्यसन, गदर ।

० विफल—( वि=विन, फल=ला-  
भ ) पु० निष्फल, तथा, बेकार्यद्वर ।

० विबुध—( वि=बहुत, बुध=जान  
ना ) पु० देवता, २ पण्डित, ३ चाँद ।

० विबुधनदी—( विबुध + नदी )  
स्त्री० देवताओं की नदी, श्रीगंगा स्त्री ।

० विबुधान—क० पु० पण्डित ।

० विबोधन—भा० पु० समझाना,  
मनोब करना ।

० विभक्त—स्म० पृथक् कृत, बां-  
टाया, मुक्तसिप ।

० विभक्ति—( वि, भक्त=बुद्धि

करना, अलग करना ) स्त्री० भक्ति;  
बाँट, टुकड़ा, हिस्सा, २ व्याकरण  
में कारकों के चिह्न ।

सं० विभव—( वि=बहुत, भू=होना )  
पु० संपदा, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य,  
एक संवत्सरका नाम ।

सं० विभाग—( वि=बहुत, भा=टु-  
कड़े करना ) पु० भाग, टुकड़ा,  
बाँट, हिस्सा, भंश, भिन्न, सारि-  
यता, सीमा, पद, भेद, भेदके  
तकसीप, बाँट ।

सं० विभाजक—क० पु० भंशकारी,  
हिस्सेदार ।

सं० विभाजित—स्म० बाँटा, बाँट-  
का ।

सं० विभावना—( वि, भू=होना )  
स्त्री० भविष्य कारणके अभावसे अस्मि  
की उदात्तियुक्ततत्त्व, अलंकारभेद ।

सं० विभावस—पु० सूर्य, मदारहृत्,  
रक्ति, चन्द्र, दारभेद ।

सं० विभीषण—( वि=बहुत, भी-  
राना पैरेयो रो ) पु० रावणका  
भाई, गु० दरानेवाला, भयानक ।

सं० विभीषा—भा० पु० भय, भयानक ।

सं० विभीषिका—भा० स्त्री० भय-  
मदगिन, भयदिशाना ।

सं० विभु—( वि=बहुत, भू=होना )  
पु० समर्थ, समु, सर्वशक्ति, पु०  
मल्लिक २ शिव ३ ब्रह्मा ४ विष्णु,

सं० विभुक्त—( वि=बहुत, भू=होना )  
पु० भूत, भूत, भूत, भूत, भूत,  
भूत भूतन किया ।



सं० विभूति—(वि=बहुत, भू=होना)

स्त्री० सम्प्रदा, ऐश्वर्य, सिद्धि, सम्पत्ति, धन, दौलत आदि सुख, २ रास, भस्म ।

सं० विभूषण—(वि=बहुत, भूष=सिगार करना) ए० पु० गहना, अलंकार, नेवर, शोभा, आभूषण ।

सं० विभूषित—(वि=बहुत, भूष=सिगारना) र्म० पु० शोभित, सँवारानुभा, शोभायमान, फववा हुआ, मुत्तैयन ।

सं० विभेदक—(वि, भिद् + अक भिद्=तोड़ना) क० पु० विभेदक, तोड़नेवाला ।

सं० विभ्रम—(वि=बहुत भ्रम=भूलना) पु० चेशभेद, सन्देह, कलङ्क, एक अङ्गका आभूषण) दूमेरे अंगों धारणकरना, भ्रमि, भ्रमण, शोभा ।

सं० विभ्राज—क० पु० शोभायमान, आतिथ्य, शृङ्गारसे मुग्धोभित ।

सं० विमर्श (वि, मृग्=छुना, ध्यान विमर्श) करना) पु० विचार, परामर्श ।

सं० विमर्ष—(वृत् + क० पु० मैत्री,

सं० विमल  
मु० निर्वज,  
विमाना

मा) स्त्री० सौनेली मा ।

सं० विमान—(वि=बहुत मा=माद करना या मान=पूजना) पु० देवताओंका रथ ।

सं० विमुक्त—(वि, मुच्=छुटना, तोड़ना) र्म० छुटा हुआ, रिहा ।

सं० विमुख—(वि=उलटा, मुक्ति=मुक्ति) गु० बिरोधी, फिरा हुआ ।

सं० विमुग्ध—गु० अज्ञान, मूढ़ ।

सं० विमूढ़—(वि=बहुत, मूढ़=मूर्ख) गु० बहुत अज्ञानी, बड़ा बेवकूफ ।

सं० विमोचन—(वि, मुच्=छुटना) पु० छोड़ना, मुक्तकरना, क० दूर करनेवाला, छुड़ानेवाला ।

सं० विम्ब—(वी=चमकना, या=ताना) पु० मुरत, छवि, तसवीर, चित्र, मनिविम्ब, २ सूर्य अथवा चन्द्रका मण्डल, ३ विम्बाफल, एक लालफल, छुंदरू ।

सं० वियोग—(वि=नहीं, योग=मेत) भा० पु० विरह, जुदाई, विद्वान्, विद्वद्वना, जुदा रहना ।

सं० वियोगी—(वियोग) ह० पु० विरही, जुदा रहनेवाला, विद्वद्वाहुआ ।

सं० (वि=नहीं, रच्छ=रचना)

सं० विरञ्च ( वि=बहुत, रञ्च= विरञ्चि ) घनाना ) पु०

घनाने वाला, घसा ।

सं० विरज-पु० क्रोपरहित, चेतपकनत ।

सं० विरत-(वि=नहीं, रम्=खेलना)

क० पु० वैराग्यवान्, जिसने संसार छोड़ दिया हो, रिहा, बेगम ।

सं० विरति-(वि=नहीं, रम्=खेलना)

भा० स्त्री० वैराग्य, त्याग, संसार को छोड़ देना ।

सं० विरद-(वि=नहीं, रद्=रोदना)

पु० यश, नामवरी, पाना, लिवांस, हथियार, अस्त्र शस्त्र ।

प्रा० विरदेत-पु० धीर, बाना वाले ।

सं० विरह-( वि=बहुत, रह=छोड़-

ना ) पु० जुदाई, विछोड़, विछुड़ना, वियोग ।

सं० विराग-(वि=नहीं, रञ्च=रंगना)

पु० वैराग, लोभ मोह को छोड़ना ।

सं० विराज-पु० क्षत्रिय, आदि पु-

रुष, विष्णु का स्थूलरूप ।

सं० विराजमान-(वि=बहुत, राज

=शोभना ) क० पु० शोभायमान, सोहता हुआ ।

सं० विराजित-क० पु० दीप्त, रोशन ।

सं० विरुज-पु० नीरोग, तन्दुरुस्त,

रोगरहित ।

सं० विराट्-(वि=बहुत, राट्=रो-

भना ) पु० की बड़ी मूरत,

विश्वरूप, २ एक देश का नाम ।

सं० विराध-( वि=बुरी तरहसे, राध

=पूरा करना, सिद्ध करना ) पु० एक

राक्षस का नाम ।

सं० विराम-(वि=बहुत, रम्=थानन्द

करना ) पु० ठहराव, विश्राम, शान्ति, अन्त, अवसान, निवृत्ति, समाप्ति ।

सं० विराम-( वि=नहीं, रम्=चैन

करना ) पु० व्याकुल, दुःखी, वैचैन ।

सं० विरामक-क० पु० छोटारनेवाला ।

सं० विरुद्ध-( वि=बहुत, रुद्=रोक-

ना ) पु० टलटा, विररीत, सिद्धाफ ।

सं० विरूप-( वि=बुरा, रूप=ढौल )

पु० कुरूप, भौड़ा, शनमुहावन, बदसरत ।

सं० विरेचक-( रिच्=गिराना ) क०

पु० दस्तावर, मलभेदक ।

सं० विरेचन-भा० पु० जुलाव, मल-

निसंसारण ।

सं० विरोचित-र्म० मुसोहल, रोचित ।

सं० विरोचन-(वि=बहुत, रुच=चम

करना ) पु० पछादका पेडा और राजा बलिका घाव, २ सूर्य, ३ चाँद ।

सं० विरोध-( वि.रुच्=रोकना ) भा०

पु० बैर, द्वेष, शत्रुता, दुश्मनी, २ भ्गः गदा, लड़ाई ।

सं० विरोधक-क० पु० विवादी, बैरी,

सं० विरोधी-( विरोध ) क० पु० बैरी,

शत्रु, दुश्मन, २ भगवान् ।

सं० विल ( विल=छेद करना ) र्भ्यं  
पु० छिद्र, गर्त, गड्ढा ।

सं० विलक्षण—( वि=बहुत, लक्ष=  
देखना, या विद्व करना ) गु० विच-  
क्षण, अनूप, उत्तम, मला, श्रेष्ठ, रं-  
जुदा, भिन्न ।

प्रा० विलगावना—क्रि० सं० अलग  
करना, निहाल देना ।

प्रा० विलपना—क्रि० अ० रोदन, रोना ।

विलपत—गु० रोते हुये ।

सं० विलम्ब—( वि=बहुत, लवि=ठह-  
रना ) स्त्री० देरी, अवसर, टाकमटोल,  
अर्सा ।

सं० विलाप—( वि=बुरी तरहसे ला-  
प=बोलना, अर्थात् रोना ) पु० रोना,  
विजटना, शोक, मन्ताप, दुःख ।

सं० विलास—( वि=बहुत, लस्=से-  
लना ) पु० खेल क्रीड़ा, कैल, वि-  
हार, भोग, सुख, आनन्द, हर्ष प्रेश ।

सं० विलासिन—पु० पु० भोगी, प्रे-  
म्यास, पु० सखे २ कृष्ण ३ वेदिक  
कामदेव ४ महादेव ५ चन्द्र ।

सं० विलासिनी—स्त्री० नारी, बेश्या ।

सं० विलासी—क० पु० भोगी, प्रेम्यास ।

सं० विलीन—( ली=अगता ) क०  
पु० विगत, नष्ट, नयनाप्त ।

सं० विलुप्त—( लुप्त=अदृश्य होना )  
क० पु० अदृष्ट, नष्ट, गुप्त ।

प्रा० विलुलन—पु० बुदबुद बुझाना—

सं० विलोकन—( वि, लो=देखना )

पु० दृष्टि, दीठ, नजर, ताक ।

सं० विलोकना—( सं० विलोकन )

क्रि० सं० देखना, ताकना ।

सं० विलोकित—र्भ्यं० देखा हुआ ।

सं० विलोचन—( वि, लोच=देखना )

गु० पु० आँख, नयन, नेत्र ।

सं० विलोप—भा० पु० अदर्शन, नाश ।

सं० विल्व—( विन्=ढकना ) पु० वेल  
का पेड़ या फल ।

सं० विवर—( वि=नहीं, वृ=ढकना )

पु० विल, छेद, गड्ढा, संध, २ दोष ।

सं० विवरण—( वि, नहीं, वृ=ढकना )

अर्थात् शब्द के अर्थ आदि का खो-  
लना ) पु० टीका, व्याख्या, पत्तान,  
२ हिजना, ३ रिपोर्ट, बहस ।

सं० विवर्ण—गु० अधम, नीच, रंगहीन,

रुख रहित, निश्चेष्टा ।

सं० विवस्वत—पु० सूर्य, अर्क वृत्त,

अरुण, काल ।

सं० विवाद—( वि=बहुत, वाद=

भगड़ा ) पु० वाद, भगड़ा, उलटा  
कहना, विरोध ।

सं० विवाह—( वि=आपसमें, वह=छे-

लाना ) व्याह, पु० गर्तवधन, शादी ।

सं० विवाहित—( विवाह ) र्भ्यं० पु०

व्याहाहुशा, निमकी शादी हो गई हो ।

सं० विवाहिता—( विवाहित ) र्भ्यं०  
पु० श्री० व्याही हुई ।

सं०विविक्त—(वि, विस्=जुदा कर-  
ना ) गु० श्रोत्राहुआ, २ एकान्त,  
निर्मल, २ पवित्र ।

सं०विवृत्ति—स्त्री०विस्तार, व्याख्यान ।

सं०विविध—( वि=बहुत, विभ=म-  
कार ) गु० नानाप्रकार का, भांति  
२ का ।

सं०विवेक—( वि=बहुत, विस्=जुदा  
करना, विचारना ) पु० विचार, ज्ञान ।

सं०विवेकी—( विवेक ) क० पु०  
विचारकानेवाला, ज्ञानवान्, ज्ञानी ।

सं०विवेचना—वि=बहुत, विस्=  
जुदा जुदा करना, विचारना ) स्त्री०  
भूट संबंधा विचार, विवेक, नवीक ।

सं०विवेचित } र्म० विचारित, वि-  
विवेचितव्य } चारने योग्य ।  
विवेच्य }

सं०विवोदा—पु० नामाता, दामाद,  
वर, दूता, नौशा ।

सं०विशद—( वि, शद=माना ) गु०  
पौला, सकंद, रवेत, निर्मल, साफ,  
उज्ज्वल ।

सं०विशाखा—( वि=बहुत, शाख=  
प्रहार ) स्त्री० सोलहवां वज्र ।

सं०विशारद—( विशाल=बहुत, द=  
देनेवाला, दा=देना ) यहाँ विशाल  
केल को र हो गया है ) गु० पण्डित,  
विद्वान्, निपुण, भेष्ट, प्रसिद्ध ।

सं०विशाल—( वि=बहुत, शाल=जा-

ना ) गु० बड़ा, बहुत, चौड़ा, फैला  
हुआ ।

सं०विशिख—( वि=बहुत, अथवा  
तीखी, शिखा=चोटी अथवा अण्डा,  
या वि=नहीं, शिखा=चोटी ) पु०  
शीर, पाण, गुर, गु० चिन चोटीका,  
शिखारहित ।

सं०विशिखासन—( विशिखा + आ-  
सन ) पु० धनुष, धमान ।

सं०विशिष—वि० पु० मन्दिर ।

सं०विशिष्ट—( वि=बहुत, शिप्=गुण  
सहित होना ) क० पु० साथ, संयुक्त,  
सहित, जुड़ाहुआ, २ उच्चय, बड़ा ।

सं०विशुद्ध—( वि=बहुत, शुद्ध=शुद्ध )  
गु० बहुत पवित्र, निर्मल, विपल,  
उज्ज्वल, उज्जल ।

सं०विशुद्धि—भा० स्त्री० शोधन, दीप  
दूर करना ।

सं०विशेष—( वि=बहुत, शिप्=गुणके  
साथ होना ) पु० प्रकार, भेद, जाति,  
गु० मुख्य, खास, निज, २ बहुत,  
अधिक ।

सं०विशेषोक्ति—स्त्री० यत्रोक्ति, विशेष  
वाक्य, अर्थात् द्वार भेद ।

सं०विशेषण—( वि=बहुत, शिप्=गुण  
के साथ होना ) क० पु० गुण, पर्य,  
स्वभाव, तारीक ।

सं०विशेष्य—( वि + शिप् ) पु० नाम,  
संज्ञा, र्म० सास, प्रधान ।

सं० विष्णु—( विष्=कैलना, जो सब

सृष्टि में कैला हुआ है ) पु० परमे-  
श्वर भगवान्, सृष्टि को पालने  
वाला, व्यापक ।

सं० विष्णुवल्लभा—( विष्णु=भग-  
वान् वल्लभा=प्यारी ) स्त्री० गुलसी,  
रत्नरथी, हरिमिया ।

सं० विसर्ग—( वि, सृज्=छोड़ना )  
पु० स्वर के आगे की दो बिंदी, रदान,  
छोड़ना ।

सं० विसर्जन—( वि, सृज्=छोड़ना )  
मा० पु० बिदा, भेजना, छोड़करना,  
जाने देना, र छोड़ना, र देना ।

सं० विसर्जित—र्म० पु० कलमत  
दिया, परतस्तदुद्धा, भेजा गया ।

प्रा० विसासिनि—स्त्री० हानिदां दा-  
दिनि, सौमिनी ।

सं० विसृचिका—( वि=उठोर, सूची  
=सूई जो सूई के ऐसा कठोर  
होता अर्थात् बहुत दुःख  
वाला रोग ) स्त्री० एक प्रकार  
हृत्ते का रोग ।

सं० विस्तर—( वि स्त=दायना ) पु  
अनुर, बहुत, समुद्र,  
आचार,

सं० विस्त,  
कैलाश,  
रत्नरथ,

सं० विस्तारक } क० पु० फैलाने  
विस्तारी } वाला । [ गया ।

सं० विस्तारित र्म० पु० फैलाया ।

सं० विस्तीर्ण क० पु० फैलाहुआ,  
विस्तृत ।

सं० विस्तृत—( वि=बहुत, स्तु=दक-  
ना, फैलाना ) क० पु० फैला हुआ,  
विस्तीर्ण ।

सं० विस्फुलिंग—पु० चिनगारी ।

सं० विस्फोट—( वि, बहुत स्फुट=  
फूटना, या फटना ) पु० फोड़ा, घावा ।

सं० विस्फोटक—क० पु० फूटनेवाला  
अर्थात् बहुत फोड़ा, शीतला, पेघका ।

सं० विस्मय—( वि=कुछ, स्मि=मुस-  
कुराना ) पु० अचरज, आश्चर्य,  
अनंभा, चमत्कार, तमज्जुव ।

सं० विस्मरण—( वि=नहीं, स्मरण  
=याद ) पु० भूलना, भिरना ।

सं० विस्मृति—( वि=मुस-  
कुराना ) पु० अचरज, आश्चर्य,  
अनंभा, चमत्कार, तमज्जुव ।

सं० विस्मृति—( वि=मुस-  
कुराना ) पु० अचरज, आश्चर्य,  
अनंभा, चमत्कार, तमज्जुव ।

सं० विस्मृति—( वि=मुस-  
कुराना ) पु० अचरज, आश्चर्य,  
अनंभा, चमत्कार, तमज्जुव ।

सं० विस्मृति—( वि=मुस-  
कुराना ) पु० अचरज, आश्चर्य,  
अनंभा, चमत्कार, तमज्जुव ।

सं० विस्मृति—( वि=मुस-  
कुराना ) पु० अचरज, आश्चर्य,  
अनंभा, चमत्कार, तमज्जुव ।

सं० विस्मृति—( वि=मुस-  
कुराना ) पु० अचरज, आश्चर्य,  
अनंभा, चमत्कार, तमज्जुव ।

और मनु=जाना अर्थात् साक्षात्  
मे उड़नेवाला ) पु० पसेह, पत्ती,  
२ बादल, ३ वीर, ४ मूर्ख, ५ चांद,  
६ मर ।

सं० विहरण-( वि, ह=हैना, पर  
वि उपसर्ग के साथ आने से इस  
धातु का अर्थ खेल करना, या आ-  
नंद करना होता है ) भा० पु० विहार  
करन, खेलकरन, क्रीड़ा करना,  
मूषना, सैरकरना ।

सं० विहार-( वि, ह=हैना, पर वि  
उपसर्ग के साथ आने से इस धातु  
का अर्थ खेल करना होता है ) भा०  
पु० विनाम, खेल, क्रीड़ा, २ आ-  
नंद से फिरना ।

सं० विहारी-( विहार ) ह० पु० विहार  
करनेवाला, आनंद करनेवाला, पु०  
धीहृष्ट ।

सं० विहित ( वि=बहुत, धा=मानना  
अर्थ=ठोस, ठोस, करने योग्य,  
दृढ़ाया हुआ ।

सं० विहीन-( वि=बहुत, हा=हो-  
ना ) अर्थ=विना, सुना, शरीर,  
होड़ा हुआ ।

सं० विह्वल-( वि=बहुत, हल=हिल-  
ना, चलना ) क० पु० दबाव,  
पतन, या हुआ, पतल ।

मं० वी-पु० विहास, टोपि, एका ।

सं० वीक्षण-( वी+क्षि+अन्,

ईक्ष=देखना ) पु० दर्शन, देखना ।  
सं० वीक्ष्य-गु० देखकर, निहारकर ।  
सं० वीक्षित-अर्थ० देखा हुआ, दृष्ट ।  
सं० वीचि-( वि=कैलना ) स्त्री० लहर,  
तरंग, मौन, दऊ ।

सं० वीज-( वि=बहुत, जन=पैदा हो  
ना ) पु० कदवा, दाना जो बोया  
जाता है, २ मूल, कारण, ३ भिक्षु,  
४ वीर्य, ५ मंत्र, ६ बीजगणित,  
गणित का एक भाग जिसमें अक्षरों,  
की मगद अक्षर लिखकर हिमाय  
बनाते हैं इसको संस्कृत में अक्षर-  
गणित कहते हैं ।

सं० वीणा-( अन्=जाना, वा वी=जा-  
ना ) स्त्री० एक मज्जा का वाजा  
जिसको नारदजीने निकाला, -वी-  
ण नन्दको देयो ।

सं० वीन-( वी=जाना, वा वि, इण्=  
जाना ) गु० बीता हुआ, गुहरा  
हुआ, चला गया ।

मं० वीधि-( वी=जाना, वा विधु=  
मांगना ) स्त्री० मनी, रस्सा, ३  
पंक्ति, धेणी ।

मं० वीष्मा-( वि=बहुत, आन्=है-  
लना, आय ) भा० स्त्री० व्यानी-  
प्या, फैलना, २ आदर ।

सं० वीर-( वीर=राज्य करना वा  
अन्=जाना ) पु० शूर, वीरादुर,  
दृढ़, मोटा, काय के मरुत में  
से बह रस ।

सं० वीरप्रसू—(प्र,सू=पैदाकरना) स्त्री०  
 वीरजननी, वीर पुत्र की माता ।  
 सं० वीरण } ( ईर्=रचना ) पुं०  
 प्रा० वीरन } घेना, गाय, खस, गुं  
 प्यारा, प्याराभाई ।  
 सं० वीरता—(वीर) स्त्री० बहादुरी,  
 शूरापन ।  
 सं० वीरभद्र—(वीर=बहादुर, भद्र=  
 बहुत अच्छा) पुं० महादेव के एक  
 गण का नाम जिसने गृहसमेत दत्त  
 का विनाश किया ।  
 सं० वीरवृत्ति—स्त्री० शूरों का चाना,  
 शूरों का पैघावा ।  
 सं० वीरा—स्त्री० वीर पुत्र की माता;  
 वीर औषध ।  
 सं० वीर्य—(वीर) पुं० बीज, धातु,  
 पुरुषार्थ, बल, जोर, प्रताप,  
 प्रभाव, नेत्र ।  
 सं० वृक—(वृक=जेना) भेड़िया,  
 हंसार, खारी ।  
 सं० वृकोदर—पुं० भीमसेन; प्रह्लाद ।  
 सं० वृत्—(वृत्=काटना) पुं० पेड़,  
 रुख, गाढ़, तरवार, पादप ।  
 सं० वृत्—(वृत्=होना या बढ़ना) पुं०  
 घेरा, घेड़ल, घहर, गोलमेन, रं  
 दंड, रं रीत गुं हुआ, पैदा हुआ ।  
 सं० वृत्तान्त—(वृत्=पैदाहुआ, अ-  
 न्त=निर्णय अथवा निरूपण अर्थान्  
 तिम के मन्त्र से किसी बात का  
 निर्णय होजाना है) पुं० समाचार,

घात, हाल हकीकत, पता ।  
 सं० वृत्ति—(वृत्=होना या पैदाहोना)  
 स्त्री० आजीविका, जीविका, रोज  
 गार, रोजी, बजीका ।  
 सं० वृत्य—स्म० वर्णनीय, कहनेयोग्य  
 सं० वृत्र } (वृत्=होना) पुं० ए  
 वृत्रासुर } राक्षस जिसको इन्द्रने मारा  
 सं० वृथा—(वृ=ढकना) क्रि० वि०  
 'वैकायदह, निरर्थक, निष्फल, व्यर्थ,  
 योही [पुसना] ।  
 सं० वृद्ध—(वृद्ध=बढ़ना) पुं० वृद्ध,  
 सं० वृद्धि—(वृद्ध=बढ़ना) स्त्री० बढ़ती,  
 बढ़ती, तरकी, लक्ष्मी, कृद्धि,  
 सिद्धि ।  
 सं० वृन्द—(वृण=प्रसन्न होना) पुं०  
 'समूह, भीड़ भाड़, देर, थोक' ।  
 सं० वृन्दा—(वृण=प्रसन्नहोना) स्त्री०  
 तुलसी, राधिका, एक देवी का  
 नाम । [मनोहर] ।  
 सं० वृन्दारक—पुं० देवता गुं मुख्य,  
 सं० वृन्दारिका—स्त्री० देवता की स्त्री ।  
 सं० वृन्दावन—(वृन्दा=वन) पुं०  
 मथुरा के पास एक वन जहां वृन्दा  
 देवी का मंदिर था और जहां गोकु-  
 लमे नन्दजी और श्रीकृष्णभादि  
 मधुगान्ध ना बसे थे ।  
 सं० वृश्चिक—(वृश्च=काटना) पुं०  
 बिच्छू, रं आठवीं राशि ।  
 सं० वृष—(वृष=साँपना या पैदा कर

ना) पु० बैल, २ दस गीराशि ।

सं० वृषकेतु—(वृष+केतु) पु० महा-  
देव, शिव ।

सं० वृषण—पु० अण्डकोप, फोता ।

सं० वृषभ—(वृष=सींचना, या पैदा  
करना) पु० बैल ।

सं० वृषल—पु० शूद्र २ गजवन, गाजर,  
प्याज, ३ घोड़ा, ४ अपामिक, ५  
चन्द्रगुप्त वृष ।

सं० वृषली—स्त्री० शूद्रा, जो पिता के  
घर में कन्या रजोवर्ष को मास हुई  
उसे भी करते हैं ।

सं० वृषीकपि—(वृष=वर्ष, अ=नहीं,  
कपि=कैपाना) जो धर्महीन कैपावे,  
महादेव, विष्णु, अग्नि, इन्द्र ।

सं० वृषोत्सर्ग—(वृष+उत्सर्ग) पु०  
मृतक के हेतु बैल को दास के छोड़  
देना, सांड़ ।

सं० वृष्टि—(वृष्ट=सींचना, घरसाना)  
स्त्री० मेहर, वर्षा, पानी का गिरना ।

सं० वृहत्—(वृह=बढ़ना) पु० बढ़ा ।

सं० वृहत्पाद—पु० बृहत्त, वर्गद ।

सं० वृहस्पति—(वृहती=बोली, पति  
=मालिक अथवा वृहन्=बड़ा अर्थात्  
देवता, पति=मालिक या गुरु) पु०  
देवताओं का गुरु पांचवां ग्रह, २  
वृहस्पतिवार, बौकी, जुमेरात ।

सं० वेग—(विह्वल=कैपाना) पु० भवाह,  
भारा, जव, महाकास ।

प्रा० वेगि—स्त्री० शीघ्र, जल्दी ।

सं० वेणी—(वेणु=जाना) स्त्री० चो-  
टी, बालों को सँवारना, २ नदियों के  
मिलने की जगह, जैसे त्रिवेणी आदि ।

सं० वेणु—पु० वांस, चाँसुरी का बाजा,  
मुरली, २ राजा का नाम ।

सं० वेतन—अज्ञ=जाना, या बी=  
जाना) पु० मजदूरी, महीने की तन-  
ख्वाह, मासिक, जीविका ।

सं० वेताल—(अज्ञ=जाना) पु० बह  
मुर्दा जो मृत के मुसने से जीता सा  
जाना जाय, पिशाच, २ शिव के  
नौकर । [ननेवाला, पण्डित ।

सं० वेत्ता—(विद्=जानना) पु० ज्ञा-

सं० वेत्र—पु० वेत, वेतवृत्त ।

सं० वेदै—(विद्=जानना) पु० श्रुति,  
हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक—मुख्य  
वेद तीन हैं (१ ऋग्वेद, २ सामवेद,  
३ यजुर्वेद) और कहते हैं कि चौथा  
अथर्व वेद पीछे से मिलाया गया है  
और इतिहास और पुराणों को पां-  
चवां वेद भी कहते हैं, ज्ञान, शास्त्र-  
ज्ञान, चारकी संख्या, चतुर्थांश ।

सं० वेदगर्भ—पु० मन्त्रा, मन्त्रण ।

सं० वेदना—(विद्=जानना) स्त्री०  
पीड़ा, दुःख, क्लेश, २ जानना, मुख  
दुःख का क्षान ।

१ वर्ययति कामानिति वृषः आरुम्ययति पापानिति आकपिः वृषश्चासायाकपिरवे  
नि वा २ "तत्राथौदयेयं यान्यं वेदः" — इतिहासपुराणव्याख्यामुपबृंहयेत् । विभे  
त्यल्पभुनाद्देवोमामदं प्रहरिष्यतांति १ ॥



1. Die Bedeutung der Sprache  
 2. Die Entwicklung der Sprache  
 3. Die Funktion der Sprache  
 4. Die Struktur der Sprache  
 5. Die Semantik der Sprache  
 6. Die Pragmatik der Sprache  
 7. Die Sociolinguistik  
 8. Die Psycholinguistik  
 9. Die Neurolinguistik  
 10. Die Linguistische Anthropologie  
 11. Die Linguistische Theorie  
 12. Die Linguistische Methodik  
 13. Die Linguistische Didaktik  
 14. Die Linguistische Forschung  
 15. Die Linguistische Praxis  
 16. Die Linguistische Ausbildung  
 17. Die Linguistische Berufshilfe  
 18. Die Linguistische Weiterbildung  
 19. Die Linguistische Zusammenarbeit  
 20. Die Linguistische Verantwortung  
 21. Die Linguistische Ethik  
 22. Die Linguistische Politik  
 23. Die Linguistische Ökonomie  
 24. Die Linguistische Ökologie  
 25. Die Linguistische Ökonomie  
 26. Die Linguistische Ökologie  
 27. Die Linguistische Ökonomie  
 28. Die Linguistische Ökologie  
 29. Die Linguistische Ökonomie  
 30. Die Linguistische Ökologie  
 31. Die Linguistische Ökonomie  
 32. Die Linguistische Ökologie  
 33. Die Linguistische Ökonomie  
 34. Die Linguistische Ökologie  
 35. Die Linguistische Ökonomie  
 36. Die Linguistische Ökologie  
 37. Die Linguistische Ökonomie  
 38. Die Linguistische Ökologie  
 39. Die Linguistische Ökonomie  
 40. Die Linguistische Ökologie  
 41. Die Linguistische Ökonomie  
 42. Die Linguistische Ökologie  
 43. Die Linguistische Ökonomie  
 44. Die Linguistische Ökologie  
 45. Die Linguistische Ökonomie  
 46. Die Linguistische Ökologie  
 47. Die Linguistische Ökonomie  
 48. Die Linguistische Ökologie  
 49. Die Linguistische Ökonomie  
 50. Die Linguistische Ökologie  
 51. Die Linguistische Ökonomie  
 52. Die Linguistische Ökologie  
 53. Die Linguistische Ökonomie  
 54. Die Linguistische Ökologie  
 55. Die Linguistische Ökonomie  
 56. Die Linguistische Ökologie  
 57. Die Linguistische Ökonomie  
 58. Die Linguistische Ökologie  
 59. Die Linguistische Ökonomie  
 60. Die Linguistische Ökologie  
 61. Die Linguistische Ökonomie  
 62. Die Linguistische Ökologie  
 63. Die Linguistische Ökonomie  
 64. Die Linguistische Ökologie  
 65. Die Linguistische Ökonomie  
 66. Die Linguistische Ökologie  
 67. Die Linguistische Ökonomie  
 68. Die Linguistische Ökologie  
 69. Die Linguistische Ökonomie  
 70. Die Linguistische Ökologie  
 71. Die Linguistische Ökonomie  
 72. Die Linguistische Ökologie  
 73. Die Linguistische Ökonomie  
 74. Die Linguistische Ökologie  
 75. Die Linguistische Ökonomie  
 76. Die Linguistische Ökologie  
 77. Die Linguistische Ökonomie  
 78. Die Linguistische Ökologie  
 79. Die Linguistische Ökonomie  
 80. Die Linguistische Ökologie  
 81. Die Linguistische Ökonomie  
 82. Die Linguistische Ökologie  
 83. Die Linguistische Ökonomie  
 84. Die Linguistische Ökologie  
 85. Die Linguistische Ökonomie  
 86. Die Linguistische Ökologie  
 87. Die Linguistische Ökonomie  
 88. Die Linguistische Ökologie  
 89. Die Linguistische Ökonomie  
 90. Die Linguistische Ökologie  
 91. Die Linguistische Ökonomie  
 92. Die Linguistische Ökologie  
 93. Die Linguistische Ökonomie  
 94. Die Linguistische Ökologie  
 95. Die Linguistische Ökonomie  
 96. Die Linguistische Ökologie  
 97. Die Linguistische Ökonomie  
 98. Die Linguistische Ökologie  
 99. Die Linguistische Ökonomie  
 100. Die Linguistische Ökologie

- सं० वेदेही—( विदेह ) स्त्री० जनक  
राजा की बेटी, सीता, जानकी ।
- सं० वेद्य—( विद्=मानना ) पु० इत्थीम  
वेद, दुता दाऊ करनेवाला, चिकित्सक ।
- सं० वेद्यक—( वेद्य ) पु० वेदकविद्या ।
- सं० वेद्यनाथ—( वेद्य + नाथ ) पु०  
वैद्यराज, घनानन्द, २ शिव, वैद्यनाथ, महादेव जिनका मंदिर भाद्वरगढ़ में है ।
- सं० वेनतेय—( विनता, संशयमुनि की स्त्री, वि=बहुत, नप्=मबना )  
भा० पु० विनता का बेटा, गुरुकुलपति का राजा ।
- सं० वैभव—( विभव ) भा० पु० वैश्वर्य, समृद्धि, धन, दौलत ।
- सं० वैमनस्य—भा० पु० उदासीनता, बिगाड़, रैन, नाश्चिन्ताही ।
- सं० वैयाकरण—( व्याकरण ) भा० पु० व्याकरण पदा हुआ परिचित ।
- सं० वैयाल्य—भा० पु० निर्लेख्यता, बेहोश, बेगुमी ।
- सं० वैर—( वैर ) पु० दुश्मनी, शत्रुता, द्वेष, विरोध ।
- सं० वैराग्य—( विराग ) भा० पु० संसार वैराग्य की विषय वामना का बोधना, वेदुरगती ।
- सं० वैरागी—( वैराग ) पु० जिसने संसार की विषय वामना की छोड़
- दिया है, उदासीन, साधु । [ शत्रु ।
- सं० वैरी—( वैर ) क० पु० दुश्मन,
- सं० वैशाख—( विशाखा, एवमन्तत्र का नाम इस महीने में पूरा चंद्र इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी के दिन विशाखा नक्षत्र होता है ) पु० वरस का दूसरा महीना ।
- सं० वैश्य—( विस्=मुमना, अपने सेती, बनिन आदि धंधे में ) पु० बनिया, पहाजन तीसरे वर्ण के लोग ।
- सं० वैश्वानर—पु० अग्नि गु० कृपाण, स्थूल, सूक्ष्म, सूक्ष्म ।
- सं० वैष्णव—( विष्णु ) पु० विष्णुका भक्त, विष्णु उपासक, गु० विष्णुका ।
- सं० व्यक्त—( वि, अक्ष=ज्ञाना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से उत्पन्न अर्थ प्रकट होता होता है ) पु० ज्ञाना हुआ, स्पष्ट, प्रकट ।
- सं० व्यक्ति—( वि, अक्ष=ज्ञाना ) स्त्री० एवता, एक-एक करके, २ जन, दत्तक । [ विद्वत् ।
- सं० व्यग्र—पु० व्याकुल, परेशान,
- सं० व्यह—पु० अंगहीन, व्याकुल ।
- सं० व्यजन—( वि, अक्ष=ज्ञाना ) पु० कालहन्तक, उदा, वेता ।
- सं० व्यञ्जक—पु० पदाङ्क, नर्तक, भावरोपक ।
- सं० व्यञ्जन—वि=बहुत, अक्ष=ज्ञाना,

- का राजा, मुरपति ।
- सं० शक्रजित्—( शक्र=इन्द्र, जि=जीतना ) पु० रावण का वेडा, इन्द्रजित्, मेघनाद ।
- सं० शक्रमुत्—(शक्र + मुत्) पु० इन्द्र का वेडा, मयन्त, २ धानि जानर ।
- सं० शक्राणी—स्त्री० पुनोमजा, शनी ।
- सं० शङ्कर—(शम्भु=कल्याण या भजा, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० महादेव, शिव, २ शङ्कराचार्य ।
- सं० शङ्का (शक्ति=संदेह करना या करना) स्त्री० सन्देह, शक, शंकर, भय ।
- सं० शङ्कित—क० पु० शङ्का हुआ, भीत, २ संदिग्ध, विनश्चित ।
- सं० शङ्कु—पु० आठ अंगुल की लकड़ी, दंड वृक्ष, अंग, माना, गांभी, शरप, पाप, महादेव, अंग ।
- सं० शङ्ख—(शम्भु=देता करना) पु० एक जल के भीत ही इड़ी निमको हिंदू पवित्र समझते हैं और देवता के साहने और लड़ाई में बजाने हैं २ सौ पदम ( गिनती में ) ।
- सं० शङ्खप्पा—( शङ्ख + प्पा=पताना ) क० पु० शङ्ख पतानेवाला ।
- सं० शानि—(शन्=बोझना) स्त्री० इन्द्र की स्त्री, इन्द्राणी ।
- सं० शानोनि—(शानो + नि) पु० इन्द्र देवताओं का राजा ।
- सं० शठ—(शट्=झिलने करनी) पु० छनी, कपटी, दुष्ट, धूर्त, ठग ।
- सं० शठता—(शठ) भा० स्त्री० दुष्टता, कपट, छल, ठगई, मूर्खता ।
- सं० शण—पु० सनका वृत्त, पदुमा ।
- सं० शण्ड—पु० नपुंसक, रिजड़ा, रसाई ।
- सं० शत—गु० एकसौ, १०० ।
- सं० शतक—(शत) गु० सैकड़ा ।
- सं० शतकोटि—पु० इन्द्र का पुत्र, स्त्री० सौ करोड़, अथ संख्या ।
- सं० शतकतु—पु० इन्द्र, सौ यज्ञ करनेवाला ।
- सं० शतघ्नी—(शत=सौ, हन्=मारना) स्त्री० एक तरह का हथियार, सोप अथवा धनुष, २ एक रोग का नाभ ।
- सं० शतदु—( शत=सौ, दु=जाना अथवा बहना जो सौ अर्थात् बहुत सौ धारा से बहती है ) स्त्री० सतलज नदी जो पंजाब में है ।
- सं० शतपत्र—(शत=सौ, पत्र=पत्ती या पंगड़ी) पु० कमल । [ वृक्ष ।
- सं० शतमारी—(शु=मारना) क० पु०
- सं० शताब्द—पु० सौ वर्ष ।
- सं० शताब्दी—गु० सरी ।
- सं० शत्रु—(शट्=नाश करना) पु० वैरि, दुश्मन, शिपु, अति, द्वेषी, विरोधी । [ भीतनेवाला ।
- सं० शत्रुविजयी—क० पु० कुरु

संशयुक्त—(शय=बैरी, रन्=पारना)

पुं लक्ष्मण का छोटा भाई, रिपु-  
सदन। [ विरोध, दुरमनी।

संशयुता—( शय ) भा० स्त्री० बैर,

संशयि—( शो=नीचा होना, या

तेज होना ) पुं सातवां प्रह, श-  
नैरवत, प्रहनायक, व्यापापुत्र, मूर्ख  
का बेटा।

संशयिवार—( शयि+वार ) पुं

सातवां दिन, शनीवार।

संशयेश्वर—( शयैस्=धीरे, चर=

चलना ) पुं शनिग्रह, शनिवार।

संशय—भा० पुं निरस्तार, निरा-

दर, शय।

संशय—( शय=सौगन्ध ताना,

या सरापना ) स्त्री० सौगन्ध कि-

रिया, सोंह, दुर्ग, पवित्रा, २

सराप, शय।

संशय—( शय=शय करना, या

शय=पुकारना ) पुं ध्वनि, आहट,

आवाज जो कान से सुना जाय,

२ व्याकरणमें ) जो सुने बोला

जाय, बोल, बचन, पद, लक्षण।

संशयशास्त्र—( शय+शास्त्र )

पुं व्याकरण आदि शास्त्र जिनसे

शयका ज्ञान होता है।

संशय—( शय=शान्त होना, या ठं-

डा होना ) पुं मन की शान्ति,

चैत, २ शत्रुओं को और मन को

रोकना।

संशयन—( शय=ठंडा करना ) पुं

शान्ति, ठंडा करना, २ यमराज, पुं

दूर करनेवाला ठंडा करनेवाला।

संशयित—क० पुं शान्त, सुतव-

म्वित, सहनेवाला।

संशयल—पुं कुल, किनारा, २

पाथेय, राक्षस, ३ मत्सर।

संशयुक—स्त्री० सीपी पुं धोपा,

शय नपस्वी, शय, दंत्य।

संशयु—( शय=कल्याण रूप, धु=

होना ) पुं महादेव, शिव।

संशयन—( शी=सोना ) पुं सोना,

नींद लेना, नींद, रसेन, विद्योना।

संशय्या—( शी=सोना ) स्त्री०

सेन, विद्योना, पलंग, खाट।

संशय—( शय=पारना ) पुं तीर,

पाण, २ सरपट्टा।

संशयण—( शय=पारना जो शरण

में आवे उससे बैरी को मारना )

पुं बचाव, रक्षा, २ बचानेवाला,

रक्षक, ३ घर, आसरा।

संशयणागत—( शरण+अगत )

क० पुं शरण में आया हुआ,

जो बचाव के लिये आवे, शरणार्थी,

आश्रित। [ रक्षक।

संशयण—क० रक्षक, शरण मन,

संशयण्यु—पुं मेघ, वायु, रक्षक।

संशय—( शय=नाश करना, बादल

सं० श्रीयुक्त } (श्री=शोभा, लक्ष्मी,  
 श्रीयुत } युक्त वा युत मिला  
 हुआ ) पु० भाग्यवान्, धनवान्,  
 श्रीमान् ।

सं० श्रीवत्स—(श्री=शोभा, वत्स=  
 पितृव्य) पु० विष्णु ।

सं० श्रुत—(श्रु=सुनना) र्म० पु०  
 सुनेहुआ, समझाहुआ, पु० शास्त्र ।

सं० श्रुति—(श्रु=सुनना) स्त्री० वेद,  
 कान, सुनना ।

सं० श्रुवा—(श्रु=सुनना, या टपकना)  
 स्त्री० शोभाका चादू, खैरका  
 वनाहुआ चम्पूच हाथके आकारका ।

सं० श्रीणि—(श्री=सेवा करना)  
 श्रेणी } स्त्री० पात, पंक्ति, कतार ।

सं० श्रेष्ठ—(श्रेष्ठस्य शब्द को श्रेष्ठो  
 जाता है) र्म० बहुत, श्रेष्ठ=सराहना )  
 पु० बहुत अच्छा, सब से अच्छा,  
 उत्तम, सब से बड़ा ।

सं० श्रेष्ठाचार—(श्रेष्ठ + आचार)  
 पु० उत्तम रीति उम्दा तरीका ।

सं० श्रोता—(श्रु=सुनना) क० पु०  
 सुननेवाला, सुनवथा ।

सं० श्रोत्र—(श्रु=सुनना) पु० कान,  
 सुनने की इन्द्रिय ।

सं० श्रोत्रिय—क० पु० वैदिक, वेद  
 पठक, वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला ।

सं० श्लाघा—(श्लाघ=सराहना)

स्त्री० सराह, प्रशंसा, तारीफ, प्र  
 चार, इच्छा ।

सं० श्लाघ्य—(श्लाघ=सराहना, योग्य,  
 काविलतारीफ) ।

सं० श्लेष—(श्लेष=मिलना) पु०  
 मिलान, संयोग, २ एक अलंकार

जिसमें एक शब्द के बहुत अर्थ  
 होते हैं, जैसे, “कीकरपाकर तार,

जापन फलसा आमिला”  
 “सेष कदम कचनार,

पीपळ रत्ती तून तज”  
 इसमें बहुत से पेड़ों के नाम दि-

खाई देते हैं पर इसका अर्थ यह है  
 कि परमेश्वर ने तुझ पर कृपा की

कि जिस को तू चाहती थी सोही  
 आमिला, सो दे कहीं स्त्री! अब

उसके पैरों की तू सेवा कर और  
 अब अपने प्यारे को एक पल भर

भी मत छोड़ । [नुक्ताम ।  
 सं० श्लेष्मा—पु० कफ, खराब,

सं० श्लोक—(श्लोक=बढ़ना, या  
 इकट्ठा करना) पु० चार पद का

संस्कृत छंद, २ यश, कीर्ति, की-  
 रति, नामावली ।

सं० श्वपच—(श्वन्=कुत्ता, पच=प-  
 नाना, अपाव कुत्तेको खानेवाला )

पु० भंडाल ।  
 सं० श्वशुर—(श्व=जल्दी, अस्=पा-  
 ना) पु० समुद्र, पति या पत्नी का बाप ।

सं० श्वश्रु—( श्वश्रु ) श्वः मातुः, मातुः श्वी लुगाई ।

सं० श्वस्—( श्वस्=श्वानामि दिनः, श्वः=श्वानेकांशं दिनः ।

सं० श्वान—( श्वान=पदना, या मा-  
ना ) पु० दुमा, दुद्ध ।

सं० श्वान—( श्वान=मांस लेना ) पु०  
सांस, मांस, दूध ।

सं० श्वेत—( श्वेत=पीला होना )  
पु० पीला, मरुद ।

सं० श्वेतद्वीप—( श्वेत+द्वीप ) पु०  
वैकुण्ठ, १ एक द्वीप का नाम ।

( प )

सं० प—पु० केश, हृदय, गु० धेनु, विष्णु ।

सं० पट—( पट ) पु० छः ६ ।

सं० पट्जर्मि—( पुभुक्ता च पिपासा  
च माणस्य मनसःस्पृही । शोकमोहौ  
शरीरस्य जगद्गुणपट्जर्मपः ) पाण्य  
को भुङ्क्ते, च प्यास च मनसो स्मृति  
मो शोक, मोह च शरीर को जरा  
और मृत्यु ये छःजर्मियां होती हैं ।

सं० पट्कर्म—( पट्+कर्म ) पु०  
स्नान, भोषा, जप, तर्पण, देवता  
का पूजन आदि, ( १ वेद पढ़ना,  
२ दूसरे को पढ़ाना, ३ यज्ञ करना,  
४ दूसरे को कराना, ५ दान देना,  
और ६ दान लेना ये ब्राह्मण के  
कार्य हैं ) ।

सं० पटकोण—( पट्+कोण ) पु०

छःकोना में छः छः त्रुटि कोण, २ वक्ता ।

सं० पट्पद—( पट्+पद ) पु० घीरा ।

सं० पट्प्रयोग—( पट्+प्रयोग ) पु० शान्ति, १ वैश्वी-  
करण, २ इन्द्रमन, ३ विद्वेषण, ४  
वशासन, ५ मारण ।

सं० पट्संभोजन—( पट्+भोजन ) पु०  
भोजन, भोजन=गाना ) पु० पीठा,  
गुहा, रासा, हट्टा, कसीना, और  
सीता, इन छः रसों से मिलाना गाना ।

सं० पट्पदन—( पट्+पदन ) पु०  
पदानन } ( पट्=पद, पदन  
या आनन=पुंर )  
पु० पाचिकव, महादेव का पेट ।

सं० पट्चर्मा—पु० काम, मोघ, खोम,  
मोह, मद, मात्सर्य ।

सं० पट्शास्त्र—( पट्+शास्त्र ) पु०  
न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त,  
सांख्य, और पानञ्जल, ये छः शास्त्र  
इनको पट्दर्शन भी कहते हैं दर्शन  
शब्द को देखो ) ।

सं० पट्पद—( पट्+पद ) पु० शरीर  
के छः भाग, जैसे दो हाथ, दो पैर,  
शिरः और कर्ण, २ वेद के छः भंग,  
( जैसे १ शिखा, २ कर्ण, ३ व्या-  
करण, ४ निरुक्त, ५ उपोत्तिष, ६  
छन्द, वेदांग शब्द को देखो ) ।

सं० पट्पद्मि—( पट्+पद्मि=पांवि )  
पु० घीरा, भ्रमर ।

सं० पण्ड—( पण्ड+ण्ड ) कपलादि-  
कोटि समूह, सांकायिक ।

सं० पण्ड—पु० नपुंसक, दिनड़ा, मुखमस ।

सं० पण्डि—( पण्ड=दः, पर-आगे ति-प्रत्यय के आने से उसका अर्थ दश गुना होता है ) गु० साठ ।

सं० पण्ड—(पण्ड) गु० द्वादश ।

सं० पण्डि—(पण्ड) स्त्री० द्वादश, द्वादश विधि, पण्डिदेवी ।

सं० पण्डश—( पण्ड=दः, दश=दस ) गु० सोलह, १६ ।

सं० पण्डशदान—(पण्डश + दान) पु० सोलह चीजों का दान, जैसे १ धरती, २ आसन, ३ पानी, ४ कपड़ा, ५ दीपक ( या दीपक के लिये तेल ) ६ अनाज, ७ पान, ८ दूध, ९ मुगनियत चीज, १० फूलों की माला, ११ फल, १२ सेज, १३ लड़ाऊँ, १४ गाय, १५ सोना, १६ कपा या चांदी ।

सं० पण्डशभुजा—( पण्डश=सोलह भुजा=हाथ ) स्त्री० सोलह हाथकी दुर्गा, देवी की मूर्ति ।

सं० पण्डशसंस्कार या कर्म ( १ गर्भाधान, २ पुंसवन, ३ सीमन्त, ४ ज्ञानहोम, ५ नामकरण, ६ निष्क्रमण, ७ अन्नवाशन, ८ चूड़ा-कर्म, अर्थात् मुष्टन, ९ कर्णवेध, १० उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत, ११ वेदारंभ, १२ सप्ताहत्वेन अर्थात् ब्रह्मचर्य, १३ विवाह, १४ गृहस्थापन १५ द्वादशमन, १६ वानप्रस्थ,

१७ महावाक्यपरिसमाप्ति, १८ संन्यासविधि, १९ सर्वसंस्कार होय विधि, २० मृतकर्म ।

सं० पण्डुपा—स्त्री० बह, पुत्रभार्या जैसे “स्तुपेयं तव कन्याण” ।

( स )

सं० म—( सो=नारा करना ) पु० विष्णु, २ साय, ३ शिव, ४ पतिरु, भृगु, ५ समुच्च साय, साहित, समेत ( जैसे सजीव, जीवसाहित ) २ वरावर, वरी, एकही ( जैसे सधर्म एकही धर्म का ) ३ सामान ।

सं० संक्षिप्त—अर्थकर्म की हुई, मुल्ल-तिरकी हुई ।

सं० संक्षेप—( सम्=साय, क्षिप=कै-कना ) पु० सारक्षेप, सारभाग, मुल्लतर ।

प्रा० संगत—( सं० संगति ) स्त्री० मेल, साथ सोहवत, २ वह जगहों सित अपने धर्म की रीरसम करते हैं ।

प्रा० संचना ( सं० सञ्चयन, सम्मांचना ) अच्युतीतरह से, विडकटा करना ) क्रि० सं० इच्छाकरना

सं० संज्ञा—( सम्=अच्छी तरह से ज्ञा=ज्ञानना ) स्त्री० इत्थ, नाम, चीका नाम, २ बुद्धि, ३ चेतना, गायत्री, ५ सूर्य की स्त्री ।

प्रा० संजीवना—( सं० संयोजन, सम्, पुनः=मिलना ) कि० स० नैवार करना ।	- योग, संयोग, इच्छिकाक ।
सं० संन्यासी—संन्यासीशब्दकोदेशो।	सं० संयोजित—(सं० मित्रापागया ।
प्रा० संपत्—( सं० सम्पत् ) स्त्री० सम्पदा, धन, दौलत ।	सं० संरम्भ—(सम्, रम्=कोसना) पु० कोप, आक्रोश, वेग ।
प्रा० संभलना—कि० भ० रंभना, ठहरना, सहारापाना, लड़ा होना, गिरने र रंभजाना ।	सं० संराधन—(सम्, राध=सेवाकरना) भा० पु० संव रंकार से सेवाकरना, चिन्तन करना ।
प्रा० संभालना } ( सं० सम्भारण संभारना } सम्, भृ=पकड़- ना ) कि० स० रंभना, पकड़ना, सहारा देना, मदद देना, सहायता देना ।	सं० संराव—(सम् + क=बोलना) पु० ध्वनि, शब्द ।
सं० संयम—( सम्=मच्छीतरह से, यम्=रोकना ) भा० पु० नेम, नियम, अन के दिन कितनी चीजों के खाने पीने की रूखाबट, इन्द्रियनिग्रह, परहेज, बन्धन ।	सं० संलग्न—( सम्, लग्न=मिलना ) क० पु० मिलित, संयुक्त ।
सं० संयमी—क० पु० मुनि, इन्द्रियरोधक ।	सं० संलाप—(सम्, लप्=कहना) भा० पु० परस्पर कहना, बाह्यमुपगतग करना ।
सं० संयुक्त—( सम्=साथ पुनः=मिल- ना ) पु० मिनाहुआ, लगाहुआ, जुड़ाहुआ ।	सं० संवत्—(सम्, वय=जाना ) पु० विक्रपादिस्थ राजाका चछायाहुआ माल, वरस, सन् ।
सं० संयुग—(सम्=साथ, पुनः=मिल- ना) पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम ।	सं० संवत्सर—( सम् + वत्सर ) पु० वरस, संवत्, साल, सन् ।
सं० संयुत—(सम्, यु=मिलना) स्म० मिनाहुआ, लगाहुआ ।	सं० संवाद—(सम्, वद्=कहना) पु० यात चीत, चर्चा, वसंग, कथा, संदे- श=मंदेशा, समाचार ।
सं० संयोग—( सम्, पुनः=मिलना ) पु० मेल, मिनाप, सम्बन्ध, र देख	प्रा० संवारना—कि० स० सजाना, मुबारना, सिंगारना, तैयार करना ।
	सं० संशय—(सम्, शो=सोना, पर सम्=उपमर्ग के साथ जाने से इस- का अर्थ संदेह करना होजाता है ) पु० संदेह, शक ।



ने ( जोकि ग्वाडियर का रहने वाला था ) बनाई, इसमें ७०० दोहे प्रगभाषा में लिखे हैं ।

प्रा० सतहत्तर—( सं० सप्तसप्तति, सप्त=सात, सप्तति=सत्तर ) गु० सत्तर और सात ।

प्रा० सताना—( सं० सन्तोषन, सम्=साथ, तप्=तपाना ) कि० सं० दुःखदेना, छेड़ना, सिमाना, तकलीफ देना ।

प्रा० सतानन्द—( सं० शतानन्द ) पु० गौतम ऋषि का बेटा और जनक राजा का पुरोहित ।

सं० सती—( सत् ) स्त्री० पतिव्रता स्त्री । पपीसा स्त्री, २ वह स्त्री जो अपने पति की लाश के साथ जल जाती है, ३ दत्त की बेटा और महादेव की पत्नी जो अपने बाप के अपमान करने से उसके यज्ञकुंड में गिर कर जल मरी और कहते हैं कि वही सती फिर हिमाचल के पर में पार्वती होकर जन्मी ।

प्रा० सतुआ—( सं० सत्तु या सवतु ) सत्तु पु० भूँजे अनान का चुन, सातु ।

सं० सत्कर्म—( सत्=सच्चा या अच्छा कर्म=काम ) पु० मेलाकाम, अच्छा काम, पुण्य, पवित्र काम, नेहकाम,

सचावाम ।

सं० सत्कार—( सत्=आदर, कृ=करना ) पु० आदर, सम्मान, खातिर ।

सं० सत्क्रिया—( सत्=अच्छा, कृ=करना ) स्त्री० सत्कार, सम्मान, पूजन, वचन काम ।

प्रा० सत्तर—( सं० सप्तति ) गु० दश गुना सात, सात दहाई । [ सीधा ।

सं० सत्तम—गु० बड़ा साधु, अति

सं० सत्त—( सत्=बल ) पु० स्थान, यज्ञ, सदा दान, आच्छादन, दाना, अरण्य, कैतव, कपट, धन, गृह, सर, तालाब ।

सं० सत्तशाला—स्त्री० अश्वनलादि के देने का स्थान, धर्मशाला ।

सं० सत्ताजित—पु० श्रीकृष्ण का इश्वर, सत्यभामा का पिता ।

सं० सत्तिन्—पु० सुस्थ, यत्नमान, दानी ।

प्रा० सत्तो—( अस=होना ) स्त्री० होना विद्यमानता, २ बल, पराक्रम, जोर, ३ भलाई, उत्तमता ।

प्रा० सत्ताईस—( सं० सत्ताईशति ) गु० बीस और सात ।

प्रा० सत्तानवे—( सं० सत्तानवति ) गु० नव्वे और सात ।

प्रा० सत्तावन—( सं० सत्तावन् ) गु० पचास और सात ।

प्रा० सत्तासी—( सं० सत्तासीति ) गु०

अस्ती और सात ।

सं० सत्त्व-( सत् ) पु० मनोगुण,  
२ आतिथन, जोर, ३ प्रीति वस्तु,  
४ सार, ५ माण्ड, ६ क्यबसाय, वय-  
म, ७ हृदय, ८ साहय, नेत्र ।

सं० सत्यपुरुष-( मत्=सचो, पुरुष=  
आदमी ) पु० साधु, सज्जन, भला  
आदमी ।

सं० सत्य-( सत् ) गु० सच, ठीक,  
सही, यथार्थ, निश्चय, जे मया,  
वसा, ईमानदार, पु० सांघ, मचाई,  
सचोई, २ सत्ययुग, परलोयुग, ३  
शपथ, ४ ब्रह्मलोक ।

सं० सत्यता-( सत्य ) भा० स्त्री०  
सचई, सचोई ।

सं० सत्यभामा-( सत्य=मच, भा-  
मा=क्रोधिनी स्त्री ), स्त्री० धीरुष्ण  
की एकपत्नी और सत्राजितकी बेटी ।

सं० सत्ययुग-( सत्य + युग ) पु०  
पहला युग (युग शब्द को देखो) ।

सं० सत्यलोक-( सत्य + लोक ) पु०  
ब्रह्मलोक, वार का मानवां लोक ।

सं० सत्यवादी-( सत्य=प्रच, वादी  
=बोलनेवाला ) क० पु० सच  
बोलनेवाला, रास्तगो ।

सं० सत्यव्रत-गु० सत्य=सचका,  
सत्यव्रतिका, पु० शिशुक्रामा ।

सं० सत्यसन्ध-गु० सत्य=चदी,  
सादिक, सच्चा ।

सं० सत्यानाश-( सं० सत्य=मच,  
नाश=वर्षादी ) पु० नाश, विनाश,  
वर्षादी ।

प्रा० सत्यानाशकृत्ता-बोल०  
नष्ट करना, धराद करना, खराब  
करना, बिगाड़ डालना ।

प्रा० सत्यानाशजाना-बोल०  
सत्यानाशहोना-नष्ट हो-  
ना, धराद होना, खराब होना  
बिगाड़ जाना ।

सं० सत्वर-(स=साध, त्वरा=जल्दी,  
गु० जल्द, चतावला, क्रि० वि०  
शीघ्र, तुल्य, झटपट, जल्दी से ।

सं० सत्सङ्ग-पु० } ( सत्=अच्छा,  
सं० सत्सङ्गति-स्त्री० } संग या संगति  
साथ ) अच्छी

संगत, भले आदमीका साथ अच्छी  
सोहबत ।

सं० सदन-( सद=जाना, या बैठना  
जिस में ) पु० घर, स्थान, जगह,  
२ पानी ।

सं० सदानुमति-( मत्+अनुमति )  
सि० अच्छी सम्मति, अच्छी सलाह ।

सं० सदय-( स=साध + दया=कृपा )  
गु० दयालु, दयासहित, कोमल ।

सं० सदसत् ( सत् + असत् ) गु०  
सच झूठ, रास्तदोष ।

सं० सदा-क्रि० वि० निरन्तर, हमेशा,  
निरन्तर, रोज रोज ।

मं० मदाचार

मनु - अचार ।  
पु० मनावन अर्थ, उत्तमानवर्ण  
नेत्रचलन ।

मं० मदानन्द

(मदा + नन्द) ।  
मदाशिव महादेव, २ गु. हृषीकेश  
प्रपन्न ।

मं० मदाव्रत

(मदा + व्रत) पु०  
स्नाना जो भ्रमों को मदा दिवाजाय

मं० मदाशिव

पद - शिव पु०  
महादेव, शम्भु, शिव, शङ्कर

मं० मद्रश

(म = वाक्, दृश) ।  
मद्रक्ष } मन - गु. वाक्  
समान, तुल्य, एकसं ।

मं० मद्रति

मन - अच्युती, गति =  
दशा । श्री० उत्तम गति, मुक्ति  
पोच, निम्न, लुटकार, २ अर्थ  
नेकी, ३ मद्रदा मद्रति ।

मं० मद्राव

गु. म - दृ. श्रेष्ठता, नि  
रूपता, वेपक

मं० मद्र

गु० पृष्ट, पर न ।

मं० मद्रः

(म - साथ, द्रि = चपकना) ।  
क्रि० वि० तुल्य, कौन, उमीदप,  
तन्धान, वस्तु ।

मं० मधना

(मं० मान) क्रि० अ०  
बनना, सुवसिमाया जाना, अच्युती  
तार से शिन्ता पाना ।

मं० मधवा

(म = साथ, धर = पति) ।  
श्री० वर लुगाई निमका पति भीता

प्रा० मधाना

मं० मधना  
मं० मधन  
मं० मधीनी  
प्रा० मन

प्रा० मन =

मं० मनक

मं० मनकुमार

मं० मनन्द

मनन्दन

प्रा० मनमनाना

मं० मनानन

मं० मनाथ

प्रा० सनाह—(सं० सनाह, सम्=अ-  
च्छी तरह से; नह=बोचना) पु०  
बालर गिरह, बवच ।

प्रा० सनीचर—(सं० शनैश्चर) पु०  
सातवां ग्रह, २ शनिवार । [ग्रा ।

प्रा० सनीचरा—(सनीचर) पु० अभा-

प्रा० सनेह—(सं० स्नेह) पु० प्यार,  
भेति, नेह, छोह, मोह, मेम ।

सं० सन्त—(सम्) पु० साधु, सत्पुरुष,  
सज्जन, धर्मात्मा ।

सं० सन्तत—(सम्=साथ, तन्=कै-  
ना) क्रि० वि० लगाना, निरन्तर,  
सदा, निर, हमेशा, पु० बिरनीर्ण,  
फेला हुआ ।

सं० संतति—(सम्=साथ, तन्=कै-  
लना) स्त्री० लड़का बाला, पैटा  
पोटा, सन्तान, वंश ।

सं० सन्तस—(सम्=अच्छी तरह से  
तर्=वरना या तराना) क्मे० पु०  
तराहुआ, आनन, यहा हुआ; गर्भ,  
२ दुःखी ।

सं० सन्तान—(सम्=साथ, तन्=कै-  
ना) पु० लड़का बाला, वंश, कुटुम्ब ।

सं० सन्तापक—क० पु० दुःखदाता ।

सं० सन्ताप—(सम्=अच्छी तरह से  
तर्=वरना) पु० शोक, शोच, कि  
म. चिन्ता, पीडा, दुःख ।

सं० सन्तुष्ट—(सम्=अच्छी तरह से,  
तुप्=वसत होना) क० पु० मसम,

वस, इर्षित, मनभरा, सन्तोषके साथ ।

सं० सन्तुष्टि—(सम् + तुप् + ति)

भा० स्त्री० सन्तोष, मसमता, सम,  
कनायत । [कर ।

सं० सन्तोषक—क० पु० तुष्टिकर, तुष्टि

सं० सन्तोष—(सम्=अच्छी भाँति से,  
तुप्=वसत होना) भा० पु० मस, तुष्टि,

आनन्द, सुख । [न्दित ।

सं० सन्तोषित—क० इर्षित, आन-

सं० सन्तोषी—(सन्तोष) क० पु०

मन्तोष रसनेवाला, समवाला ।

सं० सन्धा—(सं० संस्था सम्=अच्छी

तरह से, स्था=ठहरना) स्त्री० पाठ,  
सयक, पदना ।

सं० सन्दर्भ—(सम्=अच्छी तरह से,

दम्=वनाना) पु० रचना, मध्य,  
गुहना, इन्जाम, गुदार्थपकाश ।

सं० सन्दिग्ध—सम्=साथ, दिह=

वदना) क० सन्देहयुक्त, जिसमें  
सन्देह पाया जाय ।

सं० सन्देश—(सम्=साथ, दिग्=

देना) पु० संदेश, समाचार,  
खबर, हमान ।

सं० सन्दिह—(सम्=साथ, दिह=वद-  
ना, या इहटा करना) पु० शक,  
संशय, श्रवण, शंका ।

सं० सन्दिहक—क० पु० शकी श्रवणी,  
शंकायी, सन्देशी ।

सं० सन्दोह—(सम्, दुह=दुहना, पर  
सम् उपसर्ग के साथ आने से इकट्ठा  
होना अर्थ हो जाता है) पु० समूह,  
बहुत गिरोह, मनुष्यमा ।

सं० सन्ध—(सम् + धा=रखना) स्त्री०  
पतिव्रता, पत्नीदा, स्थिति, पु० उपविष्ट  
बैठा हुआ, मिलित, युक्त ।

सं० संन्यास—(सम्=मन्त्रो, धा=रखना)  
धा० पु० भेद लेना,  
भोजन, अन्नपण, पत्नी, २ मोड़ना,  
मिलाना, ३ युक्ति, ४ परामर्श, ५  
कार्यवृत्ति, ६ आचरण ।

सं० मन्त्रि—(सम्=साथ, धा=रखना)  
श्री० वेत्त, मित्राण, व्याकरण में  
दो अक्षरों का मिलन, २ पुनरु,  
मेल करना, दो राजाओं के आपस  
में मेल होना, ३ शरीर में दो हड्डी  
को जोड़, ४ मेल, ५ दूसरा, छेद ।

सं० मन्त्र्या—(सम्=अर्थों पर रहने,  
धे=मान करना) श्री० सांक,  
सन्तुष्ट, साय, २ भोजन, दोहरा,  
और सांक इन तीन मय की पूजा  
त्रय ध्यान आदि ।

सं० मन्त्रा—(सं० मन्त्रान्) वि० च०

विनय, दुःखता, मरना ।

पा० मन्त्राय—पु० धारो का हवा से  
जो रुद्ध होता है

सं० सन्नाह—पु० कवच, बलतर ।

सं० सन्निधान—(सं० + निधान) पु०  
समीप, निकट ।

सं० सन्निधि—पु० समीप, निकट,  
नजदीक, पास ।

सं० सन्निपात—(सन्=साथ, नि=  
नीचे, पन्=गिरना) पु० एकतरह  
का रोग जो कफ, वात, और पित्त  
के विगड़ने से होता है, सन्निपात,  
त्रिदोष, सरसाम ।

सं० संन्यास—(सम्, नि, अस=कैक  
ना) पु० चौथा आश्रम, संन्यासी  
का धर्म, संसारकी चीजों का त्याग ।

सं० संन्यासी—(संन्यास) पु० चौथा  
आश्रमी जो संसार को छोड़ देता  
है परमहंस ।

प्रा० सन्मान—(सं० सम्मान, सम्=  
साथ, मान=आदर) पु० आदर,  
सम्मान ।

प्रा० सन्मुख—(सं० सम्मुख, सम्=  
साथ, या साम्हने, मुख=मुख) पु०  
साम्हने, आगे, मध्यस्थ ।

सं० सपक्ष—(सं=साथ, पक्ष=पक्ष,  
या दशावतार) पु० महापक्ष, माकी,  
२ पक्षीयता, पक्षों के साथ ।

सं० सपदि—(सं=साथ, पद=पदा)  
वि० वि० दुर्लभ, भयानक, शीघ्र ।

प्रा० मरना—(सं० मरना) पु० नष्ट हो  
जाना, दुःख देना, मारना, नष्ट हो जाना  
दुःख सहाय करने, जानने में भी

देवदेव गुह्ये मन ये चिन्ता करने हैं  
इन्हें गदालातकी सोनेमें देगना ।

सं० संपात्रव- ( स + पत्रव ) गु०  
नये २ पत्रे टटनों के साथ ।

प्रा० सपुत्र } ( सं० सुपुत्र ) पु०  
सपूत } अन्धा लड़का, सुखी-  
न पेश, २ बेटे के साथ, पुत्रप्राप्ति ।

प्रा० सपोला } ( सं० सर्पोप, सर्प  
सपोलिया } = सर्प, पोत = बंधा )  
पु० साँप का बंधा ।

सं० सम- ( सप = मिथना ) गु० सात, ७ ।

सं० समचत्वारिंशत्- ( सप्त + चत्वारि-  
रिंशत् ) गु० सात और चालीस,  
सत्तालीस ।

सं० सममी- ( सप्त ) स्त्री० सप्तमी,  
सातवीं तिथि । [ सप्त ।

सं० सप्तदश- ( सप्त + दश ) गु०

सं० सप्तर्षि- ( सप्त + ऋषि ) पु० ?  
करपय, २ शत्रि, ३ भरद्वाज, ४ वि-  
श्वामित्र, ५ गौतम, ६ जमदग्नि,  
७ बशिष्ठ ।

सं० समसागर- पु० सातसमुद्र, जार  
अर्थात् लवण २ इन्द्र, ३ दधि, ४  
और अर्थात् दूध, ५ मधु, ६ मदि-  
रा, ७ घृत ।

सं० सप्ताह- ( सप्त = सात, अह = दिन )  
पु० सात दिन, हफ्ता, अठ्ठाढ़ा ।

सं० सप्तीति- ( स + पति ) गु०  
प्यारसे, प्यारसरित, प्यार के साथ ।

सं० सप्रेम- ( स + प्रेम ) गु० प्यार,  
प्यार के साथ ।

सं० सफर-पु० } सफर, सफरी,  
सफरी-स्त्री० } दुर्ग ।

सं० सफल- ( स + फल ) गु० फल  
सरित, सिद्ध, फल देनेवाला, कु-  
साय, साधक, कामपात्र ।

प्रा० सच- ( सं० सर्व ) गु० सर्वना०  
सारा, पूरा, समूचा, संपूर्ण, समस्त ।

सं० सचल- ( स = साधी, चल = जोर  
या सेना ) गु० चलवान्, जोरावर,  
सामर्थी, मौद, २ सेना के साथ ।

प्रा० सेवेरा } ( सं० सुवेला, सु-  
मुवेरा } अच्छा, बेला = समय )  
पु० पौर, विद्वान, गौर, तदका,  
मभाव, मातःशाल ।

सं० सभय- ( स = साथ, भय = डर )  
गु० डरा हुआ, डर के साथ, सुरं-  
क, भीतिमुक्त ।

सं० सभा- ( स = साथ, भा = चपक-  
ना ) पि० स्त्री० सभाज, मंडली,  
२ राजदरबार, दरबार, ३ पैचायत,  
४ मजलिस, मजलस ।

सं० सभापति- ( सभा + पति ) पु०  
सभा का मालिक, पीरमजलिस,  
मेसीडेंट, चेयरमन ।

सं० सभासद- ( सभा = सभाज, सद  
= बैठना ) क० पु० सभा में बैठने-  
वाला, सभा का मेम्बर, दरबारी ।

सं० सभिक—क्र० पु० मजलिसी,  
सभ्य, म्यम्बर ।

सं० सभ्य—( सभा ) गु० सभा के  
योग्य, चतुर, बुद्धिमान् ।

सं० सभित—( स + भीत ) र्म्ये० डरा  
हुआ, सभय ।

सं० सम्—उपस० अच्छी तरह से,  
भले प्रकार से, सुन्दरता से, भली  
भाँति से, २ साथ से, ३ बहुत, ४  
सब तरह से, ५ पास, साम्हने, दृशुद्ध ।

सं० सम—गु० बराबर, तुल्य, समान,  
सदृश, २ सब, पूरा, ३ साधु, ४  
दो, चार, द्वः आदि की संख्या ।

सं० समक्ष—अव्य० समीप गु० स-  
म्मुख, दृश्य, नेत्रगोचर, साम्हने ।

सं० समग्र—( सम्=सब तरह से, अग्र  
=अगि या सप=सब, ग्रह=लेना )  
गु० सब, सारा, पूरा, सम्पूर्ण ।

सं० समज्या—( सम्=सब, अज्ञ=  
जाना ) वि० स्त्री० समान, २ कीर्ति ।

प्रा० समज्ञ—स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, अ-  
ज्ञान, वृद्ध, २ सम्पत्ति, राय, विचार,  
ध्यान ।

प्रा० समभूता—क्रि० स० जानना,  
बुझना, विचारना ।

सं० समना—( सम् ) भा० स्त्री० ब-  
राबरी, तुल्यता, सादृश्य, मुताबिकत ।

सं० समदर्शी—( सम्=बराबरा, दर्शी  
देखनेवाला, दृश=देखना ) गु०

दोनों ओर बराबर देखनेवाला,  
पक्षपात नहीं करनेवाला, पक्ष नहीं  
करनेवाला, अपक्षपाती, वेतन्मसुव ।

प्रा० समधन—( समधी ) स्त्री० बेटे  
की या बेटों की सास ।

प्रा० समधियाना—( समधी ) पु०  
समधी का घराना ।

प्रा० समधी—( सं० सम्बन्धी ) पु०  
बेटे का या बेटों का समुर, सगा,  
नातेदार । [ चारों ओर ।

सं० समन्तात्—अव्य० सब, सर्वत्र,

सं० समन्वित—गु० संयुक्त, समेत,  
सहित, साथ ।

सं० समवल—गु० बराबर चलवाना ।

सं० समय—( सम्=साथ, या सयनरफ  
से, इण=जाना ) पु० काल, वक्त,  
वेला, समी, २ अवसर, कुर्मत ।

सं० समर—( सम्=साथ, क=जाना )  
पु० लड़ाई, युद्ध, रण ।

सं० समर्थ—( सम्=साथ, अर्थ=धन )  
गु० बलवान्, योग्य, लायक ।

सं० समर्थन—( सम्=सब, अर्थन=  
पोंगना, याचना ) पु० प्रमाण करना,  
ताई करना ।

सं० समर्थना—स्त्री० मित्रावस्था  
करना ।

सं० समर्थीधिकारी—क्र० पु० शक्ति-  
य मजाज ।

प्रा० समर्पना—(सं० समर्पण, सम् + ऋ + इ + अन, सम्=साप, अर्पण=भेंट देना) क्रि० सं० देवताको भेंट देना, सौंपना, अर्पण करना ।

सं० समवाय—(सम् + यव + इण् =नात्) पु० मिनाघट, पेल, इति फाक, सम्बन्ध ।

सं० समस्त—(सम्=साप, अस=फेरना, पा होना) पु० मंघ, मारा, सम्पूर्ण, पूरा, समाप्त ।

सं० समस्या—(सम्, अस=फेरना परसम्पन्नसर्गकेसाप अ नेमे विनना या संलेप होना अर्थ होता है, ग्री० इजोरा या दोरे बाँधी आदि संस्कृत और हिंदी छन्दों का एक पद जो उस छन्द को पूरा करने के लिये दिया जाता है, तर्ज, नरह, इगारा ।

प्रा० समा (सं० समथ) पु० समथ, समाँ (सं० समथ, १ दशा, अवस्था, ४ एक ताल, एक लय, एक स्वर, ४ गोभा, —समावधना, बीन० राग छाना ।

प्रा० समाई (समाना) मा० स्त्री० समाव, फैलाव, चौड़ाई, मुनायग, २ सं० शास्त्र, मन्त्रोप, धीरन ।

मं० समाकुल—(सम्=मर प्रकार से, आकुल=दुःखित) पु० व्याकुल, दुःखी, परेशान ।

सं० समागम—(सम्=सोप + आगम =माना) पु० आगमन, आना, अवाई, २ मिठना, मुलाकात, मिलाप, संयोग, मजमा, भीड़भाड़, पेल ।

सं० समाचार—(सम्=साप, आचारो और से, चर्=चलना) पु० । सन्देश, खबर, वृत्तान्त, हाल ।

सं० समाकर्मण—(सम् + आकर्मण, कृप=रोंचना) पु० सञ्चय, तहसील ।

सं० समाज—(सम्=साप, अस=जा ना) पु० समा, साथ, समूह, भुँड ।

प्रा० समाजी—(सं० समाजीय) पु० यंत्रो, तरुची, जो नाचमें तबला बजाना है, २ सभासद ।

सं० समाधान—(सम्, आ, धा=रखना) पु० किसी शब्द अथवा दलील का ठीक उत्तर, दो आदमी जो किसी दान पर बंद करने हैं उनका निवेदा करना, शक रफूफ करना, २ दमदिल सा, दारस, इत्मीनान, धीरज, शान्ति, परदेश्वर का ध्यान ।

सं० समाधि—(सम्, आ, धा=रखना) स्त्री० गररा और धन से ध्यान, योगाभ्यास, हवमदम करना, इन्द्रियों को मोचना और मन को परदेश्वर के ध्यान में लगाना, २ बह मगह नहा योगी संन्यासियों को मादने ।



सं० सम्प्रति—क्रि० वि० इदानीं,  
अब, अभी ।

सं० सम्प्रदान—( सम्=अच्छीतरह  
से, प्र=बहुत, दा=देना ) पु० दान  
देना, व्याकरण में चौथा कारक,  
प्रकृतलङ् ।

सं० सम्प्रदाय—( सम्, प्र + दा=देना )  
स्त्री० परम्परा का धर्म, कुल धर्म,  
परिपाटी, सम्पातकदीप ।

सं० सम्प्रेषित—( सम् + प्र + इष्=  
जाना ) कर्म० पठया गया, स्थापित  
हुआ, भेजा गया ।

सं० सम्बन्ध—( सम्=साथ, बन्ध=बाँधना )  
पु० मेल, लगाव योग, नाता  
रिश्ता, २ व्याकरण में छठा कारक  
या विभक्ति ।

सं० सम्बन्धी—( सम्बन्ध ) क० सम्बन्ध  
रखनेवाला, सम्पत्ति, नातेदार,  
रिश्तेदार, मुजाफ ।

सं० सम्बल—( सम्ब=जाना, या सम्  
=से, बल=नीना ) पु० रस्ता खर्च,  
२ तोशाराह, मागव्यय, ३ पानी ।

सं० सम्बलित—( सम् + बल=जाना )  
क० समेत, सहित, मये ।

सं० सम्बुद्ध—( सम् + बुध्=समझना )  
कर्म० समझाया गया ।

सं० सम्बोधक—( सम् + बुध्=जतलाना )  
क० पु० जतानेवाला, मुनादी ।

सं० सम्बोधन—( सम्, बोधन=जतलाना,  
बुध्=जानना ) पु० जतलाना-

ना, चिंताना, साम्प्रति करना, पुकारना,  
व्याकरण में आठवाँ कारक  
या विभक्ति, इकानिदा ।

सं० सम्बोधित—कर्म० पुकारा गया,  
जताया गया, मुनादा ।

सं० सम्भव—( सम्, भू=होना ) पु०  
उत्पत्ति, पैदा होना, हो सकना, २  
कारण, ३ मिलना, गु० होनहार,  
होने योग्य, २ उचित योग्य ।

सं० सम्भावना—( सम्, भू=होना )  
स्त्री० संभव होना, इच्छा, चाह, ३  
संदेह, ४ दुविधा, वह फल जिससे  
वर्तमान और भविष्य का कुछ ज्ञान  
आय ।

सं० सम्भाषण—( सम्=अच्छीतरह  
से, भाष्=कहना ) पु० बोलचाल,  
बात चीत ।

सं० सम्भोग—( सम् + भू=जाना )  
पु० हर्ष, सुख, मुरति, मैथुन,  
शृङ्गार भेद ।

सं० सम्भ्रम—( सम्=साथ, भ्रम  
धूमना ) पु० घबराहट, हड़बड़ी, वेग,  
उत्सावली, धूमना, दर, २ आदर-  
सम्मान, छातिरदागी ।

सं० सम्मत—( सम्=सबतरह से, मन्  
=समझाना ) कर्म० अनुमति, स्वी-  
कृत, राय के मुवाफिक ।

सं० सम्मति—( सम्=अच्छी भाँति से,  
मन्=जानना ) स्त्री० सलाह, वि-  
चार, राय, २ चाह, इच्छा ।

सं०सम्मतिपत्र—पु० राजीनामा,  
सुलझनामा ।

सं०सम्मार्जनी—(सम्, मृज्=माफ  
करना) ए० स्त्री० बढनी, भाङ्ग,  
कुंची, घुस, कुचरा ।

सं०सम्यक्—(सम्=अच्छी भाँति से  
सम्=ज्ञाना) क्रि० वि० अच्छी भाँति  
से, भले प्रकार से, ठीक, योग्यता  
से, २ सब तरफसे, सबभाँति से,  
लियाकन के साथ ।

सं०संरम्भ—पारम्भ, शोध ।

सं०सम्राज् } (राज्=शोभादेना)  
सम्राट् } पु० सब भूमि का  
मानिक, राजसूयपत्र कर्ता, सर्व-  
भूषण, चक्रवर्तीराजा ।

प्रा०सयाना } (सं० सञ्चान) पु०  
सियाना } समझवान, चतुर,  
सयाना } मधीण, निपुण,  
मुद्दिमान, पक्का ।

सं०सर—(सृ=ज्ञाना) पु० सरोवर,  
तानाब, भील, २ तीर, बाण, ३  
पानी, जल ।

प्रा०सरकंडा—(सं०शरणाण्ड) पु०  
नरकट, नरमल ।

प्रा०सरकना—(सं० सृ=ज्ञाना)  
क्रि० घ० इटना, टलना, चलना,  
भागना, सिसकना ।

सं०सरघा—(सर=सर, इन्=ज्ञाना  
पारन) स्त्री० मनुष्यवृद्धा, शरदकी  
पक्षी । [ गिरगिट ।

सं०सरट

प्रा०सरदा—पु० चरुदा ।

प्रा०सरन } (सं० शरणे) पु०  
सरना } आसरे की जगह, ब-  
चाव की जगह, बचाव, पनाह ।

प्रा०सरना—क्रि० अ० बनना,  
चलना, निकलना, एरा होना,  
सड़ना ।

प्रा०सरपट—स्त्री० बगलट दौड़,  
घोड़े की बड़ी दौड़ ।

प्रा०सरपटफेंकना—बोल० घोड़े को  
बगलट दौड़ाना ।

प्रा०सरवरि } स्त्री० बराबरी ।  
सरवरि }

सं०सरयु } (सृ=ज्ञाना) स्त्री०  
सरयु } एकनदी जो अयोध्या  
के पास बहती है और उससे या-  
परा, धर्मरा, देविरा और देवा भी  
करते हैं ।

सं०सरल—(सृ=ज्ञाना) पु० सीधा,  
सोभा, २ सधा, समन्दार, धर्मा-  
त्मा, ३ भीला, जो छल कपट न  
जानता हो, निरुपट, सीधा, सादा,  
पु० एक पेड़ का नाभ, जिससे  
सरो करतें हैं ।

प्रा०सरवर—(सं० सरोवर) पु०  
तान, तानाब, भील, गोमरा, तानाब ।

सं०साम्—(सं=ज्ञाना) पु०

प्रा०सरस } ( सं० श्रेयस् ) गु०  
सरसा } श्रेष्ठ, उत्तम, बहुत  
अच्छा, २ अधिक, बहुत ।

सं०सरस—( सा=साग, रस=स्वाद,  
या पानी ) गु० रसीला, रसवाला,  
पु० सरोवर ।

प्रा०सरसाई—( सरस ) भा० स्त्री०  
अधिर्हार्, बहुतायत, कमरन, उत्तमता ।

सं०सरसिज—( सरसि=जलोधि में  
जन्=पैदाहोना ) पु० कमल, कुँवल ।

सं०सरसीरुह—( सरसी=जलोधि, रुह  
=पैदाहोना ) पु० कमल, पद्म, कुँवल ।

प्रा०सरसों—( सं० सरप, सृं=जाना )  
पु० राई के ऐसी चीज ।

सं०सरस्वती—( सरस्=शानी, वती  
=वाली, अथवा स=साँप, रस=  
स्वाद, या पानी, वती=वाली )  
स्त्री० एक नदी का नाम, २ बाणी,  
घोली, राग और विद्या गुणआदि  
की देवी, बागीरवरी, शारदा,  
भारती, वाग्देवता ।

प्रा०सराप—( सं०शप ) पु० शप,  
फिटकार, दुराशप, बददुआ ।

प्रा०सरापना—( सं०शपन ) क्रि०  
स० सराप देना, कोसना, बद-  
दुआ देना ।

प्रा०सरावक—( सं० श्रावक ) पु०  
जैनी, जैन धर्म की मानने वाला ।

प्रा०सराह—स्त्री० बड़ाई, तारीफ़,

स्तुति, प्रशंसा ।

प्रा०सराहना—क्रि०स० बड़ाई क-  
रना, स्तुति करना, तारीफ़ करना ।

सं०सरित् } ( सृ=जाना, वहना )  
सरिता } स्त्री० नदी, दरिया ।

सं०सरित्पति—पु० समुद्र ।

सं०सग्निमुन—पु० गंगापुत्र, भीष्म  
पितामह, २ घाटिया ।

प्रा०सरिम } ( सं० सदृश या सदृज )  
मरीखा } गु० बराबर, समान ।

सं०मरीमृष—पु० सर्प, विच्छू ।

सं०सरुज—( स=सहिन, रुज=रोग )  
गु० रोगी, बीमार, मरीज ।

सं०सरूप—( स=बराबर, रूप=ढील )  
गु० बराबर, समान ।

प्रा०सरूप—स्वरूप शब्दको देखो ।

प्रा०सरेखा—( सं० रलेपा ) स्त्री०  
नवां नक्षत्र ।

प्रा०सरेश—( सरस ) पु० एक  
लसलसी चीज जिससे लकड़ीआदि  
की चीजें जोड़ते हैं सींग, और खुर  
के ढीलन से बनता है ।

सं०सरोज—( सरस्=तालाव, जन्=  
पैदाहोना ) पु० कमल, कुँवल, पद्म ।

सं०सरोजभव—( सरोज=कमल,  
भू=जन्मना ) पु० ब्रह्मा ।

प्रा०सरोता—पु० पु० सुपारी का-  
टने का औजार ।

सं० सरोरुह—(सरस=तालाव, रुह=  
पैदा होना) पु० कमल, जवला, पद्म।

सं० सरोवर—(सरस=तालाव, वर  
=बड़ा) पु० बड़ा तालाव, सरवर  
झील । [कोपित, गुस्से में ।

सं० सरोप—(स+रोप) गु० क्रोधित,

प्रा० सरोकरे—क्रि० स० दण्डकरना,  
कूदना, कला बरन, उरझना,  
मुझना ।

सं० सर्ग—(सृज्=पैदा होना, या छो-  
ड़ना) पु० उत्पत्ति, सृष्टि, रक्षोड़ना, र  
निरचय, ४ अध्याय, चार, चम्पूदर,  
स्वभाव ।

प्रा० सर्गुण—(सं० सगुण अथवा सर्व  
गुण) गु० सब गुणों समेत,  
र सगुण ब्रह्म ।

सं० सज्जक—(सृज्+अक, सृज्=  
पैदाकरना, त्यागना) क० त्यागी,  
उत्पत्ति कारक, र राजद्वल ।

सं० सर्प—(सृष्ट्=जाना) पु० साँप, नागा

सं० सर्पराज—(सर्प+राजा) पु० साँपों  
का राजा, शेषमी, र बासुकी ।

सं० सर्पिष—(सृष्ट्+इष) पु० पी, घृत,  
रोगनर्तक ।

सं० सर्व—(सर्व या सृ=जाना) गु०  
सर्व, सारा, सकल, समस्त, पु०  
शिव, विष्णु ।

सं० सर्वग—(सर्व=सब जगह, गम्=  
जाना) गु० सब जगह जाने वाला,

सब में जाने वाला, सब में फैलने  
वाला, सर्वव्यापी, पु० शिव, र  
परमेश्वर, र पानी, र इवा, र  
आत्मा, जीव ।

सं० सर्वज्ञ—(सर्व=सब, ज्ञा=जानना)  
क० सब जानने वाला, पु० परमे-  
श्वर, र शिव ।

सं० सर्वतोभद्र—पु० ज्ञान में प्रधान  
देवता का आसन, सिंहासन र विष्णु  
का स्थ, मण्डल विशेष ।

सं० सर्वत्र—(सर्व=सब, त्र=तमह अथ  
में प्रत्यय) क्रि० वि० सब जगह,  
सब ठौर, सब स्थान में ।

सं० सर्वथा—(सर्व=सब, था=प्रकार  
अर्थमें प्रत्यय) क्रि० वि० सब प्रकार  
से सब भाँति से सब तरफ से, सब  
रीतिसे, र निश्चय करके, निश्चयपूर्वक,  
यिन्तु, सब कुछ, अवश्य ।

सं० सर्वदमन—(सर्व=सब, दम्=द  
वाना) पु० दुष्यन्त का पुत्र, भरतद्वप ।

सं० सर्वदा—(सर्व=सब, दा=समय  
अर्थमें प्रत्यय) क्रि० वि० सदा, सब  
समय में, निरन्तर, दिन दिन ।

सं० सर्वनाम—(सर्व+नाम) पु० वह  
शब्द जो नाम के बदले में बोला-  
जाय, जैसे मैं, तू, वह, जाद्वीर ।

सं० सर्वभूत—पु० सब प्राणी, सब  
पशु, मनुष्य, मत्तजन ।

सं० सर्वमहला—(स्त्री०) पार्वती ।

सं० सर्वरस—पु० राधा, धृ, गजा ।

प्रा० सर्वस } ( सं० सर्वरस सर्व वसु  
सर्वसु } सर्व=सव स्व वा वसु  
=धा ) पु० सव धन, मय समृद्धा.

सव चीज, सवकुछ, कुन यश ।

सं० सर्वेश } ( सर्व=सव, ईश या ई  
सर्वेश्वर } श्वर=मालिक ) पु०  
सवका मालिक, परमेश्वर, विष्णु,  
शिव, सब का ईश्वर ।

सं० सर्वोपरि—( सर्व + उपरि ) पु०  
सब से बड़ा ।

प्रा० समुगहट—श्री० सुप्रताप ।

सं० सलज्ज—( स=साध, लज्जा=  
लान ) पु० लज्जालू, शर्मीला,  
लज्जावान् ।

सं० सलम—पु० पनपा, दिङ्गो, दीङ्गी ।

प्रा० सलई—( सं० सलका ) श्री०  
पल्ले तारका टुहड़ा जिसमें आंग  
में गुमा दालने हैं, और सलाई  
उप जोड़े के पल्ले तार के टुहड़े  
को भी कहने हैं जिसको आंग  
में सूव लाल करके अपने पैरों  
को आंगी में दालने हैं जिस में  
आंग फूटकर बन्ना होता है,  
२ सुगन्ध पैमल ।

सं० सलिल—( सल=जला ) पु०  
कान, जल, आग, आब, २ आ-  
कल, महल ।

प्रा० सलूना } ( सं० सलवण, सं  
सलोना } =साध लवण=नि-  
मक ) पु० निमकीन,

नोन महित, २ सुस्वाद, मजेदार,  
रोचक, स्वादिष्ट, ३ सुन्दर, साबला-  
मुहानना, सुवमूरत ।

प्रा० सलूनो—( सं० आचणी ) श्री०  
राखीपूनी, सावनकी पूनी ।

प्रा० सल्लू—पु० जूना सीनिका चाप ।

सं० सवर्ण—पु० ममानवर्ण, एकजाति  
वाले, मतातीय, हमजिन्स ।

प्रा० सवा—( सं० सवाद, स=साध,  
पाद=पौधा हिरसा ) पु० एक  
और चौथाई, १/४ ।

प्रा० सवाई ( सवा ) पु० जेपु के  
गजाओं की पदवी, पु० सवा,  
एक और चौथाई ।

प्रा० सवांग } ( सं० स्वाङ्ग, स्व=  
स्वाङ्ग } अगना, अङ्ग=शरीर,  
अर्थ व अपने शरीर को और तार  
से बनाना ) पु० भँडैनी, नकल  
बनाना, वेपादलना, २ मोल, तमाशा

प्रा० सवांगलाना } पैल० नर  
स्वांगलाना } ल बनाना  
वेप बदलना ।

प्रा० सवाद—( सं० स्वाद ) पु० रस  
मत, लज्जत, २ सुगन्ध ।

प्रा० सवाया } ( सवा ) पु० प  
मयेया } और चौथाई, सवा

सत्ताका पहाड़ा सत्तया । [संख्या ।  
 सं० सविता—पु० सूर्य, चारु की  
 सं० सव्य—( स-पैदा होना ) पु०  
 व शौ, दक्षिण, मानिक्य, विष्णु ।  
 सं० सव्यसाचिन्—पु० अर्जुन,  
 पाण्डुपुत्र ।  
 सं० ससह—( स=साथ, सहा=हर या  
 सन्देह ) पु० दुराहुता, मगध,  
 जिसमें सन्देह हो ।  
 प्रा० सस्ता—पु० सौधा, मन्दा, सती ।  
 प्रा० सस्ताई—भा० श्री० सौदाई,  
 अर्जुनी ।  
 प्रा० ससा—( सं० शश ) पु० खगोश  
 प्रा० समुर—( सं० शश ) पु० पति  
 का या श्री का या ।  
 सं० सह—( सह=सहना ) अथ०  
 साथ, सहित, भोग, मयेव, २ वर-  
 वर, एकरी, चरी । [सहायता ।  
 सं० सहकार—पु० समन्वित धाम,  
 सं० सहगामिनी—( सह=साथ, गा-  
 मिनी जानेवाली, गम=जाना )  
 श्री० मनी, धारने वनि के साथ  
 चलनेवाली श्री ।  
 सं० सहचर—( सह=साथ चर=चल-  
 ना ) पु० म यो, हमगी ।  
 सं० सहचरी—( सह=साथ चरी=च-  
 लनेवाली, चर=चलना ) श्री०  
 साथ रहनेवाली, साथी, मैत्रिणी,  
 सहोत्तरी, श्री, पत्नी, अम्बनी कुमारी ।

सं० सहज—( सह=साथ, जन्=पैदा  
 होना ) पु० जो मापरी पैदा हो,  
 स्वाभाविक, जो स्वभावही से पैदा  
 हो, २ सुगम, आमान, महल ।  
 सं० सहदेव—( सह=साथ, दिव=ले-  
 लना, या घमकन ) पु० पाँचपाँदवाँ  
 में सबसे छोटा जो पाण्डु राजा की  
 दूसरी रानी पाँद्री का बेटा था ।  
 सं० सहने—( सह=सहना ) पु० सहनी,  
 चरीरन, परिष्कार, समावेशी, क्षमा,  
 पु० सहनेवाला, मन्त्रीप, महनहार ।  
 प्रा० सहना—( सं० सहन ) कि० सं०  
 भोगना, चटाना, पोना, मुग्नना,  
 सन्तोषकरना ।  
 प्रा० सहनार्ई—( को० सहनार्ई ), श्री०  
 पाँचरी के पैदा एक यात्रा जिस  
 को मुर्ना भी कहते हैं ।  
 प्रा० महमना—( का० साहिब से पना  
 है जिसका अर्थ हर है ) कि० अ०  
 हरना पहरना ।  
 सं० सहमरण—( सह=साथ, मरण=  
 मारना ) पु० पति की लाश के साथ  
 जलना, मनी होना । [हमर ।  
 सं० सहयोगी—पु० साथी, संगती,  
 प्रा० सहयना } कि० अ० सह-  
 सहिगना } लाना, चुनचुना-  
 ना, धार २ चलना ।  
 सं० सहवास—( सह=साथ, वस=र-  
 हना ) पु० पड़ोस, एकपड़ास ।

सं० सहवासी—क० पु० पड़ोसी,  
हमसाया ।

सं० सहसा—(सह=साथ, सो=नाश  
करना या सह=सहना) क्रि० वि०  
भट्टाट, बिना विचारे, पकाएकी,  
उतावली से, दफ़्फ़तन ।

सं० सहस्र } गु० एक हजार, दश  
प्रा० सहस्र } सौ, १००० ।

सं० सहस्रनयन } ( सहस्र=हजार,  
सहस्रनेत्र } नयन वा नेत्र,  
आंख ) पु० देवताओं का राजा इन्द्र  
जिसके हजार आंखें हैं ।

सं० सहस्रपाद—पु० विष्णु, सूर्य ।

सं० सहस्रबाहु } ( सहस्र=हजार,  
प्रा० सहस्रबाहु } बाहु=भुजा ) पु०

एक राजा का नाम जिसके हजार  
हाथ थे जिससे परशुरामजी ने मारा ।

प्रा० सहसांखी—( सं० सहस्राक्ष )  
पु० इन्द्र, देवताओं का राजा,  
२ सहस्राक्षी, गवर्हों के साथ,  
मय गवाड़ ।

प्रा० सहसानन—( सं० सहसानन,  
सहस्र=हजार, आनन=मुँह ) पु० शेष  
नाग जिसके हजार मुँह हैं ।

सं० सहस्राक्ष—( सहस्र=हजार, अक्ष  
=आंख, पु० इन्द्र, २ विष्णु, ईश्वर,  
गु० हजार आंखवाला ।

प्रा० सहाई—( सं० सहाय ) स्त्री० सहा-  
यता, मदद, गु० मदद करनेवाला ।

सं० सहानुभूति—स्त्री० अनुवेदना, हृष  
दर्दी, दुःख मुग का साथी होना ।

सं० सहाय—( सह=साथ, इण्=जा-  
ना ) पु० मदद, सहाय, सहाई,  
अनुकूल, क० पु० सहायक, मददगार,  
मदद करनेवाला ।

सं० सहायक—( सह=साथ, इण्=  
जाना ) क० पु० मदद देनेवाला, मदद  
गार, रक्षक, उपकार करनेवाला ।

सं० सहायता—( सह=साथ, इण्=  
जाना ) स्त्री० सहाय, मदद, सहाय ।

प्रा० सहारा—( सं० सहायता ) पु०  
मदद, सहायता, आसरा ।

प्रा० सहित—( सह=साथ, इण्=जाना,  
अथवा सह=सहना ) निर्य सं० साथ,  
संग, समेत, संयुक्त, मेल ।

सं० सहिदानी—स्त्री० निशानी, चिह्न ।

सं० सहिष्णु—( सह+इष्णु, सह=  
सहना ) क० पु० सहनशील, क्षमा-  
वान्, बरदास्ती ।

प्रा० सही—( अरबी सहीह ) क्रि०  
वि० सच, चहुत अच्छा, हाँ, निश्चय ।

प्रा० सहेजना—क्रि० स० सौंप  
देना, सिपुर्देकरना, जौचन, सँतन,  
इकट्ठा करना, बटोरना ।

प्रा० सहेली—( स=साथ, आली=  
सखी ) स्त्री० साथ रहनेवाली,  
सखी, सजनी ।

सं० सहोदर—( सह=एकही, उदर

पेद, जो पंक्ती पेडसे पैदा हो )  
 पु० एकही मासे पैदाहुआ, भाई,  
 -सगाभाई ।

सं० सह्य—(सह=सहना) स्त्री० स-  
 -हने-योग्य, जो सहनाय- ।

प्रा० सा—(सं० समान, या सदृश)

परावरी को जलानेवाला, अव्यय,  
 (जैसे तुमसा) २ कुद्दा, कुद्देह, पोड़ा,

(जैसे कालासा=कुद्देह काला) ३

कभी २ इसका अर्थ कुछ नहीं दि-

ताई देता है पर कहीं कहीं जिस

शब्द के साथ लगाया जाता है उ-

सके अर्थ में अपिकता जतलाता है

(जैसे 'बहुत सा') ।

० साईं—(सं० स्वापी) पु० मा-

लिक, नाथ, स्वापी, २ ईश्वर, पर-

मेश्वर, मधु, ३ फकीर ।

० साईं—पु० दवा के धीरे धीरे

चलने का शब्द ।

० सांकर } (सं० शृङ्खला) स्त्री०

सिकली, सांकरन, २

सांकरी } कपरी, ३ (सं० स-

द्धीर्ण) सिकड़ीगनी, नोहा, पाटा,

कठिनता, दुःख, भ्रम, ४ गु०

संकड़ा, संकेत, संग ।

॥ साकल—(सं० शृङ्खला) स्त्री०

सिकली, सांकरनी ।

॥ सांखू—पु० पुन, संग, २ एक

तरफ की लकड़ी ।

प्रा० सांग } (सं० शंकु, या शक्ति)

सांगी } स्त्री० बर्द्धा, सेल ।

प्रा० सांग—सरांग शब्द को दोहो ।

प्रा० सांच—(सं० सत्य) स्त्री० स-

चाई, सवावट, सत्य, २ गु० ठीक,

सही, सच ।

प्रा० सांचा—पु० मिट्टी की एक चीज

जिसमें कोई चीज ढाली जाती है

या इसका रंग बनाया जाता है ।

प्रा० सांफ—(सं० सम्प्रा.) स्त्री०

शाम, सम्प्रा, साधकाल ।

प्रा० सांभा } (सं० सम्प्रा.) स्त्री०

सांभा } गोबर की मूरनें जिन-

सांभा } को लड़के लड़कियां

आखिर के कृष्णवत्स में भीतों पर

बनाने हैं ।

प्रा० साड } (सं० पण्ड) पु० पैल ।

साड } (सं० पण्ड) पु० पैल ।

प्रा० सांडनी—स्त्री० ऊं-नी, सांडनी-

सवर, ऊंट पर चढ़नेवाला ।

प्रा० सांडा—पु० एक जानवर जो बि-

पकली सा होता है और कहते हैं कि

उसके नेत्र में बहुत जोर-दोना है ।

प्रा० सांप—(सं० सर्प) पु० सर्प,

नाग, भुजंग ।

प्रा० सांभर—(सं० शाकम्भरी) पु०

एक शहर जो जैपुर और जोधपुर

के बीच में है और वहां एक भी-

लियां सर है जिसमें बहुत



निमः पैदा होता है, और उसके पास एक पहाड़ पर शकम्भरी देवी का मन्दिर है ।

प्रा० सांवला—(सं० श्यामल) गु० कुञ्जक काला, श्यामवर्ण ।

प्रा० सांस—(सं० श्वास) पु० स्त्री० दम, प्राण ।

प्रा० सांसउलटीलेना—बोल० हांप-ना दम नाकमें आना (जैसे मरने के समय में होता है) ।

प्रा० सांसना—क्रि० सं० डाटना, धमकाना, ताड़ना ।

प्रा० सांसभरना—बोल० आह भरना, छम्बी सांस लेना, ठंडी सांस लेना, पड़तावा करना ।

प्रा० सांसरुकना—बोल० दम बन्द होना, गला घुटना ।

प्रा० सांसरोकना—बोल० गलाघोट-ना, दम बन्द करना, गला दाबना ।

प्रा० सांसा—(सं० संशय) पु० सन्देह, शंका, डर, चिन्ता ।

सं० सांसारिक—(संसार) गु० संसारवा, संसारी, दुनियावा ।

सं० साकं } अव्य० सह, साथ ।  
साकम् }

प्रा० साकवनिक—(सं० शाकवणि-क) पु० साग बेचनेवाला, कुंजड़ा ।

प्रा० साका—(सं० शाक) पु० संवत् ।

प्रा० साकाकरना—बोल० नया सं-

वत् चलाना, बहादुरी के काम करते नामी होना ।

प्रा० साकेवंध—बोल० बड़ राजा जो नया संवत् जारी करता है ।

सं० साकार—(स + आकार) गु० आकार सहित, मूर्तिमान्, जिस की मूर्त हो ।

सं० साक्षात्—(स=साथ, या साम्हने, अक्ष=मांग) क्रि० वि० साम्हने, आंखों के आगे, प्रत्यक्ष, प्रकट, प्रसिद्ध, २ गु० आप, खुद, ३ बराबर, समान ।

सं० साक्षी—(स=साथ, या साम्हने, अक्षि=आंख) गु० गवाह, जिसने अपनी आंखों से देखा हो, साखी, शाहिद, २ स्त्री० गवाही, सास, शाहिदी ।

प्रा० साख—(सं० साक्ष्य, साक्षी) स्त्री० गवाही, शाहिदी, २ यश, धाक, कीर्ति, नाम, भरम, ३ (सं० शाखा) श्रुतु, फल, अनाज बाटनेका समय ।

प्रा० साखी—(सं० साक्षी) स्त्री० गवाही, साथ २ गु० गवाह, शाहिद ।

प्रा० साग—(सं० शाक) पु० हरी तरकारी, भाजी ।

प्रा० सागपात—बोल० तरकारी ।

सं० सागर—(सगर, एक राजा का नाम) पु० समुद्र, समन्दर, —हिन्दू

मान-समुद्र मानते हैं ( १ निमक  
का, २ दूध का, ३ घीका, ४ दही  
का, ५ शराब का, ६ ऊँक के रस  
का, ७ शहद का ) ।

प्रा० सागू- पु० मागूदाना जो बहुत  
हलका होता है इस लिये बीमार  
को बहुत बार दूध में या पानी में  
पकाकर खिलाने हैं ।

सं० सागून- पु० एव नरहरील बड़ी ।

सं० सांख्य- ( संख्या, सम-अच्छी  
तरह से, सपा=सिद्ध होना ) गु०  
संख्या का, पु० बपिलमुनि का  
बनाया हुआ एक दर्शनशास्त्र,  
नववराहमर्षीः ।

प्रा० साज- ( सं० सज्ज, समज-  
जाना ) पु० समान, नैपारी, संत्राया ।

प्रा० साजन- ( सं० सज्जन ) पु०  
सज्जन, प्यारा, पति ।

प्रा० साजना सं० सज्जन, समज  
जाना । प्रि० सः मैया कहना,  
सज्जन, भेषजना, पहनाना ।

प्रा० साभर सं० साधारण, सराव  
साव साव साव=सहन । पु०  
सम सावहन, साविलान ।

प्रा० साभी साका ) पु० सायां,  
सिमैदार, गंधी, मंगी । [ रवे ।

सं० सात्रोप- गु० बिहट पदवी, सम-

प्रा० साठ- ( सं० पठि गु० बः पु-  
ना दश, ६० ।

प्रा० साठी- ( साठ ) पु० एक तरह  
के चाबल जो घासात के दिनों में  
पैदा होते हैं और घोलने के ६० दिन  
पीछे एक भागे हैं उन लिये साठी  
कहाते हैं ।

प्रा० साड़ी- ( सं० साठी ) स्त्री-  
गाइयों के ओढ़ने का कपड़ा ।

प्रा० साद- ( सं० दयाली बोधा, रयाही  
अपनी लुगाई की पहन, बोधा=पति,  
बह=जेजाना ) पु० सालीका पति,  
हमजुलक ।

प्रा० सादे- ( सं० सार्द, स=साथ,  
अरे साथ, गु० साथ के साथ,  
( जेमे सादे तीन=तीन और साथ ) ।

प्रा० मान- ( सं० मत ) गु० चार  
और तीन, ७ -मान पांच करना,  
बोलः दूविधा में होना, --सात  
समुन्द्र=पहल तेलका नाम ।

प्रा० मान्विक- ( सं० सवर=मने गुगु )  
गु० मनेगुली, सापु, मी. था, मदा,  
मरल ।

प्रा० माथ- ( सं० माथे, मगरा मर )  
मर, मोहन, सवेर, २ पु० मंग, मंग-  
मि, मोहन ।

प्रा० माथेदना- रोनः दिनना, मेन  
रगला, साविन होना ।

प्रा० माथवाला- गु० सायां, सही ।

प्रा० माथी- स्त्री० रचोंका बिहीना-  
बहरी, कामवी ।

प्रा० साधिन—स्री० संगिनी, सहेली, मनी ।

प्रा० सार्थि—( साथ ) गु० सही, मेली ।  
मिलायी, मित्र, दोस्त ।

प्रा० साद { (सं० श्रद्धा) स्री० इच्छा,  
साध } चाह, अभिलाषा ।

सं० सादर—( स=साथ, आदर=स-  
म्मान ) क्रि० वि० आदर में सम्मान  
में, गानिर से ।

सं० सादृश्य—( सदृश ) भा० पु०  
वगैरी, समानता, तुल्यता ।

प्रा० साध—( सं० साधु ) पु० सन्न,  
मन्यपुरुष, सज्जन, भला आदमी,  
देवता ।

सं० साधक—( साध + अर्क, साध=  
सिद्ध करना, पूरा करना ) क० पु०  
साधनेवाला, अभ्यास करनेवाला,  
मन्य साधनेवाला, तपस्वी, देवद-  
त्तार ।

सं० साधन—( साध=सिद्ध करना,  
पूरा करना ) भा० पु० उपाय, यत्न,  
कार्यसिद्ध करनेकी वस्तु, अभ्या-  
स, उपाकरण में कामकाज ।

प्रा० साधना—( सं० साधन ) क्रि० म०  
सिद्ध करना, पूरा करना, गढ़ देना,  
संविन करना, बनाना, ठीक ठाक  
करना, अभ्यास करना, स्तुति  
करना, कर्म करना, पीठना ।

सं० साधनाय—( साध + अनी )

धर्म० सिद्ध करने योग्य, पूरा करने  
लायक, निष्पाद्य ।

सं० साधारण—( स=साथ, धारण=  
रखना ) गु० सामान्य, सहज, र-  
वरावर, समान, आम ।

सं० साधारणधर्म—पु० अहिंसा-  
न्यमस्तेषां च मित्रियनिग्रहः । दमन  
माजनेषु दानं धर्म साधारणविदुः ?  
अहिंसा, २ सत्य, ३ अस्तेय चोरी न  
करना, ४ शौच, पवित्र रहना, ५  
इन्द्रियों को रोकना, ६ दम, मनको  
रोकना, ७ दान, ८ आर्जन, कीमल-  
ता, ९ दान यह साधारण धर्म हैं ।

सं० साधित—सं० निष्पादित, सिद्ध  
किया गया, पूरा किया गया ।

सं० साधु—( साध=सिद्ध करना, पूरा  
करना ) गु० भोग्यादिद्विषयों को  
करना है या जो परके बांधों को सिद्ध  
करता है वह साधु है । सन्न, उत्तमजन,  
सत्य पुरुष, सज्जन, सीधा, सधा, २  
पु० साध, धैरागी, भला आदमी ।

सं० साध्य—( साध=पूरा करना ) सं०  
पूरा होने योग्य, सिद्ध होने के योग्य  
जो होसके, २ सुगम, सहज, आसान,  
३ चंगा होने के योग्य, त्रिमूर्ति  
इलाज होसके, ४ पु० जो बात सिद्ध  
ही जाय, जो बात पक्की ठहराई जाय ।

प्रा० सान—( सं० साग, सान् या शी-  
रीया करना ) शी० सिद्धी, पक्की,  
लोहे के हाथियों पर पार चलाने

का पत्थर, एक चक्राकार यन्त्र ।

सं० सानन्द—(स + आनन्द) गु०

आनन्द के साथ, हरित, सुख ।

सं० सानुकूल—(स + अनुकूल) गु०

कृपालु, दयालु, सहायक, मिह्रवान ।

प्रा० सान्ना—(सं० सन्धान) क्रि० सं०

मिलाना, भेदना, २ (सं० ज्ञान, ज्ञान=नीला करना) नीला करना,

नीला करना, तेज करना, सान

लगाना ।

प्रा० सावर } (सं० शम्बर, या शा-

सावर } म्बर, शम्भू=जाना )

पु० एक तरहका चारहसोगा, २

चारहसोगा का चपड़ा ।

सं० साम—(सो=नाश करना पापों

का) पु० तीसरा वेद, जिसकी श्रुति

गाई जाती है ।

सं० सामग्री—(सामग्र=सर्व) स्त्री०

सामा, सामान, असबाब, चीजबस्तु ।

सं० सामन्त—पु० वीर, बहादुर, परा-

क्रमी, योद्धा, मज, २ उपराज, ज-

मीदार, एक लाख रुपये साल की

आमदनी जिसको है ।

सं० सामयिक—गु० समय पर, का-

लोचित, अवसर की, बेरापर की ।

सं० सामर्थ्य } (समर्थ) स्त्री० बल, शक्ति,

प्रा० सामर्थ्य } पराक्रम, योग्यता ।

प्रा० सामर्थी—(सं० समर्थ) क०

बलवान, पराक्रमी, मतापी, योग्य ।

प्रा० सामा—(सं०=सामग्री) पु०

झों नाना प्रकार के भोजन, सामा-

न, सामग्री ।

सं० सामाजिक—पु० समाज, सभ्य

क्रा० सामान—(सामान) पु० असबाब,

अशला, सामा, सामग्री ।

सं० सामान्य—(समान) पु० मध्यम,

साधारण, चलनसार, चलनक,

मचलित, आम ।

सं० सामान्यतः—पु० साधारण से

आमतौर पर ।

सं० सामान्या—(सामान्य) स्त्री०

साधारण नायिका, धर्म के लालच

से पराये आदर्श के पास जाने

वाली देश, व्यभिचारीणी, सा-

मान्या, नायिका तीन तरह की है,

(१ अपसंभोगदुःखिता, २ बक्रो-

क्तिर्विना, ३ मानवती) ।

सं० सामीप्य—(समीप) भा० पु०

समीपता, समीपी, नजदीकी, निक-

टना, पहुँच ।

सं० सामुद्रिक—(स=साय, मुद्रा=

चिह्न) भा० पु० एक बिधा जिससे

सभी पुरुषों के हाथ पैर के चिह्नों से उ-

नके भले बुरे भागकी बतलाते हैं ।

सं० साम्राय—गुरुवरम्वरागत सदुप-

देश, सत्तार ।

प्रा० साम्ना } (सं० संमुत्त) पु० सम्मु-

साम्ना } त्त, अना, अगवाडा ।

सं० साम्प्रत—अव्य० अधुना, इदा-  
नीं, योग्य, उचित, अथ ।

प्रा० साम्प्रतकरना-बोल० लड़ाई  
करना, लड़ना, चर्चाई करना, मुका-  
बिला करना ।

मं० सागझाल—( सायम=सांझ, मो-  
नाग करना और बाला=समय )  
पु० सांझ, मन्था का समय, दिन  
का अन्त ।

मं० मायुज्य—( स=साय, युह=मिल-  
ना ) पु० एक प्रकार की मुक्ति,  
परमेश्वर से मिल जाना, एक हो  
जाना, एकत्व, अभेद ।

मं० मार—( मृ=मरना ) पु० गुदा,  
मस्त्रा, हीर, सन, मरर, रस, जठ  
मूत्र, २ वल, भोर, ३ मूलवात,  
अमलमलनव, मृत्नाम, ४ कीमन,  
मोन, ५ पाद, पात, ६ लोहा, ७  
धन, ८ नाम, कायदा, फल, ९  
मु० बहुत अन्धा, उन्म, श्रेष्ठ ।

प्रा० मार—( सं० मार, अथवा मारि  
मृ=मरना ) श्री० भीषडहीगोरी ।

मं० मारु—( मृ=मरना ) पु० एक  
प्रकार का मार, २ मोर, ३ साँप, ४  
बन्दक, ५ मोर्छा, बोली, ६ हथिय,  
७ कल, ८ बन्दक का नाम, ९  
बन्दक, १० मोर, ११ साँप, १२  
बाबू, १३ बिह, १४ कोठिया,  
१५ एक केका नाम, १६ बाबू, १७

१८ कई प्रकार के रंग, १९ भीरा,  
मधुमक्खी, २० धनुष, २१ स्त्री,  
२२ दीपक, २३ वस्त्र, २४ शंख, २५  
चंदन, २६ कपूर, २७ कमल, २८  
आभरण, शोभा, सुवर्ण, २९ पेश,  
३० पुष्प, ३१ ज्वर, ३२ रात्रि ३३  
भूमि, ३४ दीप्ति ।

“ मारंगने मारंग गयो ।

मोर साँप

“ मारंग बोल्यो आय ॥

बन्दक ।

“ जो सारंग सारंग कहे ।

मोर मोर की बोली ।

“ मारंग मुंहने जाय ॥

साँप ।

अर्थ—मोर ने साँपको पकड़ा और  
बादल गजा, जो मोर अपनी बोली  
बोले, जो साँप मुँह से निबळ का  
मांगे । ( कहने है कि मोर का यह  
स्वभाव है कि जब बादल को गले  
से गुनता है तो बहुत सुगी से बोलता  
है और नाचता है ) ।

मं० मारु—( मृ=मरना ) श्री एक  
वर्ण का नाम, दिगिरी ।

मं० मारु—( मृ=मरना ) पु० रावण  
के एक वंशी का नाम, २ अनिमार गेह

मं० मारु—( मृ=मरना, या मर-  
ण ) पु० मरना, मरने की वृत्ति, मरना,  
मरना, मरना ।

सं० सारदा—( सार=वच, दा=देने वाली, दा=देना ) स्त्री० सरस्वती, गु० सार देनेवाली ।

प्रा० सारना—( सं० साधन ) क्रि० सं० बनाना, करना, पूरा करना, सिद्ध करना ।

सं० सारस—( सरस=तालाव ) पु० एक नरक का पक्षी, २. साँदा, ३. कपल, ४. कपल में पहनने का गहना, ५. गु० सरोवर की चीज ।

सं० सारस्वत—( सरस्वती ) पु० एक देश का नाम, २. उस देश का मनुष्य, पंचगौड़ ( १. सारस्वत, २. वाण्यकुल, ३. गौड़, ४. उरुकुल, ५. मैथिल ) ये विन्ध्यपर्वत के उत्तरवासी हैं पंचद्रविड़ ( १. महाराष्ट्र, २. कर्नाटक, ३. गुरजर, ४. द्रविड़, ५. मैलंग ) ये विन्ध्यपर्वत के दक्षिणवासी हैं, ब्रह्मणों में एक ज्ञान, गु० सरस्वती देवी का, सारस्वती नदी का ।

प्रा० सारा—( सं० सर्व ) गु० पूरा, सम्पूर्ण, सब, समस्त, २. ( सं० दयाल, रथ=जाना ) पु० अपनी लुगई का मोड़, साना ।

सं० सारिका—( सृ=जाना ) स्त्री० मना पक्षी ।

प्रा० सारी—( सं० शादी ) स्त्री० साड़ी स्त्रियों के पहनने अथवा ओढ़ने का कपड़ा, २. ( सं० सार ) दूर का सार, मलाई ।

सं० सार्धक—( स + धर्क ) गु० अर्थ सहित, २. सफल, सिद्ध, मौजूब ।

सं० सावर्ण्य—( पु० सर्वणी, सूर्यपत्री ) सं० सावर्णि में जन्माश्विनी के पुत्र, १४ मनु में अष्टममनु ।

सं० सार्धम्—अव्य० साकम्, साथ ।

सं० सावित्र—पु० इन्द्र, महादेव, सूर्य, ब्रह्मदेवता, ब्राह्मण ।

सं० सार्वभौम—( सर्वभूमि ) पु० सब संसार का राजा, चक्रवर्ती राजा, २. उच्चर दिया का हाथी ।

सं० साल—( सन्=जाना ) पु० एक पेड़ और उसकी लकड़ी का नाम साख ।

प्रा० साल—( सं० शल्प, शल=जाना ) पु० गांसी, नांदा, तुल, २. सिद्ध, ३. ( सं० शाला ) स्त्री० जगह, घर, ४. पाठशाला, स्कूल, ५. ( सं० श्रुगाल ) पु० सियार, गौड़ ।

प्रा० सालन } पु० मांस, मांस की तर-  
सालना } कारी, २. साग, तरकारी ।

प्रा० सालना—( सं० शल्प, शल=जाना ) क्रि० सं० छेदना, बेचना, घसाना, पैठाना, बर्षा से छेदकरना, वर्षाना, पारकरना, जुमाना, २. क्रि० सं० दुलना, पिराना, खटकना, दुसपाना ।

प्रा० सालसा—पु० एक नरक की औषध जिसका चक्रे पीने से शरीर



प्रा० साही ( शहदी, शहन् = जाना )  
 सेही ( सी० बंटकी, एकजानवर  
 जिसकी पीठपर कटि बाँटे होते हैं ।

प्रा० साहूकार- सं० साधुकार, साधु=  
 सधा, कार=करनेवाला, कृ=करना )  
 पु० मरानन, बैपारी, हुपड़ीवाला,  
 कोठीवाला, नद्दा दुबानदार, रईमा-  
 नदार, सधा और भलाभादमी ।

प्रा० साहूकारी-सी० बैपारी, ले-  
 नदेन, सौदागरी, बणिज, व्यवहार,  
 हुपड़ी का व्यवहार ।

प्रा० सिंगा- ( सं० शृङ्ग ) पु० तुरही,  
 रणसिंगा ।

प्रा० सिंगार- ( सं० शृंगार ) पु०  
 शोभा, गहने कपड़ों की सजावट,  
 २ नौरत्नों में का एक रत्न ।

प्रा० सिंगारना- ( शृंगार ) क्रि० स०  
 सजाना, सँवरना, शोभितकरना ।

प्रा० सिंघाड़ा- ( सं० शृंगार ) पु०  
 बड़ाई, अर्द्ध=जाना ) पु० एहनाह  
 का फल जो पानी में पैदा होता है,  
 पानी फल ।

सं० सिंह- ( हिम्=मारना ) पु० शेर,  
 केर्री, मृगराज, मृगेन्द्र पशुओं का  
 राजा, २ पाँचवीं राशि, ३ हिंदुओं  
 में एक पदवी, हिन्दू का वर्ण वि-  
 पर्यय होने से सिंह बनगया ।

सं० सिंहदार-पु० पुरदार, फाटक ।

सं० सिंहनाद- ( सिंह + नाद ) पु०

शेर का गर्जना, २ लड़ाई का शब्द,  
 सिंहके ऐसा शब्द, भयानक शब्द ।

सं० सिंहनी- ( सिंह ) सी० शेरनी ।

प्रा० सिंहपौर- ( सिंह + पौर ) सी०  
 बड़ा दरवाजा अथवा फाटक जहाँ  
 बहुत बार-सिंह की मूर्ति रखी  
 जाती है ।

सं० सिंहलदीप-पु० लङ्का, सीलोन ।

सं० सिंहविक्रान्त-पु० घोड़ा, अथवा

सं० सिंहासन- ( सिंह + आसन )

पु० राजा का आसन, तख्त, पाटली

सं० सिंहिका-सी० राहुकी माता,

करपपत्नी, २ सिंहनी ।

सं० सिकता-सी० बालू, रेत ।

प्रा० सिकना-क्रि० अ० सँवर्जिताना,

सुना जाना ।

प्रा० सिकरी- ( सं० शृङ्खला ) सी०

साँकिल, सँकल, मिकली ।

सं० सिक- ( सिच्=सीचना ) र्वि०

सींचा हुआ, कृतसेचन ।

प्रा० सिस्- ( सं० शिष्य ) पु० चेष्टा,

२ जानाईके मक्की माननेवाला ।

प्रा० सिस्तर- ( सं० शिस्तर ) पु०

पहाड़ की चोटी, २ मन्दिरों के

ऊपर का मुख्यत ।

प्रा० सिस्तरन- ( सं० शिस्तरिणी ) पु०

दूरी में चीनी और विशदिय मिली

हुई रंगने की चीज ।



प्रा० सिखाई—(सिखाना) भा०  
स्त्री० पढ़ाई, शिक्षा ।

प्रा० सिखाना } (सं० शिक्षण,  
सिखलाना } शिष्य=सिखाना)  
क्रि० सं० पढ़ाना, पतनाना, शि-  
क्षादेना, उपदेश देना, २ डाटना,  
पपहाना, दंडदेना, ताड़ना करना ।

प्रा० सिगग } (सं० समग्र) गु०  
सिगरी } सय, सारा, संपूर्ण,  
सगग } हर एक ।

प्रा० सिक्काना—(सिद्ध) क्रि० सं०  
पढ़ाना, रींथना, उबालना, २  
मारदाना । [संदर्भाई ।

प्रा० सिटाई—(गीता) स्त्री० किक्काई,

प्रा० सिट्ट—स्त्री० थोड़ाहट, पावना-  
पन, पागलपन, उन्मत्तता ।

अ० सिगिटकेट—गोड़े स्पन्दर जि-  
न्हे भिन्न नियम करने के काम  
होने के लिये ।

प्रा० निडा } गु० वाचना, चौड़ा,  
निडा } वागल, उन्मत्त, मत्त ।

सं० मित्र—सौजन्य करना ) गु०  
बोला, सहेत, रसत, शुक्लपण ।

सं० मिद्व—(मित्र=मिद्व करना,  
पूरा करना) पु० एक प्रकार के  
देवन, २ बोरी, धरमआदि मुनि,  
वेदाद्वय विगडे गण के अष्ट  
विदि हो के विमर्शो पूरा, बने-

मान, मनिष्यन् की बात मालूम हो,  
झानी, तपस्वी, सन्त, ३ ज्योतिष में  
एक योग का नाम, ४ गु० पूरा,  
समाप्त, पका, बना, तैयार, २ म-  
सिद्ध विख्यात, जाहिर, ३ सफल,  
४ साधित किया हुआ, पका ठह-  
राया हुआ, सचा ठहराया हुआ,  
५ निश्चय किया हुआ, निश्चय  
किया हुआ ।

सं० सिद्धान्त—(सिद्ध + संत)  
सच ठहराई हुई बात, सिद्ध  
हुई बात, तर्क अर्थात् दलील  
जो बात सच ठहराई जाय, क  
परिणाम, नतीजा, २ सूर्य सिद्धा  
आदि ज्योतिष के शास्त्र ।

सं० सिद्धि—(सिध=सिद्ध कर-  
पूरा करना) स्त्री० मन के मनो  
का पूरा होना, मनसाहित फ  
का मिलना, मन चाही बात  
पूरा होना, २ अणिमा आदि अ  
मिद्धि (अष्टमिद्धि शब्द को देगो)

सं० मिद्वयोग—पु० कार्यमिद्धि के  
योग, मुक्तेन्द्रा युधेभदा गुनीरित  
कुनेभया । गुनीर्णानिभयुक्ता मि  
योगः मदीनियः । अर्थ मुक्तार  
रिवा, बुधवारद्वय, शनिवार श्री  
मंगलवार नीत्र, गुरुवारिद्वयद्वय  
ज्योतिष मन से उक्तारों में उक्त  
मिद्धि हो के मिद्धिबोधकरने के  
प्रा० सिधारना—(सं० मित्र=करने)

क्रि० घ० जाना, बिदा होना, र-  
वाने होना, चलाना, क्रि० स०  
दुखाना करना, मर्दाना, टीकाका  
करना, करनीय देना ।

प्रा० सिनकना—क्रि० स० नाव भा-  
दना, नाक मारकर करना ।

अं० मिनेट—युनीवर्सिटीके मध्यस्थों  
की मण्डली ।

सं० सिन्दूर—( स्यःदू=पूना, या  
टपाना ) पु० एक तरह का लाल  
पूरा जिससे स्त्रियां मांग भरती हैं ।

सं० सिन्धु—(स्यःदू=पूना, या टपाना)  
पु० समुद्र, समंदर, सागर, २ एक  
नदी जिसकी ईंटस और पट्टक भी  
करते हैं, ३ सिंधवा देश, ४ हाथी  
का घट, ५ एक राजपूतों का नाम ।

सं० मिन्धु } ( मिन्धु=हाथी का  
मिन्धु } घट, कर्षाद् घट  
काहा ) पु० हाथी, हस्ती ।

सं० मिन्धुगामिनी—( मिन्धु=  
हाथी, गामिनी=चलनेवाली, गम्  
=करना ) स्त्री० वह स्त्री जिसकी  
हाथी की बात हो, गम्भामिनी ।

सं० मित्र—( स्यः=मित्रता ) पु० मि-  
त्रावस्था, दोस्ती, बाँध, घम ।

सं० मित्रा—( स्यः=मित्रता ) स्त्री०  
एक बड़ी ही दमन के दास है, २  
दोस्ती, मित्र, मित्रता, मित्रता, मित्र-  
ता, मित्रता से हुई है ।

प्रा० मिमटना—क्रि० स० सिद्धना,  
इच्छा होना, बहना ।

प्रा० सिय } ( सं० सीता ) स्त्री०  
सिया } सीता, जानकी, श्री  
रामचन्द्र की पत्नी और राजा  
जनक की पुत्री ।

प्रा० सियपी—( सं० सीतापिप ) पु०  
सीतापति श्रीरामचन्द्र, युनाय ।

प्रा० सियार } ( सं० मृगाक्ष ) पु०  
सियाळ } गीदक ।

प्रा० सिर—( सं० शिर ) पु० माथा,  
मस्तक ।

प्रा० सिरउताना—शेन० अरनेवा-  
लिकमे फिरवाना, बगलबदलाना ।

प्रा० सिरकना—शेन० घुंघराना ।

प्रा० सिरकादना—शेन० नाकी  
होना, समिट्टहोना, बगल होना ।

प्रा० सिरकेजोग—शेन० अरनेलोरमे ।

प्रा० सिरकेभल—शेन० धौध मि-  
त्र, झुंझना ।

प्रा० सिरगुज्जताना—शेन० बर  
सादाबारा, मर्यादा, निरा  
बाहना ।

प्रा० सिरवदा—शेन० यमदारी, घ-  
मिदारी ।

प्रा० सिरवदाना—शेन० बर्दाह-  
रत, बर्दाह, बर्दाह, बर्दाह, बर्दाह,  
बर्दाह, बर्दाह से हुई है ।



प्रा० सिलपट-गु० चौपट, उमाड़,  
२ चौस, पट्टाधार ।

प्रा० सिलवट्टा-(सं० शिजापट्ट, शि-  
जा=सिल, पट्ट=पीसने का पत्थर)  
पु० सिल लोहा ।

प्रा० सिली } (सं० शिजाः) स्त्री०  
सिल्ली } लोहे के इथियाओं पर  
घोर चढ़ानेका पत्थर, पथरी, सान ।

प्रा० सिवाना (सं० सीमा) पु०  
इद, सीद, सीमा, अन्त, छोर ।

प्रा० सिवार-(सं० शैवाल, शी=सो-  
ना) पु० हरी हरी चार्ई सी चीज  
जो तलाशों के पेटोंमें लगती है ।

अ० सिविल-स्त्री० दीवानी का  
मोहकपा ।

अ० सिविलसर्विस-स्त्री० दीवानी  
की नौकरी ।

प्रा० सिसकना-क्रि० अ० सिसकी  
भरना, दुनहना, बिमुरना ।

प्रा० सिहरना-क्रि० अ० कांपना,  
परधराना ।

प्रा० सिहरा-(का० सेह=तीन, औ-  
र स० हार माला) पु० मौर, मुकुट,  
माला, जो व्याह में दुलहा और  
दुलहिनके शिरपर पहनाई जाती है ।

प्रा० सिहराना-क्रि० अ० परध-  
राना, सनसना, बालों का खड़ा  
होना, २ क्रि० स० सहलाना,

जुलजुलाना, धीरे-२ मड़ना, २  
पड़ना, उचाटना ।

प्रा० सिहाना-क्रि० अ० देख के  
संतुष्ट होना, २ किसी अच्छी चीज  
को देखकर उसके मिलने के लिये  
मन ललचाना, दाद देना ।

प्रा० सीक-स्त्री० एक तरह की यास  
जिसकी झाड़ू बनती है ।

प्रा० सींग-(सं० शृङ्ग) पु० एक  
कड़ी चीज जो चौपायों के शिर में  
लगती है, शृंग, विपाण ।

प्रा० सींगड़ा-(शृंग) पु० बारूद  
रखने का बरतन, बारूतदान ।

प्रा० सींगा-(शृंग) पु० नरसिंगा ।

प्रा० सींचना-(सं० सेंचन, सिच्=  
सींचना) क्रि० सं० पानी देना,  
पनियाना, पाटना ।

प्रा० सींव-(सं० सीपा) स्त्री० इद,  
सिवाना ।

सं० सीकर-(सीक्=सींचना) पु०  
जलकण, पानी के कण ।

प्रा० सीख } (सं० शिखा) स्त्री०  
सिखावन } उपदेश, समझ की  
बात नसीहत ।

प्रा० सीखना-(सं० शिखण, शिष्-  
=सीखना) क्रि० स० पढ़ना, बिया  
का अभ्यास करना, पाना ।

प्रा० सीजना-(सं० सिद्ध=पसीना  
होना) क्रि० अ० पसीनाना, पसीना-



दिन, ३ कभी कभी, दूरता और  
बाद और भेदों आदि अर्थों में  
भी बोला जाता है।

प्रा० सुकवाना } ( सं० सङ्कोच )  
सुकवाना } हि० अलसता-

ना, सुमाना, २ दरता, हि० सं०  
सिमी को लमाना, चराना।

प्रा० सुकड़ना- ( सं० सङ्कोचन )

हि० अलसता, इच्छा होना।

सं० सुकण्ड- ( मु० अङ्गुली, कण्ड-ग-

ला ) पु० चानों का सामा सुई व।

सं० सुकर्मा- ( श्री० कर्मा-वर्ग )

सं० सुकर्म- ( कृ० कर्मा ) पु० क-

चन कर्म, मननयोग, विद्वत्कर्मा।

सं० सुकाल- ( मु० अङ्गुली, काल-म-

स्य ) पु० अङ्गुली मय, अङ्गुली

सं० सुकुमार- ( मु० सुन्दर, कुमा-र-

काल ) पु० बालक, बालक,

सं० सुहृन्- ( मु० यत्ना ह-राना )

बाल-वर्ग, पुत्र, अङ्गुली, अङ्गुली

सं० सुकेत- ( मु० अङ्गुली, केतु-भेदा )

पु० दत्त काल या दत्त का दत्त

सं० सुकेतुना- ( सुकेतु-मुग )

श्री० दत्त ।

सं० मुत्त- ( मुत्त=मुनी होना, अथवा

मु० अङ्गुली वर से, सन्=प्रोदना

( दृश्य को ) पु० चैन, आनन्द,

प्रा० सुत्तचैन- बोलें धाराप,

चैनचैन।

प्रा० सुत्तपाना- बोलें आगम-र-

रना, चैन करना।

सं० सुत्तद- ( मुग=चैन, द=देने

वाता, दा=देना ) क० पु० मुगदापी,

प्रा० सुत्तदाई } ( मुग=चैन, दा=

सं० सुत्तदायक } देना ) पु०

मुग देनेवाला।

सं० सुत्तधाम- ( मुग=चैन, धाम=

या ) पु० मुग के घर, सुत्तदाई।

सं० सुत्तराल- ( मुग=चैन + काल=

काल ) पु० बालक, बालक।

सं० सुत्तमा- ( मुग=चैन, मा=मा-

स्य ) श्री० चामुण्डा, बालक।

प्रा० सुत्तापी ( सं० मुग ) पु०

सं० सुत्तविह- ( मुग + विह=विह-

रना ) पु० मुगमय, मुगमय।

सं० सुत्ती- ( मुग ) पु० मुगमये

बाल, मुगमये बालक, सुत्तित,

सं० सुत्ति- ( मु० अङ्गुली, कदि=रा

ल) श्री० अरुणीगति, मुक्ति, मुद्रकारा।  
 सं० सुगन्ध-( सु=मच्छी, गन्ध=वास) श्री० अरुणीवास, मङ्क, गुग्गु।  
 सं० सुगन्धिन-( सुगन्ध ) क० जि-  
 ग में अरुणी वास हो, सुगन्ध  
 वाला, गुग्गुदार।  
 सं० सुगम-( सु=अरुणीतरङ्गसे, गम्  
 =जाना) गु० सहज, आसान, सरल।  
 सं० सुगमता-मा० श्री० सानता,  
 आसानी।  
 सं० सुग्रीव-( सु=सुन्दर, ग्रीवा=  
 गर्दन ) पु० वानरों का राजा  
 और रूपा का बेटा जो द्विद्विन्द्या  
 पुरी का राजा और भीरामचन्द्रका  
 पिता और महाबल था, २ विष्णु  
 के रूप का घोड़ा।  
 १० सुवट्-( सुवट्, सु=अच्छा, वट्  
 =बनादृष्टा, वट्=जानता ) गु०  
 सुन्दर, सुशील, सुवरा, मनोरम,  
 बहुत अच्छा।  
 सं० सुवटिन-सं० सुन्दर रविन।  
 प्रा० सुवटना-( सं० सुवटिन) क०  
 अ० अर्पणा करना।  
 सं० सुवर्गिन-( वा=जाना, जाना )  
 क० पु० श्रेष्ठ-चार, गुणवत्त, नै-  
 वेद्यजनन।  
 सं० सुवित्-( सु=अच्छा, वित्=पन)  
 गु० सुवत्, आसान, २ विद्वान्, वे-  
 दिक, विद्वान्, शैविक, साधन।

प्रा० सुचितार्द्धिमा० श्री० निरिवन्ना  
 सावधानी, वेदिकी।  
 सं० सुचेत-( सु=अच्छी, चेत=सुषु  
 चीकृत, मावधान, शोशिवार, सचेत  
 सं० सुजन-( सु=अच्छा, जन=  
 सुषु ) गु० साधु, सज्जन, म-  
 पानस, भलाआदमी।  
 सं० सुजनता-मा० श्री० सौम्य  
 सौजन्यता, सीधायन, मनमनस  
 भलमन्सी।  
 प्रा० सुजान-( सं० सज्जानी, सु  
 अच्छा, ज्ञानी=जाननेवाला ) गु  
 ज्ञानी, चतुर, प्रवीण, बहुत अच्छा  
 जाननेवाला।  
 प्रा० सुभाना-क्रि० स० दिवान  
 बनाना, समभाना।  
 प्रा० सुति-( सं० सुष्ठु सु=अच्छी  
 से, स्था=ठहरना ) गु० सुन्दर, उ-  
 २ बहुत, अत्यन्त।  
 प्रा० सुडोल } ( सु=अच्छा, रोजनवा  
 सुदृढ } द्रव=रुग् ) गु० सुवत्,  
 सुवरा, सुन्दर, मनोरम।  
 सं० सुत-( सु=वेदा होना, प्रपन्न)  
 पु० बेटा, पुत्र, लड़का।  
 सं० सुता-( सुत ) श्री० बेटा, पुत्री,  
 कन्या, लड़की।  
 प्रा० सुतार-( सं० सुत ) पु० बर्हि  
 लानी ( सं० सुतारा, सु=अच्छा)

तारा=नक्षत्र) अच्छा समय, अव-  
काश, पात, दांव।

प्रा० सुधरा—गु०, अच्छा, सुन्दर,  
सुखी, सुहावना। [फकीर]

प्रा० सुधरासाही—पु० नानकसाही

सं० सुदर्शन—(सु=अच्छा, दर्शन=  
देखना जो अच्छा देखा जाता है)  
पु० विष्णु का चक्र, गु० जो देखने  
में अच्छा हो सुन्दर, सुहावना।

सं० सुदामा—(सु=अच्छा, दा=देना)

पु० एक माली का नाम जिसने मथुरा  
में जाते समय श्रीकृष्ण को माला  
पहनाई थी, २ श्रीकृष्ण के साथी एक  
ग्याल का नाम, ३ श्रीकृष्ण के एक  
शरीर मित्र का नाम जो जाति का  
ब्राह्मण था जिसको फिर श्रीकृष्ण ने  
वहुनही धनवान् बना दिया, ४ बदिल  
५ एक पहाड़ का नाम, ६ समुद्र।

सं० सुदि—(सु=अच्छी तरहसे, दिव्=  
चपकना) अण्व० उजाला पाला,  
सुस्पष्ट।

सं० सुदिन—(सु+दिन) पु० अच्छा  
दिन, अच्छा समय।

प्रा० सुध (सं० सुधी, सु=अच्छी,  
सुधि=बुद्धि) स्त्री० चेत,  
याद, स्मरण, स्मरणदारी।

प्रा० सुधबुध—(सं० सुधबुद्धि) स्त्री०  
समझ, बुझ, चेत, बुद्धिमान।

प्रा० सुधलेना—बोल० खबर लेना।

प्रा० सुधरना—(सं० सुधारण, सु=  
अच्छी तरह से, धृ=रखना) क्रि०  
अ० सही होना, अच्छा होना, २  
बनना, संकल होना, ३ संभलना।

सं० सुधा—(सु=अच्छी भांतिसे, धे=  
पीना, या धा=रखना) पु० अमृत, अपी,  
वीर्य, आर्ययात, २ रस, जल।

सं० सुधांशु—(सुधा=अमृत, अंशु=  
किरण, जिसकी किरण अमृत के  
ऐसी आनन्द देनेवाली हैं) पु०  
चांद, चंद्रमा, २ कपूर।

सं० सुधाकर—(सुधा=अमृत, कर=  
किरण) पु० चांद, चंद्रमा, २ कपूर।

प्रा० सुधारना—(सुधारना) क्रि० सं०  
संवारना, बनाना, अच्छा करना, सही  
करना, सजाना, ठीक ठाक करना।

सं० सुधी—(सु=अच्छी, धी=बुद्धि  
जिसकी हो) पु० पण्डित, बुद्धि-  
मान, विद्वान्, सुबुद्धि, विज्ञ।

प्रा० सुन—(सं० श्रव्य) गु० बेहोश, मू-  
र्छित, शीतांगी, रगली, मूझा, रीता।

प्रा० सुनसान—बोल० उजाड़, २  
छुपचाप, ३ पकाना, निराला।

प्रा० सुनना—(सं० श्रवण) क्रि०  
सं० कान देना, श्रवण करना।

सं० सुनयना—स्त्री० सुन्दर नेत्र वा-



ली, २ जनकपत्नी ।

प्रा० सुनहरा } ( सोना ) क० सो-  
सुनहरी } नहला, सोने का  
या सोना सा ।

प्रा० सुनार—( सं० स्वर्णकार, स्वर्ण  
= सोना, कार = करनेवाला, कृ =  
करना । अर्थात् जो सोने की चीज  
बनावे ) क० पु० सोने चांदी की  
चीज बनानेवाला ।

प्रा० सुनारिन } स्त्री० सुनार की  
सुनारनी } स्त्री० सुनार की  
लुगाई ।

प्रा० सुनारी—स्त्री० सुनार का काम ।

प्रा० सुनावनी—( सुनाना ) स्त्री०  
मरने के समाचार, जो कोई आद-  
मी परदेश में मरजाय उसके मरने  
की खबर ।

सं० सुनासीर—( सु = अच्छा, नासीर  
= सेना का मुँह । अर्थात् जिसकी  
सेना अच्छी सजी हुई हो ) पु०  
इन्द्र, देवताओं का राजा ।

सं० सुन्दर—( सु = अच्छी, तर = से,  
ह = आदर करना ) गु० मनोहर, सुख,  
बहुत अच्छा, सुदौल, खूबसूरत ।

सं० सुन्दरता—( सुन्दर ) भा० स्त्री०  
मनोहरता, शोभा, छवि ।

सं० सुन्दरी—( सुन्दर ) स्त्री० रूपवती,  
खूबसूरत स्त्री । [ चिन्द्री ।

प्रा० सुन्ना—( सं० शून्य ) स्त्री० सिकर,

सं० सुपथ—( सु = अच्छा, पथ = रास्ता )

पु० अच्छी रास्ता, सुमार्ग, अच्छी  
राह, २ अच्छा चलन ।

सं० सुपर्ण—( सु = अच्छा, पर्ण = पत्ता,  
या पर्ण ) पु० गरुड़, २ गु० अच्छे  
पत्तोंवाला ।

सं० सुपात्र—( सु + पात्र ) गु० योग्य,  
मलामानस, उच्चमजन, २ पु० अच्छा  
घरतन, शरीफ ।

प्रा० सुपारी—स्त्री० एक कड़ा फल  
जिसको पान के साथ खाते हैं,  
पूगीफल ।

प्रा० सुपास—पु० आराम, सुख, सुभी-

सं० सुपुत्र—( सु = अच्छा, पुत्र = बेटा )  
पु० सपूत, अच्छा लड़का ।

सं० सुप्त—( स्वप् = सोना ) क० पु०  
निद्रित, सोया हुआ ।

सं० सुप्ति—भा० स्त्री० नींद, निद्रा ।

सं० सुफल—( सु + फल ) गु० सिद्ध,  
फलदायक, सफल, लाभकारी, २  
पु० अच्छा फलवाला पेड़ ।

सं० सुबुद्धि—( सु + बुद्धि ) गु० बुद्धि-  
मान, अच्छी समझवाला, चतुर,  
प्रवीण ।

सं० सुभग—( सु = अच्छा, भग = देवर्षि )  
गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा, सौभाग्य-  
वान्, देववर्यवान्, प्रतापी, भागवत् ।

सं० सुभगा—( सुभग ) स्त्री० सौभाग्य-

स्वयनी स्त्री, सुन्दर स्त्री, वह स्त्री जिसको चसका पति बहुत चाहे।

सं० सुभगता-(सुभग)मां स्त्री० उच्च-मिता, अच्छाई, भलाई।

सं० सुभट्ट-(सु=अच्छा, भट्ट=लड़ा-का) पुं० वीर, बहादुर।

सं० सुभद्रा-(सु=अच्छा, भद्र=कल्याणरूप) स्त्री० श्रीकृष्ण की पत्नी, जिसको संन्यासी का रूप पर

अर्जुन हरलगाया था, २ श्रेष्ठ नारी।

सं० सुभाव-(सु+भाव)पुं० अच्छा सुभाव, सुशीलता।

प्रा० सुभीता-(सं० शुभ+रित, सु=अच्छा, रित=जैसा चाहिये) पुं० अवकाश, अवसर, फुर्सत।

सं० सुभुज-(सु+भुज)पुं० सुबाहु नाम दैत्य।

सं० सुमति-(सु=अच्छा, मति=बुद्धि) स्त्री० अच्छी बुद्धि, सुमति, भलमनसाई।

प्रा० सुमन-(सं० सुमनस्, सु=अच्छा, मनस्=मन) अर्थात् जिससे मन मसख होजाय) पुं० फूल, पुष्प, २ गुं० सुन्दर।

सं० सुमना-स्त्री० चमेली, भालती।

प्रा० सुमन्त-(सं० सुमन्त्र, सु=अच्छा, मन्त्र=सलाह देना) पुं० राजादशरथ का सारथि और मन्त्री।

सं० सुमन्त्रक-क० पुं० बत्तार, मुशीर, मन्त्री।

प्रा० सुमरण } (सं० स्मरण) पुं० याद, नाम लेना,

सुमिरण } स्मरण, २ (सं० स्मरणी) स्त्री०

माला, जपमाला।

प्रा० सुमरता } (सं० स्मरण) क्रि० सुमिरता } स० याद करना,

स्मरण करना, नाम लेना, २ (सं० स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला।

सं० सुमित्रा-(सु=अच्छी तरह से, मित्र=प्यार करना) स्त्री० दशरथ राजाकी पत्नी और लक्ष्मणकी मा।

सं० सुमुखी-(सु=सुन्दर, मुख=मुँह) स्त्री० सुन्दर मुँहवाली, सुन्दरी।

सं० सुमेरु-(सु+मेरु) पुं० मेरु पहाड़ जिसको हिंदू सोने का और रत्नों का बना हुआ कहते हैं और जहाँ देवता रहते हैं २ ज्योतिष में वचर ध्रुव, ३ जपमाला के सिरे पर का दाना या मनका। [ठसनी।

प्रा० सुम्बा-पुं० वन्द्यका, कागज,

सं० सुयश-(सु+यश) पुं० अच्छा यश, अच्छा नाम, नामवरी।

सं० सुयोग-(सु+योग) पुं० अच्छी संगत, सुसंगति।

सं० सुर-(सु=अच्छा, रा=देना, अर्थात् मन चारी चीजों को देने वाला, सुर=ऐश्वर्य रखना या चमकना अथवा सु=बहुत बल रखना) पुं० देवता, देव, २ सूर्य।

प्रा० सुसकारना—(क्रि० अ० फन-  
कनाना, सिसकारी मारना ।

सं० सुसङ्ग—(सु + सङ्ग) पु० अ-  
च्छी संगत, सुसंगति, नेक सुहृत् ।

प्रा० सुसताना—(सं० स्वस्थ, या  
सुस्थ) क्रि० अ० विश्रामलेना, उह-  
रना, सांसलेना, आरामकरना ।

प्रा० सुसर—(सं० श्वशुर) पु० पति  
: सुसरा } या पत्नी का चाप ।

प्रा० सुसरार—(श्वशुरालय, श्व-  
सुसराल } शुर=ससुर, आलय  
=घर) स्त्री० ससुरका घर या घराना ।

सं० सुस्थ—(सु=अच्छी तरहसे, स्था-  
=उहरना) पु० भत्ताचंगा, निरोगी,  
२ सुखी, प्रसन्न, हर्षित ।

सं० सुस्थिर—(सु + स्थिर) पु०  
अटल, अचल, निरवका, दृढ़, उहराऊ ।

सं० सुस्वाद—(सु + स्वाद) पु०  
निमग्न अथवा स्वाद हो, मजेदार,  
सुरसं, मधुर, मोठा ।

प्रा० सुहाग—(सं० सौभाग्य) पु०  
अच्छा भाग, २ पति का प्यार, ३  
पति के जीने रहने की दशा, ४ स्त्री  
का गहना अर्थात् काञ्चन टीकी आदि  
जो पति के जीने का चिह्न है (यह  
शब्द 'हाथा' का वल्लभ है) ।

प्रा० सुहागन—(सं० सौभागिनी,  
सुहागिन) सुमंगा, अच्छे भाग

वाली) स्त्री० वह लुगाई जिसका पति  
जीता हो, सयवा स्त्री, सपतिका ।

प्रा० सुहाना—(सं० शोभन) पु०  
सुहावना } सुंदर, मनभावन,  
मनोहर, २ क्रि० अ० अच्छा लगना,  
मनमाना, फटना, रुचना ।

सं० सुहृद्—(सु=अच्छा, हृद्=मन)  
प्रत्युपकारकी इच्छारहित जो उप-  
कारकर उसका नाम सुहृद्, पु०  
मित्र, दोस्त, हिन्, सत्ता ।

प्रा० सुअर—(सं० सूकर, सू=ऐसा शब्द  
कर=करनेवाला, क=करना) पु० एक  
जंगली जन्तु का नाम, ब्राह्म, गुर ।

प्रा० सूआ—  
सूवा } (सं० शुक्र) पु०  
सूगा } तोता, सुगा ।

प्रा० सूआ—  
सूवा } पु० पढ़ी हुई ।

प्रा० सूई—(सं० सूधी) सूय=तण-  
छाना, या सिय=सीना) स्त्री०  
करके सीने की चीज ।

प्रा० सुवना—(सं० सुवाण, सु, प्रा=  
सुवना) क्रि० स० वांसे लेना, बड़क  
लेना, सुगंध लेना ।

प्रा० सूट—स्त्री० चुन, मोन ।

प्रा० सूटभरना, यामारना—बोल०  
चुनचाप रहना । [बला आना ।  
प्रा० सूटमारैजाना—बोल० चुनचाप  
प्रा० सूड—(सं० गुण्ड, गुण=जाना)  
स्त्री० हाथी की नाक ।



सारथि, २ बड़ई, ३ भाट, ४ वर्ण-  
संकर, दोगला, जिसका पाप राजपूत  
और मा ब्राह्मणी हो, ५ पुराणों  
का जाननेवाला एक पंडित जिसका  
नाम लोपहर्षण था, जिसने नैमि-  
षारण्य में बहुत से ऋषियों को पु-  
राण और महाभारतकी कथा सुना-  
ई थी और इसको बलदेव जीने मार  
दाला था ।

सं० सूतक—( सू=पैदा होना ) पु०  
लड़के के पैदा होने से, या गर्भ के  
गिरने से, या मौत होजाने से जो  
अपवित्रता होती है उसे सूतक कहते हैं।

प्रा० सूतना—( सं० सुत ) कि० अ०  
सोना । [ दोरी, रस्सी ।

प्रा० सूतली—( सूत्र ) स्त्री० सन की

प्रा० सूती—( सं० सूत्रीय ) पु० सूत  
से बना हुआ ।

सं० सूत्र—( सूत्र=गूँथना, या सिब्=  
सीना ) पु० सूत, दोरा, धागा, तागा,  
२ रीति, कायदा, ३ ऐसा वाक्य  
जिसमें संक्षेप से बहुत से अर्थ का  
ज्ञान हो, जैसे व्याकरण आदिके सूत्र ।

सं० सूत्रधार—( धृ=चरना ) पु० म-  
धान नट, नाटकके संज्ञका मुखिया ।

प्रा० सूयन—पु० पापनामा, गानामा,  
नाचिया, सुयनी ।

सं० सूदन—( सूद=मारना ) पु० मा-  
रना, गु० मारनेवाला ।

प्रा० सूधा—( सं० शुद्ध ) पु०  
मोला, निरुपद्र, शुद्ध ।

सं० सूदशाला—स्त्री  
सोई घर, बाबरचीखाना, कुँ

प्रा० सूना—( सं० शुन्य ) पु०  
झुझा, रीता, २ उनाद ।

सं० सूनु—( सू=पैदा होना ) पु०  
पुत्र, लड़का ।

प्रा० सूय—( सं० सूर्य, सूर्य=नाम )  
पु० धान, अनाज पद्धोरनेकी चीज ।

सं० सूपकार—( सूय=रसोई, का  
सूपकारी ) करनेवाला )

पाचक, रसोई घरदार ।

प्रा० सूम—( अ० शुभ ) पु० कर्म  
पक्की चूस, कृपण ।

सं० सूर—( सू=चलाना ) पु० सूर  
२ सूरदास ।

प्रा० सूर—( सं० शूर ) पु० वीर, वीरगुण

प्रा० सूरज—( सं० सूर्य ) पु० रश्मि  
मानु. दिनकर, आफताब, सुन्द ।

प्रा० सूरजगहन—( सं० सूर्यगह )  
सूरजग्रहण ) ० सूर्य का गहन ।

प्रा० सूरजमुखी—( सं० सूर्यमुखी )  
पु० एक फूल का नाम ।

प्रा० सूरन—( सं० मूरण ) पु० ल  
मोकंद, मूरन ।

सं० सूरदास—पु० एक हिंदी कवि  
और गद्दये का नाम जो अंधा  
इस जिये अब हिंदुओं में अंधे हैं



होगी नमक, पहाड़ी नमक ।

प्रा० संधिया-(सिन्ध) पु० म्बालियर  
के महाराजा की जात जो शायद  
सिन्ध नदी के पास के देश से फैले  
हों, २ जहर, विष, ३ ( सेंध )  
सेंध लगानेवाला, चोर, घर फोरने  
वाला, सेंधमार, सेंधचोर ।

सं० सेचन-( सिच्=सींचना ) पु०  
सींचना, छिड़काव ।

सं० सेचक-क० पु० सींचनेवाला,  
भिगोनेवाला ।

सं० सेचित-म्भ० आर्द्रांकृत, तरकिया  
हुआ, सींचागया, भिगोयागया ।

प्रा० सेज-( सं० शय्या ) स्त्री० प-  
लंग, बिछौना ।

प्रा० सेठ-( सं० श्रेष्ठ ) पु० साहूकार  
महाजन, दूधहोवाल, धनवान् ।

प्रा० सेत-( सं० रवेन ) पु० घौला,  
सफेद, उजला ।

सं० सेतु-( सि=बांधना ) पु० स्त्री०  
पुल, बांध, बंध ।

सं० सेतुबन्ध-( सेतु + बन्ध ) पु०  
बहु जगह जहां श्रीरामचन्द्रने लंका  
जानेके लिये नल और नील वानर  
से पुल बैवचाया था ।

सं० सेतुबन्धरामेश्वर-( सेतुबन्ध  
+ रामेश्वर ) पु० महादेव जिन  
को श्रीरामचन्द्र ने लंका जाने के  
समय सेतुबन्धपर स्थापन किये थे ।

सं० सेना-( स=साथ, इन=मालिक  
या सि=बांधना ) स्त्री० कटक, दल,  
फौज, लश्कर, सिपाह ।

सं० सेनानी-(सेना + नी=लेवल-  
ना) क० पु० सेनापति, सिपाह  
सालार, वक्ता ।

सं० सेनापति-(सेना + पति) पु०  
फौज का सरदार ।

प्रा० सेमल-(मं० शाल्मली) पु० एक  
पेड़का नाम । [तैल ।

प्रा० सेर—पु० सोलह छटांकी  
प्रा० सेल } ( सं० शूल ) पु० बर्छी,  
सेला } बर्छा, बल्लप, भाला ।

प्रा० सेला-पु० एक भरह की चदर,  
एक तरह का कपड़ा, २ एक  
तरह का बाघ ।

प्रा० सेली-स्त्री० बंदी या जाली  
जिसको फकीर गलेमें पहने रहते हैं ।

प्रा० सेव-स्त्री० एक तरह का फल ।

सं० सेवक-( सेव=सेवाकरना ) क० पु०  
सेवा करनेवाला, पुना करनेवाला,  
पुनारी, नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० सेवकाई-(सेवक) भा० स्त्री०  
नौकरी, चाकरी, टहल, सेवा ।

प्रा० सेवड़ा-पु० एक तरह के हिन्दू  
फकीर, २ जैनमत का भित्तारी ।

प्रा० सेवती-( सं० सेपन्ती, सिम्=  
नाश होना या तोड़माना ) स्त्री०  
एक फूल का नाम ।

प्रा० सेवना—( सं० सेवन, सेव=सेवा करना ) क्रि० सं० सेवा करना, २ पालना, अंदा सेना, अंदा को पकाना पोसना ।

सं० सेवा—( सेव=सेवा करना ) स्त्री० नौकरी, चाकरी, टहल, सेवकाई, २ पूजा, सत्कार ।

सं० सेवित—( सेव=सेवा करना ) कर्म० उपासित, सेवा किया हुआ, पूजा किया हुआ ।

सं० सेवी—क० पु० पुनारी, नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० सेवे—( सं० समिता, सम्=साथ, इण्=नाना ) स्त्री० बहु व० पैदा की चनी हुई खाने की चीज, क्रि० सेवा करें ।

सं० सेव्य—( सेव=सेवा करना ) कर्म० सेवा करने योग्य, पूजा करने योग्य, उपास्य, सेवने योग्य, पखदूम ।

प्रा० संकड़ा—( सं० शतक ) गु० शतकड़ा, १०० ।

प्रा० संतालीस—( सं० सप्तचत्वारिंशत् ) गु० चालीस और सात ।

प्रा० संतीस—( सं० सप्तविंशत् ) गु० तीस और सात ।

प्रा० सैन } ( सं० संप्रा ) स्त्री० सं-  
सेन } केव, इशारा, चिह्न, आंस का या अंगुली का इशारा, २ ( सं० सैन्य ) फौज, कटक, सेना, १

( सं० शयन ) पु० सोना, नींदलेना ।  
प्रा० सैनासैनी—बोल० आपस में आंससे या अंगुलीसे इशारा करना ।

सं० सैन्धव—( सिंधु ) गु० सिंधनदी के पास के देशों में पैदा होने वाला, २ पु० संधानिमक, लाहोरी निमक, ३ घोड़ा ।

सं० सैन्य—( सेना ) स्त्री० फौज, कटक, सेना, दल ।

सं० सैन्यनिकेत—पु० पदातिस्थान, सैन्यवास, छावनी ।

सं० सैन्यप्रदर्शनीय—स्त्री० फौजी नुमायश, सेना की सजावट ।

प्रा० सोअर—( सं० सूतिका गृह, सूतिका=जघा ( सू=पैदा होना ) और ( गृह=घर ) पु० कोठरी जिस में जघा अर्थात् बंद स्त्री जिस के जघा पैदा हुआ है, रहे ।

प्रा० सोआ—स्त्री० एकतरहका साग ।

प्रा० सोई—सर्वना० बही, थाप ।

प्रा० सों, से, साथ ।

प्रा० सोंठ—पु० लाठी, लट्ट ।

प्रा० सोंठ—( सं० शुण्डित, शुण्ड=सूचना ) स्त्री० सूना अदरक ।

सं० सोढ—( सह=सहना ) क० पु० छान्न, सहनशील ।

सं० सोढा—( सह=सहना ) क० पु० शान्त, सहनशील, मुतरम्मिल ।

सं० सोंधा—( सं० सुगन्ध ) पु० सु-



गंधित मसाला जिससे बाल धोये जाते हैं, २ सुगन्ध, वास, घृ, ३ ऐसी घृ जिसी कि पिष्टी के कोरे बरतनों को भिगेने से या चने आदि के सेंकने से निकलती है ।

प्रा० सौपना } (सं० समर्पण) क्रि०  
सौपना } सं० दे देना, हवाने करना, सुर्द्ध करना ।

प्रा० सौह-(सं० शय) स्त्री० सौगंद, शय, किरिया, कसम ।

प्रा० सौही-(सं० सम्मुख, सम्मुख) क्रि० वि० साम्हने, आगे, सम्मुख ।

प्रा० सोखना-(सं० शोषण, शुष्क=सूखना) क्रि० सं० सूखना, पीलेना, सौखना ।

सोग-(सं० शोक) पु० चिन्ता, क्रि०, शोक, उदामी, दुःख ।

प्रा० सोच-(गोचना) पु० ध्यान, चाल, विचार, २ चिन्ता, क्रि० ।

प्रा० सोचना-(सं० गोचना, मुख=सोचना) क्रि० चाल करना, समझना, विचारना, ध्यानकरना ।

प्रा० सोभा-पु० सीधा, सड़ा ।

प्रा० सोत } (सं० मोत) पु० पारा,  
सोता } चरमा, फनो ।

प्रा० सोथ-(शोयना) स्त्री० बुद्ध करना, शोयन, २ सोथ, पना, भेट, मार ।

प्रा० सोयना-(सं० शोयन

सं० सही करना, गज्जती निहालन, शुद्ध करना, जांवना, २ श्रुण चुकाना, कर्ज चुकाना, ३ धानु को माफ करना ।

प्रा० सोन-(सं० शोण, शोण=जाना) पु० स्त्री० एकनदीका नाम, २ रुबिन्, रक्त, उदामी, ब्रह्मचारी ।

प्रा० सोनहरा } मोना ) पु०  
सोनहला } सुनहरा, सुनहरी,  
सोने का या मोने सा ।

प्रा० सोना-(सं० स्वर्ण) पु० बहुव्रीहि मोल की धातु, कंचन, कनक ।

प्रा० मोना } (सं० शयन) क्रि० म०  
मोवना } नौद लेना, पौढ़ना, सूचना ।

सं० सोपान-(स=साथ, उप=पास, अनु=जाना, पर उप उपसर्ग के साथ आने मे इसका अर्थ चढ़ना होता है) स्त्री० सीढ़ी, नसेनी ।

प्रा० सोभना-(सं० शोभन) क्रि० अ० सोहना, अच्छा दिरसाई देना ।

सं० सोम-(सू=वैदाहोना, या फैकना किरण को) पु० चांद, चन्द्रमा, २ अमृत, ३ देवताओं का सत्तानची कुबेर, ४ इवा, ५ यमराज, ६ कशूर, ७ सोमपत्तना नाम जड़ी और उसका रस, ८ (.. )

मरादेव, सुग्रीव,

सं० सोमज- ( सोम + जन् = पैदा होना ) पु० बुधग्रह, अमृत, दुग्ध ।

सं० सोमपा- ( सोम + पा = पीना ) क० पु० यज्ञवर्जित पीनेवाला, यज्ञि, यज्ञमन ।

सं० सोमवार- ( सोम = चांद, वार = दिन ) पु० चांद का दिन, चंद्रवार ।

सं० सोमवलक- पु० वरछा, केला, शीशे के बरतार, पके हुए सौं, कैफरा ।

प्रा० सोरठ- स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० सोरठा- पु० हिंदी बोली में एक छंद जिसके पहले पद में ११ और दूसरे में १३ फिर तीसरे में ११ और चौथे में १३ मात्रा होती हैं और यह छंद दोहरा उलटा है ।

प्रा० सोरह } ( सं० पौदरा ) गु० दश मोलह } और छः ।

अं० सोशलरिक्कार्मकमेठी- सपा-जिक संशोषन सभा, जलसारिका : नाम ।

प्रा० सोहना- ( सं० शोभन, शुभ = चमकना ) कि० अ० शोभना, अच्छा दिखाई देना, पचना, भला दीखना ।

प्रा० सौ- ( सं० शन ) गु० दशहराई ।

प्रा० सौंसिरकाहोना- बोल० बहुत पलतान, या मसरा होना, र-बहुत सहना । [ आन ।

प्रा० सौगन्द- पु० शपथ, किरपा,

सं० सौगन्ध- मुग्ध, भा० पु० सुगन्ध, २ कपूर ।

प्रा० सौंधाई- ( सं० स्वयंता, सु = अच्छा, अर्प = मोल ) स्त्री० सस्ती, सस्पाई ।

प्रा० सौफ- ( सं० शनपुष्पा ) स्त्री० एक ठंडी पाचक दवाई । [ नीची ।

सं० सौचि- भा० पु०; दमो भीषण,

सं० सौजन्य } ( सुमन ) भा० पु० सौजन्यता } सुजनता, भलमनसात, माधुपन, सुशीलता, शाफत ।

प्रा० सौत } ( सं० सरस्ती स = एक सौतन } ही, पनि मर्चा है जि-सवति } सका ) स्त्री० एकरी पनि की दमरी स्त्री, सौनी ।

प्रा० सौतेला- ( सौत ) गु० सौतेले जनपा हुआ ।

सं० सौदामनी } ( मुदाप्न = रादल सौदामिनी } अर्थात् वादलों में रहनेवाली, सु = बहुत, दा = देना ) स्त्री० विजली, दापिनी ।

सं० सौध- मुधा = पोतने की एक बाल चीज, वससे रंगा हुआ, सु = अच्छी तरह से, धा = रसना ) पु० महल, मासाद, राजमंदिर, देवमंदिर ।

सं० सौनिक- पु० व्याध, बधिक बरेलिया, रिसक, कसाई जैसे "सौनिकेनपयापरा" ।

सं० सौन्दर्य- ( सुन्दर ) भा० पु०

सुन्दरता, खूबसूरती, चमकदमक, रंगरूप ।

सं० सौभरि—पु० एक ऋषि का नाम जिसने मान्वाता राजा की पचास लड़कियों से व्याह किया था जिसकी कथा विष्णुपुराण में है ये ऋषि यमुना नदी तीर पर बैठे तप कर रहे थे, वहां गरुड़ ने जाय एक मछली मार कर खाई, तब ऋषि ने गरुड़ को शापदिया कि जो फिर इस जगह आवेगा जीता न रहेगा ।

सं० सौभद्र—भा० पु० सुमद्रा का पुत्र, अभिमन्यु ।

सं० सौभाग्य—( सुभग ) भा० पु० भागवान्, अच्छा भाग, २ उद्योग में चौथा योग ।

सं० सौमित्र—( सुमित्र ) भा० पु० सुमित्रा का बेटा, लक्ष्मण, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई ।

सं० सौम्य—पु० बुध, चन्द्र, पु० सुशील, सुन्दर, मनोहर, प्रियदर्शन, कोपराहित, सुवह्मिल, बुद्धिमान ।

सं० सौम्यता—भा० स्त्री० सुशीलता, सौभाग्य, संजीदगी ।

सं० सौर—( सूर=सूर्य ) पु० सूर्य संबंधी, सूरज का, ( महीना दिन आदि ) २ पु० शनीचर ।

सं० सौरभेय—भा० पु० सुरभीपुत्र, सौरभेयी—वृषभ, बैल व. स्त्री० गौ, वशिष्ठ की धेनु, नन्दनी ।

प्रा० सौरज—( सं० शौर्य ) भा० पु० शूरमापन, सूरवीरता, बहादुरी ।

सं० सौरभ—( सुरभि ) पु० सुगन्ध, सुशब्द, मदन, रंजक, ३ आमकापेड़ा ।

सं० सौरि—भा० पु० शनैश्चर, कृष्ण, वसुदेव ।

सं० सौवर्चल—पु० बालानमक ।

सं० सौहार्द—भा० पु० मित्रता, दोस्ती ।

सं० स्कन्ध—( स्कन्द=ऊपर जाना ) पु० कंधा, बांधा, २ पेड़ की घड़, मोटे गुदे, ३ पुस्तक का एक भाग जिसमें कई अध्याय हों, ४ बाणासुर का बेटा ५ व्यूह ६ युद्ध, ममूह ।

सं० स्वलित—( स्वल्=गिरना ) क० पु० चुन, गिरा, गिर पड़ा ।

सं० स्तन—( स्तन्=शब्द करना ) पु० चूँची, छाती, पयोधर ।

सं० स्तनयितु—पु० गर्भना विधुत्, विजनी, मृत्यु, रोग ।

सं० स्तब्ध—( स्तम्भ=रोकना ) पु० रुका हुआ, ठहरा हुआ, मूस, मुस्त, नम्रता रहित ।

सं० स्तब्धत्व—पु० अदब, दबाव ।

सं० स्तम्भ—( स्तम्भ=ठहरना, रोकना ) पु० मंभा, धंभा, धंभ, धूनी, दह्राव, अटकाव ।

सं० स्तम्भन-भा० पु० शोकना,  
जड़ करना ।

सं० स्तव- (स्तु=प्रशंसा) पु० स्तुति;  
बढ़ाई, प्रशंसा, तारीफ, सराह ।

सं० स्तवक-पु० गुच्छा, गुच्छदस्ता ।

सं० स्तवन-भा० पु० स्तुति, प्रशंसा ।

सं० स्तिमित-गु० अचल, स्थिर ।

सं० स्तुति- (स्तु=सराहना) स्त्री०  
सराह, बढ़ाई, तारीफ, प्रशंसा-भजन ।

सं० स्तुत्य-र्म० प्रशंसित स्तवनीय  
तारीफ के लायक ।

सं० स्तेन- (स्तेन=चोरी करना) पु०  
चोर, चौर, दुहद । [ दुहदी ।

सं० स्तेय-पु० चौरकर्म, चोरी,

सं० स्तोता-क० पु० प्रशंसक, तारीफ  
करनेवाला ।

सं० स्तोत्र- (स्तु=सराहना) पु०  
सराह, बढ़ाई, स्तुति

सं० स्तोम- (पु० पुंज, समूह, २ यज्ञ,  
स्तुति, ३ मस्तक, ४ लोहदण्ड ।

सं० स्त्री- (स्त्यै=इच्छा होना) स्त्री०  
लुगाई, नारी, औरत ।

सं० स्त्रीधन-पु० दायज, महर ।

सं० स्थपति-वृहस्पति, यज्ञकर्ता, शिल्पी ।

सं० स्थल- (स्थल=ठहरना) पु०  
मूसी घरही, खुरही जगह ।

सं० स्थाणु-पु० शिव, २ पीपल, ३  
गु० मोटा, ४ हुंदावृक्ष, ५ परितटवृक्ष ।

सं० स्थान- (स्था=ठहरना) पु० जगह,  
घर, ठौर, टाँव, ठिकाना ।

सं० स्थानापन्न- (स्थान+आपन्न)  
क० पु० जगहपानेवाला, एवजी, का-  
यममुक्ताम ।

सं० स्थापन- (स्था=ठहरना) पु०  
बैठाना, रखना, धरना, ठहराना,  
जमाना ।

सं० स्थापित- (स्था=ठहरना) र्म०  
बैठ याहुआ, ठहरायाहुआ, जमाया  
हुआ, स्थापन कियाहुआ ।

सं० स्थायिन्-क० पु० ठहरनेवाला ।

सं० स्थाल-पु० थाला, थारा ।

सं० स्थाली-स्त्री० बटलोई, पाक  
पात्र, हांडी ।

सं० स्थावर- (स्था=ठहरना) गु०  
अचल, अटल, ठहराहुआ, जो  
चले नहीं, जैसे पेड़, पत्थरआदि ।

सं० स्थिति- (स्था=ठहरना) भा०  
स्त्री० ठहराव, ठिकाण, वास, रहना,  
पालन, धासन, पर्यादा, सीमा ।

सं० स्थिर- (स्था=ठहरना) गु० ठहरा  
हुआ, अचल, अटल, दृढ़, २  
शान्त, ठंडा, कोमल ।

सं० स्थिरपूंजी-स्त्री० स्थिरधन,  
जायदाद औरमन्कुजा ।

सं० स्थूल- (स्थूल=मोटा होना) गु०  
मोटा, फूजाहुआ, बड़ा ।

सं० स्नातक- (स्ना=स्नान) क० पु०  
घरस्थमाझण, ब्रवी, स्नानकारी ।

सं० स्नान- (स्ना=स्नाना) गु०  
स्नाना । [ स्नानेवाला ।

सं० स्नायी-क० पु० स्नानकर्ता,

सं० स्नायु-स्त्री० नस, रग ।

सं० स्निग्ध-गु० चिकण, चिकना,  
मेहरवान, दयालु ।

सं० स्नेह-(स्निह=प्यार करना, या  
चिकना होना) पु० प्यार, छोह,  
मोह, मेम, नेह, मिताई, २ तेल  
आदि चिकनी चीज, ३ चिकनाई ।

सं० स्पन्द-संकल्पविकल्प, आगापीछा  
पशोपेश ।

सं० स्पर्द्धा-(सर्द्ध=ढाड़करना) स्त्री०  
ढाड़नलन, हिस्सा, द्वेष, विरोध, बैर, ईर्ष्या ।

सं० स्पर्श-(स्पृश=छूना) पु० छूना,  
छुहावट, परसना, २ एकतरह की  
धीपारी जो छूने से लगती है ।

सं० स्पष्ट-सश=देखना, या प्रकट  
होना) गु० साफ, खुना खुजा,  
शुद्ध, सही, प्रकाशित, प्रकट ।

सं० स्पृष्ट-(स्पृश+त, स्पृश=छूना)  
र्म० छुमागया, कृतस्पर्श ।

सं० स्पृहा-(स्पृह=चारना) स्त्री०  
चार, इच्छा, वाञ्छा, अभिलाष ।

सं० स्पृही-क० इच्छान्वित, इच्छा-  
दिशमन्द ।

सं० स्फटिक-(स्फट=फटना, या  
खुजना) पु० बिजौर का पत्थर ।

सं० स्फुटन-(स्फुट=विस्फटना) भा०  
पु० गिलना, फटना ।

सं० स्फुटित-क० विकसित, प्रफुल्लित  
सं० स्फोटक-(स्फुट=फटनिकलना)  
फोड़ा, चैचक ।

सं० स्फूर्ति-(स्फुर=डिखना) स्त्री०  
दिनाय, घड़घड़ाहट, स्फुरन ।

सं० स्म-अव्य० पूर्वसमय, व्यतीत-  
काल, गुजारगया ।

सं० स्मर-(स्मृ=याद करना) पु०  
कामदेव, २ याद, स्मरण ।

सं० स्मरण-(स्मृ=यादकरना) पु०  
चितन, याद, सुन, चेत, स्मृति ।

सं० स्मरहर-(स्मर=कामदेव, हर=  
नाश करनेवाला, ह=नाशकरना)  
पु० शिव, महादेव ।

सं० स्मारक-(स्मृ+मक, स्मरण  
करना) क० पु० स्मृतिज्ञाता, स्मरण  
करानेवाला ।

अं० स्मालकाजकोर्डे-अलान्याया-  
लय, अदालतखकीफा ।

सं० स्मित-स्मि=थोड़ा हँसना) पु०  
ईपदास, थोड़ा हँसना, मुसकाना,  
मुसकिराना, गु० विकसित, विस्तिता ।

सं० स्मृति-(स्मृ=याद करना) स्त्री०  
याद, सुमिरन, स्मरण, २ धर्मशास्त्र, जैसे  
मनुस्मृति, और याज्ञवल्क्यस्मृतिआदि ।

सं० स्यन्दन-(स्यन्द=जाना) पु०  
रथ, २ सारथी, ३ जल, धवृत्त ।

सं० स्यात्-अव्य० विद्यमान, २ समी-  
चीन, ३ शायद ।

प्रा० स्यानपन-(स्याना) भा० पु० स्त्री०  
बुद्धिमानी, चतुराई, निपुणता,  
प्रवीणता [देखो ।

प्रा० स्याना-सिपाना शब्द को

प्रा० स्यार } ( सं० शृगाल ) पु०  
स्याल } गीदद ।

सं० स्रक्-( स्रज्=बनाना ) स्त्री०  
माता, पुण्यमाला ।

प्रा० स्रवना-( सं० स्रवणा, सु=व-  
रना ) क्रि० अ० सूना, बटना, गिरना ।

सं० स्रोतः-( सु=वहना ) पु० सोता,  
बहाव, धारा, नाला ।

सं० स्व-सर्वना० अपना, और, आ-  
पका, निज, निजका, २ पु० घन,  
३ जाति ।

सं० स्वकीय-पु० अपना, निजका ।  
सं० स्वकीया-( स्व=अपनी ) स्त्री०  
अपनी व्याही हुई स्त्री ।

सं० स्वच्छ-( सु=बहुत, अच्छ=साफ )  
पु० निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल, साफ ।

सं० स्वच्छता-( स्वच्छ ) भा० स्त्री०  
निर्मलता, सफाई, उज्ज्वलता ।

सं० स्वच्छन्द-( स्व=अपनी, छन्द=  
इच्छा या मनोरंजन ) पु० अपनी चाह  
के अनुसार चलनेवाला, आप  
पौर्जि, स्वाधीन, इच्छानुसार ।

सं० स्वच्छन्दता-स्त्री० स्वच्छन्दता,  
स्वेच्छ-चारिता, खुद मुत्तसारी ।

सं० स्वतन्त्र-( स्व=अपने नयन=वश )  
पु० स्वाधीनता, अपने वश ।

सं० स्वतन्त्रता-( स्वतन्त्र ) स्त्री०  
स्वाधीनता ।

सं० स्वतः-( स्व ) क्रि० वि० आपसे,  
स्वयंसे ।

आपसे आप, आपही, स्वभाव से ।  
सं० स्वत्वस्यापितकरना-कबजा  
करना, दखल करना । [ खली ।

सं० स्वत्वापहरण-भा० पु० वेद-  
से० स्वधर्म-( स्व + धर्म ) पु० अग्नि

धर्म, अपना काम, ( जैसे=वेदशास्त्र  
पढ़ना पढ़ाना ब्राह्मणों का धर्म, देश

का मन्त्र करना राजपूतों का धर्म,  
सेना चलाना करना वैश्यों का धर्म,

और नौकरी चाररी करना शूद्रों  
का धर्म )

सं० स्वधा-( स्वद्व=स्वाद लेना, या  
स्व=आप, धा=रखना या धे=पीना )

अव्य० पितरों को जब पिंड देते हैं  
तब यह शब्द बोल कर पिंड देते हैं,

२ स्त्री० दुर्गा, देवी, माया ।

सं० स्वप्न-( स्वप्=सोना ) पु० सपना,  
नींद में जो देखा जाय ।

सं० स्वभाव-( स्व + भाव ) पु० म-  
नस्सिद्धि, देव, चान, सुभाव, आदर, छ ।

सं० स्वयम्-( स्व, या सु=मच्छीतरह  
से अयु=ज्ञाना ) अव्य० आप, निज,  
अपना, आपसे ।

सं० स्वयंवर-( स्वयम्=आपसे, वृ=  
पसन्द करना ) पु० स्त्रीका आपसे  
पति को पसन्द करना ।

सं० स्वयम्भू } ( स्वयम्=आपसे,  
स्वयम्भू } सु=वैदाहोना ) पु०

ब्रह्मा, आपसे पैदा होनेवाला ।

सं० स्वयंसिद्ध—( स्वयम्=आपसे, सिद्ध=बनाहुआ ) गु० आपही सच, जो आपही से पक्का ठहराया जाय ।

सं० स्वर—( स्त्र=शब्द करना ) पु० शब्द, आवाज, २ वे अक्षर जो आपसे बोले जायें और जिनके मिलने से व्यञ्जन भी बोले जायें, ३ गानविद्या में तान मुर आदि ।

सं० स्वर—( स्त्र=शब्द करना ) पु० स्वर्ग, आकाश ।

सं० स्वरापगा—( स्वः=स्वर्ग, आपगा = दं ) स्त्री० आकाशगंगा ।

सं० स्वरित—गु० उदात्तानुदात्त युक्त अर्थात् स्वरोंकी ऊंचीनीची आवाज ।

सं० स्वरूप—( स्व+रूप ) पु० अपना रूप, २ छवि, शोभा, सुन्दरता ।

सं० स्वर्ग—( स्वर, गै=गाना या कहलाना, अर्थात् जो स्वर कहलाता है, या सु=अच्छी तरह से, श्रुत्=जाना अर्थात् जहाँ अच्छी तरह से जाते हैं या रहते हैं ) पु० इन्द्रलोक देवताओंके रहनेकी जगह, आकाश ।

सं० स्वर्गीय } ( स्वर्ग ) गु० स्वर्गका ।  
स्वर्ग्य }

सं० स्वर्ण—( सु=अच्छा, अर्थ या वर्ण रंग, जिस का रंग अच्छा है या सु अच्छी तरहसे, श्रुत् या श्रु=

जाना ) पु० सोना, कंचन, वनक, हेम, बहुत मोल की धातु ।

सं० स्वर्णकार—( स्वर्ण=सोना, कार=करना ) पु० सोनेका काम करने वाला, सुनार ।

सं० स्वल्प—( सु=बहुत, अल्प=थोड़ा ) गु० बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, किञ्चित्, जरा ।

सं० स्वस्ति—( सु=अच्छा, भला, अस्=होना ) अव्य० कल्याण, मंगल, अच्छा हो, भला हो, २ ऐसा ही हो, तथास्तु ।

सं० स्वस्तिवाचन—( स्वस्ति=कल्याण, वाचन=कहना, वच्=कहना ) पु० किसी अच्छे काम के शुरुआत में किसी तरह का विगाड़ न होने के लिये और देवताओं की आशिष पानेके लिये ब्राह्मणों से वेद के मन्त्र पढ़वाना, शान्ति, मंगलाचार ।

सं० स्वस्तिवाचक—( वच्+अक, वच्=कहना ) क० पु० मंगलपाठक दुआगो ।

सं० स्वस्त्ययन—( स्वस्ति+अयन ) पु० शुभस्थान, शुभ का लाभ, मंगलाचरण ।

सं० स्वस्थ—( स्व=अपने, स्था=रहना ) क० मुससे रहनेवाला, सावधान ।

प्रा० स्वांग-पवांग शब्द की देखो ।

सं० स्वागत—( सु=अच्छी तरह से,





सं० हत—( हन्=मारना ) र्भ्य० मारा  
हुआ, नष्ट ।

सं० हति—( हन्=मारना ) स्त्री० मार  
ना, हनना, गुणना ।

सं० हत्या—( हन्=मारना ) स्त्री०  
मारना, हिंसा, खून, पाप ।

सं० हताशा—( हत + आशा ) गु०  
विघ्नाशा, नाउम्मेद ।

का० हनुल—मान=इच्छापूर्वक, य  
थासाध्य ।

प्रा० हत्यारा—( सं० हत्याकार, क०  
पु० हत्याकरनेवाला, हिंसक, पापी,  
दुष्टी ।

प्रा० हथ—( सं० हस्त ) पु० हाथ ।

प्रा० हथकड़ी—स्त्री० हाथकी वेड़ी,  
एक बड़ा भारी लोहेका कड़ा जो  
कैदियोंके हाथमें डाल दिया जाता है ।

प्रा० हथखण्डा—( हथ=हाथ, खण्डा  
=खंजर ) पु० हथ, खंजर, अस्त्रास,  
करतब, चाल, धान, हथौटी ।

प्रा० हथनी—( सं० हस्तिनी ) स्त्री०  
हस्तिनी ।

प्रा० हथफेर—बोल० बदला बदली,  
परा फेरी, २ छल, फरेब, खोटे रुपये  
को चाछाकी से अच्छे रुपये से  
बदल लेना ।

प्रा० हथलेवा—( हथ=हाथ, लेवा=  
लेना ) पु० व्याह में दुलहा दुलहि-  
ने का हाथ पिता देना, व्याहकी  
पकरीति ।

प्रा० हथवासना—क्रि० सं० हाथ में

लेना, हाथमें पकड़ना ।

प्रा० हथवासे—क्रि० वि० हाथमें अपने  
अधिकार में ।

प्रा० हथा } ( सं० हस्त ) पु० बेंड,  
हत्या } कपजा, २ वेतना,  
खोदनी ।

प्रा० हथिया—( सं० हस्त ) पु० ज्यो-  
तिष में सेरहवां नक्षत्र ।

प्रा० हथियाना—( हाथ ) क्रि० सं०  
पकड़ना, हाथ में लेलेना ।

प्रा० हथियार—( हाथ ) पु० शस्त्र,  
२ कलकांठा, औजार ।

प्रा० हथेली—( हाथ ) स्त्री० हाथ में  
थोचकी जगह ।

प्रा० हथौटी—( हाथ ) स्त्री० चतुराई,  
प्रवीणता, होशियारी, गुण, हुनर ।

प्रा० हथौड़ा—पु० धनु, पड़ा मातौल ।

प्रा० हथौड़ी—स्त्री० छोटा हथौड़ा ।

सं० हनन—( हन् + अन्न, हन्=मार-  
ना ) भा० पु० मारना, घात, हिंसा ।

सं० हननीय—( हन् + अनीय, हन्  
=मारना ) र्भ्य० मारनेयोग्य ।

सं० हनुमान्—( हनु=दुष्टी, ( हन्=  
नाश करना ) मन्=वाला ) पु०  
श्रीरामचन्द्र का दूत, पवनका पुत्र,  
हनुमन्त, महावीर ।

सं० हन्तव्य—( हन् + तव्य ) र्भ्य०  
मारने के लायक, हनने योग्य ।

सं० हन्ता—(हन् + कृ०) मारनेवाला,  
घातक ।

सं० हन्यमान—(हन्=मान, हन्=  
मारना) क० वध्यमान, मारनेवाला ।

सं० हय—(हय या हि=जाना) पु०  
घोड़ा, अरब, तुरंग ।

सं० हर—(ह=लेना) पु० शिव, म-  
हादेव, २ आग, अग्नि, ३ गणित

विषय में भाजक, भिन्नगणित में  
वह अंक जो अंशलाता है कि एक  
पूरी चीज के कितने टुकड़े किये  
गये हैं, नसबनुमा ।

प्रा० हर—(सं० हन) पु० हल शब्द  
को देखो ।

प्रा० हरत् (सं० हर्ष) पु० आनन्द  
हरप सुख, खशी, पसन्दना ।

प्रा० हरत्तना (सं० हर्षण, हर्ष=  
हरपना) खुश होना ) कि०  
अ० प्रसन्न होना, खरा होना, फूल  
ना, खिलना, मुली होना, आन  
न्दित होना ।

सं० हरगिरि—(हर + गिरि) पु०  
महादेव का पहाड़, बैलास पहाड़ ।

सं० हरण—(ह=लेना) प्रा० पु० जव-  
रदस्ती से किसीकी चीज लेलेना,  
लूट, चोरी ।

प्रा० हरता—(सं० हर्ता, क० पु० लेने  
वाला, हरनेवाला, दूरकरनेवाला,  
२ चोर, लुटेरा, दग ।

प्रा० हरना—(हरण) कि० सं०  
लेलेना, जबरदस्ती से लेना, लूटना,  
चुराना ।

सं० हरणीय—(ह + अनीय, ह=  
हरना) मर्म० दार्य, हरणयोग्य ।

प्रा० हरनौटा } (हरिण) पु०  
हिरनौटा } हरिण का बच्चा

प्रा० हरमुष्टा—पु० बच्ची, बलवान्,  
इष्टा कष्टा ।

प्रा० हरा—(सं० हरि) पु० सफेद  
सयुज रंग, २ ताजा, नया ।

प्रा० हराना—(हारना) कि० सं०  
यकाना, शिकस्त देना, हरा देना

जीतना, जीतवाना ।

प्रा० हरावल—पु० स्त्री० आगे की  
सेना, (यह शब्द तुर्की है) २  
अगाड़ी, आगा ।

प्रा० हरास—(सं० हास) पु० दुस्ति,  
सं० हरि—(ह=लेना, दूर करना)

पु० विष्णु, २ इन्द्र, ३ साँप, ४  
मैंढक, ५ सिंह, ६ घोड़ा, ७ सूर्य,

८ चाँद, ९ मृगा, सूबा, तोता, १०  
बानर, ११ यपराज, १२ हवा,

(“हरिर्विष्णावहरिचन्द्रे,  
भेकेसिंहहयैरवा ।

चंद्रे कीरेष्टवहे च,  
यमेवाते च कीर्तितः”) १३

१३ ब्रह्मा, १४ शिव, १५ किरण, १६  
मोर, १७ कोयल, कोकिल १८



विष्णु की सवारी, गरुड़ ।  
सं० हरीश—( हरि=वानर, ईश=मा-  
भिक ) पु० वानरों का राजा मुद्राव ।

प्रा० हरु } पु० हलका ।  
हरुअ } [ कापन ।

प्रा० हरुआई—स्त्री० हलवाई, हल-

प्रा० हर्दा } (सं० हरितकी हरिहराश  
हर्द } भीलारंग, ईश=पाना)  
हरी } स्त्री० पद्मवर्षा का नाम ।  
हरी }

सं० हर्षव्य—( ह+व्य, ह=लेना )  
व्य० लेनेयोग्य ।

सं० हर्षा—(ह=लेना) क० पु० लेने  
वाला, हरनेवाला, दूर करनेवाला,  
पु० चौर ।

सं० हर्म्य—पु० अटालिका, अटारी,  
पासाद, झंटा, ऊपर का कोठा ।

सं० हर्ष—( हर्ष=प्रसन्न होना ) पु०  
आनन्द, मुग, प्रसन्नता, खुशी ।

सं० हर्षण—(हर्ष+अन, हर्ष=प्रसन्न  
होना) भा० पु० आनन्द, उद्योगि-  
यता एक योग ।

सं० हर्षित—( हर्ष, क० आनन्दित,  
प्रसन्न, खुश, मगन, प्रफुल्लित,  
आह्लादित ।

सं० हल—( हल=हल चलना ) पु०  
हर, नांगल, लांगल, एक चीज

जिसमें किमान चीज होने सम्भव  
प्राप्ती की साफ वरने हैं २ चक्रान  
अक्षर । [ का घंघा ।

सं० हलभूति—स्त्री० कृपितृप्ति, रानी  
प्रा० हलका—पु० हीला, हलक,  
फुलका, २ सरता, ३ ओला, नील,  
अधम, मुग्ध ।

प्रा० हलकाकरना—बोल० बोझ उतार-  
ना, घटाना, नम करना, ३ बेमारक  
करना, देठा करना, पानी उतारना,  
लितारना, बेइशत करना ।

प्रा० हलकाजानना—बोल० मुग्ध  
संभनना, अयोग्य जानना ।

प्रा० हलकाना—क्रि० सं० सहारा  
देना, उकसाना ।

प्रा० हलकोरना—क्रि० सं० इतड़ा  
करना, घटोरना, समेटना, २ लह-  
राना, फहराना, मौजमारना ।

प्रा० हलचल—पु० खलबली, हड़ब-  
ड़ी, घबराहट, दर, हुल्लड़, बलया ।

प्रा० हलचलमचना—बोल० हुल्लड़  
होजाना, सदर होना ।

प्रा० हलदिया—( हरी ) पु० एक  
तरह का जहर, २ कैंबल रोग या  
पांडुरोग जिसमें सारा शरीर पीला  
पड़जाता है पीछियारोग, २ गु०  
पीला रंग, हल्दी सा रंग ।

प्रा० हल्दी—( सं० हरिद्रा ) स्त्री०  
एक तरह का मसाला ।

प्रा० हात } (सं० हस्त) पु० शरीर  
हाथ } का एक अंग, हस्त, कर,  
२ कोहनी से लेकर चौचकी अंगुली  
के शिरे तकवा नाप, ३ अधिकार,  
वश, कबजा ।

प्रा० हाथ आना } बोल० अपने अ-  
हाथ में आना } धिकार में आना,  
कबजे में आना, पिनना, हाथ  
लगना, पिनजाना ।

प्रा० हाथ उठाना — बोल० छोड़ देना,  
हिमी काम के बरने से रुक जाना,  
२ हाथ शिरार लंग के सलाम  
करना, ३ मारना, ४ भीम देना,  
रोरात बांटना ।

प्रा० हाथ कम पर रखना — बोल०  
बहुत निबल होना, बहुत कमजोर  
होना ।

प्रा० हाथ कानों पर रखना — बोल०  
अवशेष होना, २ झटपट इनकार  
कर जाना ।

प्रा० हाथ खेंचना — बोल० छोड़ना,  
भुल करना, दूर भगना, छिनारि  
होना, अलग होना ।

प्रा० हाथ बाटना — बोल० किसी  
अच्छे माने का बहुत स्वाद लेना,  
या अच्छे माने को बहुत सुशी में  
माना ।

प्रा० हाथ जोड़ना — बोल० चिननी  
कान, धियवाना ।

प्रा० हाथ डालना — बोल० किसीका  
में अपना अधिकार करना, दस्तबंद  
जी करना, दखल करना, दवाना  
प्रा० हाथ धोना — बोल० निराशरी  
ना, नाउम्मेद होना ।

प्रा० हाथ पड़ना — बोल० अपने अ  
धिकार में आना, कबजे में आना  
हाथ लगना ।

प्रा० हाथ पत्थर तले दबना — बोल०  
बेश होना, कुछ नहीं बरसकना ।

प्रा० हाथ पसारना — बोल० माँगना,  
चाहना ।

प्रा० हाथ पांव फूल जाना — बोल०  
पवरा जाना, काम बरने से दिक्-  
किताना ।

प्रा० हाथ पांव मारना — बोल० मिह-  
नन करना, कोशिश करना, २ पवरा  
जाना, दया परिश्रम करना ।

प्रा० हाथ फेंकना — बोल० पत्र या  
लाकड़ी चलाना, २ मुफ्तका माल  
लेना ।

प्रा० हाथ फेरना — बोल० प्यार क-  
रना, दुनार करना, छोड़करना, गले  
लगाना, फुसलाना, शाबाशी देना ।

प्रा० हाथ वन्द होना — बोल० काब  
में बहुत जगा रहना, कुछ कुर्बान नहीं  
माना, २ मारीब होना, छाती हाथ  
होना, निरीदस्त होना ।

प्रा० हाथवदना—बोल० किसी ची-  
ज के मिलनेके लिये कोशिश करना,  
२ दूसरे आदमी के मान असबाब  
पर दखल करना ।

प्रा० हाथवांधना—बोल० हाथ जो-  
ड़ना, बिनती करना ।

प्रा० हाथवेटना—बोल० मचना, किसी  
हुनर में खूब अभ्यास होना ।

प्रा० हाथभरना—बोल० हाथ भर जाना ।

प्रा० हाथमलना—बोल० पड़तावा  
करना, सोचकरना, फिकरकरना ।

प्रा० हाथमारना—बोल० बचनदेना,  
ताली मारना, २ पाना, छेछेना,  
झीन लेना, लूटनेना, ३ तेलवार  
से घायलकरना, धारकरना ।

प्रा० हाथमिलाना—बोल० बराबरी  
का दावा करना, २ कुरती लड़ने  
को तैयार होना ।

प्रा० हाथमें रखना—बोल० अपने  
अधिकार में रखना, अपने अस्-  
वियार में रखना, वश में होना ।

प्रा० हाथलगना—बोल० हाथ धाना,  
मिलना, पाना, हासिल होना ।

प्रा० हाथलगाना—बोल० हाथ रखना,  
झूना, २ फिकरकरना, सजादेना, ३  
किसी काम में लगना, किसी काम  
को शुरू करना ।

प्रा० हाथसमेटना—बोल० देने से

हाथको रोक लेना ।

प्रा० हाथपाईकरना } बोल० घक्रम  
हाथवाहीकरना } प्रकाश करना,  
घोलवणा चलाना, नाव मुझी  
मारना, आपस में लड़ना ।

प्रा० हाथोहाथकरना—बोल० सब  
मिजके करना ।

प्रा० हाथोहाथ—बोल० मुस्त, भट-  
पट, दुरठ, फुलत ।

प्रा० हाथोहाथलेजाना—बोल० भट-  
पट लेजाना, मुनफुर्त भपटलेना ।

प्रा० हाथा—( सं० हस्त ) पु० हाथ, २  
अधिकार, वश । [ का नाम ।

प्रा० हाथाजोड़ी—स्त्री० एक पौधे

प्रा० हाथी—( सं० हस्ती ) पु० एक  
जानवर का नामपतंग, गज ।

प्रा० हाथीदांत—( सं० हस्तीदन्त )  
पु० हाथी का दांत ।

प्रा० हाथीचान्—पु० महावृक्ष ।

प्रा० हान } ( हा=त्यागना, छोड़ना )

सं० हानि } स्त्री० घरी, थोडा, नुकसाना

प्रा० हाय } ( सं० हाय ) वि० बी०

हायहाय } आह, ओह, २ स्त्री०  
दुःख, पड़तावा ।

सं० हायन—पु० स्त्री० वर्ष, वसुन्धरा,  
वर्ष का दिन ।

प्रा० हायमारना—बोल० पड़ाना,  
दुःख करना, आह धारना, आह

करना ) स्त्री० पुकार, गर्जन, डराने का शब्द । [ उपद्रवी ।

प्रा० हुड़दंगा-पु० दंगैठ, छडाक,

प्रा० हुंडवी } स्त्री० रुपये के पट्टे-  
हुंडी } चाने की चिठी ।

प्रा० हुंडाभाड़ा-पु० बीमा, जोरि-  
मे, पहुँचावा, किसी चीज या  
सोने चांदी आदिके जेवर को एक  
जगह से दूसरी जगह पहुँचा देनेके  
लिये जो कुछ उधरे ।

प्रा० हुंडार-पु० भेड़िया ।

प्रा० हुडावन } स्त्री० हुण्डी का  
हुंडियावन } बड़ा, हुण्डी के  
लिये जो कुछ दिया जाय ।

प्रा० हुंडीवाल-पु० कोठीवाल, वह  
महामन जिसके हुण्डीका व्यवहार  
होता है ।

सं० हुत-(हू=रोमना) र्मे० रोमी  
हुत, पु० रोमने की चीज जैसे घी आदि ।

सं० हुतभुक्-पु० अग्निदेवता ।

सं० हुताश } (हुत+अश=पक्ष  
हुताशन } करना) अग्नि, बलि ।

प्रा० हुमकना-क्रि० अ० उड़लना ।

प्रा० हुलसना-(सं० वलसन उल-  
लस=खेलना, आनंद करना) क्रि०  
अ० खुश होना, मसम होना, आनंदित  
होना ।

प्रा० हुलसी-स्त्री० सुखी, खुशी,  
हुलसीदास की माता का नाम ।

प्रा० हुलास-(सं० वलास) पु०

आनंद, हर्ष, खुशी, मसमना ।

प्रा० हुलड़-पु० रौंदा, खेड़ा, रत  
बल, होड़ा ।

प्रा० हूं-क्रि० वि० हाँ, भी, सा  
मला, ठीक, अच्छा, रवचमानका  
में एक वचन उच्चमपुरुष का चिह्न

प्रा० हूंहां-पु० धूपचाम हुलड़ ।

प्रा० हूक-स्त्री० पीड़ा, टसक ।

प्रा० हूकहूककेरोना-बोल० सि  
की मरके रोना, टसक रेके रोना ।

सं० हूति-(हे=बुलाना) स्त्री० आ  
धान, बुलावा । [ सिक्का ।

प्रा० हून-पु० मदरास का सोने क

प्रा० हूलना-क्रि० स० खेल देना,  
(जैसे हाथी को) चलना, २ चु  
भाना, खींचना, आंकुस मारना

सं० हत-(हू=लेना) र्मे० लिपा हुआ

सं० हृद } (हू=लेना) पु० मन  
हृदय } दिल, २ कुण्ड, हिरदा  
हिया, छाती ।

सं० हृषीकेश-(हृषीक=इन्द्रिय(हृष=  
मसम होना) और ईश=माझिक)  
पु० विष्णु, मगवान, नारायण ।

सं० हृष्ट-(हृष=मसम होना) क०  
मसम, हर्षित, आनंदित, मग्न ।

सं० हृष्टपुष्ट-(हृष्ट=मसम, पुष्ट=सो-

दा ताजा ) क० मोटा ताजा, मसज,  
संडमुमंड, मुटकड़ ।

सं० हे-अव्य० सम्बोधन, बुझाना, आ-  
ह्वान करना, प्रसूया करना, निन्दा  
करना ।

प्रा० हेउ-क्रि० वि० नीचे, नले, रेडे ।

प्रा० हेडा-( सं० रेड=रोकना ) गु०  
दरशीकना, २ डीला, आसक्तता,  
आनमी, ३ नीच । [ डाला ।

सं० हेनि-सूर्यका तेज, शस्त्र, अग्निही

सं० हेतु-( हि=जाना, या बचना ) पु०  
कारण, सबब, अर्थ, अनिपाय,  
मननय, फल ।

सं० हेम-( हि=बचना ) पु० सोना,  
सुवर्ण, वंचन ।

सं० हेममाली-पु० सूर्य, स्वर्णमाली ।

सं० हेमन्त-( हि=जाना, या बचना ) पु०  
नादिके शी श्रुत, एक श्रुत जो आगहन  
और पूमके महीनोमें रहती है, सर्दी ।

सं० हेय-( हा=छोड़ना ) अर्थ० ह्याउय,  
छोड़ने योग्य ।

प्रा० हेरना-क्रि० सं० रोजना, दूदना,  
२ देवना, ३ रगेदना, रगेदना ।

सं० हेरम्ब-( हे=शिव, रवि=जाना )  
पु० गणेश ।

प्रा० हेलना-क्रि० अ० पैरना, तैरना,  
पार होना ।

सं० हेला-( रेन्=अवज्ञा करना ) स्त्री०  
सेल, क्रीड़ा, २ अवज्ञा, अनादर ।

प्रा० होंकना-क्रि० अ० हाँपना,  
रफारफाना, ऊँचा साँन लेना ।

प्रा० होंउ } ( सं० जोउ ) पु० मुँहके  
होउ } बाहरका हिस्सा, जोउ ।

प्रा० होड़-स्त्री० पण, चमन, दाँव,  
पेच, रत्न ।

प्रा० होड़बदना-बोल० शर्तलगाना ।

प्रा० होड़लगाना-बोल० शर्त ल-  
गाना, बचनकरना, पण करना, बाजी  
लगाना ।

प्रा० होड़हारना-बोल० बाजी हारना ।

प्रा० होत-( होना ) स्त्री० घर, शक्ति,  
सामर्थ्य, पहुँच ।

प्रा० होतव-( सं० भवितव्य ) पु०  
भाग, किस्मत, पारव्य ।

प्रा० होतव्यता-( सं० भवितव्यता )  
स्त्री० होनहार, संयोग, भाग, पारव्य ।

सं० होता-( हु=रोमना ) क० पु०  
होम करनेवाला ।

प्रा० होना-( सं० भवत, भू=होना )  
क्रि० अ० रहना, चिद्यमान रहना ।

प्रा० होआना-बोल० गोकु चला  
जाना ।

प्रा० होबुकना }  
होलेना } बोल० पूरा होना ।

प्रा० होजाना-बोल० आपटना,  
संयोग बनना ।



खानखाना नवाब अबदुलरहीम—जिनका छाप अर्थात् तखल्लुस् रहीम और रहमन है संवत् १५८० में उत्पन्न हुये थे याविनी भाषा तथा संस्कृत और ब्रज-भाषा के बड़े पण्डित इनकी सभा रात दिन पण्डित जनों से भरीपुरी रहती थी संस्कृत में इनके बनाये हुये श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषा में नवो रस के कविता, दोहा बहुत सुन्दर हैं संवत् १६५२ में इनका देहान्त हुआ ॥

१। गिरिधर—कविराय अन्तरवेद के रहनेवाले संवत् १७७० में उत्पन्न हुये इन की नीति सामयिक सम्बन्धी कुण्डलिया विख्यात हैं ये जयपुर के जयसिंह सवाई की सभा में थे उक्त महाराजा ने इनको कविराय की पदवी दी थी ये एक कुण्डलियों का ग्रंथ बना रहे थे पर पूरा न हुआ मृत्युवश हुये परचात् उन की स्त्री ने उसे पूरा किया जिन कुण्डलियों में साई का पद पड़ा है लोग कहते हैं कि उनकी स्त्री की कही हैं ॥

२। देवकीनन्दन, शिवनाथ, गुरुदत्त शुक—ये तीन भाई कान्यकुब्ज ब्राह्मण कौशिक के समीप मकरन्द नगर के वासी हिंदी में बहुत अच्छे कवि थे इन्होंने कुंजरकाव्य तो बहुत की है परन्तु पत्नीविलास नामक एक पुस्तक कही है जिसमें सब पत्तियों का जुदा २ रंग देग स्वभाव आदिका वर्णन किया है जिन दिनों पत्नीविलास की रचना करते थे तब कबूतर पत्नी के वर्णन में ( गुरुदत्त तुम्हें, यह झोंढ़वे टोला ) यह पद श्रुत में कह गये जब पीछे को सोचा तो जाना कि यह काव्यागण पढ़ गया है सो मिथ्या न होगा अब अवरण करके यहाँ का वास छोड़गा दैवयोग से गोररापुर की ओर किसी राजा के यहाँ गये यहाँ बहुत मान से ठहराये गये दो ग्राम राजा ने नानकारे दिये वहाँ गुरुदत्त जी रहने लगे और विक्रम के संवत् १८६४ में उत्पन्न हुये में ( पण्डित श्रीधर त्रिपाठि ) इनके मान्यों में हैं ॥

३। गंगकवि—एकनौरगांव जिला इटावा के वागी थे संवत् १५६५ में उत्पन्न हुये थे बड़े कवि थे राजा घोरवर ने इनको छाप में एकलास रुपये इनाम दिये इसी प्रकार से अकबर जहाँगीर खानेखाना मानसिंह सवाई आदि सबों ने इनका बहुत मान किया और दान दिया ॥

माधकवि—कान्यकुब्ज अन्तरवेदनिवासी संवत् १७५३ में उत्पन्न हुये इनके दोहा छप्प लोकोक्ति अर्थात् जर्बुलमसल तथा नीतिसम्बन्धी सामयिक ग्रामीण बोल चाल में विरूपात हैं ॥

चन्द्रकवि—प्राचीन यन्दीजन सम्मलनिवासी सन् ११९८ में उत्पन्न हुये ये चन्द्रहास महाराजा यशसलदेव चौहान रणथम्भौरवाले के प्राचीन कवीश्वर के औलाद में थे संवत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आया मंत्री और कवीश्वर दोनों पदों को प्राप्त हुआ और पृथ्वीराज रापसा नाम एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोक संस्कृत भाषा में रचे जिसमें ६९ खण्ड हैं और पुरानी बोलों हिन्दुओं की है । इस ग्रन्थ में चन्द्रकवि ने संवत् १११० से संवत् ११४० तक पृथ्वीराज का जीवन चरित्र महाकविताई के साथ बहुत छन्दों में वर्णन किया है छप्प छन्द तो मानों इसी कवि के भाग में थे जिसका चौपाई छन्द श्रीगुमाई तुलसीदास के हिस्से में पड़ी थी इस ग्रन्थ में क्षत्रियों की वंशावली और अनेक युद्ध और यावू पहाड़ का माहात्म्य और दिल्ली इत्यादि राजधानियों की शोभा और क्षत्रियों के सुभाव चाल चलन व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन किये हैं ये कवि केवल कवीश्वर ही नहीं थे वरन नीति शास्त्र और चारन के काम कान में महाशूरवीर थे संवत् ११४६ में साथ पृथ्वी राज के ये भी मारे गये इन्हीं की औलाद में शारंगधर कवि थे जिन्होंने भीरवपरा और भीर काव्य भाषा में बनाया है ॥

चिन्तामणि त्रिपाठी—टिकमापुर जिले कानपुरवाले संवत् १७२६ में उत्पन्न हुये ये महाराज भाषा साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं अन्तरवेद में विदित है कि इन के पिता दुर्गापाठ करने निरत देवीजी के रूपान में जाते थे वे देवी जी वन की भुषां कराती हैं टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर है एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती मसल है चारि मुख दिग्वाय बोली यही चारो तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुआ कि चिन्तामणि १ भूषण २ मतिराम ३ जटाशङ्कर या नीलखण्ड ४ चारि पुत्र उत्पन्न हुये इन में केवल नीलखण्ड महारथ तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुये जेय जीनों भारी संस्कृत काव्य की पढ़ि ऐसे पण्डित हुये कि उनका नाम मलयक बोली रहेगा इन्हीं के वंश में शीतल और विशारीलाल कवि जिनका लाल भोग है संवत् १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुर में मूर्धवरी भोमला महरन्द शाह के यहां रहे और इन्हीं के



वास्तवमें इसी ग्रंथके अन्तर वा मधेनु दिखाई देते हैं सब तिलकोंमें मूर्तिमित्र आगरे बाने वा तिलक विचित्र है और सब शतसियोंमें विक्रम शतसई और चन्दनशतसई इसके लगभग हैं ॥

सुन्दरेश्वरमित्र—ये कवि भाषा साहित्य के आचार्योंमें गिने जाते हैं मध्यम राजा अर्जुनसिंह के पुत्र राजारामसिंह औरके यहां जाय कविराजकी पदवी पाय वृत्त विचार नाम पिंगल सब पिंगलोंमें उत्तम ग्रन्थको रचा तत्त्वधाम राजादिम्पतिसिंह अमेठी के यहां आप छंदविचार नाम पिंगल बनाया फिर नव्यावि धरलगाँवी गीतां पंथी औरंगजेब बादशाह के नाम भाषा साहित्य में काजिले फातिलक नाम ग्रंथ महाभद्रमुत्त रचा इन तीनों ग्रंथों के सिवाय हमने वही अमेठी में लिखा है कि अध्यात्मप्रकाश ? दशरथराय २ ये दो ग्रंथ और भी इन्हीं माराज किये हुये हैं ॥

सुन्दरेश्वरमित्र—बालियरनिवासी संवत् १६०० में उत्पन्न हुये ये रचा बादशाहके कविपे पहिले कविराय वा पदपाय पीछे महाकवि इंदौरई इनका बनाया हुआ सुन्दरगृह नामग्रन्थ भाषा साहित्य में इन्हीं कवि के पदमें यह अगन पढ़ाया (सुन्दर कोष नहीं) और इस ग्रन्थ में है ॥

संवल—कौन छत्री चन्द्रगढ़ के राजा थे इन महाराज के कोई पुत्र न था अपने सज्जन नाग्रिह पाग्रिह पाण्डन बुनाकर पुत्रोत्पन्न होने के लिये श्राद्ध करवाया बहुत दिनोंतक पुत्र न होना रा परन्तु पुत्र होने की कुछ क्षण न हुई तब इस बात से राजा और पाण्डन सब निराश हुये तब सब पाण्डन ने एक मन होकर कहा कि आपका नाम चलता यदि आपके पुत्र होता सो उसका नाम के दूट जानेवा संदेह या निससे उत्तम यह है कि हम सब लोग मिलकर आपके नाम से एक पुस्तक की रचना करें जिससे हजारों वर्ष आपके नाम इस मण्डल पर बना रहे हम बात की गजाने स्वीकार किया और आकाश कि महाभारत जो संस्कृत में है उसको भाषाकाव्य में करो तब सब पाण्डनोंने विक्रमके संवत् १००७ में महाभारतकी भाषा सन्दर्भवन्धमें करने का आरंभ किया और कुछ कालमें सम्पूर्ण भारत को भाषाकाव्य में सबलसिंह जी के नाम से कहा है ॥

सूरदास ब्राह्मण—प्रनवासी बाबा रामदासके पुत्र बहुभाचार्यके १६५० में उत्पन्न हुये इन महाराज के जीवनचरित्रों से सब छोटे

उषों रषों कर बीते अन्तको अवश होकर विक्रम के संवत् १८७१ में स्वर्गवासी हुये उनके परवान् छोटे माई पीतमसिहजी जो उनके स्थानाधिकृत्ये उस मन्दिर को पूर्ण किया जिन्हीं ने देखा है वह कहते हैं कि गंगा यमुना के मध्य में ऐसा दूसरा मन्दिर नहीं है ॥

लालाकवि लालू लालजी—गुजराती भागरावले संवत् १८१२ में उत्पन्न हुये महाराज चार्तिक भाषा की बोलचाल में प्रथम आचार्य्य हैं इनका बनाया हुआ मेघमागर ग्रन्थ इस बात का साक्षी है और दोहा चौपाई इत्यादि सीधे २ सन्दी के बनाने में भी निपुण थे सभाबिलास २ माधवबिलास ३ चार्तिक राजनीति ४ इत्यादि इनके ग्रन्थ बहुत सुन्दर हैं ॥

पन्दीरीन दोन्निन—ग्राम ममवासीनिरासी तिला उग्राम जो कि संवत् १९२० में उत्पन्न हुये जिन्हीं ने महाभाग्य भारतवर्ष भाषा आलहा खन्द में बनाया उक्त पण्डित भाषा काव्यादि में बड़े मनीष्य हैं मूरसागर रामायणादि भाषा के ग्रन्थों में बड़े विद्वान हैं महाभारत आलहाखण्ड के अवलोकन करने से उनका विद्वत्त्व प्रकट होता है कथनकी कोई आवश्यकता नहीं है ॥

विहारीलाल भीमे प्रसवामी सं० १९०२ में ७० थे कवि जयसिंह कवतारे महाराजा अतोर के यहां थे जयपुरकी तारीफ देसनेमें प्रकट है कि ये महाराजा मानसिंह से जो संवत् १९०१ नियमान में संवत् १८७३ तक तीनि जयसिंह हो- गये हैं पर इतको निरवगई कि ये कवि महाराजा मानसिंह के पुत्र जयसिंह के नाम से जो महाराजाप्राहक थे और दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंह के प्रौढ संवत् १७१५ में थे यह बात प्रकट है कि जब महाराजा जयसिंह हिमी पद बोरी अवस्थावाली रानी पर मोहित हो रात दिन राजमन्दिर में रहने लगे राज्य के सम्पूर्ण काम काम बन्दहोगये तब विहारीलाल ने यह दोहा बना-  
राजा के समस्त हिमी नयाय मे पहुँचाया ॥ दोहा ॥ नहिं परामर्श मसुरम  
नहिं विहाय यह बात । अली कलौही गो विन्धो आगे कीन हवान १ ॥  
इस दोह पर राजा अग्रज ममय है १०० मोहर इनाम दे कहा इमीवहार के  
कोय दोहा बनायो विहारीलाल ने ७०० दोहा बनाये और ७०० श्रुतकी  
इनाम में गई यह मतमर्ष ग्रन्थ अटिनीय है बहुत कवि लोगों ने इसके देगार  
मतमर्ष बनाकर अपनी कविता का रंग मजाना चाहा पर हिमी कवि को मुम्ह-  
की बात नहीं हुई वह ग्रन्थ पेमा अदृष्ट है कि इनने १८ निमक तक इसके  
देखे हैं और कायमक त्ति नहीं है लोग कहते हैं कि अन्तर कायेनु होने हैं को

यास्वदेव इसी ग्रंथ के अन्तर वामदेवु दिखाई देते हैं सब तिलकों में मूर्तिमिथ आगने वाले वा तिलक विचित्र है औ सप्त शतसियों में विक्रम शनसई औ चन्दनशतसई इसके लगभग हैं ॥

सुन्दरदेवमिथ—ये कवि भाषा साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं मध्यम राजा अर्जुनसिंह के पुत्र राजारामसिंह और के यहां जाय कविराज की पदवी पाय वृत्त विचार नाम पिंगल सब पिंगलों में उत्तम ग्रन्थ को रचा तत्पश्चात् राजा हिममतसिंह बंगलगोत्री अमेठी के यहां आय छंदविचार नाम पिंगल बनाया फिर नववां प्रजितिलक गोरीसों में श्री औरंगजेब बादशाह के नाम भाषा साहित्य में काजिल-अमीर मद्रास नाम ग्रंथ महाअद्भुत रचा इन तीनों ग्रंथों के सिवाय हमने वहीं लिखा है कि अध्यात्मप्रकाश १-दशरथराय २ ये दो ग्रंथ और भी इन्हीं महाराज किये हुये हैं ॥

सुन्दरदेव—प्राक्षण बालियरनिवासी संवत् १६०० में उत्पन्न हुये ये महाराज बादशाह के कवि पढ़िते कविराय वा पदपांय पीछे महाकवि की पदवी इनका बनाया हुआ सुन्दरगृह्णार नामग्रन्थ भाषा साहित्य में इन्हीं कवि के पद में यह अगम पढ़ाया (सुन्दर कीप नरेश) इन्हीं कवि इस ग्रन्थ में हैं ॥

संवल—(बौद्ध क्षत्री चन्द्रगढ़ के राजा थे इन महाराज के कोई पुत्र न था इसलिये राजसंजनतां विद्वत् प्रायश्चित्त पण्डित बुनाकर पुत्रोत्पत्ति होने के हेतु देवपूजा आरंभ कराया बहुत दिनों तक पूजन होतारहा परन्तु पुत्र होने की कुछ कल्पना न हुई जब इस बात से राजा और पण्डित सब निराश हुये तब सब पण्डितों ने एक मन होकर कहा कि आपका नाम चलता यदि आपके पुत्र होता सो उसका नाम के दूट जानेका संदेह या निससे उत्तम यह है कि इस सब लोग मिलकर आपके नाम से एक पुस्तक की रचना करें जिससे हमारा भी आपका नाम इस भूषणदत्त पर बना रहे इस बात को राजाने स्वीकार किया और आकाशी कि महाभारत जो संस्कृत में है उसको भाषाकाव्य में करो तब सब पण्डितों ने विक्रमके संवत् १२२७ में महाभारतको भाषा छन्दमन्त्रवै करने का आरंभ किया और कुछ काल में सम्पूर्ण भारत को भाषाकाव्य में सबनसिंह जी के नाम से कहा है ॥

मूरदास प्राक्षण—बनवासी बाबा मूरदास के पुत्र बल्लभाचार्य के शिष्य संवत् १६७० में उत्पन्न हुये इन महाराज के जीवनचरित्रों से सब छोटे



